ठक्करबापा

लेखक
कान्तिलाल शाह
अनुवादक
रामनारायण चौधरी

ठक्करबापा स्मारक समिति
दिल्ली

प्रकाशकका निवेदन

दीन और दलित वर्गोंके सेवक प्रातःस्मरणीय श्री ठक्करबापाके अवसानके पश्चात् अुनके स्मारककी व्यवस्था करनेके लिअे श्री दादासाहब मावलंकरकी अध्यक्षतामें अेक समिति नियुक्त की गअी थी। अिस समितिने सारे भारतके प्रजाजनोंसे अिस स्मारक-फण्डमें अपना हिस्सा देनेकी अपील की। अिसमें डॉ॰ राजेन्द्रप्रसाद, पंडित जवाहरलालजी आदि नेताओंका सहयोग हमें प्राप्त था।

गरीबोंके बेली श्री ठक्करबापाके स्मारक-फण्डमें कितनी रकम जमा होती है, अिसकी अपेक्षा कितने भाअी-बहन स्वेच्छासे अपना हिस्सा देते हैं, यह चीज स्मारक-समितिको अधिक महत्त्वकी मालूम हुअी। अिसलिअे अुसने पहलेसे ही यह ध्येय रखा था कि कुछ लोगोंसे बड़ी-बड़ी रकमें प्राप्त करके फण्डको समृद्ध बनानेकी अपेक्षा विशाल जनसमुदायके पास पहुंचकर गरीब और सामान्य लोगोंसे छोटी-छोटी रकमें फण्डमें अिकट्ठी की जायं।

अिस कारणसे पहले-पहल निश्चित की हुअी तारीख तक १,७०,००० रुपये फण्डमें जमा हुअे और अुसके बाद आनेवाली रकमें भी स्वीकार की जाती रहीं। अिस बीच श्री ठक्करबापा जैसे प्रखर लोकसेवकका जीवन-चरित्र लिखा जाय तो भावी पीढ़ियोंके लिअे अेक अुच्च कोटिके समाज-सेवकके सादे सेवामय जीवन और कार्यका अितिहास सुरक्षित रहेगा, अिस हेतुसे स्मारक-समितिने बापाका जीवन-चरित्र तैयार करानेका काम हाथमें लेनेका निर्णय किया।

जीवनके अन्तिम दिनोंमें मित्रों और प्रशंसकों द्वारा पूज्य ठक्कर-बापा पर अिस बातके लिअे बहुत ज्यादा दबाव डाला गया कि वे अपनी आत्मकथा लिखें। श्री बलवन्तराय मेहता, श्री रामनारायण पाठक आदि प्रशंसक और मित्र अिस कामके लिअे बापाके पास रहनेको भी तैयार थे। किन्तु बापाने आत्मकथाके विषयमें कोअी अुत्साह नहीं दिखाया। गरीबोंके अिस बेलीको अपनी प्रसिद्धि करनेकी बात पसन्द नहीं थी। अेक अंग्रेज

कविकी निम्नलिखित अुक्तिके अनुसार अपना नाम बनाये रखनेकी अुन्हें कोअी अभिलाषा नहीं थी :

> " Thus let me live unseen, unknown,
> And unlamented let me die;
> Steal from the world and not a stone
> Tell where I lie."
>
> — A. Pope

अैसी परिस्थितिमें जो कुछ जानकारी मिल सकी अुसीके आधार पर यह जीवन-चरित्र लिखा गया है। बापाके जीवन-कालमें बंबअी, पूना, दाहोद, और दिल्लीमें अुनके कार्यक्षेत्र बदलते रहे, और जिन डायरियोंके लिअे बापा-बड़ा आग्रह और ममता रखते थे, अुनका भी पूरा अुपयोग नहीं हो सका।

अिस पुस्तकमें जितनी जानकारी प्राप्त हुअी है, अुससे अधिक जानकारी भी बापाके कुछ अनन्य भक्तों और साथियोंसे मिल सकती थी। परंतु बापाके अवसानके बाद चार वर्षका लंबा अर्सा बीत जानेके कारण जितनी कुछ जानकारी मिल सकी अुसीका अुपयोग करके यह पुस्तक पूरी कर देनी पड़ी है।

स्मारक-समितिने यह काम राजकोटके श्री कान्तिलाल शाहको सौंपा था। अुन्होंने बापाके जीवन-कालमें भी अकाल, बाढ़ वगैराके मौकों पर अुनके किये हुअे कार्य देखे थे और अुनमें से कुछका वर्णन अलग अलग समय पर किया था। अिसलिअे समितिकी अिच्छाका स्वागत करके अिस कार्यमें अुन्होंने अपना समय और शक्ति लगाअी। अिस संबंधमें अुन्होंने लंबे लंबे प्रवास भी किये और कड़ा परिश्रम अुठाकर यह पुस्तक लिखी है। अिसके लिअे हम अुनका आभार मानते हैं। श्री ठक्करबापाके कुटुंबीजन श्री कपिलभाअी ठक्कर यह पुस्तक देख गये हैं, जिसके लिअे हम अुनके भी आभारी हैं।

हमने सोचा है कि अिस पुस्तकके प्रसिद्ध होनेके बाद मित्रों और प्रशंसकोंकी ओरसे जो जो सूचनाअें और अधिक जानकारी मिलेगी, अुनका दूसरी आवृत्ति छापनेका अवसर आने पर अुपयोग किया जायगा। अिसलिअे समिति सबसे विनती करती है कि वे अिस संबंधमें बिना किसी संकोचके जानकारी और सुधार सूचित करें।

अिस पुस्तकमें जितनी बातें आअी हैं, अुनके अलावा बापाकी डायरीके महत्त्वपूर्ण भाग, अुनके कुछ नोट और बापाके ८० वर्ष पूरे होने पर प्रसिद्ध

किये गये स्मारक-ग्रन्थमें से कुछ महत्त्वकी जानकारी देनेका हमारा विचार था। परंतु पुस्तकका आकार बढ़ जानेसे वह खरीदनेवालोंको महंगी पड़ेगी, अिस भयसे यह साहित्य छापनेका विचार अभी छोड़ दिया है। योग्य समय पर अनुकूलताके अनुसार यह साहित्य भी प्रकाशित करनेका प्रयत्न किया जायगा। अिन संयोगोंमें अिस पुस्तकमें रही कमियोंके लिअ पाठक हमें क्षमा कर देंगे अैसी आशा है।

यह पुस्तक तैयार करनेमें साथियोंने जो सहयोग दिया, अुसके लिअे समिति अुनकी ऋणी है। अिस पुस्तकमें जो चित्र दिये गये हैं, अुनके चुनावका प्रश्न बड़ा कठिन था। बापाके प्रवासोंमें अलग अलग समय पर लिये गये और अुनके स्मारक-ग्रन्थमें छपे हुअे फोटोके ब्लॉक हमें हरिजन-सेवक-संघ, दिल्लीकी ओरसे मिले हैं। अिसके लिअे हम संघके बड़े आभारी हैं। पुस्तककी कीमत बढ़ न जाय, अिस विचारसे फोटोके चुनावमें मर्यादा रखनी पड़ी है।

गुजरात द्वारा भारतको अर्पित अिस अनन्य और मूक सेवकका जीवन-चरित्र जनताके सामने रखते हुअे हमें संतोषका अनुभव होता है।

हरिजन आश्रम, **श्री ठक्करबापा स्मारक समिति**
साबरमती
१०–२–'५५

लेखकका निवेदन

चार-अेक वर्ष पहले पूज्य श्री नरहरिभाअी परीख राजकोट आये थे, तब मैं अुनसे मिलने गया था। थोड़ी बातचीतके बाद अुन्होंने मुझसे कहा, 'ठक्करबापाका विस्तृत जीवन-चरित्र तैयार करना है। आप यह काम करेंगे?' अुस समय थोड़ा विचार करके मैंने 'हां' कहा था। 'हां' कहा अुस समय मुझे अिसकी कल्पना तो थी ही कि यह काम कितना बड़ा और कितना कठिन है। लेकिन जब तीन माह बाद यह काम मुझे सौंपा गया और मैं बापाके जीवन-चरित्रके सम्बन्धमें सारे भारतमें फैली हुअी सामग्री अेकत्र करने और जीवन-चरित्रकी रूपरेखा तैयार करने लगा, तब मुझे अिस कार्यकी भगीरथता और अपनी शक्तिकी मर्यादाका भान होने लगा। दूसरी तरफ, पूज्य श्री किशोरलालभाअी मशरूवाला जैसेकी आगाही श्री परीक्षितलाल मजमुदारको लिखे अुनके पत्र द्वारा मिली कि 'बापा जैसे आजन्म सेवकके चरित्र-लेखनमें अुनके जीवन और कार्यको शोभा देनेवाला गांभीर्य और तटस्थता रखी जानी चाहिये। लिखते समय अिस बातका ध्यान रखा जाना चाहिये कि निश्चितता और तथ्योंकी प्रामाणिकताको कोअी क्षति न पहुंचे। अिसके सिवाय, अुनके चरित्रको कल्पनाका बाना नहीं पहनाया जा सकता, न अुसे गहरे रंगोंसे रंगा जा सकता है।' श्री किशोरलालभाअीका वह पत्र तो मेरे पास नहीं है, लेकिन अितना मुझे याद है कि अुसके साररूपमें अूपरके मुद्दे फलित हो सकते हैं। अिस पत्रसे मैं अपने काममें अधिक सावधान हो गया। अितना ही नहीं, अिस पत्र द्वारा ठक्करबापाके जीवन-चरित्रके आलेखनके लिअे मुझे निश्चित मार्ग-दर्शन मिल गया, और अपने मनमें मैंने अुसकी जो कच्ची-पक्की रूपरेखा बना रखी थी अुसे पुष्टि मिल गअी। अुसी समय मैंने अुन्हें अेक पत्र लिखा था, अैसा मुझे याद आता है। अुसमें अुनका आभार मानकर लिखा था कि आपने बापाका जीवन-चरित्र लिखनेमें जिन भयस्थानोंका निर्देश किया है, अुनके विषयमें मैं सावधान तो था ही; अब अधिक सावधान रहूंगा। और वह अतिरंजित न हो जाय, अिसका पूरा-पूरा खयाल रखूंगा। साथ ही मैंने अपने मनमें यह निश्चय कर लिया था कि संपूर्ण पुस्तक तैयार हो जाने पर श्री किशोरलालभाअीसे पढ़वा लूंगा। सारी पुस्तक वे देख जायं, अुसके बाद ही प्रेसमें दूंगा। परन्तु दुर्भाग्यसे यह पुस्तक पूरी हो, अुसके पहले ही अुनका अवसान हो गया और मेरे मनकी बात मनमें ही रह गअी। लेकिन मुझे अितना आश्वासन और संतोष है कि श्री नरहरिभाअी

संपूर्ण चरित्र पढ़ गये हैं। अुसमें जो थोड़ेसे दोष अुन्होंने दिखाये, अुन्हें यथामति सुधार लिया गया है। अुनका स्वास्थ्य यदि अच्छा होता, तो अिस पुस्तकके लिअे अेक अध्ययनपूर्ण भूमिका अुनसे प्राप्त करनेकी आशा थी। लेकिन अुनकी अत्यंत बिगड़ी हुअी तबीयतको देखते हुअे अब लाचारीसे यह आशा मुझे छोड़नी पड़ रही है।

लेकिन अिस पुस्तकके सम्बंधमें अितना कह सकता हूं कि अिसके कुछ प्रकरण मैंने श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त, पंडित हृदयनाथ कुंजरू और श्री डाह्याभाअी नायकसे तथा आरंभके अेक दो प्रकरण श्री दादासाहब मावलंकर, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू वगैरा लोगोंसे प्रेसमें देनेसे पहले पढ़वा लिये थे; और अुतने भागके लिअे अुनकी संमति प्राप्त करनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है।

अब अिस जीवन-चरित्रकी तैयारीके विषयमें दो शब्द कह दूं। बापाका जीवन-कार्य और जीवन-क्षेत्र अितना विस्तृत और व्यापक है कि अुसकी यथार्थ कल्पना पानेके लिअे और अुसके लिअे आवश्यक सामग्री अेकत्र करनेके लिअे सारे भारतमें घूमना और अुनके साथ काम करनेवाले साथियोंको मिलना जरूरी था। निवेदनके अन्तमें मैंने जो नामावली दी है, अुन सब महानुभावोंसे मैं रूबरू मिला हूं और बापाके जीवन-प्रसंगों और जीवन-संस्मरणों तथा कार्यप्रणालीके विषयमें अुनसे विस्तृत बातें की और सुनी हैं। अुनसे प्रश्न पूछे हैं, ब्यौरोंकी खातिरी की है तथा प्रसंगों और संस्मरणोंकी नोंधें ली हैं। अिसके अलावा, भावनगरकी अुनकी जन्मभूमि तथा बम्बअी, पूना, दाहोद और दिल्लीकी अुनकी कर्म-भूमिकी मैंने मुलाकात ली है। अिनमें से हर जगह जरूरतके मुताबिक अेक हफ्तेसे लेकर महीने महीने तक मैं ठहरा हूं। अुनके सह-कार्यकरोंसे बापाके संस्मरण सुने हैं। शहरों और गांवोंमें घूमकर अुनकी संस्थाओंका संचालन और कार्य अपनी आंखों देखा है। अुनका विस्तृत पत्रव्यवहार और फाअिलें भी मैं आद्योपान्त देख गया हूं। और जिन सैकड़ों-हजारों लोगोंके बीच बापाने काम किया, अुनके जीवन पर बापाके कार्यका क्या असर हुआ, यह अुन्हींके मुंहसे सुननेके लिअे अुन लोगोंके साथ मैंने बातचीत भी की है। अिन सबमें से बापाकी विराट् मूर्तिकी कल्पनाको साकार रूपमें देखनेका मैंने प्रयत्न किया है। अुसमें से मुझे बापाके जीवनका जो दर्शन हुआ, अुसे अिस पुस्तकमें शब्दरूप दिया है।

अिस कार्यमें जिन जिन संस्थाओं, महानुभावों, बापाके सहकार्यकर्ताओं, सेवकों, भक्तों तथा अुनके पासके सगे-सम्बन्धियों और स्नेही जनोंने मुझे

हृदयसे सहायता और सहयोग दिया, अुन सबका मैं अत्यंत आभारी हूं और हृदयसे अुनका अुपकार मानता हूं।

बापाके जीवन-चरित्रकी सामग्रीके लिअे जिनसे मिलना अनिवार्य माना जा सकता है, अैसे कुछ लोगोंसे मिलना अभी भी बाकी रह गया है। अुनमें से अेक हैं श्री श्यामलालजी और दूसरे हैं श्री भंडारीजी। अिन दोनोंसे मिलनेका मैंने खूब प्रयत्न किया, लेकिन विशेष परिस्थितियोंके कारण मैं अन्त तक अुनसे मिल नहीं पाया। अिस हद तक अिस चरित्रमें अधूरापन रह गया है। यह अपूर्णता मुझे बहुत खटकती है। अिसके अलावा, दक्षिण और अुत्तरके दूसरे अनेक भाअी-बहनोंसे कुछ सामग्री मिलनेवाली थी जो नहीं मिल सकी। लेकिन यह क्षतिपूर्ति मैंने बहुत हद तक बापाके अभ्यासपूर्ण और विस्तृत ब्यौरेवाले स्मारक-ग्रन्थसे करनेका प्रयत्न किया है। अिस पुस्तकके लिअे जानकारी प्राप्त करनेमें तथा तथ्योंकी खातिरी करनेमें यह स्मारक-ग्रन्थ मेरे लिअे अत्यंत अुपयोगी साबित हुआ है। अुसके भीतरकी सामग्रीका मैंने कुछ स्थानों पर छूटसे अुपयोग किया है।

अिस सबके बाद भी चरित्र लिखनेमें मैंने अेक कठिनाअी अनुभव की है। वह यह कि बापा स्वयं मूक थे, अुनका कार्य मूक था और अुनका स्वभाव भी मूक था। अिसलिअे अुनका व्यक्तित्व अुनके कार्यके साथ मिलकर अेकरूप हो गया था। अिस कारणसे अुनके जीवनका, अुसके विविध प्रसंगोंका स्थूल रूपसे जो दर्शन होना चाहिये, वह बापाके विराट् कार्योंकी तुलनामें बहुत कम हुआ है। दूसरे, भील-सेवा, अकाल कष्ट-निवारण-कार्य, आदिम जातियों तथा हरिजनोंकी सेवा वगैरा सब अैसे काम थे, जिनका वर्णन करने लगें तो वर्णनमें अेकसापन आये बिना न रहे और अुनका वर्णन न करें तो बापाके जीवन-कार्यकी पूरी कल्पना नहीं आ सकती। अिसलिअे पुनरुक्ति दोषका खतरा मोल लेकर भी, कुछ स्थानों पर पढ़ते-पढ़ते पाठकोंके अूब अुठनेका भय अुठाकर भी बापाकी अकाल-सेवा और दूसरे सेवा-कार्योंके विस्तृत वर्णन देनेमें मैंने संकोच नहीं रखा। बापाके विशाल कार्यसे सम्बंध रखनेवाले आंकड़े और हिसाब-किताब भी मैंने छूटसे दिये हैं। अिस कारणसे कुछ स्थानों पर वाचनके प्रवाहमें शायद रुकावट आती होगी, लेकिन बापाके कार्योंका प्रामाणिक रूपमें जनताको दर्शन करानेके लिअे यह अनिवार्य है, अैसा समझकर मैंने यह गलती की है। अिसके लिअे पाठक मुझे क्षमा करें।

अिस सबके बावजूद यह मानकर कि बापाका जीवन-चरित्र अुन करोड़ों लोगोंके पास जानेवाला है जिनकी अुन्होंने जीवनभर सेवा की है

तथा अैसे असंख्य भाअी-बहनोंके प्रतिनिधि सेवकों, कार्यकर्ताओं, शिक्षकों और बहनोंमें भी वह पढ़ा जायगा, मैंने भाषाका स्तर अिन सबके अनुरूप बनाये रखनेके लिअे अिस चरित्रको यथासंभव सीधा-सादा, सरल और आडंबर-रहित बनानेका प्रयत्न किया है। अिसमें मुझे कितनी सफलता मिली है, यह मैं नहीं जानता। अिसका अंतिम निर्णय तो अिस चरित्रको पढ़नेवाले ही करेंगे।

अेक विशेष बात और कह दूं। अिस जीवन-चरित्रके सम्बंधमें मैंने कुछ भाअी-बहनोंसे बापाके संस्मरण प्राप्त किये थे। कितने ही संस्मरण अलग अलग क्षेत्रसे अेकत्रित किये थे। और कितने ही संस्मरणोंका बापाके स्मारक-ग्रन्थसे अनुवाद तैयार रखा था। ये संस्मरण, कुछ पत्र और अुनकी डायरीका अमुक भाग अिस पुस्तकमें ही देनेका अिरादा था। लेकिन वैसा करनेमें संभवतः दो-अेक सौ पृष्ठ और बढ़ जाते। स्मारक-समितिने बापाके जीवन-चरित्रकी जो योजना बनाअी थी, पृष्ठोंकी यह संख्या अुसकी मर्यादासे बाहर जाती थी। अिसलिअे फिलहाल यह हिस्सा अलग कर लेना पड़ा है। यह बाकीका भाग 'ठक्करबापा — २ : संस्मरण और श्रद्धांजलियां' शीर्षकसे अलग प्रकाशित करनेका विचार है। अिसमें साहित्यिक खूबी न हो तो भी भविष्यमें बापाके जीवन-कार्य सम्बन्धी प्रामाणिक तथ्य देनेवाली पुस्तकके रूपमें अिसका अुपयोग हो सकेगा।

अिस कार्यके अन्तमें मुझे वैसा ही आनन्द अनुभव हुआ है, जैसा श्रद्धावान मनुष्यको पवित्र तीर्थस्थानोंकी यात्रा करके वापस अपने घर लौटते समय होता है। मुझे अिस बातका संतोष है कि अनेक लोगोंकी सहायता और सहयोगसे मैं यह कार्य पूरा कर सका हूं। बापाका जीवन-चरित्र तैयार करनेमें मुझे भी स्थूल और सूक्ष्म तीर्थक्षेत्रोंकी यात्रा करनेका तथा अनेक सेवाभावी महापुरुषों और विदुषी सन्नारियोंके सत्संगका जो अमूल्य लाभ मिला, अुसके लिअे मैं धन्यता अनुभव करता हूं।

अेक बार फिर मैं यह जीवन-चरित्र लिखनेकी प्रेरणा देनेवाले पूज्य श्री नरहरिभाअी तथा अिसे तैयार करनेमें साथ और सहकार देनेवाले सब लोगोंका हार्दिक आभार मानता हूं। अीश्वरसे मेरी प्रार्थना है कि बापा जैसे महान मानव-सेवक और पवित्र विभूतिकी, अुनके कार्य और सेवाकी यशोगाथा गानेवाला तथा अुनके पवित्र चरित्रका निरूपण करनेवाला यह ग्रन्थ हमारी नअी पीढ़ीको सेवाकी प्रेरणा और कर्मका संदेश देने-वाला सिद्ध हो।

ऋण-स्वीकार

अिस चरित्र-ग्रन्थकी सामग्री प्राप्त करनेके लिअे जिन जिन गुरुजनों और पूज्य पुरुषोंसे मैं मिला, अुनके नाम नीचे देकर अुनके प्रति अपना ऋण स्वीकार करता हूं :—

१. श्री दादासाहब मावलंकर, दिल्ली; २. श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, दिल्ली; ३. श्री गुलाब बहन पंडित, दिल्ली; ४. श्री वियोगी हरि, दिल्ली; ५. श्री शिवम्, दिल्ली; ६. श्री रंगय्या, दिल्ली; ७. पं० हृदयनाथ कुंजरू, दिल्ली; ८. श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त, दिल्ली; ९. श्री सुखदेवकाका, दाहोद; १०. श्री डाह्याभाअी नायक, दाहोद; ११. श्री मगनलाल महेता, अहमदाबाद; १२. श्री रूपाजीभाअी परमार, दाहोद; १३. श्री लालचंदभाअी धुळाबां, दाहोद; १४. श्री पांडुरंग वणीकर, दिल्ली; १५. श्री अंबालाल व्यास, दिल्ली; १६. श्री वझे साहब, पूना; १७. श्री वझे साहब आंबेकर, पूना; १८. श्री स्व० प्रो० ब० क० ठाकोर, बम्बअी; १९. श्री करसनदास चितलिया, बम्बअी; २० श्री भगीरथ कनोड़िया, कलकत्ता; २१. श्री सीताराम सेक्सरिया, कलकत्ता; २२. श्री सतीशचंद्र दासगुप्त, सोदपुर आश्रम; २३. श्री सुन्दरलाल सेठ, कटक; २४. श्री लक्ष्मीनारायण साहू, कटक; २५. श्री मालतीदेवी चौधरी, अनुगुल आश्रम (अुड़ीसा); २६. श्री परीक्षितलाल मजमुदार, अहमदाबाद; २७. श्री सामन्त नानजी मारवाड़ी, अहमदाबाद; २८. श्री कपिलभाअी ठक्कर, भावनगर; २९. डॉ० केशवलाल ठक्कर, भावनगर; ३०. श्री गं० स्व० त्रिवेणीबहन ठक्कर, भावनगर; ३१. श्री गिरीश भट्ट, भावनगर; ३२. श्री मानशंकर भट्ट, भावनगर; ३३. श्री हरखचंदभाअी, चोरवाड़; ३४. श्री रसिकलाल शुक्ल, राजकोट; ३५. श्री छगनलाल जोशी, राजकोट; ३६. श्री आभाबहन गांधी, राजकोट; ३७. श्री स्व० दरबारश्री वाजसूरवाला, वड़िया; ३८. श्री लालचंदभाअी वहोरा, बगसरा; ३९. श्री बलवन्तराय महेता, दिल्ली; ४०. श्री अमृतलाल सेठ, बम्बअी; ४१. श्री छगनलाल पारेख, हरद्वार; ४२. श्री जालजीभाअी कोयाभाअी डींडोड, मीराखेड़ी; ४३. श्री वीरसिंहभाअी, झालोद; ४४. श्री रामजी हंसराज कामाणी, बम्बअी; ४५. श्री विचित्रानंद दास; ४६. श्री नंदुभाअी पटेल, खेड़ब्रह्मा (अहमदाबाद जिला); ४७. श्री अरुणांशु दे, कलकत्ता; ४८. श्रीमती अंशुरानी; ४९. श्री अवधबिहारीलालजी; ५०. श्री कनु गांधी।

का०

प्रस्तावना

श्री ठक्करबापाका जीवन हमारे लिअे अेक आदर्श अुपस्थित करता है। जब अुन्होंने अेक बार निश्चय कर लिया कि वे आरामकी जिन्दगीको, जो पैसा कमानेवालेको मिल सकती है, छोड़कर गरीबकी जिन्दगी बितायेंगे, तबसे अन्तिम दिन तक अुनके जीवनका अेक-अेक क्षण गरीबों, पीड़ितों और हर तरहसे पिछड़े हुअे लोगोंकी सेवामें ही बीता। अुनका अपना रहन-सहन भी ठीक वैसा ही रहा, जैसा कि अेक मामूली गरीब आदमीका हुआ करता है। भारतवर्षमें जहां कहीं अकाल, बाढ़ या भूकम्पके कारण लोग संकटग्रस्त होते, वहां ठक्करबापा अपने कुछ अनुयायियोंके साथ अुनको सहायता देनेके लिअे पहुंच जाते थे। अुन्होंने अपना सार्वजनिक जीवन अेक प्रकारसे अिसी तरहके कामसे आरंभ किया था और धीरे-धीरे गरीबोंकी सेवाके लिअे वे अेक-अेक संस्था कायम करते गये। भारतमें पिछड़े हुअे लोगोंमें अधिकांश हरिजन और आदिम जातियोंके लोग हैं, अिसलिअे ठक्करबापाकी दिलचस्पी अुन लोगोंकी सेवा और अुनकी अुन्नतिमें प्रायः आरंभसे ही रही।

भील-सेवा-मंडलकी स्थापना द्वारा आदिवासियोंकी सेवा करनेकी भावना दूसरोंमें जागृत करके जो काम अुन्होंने आरंभ किया, वह समय और सुविधा पाकर आज भारतवर्षके लगभग सभी स्थानोंमें, जहां-जहां कि वे लोग बसते हैं, अेक महत्त्वपूर्ण और बृहत् आकार धारण कर चुका है। अिस काममें आज न केवल आदिम-जाति-सेवक-संघ या अिस प्रकारकी दूसरी संस्थाअें ही शरीक हैं, बल्कि करीब-करीब सभी राज्य-सरकारें और भारतकी केन्द्रीय सरकार भी अिसमें काफी योग दे रही है। अिसी तरह जब हरिजनोंकी सेवाका प्रश्न आया और अुनके लिअे संगठित रूपसे काम करनेके निमित्त हरिजन-सेवक-संघकी स्थापना की गअी, तब अुसमें भी अग्रगण्य ठक्करबापा ही रहे। यह काम भी आज केवल गैरसरकारी संघका ही न रहकर देशके शासकोंका भी हो गया है।

जिस समय महात्मा गांधी सन् १९३२ के सितम्बर मासमें यरवदा-जेलके अन्दर हरिजन-प्रश्नको लेकर अुपवास कर रहे थे और चिंताकी अुन घड़ियोंमें यह प्रयत्न चल रहा था कि किसी तरह कोअी अैसा रास्ता निकाला जाये जिससे कि हरिजनोंकी भलाअी हो और अुनके स्वत्वोंकी रक्षा हो और साथ ही महात्माजी अपने अुपवासको समाप्त करें, अुस समय ठक्करबापाने

जो काम हरिजनोंके हकमें किया वह चिरस्मरणीय रहेगा। हरिजन-सेवक-संघकी स्थापना हुअी तो अुसका भी काम अुन्होंने निष्ठापूर्वक चलाया।

जब भारतका संविधान बन रहा था, तब ठक्करबापाने बीहड़से बीहड़ स्थानोंमें जाकर आदिवासियोंकी हालत देखी और अुनके तथा हरिजनोंके हकोंकी रक्षाके लिअे संविधानमें आवश्यक धाराअें रखवाअीं।

अिस प्रकारके कामोंसे ठक्करबापा कभी थकते ही नहीं थे। देशके अेक-अेक कोनेका अुन्होंने चक्कर लगाया। आदिवासियोंका जो काम अुन्होंने भील-सेवा-मंडलकी स्थापना करके आरंभ किया, अुसको बढ़ानेके लिअे आदिम-जाति-सेवक-संघकी स्थापना की। अिस विषयका जितना व्यापक ज्ञान अुनको था, अुतना शायद ही और किसीको हो; क्योंकि शायद ही कोअी दूसरा हो, जो आदिवासियों और हरिजनोंके अिलाकोंमें अितना अधिक घूमा और अुनसे मिला हो। जीवन भी अितना सादा कि जिसके लिअे अितने कम खर्चकी जरूरत होती थी कि अुन पर मानो खर्च कुछ होता ही नहीं था। वृद्धावस्थामें, और बीमारीकी हालतमें भी, अुन्होंने तीसरे दर्जेको छोड़कर रेलवेके किसी अूपरके दर्जेमें शायद ही कभी मुसाफिरी की थी। जब हम यह सोचते हैं कि वे बराबर सफर करते ही रहते थे, तब समझमें आ जाता है कि वे अिस तरह कितने पैसे बचा लेते होंगे, पर साथ ही कितना कष्ट भी अुन्होंने सहन किया होगा। अेक तरफ तो अुनका हृदय अितना कोमल था कि दुखियोंका दुःख देखकर पिघल जाता था, दूसरी ओर अपने साथियोंसे काम लेनेमें वे अितने कड़े थे कि कभी-कभी कुछ लोग अिस संबंधमें अुनकी कुछ टीका-टिप्पणी भी करने लगते थे। पर बात यह थी कि जितनी सख्ती वे दूसरोंके साथ करते, अुससे कहीं अधिक सख्ती अपने साथ करते थे। अिसलिअे अुनकी सख्तीमें भी मिठास आ जाती थी और अुनके साथी हंसते-हंसते अुसे सह लेते थे। मरते दिन तक ठक्करबापा जन-सेवा-कार्यमें ही लगे रहे, और हमारे लिअे वे अेक अैसा आदर्श छोड़ गये हैं, जिसे अुन सब लोगोंको अपने सामने रखना चाहिये जो देश अथवा जनताकी सेवाको अपने जीवनका ध्येय बनाना चाहते हैं।

राष्ट्रपति भवन,
नअी दिल्ली,
१७ जनवरी, १९५५

ठक्कर कुटुम्बकी वंशावली

अनुक्रमणिका

ठक्करबापा

१
प्रास्ताविक

भारतवर्षके कअी लोगोंने अूंचे, मजबूत और कद्दावर शरीरवाले किन्तु फूल जैसे सुकोमल हृदयवाले अिस भव्य पुरुषको आसामके जंगलोंमें, बंगाल और अुड़ीसाके अकाल-पीड़ित गांवोंमें, गुजरातके भीलों और सौराष्ट्रके हरिजनोंमें, महाराष्ट्रके महारों और मद्रासके अछूतोंमें, छोटा नागपुरकी पर्वतमाला और थरपारकरके रेगिस्तानमें, हिमालयकी तलहटी और त्रावणकोरके समुद्र-तटके गांवोंमें पैदल घूमते देखा होगा। भारतवर्षका अेक भी प्रान्त अैसा नहीं होगा, जहां अिस दयामूर्ति पुरुषके पैर अेकसे अधिक बार न पड़े हों। पिछले पैंतीस वर्षसे भारतके अनेक भागोंमें वे कअी बार लगातार घूमे थे। द्वारकासे जगन्नाथपुरी तक, अटकसे कटक तक और हिमालयसे रामेश्वर तक भारत देशका कोना कोना अुन्होंने छान डाला था। भारतकी दसों दिशाओंमें अुन्होंने यात्रा की थी। परंतु ये यात्राअें अुन्होंने केवल देवदर्शनके लिअे नहीं, तीर्थस्थानोंमें भ्रमण करके पापपुंज धोनेके लिअे नहीं, विविध स्थानोंका देशाटन करके वहांकी नअी चीजें देखकर कुतूहल मिटानेके लिअे नहीं, परंतु अीश्वरकी बनाअी हुअी अिस सृष्टिके सबसे अधिक दीन-हीन-कंगालों, पीड़ितों, समाज द्वारा कुचले हुओं, कुदरती आफतोंमें फंसे हुओं, विधवाओं, बालकों और दुःखी निराधारोंकी सेवा करनेके लिअे, अुनकी आंखोंके आंसू पोंछनेके लिअे, अुनके दुःखित हृदयोंको सांत्वना देनेके लिअे, अुनके अुजड़े हुअे घरबारमें अन्न-वस्त्रकी सहायता पहुंचानेके लिअे, अुनके टूटे हुअे दिलों और पैरोंको स्वस्थ और मजबूत बनाकर अिस धरती पर फिरसे चलता-फिरता करनेके लिअे अेक बार नहीं, परंतु अनेक बार की थीं।

सौराष्ट्रके अेक कोनेमें लोहाणा जातिमें जन्म लेकर और प्रान्तकी दृष्टिसे गुजराती होते हुअे भी वे जातिके बाड़ों और प्रान्तवादके संकुचित घेरोंसे हमेशा परे रहे। अुनके निर्व्याज प्रेम, समदृष्टि और ममत्वपूर्ण जीवनके कारण बंगाली और आसामी, बिहारी और उत्कलवासी, महाराष्ट्री और कन्नड़, गुजराती और मारवाड़ी, भील-कोंडा जैसे आदिवासी और हरिजन आदि सारे प्रान्तोंके और हर तरहके लोग अुन्हें अपना ही आदमी मानते थे, क्योंकि सबके बीच वे जीवनके अंतिम

दिनों तक स्वजन बनकर रहे। अुनकी अच्छी-बुरी छाछ-कांजी पी। अुनकी झोंपड़ियोंमें जमीन पर सोकर रातें गुजारीं। आम लोगोंकी तरह ही सरदी, गरमी और बरसात सही। भूख, प्यास, थकान और जागरणकी परवाह किये बिना प्रसंगवश जो भी काम सामने आया, अुसे कर्तव्य-बुद्धिसे हाथमें लेकर पार लगाया। रेलवेके तीसरे दर्जेकी मुसीबतोंवाली सैकड़ों मीलकी लम्बी यात्राअें कीं। धूलके बगूले अुड़ानेवाले और अूपर अुछालकर नीचे पटकनेवाले गाड़ोंकी थकानेवाली और हड्डियां ढीली कर देनेवाली मुसाफिरी भी की। जलमें, थलमें, रेलमार्गसे, गाड़ीके रास्ते, तंग रास्ते, खच्चर पर और अूंट पर बैठकर, नावमें बैठकर, पैदल चलकर — अिस प्रकार विविध ढंगसे और विविध वाहनोंमें बैठकर अुन्होंने हजारों मीलके सफर किये और अीश्वरीय दूतकी भांति कंगालों और निराधारोंकी झोंपड़ियोंमें ठीक समय पर पहुंचकर अुन्हें मुसीबतमें मदद पहुंचाअी। दुःख और आफतकी पुकार कान पर पड़ते ही देशके दूर दूरके स्थानों पर भी वे सबसे पहले पहुंच जाते और दुःखमें फंसे हुअे मनुष्योंको मदद देकर अुनके सुख-दुःखके साथी बनते। अुन्होंने हजारों गरीबों और निराधारों, अछूतों और आदिवासियोंके अंधकारमय जीवनमें आशाका प्रकाश पहुंचाया है।

अैसे प्रथम श्रेणीके मानव-सेवकको कौन नहीं पहचानेगा? सबसे पहले अिंजीनियर ठक्कर, बादमें समाजसेवक ठक्करसाहब, अिस प्रकार आगे बढ़ते हुअे हरिजनों और भीलोंकी सेवा करते-करते अुन्होंने गांधीजीके हाथों 'ढेड़ोंके गुरु' का अुपनाम पाया। और फिर देशके विविध प्रान्तोंमें अकाल-कष्टनिवारण और दूसरे मानवसेवाके काम करते-करते अन्तमें 'बापा' की प्यारभरी पदवी प्राप्त कर ली। हरिजन और आदिवासी अुन्हें बापा कहकर पुकारें यह तो ठीक, परंतु अूंचे वर्गोंके लोग भी अुन्हें 'बापा' नामसे ही जानते और अिसी तरह सम्बोधन करते। जैसे राष्ट्रपिता गांधीजीका 'बापू' नाम भारत भरमें प्रचलित हो गया, वैसे ही ठक्करबापाका 'बापा' नाम भी सारे भारतमें चल पड़ा। खुद गांधीजीने भी अुन्हें 'बापा' कहकर लोगोंकी दी हुअी अिस पदवी पर अपनी आखिरी मुहर लगा दी।

मोटी खादीकी धोती, वैसा ही सादा खादीका कुर्ता, अूपर मोटे गरम पट्टूकी बंडी, सिर पर अूंची दीवालकी चौतारी टोपी और पैरोंमें सादे और मजबूत चप्पल पहने हुअे कठिनाअियोंका वीरतासे सामना करनेवाले अुस पुरुषको देखते ही अैसा लगता, मानों मूर्तिमान सादगी मनुष्यदेह धारण करके आअी हो। अुनका सादा आहार-विहार और निरभिमानी रहन-सहन, गरीबसे गरीबके साथ तन्मय हो जानेकी तीव्र अभिलाषा और अुसे पूरा

करनेकी शक्ति — अिन सब गुणोंने अुन्हें मानव-सेवकोंकी पंक्तिमें अग्रस्थान दिलाया है। अुनके लंबे-चौड़े और मजबूत सीनेमें और गर्जना करनेवाली आवाजमें पौरुषकी झलक मिलती, मगर अुनके भव्य कपालके नीचे सुंदर चेहरेमें चमकती हुअी आंखोंके भीतर राजपूतोंकी शौर्यभरी अुद्दण्डता नहीं, रोमन योद्धाओंकी आग बरसानेवाली तेजस्विता नहीं, परंतु अीसा मसीहकी आंखोंमें भरी अनुकंपाकी झांकी देखनेको मिलती। बुद्धके चक्षुओंमें जो करुणा थी अुस करुणाका अंश अुनकी आंखोंमें नजर आता था। गांधीजीकी आंखोंसे जो प्रेम झरता था, वही प्रेम ठक्करबापाके नेत्रोंसे झरता हुआ दिखाअी देता था। अिसी प्रेम और करुणाके बल पर अुन्होंने अपने जीवनके पैंतीस वर्ष तक गरीबोंके आंसू पोंछे और अुनकी अथक सेवा करके अुनके दिल जीत लिये।

अितना होते हुअे भी ठक्करबापा सब भूलोंसे परे और सर्व रागद्वेषसे रहित मानवेतर देवता नहीं थे। वे मानव थे और मानव-सहज गुणदोष अुनमें भी थे। फिर भी विरासतमें मिले हुअे दोषोंको दबानेका पुरुषार्थ करके और गुणोंका विकास करके वे अुच्चसे अुच्च कोटिके मानव-सेवक बन सके। और यह अुनकी तपश्चर्याका ही पुण्य प्रभाव था कि छोटे-बड़े सेवकों तथा कार्यकर्ताओंको प्रेरणा देकर वे सेवाकार्यमें लगा सके।

अेक प्रकारसे देखें तो कुछ घटनाओंको छोड़कर अुनके जीवनमें कोअी खास अद्‌भुत बात नहीं हुअी। कोअी बड़ी चमत्कारी घटना नहीं हुअी। पिछले सौ सालके अर्सेमें जो भी राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक नेता हुअे हैं, अुनकी बुद्धिशक्ति, अुनकी प्रतिभा, अुनके जैसा अद्‌भुत व्यक्तित्व वगैरा ठक्करबापाके जीवनमें नहीं पाया जाता। स्वामी विवेकानंद और दयानंद सरस्वती, दादाभाअी नौरोजी और सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी, लोकमान्य तिलक और गोपालकृष्ण गोखले, देशबंधु चित्तरंजनदास और मोतीलाल नेहरू, विट्ठलभाअी पटेल और वल्लभभाअी पटेल — अिनमें से किसीकी बुद्धि, किसीकी प्रतिभा, किसीकी प्रखर राजनीतिज्ञता या किसीकी वाक्‌पटुता ठक्करबापाको नहीं मिली। सुभाषचंद्र बोस और जवाहरलाल नेहरूके जीवनमें जैसे अद्‌भुत और रोमांचकारी प्रसंग अुपस्थित हुअे, वैसे प्रसंग ठक्करबापाके जीवनमें दिखाअी नहीं देते। अिसके विपरीत अुनके जीवनका प्रवाह बिलकुल शांत, सरल, सीधा-सादा, मदानमें बहनेवाली नदी जैसा रहा है। सूर्य आकाशमें अुगता है, अूंचा चढ़ता है, सांझ पड़ने पर परछाअियां फैलाता हुआ ढलता जाता है और अिस तरह अपना कर्तव्य पूरा करके अन्तमें अस्त हो जाता है — अुसी तरहकी सीधी रेखा बापाने अपने जीवनमार्गमें खींची

है। फिर भी अस्थिरताके अिस युगमें अुन्होंने अनेकको छोड़कर अेककी भक्ति की, जीवनके अैतिहासिक क्षणमें जो काम हाथमें लिया अुसमें जीवनके अंत तक निरन्तर वफादारीके साथ जुटे रहे और जरा भी पीछे हटे बगैर अत्यंत धीरज, लगन और अुत्साहसे आखिर तक काम जारी रखकर अन्तमें अुसे पार लगाया। क्या यही अपने-आपमें अेक बड़ा चमत्कार नहीं?

पैंतीस वर्षका सतत सेवामय जीवन — और वह भी अैसे क्षेत्रमें जहां कीर्तिकी, यशकी, अूंचे माने जानेवाले स्थानकी कमसे कम, नहीं, जरा भी गुंजाअिश न हो — ठक्करबापा जैसे कोअी बिरले ही मानव-सेवक जी सकते हैं। और पैंतीस वर्षके निष्काम कर्म और सेवाके अंतमें जब बिन मांगी कीर्ति अुनके सिर आ पड़ी तब अुस कीर्तिके बोझके नीचे बापा कैसे दब गये थे? अुस अवसर पर वे अितने घबरा गये थे कि वहांसे भाग निकलनेका अुनका जी हो गया। अस्सी वर्ष पूरे करके जब अुन्होंने अिक्कासिवें वर्षमें प्रवेश किया, तब समस्त राष्ट्रने अुनकी जयंती मनानेका निश्चय किया। और अुस दिन जब अुन्हें अभिनंदन देनेका समारोह दिल्लीमें मनाया गया, तब वे कितने परेशान हो गये थे, यह तो अुस महान अवसर पर प्रत्यक्ष अुपस्थित रहनेवाले ही जानते हैं। अुन्होंने अुस समय कहा था, "मेरा शरीर यहां है, परंतु हृदय तो दूर दूरके गांवोंमें है। यहां योगीराज और अैसे ही दूसरे बड़े बड़े विशेषण मेरे नामके साथ जोड़े गये हैं। मगर मैं तो योगीराज भी नहीं और महापुरुष भी नहीं हूं। मैं अेक पामर प्राणी हूं और दूसरे सब मनुष्योंकी तरह मानव-सहज दोषोंसे भरा हुआ हूं।"

अपने जीवनमें कीर्ति और सम्मानके शिखर पर पहुंचे हुअे बापा जब समस्त देश अुन पर अभिनंदनकी वर्षा करता है और अुनके सेवामय जीवनके कार्य पर फूल बरसाता है, तब न मनमें खुश होते हैं और न गर्वसे फूल जाते हैं, परंतु अंतर्निरीक्षण करके अपनेको 'पामर प्राणी' बताते हैं और 'मोसम कौन कुटिल खल कामी" भजनकी यह लकीर अुद्धृत करके अपने हिमालय जैसे गुणोंको अेक तरफ रखकर तिल जैसे दोषोंको सामने रखते हैं। अैसे महान प्रसंग पर हर्षावेशमें आकर जीवनकी कृतकृत्यता अनुभव करनेके बजाय अपने दोष सामने रखकर विनम्रताकी अुपासना करनेवाले पुरुष ठक्करबापा जैसे बिरले ही हो सकते हैं।

हमारे युगमें गांधीजी और टैगोर, सर जगदीशचंद्र और सी० वी० रमण, सरदार वल्लभभाअी और जवाहरलालजी जैसे अपने-अपने क्षेत्रमें चोटी पर पहुंचे हुअे हैं, वैसे ठक्करबापा भी अपने मानवसेवाके और विशेषतः

आदिवासियों और हरिजनोंकी सेवाके क्षेत्रमें चोटी पर पहुंचे हुअे हैं। पैंतीस वर्षकी अवधिमें लगातार सेवा करनेवाला अिनके जैसा दरिद्रनारायणका सेवक गांधीजीको छोड़कर दूसरा कोअी नहीं निकला। अिनके सेवामय जीवनके लम्बे अर्सेमें अिनके मार्गमें अनेक बार स्तुति और कभी कभी निन्दा भी आअी। लेकिन निन्दासे वे कभी घबराये नहीं और स्तुतिसे फूले नहीं, बल्कि अुससे दूर ही रहे।

राजनैतिक आंधीके अिस जमानेमें अनेक प्रकारके चमकदार, आकर्षक और धांधली भरे कार्य अुनके सामने आ खड़े हुअे, और तरह तरहके आकर्षण अुपस्थित करके अुन्हें अिस दिशामें खींचनेके प्रयत्न होने लगे। लेकिन अेक बार निश्चित किये हुअे कार्यक्रमसे वे कभी विचलित नहीं हुअे। सत्याग्रहकी लड़ाअियोंमें कुछ मौके अैसे आ गये, जब भील-सेवाके मूक कार्यको छोड़कर अुनके अनेक साथी रणभेरी सुनते ही लड़ाअीमें शरीक हो गये। जेल गये। अुन पर बापाको पुत्रवत् प्रेम था और वे लोग बीस-बीस वर्ष तक भीलोंकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा ले चुके थे। लेकिन अैसे साथियोंका प्रेम और ममत्व भी अुन्हें लड़ाअीकी तरफ नहीं खींच सका; और अपने लिअे अंकित की हुअी परिधिसे अुन्हें विचलित नहीं कर सका। फिर भी जब विदेशी सरकारके अधिकारियोंने अपने पैदा किये हुअे तूफानमें अिन्हें फंसानेकी कोशिश की, तब अुससे बचनेका प्रयास न करके अुन्होंने साहसपूर्वक अुसका सामना किया और आये हुअे परिणामका निःस्पृहतासे स्वागत करके जेल भी बर्दाश्त की।

बापाने किसी भी तरहकी धूमधाम किये बिना लगभग मूक रहकर ही काम किया। अुन्होंने अेक रातमें आम खड़ा करनेकी कोशिश न करके धीरे-धीरे परंतु व्यवस्थित रीतिसे काम किया और बूंद-बूंद सरोवर भरकर कंकर-कंकर पाड़ बांधनेका पुरुषार्थ कर बताया।

पैंतीस वर्ष पहले अुनके बोये हुअे सेवाके बीज आज वटवृक्षके रूपमें खूब फूल-फल रहे हैं। दाहोद और दिल्लीके अुनके सेवामय जीवनकी परागरेणु अुड़कर भारतभरमें फैल गअी है। जिस प्रान्तमें जाअिये अुसीमें वह नवप्रफुल्लित पुष्पवृक्षकी तरह खिल अुठी है। सारे भारतमें छोटी बड़ी सेवासंस्थाओंकी अनेक पुष्पवाटिकाअें अुनके सेवारूपी फूलोंकी सुगंधसे महक अुठी हैं और भारतके अढ़ाअी करोड़ आदवासी, पांच करोड़ हरिजन तथा देशकी अन्य पददलित और पिछड़ी हुअी जातियोंके जीवनमें सुगंध फैला रही हैं। दरिद्रनारायणकी सेवा करनेमें बापाने अपनी काया चंदनकी तरह घिस डाली। दूसरोंके जीवनमें ज्योति जगानेके लिअे स्वयं अपने जीवनका तेल वे खतम कर

चुके। और कौन जाने अब अिस जर्जरित देहसे मनचाही तीव्रतासे भारतके दीन-दुखियोंकी सेवा नहीं हो सकती, अिस खयालसे नअी देह धारण करके फिर अिस भूमि पर अवतार लेनेके लिअे ही वे भवसागरके अुस पार गये हों।

भावनगरके अंधेरे कोनेमें आजसे अिक्कासी वर्ष पहले अुनका जन्म हुआ, तब कोअी यह बात नहीं जानता था। परंतु अिक्कासी वर्षकी आयु पूरी करके जब वे गये, तब भारतके लाखों मनुष्योंने अुनकी मृत्यु पर आंसू बहाये और सैकड़ों शहरों और हजारों गांवोंने अुनकी आत्माको श्रद्धांजलि अर्पित की। यह अुनकी राष्ट्रव्यापी लोकप्रियताका प्रमाण है।

सौराष्ट्रकी भूमि बहुरत्ना कहलाती है। अितिहासके आदिकालसे लेकर अब तक अुसने अनेक मानव-रत्नोंको अपनी कोखसे जन्म दिया है। अनेक विभूतियोंने यहां अपनी कार्यलीलाका विस्तार करके अिस भूमिको पावन किया है। श्रीकृष्ण भगवान्ने अपने पुनीत चरणोंसे अिस धरतीको पवित्र बनाया है। गांधीजी जैसे युगपुरुष अिसी भूमिमें पैदा हुअे। दयानंद सरस्वती जैसे प्रखर धर्म-सुधारक और नरसिंह महेता जैसे भक्त-कवि भी अिसी मिट्टीमें पैदा हुअे। अनेक संत-महंतों और अैसे शूरवीर पुरुषोंको, जिनकी ख्याति चारों युगमें बनी रहेगी, जन्म देनेवाली सौराष्ट्रकी भूमिने ही ठक्करबापा जैसे बिरले मानव-सेवकको जन्म दिया। यह सौराष्ट्रके लिअे ही नहीं, परंतु गुजरातके लिअे और जिस भारतभूमिमें अुन्होंने काम किया अुसके लिअे भी गौरवकी बात है। अुनके जीवनसे श्री किशोरलाल मशरूवाला और दादा-साहब मावलंकरसे लेकर रूपाजी भाअी परमार और लालचंदभाअी मीनामा जैसे अनेक नेताओं, कार्यकर्ताओं और सेवकोंको प्रेरणा मिली है। पैंतीस वर्ष तक अखंड सेवाका यज्ञ चलानेवाले अिस महापुरुषकी जीवनगाथा अिस पीढ़ीको ही नहीं, परंतु आगे आनेवाली पीढ़ियोंको भी सेवाकी ज्योति जलती रखने और दूसरोंके लिअे अपनेको मिटाकर काम करनेकी प्रेरणा देती रहेगी।

ठक्करबापाके जीवनका आलेखन करनेसे पहले अुनके जीवनका मर्म समझनेकी मैंने कोशिश की, तो अचानक मुझे कबीर साहबकी नीचेकी साखी याद आ गअी :

कहत कबीर कमालको दो बातां सीख ले,
कर साहबकी बन्दगी भूखेको अन्न दे।

सौराष्ट्रकी धरतीसे, अुसकी संत-परंपरासे और साथ ही वैष्णव पितासे अुत्तराधिकारमें मिली हुअी ये दो बातें — साहबकी बन्दगी करना और

भूखोंको अन्न देना -- बापाने बहुत अच्छी तरह सीखीं ही नहीं, बल्कि अपने जीवनमें आत्मसात् कर ली थीं। बापाकी जीवन-पुस्तकके पन्ने-पन्ने पर अिन दो बातोंका बार-बार आलेखन हुआ दिखाअी देता है।

अिसलिअे कबीर साहबकी अिस साखीको सतत आंखोंके सामने रख कर, अिन पंक्तियोंको ही ध्रुव तारा मानकर, ठक्करबापाके सेवामय जीवनको शब्ददेह देनेका यहां नम्र प्रयास किया गया है।

२

जन्म और बचपन

सौराष्ट्रके प्रथम श्रेणीके माने जानेवाले शहर भावनगरमें खार दरवाजेसे होकर आगे जाने पर नानभा गली आती है। अुस संकड़ी गलीसे गुजरकर सौ सवा सौ कदम आगे चलें तो वसाणी मुहल्ला आता है। अिस वसाणी मुहल्लेमें अुत्तर-दक्षिण द्वारवाला अेक तिमंजिला मकान खड़ा है। आज-कल अुसकी पहली मंजिलमें खली और बिनौलेकी दुकान लगती है। परंतु आजसे अिक्कासी वर्ष पहले अैसा नहीं था। आज जो तिमंजिला मकान खड़ा है, अुसकी अुस समय दो ही मंजिलें थीं। तीसरी मंजिल पर छत और छत पर अेक तरफ अेक छोटीसी बंगली थी। और खली और बिनौलेकी दुकानकी जगह कुटुम्बकी स्त्रियोंके रहने-बैठनेकी जगह और भोजनालय था।

अिस मकानमें विट्ठलदास लालजी ठक्कर नामके अेक साधारण स्थितिके किन्तु प्रतिष्ठित सज्जन रहते थे। अुनके यहां अिसी घरमें २९ नवम्बर, १८६९ को अमृतलाल ठक्कर -- ठक्करबापा -- का जन्म हुआ था। अस्सी-पचासी वर्ष बाद भी यह मकान अुसी स्थान पर खड़ा है। अब अुसमें बहुतसे फेरबदल अवश्य हो गये हैं, फिर भी अस्सी-पचासी वर्ष पहले यह मकान कैसा होगा, अुसकी कुछ कल्पना देने लायक अुसका पुराना स्वरूप अभी तक कायम है।

लोहाणा जातिके पुरखे मूलमें तो पंजाबकी तरफसे आये, अैसा कहा जाता है। और लोहाणा लोग अपनेको भगवान् रामचंद्रजीके पुत्र लवके वंशज बताते हैं। अुनके कथनानुसार सैकड़ों वर्ष पहले अुनके बापदादा क्षत्रिय कुलमें पैदा हुअे थे। परन्तु समय पाकर परिस्थितिवश अुन्होंने क्षत्रियका धंधा छोड़कर व्यापार-वाणिज्यमें प्रवेश किया। तबसे लोहाणा जाति व्यापारी जातिके रूपमें ही प्रसिद्ध है। सारी जाति अधिकतर व्यापार-रोजगारमें ही

लगी हुअी और खास तौर पर बम्बअी प्रान्तमें ही बसी हुअी है। वह मुख्यतः तीन शाखाओंमें बंटी हुअी पाअी जाती है। कच्छी, हालारी और घोघारी। पंजाबसे आकर जो पहले-पहल कच्छमें बसे और वहीं स्थिर हो गये, वे कच्छी लोहाणा कहलाये। अिससे आगे बढ़कर जो हालारमें बसे वे हालारी कहलाये और जो धोलेरा, घोघा, भावनगर वगैरा बन्दरगाहों तक पहुंचकर आसपासके विस्तारमें फैल गये वे घोघारी लोहाणा कहलाये।

ठक्करबापाने जिस कुटुम्बमें जन्म लिया वह घोघारी शाखाका कुटुम्ब था। भावनगरमें अिस शाखाका अड्डा था। अब भी अकेले भावनगरमें ही पांच साढ़े पांच सौ घोघारी लोहाणा परिवार रहते हैं।

लोहाणा जातिने शुरूसे ही प्रवासी, साहसी, व्यापारके लिअे समुद्रकी यात्रा करनेवाले और होशियार व्यापारी पैदा किये हैं। अिस जातिके सपूत व्यापारके लिअे सीलोन, ब्रह्मदेश, मलाया, सिंगापुर, चीन, अफ्रीका और युरोप वगैरा नौखंड धरतीमें पहुंचे हैं। और अनेक प्रकारके साहस करके छोटे बड़े व्यापार-रोजगार वहां अुन्होंने जमाये हैं। अिस जातिमें जिसे शिक्षा कहा जा सकता है, अुस प्रकारका ज्ञान भले ही कम हो, पर अैसा लगता है कि हिसाब-किताबका काम अुसने पहलेसे ही पक्का कर रखा है। बहुत ही पुरानी किस्मकी पाठशालामें दो चार किताबें पढ़कर, साधारण लिखना-पढ़ना सीखकर, तथा बहीखाते और हिसाबका ज्ञान प्राप्त करके वे सीधे व्यापारमें कूद पड़ते हैं। और ज्ञानकी अितनी सी पूंजी पर लाखोंका व्यापार जमाकर विपुल धन कमाते हैं। अूपर बताअी हुअी मामूली विद्या पढ़कर, हाथमें लोटा-डोर लेकर विदेश जाने और खूब धन कमानेवाले लोगोंके अुदाहरण लोहाणा जातिमें अनेक मिलेंगे।

अितने पर भी लोहाणा जातिके अधिकांश लोगोंकी स्थिति साधारण ही रही है। फुटकर व्यापार, नौकरी या मुनीमी ही अुनका धंधा रहा है। ठक्करबापाके पिता विट्ठलभाअी लालजी भी कुछ वर्षों तक भावनगरमें लखपति माने जानेवाले लोहाणा जातिके ही अेक सेठ रघुभाअी डाह्याभाअीकी दुकान पर पच्चीस रुपये मासिक वेतन पर मुनीम थे। बीच बीचमें कभी सट्टेका कामकाज भी करते। फिर भी अैसा नहीं मालूम होता कि लक्ष्मीदेवीकी अुन पर कोअी खास कृपा रही हो। अन्त तक अुनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही सामान्य रही। अिस प्रकार रुपयेकी दृष्टिसे अपने कुछ दूसरे जाति-भाअियोंमें वे बहुत पीछे थे, लेकिन प्रतिष्ठामें वे सबसे आगे थे। भावनगरकी घोघारी लोहाणा जातिके वे सर्वप्रथम नेता थे और नेताके रूपमें बड़े सेठ भी अुनका आदर करते थे। अुनके जैसा जातिसेवक और जातिका नेता

लोहाणा जातिमें दूसरा नहीं था। अुनके बनाये हुअे जातिके नियम और रीति-रिवाज आज भी थोड़े-बहुत परिवर्तनके साथ प्रचलित हैं।

विट्ठलदास ठक्करके ही अेक भाअी ओधवजी लालजी ठक्करकी गणना भावनगरके धनवानोंमें होती थी। अमरीकामें अुस समय जो गृहयुद्ध हुआ, अुसमें अुन्होंने रुअीके व्यापारमें खूब पैसा कमाया था। और तबसे वे जातिमें श्रीमन्तके रूपमें आगे आ गये थे। अुसके बाद अपनी प्रतिष्ठाके अनुरूप बड़े ठाटबाटवाले महल बनवाकर पूरे ठाटसे वे भावनगरमें रहते थे। अुस जमानेमें अपना मकान होना अेक सामाजिक भूषण माना जाता था। भले साधारण स्थितिका हो, परंतु अपना मकान सामाजिक प्रतिष्ठा और हैसियतका माप-दंड माना जाता था। मां-बाप अपनी कन्याकी सगाअी करनेके लिअे वरकी तलाश करते, तब पहले अिस बातकी जांच करते कि कुल प्रतिष्ठित है या नहीं और अुसका अपना मकान है या नहीं; वरकी योग्यता और गुण-अवगुण बादमें देखे जाते थे।

कुटुम्बके अेक भाअीके पास बड़े बड़े महल हों और दूसरे भाअीके पास कुछ न हो, यह अनुचित माना जायगा, अैसा ओधवजीको अुस समय महसूस हुआ होगा। अिसलिअे अुन्होंने हजार पंद्रह सौ रुपया खर्च करके वसाणी मुहल्लेमें स्थित यह मकान खरीदकर भाअीको दिया था। तबसे विट्ठलदास ठक्कर अिस मकानमें अपने कुटुम्बके साथ रहते और सुख और संतोषपूर्वक अपना जीवन बिताते थे। अिसी मकानमें जड़ीबहन, परमानंद, अमृतलाल, मगनलाल, मणिलाल, केशवलाल और नारायणजी वगैरा बालकोंका जन्म हुआ था। विट्ठलदास ठक्करके यहां अिस प्रकार अेक लड़की और छः लड़के मिलकर कुल सात सन्तानें हुअी थीं; और सभी अिस घरमें जन्म लेकर बड़े हुअे थे। यहां रहकर वे पढ़े-लिखे थे। अिसलिअे अिस मकानके प्रति सभी भाअी-बहनोंको और खास तौर पर अमृतलाल ठक्करको विशेष अनुराग था। वसाणी मुँहल्लेके अिस मकान, अुसके पड़ोसके लोगों और वातावरणके प्रति वे खूब ममता रखते थे। अपने जीवनकी अुत्तरावस्थामें ठक्करबापा जब कभी भावनगर जाते तब अिस मकान और वसाणी मुहल्लेको देखनेकी अिच्छा अवश्य प्रदर्शित करते। और अुस समयके अपने बचपनके स्नेहियों, साथियों, संबंधियों और पड़ोसियोंको प्रेमसे याद करते और अुनमें कोअी जीवित होता तो अुससे मिलकर संतोष और प्रसन्नता अनुभव करते।

अपनी मृत्युके लगभग अेक दो वर्ष पहले अर्थात् सन् १९४८ में वे अेक बार भावनगर आये थे, तब अपने भतीजे श्री कपिलराय ठक्करको साथ लेकर अिस वसाणी मुहल्लेमें गये थे। अपना बचपन जहां बीता था वह

जूना-पुराना मकान और अुसके आसपासका वातावरण देखकर अुनकी आंखोंमें हर्षाश्रु छलक आये थे। जीवनकी संध्याके किनारे पहुंचे हुअे ठक्करबापा अुस दिन अपने अेकके बाद अेक साथियों, सम्बन्धियों, भाअी-भतीजों और अड़ोसी-पड़ोसियोंको नाम लेकर अिस तरह याद करते थे, मानों अपने बचपनके दिन फिरसे ताजा कर रहे हों। और अत्यन्त प्रेम और ममतासे अुनके समाचार पूछते थे। अुस समय सत्तर-अस्सी वर्ष पहलेका जमाना अुनकी आंखोंके आगे खड़ा हो रहा था और अैसा मालूम होता था मानों अुस समयके आदमी जीते-जागते बनकर अुनके कल्पना-चक्षुके सामने चल-फिर रहे हों।

चांदनीके अुजालेमें वसाणी मुहल्लेमें बैठकर चरखा कातनेवाली बेचारी अंधी पानी काकी; शुक्रवारके दिन भुने हुअे चने और मूंगफली बेचनेवाला गीगा चनेवाला; मुहल्लेके नुक्कड़ पर जहां गलीके बच्चे शौचके लिअे बैठते वहां गंदगीमें बैठकर ठण्ड मिटानेवाला वह ढेड़ोंका गुरु; सबेरेके समय अुठकर बहुत जल्दी भजन गानेवाले और बाहर चबूतरे पर बैठकर मशीनकी घरघराहट मचानेवाले मेराअी करसन भगत वगैरा अनेक पात्रोंने अमृतलालके बाल और किशोर-मानस पर चिरस्थायी असर किया था। और अिसीलिअे अस्सी-अस्सी बरस बीत जाने पर भी वह जमाना और वे दिन अुनके मनमें कल जैसे ही ताजा थे। अुनकी याद आते ही आज भी ठक्करबापाका हृदय भावनासे भरपूर हो जाता और आंखें छलछला आती थीं।

अस्सी वर्ष पहलेका जमाना और अस्सी वर्ष पहलेका जीवन! कैसा था वह जमाना और कैसे थे वे दिन?

सबेरे तड़के ही जब बालक अमृतलाल और अुनके भाअी-बहन अूपरकी मंजिलमें सोते रहते, सामनेके घरसे भगत करसन मेराअी प्रभाती गाना शुरू करता और फिर शौचादिसे निपटकर और दातुन-कुल्ला करके काममें लगता। अुस समय घरके बड़े लोग अुठते। विट्ठल बापा अुठकर प्रभाती गाते। मूली मां भी अुठकर हाथ-मुह धोती और प्रातःकर्मसे निवृत्त होकर रातके बरतन मांजती, आटा पीसती, कचरा बुहारती, पानी भरकर लाती और प्रातःकालके दूसरे कामोंसे फारिग होकर हवेली पर दर्शन करने जाती। अितने समयमें बच्चे भी जाग अुठते और दातुन-कुल्ला करके पाठशाला जानेको तैयार हो जाते।

सुबहका अुजाला होने पर दर्जी भगत करसन मेराअी घरके बाहर मशीन निकालकर चबूतरे पर जमाता और अुसका सिलाअीका काम शुरू होता। सुबहसे लेकर शामको देर तक अुसकी मशीनकी घरघराहट जारी रहती।

विट्ठल बापा यों तो धर्मप्रेमी और श्रद्धालु जीव थे। भगवान्‌के दर्शन करने नित्य हवेली जाते। घर पर भी ठाकुरजीकी मूर्ति थी। फिर भी धर्मके बारेमें अुनकी कल्पनाअें दूसरी ही थीं। कअी बार बहुत ही तड़के करसन भगत भजनका राग आलापकर सारी गलीको जगा देता, तब अुसे धमका कर वे अुसकी खबर ले डालते। अुनकी यह मान्यता थी कि धर्मका आचरण भी अिस प्रकार होना चाहिये कि दूसरे लोगोंको असुविधा न हो, अुनके जीवनमें खलल न पहुंचे। अिस मान्यताके कारण वे कअी बार दर्जी करसन भगतको डांटकर कहते कि 'अितनी जल्दी सबेरे, जब सब जीव सोये हुअे हों, जोरसे भजन गाकर अुनकी नींदमें खलल डालनेसे पाप लगता है। अिसलिअे तुम या तो कुछ देरसे अुठा करो अथवा प्रभाती धीरे धीरे गाओ। धीरे गानेसे क्या अीश्वर तुम्हारा भजन नहीं सुनेगा?''

दर्जी करसन भगतके बाद अिस मुहल्लेमें सबसे ज्यादा ध्यान खींचनेवाली पानी काकी थी। वह बेचारी छोटी अुम्रमें विधवा हो गअी थी। अुसके अिकलौता बेटा था। लड़केको पाल-पोसकर बड़ा करके ब्याह दिया था, और घरमें बहू लाकर अुसने आरामकी सांस ली थी। भगवान्‌ने अितने समय बाद फिर सुखके दिन दिखाये, यह मानकर वह मनमें बहुत खुश होती थी। परंतु अुसका सुख बहुत दिन नहीं टिका। लड़का क्षयकी बीमारीमें फंस गया और थोड़े समयमें चल बसा। बहू घर छोड़कर दूसरेके यहां बैठ गअी और पानी काकी बेचारी अकेली रह गअी। दुर्भाग्यवश पिछली अवस्थामें वह अंधी हो गयी। बेचारी अंधी बुढ़िया चरखा कातती। कोअी अुसे टोकरी भरके पूणियां दे जाता, तो फुरसतमें बैठी बैठी बेचारी काता करती। और अुससे जो दो-अढ़ाअी आने रोज मिलते, अुनसे अपना गुजर चलाती।

पानी बुढ़िया अंधी हुअी तब घरमें कोअी दूसरा सहायक नहीं था। अंधी होने पर भी खाना पकाना और बर्तन-भांडे मांजना वगैरा घरकाम अुसे खुद ही करने पड़ते थे। सबेरे अुठकर बासी कामकाज निपटाकर, चूल्हा जलाकर मिट्टीकी हंडियामें खिचड़ी-कढ़ी या अैसी ही दूसरी कोअी चीज पका लेती। कअी बार रात पड़ जाती और सब सो जाते तब भी चंद्रमाके अुजालेमें बाहर मुहल्लेमें बैठकर वह आरामसे कातती ही रहती। बालक अमृतलालको अिस पानी काकीके प्रति विशेष अनुराग था। और अुसके दुःखी जीवनके प्रति अुसके बालहृदयमें सहानुभूति और दयाकी भावना थी। अेक जगह ठक्करबापा अिस पानी काकीको याद करके लिखते हैं कि "मेरी माता बहुत बार अिस अंधी बुढ़ियाकी मदद करती और अुसका सूत भी कात देती। अिससे मुझे हृदयमें बहुत आनंद होता और बेचारी पानी काकीके

लिअे दिलमें सहानुभूतिकी भावना प्रगट होती। पानी काकीकी मदद करनेके आशयसे अुसे अेक तरफ हटाकर अुसका चरखा कातती हुअी मेरी माताका चित्र आज भी मेरी आंखोंके सामने खड़ा हो जाता है।"

और सबेरे मुहल्लेको बुहारने आनेवाला वह म्युनिसिपैलिटीका भंगी, और रोज मांगने आनेवाला ढेड़ोंका गुरु? वे बेचारे अस्पृश्य थे। और अुन्हें अेक खास हदसे आगे आनेकी मनाही थी। ढेड़ोंका गुरु रोज रोटी मांगने आता और बेचारा वसाणी मुहल्लेके बच्चे जहां टट्टीके लिअे बैठते वहां गंदगीमें जाकर बैठता और बीड़ीके ठूंठ पीकर ठंड अुड़ाता। अुसे देखकर बालक अमृतलालके हृदयमें अनुकंपा होती। खयाल आता कि अिस बेचारेको अैसी गंदी जमीन पर कैसे बैठना पड़ता है। अिसके बजाय वह साफ जगहमें बैठे तो बेचारेको ठीक लगे। अिसलिअे अेक दिन माताके पास जाकर अुससे सिफारिश करते हुअे कहा, "अिस बेचारे गुरुको टट्टी जानेकी जगह बैठना पड़ता है। अुसे हमारे पत्थरके चबूतरे पर बिठायें तो कैसा रहे? अिसमे पत्थर तो अपवित्र हो नहीं जायगा?"

परंतु माता अैसी छुट्टी कैसे देतीं? तुम नही समझ सकते। वह वहां नहीं बैठ सकता। यह कहकर माता बालक अमृतलालको चुप कर देतीं। परंतु अुनके हृदयमें तो यह सवाल पैदा हो ही गया था। अितने पर भी छुआछूतका संस्कार अुनके मन पर भी पूरे जोरके साथ पड़ गया था। अिस सिलसिलेमें ठक्करबापा लिखते हैं:

"ढेड़ और अुनके गुरु तो अस्पृश्य ही हो सकते हैं। अुन्हें किसी भी तरह जानबूझकर छुआ नहीं जा सकता। भूलसे भी छू जायं तो नहाना पड़ता है और नहाना कभी न हो सके तो छींटे तो लेने ही पड़ते हैं। यह छाप मेरे मन पर अितने जोरसे डाली गअी कि बात न पूछिये।"

अिस भंगी और ढेड़ोंके गुरुके अलावा शुक्रवारके दिन सिर पर टोकरी रखकर भुने हुअे चने बेचने आनेवाला गीगा चनेवाला भी वसाणी मुहल्लेके बच्चोंके जीवनमें आप्तजन-सा बन गया था। अुसका बाप हिन्दू न रहकर खोजा बन गया होगा। वह बेचारा छोटी सफेद दाढ़ी रखता। सिर पर लटकते हुअे चिथड़ोंका अस्त-व्यस्त फेंटा बांधता। कमरके नीचे बड़े घेरवाला पाजामा पहनता और बदन पर फटा हुआ कुर्ता या कंधे पर खेस — अिस पोशाकमें चने, मुरमुरे और गुड़-पपड़ीकी टोकरी सिर पर रखकर रोज मुहल्लेमें आता। अुसके आने पर गलीके बच्चे अिकट्ठे हो जाते और घरमें

से पैसा-धेला जो कुछ मिल जाता सो लेकर अुससे चने, मुरमुरे, और गुड़-पपड़ी वगैरा खानेकी चीजें लेते। वह काफी बूढ़ा और शरीरसे कमजोर हो गया था। अिसलिअे गलीके शरीर बच्चे अुसे अकसर सताते। कोअी अुसका फेंटा खींचते, कोअी फटे हुअे कुर्तेमें से चिन्दी खींचते, कोअी दाढ़ीके बाल नोंचकर चले जाते। अिस प्रकार कअी तरह अुसे तंग करते। अैसा होता तब बालक अमृतलालकी मांके पास वह शिकायत करता और कहता, "मूली मां, देखिये तो ये आपके लड़के सताते हैं।" अिस पर मूली मां लड़कोंको डांटती और अूधम करनेसे रोकती। यह प्रसंग अुद्धृत करके ठक्करबापा लिखते हैं कि कहां अुस समयके गरीब खोजे और कहां आजकलके मालदार, अहंकारी और हमसे अलग हुअे खोजे!

अिस प्रकार बालक अमृतलालको बचपनसे ही गरीब और दुःखी लोगोंका जीवन देखने, अुनके सुख-दुःखका साक्षी बनने और अुनके दुःखोंमें हिस्सा बंटाकर मदद करनेमें तत्पर रहनेवाली माताके सुकृत्य आंखों देखनेके अवसर प्राप्त हुअे। और सहज रूपमें सेवाभावकी तरफ मोड़नेवाले संस्कार-बीज अुनके मनमें पड़ते गये। अिसका अुस समय तो अुन्हें पता भी नहीं होगा।

विट्ठलदास ठक्कर खुद गरीब थे, परंतु अुनके आसपासका समाज तो अुनसे भी अधिक गरीब था। अुन सब अड़ोसी-पड़ोसियोंकी स्थितिके मुकाबलेमें तो अुनकी स्थिति बहुत अच्छी मानी जायगी। अितने पर भी थोड़ी सी आयमें घरका काम चलाना पड़ता था। अिसलिअे घरमें नौकर-चाकरकी तो बात ही नहीं थी। खाने-पीने और रहन-सहनमें अत्यंत सादगी थी। घरमें दूध देनेवाला कोअी ढोर नहीं था। अुन दिनोंमें बिजलीके दिये नही थे और लालटेनें भी कहीं कहीं दाखिल हुअी थीं। घरमें सब तेलके दिये जलाते। विट्ठलदासके यहां बच्चोंको वही खुराक खानेको मिलती थी, जो साधारण स्थितिके लोगोंको खानेको मिलती थी। और कपड़े भी खास ब्याह-शादी और बार-त्यौहारके सिवाय सादे ही पहने जाते। अितने पर भी कुटुंबकी व्यवस्था अैसी सुन्दर थी कि सबके मुख पर अेक प्रकारकी संतोषकी भावना दिखाअी देती थी। अभावका दुःख शायद ही दिखाअी देता। कुटुम्बमें अेक प्रकारका सुख और मेलका वातावरण बना रहता।

३

माता-पिता

ठक्करबापाने अपने जीवनमें जिन चार महानुभावोंको गुरुपद पर स्थापित किया, अुनमें वे पिताको प्रथम गुरुके रूपमें मानते थे। यह अेक ही हकीकत अिस बातकी कल्पना अच्छी तरह दे देती है कि ठक्करबापाकी जीवन-रचना और जीवन-विकासमें अुनके पिता विट्ठलदास ठक्करका कितना बड़ा हिस्सा था। ठक्करबापामें जो भी अच्छाअी-बुराअी थी, अुसमें अधिकांश अच्छाअीका ही था और दोष तो नहींके बराबर थे। फिर भी जो कुछ था वह मुख्यतः पिताके गुण-अवगुणोंका अुत्तराधिकार था। पिताके गुण-दोषोंकी दृढ़ छाप दूसरे भाअियोंकी अपेक्षा ठक्करबापा पर सबसे ज्यादा पड़ी थी।

ठक्करबापा स्वयं ही अिस सम्बन्धमें कहते हैं:

"मेरे पिता परोपकारी, सत्यवर्तनशील, स्पष्टभाषी और व्यवस्थाप्रिय होने पर भी कुछ हद तक अुग्र थे। अुनके स्वभावकी अुग्रता और कड़ाअी मुझे विरासतमें मिली है। थोड़ीसी अुत्तेजनासे गुस्सा हो जाने और भड़क अुठनेकी आदत मुझमें भी आ गअी है। अिस आदत पर काबू पानेका मैंने काफी प्रयत्न किया है, फिर भी अभी तक पूरी तरह काबू नहीं पा सका हूं। किसी भी मनुष्यके लिअे अपना स्वभाव बदलना कितना कठिन होता है, अिसका मुझे निजी अनुभव है। अितने पर भी सत्य व्यवहार, स्पष्ट वक्तृत्व और व्यवस्थापूर्वक काम करनेकी आदत — पिताके ये तमाम सद्गुण मुझमें भी आये और अिससे मुझे खूब ही लाभ हुआ है।"

विट्ठलबापा कुटुम्बके शिरछत्र बुजुर्ग थे। सारे परिवार पर अुनकी गहरी छाप थी। स्वभावसे अुग्र होने पर भी वे अनुशासनप्रिय थे। कुटुम्बमें अुनकी धाक थी। अुनसे सभी डरते थे। और कुटुम्बमें किसीकी अैसा कोअी काम करनेकी हिम्मत नहीं होती थी जिससे वे बिगड़ें या नाराज हों। नहा-धोकर साफ रहने, कपड़े साफ और सुघड़ रखने, और घरमें हरअेक चीज अपनी-अपनी जगह रखनेका अुनका आग्रह था। ये सारे नियम वे स्वयं कड़ाअीके साथ पालते और घरके दूसरे सब आदमियोंसे पलवाते।

बादमें लड़के बड़े हो गये, अुनकी शादियां हो गअीं और आबादी बढ़ गअी तब भी घरमें तंगी होनेके बावजूद स्वच्छता, सुघड़पन और

व्यवस्था ज्योंकी त्यों बनी रही, यह पिता द्वारा बचपनमें आग्रहपूर्वक डाले हुअे संस्कारोंका ही नतीजा था।

मकान छोटा हो या बड़ा, जूते अुनकी जगह पर ही रखे जाने चाहिये, कपड़े अलगनी पर समेटकर या तह करके ही रखे जाने चाहिये, पुस्तकें और कागज सब संभालकर रखे जायं, रुपये-पैसेका हिसाब ठीक ठीक रखा जाय, आमदनी और खर्च दोनों पाअी-पाअी तक लिखे जायं, वगैरा बातें विट्ठलदास ठक्करके पुत्रोंने अुन्हींसे सीखीं और छुटपनमें ही अिन सबकी पक्की आदतें अुनमें पड़ गअीं।

विट्ठलदास ठक्कर अूपरसे कड़े दीखते थे, लेकिन भीतरसे अुनका हृदय बहुत ही कोमल और दयासे भरा हुआ था। वे बड़े ममतालु थे। फिर भी अपनी संतानोंको अुन्होंने कभी गलत लाड़ नहीं लड़ाये। वे पढ़-लिखकर जीवनमें आगे बढ़ें, रुपये-पैसेसे सुखी हों, समाजमें अुनका मान-मरतबा बढ़े, यह अुनकी महत्त्वाकांक्षा थी। वे खुद अंग्रेजी नहीं पढ़े थे, फिर भी अंग्रेजीकी पढ़ाअीका सामाजिक महत्त्व और आर्थिक लाभ वे अच्छी तरह समझते थे। अुनकी तमन्ना थी कि अुनके बच्चे अंग्रेजी पढ़ें, मैट्रिक पास करके कालेजमें जायं और वहां अूंची पढ़ाअी करके विश्वविद्यालयकी अूंची पदवियां प्राप्त करें। अिसलिअे अपनी गरीबीकी परवाह न करके, पेट पर पट्टी बांधकर, घरमें अनेक कठिनाअियां सहकर, पत्नीके गहने गिरवी रखकर और सिर पर कर्ज करके भी पुत्रोंको अुच्च अंग्रेजी शिक्षा देनेका संकल्प अुन्होंने किया और अन्तमें अपूर्व दृढ़तासे अुस संकल्पको पूरा किया।

अुनकी अिस तमन्ना और दृढ़ आग्रहके कारण अुनकी संतानोंमें से अेक अिंजीनियर, अेक डॉक्टर, अेक बी० अे० और अुनके पौत्रोंमें से दो अेम० अे० और अेक अेम० बी० बी० अेस० हुअे। जिस जमानेमें सौराष्ट्रमें लोहाणा जातिमें अंग्रेजी शिक्षामें बहुत कम लोग रस लेते थे और घोघारी लोहाणोंमें केवल दो ही आदमी मैट्रिक तक पहुंचे थे, अुस जमानेमें अंग्रेजी शिक्षाकी अुपयोगिताके विषयमें विट्ठलदास ठक्कर यह खयाल रखते थे। अिसीलिअे पेट पर पट्टी बांधकर अथवा कर्ज करके भी पुत्रोंको अंग्रेजी पढ़ानेका अुन्होंने संकल्प किया था। और वह संकल्प आगे चलकर पूरा भी किया। साथ ही अुन्होंने यह संकुचित और स्वार्थी दृष्टि भी नहीं रखी कि अंग्रेजी शिक्षाका लाभ केवल अुनके पुत्रोंको ही मिले अथवा कुटुम्बके अिने-गिने आदमियोंको ही मिले। अुस जमानेमें सेवाके क्षेत्रकी जो परम्परा चली आ रही थी, अुसकी सीमामें रहकर अुन्होंने अपने जातिभाअियोंके बच्चोंके लिअे पढ़नेकी सुविधा पैदा करनेका प्रयत्न किया था। अिसके लिअे जीवनकी अुत्तरावस्थामें

भावनगरमें लोहाणा जातिके विद्यार्थियोंके लिअे लोहाणा छात्रालय शुरू किया और अुसके संचालन और देखरेखका काम अपने हाथमें रखा। अिस प्रकार जातिके सैकड़ों विद्यार्थियोंकी पढ़ाअी जारी रखनेमें वे सहायक हुअे थे। पर छात्रालयकी स्थापना और विकासमें अुन्होंने जो महत्त्वपूर्ण योग दिया, अुसकी तफसीलमें जानेसे पहले अुनके हृदयके मुख्य गुणों — दयाभाव और मानव-प्रेमको प्रगट करनेवाले अेक दूसरे प्रसंगका यहां अुल्लेख कर दें।

सन् १९०० में भयंकर अकाल पड़ा। गुजरातके अनेक भागोंमें अुसका असर हुआ। घासके अभावमें हजारों पशु मर गये और अन्नके बिना मनुष्य भी बहुत मरे। कुछ गरीब और निराधार लोगोंको तो पेड़ोंके पत्तों और थूहरके डोड़ों पर गुजर करनेकी नौबत आअी। भावनगर और अुसके आसपासके प्रदेशमें भी छप्पनके अिस अकालका भयंकर असर पड़ा। देहातके लोग अनाज और कामकी तलाशमें सैकड़ोंकी संख्यामें आकर भावनगरमें अिकट्ठे होने लगे। अिन लोगोंमें लोहाणा जातिके आदमियोंकी संख्या भी काफी थी। विट्ठलदास ठक्कर जातिके नेताके रूपमें अिन सबकी सहायता करते। परन्तु अैसी सहायता छोटे पैमाने पर कारगर साबित नहीं हो सकती, यह बात थोड़े ही समयमें अुनकी समझमें आ जानेसे अुन्होंने अकाल-पीड़ित ज्ञातिबंधुओंके लिअे अेक कोष कायम किया और घर-घर घूमकर धनवान और समर्थ मनुष्योंसे चंदा अिकट्ठा किया। कोषसे जातिके बाड़ेमें अकाल-पीड़ित गरीब लोहाणोंके लिअे अुन्होंने अेक भोजनालय शुरू कराया। अिस भोजनालयमें छः सात सौ गरीब लोहाणोंको अेक बार खिचड़ी और रोटीका भरपेट भोजन मिलता था।

अिन दिनों विट्ठलबापा सदाके नियमसे भी जल्दी अुठते और नित्यकर्मसे निपटकर पूजापाठ करके सीधे भोजनशालामें पहुंच जाते। वहां नियत किये हुअे कार्यक्रमके अनुसार रसोअी शुरू करा देते। सीधा-सामान तो पहले दिन तौलकर तैयार रखा होता था, अिसलिअे वहां पहुंचते ही रसोअियोंको सब सौंप देते और खुद अुनके सिर पर खड़े रहकर सारी देखरेख रखते। दस-ग्यारह बजे रसोअी तैयार हो जाती। तब तुरन्त ही अकाल-पीड़ित लोगोंको खिलानेका काम शुरू हो जाता। सबको रोटी और खिचड़ी परोसी जाती। विट्ठलबापा अिस सबकी व्यवस्था करते थे। वे स्वयं परोसते और परोसते समय देखरेख रखते। अकाल-पीड़ितोंमें से हरअेकको अच्छी तरह भोजन मिला है या नहीं, अिसकी जांच कर लेते। और आखिरी पंगत खा चुकती और बाड़ा झाड़-बुहार कर साफ हो जाता, अुसके बाद ताला-कुंजी लगा कर खुद खानेको घर लौटते।

वसाणी मुहल्लेमें पैर रखते ही वहां भी भिखारियोंकी भीड़ खड़ी मिलती। अुन लोगोंको विट्ठलबापा घरसे अुबले हुअे चने और रोटीके टुकड़े बांटते। अितना कर चुकनेके बाद अेक डेढ़ बजे खुद खानेको बैठते। अकाल जारी रहा तब तक विट्ठलबापाने यह क्रम जारी रखा था।

अुन दिनों पच्चीस-तीस रुपये वेतन पानेवाला आदमी अिस प्रकार हजारों रुपयेका प्रबन्ध करे, रोज छः सात सौ जातिभाअियोंको जातीय कोषसे भोजन दे, जातिके धनवान लोग अुसके हाथमें विश्वाससे रुपया सौंपें, यह विट्ठलबापाकी सचाअी, सेवाभावना, प्रामाणिकता और जातिके लोगोंमें अुनके स्थान और सम्मानको बताता है। फिर, जी तोड़ परिश्रम करके अितनी सेवा करनेके बाद अुनकी परोपकार-वृत्ति वहीं खतम नहीं हो जाती थी। परन्तु अपनी अितनी कम आमदनीमें भी वे गरीबोंके लिअे हिस्सा रखते थे। अकालके दिनोंमें घर आये हुअे गरीबों और भिखारियोंको वे अुबाले हुअे चने और पाव-पाव रोटी देते थे। यह अुनकी तन, मन और धनसे परोपकार करनेकी वृत्तिका ज्वलंत प्रमाण है। गरीब जातिभाअियोंके लिअे जैसे अुन्होंने अन्नदानकी व्यवस्था की थी, अुसी प्रकार गांवोंसे आये हुअे गरीब लोहाणोंके लिअे वस्त्रदानका भी प्रबन्ध किया था। वे मिलोंमें से ओढ़नेके कम्बल और खेस जुटाकर देहातसे आनेवाले जिन लोगोंके पास ओढ़ने-बिछानेके साधन न होते अुन्हें कम्बल और खेस देते।

अिस अरसेमें कुछ समय तक अमृतलाल ठक्कर पोरबंदर राज्यमें अिंजीनियर थे और फिर थोड़े ही समयमें वे अफ्रीकाकी युगांडा रेलवेमें तीन बर्षके करार पर काम करनेके लिअे चले गये थे। विट्ठलबापा हर पखवाड़े अुन्हें नियमित पत्र लिखते। अुसमें कुटुम्बके समाचारोंके सिवाय सौराष्ट्रके अकाल-पीड़ित लोगोंकी हालतका करुण चित्र देते और भावनगरमें अकाल-ग्रस्त गरीब जातिबन्धुओंको मदद देनेके लिअे वे स्वयं क्या-क्या काम कर रहे हैं, अिस सबका ब्यौरेवार वर्णन लिखते।

अिन पत्रोंका युवक अमृतलाल ठक्कर पर खूब असर हुआ। अपने पिता दुर्भिक्ष-पीड़ित लोगोंकी अितनी मदद कर रहे हैं और जातिभाअियोंकी निःस्वार्थ भावसे सेवा कर रहे हैं, यह देख कर अमृतलाल ठक्कर मनमें अेक प्रकारका आनन्द और गर्व अनुभव करने लगे और अुनके हृदयमें सेवा करनेकी प्रेरणा अुत्पन्न हुअी। लेकिन पिताकी अेक बात अुस समय भी अमृतलाल ठक्करकी समझमें नहीं आती थी। अुनके मनमें सवाल अुठता: पिता अपना सेवाकार्य केवल जातिभाअियों तक ही क्यों मर्यादित रखते हैं? क्या अन्य लोगोंको अकालकी पीड़ा नहीं सताती होगी? और यदि दूसरोंको

भी दुःखका अनुभव करना पड़ता हो, तो अुनके प्रति भी अुन्हें अपना कर्तव्य पालन करना चाहिये या नहीं? यह और अिस प्रकारके अनेक विचार अुनके मनमें अुठते और वे संकल्प करते कि भविष्यमें यदि कभी अिस प्रकारका कार्य करना मेरे हिस्सेमें आयेगा, तो मैं न केवल बिना किसी जात-पांतके भेदके सब जातियोंकी ही सेवा करूंगा, परन्तु देश-विदेशकी मर्यादाको लांघकर चीन जैसे दूरके स्थान पर भी सेवाकार्यकी जरूरत होगी तो वहां जाअूंगा और गरीबोंकी सेवा करूंगा।

परन्तु हम विट्ठलबापाकी बात पर लौट आयें। १९०० का साल गया और अुसके साथ छप्पनका अकाल भी चला गया। पर विट्ठलबापाने जाति-सेवाका कार्य तो अेक या दूसरे प्रकारसे जारी ही रखा। जातिके मकानोंकी मरम्मत कराना, बाड़ेमें हुअी टूट-फूट ठीक कराना, जाति-भोज कराना, मकानोंका किराया अुगाहना वगैरा कार्य तो वे करते ही थे।

अिस बीच भारत भरमें अंग्रेजी शिक्षाकी नींव पड़ चुकी थी। विट्ठलदास ठक्कर पहलेसे ही शिक्षाके हिमायती थे, अिसलिअे जातिके बालकोंकी शिक्षामें सहायक होनेके लिअे वे सदा प्रयत्नशील रहते थे। जातिके अेक सेठसे अुन्होंने अच्छी रकम जुटाकर 'सेठ गांडा-लाधा विद्योत्तेजक फंड' शुरू किया। अिस फंडसे जातिके बच्चोंको पढ़नेके लिअे स्लेट-पेंसिल तथा मुफ्त पुस्तकें मिलनेका अुन्होंने प्रबन्ध कर दिया।

अिस अरसेमें राजकोटमें लोहाणा बोर्डिंगकी स्थापना हो चुकी थी। भावनगरमें भी अन्य जातिका अेक बोर्डिंग शुरू हो गया था। तबसे विट्ठलदास ठक्करको भी अिस दिशामें कार्य करनेकी प्रेरणा हुअी और भावनगरमें लोहाणा जातिके विद्यार्थियोंके लिअे छात्रालय शुरू करनेका प्रयत्न अुन्होंने आरम्भ किया। अिसके लिअे चंदा किया गया। अुसमें बम्बअीके स्वर्गीय सेठ दामोदर हेमजीकी विधवा काशीबाअीने अपने पतिका नाम छात्रालयके साथ जोड़नेकी शर्त पर छात्रालयकी स्थापनाके लिअे १०,००० रुपयेका दान दिया। अिसके अतिरिक्त पंचायतोंसे भी कुछ रकमें मिलीं। अिनसे लोहाणा छात्रालय स्थापित हुआ। सबसे पहले खार दरवाजेके आगे लोहाणा जातिकी पंचायतकी मिल्कियतका जो मकान था, अुसमें सन् १९०६ में 'ठक्कर दामोदरदास हेमजी मजीठिया लोहाणा विद्यार्थी-भवन' की स्थापना हुअी।

अिन दिनों विट्ठलबापाकी आर्थिक स्थिति पहलेसे सुधर गअी थी। बड़े लड़के परमानन्द वढवाणकी अंग्रेजी पाठशालामें शिक्षक थे। साथ ही अमृतलाल ठक्कर भी हर महीने अपनी कमाअीमें से अेक खासी रकम घरखर्चके लिअे भेजने लगे थे। अितने पर भी विट्ठलबापाने यदि रुपयेका ही लोभ

रखा होता, तो वे जरूर अपनी नौकरी जारी रखते अथवा द्रव्योपार्जनके लिअे कोअी दूसरे धंधे भी करते। परन्तु बोर्डिंगका काम सेवाभावसे स्वीकार करनेके बाद धन-प्राप्तिका काम अुन्होंने लगभग पूरी तरह छोड़ दिया और अपना सारा समय अीश्वर-भक्ति और जातिसेवामें ही बिताने लगे। जीवनके पिछले वर्ष अुन्होंने छात्रालयके प्रबन्ध और जातिसेवाके काम-काजके लिअे ही अर्पण कर दिये।

जातिके छात्रालयके लिअे रुपया अिकट्ठा करनेके लिअे वे भावनगरमें कुछ खास स्थानों पर और आसपासके गांवोंमें भी जाते और विवाह जैसे शुभ अवसरों पर जातिवालोंके घर पहुंचकर बोर्डिंगके लिअे चन्दा अिकट्ठा करते। अिस कामके लिअे वे बैलगाड़ीमें बैठकर कअी बार हफ्ते हफ्तेका प्रवास करते और वरतेज, कमलेज तथा दूसरे गांवोंमें भी — जहां लोहाणोंकी बस्ती काफी होती — चक्कर लगा आते। चन्दा अिकट्ठा करनेके कामके सिवाय ज्यादातर वे भावनगरमें ही रहते। और जब शहरमें होते तब छात्रालयका सारा काम देखते और विद्यार्थियोंकी सेवा करते।

विट्ठलबापाने जिस दिन यह बोर्डिंग शुरू किया, अुसी दिनसे छात्रा-लयके लिअे अेक रसोअिया रखा था। अुसका नाम है रणछोड़जी महाराज। सौभाग्यसे वे अब तक जीवित हैं और अुसी बोर्डिंगमें पिछले सैंतालीस वर्षसे काम कर रहे हैं। बोर्डिंगके प्रारम्भिक दिनोंका और विट्ठलदास ठक्करकी सेवाओंका बयान अुन्हींके मुंहसे सुननेको मिला है। वह अुन्हींके शब्दोंमें यहां रखता हूं।

रणछोड़जी महाराज कहते हैं:

"जब मेरी मूछोंकी रेख भी नहीं निकली थी, तबसे मैं अिस बोर्डिंगमें रसोअियेका काम करता हूं — जो आज भी जारी है। अुस दिनसे मैं विट्ठलबापाको जानता हूं।

"संवत् १९६२ की आषाढ़ सुदी दूजको अिस बोर्डिंगकी शुरुआत हुअी। तबसे बोर्डिंगका तमाम अिंतजाम विट्ठलबापा ही करते। वे दयाके अवतार और बड़े सेवाभावी थे। वे लड़कोंके दयालु माता-पिताकी तरह थे। अपने बच्चों और बोर्डिंगके लड़कोंमें अुन्होंने किसी भी प्रकारका भेदभाव नहीं रखा। बोर्डिंगके लड़कोंको वे खुद नहलाते। कोअी फोड़े-फुंसीवाले होते तो खुद अुनके फोड़े-फुंसी धोते और अपने हाथसे मरहमपट्टी करते। किसीके फटे हुअे कपड़े होते तो खुद सी देते। नौकरानी कभी देरीसे आती तो झाड़ू भी खुद लगा देते।

"बोर्डिंगके लिअे सागभाजी स्वयं ही ले आते। और दस-पंद्रह सेर शाक होता तो भी मजदूरसे न अुठवाकर खुद ही बोर्डिंग तक अुठा लाते। घर पर खाने और सोनेके लिअे जानेके अलावा दिन भर वे बोर्डिंगमें ही रहते और सुबह-शाम विद्यार्थियोंसे प्रार्थना कराते।

"लड़के खाने बैठते तब बरामदेमें दोनों कतारोंके बीच घूमते रहते और अंगोछेसे हवा करते रहते। अुन्हें आलस्य तो छू भी नहीं गया था। बैठना अुन्हें पसन्द ही नहीं था। बोर्डिंगके मकानमें कहीं जाले जमे हों तो झट हाथमें झाड़ू और बांस लेकर अेक अेक जाला निकाल देते।"

रणछोड़जी महाराजसे मैंने पूछा: "बापा कुछ वेतन भी लेते थे क्या?"

"अरे नहीं!" अुन्होंने जवाब दिया। "सारी जिन्दगी अुन्होंने वेतन नहीं लिया। अिस घरको सेवाभावका अुत्तराधिकार मिला है। अुन्होंने तो क्या, कपिलभाअीने सोलह वर्ष बोर्डिंगमें काम किया तो भी अेक दिनका वेतन नहीं लिया।"

मैंने कहा: "तो फिर बापा नौकरी तो करते होंगे?"

अुन्होंने अुत्तर दिया: "लड़के सब राजकुमारों जैसे, फिर नौकरी क्यों करते? नौकरी तो अुन्होंने मुझे याद है अुस दिनसे की ही नहीं। प्रभुभजन ही करते थे। अुन्हें तो यह बोर्डिंग भली और अिसके लड़के भले। हवेली जाना शायद किसी दिन चूक जायं, परन्तु बोर्डिंग आना कभी न चूकते। बोर्डिंग तो अुनके दिलमें बस गअी थी। मूलमें देशी रूढ़िके आदमी और भक्तिका रंग लगा हुआ था। अुनका सारा परिवार ही शराफत और सेवासे भरा हुआ है।"

"बोर्डिंगकी व्यवस्था करनेके लिअे जातिकी तरफसे कमेटी जैसा कुछ था?"

"अरे भाअी, अुन दिनों कमेटी वमेटी कुछ नहीं थी। अुन दिनों निरीक्षक कहो तो वे, मंत्री कहो तो वे, और कमेटी कहो तो भी वे ही। जो कहिये सो सब विट्ठलबापा ही थे। केवल हिसाब-किताब लिखनेको अेक मुंशी रखा हुआ था। पर अुस पर भी अुनकी निगरानी रहती ही थी। अिस प्रकार अुनका सभी कामकाज पक्का था। कमेटी वगैरा तो सब अुनके गुजर जानेके बाद बनी।"

"बोर्डिंगके विद्यार्थियोंसे अुस समय क्या खर्च लेते थे?"

"कुछ नहीं। सब मुफ्त था। लड़कोंकी कोअी फीस नहीं थी। विट्ठल-बापा स्वयं घर-घर जाकर घड़ा रख आते और आठवें दिन अनाज अुगाह

लाते। घड़ेमें घर-घरसे अन्न मिल जाता। रविवारको अुसका बोर्डिंगमें ढेर लग जाता। अनाज गाड़ियों पर लदकर आता। अुससे बोर्डिंगका खर्च निकलता। अिसके सिवाय बड़े सेठोंसे कपड़ा-लत्ता, गरम ओढ़ना वगैरा जुटाते। किसीके यहां ब्याह-शादी या कोअी मंगल प्रसंग होता तो तुरन्त वहां पहुंच जाते और दो पुस्तकें — अेक विद्योत्तेजक कोषकी और दूसरी बोर्डिंगकी — अुनके सामने रखकर अुनमें चन्दा लिखवाते। अुन दिनों लोगोंकी आय अच्छी थी। समय अच्छा था। कोअी अिन्कार नहीं करता था। शक्तिभर सभी देते थे। अनाज तो ढेरों आता था। बाकी फुटकर खर्च थोड़ा ही होता था।"

"मूली मांको तो तुमने देखा होगा?" मैंने पूछा।

"हां, देखा था। मूली मां बड़ी भली महिला थीं। अैसी जिनके पेटसे जन्म लेनेमें गर्व हो। अुनके जैसी अुदार दिलवाली स्त्रियां आजकल नहीं दीखतीं। अब तो खाली नखरेबाजीकी बातें रह गअी हैं। वह बड़ी भली थीं। अुन्होंने बोर्डिंगका बहुत काम किया था। सोनबाअी नहीं आअी, तो लाओ झाड़ू लगा दूं — अिस तरह बोर्डिंगका कअी बार काम कर देती थीं। कभी कोअी काम पड़ा न रहने देतीं। अड़ोसी-पड़ोसी और गरीब-गुरबोंको मदद देतीं और अुनका काम भी कर देतीं। बीमारीमें लोगोंकी मदद करतीं और अुसका पता तक न चलने देतीं।"

"ठक्करबापा अिस बोर्डिंगमें कभी आते थे?"

"हां, यहां दो-तीन बार आये थे। कभी-कभी कपिलभाअीके घर खाने आते, तब थोड़ी देरके लिअे यहां बैठ जाते। अेक दिन कपिलभाअीसे बातें करते हुअे अुन्हें पता चला कि बोर्डिंगमें 'भट्ट' बापाके समयसे काम-काज करते हैं। तब कहने लगे कि मुझे अुन्हें देखना है। अुस समय मुझसे खास तौर पर मिलने आये थे।" . . . थोड़ी देर ठहरकर अिस तरहसे कहा जैसे सारी बातका सार सुनाते हों: "सारा कुटुम्ब ही सेवाभावी है। सारे परिवारको अिसकी विरासत मिली है। वैसे विट्ठलबापा तो विट्ठलबापा ही थे। अुनके जैसा वीर अिस बोर्डिंगमें दूसरा नहीं हुआ।"

लगभग अेक सामान्य ज्ञान रखनेवाले किन्तु सहृदय मनुष्यने विट्ठल-बापाका जो चित्र अिसमें खींचा है वह कितना हूबहू है! सादगी, किफायतशारी, शरीरश्रम, दूसरेके लिअे कष्टसहन, बड़प्पनका अभाव, सेवाकी मूर्ति, माता-पिता जैसे दयालु — अिन सब वर्णन किये हुअे गुणों और विशेषणोंसे विभूषित विट्ठलबापाकी मूर्ति हमारी नजरके सामने सजीव हो अुठती है।

बोर्डिंगका निष्काम कर्म : अेक पाअीका भी बदला लिये बिना केवल सेवाभावसे ही अुन्होंने बोर्डिंगका काम किया था। विद्यार्थियोंको अुन्होंने अपना आराध्य देव बनाया था। जिसके दिलमें रुपयेकी, बड़प्पनकी और अिसी प्रकारकी अन्य अतृप्त आकांक्षाअें हों वह शायद ही अैसा काम कर सके। जैसा रणछोड़जी महाराजने कहा, अुन्हें सचमुच भक्तिका रंग लगा हुआ था। यह रंग अुन्हें कोअी अकस्मात् नहीं लगा था। बचपनसे ही वे भी अैसे संस्कारोंमें पलकर बड़े हुअे थे।

युवावस्थामें अुन्हें पढ़नेका शौक था। अुस समयका 'गुजराती' पत्र और धार्मिक ग्रंथ वे नियमित पढ़ते थे। अखबार और धार्मिक ग्रंथोंका अुनका वाचन वर्षों तक निरन्तर चालू रहा था। ओधवजी लालजीकी दुकान पर दोपहरको रामायण और महाभारत वगैरा ग्रंथोंका पारायण होता था। विट्ठलबापा ये दोनों ग्रंथ अुच्च स्वरमें अैसी छटासे पढ़ते और अुनके अर्थ समझाते कि सुननेवाले मुग्ध हो जाते थे। अुनमें भक्तिका यह रंग अन्त तक बना रहा और दुःखके समय अुनके हृदयको अेक प्रकारका बल प्रदान करता था।

अिसका भी अेक छोटासा प्रसंग विट्ठलबापाके जीवनमें मिल आता है। विट्ठलबापाकी पत्नी मूली मां लगभग १९०८ में भावनगरमें गुजर गअीं। वह रातका वक्त था। अुनकी मृत्युसे विट्ठलबापाको गहरा आघात लगा था। हृदयमें भावनाकी बाढ़ आ रही थी, जो बाहर निकलनेको जोर लगा रही थी। मनमें बड़ी बेचैनी थी। अुस समय आधी रातको विट्ठलबापा घरसे बाहर चबूतरे पर जा बैठे और मन ही मन प्रभु-स्मरण करने लगे। थोड़ी देर बाद अुन्होंने अपनी सबसे बड़ी पुत्री जड़ीबहनको बुलाकर कहा: "जड़ीबहन, मेरी भजनोंकी पुस्तक तो ले आ।" जड़ीबहन अुनकी गीतोंकी — भजनोंकी पुस्तक ले आअी। अुसमें से दो भजन अितने जोरकी आवाजसे गाये कि सारा मुहल्ला सुन ले और फिर वे जोरसे रो पड़े। हृदयका भार हलका हो गया तो शांतिसे बैठे और आधी रातसे सुबह तकका समय वहीं बैठकर पूरा किया। सारे समय नामस्मरण और अीश्वर-चिन्तन करते रहे।

जब तक अुनका शरीर चलता रहा, तब तक वे बोर्डिंगकी सेवा करते रहे। बीचमें कभी-कभी बम्बअी जाकर रहते थे। ठक्करबापा अुस समय बम्बअीमें म्युनिसिपल रोड सुपरिन्टेन्डेन्ट थे। अैसी ही अेक बम्बअीकी मुलाकातके दिनोंमें विट्ठलबापा पर लकवेका हमला हुआ और वहीं अुन्होंने बिस्तर पकड़ लिया।

ठक्करबापाने अिन दिनों विट्ठलबापाकी खूब सेवा की। अुनके खाने-पीने, दवा वगैराकी चिन्ता और व्यवस्था अुन्होंने खुद ही की और अिस बातकी सतत चिन्ता और सावधानी रखी कि अुनके हृदयको दुःख या आघात न पहुंचे। पिताके प्रति अिस अनुराग और भक्तिके कारण अुन्हें अेक दो अवसरों पर झूठ भी बोलना पड़ा। लेकिन अुनकी पितृभक्ति और पिताके प्रति सेवाबुद्धि और ममता अितनी अुत्कट थी कि अैसा करनेमें अुन्हें कोअी आपत्ति नहीं दिखाअी दी। अपनी शक्ति और मर्यादाको देखते हुअे अुस समय धर्मके तत्त्वसे व्यवहार-धर्मका आचरण करना ही अुन्हें अधिक हितावह लगा।

विट्ठलबापा सन् १९१३ में गुजर गये। ठक्करबापा गरीबोंकी और पीड़ितोंकी अितनी सेवा कर सके, अिसकी जड़ हमें विट्ठलबापाके जीवनमें मिलती है। जिन-जिन मुख्य प्रवृत्तियोंका ठक्करबापाने अपने जीवनमें विस्तार किया, वे सब हम बीज-रूपमें अथवा छोटे पैमाने पर विट्ठलबापाके जीवनमें हुअी देखते हैं। अकाल-पीड़ितोंके कष्ट-निवारणका कार्य और पिछड़े हुअे वर्गके दलितोंकी शिक्षाका जो प्रबंध ठक्करबापाने अपने जीवनमें किया, वह सब विट्ठलबापाने भी अपने जीवनमें छोटे पैमाने पर कर दिखाया था।

अितने पर भी पिता-पुत्रके सेवाकार्यों और तत्सम्बन्धी भावना और कार्यक्षेत्रके बीच दो युगोंका अन्तर था। अेककी सेवा जातिभाअियों तक ही सीमित थी और अुसीमें वे आत्मसंतोष पाते थे, जबकि दूसरेका हृदय जात-पांत और देशकालसे परे रहकर जरूरत पड़ने पर ठेठ चीन जैसे दूरके देशमें जाकर सेवा करनेके सपने देखा करता था।

बम्बअीके अछूतोंके दुःख देखकर तथा शिन्दे और देवधर वगैराके संसर्गमें आनेके बाद बहुत समयसे ठक्कर साहबकी यह अिच्छा थी कि नौकरी छोड़कर पूरा समय सेवाकार्यमें दिया जाय। यह अिच्छा अुन्होंने पिताके सामने प्रगट की, तब विट्ठलबापाने अुन्हें रोका था और कहा था कि मैं जिन्दा हूं तब तक तू अिस क्षेत्रमें न जा और जो नौकरी करता है अुसे चालू रख। मेरे जानेके बाद तेरे जीमें आये सो करना। और अब मैं कितने दिन जीनेवाला हूं?

ठक्करबापाने पिताकी अिस अिच्छाका आदर किया। १९१३ में विट्ठलबापा गुजर गये तब तक अुन्होंने अपनी नौक़री जारी रखी। अुसके बाद ही अुन्होंने महाभिनिष्क्रमण किया, और कुटुम्बकी आर्थिक जिम्मेदारीका तथा दूसरा भार हटाकर वे भारत सेवक समाजमें शरीक हुअे और सेवाकी दीक्षा ली।

४

स्कूलका जीवन

विट्ठलदास ठक्करको शिक्षासे कितना प्रेम था, अिस सम्बन्धमें पहले कहा जा चुका है। अुत्तर जीवनमें जातिके बालकोंकी शिक्षाके लिअे जिन्होंने अथक परिश्रम करके लोहाणा बोर्डिंगकी स्थापना और संचालनका भार वहन किया, वे अपने बच्चोंकी शिक्षाके लिअे भला क्या नहीं करते? विट्ठलदास ठक्करकी यह दृढ़ मान्यता तो थी ही कि बच्चेको पांच बरसका होते ही पाठशाला जरूर भेज देना चाहिये। अिसलिअे अमृतलाल ठक्कर चार-पांच सालके हुअे कि अुन्हें पाठशाला भेजना शुरू कर दिया। परन्तु अुस समय या तो पाठशालाका वातावरण अच्छा न लगता हो या शिक्षकोंका बरताव पसन्द न हो या पढ़नेसे घर पर रहनेमें अधिक आनन्द आता हो — किसी भी कारणसे अुन्हें पाठशालामें पढ़ने जाना पसन्द नहीं था। अिस-लिअे पिताजी अुन्हें जबरदस्ती पाठशाला भेजते। अमृतलाल पाठशाला जानेमें आनाकानी करते, तो अुन्हें पकड़कर जबरन् कोट-टोपी पहनाये जाते। अमृतलालके कोटकी बाहें चढ़ाते, तब वे मुट्ठियां बन्द कर लेते, आड़े लेटकर सो जाते और बड़ा तूफान मचा देते। तब बलपूर्वक पकड़कर और जबरन् कोट-टोपी पहनाकर ठेठ पाठशालाके दरवाजे तक पहुंचा आते। कभी कभी वे रोना-पीटना मचा देते तो भी विट्ठलबापा अिस मामलेमें जरा ढीले नहीं पड़ते थे। थोड़ी मरम्मत करके भी अुन्हें पाठशाला भेजकर ही रहते।

कभी अुन्हें दूसरे गांव जाना होता तो बच्चोंको पाठशाला भेजनेका काम किसी दूसरेको सुपुर्द कर जाते। परन्तु अिस मामलेमें जरा भी ढिलाअी न करते। अिस समयके अेक दो मजेदार प्रसंग ठक्करबापाने अपने ही मुंहसे कहे हैं। अुन्हें हम ज्योंके त्यों यहां देते हैं:

"हमारे पड़ोसमें पीताम्बर जोशी नामके अेक सारस्वत ब्राह्मण रहते थे। वे अेक पैरसे लंगड़े थे और लकड़ीके सहारे धीरे धीरे चलते थे। अुनकी अेक आंख भी जाती रही थी। वे हुक्केके अितने शौकीन थे कि चलनेमें अुन्हें अड़चन होने पर भी जहां जाते वहां हुक्का जरूर साथ ले जाते। अुसे घड़ी भर भी न छोड़ते।

"कभी-कभी मैं पाठशाला जानेमें आनाकानी करता तो ये पीताम्बर जोशी मुझे पाठशाला छोड़ आते। अेक अैसे प्रसंग पर मैंने न जानेका

हठ पकड़ा, तब मेरी माताने पीताम्बर जोशीसे कहा, 'आप अमुको पाठशाला छोड़ आयेंगे?' अुन्होंने हां कहा और मैं अुनके पीछे पीछे घिसटता गया। परन्तु रास्तेमें हम अेक दूसरेसे अलग पड़ गये। मैं अुस वक्त मुश्किलसे आठ नौ वर्षका रहा होअूंगा। मैं अुन्हें ढूंढूं और वे मुझे ढूंढ़ें। परन्तु हमें अेक दूसरेका पता नहीं लगा। अन्तमें पीताम्बर भाअी थककर घर गये और मैं भी अेकाध घंटेके बाद घर पहुंचा। घर आनेके बाद पीताम्बर भाअीको देखकर मैंने पूछा, 'अरे, पीताम्बर भाअी, आप कहां चले गये थे? मैं तो आपको ढूंढ़ रहा था!'

"मेरी यह बात सुनकर पीताम्बर भाअी ही नहीं, घरके सब लोग खिलखिलाकर हंस पड़े। मैं सच बोल रहा हूं, अिस पर किसीको विश्वास ही नहीं आया और मैं झूठोंमें शुमार कर लिया गया। अुस दिनसे मेरे कुटुम्ब और पड़ोसमें 'पीताम्बर भाअी, मैं तो आपको ढूंढ़ रहा था', यह वाक्य झूठको छिपाने और शरारतके लिअे कहावत बन गया। और मुझे चिढ़ानेके लिअे बहुत बार परिवारके लोग और पड़ोसी कहते, 'पीताम्बर भाअी, आप कहां गये थे? मैं तो आपको ढूंढ़ रहा था।'

"सही बात यह है कि मैं अुस दिन दरअसल सच ही बोला था। फिर भी अुस दिन किसीको मेरे वचन पर विश्वास नहीं हुआ।"

यह बात ठीक है कि ठक्करबापा अुस समय सच बोले थे। परन्तु छुटपनमें वे सदा सच ही बोलते हों, सो बात नहीं थी। कभी-कभी मामूली बातोंमें भी वे झूठ बोलते थे। वे जब चौथी गुजराती पढ़ रहे थे, तब अेक बार झूठ बोलने पर पकड़े गये। अुस समय महाशंकर नामक अुनके कड़े स्वभावके परन्तु भले शिक्षकने अुन्हें मीठा अुलहना देकर अुपदेश दिया था:

"झूठ बोलनेसे नरकमें जाना पड़ेगा। वहां यमराज सजा देंगे। लोहेके खंभोंसे बांध देंगे। अिसलिअे झूठ बोलनेकी आदत छोड़ देनी चाहिये। झूठ बोलनेसे किसीका कोअी लाभ नहीं होता।"

ठक्करबापा अिस सम्बन्धमें कहते हैं कि "महाशंकर मास्टरका यह अुपदेश दिमागमें बहुत वर्षों तक बना रहा और झूठ बोलनेकी आदत कुछ कम हुअी। अिस प्रकार छुटपनमें मस्तिष्क पर जो असर होता है अुसका भला-बुरा प्रभाव बहुत समय तक रहता है, अिसमें शंका नहीं।"

पाठशालामें पढ़ने जानेके लिअे आनाकानी करने पर अुन्हें कअी बार सख्त मार खानी पड़ती थी, यह बात पहले आ चुकी है। अैसे अेक अवसर पर लल्लूभाअी नामक अेक पड़ोसीने अुन्हें अितना मारा था कि

जीवन भर अुन्हें यह घटना याद रही। अस्सी वर्षकी अुम्र हो जानेके बाद भी वे अिस प्रसंगको भूले नहीं थे।

सारी घटना ठक्करबापाके शब्दोंमें ही देखिये :

"पाठशाला जानेमें मैं कभी कभी हठ कर बैठता। अेक बार पिताजी कोअी दूसरे गांव गये थे। और मुझे पाठशाला तो भेजना ही था। अिसलिअे मुझे पाठशाला पहुंचानेका काम मेरी माताने लल्लूभाअीको सौंपा। लल्लूभाअी मेरी बुआके लड़के होते थे। मुझसे वे दस-पंद्रह वर्ष बड़े थे। अेक दिन मैंने पाठशाला जानेमें आनाकानी की तो गलीके नुक्कड़के मोड़ पर अेक मकानके चबूतरे पर खड़ा रखकर अुन्होंने मुझे अितना मारा कि क्या कहूं। थप्पड़, घूंसे वगैरा तो लगाये ही, अिसके सिवाय अेक दो प्रहार जूतोंके भी किये और अिस प्रकार मार-पीटकर वे मुझे पाठशाला छोड़ आये। यह बात अितने सालके बाद भी भूलती नहीं। बड़ा हो जानेके बाद यह और अैसी दूसरी घटनाअें याद करके मैं लल्लूभाअीसे कहता : 'लल्लूभाअी, बचपनमें आपने मुझे खूब मार मारी थी। फिर भी मै आपका अुपकार ही मानता हूं, क्योंकि अुस समय यदि पाठशाला जाना बन्द हो जाता तो पढ़ाअी कैसे आगे बढ़ती?'"

ठक्करबापाकी ननसाल धोलेरामें थी। अेक बार बचपनमें जब वे प्राथमिक शालामें पढ़ते थे, तब मांके साथ ननसाल गये थे। धोलेरा बन्दरगाहकी पहलेवाली शान-शौकत और खुशहाली अुस समय नहीं थी। बन्दरगाह तक पहुंचनेकी खाड़ी भर जानेसे बन्दरगाहका कामकाज बिलकुल ठप हो गया था और लोगोंकी आर्थिक शक्ति भी टूट गअी थी। वहां ननसालमें रहकर अमृतलाल पाठशालामें पढ़ने जाते थे। अुस समयका अेक विचित्र अनुभव याद करते हुअे बापा लिखते हैं :

"पाठशालाके पीछे अेक छोटासा तालाब था और तालाब पर ही पाठशालाका अेक दरवाजा पड़ता था। जब कभी वह दरवाजा खोला जाता तो न जाने क्यों मेरे मनमें यह डर लगता था कि मैं अुड़कर तालाबमें गिर जाअूंगा।"

धोलेराके संस्मरण विशेष सुखद हों, अैसा नहीं लगता। अेक जगह वे लिखते हैं :

"धोलेरा बन्दरगाह अब तो बिलकुल ही अुजाड़ हो गया है। मेरे बचपनमें भी वह अुजाड़ और वीरान जैसा तो था ही। दिन भर धूलके बगूले अुठते रहते थे। खारी जमीन थी और गंदला पानी था। अिस

सम्बन्धमें वहांके लोगोंमें जो कहावत प्रचलित थी, वह साठ सत्तर वर्षके बाद अब तो और भी सच्ची साबित हो रही है :

धूळ गांव धोलेरा, अने बंदर गाम बारां,
काठा घऊंनी रोटली, ने पाणी पीवां खारां."

(भावार्थ : धोलेरा बन्दर अुजाड़ हो गया है, वहां धूल अुड़ती है, खराब गेहूंकी रोटी और खारा पानी पीनेको मिलता है।)

थोड़े मास अिस प्रकार ननसालमें धोलेरा रहनेके बाद माताके साथ ही अमृतलाल ठक्कर भावनगर लौट आये।

प्राथमिक शालाके अिन दिनोंमें बालक अमृतलालके मानसको गढ़नेमें कुटुम्ब, मुहल्ले और पाठशालाके अन्य बलोंके साथ बाहरी वाचनका भी हाथ था। अुस समय थोड़े पढ़े हुअे लड़कोंमें गजरा मारू और गुल-बकावलीकी कहानियां खूब पढ़ी जाती थीं। बालक अमृतलालने भी ये पुस्तकें पढ़ी थीं। अिसके सिवाय 'राजकुमार और वणिक नगरसेठकी पुत्रीकी प्रेम-कथा' भी अुन्होंने पढ़ी थी। परन्तु अिन कहानियोंने मनोरंजनके सिवाय कोअी खास चिरस्थायी असर नहीं किया।

पाठचपुस्तकोंमें 'काव्य-दोहन' के कुछ गीत अुस समय बहुत ही लोकप्रिय बन गये थे। अमृतलाल ठक्करको भी यह पुस्तक बहुत ही प्रिय थी। अुसमें कुछ पुराने कवियोंकी कविताअें अुन्हें अच्छी लगती थीं। अुसमें सीताहरणका काव्य अमृतलालको विशेष प्रिय था। छुटपनमें अुन्होंने यह काव्य समय-समय पर गाकर लगभग कंठस्थ कर लिया था। अूंची आवाजमें गाकर वे अिसे सबको सुनाते थे। अुसमें भी "रढ[1] लागी रे राणीने[2] . . ." से शुरू होनेवाला और अंतिम भाग तो अुन्होंने कअी बार गाया था।

सन् १८७९ से १८८२ तकके तीन वर्षोंमें विद्यार्थी अमृतलाल ठक्कर अेंग्लो-वर्नाक्युलर स्कूलमें अंग्रेजीकी पढ़ाअी कर रहे थे, तब वह स्कूल रूपा-परीके दरवाजे पर था। अिस वक्त बार्टन लाअिब्रेरीका जो मकान है, अुसमें वह स्कूल लगता था। शिक्षक ज्यादातर भावनगर राज्यके बाहरसे आते थे। अुस समय अेंग्लो-वर्नाक्युलर स्कूलके हेडमास्टर सूरतके श्री प्राणनारायण आचार्य थे। वे प्रौढ़ वयके प्रभावशाली और रुआबदार आदमी थे। हाथमें काली शीशमकी छड़ी लेकर चलते और अुनके पीछे पंजाबी चपरासी भी अपनी रंगीन चपरास लगाकर रुआबके साथ चलता था।

अुनके समयमें स्कूलमें अेक सबसे चौंकानेवाली घटना हो गअी। अूंची मानी जानेवाली नागर जातिके कुछ विद्यार्थियोंके मांस खानेकी बात जाहिर

---

१. लगन। २. रानीको।

हुअी। ये विद्यार्थी सरकारी अफसरोंके लड़के थे। अुस वक्त भावनगरमें गगा ओझा दीवानके पद पर थे। अुन तक यह बात पहुंची। स्कूलमें जांच हुअी। सारी नागर जातिमें खलबली मच गअी। हेडमास्टर श्री प्राणनारायण और दूसरे शिक्षकोंने भी अिस संबंधमें गहरी जांच की और आयंदा अैसी घटनाअें न हों, अिसकी सावधानी रखी।

ये नागर अफसरोंके लड़के दूसरी तरह भी बिगड़े हुअे थे। ठक्करबापा अुन दिनोंके संस्मरण याद करते हुअे लिखते हैं कि 'ये लड़के ढेढ़ मुहल्लेमें जाते और ढेढ़ोंकी जवान स्त्रियोंसे छेड़छाड़ करते। मुझे अुस समय बहुत समझ नहीं थी, अिसलिअे आश्चर्य होता और मनमें सवाल अुठता कि ये लोग अैसा क्यों करते हैं?'

अमृतलाल ठक्कर जब माध्यमिक शालाके अन्तिम वर्षोंमें थे, तब अुन्होंने पढ़ते-पढ़ते पुस्तक-विक्रेताकी दुकान लगायी थी। कलकत्तेसे रामनाथ पॉलके 'फ्रेजेज़' वगैरा बेचनेको मंगाये थे। अिसके सिवाय दूसरी किताबोंकी बिक्री भी करते थे। अिस व्यापारमें अुन्हें नफा हुआ या नुकसान, अिस बारेमें ठक्करबापा मौन रहे हैं!

अंग्रेजी शिक्षाके दिनोंमें अुन पर प्रभाव डालनेवाले अध्यापकोंमें आल्फ्रेड हाअीस्कूलके मुख्य अध्यापक श्री जमशेदजी अूनवाला, संस्कृतके अध्यापक श्री मणिलाल नभुभाअी द्विवेदी तथा कादंबरीका गुजराती अनुवाद करनेवाले श्री छगनलाल हरिलाल पंड्या वगैरा मुख्य थे।

अूनवालाका बखान करते ठक्करबापा थकते ही न थे। अुनके बारेमें वे कहते:

"जमशेदजी अूनवाला अूंचे, गोरे और प्रभावशाली व्यक्ति थे। अपने अूंचे कद, रुआबदार चेहरे और असाधारण प्रतिभाके कारण वे सब आदमियोंसे अलग मालूम होते थे। विद्यार्थियोंका अुनके प्रति जबरदस्त आकषण रहता। विद्यार्थियों पर वे प्रेम भी दिखाते और रुआब भी रखते। मैट्रिकमें अधिक विषय तो वे ही पढ़ाते थे। दिन भरमें लगभग तीन चार घंट अुन्हींके होते। अंग्रेजीमें वे अेक ही थे। गणित-विद्या, अंकगणित, बीजगणित और भूमिति वगैरा भी वे ही सिखाते। अिसके सिवाय खगोल-विद्या तथा प्रारंभिक पदार्थ-विज्ञान और रसायन-विज्ञान भी अुनके विषय थे। अपने विषयोंको वे अितने सरल और रसमय बना देते थे कि सबको अुनके वर्गमें मजा आता था। खगोल-विद्याका प्रत्यक्ष ज्ञान देनेके लिअे रातमें वे विद्यार्थियोंको घर बुलाते और वहां घरकी छत पर या मुहल्लेमें दूरबीन लगाकर तारे, ग्रह और चन्द्र वगैरा बताते।

"खेलोंका भी अुन्हें बहुत शौक था। अुस समय क्रिकेटका खेल ही मुख्यतः खेला जाता था। खुद तो बहुत नहीं खेलते पर विद्यार्थियोंको खेलाते और स्वयं मौजूद रहकर अुत्साह दिलाते।"

हाअीस्कूलमें पढ़ने जाते समय व्यापारी वर्गके लड़के अुस जमानेमें धोती, कसोंवाला लंबा अंगरखा, सिर पर भावनगरी पगड़ी और अंगरखे पर दुपट्टा डालते थे। ठक्करबापा भी अैसी ही पोशाक पहनते थे। अुस समयके अेक चित्रमें अमृतलाल ठक्करको अिस पुराने ढंगकी पोशाकमें देखा जा सकता है। पाठशालामें जानेके बाद पगड़ी और दुपट्टा खिड़कीमें रख देते और पगड़ीके बजाय टोपी पहनकर गंभीरतासे बैठते ।

अिस समयके कुछ प्रसंग याद करके ठक्करबापा कहते हैं :

"भावनगर हाअीस्कूलमें पढ़ते हुअे दो बड़े व्यक्तियोंका प्रभाव और संस्कारिताकी छाप मुझ पर पड़ी थी । अेक थे श्री छगनलाल पंड्या । जब मैं अंग्रेजीकी चौथी कक्षामें पढ़ता था, तब वे अुस वर्गके शिक्षक थे। अुन्होंने हाल ही में कादंबरीका गुजराती अनुवाद करके प्रकाशित किया था । हमारे सहपाठियोंमें यह अनुवाद चर्चाका विषय बन गया था । मेरे जैसे साधारण विद्यार्थीने तो वह कठिन पुस्तक पढ़नेकी हिम्मत ही नहीं की।"

छगनलाल पंड्याके संबंधमें अेक और महत्त्वकी घटना याद करते हुअे ठक्करबापा लिखते हैं:

"शनिवारको सुबह आम तौर पर साप्ताहिक परीक्षा ली जाती थी। अेक बार सब विद्यार्थी परीक्षाके पर्चे लिख रहे थे। मेरे पासवाले विद्यार्थीको किसी अंग्रेजी शब्दके हिज्जे नहीं आते थे। अिसलिअे अुसने मुझे बहुत ही धीमी आवाजसे पूछा। अिसका जवाब यदि मुंहसे देता तो पकड़ा जाता । अिसलिअे जबानी न बताकर मैंने अपनी परीक्षाके अुत्तर-पत्रके हाशिये पर अुस शब्दके हिज्जे लिख दिये और देख लेनेका अुस विद्यार्थीको अिशारा किया। अुसने लिख लिया तो हाशिये पर लिखे हुअे शब्दको मैंने काट दिया । जब मेरा अुत्तर-पत्र छगनलाल पंड्याने पढ़ा, तब अुन्हें यह कटा हुआ शब्द देखकर शंका हुअी। अिसलिअे अुन्होंने मुझे बुलाकर कारण पूछा । जो सच बात थी वह मुझे कहनी पड़ी। यह सुनकर अुन्होंने क्रोध न करके मुझे अैसी शरारत न करनेकी सीख देकर छोड़ दिया और अुस समय माफी दे दी । अुनकी अिस अुदारताको मैं जीवनभर नहीं भूला।"

मैट्रिकमें बापा पढ़ते थे अुस समयके अेक संस्मरणमें वे लिखते हैं :

"जब मैं मैट्रिकमें था तब स्व० मणिलाल नभुभाअी शामलदास कालेजमें संस्कृतके प्राध्यापक नियुक्त होकर आये थे। वे मेरे अेक मित्रके यहां किरायेदारके रूपमें रहते थे। मैं अुस मित्रके घर पढ़ने जाता था। मणिभाअी संस्कृतके बड़े विद्वान माने जाते थे। परंतु साथ साथ अुन्होंने गुजरातीमें धार्मिक तत्त्वोंसे भरी हुअी अनेक कविताअें लिखी थीं। गुजरातके अुस समयके अेक अुच्च कोटिके मासिकमें समय-समय पर वे कविताअें छपतीं। बादमें अुन सब कविताओंका संग्रह छोटी पुस्तिकाके रूपमें प्रकाशित हुआ था। ये कविताअें हम झूले पर बैठे-बैठे अूंचे स्वरमें मित्रके अूपरके कमरेमें गाते और जानबूझकर मणिलाल नभुभाअी द्विवेदीको सुनाते। साठ वर्षके बाद आज भी अेक पद याद आता है। वह पद है :

पोथी विश्वनी भणी भूल तुं,
पळियां छते बन बाळ तुं;
खरी मस्ती अे सुखडुं खरुं,
पछी पाप पुण्य अडे नहीं.
अूड़ी जा! तुं गाफिल गाभरा!
तारे अंतरे शी आंटी रही?*

"आत्माको ध्यानमें रखकर अुन्होंने यह काव्य लिखा था और अुसमें सादी भाषामें वेदान्तका सार पूरी तरह भर दिया था। अैसी बहुतसी कविताअें अुन्होंने बनाअी थीं। हमारी अुस समयकी कच्ची अुम्रमें अिन कविताओंका पूरा अर्थ तो कैसे समझमें आता? परंतु जितना समझ पाते अुतना समझकर भी हम अिन कविताओंको समूहमें गाते और गाकर आनंद लेते थे।"

शालाकी पढ़ाअीके अलावा खेलकूदमें भी अुस समयके विद्यार्थी काफी दिलचस्पी लेते थे। अुस समय अंग्रेजी स्कूलोंमें सब खेलोंमें क्रिकेटका स्थान सबसे आगे था। अमृतलाल ठक्कर भी कभी कभी क्रिकेट खेलते थे, परंतु खेलनेकी अपेक्षा अुन्हें देखनेमें ही ज्यादा मजा आता था। विद्यार्थी-अवस्थामें अुनका स्वभाव गंभीर था। अकेले घूमने जाना अुन्हें अच्छा लगता था।

* सारे विश्वके ग्रंथ पढ़कर तू भूल जा। और बूढ़ा होते हुअे भी बालक बन जा। यही सच्चा आनन्द है, सच्चा सुख है। फिर तुझे पाप-पुण्य नहीं छुअेंगे। अै गाफिल घबराये हुअे, तू अूपर अुड़ जा! तेरे अंतरमें क्या गांठ है?
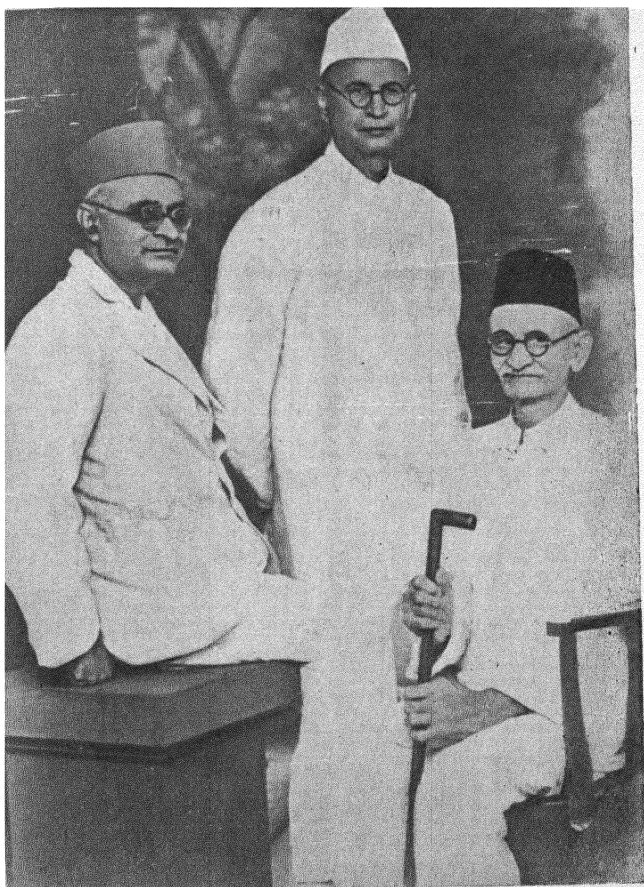
बड़े और छोटे भाओीके साथ

और सब घूम कर आ जाते तब वे अकेले घूमने जाते। पढ़ाअीमें बचपनमें वे बहुत होशियार नहीं माने जाते थे। परंतु शालाके वातावरणसे मानसिक रूपमें मेल बैठ जानेके बाद अुन्होंने अपना तेज दिखाया। कक्षामें तो दूसरोंसे काफी आगे रहते ही थे। जब १८८६ में मैट्रिककी परीक्षा दी तो अुसमें पहले नंबरसे पास हुअे और विश्वविद्यालयकी सर जसवंतसिंहजी छात्रवृत्ति प्राप्त की। अिससे पहलेके वर्षमें यही छात्रवृत्ति अुनके बड़े भाअी परमानंद ठक्करने भावनगर हाअीस्कूलसे मैट्रिकमें पहले नम्बर पर आकर प्राप्त की थी।

अिस प्रकार १८८६ में अुनकी माध्यमिक शिक्षा पूरी हुअी। अिस बीच बिलकुल किशोरवयमें ही अुनकी शादी हो चुकी थी।

५

कालेज-जीवन

मैट्रिक पास करनेके बाद अमृतलाल ठक्करके सामने प्रश्न खड़ा हुआ: आगे क्या करें? नौकरी या अध्ययन? अुस समय विट्ठलदास ठक्करके कुटुम्बकी आर्थिक स्थिति अितनी साधारण थी कि अमृतलाल ठक्करको किसी भी तरह आगे पढ़ा नहीं सकते थे। आगे पढ़ानेकी बात तो दूर रही, पर अुस समय घरकी स्थिति अैसी थी कि अमृतलाल कहीं न कहीं नौकरीसे लगकर जो थोड़ीसी कमाअी लाकर देते, वह विट्ठलदास ठक्करके लंबे-चौड़े कुटुम्बके लिअे आशीर्वाद बन जाती। परिवारकी गरीब हालतके कारण ही तो अमृतलालके बड़े भाअी परमानंददासको — पढ़नेमें बहुत ही होशियार होने पर भी — अिंटरकी पढ़ाअी बीचमें ही छोड़ देनी पड़ी और वढवाणके हाअीस्कूलमें शिक्षकपद स्वीकार करके नौकरीमें लग जाना पड़ा था। विद्यार्थी-अवस्थामें भी अुन्हें परिवारकी आय बढ़ानेके लिअे दूसरे कुछ फुटकर काम हाथमें लेने पड़े थे। बड़े लड़के परमानंददासको अिस प्रकार बीचमें ही पढ़ाअी छोड़ देनी पड़ी, अिसका दुःख तो विट्ठलबापाके मनमें था ही। अिस पर अमृतलाल ठक्कर भी पढ़ाअी छोड़कर धंधेसे लगे, यह विचार अुन्हें असह्य हो अुठा। वे बार बार यह सोचते कि परमानंदकी पढ़ाअी तो रुक गअी। लेकिन अमृतलालका यह हाल न होने दिया जाय। किसी भी अुपायसे अुसका अध्ययन जारी रखा जाय। अिस प्रकार अुनका मन मानो भीतर ही भीतर अुन्हें अुलहना दे रहा था।

और अुन्होंने भीतरी पुकार सुनी और अिस अुलहने पर ध्यान दिया। कितनी ही मुश्किलें और मुसीबतें खुदको भोगनी पड़ें तो भी अमृतलालको तो कालेजकी अुच्च शिक्षा दिलाकर ग्रेज्युअेट बनाया ही जाय, अैसा अुन्होंने मनमें दृढ़ संकल्प किया। अमृतलाल ठक्करको मैट्रिकमें भावनगर राज्यके स्कूलोंमें पहला नंबर आनेके कारण दस रुपये मासिककी जसवंतसिंहजी छात्रवृत्ति मिली थी। परंतु अितनेसे कालेजका खर्च पूरा नहीं पड़ सकता था। फिर भी अुस वक्त अुतनी सी रकम भी यह संकल्प पूरा करनेमें काफी सहायक हो गअी। कुछ अपनी बचाअी हुअी पूंजीमें से, कुछ कर्ज करके और अन्तमें अपनी पत्नीके गहने गिरवी रखकर भी विट्ठलदास ठक्करने पुत्रके लिअे पूनाके अिंजीनियरिंग कालेजमें तीन वर्ष पढ़नेके खर्चकी व्यवस्था की और अन्तमें अुन्हें पढ़ा कर ही रहे।

पहले वर्षके खर्चके लायक सुविधा करके विट्ठलबापा स्वयं ही लड़केको भावनगरसे पूना छोड़ने गये। वहां शुरूमें किरायेसे कमरा लेकर रहे और अमृतलालको पूनाके अिंजीनियरिंग कालेजमें भरती कराया। पुस्तकें वगैरा खरीदवाअीं। अिस प्रकार अुन्होंने पुत्रके लिअे पढ़ने और रहनेकी पर्याप्त सुविधा कर दी। और अुमे संतोष हो, अिस प्रकार सब प्रबंध हो जानेके बाद भावनगर लौटे।

कमरेमें रहना और कालेजमें पढ़ना, यह बादमें बहुत अनुकूल नहीं पड़ा। अिसलिअे वे क्लबमें शरीक हुअे। अुस समय पूनामें गुजराती और काठियावाड़ी दो अलग अलग क्लब थे। अुनमें से ठक्करबापा काठियावाड़ी क्लबमें शामिल हुअे। अिसके पीछे खास दृष्टि तो यह थी कि खर्चमें किफायत हो, क्योंकि काठियावाड़ी क्लबका खर्च गुजराती क्लबसे कम आता था।

अमृतलाल ठक्करने कालेजके ये तीन बरस किस ढंगसे बिताये, कैसे पढ़ाअी की, वगैराके बारेमें ब्यौरेवार बहुत कुछ जाननेको नही मिलता। परंतु अुन तीन वर्षोंमें आर्थिक दृष्टिसे काफी दिक्कतों और मुसीबतोंका अुन्हें सामना करना पड़ा होगा। परंतु अुन दिनों कालेजके विद्यार्थियोंको गरीबी अुतनी तीव्र रूपमें नहीं खटकती थी, जितनी आजकलके विद्यार्थियोंको खटकती है। गरीब होनेमें हीनता नहीं मानी जाती थी। बहुतसे गरीब विद्यार्थी केवल गरीब होनेके कारण ही पढ़ाअीमें अधिक ध्यान देते थे, मेहनत करते थे और अिस प्रकार पुरुषार्थ करके आगे बढ़ते थे। मिट्टीके तेलका दिया जलाने लायक पैसे पास नहीं हों, तो म्युनिसिपैलिटीके दियेकी रोशनीमें पढ़कर पढ़ाअी जारी रखनेवाले विद्यार्थी भी अुस जमानेमें मौजूद थे। गोखलेजी

और अुनके जैसे अन्य गरीब किन्तु परिश्रमी और होशियार विद्यार्थियोंके अुदाहरण तो अुनकी नजरके सामने थे ही। साथ ही न्यायमूर्ति रानडेके जीवनकी, अुनकी सादगी और स्वदेशाभिमानकी तथा दूसरे गुणोंकी अुस वक्तके अुच्च कोटिके कुछ विद्यार्थियों पर बड़ी प्रबल छाप थी। अमृतलाल ठक्कर भी अुनके असरमें आये थे। अुन्होंने अिन महान और पूज्य पुरुषका नाम और अुनके कामके बारेमें केवल सुना ही नहीं था, बल्कि जब पूनामें पढ़ रहे थे तब अेकाध बार अुनके दर्शन करनेका सुयोग भी अनायास अुन्हें मिल गया था। अैसे अेक प्रसंगका वर्णन करते हुअे ठक्करबापा लिखते हैं:

"मै विद्यार्थी था और पूनाके कालेजमें पढ़ता था, तब पूनामें रविवार पेठ मुहल्लेमें स्थित काठियावाड़ी क्लबमें रहता था। वहांसे रोज पैदल कालेज जाता था। अेक दिन लकड़ीके पुल परसे गुजर रहा था, तब मैंने न्याय-मूर्ति रानडेके दर्शन किये। अिस पवित्र और प्रतिभासंपन्न पुरुषके बारेमें मैंने पहलेसे सुन रखा था। अिसके सिवाय मैंने यह भी सुना था कि वे गोखलेजी जैसे महान पुरुषके गुरु थे। गोखलेजीके प्रति मुझे पूज्यभाव था, अिसलिअे अुनके गुरुके प्रति भी पूज्यभाव होना कोअी आश्चर्यकी बात नहीं। मुझे अच्छी तरह याद है कि रानडेजीको देखकर मैंने अुन्हें नमस्कार किया था और मनमें धन्यता अनुभवकी थी।"

पूनामें जब वे प्रथम वर्षमें पढ़ते थे तब अिंजीनियरी विद्याके पाठचक्रममें सिद्धान्तके साथ साथ व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त करना पड़ता था। और अुसके लिअे हाथमें हथौड़ा भी लेना पड़ता था। अिस प्रकारका शारीरिक काम करनेमें — यांत्रिक काम करनेमें वे अुकता जाते थे। हाथोंमें औजार लेकर काम करना अुन्हें अनुकूल ही नही पड़ता और अुनके हाथोंमें अुस समय औजार शोभा भी नहीं देते थे। अिसके सिवाय अिंजीनियरी विद्यामें अेक और चीज भी जरूरी होती है और वह है चित्र खींचने, आकृतियां बनानेका काम। अिस काममें भी अमृतलाल ठक्कर बहुत होशियार नहीं थे। और यह अुनकी पसन्दका विषय नही था। फिर भी परीक्षाके लिअे अिसे करना ही होगा, यह समझकर वे लगनपूर्वक करते जरूर थे। वैसे, गणित-विद्याका अुन्हें बड़ा शौक था और अिसमें वे चमक अुठते थे। फरदूनजी दस्तूर जैसे गणित-विद्याके प्रखर विद्वान अुनके प्राध्यापक थे। अुस समय प्राध्यापकोंमें अधिकांश युरोपियन ही थे और अध्यापक व सहायक सब भारतीय थे।

राजनैतिक क्षेत्रमें जो लोग यहां हाकिम बनकर आते, अुनसे ये गोरे प्राध्यापक कुछ दूसरी ही मिट्टीके बने होते थे। अुनमें घमंड और अभिमान लेशमात्र नहीं था। विद्यार्थियों पर वे प्रेम रखते, स्वयं विद्याव्यासंगी थे

और होशियार विद्यार्थियोंका तेज परखकर अुन्हें आगे लाने और मदद देनेको सदा तैयार रहते थे। अुस समय पूना कालेजके प्रिंसिपाल डॉ० कुक थे। ठक्करबापाके शब्दोंमें कहें तो वे बहुत ही 'प्रभावशाली' और प्रेमी सद्गृहस्थ थे और अपने विद्यार्थियोंके लिअे सब कुछ करनेको तैयार रहते थे। ठक्करबापा लिखते हैं कि कुल मिलाकर मैंने अपने कालेजके दिन खासे आनंदमें गुजारे।

कालेजके दिनोंमें अमृतलाल ठक्करके जो थोड़े मित्र थे, अुनमें गुजरातके प्रखर साहित्यकार और कवि स्व० बलवंतराय ठाकोर भी अेक थे। ठक्करका ठाकोरके साथ बहुत अच्छा संबंध था। अिस सबंधकी बातचीतके दौरानमें कालेजके अुन दिनोंके संस्मरण याद करते हुअे श्री बलवंतराय ठाकोरने कहा था:

"हम दोनों बड़े गाढ़ मित्र थे। दोनों अक्सर साथ खाते, साथ खेलते, साथ सोते और साथ रहकर ही अनेक घंटे बिताते। वैसे अमृतलाल थे विज्ञानके विद्यार्थी और मैं था कलाका विद्यार्थी। अिसलिअे हम अेक कालेजमें नहीं पढ़े। अिसी तरह हमारे प्रोफेसर वगैरा भी अेक नहीं रहे।"

कालेज-जीवनके ये दिन श्री ठक्करके लिअे सुखमय थे। पूनामें अुनका अधिकांश समय अध्ययन ही में बीता था। पहलेसे ही गंभीर प्रकृतिके मनुष्य थे, अिसलिअे खेलकूदमें बहुत थोड़ी दिलचस्पी लेते थे।

कालेजके प्रथम वर्षमें थोड़े महीने बाद दस दिनकी छुट्टी हुअी तब वे भावनगर हो आये थे। अिसके सिवाय जब भी वैकेशनकी छुट्टियां होतीं, वे बिना चूके भावनगर जाते। तब कुटुम्ब तथा मोहल्लेके छोटे बड़े लड़के अुन्हें घेर लेते थे। कुटुम्बके कुछ लड़के पढ़ाअीमें अूंची कक्षाओंमें भी पहुंच गये थे। अुन्हें वे गणित तथा यूक्लिडकी भूमिति पढ़ाते।

कालेजकी पढ़ाअीके दिनोंमें अमृतलाल खूब किफायतसे रहते। अुस समय कालेजके खर्च और जीवनके खर्चका स्तर बहुत ही नीचा था। सस्ताअीका जमाना था। फिर भी तीस रुपये मासिक खर्च सहज ही हो जाता था। तीन वर्षकी कालेजकी शिक्षा पूरी करनेके लिअे पिताको कर्ज करना पड़ा था और माताके गहने रहन रखने पड़े थे, यह घटना पुत्रको बहुत वर्ष तक याद रही थी। अिस घटनाको याद करके पिछली अुम्रमें ठक्करबापा अक्सर गद्गद हो जाते और मन ही मन हजारों बार माताको प्रणाम करते। माताकी वह अुदारता और पिताका वह शिक्षा-प्रेम वे कभी भूले नहीं। माता-पिताकी जिस अुदारता और जिस प्रेमके कारण वे अुच्च शिक्षा प्राप्त कर सके, अुसका मातृ-ऋण और पितृ-ऋण तथा पूनाके जिन धुरंधर प्राध्यापकोंसे

अुन्होंने अुच्च शिक्षा प्राप्त की अुनका गुरु-ऋण अुन्होंने बड़े होनेके बाद गरीबों, हरिजनों, आदिवासियों और पिछड़े हुअे वर्गोंकी शिक्षाके काममें रत रहकर, अुच्च शिक्षाके लिअे अुन्हें आर्थिक तथा अन्य सहायता देकर और जीवनभर अुसके लिअे तपश्चर्या करके चुकाया।

६

विवाहित जीवन और पारिवारिक जीवन

अमृतलाल ठक्करका विवाह अुस समयके सामाजिक रीतिरिवाजोंके अनुसार बहुत ही छोटी अुम्रमें हो गया था। अुस जमानेमें प्रतिष्ठित और अिज्जतदार कुटुम्बोंमें पुत्र पालनेमें झूलता हो तभी सगाअी हो जाती और दस बारह वर्षकी अुम्रमें विवाह भी हो जाता। अैसे बालविवाहोंमें किसी भी प्रकारका अनौचित्य अुस समय हिन्दू समाजमें किसीको नहीं लगता था। अलबत्ता राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, और अुनके जैसे कुछ अन्य समाज-सुधारकों और धर्मसुधारकोंने हिन्दू समाजमें प्रचलित अिन बुराअियोंके विरुद्ध आवाज अुठाअी थी और लोगोंको अुनसे बचानेके लिअे सामाजिक सुधारोंकी हलचल शुरू कर दी थी। फिर भी अधिकांश हिन्दूसमाज अिन सारे अुपदेशों और सुधार-आन्दोलनोंसे अस्पृश्य ही रहा था और अिन सुधारोंकी हलचल भावनगरकी लोहाणा जाति तक तो अभी पहुंच ही नहीं सकी थी।

अुस समय विवाह व्यक्तिगत जीवनके सवालके बजाय कौटुम्बिक सुविधा-असुविधाका सवाल अधिक माना जाता था। लड़के-लड़की कब विवाह करें, किसके साथ करें, किस तरह करें, यह सब विवाह करनेवाले व्यक्तियोंके बजाय अुनके मां-बाप तय करते और अुनसे भी बड़ा कोअी बुजुर्ग घरमें जीवित हो तो वह तय करता।

विट्ठलदास ठक्करने भी अपने बड़े भाअीकी सलाहके अनुसार अपने दो पुत्रोंका विवाह बड़े भाअीके दो पुत्रों और अेक बहनके लड़केके साथ अेक ही समय निपटाया था। हरअेक पुत्रका अलग अलग विवाह किया जाय तो अलग अलग और अधिक खर्च हो, जब कि अेक साथ विवाह हो जाय तो खर्च कम अुठाना पड़े। अिस ढंगसे विवाहकी समस्या हल करनेमें विवाह करने-वालेकी अुम्र, योग्यता और सुविधा-असुविधा वगैरा किसी भी बातका खयाल नहीं रखा जाता था। श्री अमृतलाल ठक्करके बापदादोंके समयसे अिसी

प्रकार चला आ रहा था। अिसलिअे अिससे भिन्न विचार करनेकी सूझ विट्ठलबापाको भी अुस समय नहीं थी। और अिसकी आवश्यकता भी नहीं जान पड़ी थी।

अिस कारण जब वे दूसरी अंग्रेजीमें पढ़ रहे थे, तब अुनकी सगाअी हो गअी और अुसके दो वर्ष बाद दूसरे भाअियोंके साथ अुनका भी विवाह अेक ही मंडपके नीचे हो गया।

बालक अमृतलालको अुस समय अपने विवाहकी जिम्मेदारी और गंभीरताका खयाल होना तो दूर, विवाहित जीवनकी प्रारंभिक और आवश्यक हकीकतोंका भी कोअी खयाल नहीं था। वे अिस मामलेमें बिलकुल अबोध थे।

बापा अपने अिस विवाह-प्रसंगके विषयमें लिखते हैं:

"बहुत ही कच्ची अुम्रमें, जब मेरी आयु केवल ग्यारह-बारह बरसकी थी, मेरा विवाह हुआ था — मेरा विवाह हुआ था, अिसके बजाय यह कहना अधिक सच है कि मेरा विवाह कर दिया गया था। मेरे ताअूजी रुपयेवाले थे। और अुनके दो लड़कोंकी शादी बड़ी धूमधामसे हो रही थी। अुनके साथ मेरे बड़े भाअीका, मेरा, तथा अेक बड़ी अुम्रके मेरी बुआके लड़केका — अिस प्रकार कुल पांच भाअियोंका विवाह अेक साथ अेक ही मंडपके नीचे हुआ था। अिस प्रकार अेक साथ शादी करनेका हेतु खर्च बचाना था।

"अिस अुम्रमें विवाह क्या है, स्त्रीके साथ संबंध क्या है, पुरुष और स्त्रीका अेक दूसरेके प्रति फर्ज क्या है, अिसका मुझे कुछ भी खयाल नहीं था। शादीकी बरात घर आनेके बाद पहली रातको स्त्रीके साथ सोनेकी बात भी रखी गअी थी। पर स्त्री-संभोग जैसी वस्तु तो अुस समय मैं जानता ही न था। और अुसके बाद भी चार-पांच बरस तक अिस विषयका मुझे कोअी ज्ञान न था।"

अुस समयके विवाह और आजकलके विवाहकी तुलना करते हुअे बापा लिखते हैं:

"विवाहकी अुस समयकी आयु और आजकी आयुमें जमीन-आसमानका फर्क है। शारदा कानून बननेके बाद लोगोंकी मनोवृत्तिमें बहुत अन्तर पड़ गया है। हां, अभी तक वह कानून पूरी तरह अमलमें नहीं आया। और बहुत लोग अुससे बच निकलनेके रास्ते भी ढूंढ़ते हैं। . . .

"आज तो युवक-युवती खुद विवाहकी बातें तय कर सकते हैं। घूमने-फिरनेकी काफी आजादी होनेसे अनेक स्थानों पर मिलजुल सकते हैं और यह विचार कर सकते हैं कि वे अेक दूसरेके अनुकूल हो सकेंगे या

नहीं। छोटी अुम्रमें या वयस्क होने पर मां-बाप ही विवाहका प्रबंध कर दें या युवक-युवतियां अपने आप ही विवाहकी व्यवस्था कर लें,— अिन दो प्रथाओंमें से कौनसी अच्छी और कौनसी त्याज्य है, अिस बारेमें विपरीत मत हो सकते हैं; अिसकी मैं अिस समय चर्चा नहीं करना चाहता। परंतु बालविवाह तो बन्द हो ही जाने चाहिये। लड़कोंके बीस वर्षसे पहले और लड़कियोंके सत्रह-अठारह वर्षसे पहले विवाह हरगिज न किये जायं, अिस बारेमें मेरे खयालसे दो मत हैं ही नहीं।"

जैसा अूपर बताया गया है, ठक्करबापाका विवाह यद्यपि ग्यारह-बारह वर्षकी अुम्रमें हुआ था, परंतु सगाअी लगभग नवें वर्षमें हो गअी थी। सामनेवाला ससुराल पक्षका कुटुम्ब भी गरीब ही था। अुनके ससुर कालीकटमें किसी पेढ़ी पर नौकरी करते थे, और अिन वर्षोंमें बांस-बल्लीकी खरीदका काम करते थे। कालीकट और भावनगरके बीच व्यापारियोंका खरीद-बिक्रीका संबंध अच्छा रहता था। अिसलिअे अुनके ससुर पेढ़ीके लिअे बांस-बल्लीकी खरीद करने भावनगर आते थे। अिस प्रकार दोनों परिवारोंके बीच सम्पर्क बना रहता।

जैसा बापाने स्वयं ही बताया है, जब ब्याह हुआ तब वे स्त्री-संबध क्या कहलाता है, दोनोंका अेक दूसरेके प्रति क्या कर्तव्य होता है, वगैरा कुछ नहीं जानते थे। फिर अुनका विद्याध्ययन भी जारी था। और मैट्रिकके बाद तीन साल बाहर पूना जाना पड़ा था। अिसलिअे बाल-विवाहसे जो बुरे परिणाम निकलते हैं अुनसे वे अनायास बच गये। १८८६ में सोलह वर्षकी अुम्रमें मैट्रिक हुअे और अुसके बाद तीन बरस अिंजीनियरी विद्याका अध्ययन करनेमें बिताये। तब तक वे विवाहित होते हुअे भी स्वभावतः विद्यार्थी जीवन — ब्रह्मचारी जीवन — व्यतीत कर सके।

अिंजीनियरीकी पढ़ाअी पूरी होनेके बाद और अुसकी अुपाधि प्राप्त करनेके बाद वे नौकरी पर स्थिर हुअे। अिसके बाद ही अुनका विवाहित जीवन शुरू हुआ था। सं० १९९२ में अुनके यहां प्रथम बालकका जन्म हुआ। परन्तु ठक्करबापाको जीवनमें दाम्पत्यसुख बहुत मिला हो, अैसा नहीं लगता। और सन्तानसुख तो अुससे भी कम मिला, क्योंकि बालक पांच छः वर्षका होकर गुजर गया। अुसके बाद अुन्हें दूसरी संतान नहीं हुअी।

अमृतलाल ठक्करकी पत्नीका शरीर शुरूसे ही कुछ दुर्बल था। अिस पर भी प्रसूतिके बाद अितने बड़े सम्मिलित परिवारमें जितनी चाहिये अुतनी देखभाल न हो सकनेके कारण या अन्य किसी कारणसे अुन्हें प्रदर रोग लग गया। अुसके कारण अुनका शरीर क्षीण होता चला

गया। संयुक्त कुटुम्ब, सास-ससुर, देवरानी-जेठानी वगैराकी मौजूदगी और पुराना जमाना; अिस वातावरणमें पत्नीकी बीमारीका अिलाज करना बड़ा कठिन काम था। अिस पर भी प्रदर जैसे अुस समय गुप्त माने जानेवाले रोगका अिलाज कराने जाना तो लगभग असंभव ही था। शरमके मारे अैसे रोगकी जानकारी पतिके सिवाय अन्य किसीको कराअी नहीं जा सकती थी और जवान तथा अनुभवहीन पति भी अिस मामलेमें घरकी, कुटुम्बकी, मर्यादाको भंग करके और मां-बापकी अुपेक्षा करके दवा-खाने जा नहीं सकता था। अैसी अुस समयकी स्थिति थी। अमृतलाल ठक्कर अिस सम्बन्धमें बहुत परेशान जरूर रहते थे, परन्तु अुस समयकी मानी हुअी कुटुम्ब-धर्मकी मर्यादा और विचारोंके कारण वे भी संकोचवश, लज्जावश होकर बैठे ही रहे। समय पर अुपचार न होनेसे अुस रोगने घर कर लिया और जीवकोर बहनका स्वास्थ्य अधिकाधिक बिगड़ता गया। वे बार-बार बीमार पड़ने लगी। अिस कारण अुनसे जल्दी अुठा नहीं जाता, घरकी दूसरी स्त्रियोंके साथ, देवरानी-जेठानीके साथ, समय पर काम नहीं होता। अिस सम्बन्धमें स्त्रीवर्गमें टीका-टिप्पणी और आलोचना होती और अिन सब बातोंका अुन पर मानसिक भार भी रहा करता। अिन सब कारणोंसे और दिन दिन बिगड़ती हुअी शारीरिक स्थितिके कारण आगे चलकर जीवकोर बहनको हिस्टीरियाकी बीमारी हो गअी। यह रोग शुरूमें मामूली था, परन्तु १९०६–७ के अरसेमें जब अमृतलाल ठक्कर बम्बअीमें चेम्बूरकी कचरा-पट्टीके निरीक्षक अधिकारीके रूपमें सौ रुपये मासिक वेतन पर आये, तब यह रोग बहुत बढ़ गया था। जीवकोर बहनको चाहे जब अचानक गश आ जाता और वे गिर जातीं। ठक्करसाहबकी नौकरी शुरू ही हुअी थी, अिस-लिअे समय पर फर्ज अदा करने जाना पड़ता। अुस समय बम्बअीके जी० आअी० पी० रेलवेके कुरला अुपनगरमें दोनों पति-पत्नी अकेले ही रहते थे। घरमें कोअी बुजुर्ग या अन्य सम्बन्धी नहीं थे। अिसलिअे ठक्करसाहब नौकरी पर जाते तब पत्नीको अकेले घर रहना पड़ता। अिस बीचमें अचानक हिस्टीरियाका हमला हो जाय और वे गिर जायं तो दरवाजेसे टकरा जाने या और किसी तरह चोट पहुंचनेका भय रहता। अिसलिअे जब वे नौकरी पर जाते तब घरमें बिस्तर बिछाकर दरवाजा बन्द कर जाते। अिससे अुनकी अनुपस्थितिमें कभी हिस्टीरियाका हमला होता तो जीवकोरबाअीके घरके भीतर ही गिरनेसे चोट लगनेका डर कम रहता। अुस समय अुनके हाथोंकी मुट्ठियां बंध जातीं, पैर टूट रहे हों अिस तरह अैंठ जाते और आंखें पथरा जातीं। हमलेका जोर मामूली होता तो यह स्थिति थोड़ी देर रहती और अधिक होता तो लम्बे

समय तक रहती। अन्तमें जब वह जोर बिलकुल कम हो जाता तब वे फिर आंखें खोलतीं और थोड़ी देरमें हाथ-पैरोंमें चेतना आने पर अुठकर खड़ी हो जातीं और कामकाजमें लग जातीं।

कुरलाके निवासकालमें यह स्थिति काफी समय तक रही।

ठक्करसाहबके विवाहित जीवनका मुक्त और कुछ हद तक सुखद काल वह कहा जा सकता है, जब वे सांगली राज्यमें १९०३ से १९०५ के अरसेमें स्टेट अिंजीनियरके पद पर थे। तब पत्नीकी तबीयत भी पहलेसे अच्छी रहती थी। वहांका जलवायु अुन्हें काफी अनुकूल आ गया था। कुटुम्बका भार नहीं था, अिसलिअे अुन्हें अवकाश भी रहता था। अिससे नौकरीका काम पूरा करके ठक्करसाहब रोज शामको पत्नीके साथ देहातमें सैरको निकलते। अैसा अेक प्रिय स्थान सांगलीसे थोड़ी दूर हरिपुरा नामक गांव था। गांव बड़ा सुन्दर था। गांवके पास कृष्णा नदी बहती थी और नदीके किनारे मंदिर था। मंदिरमें जाकर दर्शन कर आनेके बाद अुसके घाटकी सीढ़ियों पर पति-पत्नी दोनों नदीके बहते पानीमें पैर डुबोकर बैठते और कितने ही समय तक बातें करते। अिस प्रसंगके सम्बन्धमें ठक्करबापा लिखते हैं :

"मैं १९०३ से १९०५ तक सांगली राज्यमें स्टेट अिंजीनियरके रूपमें नौकरी करता था। वहां मेरे मित्र डॉ० हरिकृष्ण देव भी राज्यके बड़े डॉक्टर थे। अुनके साथ मेरी घनिष्ठ मैत्री थी। और अिसीलिअे मैं अुतनी दूरके महाराष्ट्रके देशी राज्यमें जा सका था। वहां मैं और मेरी पत्नी दोनों अकेले ही रहते थे। हमारे कोअी बच्चा नहीं था।

"आम तौर पर अिंजीनियरोंको सुबहके वक्तमें बाहर घूमकर कामोंकी देखरेख करनी पड़ती है और दोपहरको दोसे पांच बजे तक दफ्तरका काम होता है। मेरा कार्यक्रम भी यही रहता था। तीन वर्ष तक पूर्व अफ्रीकामें नौकरी करके और अकेलेपनकी जिन्दगी गुजार कर मैं लौटा था। और पत्नीके साथ रहनेका यह मौका मिला था। वह भी पराअी भाषावाले मराठी प्रदेशमें। मेरी पत्नीको मराठी नहीं आती थी और कोअी गुजराती पड़ोसी नहीं था, अिसलिअे जहां तक बनता अुनका अधिक समय मेरे साथ ही बीतता था।

"हम दोनोंके सैरको जानेका प्रिय स्थान सांगली शहरसे दो-तीन मील दूर हरिपुरा गांव था। अिस गांवमें कृष्णा नदीके किनारे घाटकी सीढ़ियों पर हम बैठते और परस्पर बातें करते। अिस प्रकार अेक घाट पर बैठकर कोअी पति-पत्नी बातें किया करें, यह अुस समयके महाराष्ट्रके दकियानूसी

विचारवाले भागके मराठी लोगोंको अच्छा नहीं लगता था। अुन्हें लगता कि मैं कोअी अनुचित काम कर रहा हूं। परन्तु अुसकी परवाह किये बिना हम तो बैठते और विवाहित जीवनका आनन्द अुठाते। साथ ही छुटपनमें अेक मराठी नाटकमें पढ़ा था सो भी अुस समय याद आता :

"गोदावरीच्या तीरीं आपण केले फार विहार
सीते — आठवते तुज काय ?"

ठक्करबापाको अपने विवाहित जीवनका यह पुनीत स्मरण विचित्र परिस्थितियोंमें हुआ था। बापाके शब्दोंमें ही अुसका वर्णन सुनिये :

"गांधीजीको गुजरे हुअे या सच कहा जाय तो गोलीसे अुनकी हत्या हुअे डेढ़ मास हो गया था और सेवाग्राममें सैकड़ों रचनात्मक कार्यकर्ताओंका सम्मेलन हुआ था। अैसे समय फुरसतके वक्त अेक महाराष्ट्री ब्राह्मण महिला मुझसे अपने जीवन और कार्यका अितिहास कह रही थी। अुसने बताया कि पिछले डेढ़-अेक वर्षसे वह प्राकृतिक चिकित्साका अेक केन्द्र चला रही है और प्राकृतिक अुपचार द्वारा अनेक रोगियोंको अच्छा कर सकी है। अुसकी अिच्छा कस्तूरबा ट्रस्टसे मदद लेनेकी थी। और अिसीलिअे वह ये सब बातें कर रही थी। मैंने अुससे गांवका नाम पूछा तब अुसने 'हरिपुरा' कहा। 'हरिपुरा' नाम सुनते ही लगभग चवालीस वर्ष पहलेके अपने विवाहित जीवनकी स्मृतियां ताजी होने लगीं। तुरन्त संस्मरणोंकी अेक माला-सी बन गअी, मानो पूर्वजन्ममें हुअी बातें याद आ रही हों। वह मंदिर, वह कृष्णा नदीका बहता पानी, वे घाटकी सीढ़ियां, वह सुरम्य मार्ग, सब अेकके बाद अेक आंखोंके सामने खड़े हो गये। अुस समय मैंने पास बैठे हुअे मित्रोंसे कहा कि अिस महिलाकी बातोंसे बहुत पुराने और मीठे संस्मरण याद आ रहे हैं। . . . परन्तु यह मैं तुम्हें बादमें कहूंगा।"

अितना कहकर फिर बापा अपने काममें डूब गये। भगवान जाने अुसके बाद मित्रोंको ये मीठे संस्मरण सुनानेका समय अुन्हें मिला होगा या नहीं।

विवाहित जीवनके मीठे संस्मरणोंकी याद दिलानेवाला यह काल था। अिसके सिवाय तो, जैसा अूपर बताया जा चुका है, ठक्करबापाको लगभग सारा ही समय चिन्ता, अुद्वेग और कठिन परिस्थितियोंमें ही पार करना पड़ा। फिर भी बापाने अिसका बहुत भार मनमें नहीं रखा। कर्तव्य-कर्ममें ही अुन्होंने आनन्द माना।

सांगलीके बाद जब बम्बअीमें म्युनिसिपैलिटीकी नौकरी करते थे, तब अुनकी पत्नीका स्वास्थ्य ज्यादा बिगड़ गया था। प्रदरसे हिस्टीरिया और अुससे अनेक प्रकारके रोग बढ़ने लगे थे और आखिर आखिरमें अुन्हें क्षय रोग भी लग गया था। अिस समयमें ठक्करसाहबको म्युनिसिपैलिटीकी नौकरी करनी होती थी। अुससे जो समय बचता अुसमें वे पत्नीकी सेवा करते। पत्नीको बहुत लम्बे समय तक रोगशय्या पर पड़ा रहना पड़ा था। परन्तु जैसा ठक्करसाहब कहते हैं "वे दुःखके दिन भी बिता दिये। अन्तमें लगभग १९०७ की अवधिमें अुसकी जिन्दगी पूरी हुअी और हम दोनों जुदा हो गये।"

पहली पत्नी गुजर गअीं तब ठक्करसाहबकी अुम्र ३९ वर्षकी थी। हिन्दू-समाजमें पुरुषके लिअे अुस वक्त कोअी भी अुम्र शादीके लायक मानी जाती थी। अुनसे भी बड़ी अुम्रके सेठ दूसरी बार तो क्या तीसरी और चौथी बार भी ब्याह करते थे। ठक्करसाहब विधुर हो गये थे। साथ ही अुनके सन्तान नहीं थी। अिसलिअे अुनके पिता विट्ठलदास ठक्करने अुनसे फिर विवाह करनेका आग्रह किया। ठक्करसाहबकी भी भीतरसे थोड़ी अिच्छा तो थी, अिसलिअे अुन्होंने विशेष विरोध नहीं किया। अतः पिताने अिस दिशामें प्रयत्न किया और राजकोटमें अेक गणात्रा कुलकी कन्याके साथ अुनका विवाह कर दिया। अिस कन्याकी अवस्था बहुत ही छोटी थी। यह दूसरी बारका विवाह भी बहुत सफल या सुखी साबित हुआ हो, अैसा नहीं जान पड़ता। यह दिवालीबाअी भी बेचारी अेक दो वर्षकी घर-गृहस्थी भोगकर गुजर गअी। अिसके बाद ठक्करसाहबने विवाहका विचार छोड़ ही दिया। अिस दूसरे विवाहके सम्बन्धमें अुन्होंने जो कुछ कहा है अुसे देखिये :

"प्रथम पत्नीके देहावसानके अेक-दो वर्ष बाद मेरे पिताके आग्रह और अपने मनकी कमजोरीके कारण मैंने दुबारा शादी की और वह भी मुझसे कहीं छोटी अुम्रकी, लगभग सोलह वर्षकी तरुण कन्याके साथ। यह विवाह अनेक कारणोंसे, खास तौर पर पति-पत्नीकी अुम्रमें अन्तर होनेके कारण सुखी सिद्ध नहीं हुआ और यह दूसरी पत्नी भी विवाहके बाद अेक-दो वर्षमें चल बसी। सन् १९१२–१३ के बादसे मैं अेकाकी स्थितिमें ही रहा हूं। . . . और रहनेमें आनन्द महसूस होता है। स्त्री और बच्चे न होनेकी कमी महसूस नहीं हुअी और अिसीलिअे गृहस्थी छोड़कर देशसेवाके काममें लग जानेकी मनकी प्रवृत्ति हुअी। अिसमें मुझे अीश्वरकी प्रेरणाके सिवाय और कुछ दिखाअी नहीं देता। पैंतालीस वर्षकी

अुम्रमें गृहस्थी छोड़कर समाज-सेवाके काममें लग गया, अिस बातको आज चौंतीस साल हो गये। अीश्वर-कृपासे यह अवधि बड़े सुख और सन्तोषमें बीती है।"

अिस प्रकार दोनों पत्नियोंके अेकके बाद अेक देहान्तके बाद सांसारिक जीवनसे अुन्होंने अपना मन हटा लिया और अपनी तमाम अिच्छा, अभिलाषा, आकांक्षा, सारी वृत्ति, शक्ति और भक्ति सार्वजनिक सेवाके देवमंदिरमें अर्पण कर दी। अुन्होंने जैसे गृहस्थीको सुशोभित किया वैसे ही विधुरावस्थाको भी शोभायमान किया और वानप्रस्थावस्थामें करने योग्य सेवाके अनेक कार्य किये और अुन्हींमें जीवनरस भोगा।

ठक्करबापाका यह चौंतीस वर्षका दीर्घ जीवन — जिसमें अुन्होंने अपने छोटेसे कुटुम्बका घेरा तोड़कर वसुधाको कुटुम्ब बनाया और वसुधा पर बसनेवाले दीन, दुःखी, दलित, पतित और पीड़ितोंको अपना कुटुम्बीजन बनाया — अनेक लोकसेवकों, विधुरों, निःसन्तानोंके लिअे सान्त्वना और प्रेरणा देनेवाला बन गया है। अैसे कितने ही लोकसेवक हैं जो बापाके जीवनको दृष्टिके सामने रखकर अपना सांसारिक दुःख भूल सके हैं और लोकसेवामें ओतप्रोत हो सके हैं। ठक्करबापाने स्वयं भी अपने भाग्यको अीश्वरका निर्णय माना है। कुटुम्बके चार छः आदमी ही अुनकी देखभाल और प्रेम-प्रीति प्राप्त करें, अिसके बजाय करोड़ों लोगोंको अुनका प्रेम, अुनकी सेवा मिले, यह कुदरतकी योजना होगी; अिसीलिअे अीश्वरने अुनके भाग्यमें अैसा अेकाकी जीवन बिताना लिखा होगा — अैसा ठक्करबापाने मनसे स्वीकार कर लिया और अीश्वरकी अिस अिच्छाके अधीन होकर अैसा कर्तव्य-कर्म भी कर दिखाया जिससे अीश्वर प्रसन्न हो।

परन्तु अिस प्रकार पैंतीस वर्ष तक सेवाजीवनमें ओतप्रोत हो गये, अिसका यह अर्थ नहीं कि कुटुम्बीजनोंके प्रति अुनका प्रेम कम हो गया अथवा कुटुम्बीजनोंमें अुनकी दिलचस्पी अब घट गअी थी। अुलटे, वह प्रेम और रस अधिक अुत्कट और अधिक शुद्ध बन गया। जीवनके अंतिम क्षण तक अपने भाअी-भाभियों, भतीजों, भतीजियों, बहन, भानजों वगैरा सबके जीवनमें वे बराबर दिलचस्पी लेते रहे। स्वयं बंगालमें हों या आसाममें, दक्षिणमें हों या अुत्तरमें, परन्तु अपने बड़े भाअी परमानन्द और छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्करके साथ सतत पत्रव्यवहार रखते थे, और दूर रहते हुअे भी अुनसे सम्पर्क कायम रखते थे। अितना ही नहीं, परन्तु अपने भतीजे कपिलभाअी और रामूभाअीके साथ भी अुनका पत्रव्यवहार जारी रहता। भाअी और भाभी आनन्दमें हैं या नहीं, अुनकी तन्दुरुस्ती अच्छी है या

नहीं, कुटुम्बके अन्य लोग कहां हैं, क्या करते हैं, वगैराकी पूछताछ करते थे। सब बच्चोंके नाम लिख-लिखकर अैसी बहुतसी छोटी-छोटी बातें ध्यानमें रखकर पत्रोंमें पूछते कि वे क्या करते हैं, क्या पढ़ते हैं, परीक्षामे बैठें हैं तो पास हुअे या नहीं। अिसके लिअे अेक खास अरसेके बाद समय निकालकर स्वयं भावनगर आ जाते अथवा स्वजनोंको दाहोद, दिल्ली या अहमदाबाद मिलने या थोड़े दिन साथ रहनेको बुलवा लेते। और कुटुम्बके साथ अपना सम्बन्ध अधिक ताजा, अधिक दृढ़ बना लेते। हां, अुनके कुटुम्ब-प्रेमकी अेक मर्यादा थी; और वह अुनका सेवाव्रत था। अिस व्रतमें बाधक हो, अुसमें रुकावट डाले, अैसा कोअी कुटुम्ब-प्रेम अुन्होंने नहीं रखा था। अिसकी स्पष्टता अुन्होंने सेवाजीवनमें कदम रखा तभी कर दी थी। परन्तु अिसके सिवाय तो अुनका कुटुम्ब-प्रेम अुलटे अधिक विस्तृत और विशुद्ध बन गया था।

अपने छोटे भाअी केशवलाल ठक्करको वे समय समय पर पत्र लिखते थे। दिल्लीसे अिस ओर गुजरातमें आये हों और अुनका कार्यक्रम निश्चित हो गया हो तो वे लिखते: "अहमदाबाद . . . तारीखको पहुंचूंगा। वहांसे कच्छके सफर पर जाअूंगा। वहां आनेके लिअे समय नहीं है। तुम्हें मिलना हो तो अहमदाबाद आ जाना। हां, केवल रातभर ही साथ रह सकेंगे। फिर दूसरे दिन नहीं ठहरा जा सकेगा। अितनेसे समयके लिअे ही भेंट हो सकेगी। अिसलिअे आना अुचित नहीं मालूम हो तो मत आना।" अितनी स्पष्टतासे वे पत्र लिखते थे।

दीवालीके समय या अैसे ही किसी त्यौहार पर देशमें आये हों और अपने निजी खर्चमें गुंजाअिश हो, तो बहन-बेटियों अथवा भानजियोंको कभी कभी दस-पांच रुपये खर्च करनेको दे देते। यह वृत्ति अुनमें अन्त तक कायम रही थी। अपनी अुत्तरावस्थामें जब वे अन्तमें भावनगर आराम लेने आये तब अैसे ही किसी पर्वके दिन अुनकी भानजी या निकट सम्बन्धवाली कोअी और बहन अुनसे मिलने आअी। पर्वका दिन था। बापाने पहले तो अुसके परिवारके हालचाल पूछे। बादमें पूछा: "केशुभाअीने तुम्हें क्या दिया?" "पांच रुपये।" "पांच रुपये तो थोड़े कहे जायंगे!" फिर भाअीको बुलाकर कहा: "केशुभाअी दो, दो। बहन-बेटियां और भानजियां हमारे यहां कब आती हैं? अैसे मौके बहुत कम आयेंगे। अैसे पवित्र अवसर बार बार नहीं मिलते।" यों कहकर अुन्होंने अपने छोटे भाअी डॉक्टर केशवलालको अुत्साह दिलाया और अुनसे और पांच रुपये दिलवाये और "मैं तो ठहरा सेवक आदमी। मेरे पास देने जैसी ज्यादा

पूंजी नहीं" यों कहकर अपनी तरफसे भी लगभग अुतनी ही रकम जोड़ दी और अुस दिन अुस बहनको खूब खुश कर दिया।

खुश करनेकी, सगे-सम्बन्धियोंको प्रसन्न रखनेकी कलाका बापामें अच्छा विकास हुआ था।

अुनके भतीजे श्री कपिलभाअी ठक्कर और रामूभाअी ठक्कर दोनों साहित्यके बड़े रसिया हैं। गुजराती साहित्यके वाचनका तो अुन्हें शौक है ही, साथ ही अुर्दू शायरीका भी शौक है। बापा दिल्लीमें रहने लगे अुसके बाद वहां अिस प्रकारकी पुस्तकोंकी तलाश करते और जौक, गालिब, जोश, चकबस्त, सागर निजामी वगैरा अुर्दू कवियोंकी कविताओंके नागरी लिपिमें छपे हुअे काव्यसंग्रह जुटाकर रामूभाअी और कपिलभाअीको भेजते।

कुटुम्बके अन्य जनोंके लिअे अिस प्रकार व्यक्तिगत और निजी दिलचस्पी लेकर अुनके सहायक होनेके अैसे अनेक प्रसंग मिलते हैं।

अितने पर भी जैसे जैसे अुनके सेवाक्षेत्रका विकास होता गया, वैसे वैसे अुनका कुटुम्ब-विस्तार भी बढ़ता गया और जिस प्रेमसे वे अपने कुटुम्बकी बहन, बेटी या भानजीकी मदद करते, अुतने ही प्रेमसे बल्कि अुससे भी अधिक प्रेमसे वे किसी भीलके, हरिजन युवकके या पिछड़े हुअे वर्गकी कन्याके सहायक बनते और अुसके व्यक्तिगत जीवनमें रस लेकर अुसे आर्थिक रूपमें अथवा शिक्षा-सम्बन्धी मदद देकर अूचा अुठाते। अुनका विशाल पत्रव्यवहार अैसे अनेक युवकों, युवतियों, भीलों, हरिजनों, कार्यकर्ताओं और विद्यार्थियोंकी सहायता करनेकी चिन्ता और ध्यान रखनेवाली अुनकी मनोवृत्तिकी गवाही देता है। अिस प्रकार बापाका कुटुम्ब-प्रेम विस्तृत होकर समाज-प्रेममें मिल गया और समाज-प्रेमको शुद्ध बनाकर कुटुम्बके व्यक्तियों तक ओतप्रोत हो गया। अिस तरह अुन्होंने वसुधाको कुटुम्ब बनाया और कुटुम्बको अुसकी छोटी परिधिसे बाहर निकालकर वसुधाके साथ जोड़ दिया।

७

नौकरीके दस वर्ष

१८९० में अमृतलाल ठक्करने कालेजके तीन वर्ष पूरे किये और अिंजीनियरीकी परीक्षामें पास होकर अेल० सी० अी० (Licenciate of Civil Engineering) की अुपाधि हासिल की। अिसके बाद क्या करें, यह सवाल ही नहीं था। कुटुम्बकी आर्थिक स्थिति बहुत साधारण थी। फिर सिर पर कर्ज था और जिम्मेदारी भी बड़ी थी। पिताने ऋण करके और माताके गहने रहन रखकर अुनका कालेजके अंतिम वर्षका खर्च पूरा किया था। यह वे जानते थे। अिसलिअे अुपाधि मिलनेके बाद तुरन्त ही काममें लग जाना जरूरी था। कामकी पसन्दके लिअे बाट देखनेको ठहरा नहीं जा सकता था। पहले ही अवसर पर जो भी नौकरी मिले अुसका हंसकर स्वागत कर लेनेकी ही बात थी। अिसलिअे दक्षिणमें शोलापुर जिलेमें बारसी लाअिट रेलवे लाअिन डालनेका जो काम शुरू हुआ था, अुसमें वे ओवरसियरकी हैसियतसे ७५ रुपये मासिक वेतन पर लग गये। अिस तरह अुन्होंने अिंजीनियरीकी कारगुजारी शुरू की और अींट, मिट्टी और पत्थरोंके साथ अपना जीवन जोड़ दिया। वहां थोड़े ही मासमें अुन्होंने अपनी शक्ति दिखाअी। और चार छः महीने वहां काम करनेके बाद तुरन्त ही बी० जी० जे० पी० (भावनगर-गोंडल-जूनागढ़-पोरबन्दर) रेलवेमें असिस्टेन्ट अिंजीनियरके रूपमें पौने दो सौ रुपयेकी तनख्वाह पर अुनकी नियुक्ति की गअी। अिस रेलवे तंत्रका केन्द्र अुस समय भावनगरके अुपनगर (गढ़ेची) में था। अिसलिअे अुन्हें अच्छी नौकरी तो मिली ही, साथ ही घर पर रहनेका सुयोग भी अनायास मिल गया। अुस समय वे घरसे गढ़ेचीके कारखाने तक घोड़े पर बैठकर जाते आते थे। आफिसके कामके अलावा अुन्हें बाहर भी घूमना पड़ता था। जहां जहां भी अिस रेलवेका काम शुरू होता, वहीं समय समय पर अुन्हें जाना पड़ता था। देखते देखते अुन्होंने रेलवे तंत्रमें और सौराष्ट्रके कुछ राज्योंमें अपनी कार्यदक्षता, अुद्योगशीलता और प्रामाणिकताकी सुगंध अच्छी तरह फैला दी। अुनकी प्रामाणिकता और सत्यनिष्ठाका सबूत देनेवाली अेक घटना अिसी अर्सेमें हो गअी।

काठियावाड़में अुस वक्त बी० जी० जे० पी० रेलवेकी तरफसे नअी रेलवे लाअिनकी पटरियां बिछाअी जा रही थीं। अुसमें जिन जिन किसानोंके

खेत बीचमें आते वे कट जाते थे। अैसे कितने ही किसान अिंजीनियर साहबकी भेंट-पूजा करते, ताकि अुनकी जमीन कटनेसे बच जाय। अमृतलाल ठक्करने सहायक अिंजीनियरका पद संभाला, अुसके बाद अैसे कुछ किसानोंने अपनी जमीनोंको कटनेसे बचानेके लिअे नये असिस्टेन्ट अिंजीनियर साहब अमृतलाल ठक्करके सामने रुपयोंकी थैलियां रिश्वतके रूपमें रखीं। परंतु वे रुपये पर रीझनेवाले देवता नहीं थे। वे अुल्टे किसानों पर खफा हुअे और कहा, ले जाओ यह रुपया वापस। मुझे नहीं चाहिये। रिश्वत देनेका अैसा नीच काम न करना। रेलवे लाअिन डालते समय यदि सहज ही तुम्हारी जमीन बच जाती हो तो भले ही बच जाय। वैसे रुपया देनेसे तुम्हारा कोअी मतलब नहीं बनेगा।

किसानोंके लिअे यह नया अनुभव था। अुस वक्त तो वे लोग चले गये, परंतु यह बात धीरे धीरे अूपरके अधिकारियों तक गअी। अिंजीनियरी विभाग तो काजलकी कोठरी जैसा था। वहां सभी अपने अपने ओहदे और सुभीतेके अनुसार रिश्वत खाते थे। अैसे काजलकी कोठरी जैसे विभागमें अेक आदमी प्रामाणिकताका आग्रह रखे, यह कौन पसन्द करता? अिससे कितनोंकी ही अिस 'अूपरी आमदनी' पर प्रहार होता होगा। अिसलिअे विभागमें खटपट शुरू हुअी और परिणामस्वरूप दो ढाअी वर्षके अन्तमें अुन्हें वह नौकरी छोड़ देनी पड़ी। नौकरी छोड़ देनेका तात्कालिक कारण तो किसी स्टेशन पर बननेवाले मकानोंमें खिड़की-दरवाजे रखनेके मामलेमें अपने अफसरके साथ अुनका मतभेद था। अमृतलाल ठक्करने मकानोंमें खिड़की-दरवाजे कैसे रखे जायं, यह अपना विषय होनेके कारण किसीका दखल स्वीकार करना पसन्द नहीं किया और मतभेद अुग्र हो जाने पर त्यागपत्र दे दिया।

सौराष्ट्रमें बी० जी० जे० पी० की नौकरीके अर्सेमें अुन्होंने बहुतसे संबंध बनाये थे। अिसलिअे वहांसे अलग होते ही वढवाण राज्यने अुन्हें राज्यके मुख्य अिंजीनियरके रूपमें आनेका प्रस्ताव किया और ठक्करसाहबने अुसे स्वीकार कर लिया। वढवाण राज्यमें अुनके बड़े भाअी परमानंद ठक्कर तीनेक वर्षसे दाजीराज हाअीस्कूलमें शिक्षकके रूपमें काम कर रहे थे और घरके लगभग सब लोग वहीं रहते थे। अिसलिअे अमृतलाल ठक्करको वहां जानेमें कोअी दिक्कत नहीं हुअी। वहां वाघेश्वरीकी खिड़कीके पास अेक बड़ा मकान किराये पर लिया हुआ था। वहां दोनों भाअी, अुनकी पत्नियां और बच्चे वगैरा सब साथ रहते थे। अुस समय बड़े भाअीको और अमृतलाल ठक्करको जो कुछ मिलता वह सब वढवाण और भावनगरके संयक्त कुटुम्बके

खर्चमें लग जाता। ठक्करने अपनी नौकरीकी अवधिमें वढ़वाण राज्यमें बहुत मकान बनवाये। दाजीराज हाअीस्कूल, नया राजमहल वगैरा अुनकी कड़ी नीति और होशियारी तथा अुज्ज्वल कारगुजारीके स्मृतिचिन्होंके रूपमें आज भी खड़े हैं। राजमहलकी योजना मि० बूथ नामक अेजेंसीके अंग्रेज अिंजीनियरके हाथों बनी थीं। और अुस योजनाके अनुसार सारा काम ठक्कर साहबने अपनी देखरेखमें पूरा कराया था।

वढ़वाणमें अुनकी प्रामाणिकता और नीतिको कसौटी पर कसनेवाली अेक घटना हो गयी थी। वहां वढ़वाण राज्यके निर्माण-विभागका कुछ काम गिरधर ठेकेदार और अुसके भतीजे झवेरको दिया गया था। अुस काममें कुछ खामी रह गयी थी। अिसलिअे अुसे पास करानेके लिअे अुन लोगोंने ठक्कर साहबको रिश्वत देकर खुश करने और अपने अनुकूल तहरीर हासिल करनेकी कोशिश की। अुस समय अमृतलाल ठक्कर अितने आग-बबूला हो अुठे कि वहीं अुस ठेकेदारको छाता लेकर मारने दौड़े। अिस घटनाके कारण काफी हल्ला हुआ। अुस ठेकेदारने राज्यसे शिकायत की, परंतु अुसमें अिनका कुछ हुआ नहीं और अुसकी बदनियतीका भंडाफोड़ हो गया। ठक्कर साहबकी अिस कार्रवाअीको राज्यने किस दृष्टिसे देखा, अिसका हाल मालूम नहीं होता। परंतु अिसमें शंका नहीं कि राज्यको जो स्पष्ट लाभ हुआ अुससे ठक्कर साहबकी प्रतिष्ठा अवश्य बढ़ी होगी। कारण बी० जी० जे० पी० रेलवेकी तरह यहां अुनका कोअी विभागीय अफसर नहीं था। अिंजीनियरी विभागमें तो वे स्वयं ही मुख्य अधिकारी थे और यहां किसीके हितोंको नुकसान पहुंचनेका अंदेशा नहीं था। वढ़वाण राज्यकी नौकरीके अर्सेमें अुन्हें अनेक अनुभव हुअे और राज्यकी कुछ भीतरी बातोंका भी अनायास पता लगा।

अुस समयके राजा बालसिंहजी दाजीराज बड़े नरम प्रकृतिके आदमी थे। राज्यमें दीवान शामलदासका ही बोलबाला था। वहां रहकर अुन्हें रजवाड़ोंका भ्रष्टाचार भी देखनेको मिला। परंतु अुनका अिन बातोंसे संबंध नहीं था। अिसलिअे वे अुस तरफसे आंख हटाकर अपने काममें ही मशगूल रहते थे। राज्यको जो जो अिमारतें बनवानी थीं वे सब अढ़ाअी-तीन वर्षमें पूरी हो गअीं। अिसलिअे ठक्कर साहबकी नौकरीकी मियाद भी खतम हुअी। वहांसे मुक्त होनेके बाद पोरबन्दर राज्यने अुन्हें मुख्य अिंजीनियरके रूपमें २००) मासिक वेतन पर नौकर रखा। पोरबंदरमें अुन्होंने १८९५ से १९०० के अन्त तक अर्थात् लगभग पूरे पांच बरस काम किया। अुस वक्त राजा छोटी अुम्रके होनेसे पोरबंदरमें अेडमिनिस्ट्रेटरका शासन था। नौकरीके अिस

अर्सेमें अुन्होंने राज्यके लिअे कुछ अुपयोगी मकान बनाये। अिसी अर्सेमें अुनका डॉ० हरि श्रीकृष्ण देवके साथ प्रथम परिचय हुआ और वह अन्त तक कायम रहा। डॉ० देव महाराष्ट्रके थे। पहली मुलाकातमें ही दोनोंका अेक दूसरेके प्रति आकर्षण हो गया। वह अुत्तरोत्तर बढ़ता गया और अन्तमें दोनोंके बीच आजीवन मैत्रीमें परिणत हुआ। कारण, दोनोंके स्वभावमें बड़ा साम्य था। दोनों सादे, मेहनती, अीमानदार और परोपकारी थे। पोरबंदर राज्यकी नौकरीके दरमियान अुन्होंने जो जो काम किये, अुनमें भादरका पुल बांधनेका काम बहुत जबरदस्त था। अुसे नौकरीके आखिरी सालमें अुन्होंने हाथमें लिया था। वह वर्ष संवत् १९५६ का था। सौराष्ट्रमें अुस समय बहुत जगह महाभयंकर अकाल फैला हुआ था। पोरबंदर राज्य अुससे अछूता नहीं था। कितने ही प्रदेशोंमें अकाल-पीड़ित लोग — जिनके पास गुजरका कोअी खास साधन नहीं था — अनाजके अभावमें हाथिया थूरके डोंडे और पेड़ोंके पत्ते खाकर गुजर कर रहे थे। ठक्कर साहबने भादरके पुलका जो काम शुरू किया था, वहां भी बहुतसे अकाल-पीड़ित मजदूरीके लिअे आते थे। अुन दिनों अेक करुण प्रसंग अुनके देखनेमें आया, जो अुन्हें जीवनभर याद रहा। अुस घटनाका वर्णन अुन्हीके शब्दोंमें देखिये :

"पोरबन्दर राज्यके नवीबंदर गांवमें, जहां भादरका पुल बांधनेकी शुरुआत हो रही थी, मिट्टी हटानेके लिअे हजारों अकाल-पीड़ितोंको काम पर लगाया गया था। अुनकी स्थिति आंखों देखनेका मौका मिला। अेक प्रसंग तो अैसा नजर आया जिसमें अेक किसान पति-पत्नी दोनों मर गये। वे अपने दो-तीन मासकी अुम्रसे लगाकर तेरह-चौदह वर्ष तकके दो-तीन छोटे-छोटे बच्चे पीछे छोड़ गये थे।

"ये बड़े लड़के दो तीन मासके भाअीको कैसे संभाल सकते थे? अिसलिअे अिन लड़कोंने अिस छोटे बच्चेको जीता ही गाड़ दिया। मेरे मातहत हो रहे कष्ट-निवारण कार्यके केन्द्रमें ही यह घटना हुअी थी। अिसका मुझे बड़ा दुःख हुआ और अुसकी याद तो वर्षों तक बनी रही। आज तक मैं अुस घटनाको भूल नहीं पाया हूं।"

मनुष्य देहकी नश्वरता बतानेको जैसे बुद्ध भगवानको अेक बूढ़े, अेक रोगी और अेक शवके दर्शन हुअे, वैसे शायद कुदरत ही ठक्कर साहबके भावी जीवनकी रचना कर रही होगी। अिसलिअे जिन्दगीके शुरूके दिनोंमें ही अुसने अुन्हें यह समझनेका प्रत्यक्ष पाठ दे दिया कि अकाल क्या होता है और अुसमें फ़ंसे हुअे मनुष्यका दुःख कैसा होता है।

पोरबन्दर राज्यके पांच वर्षोंमें अुनकी राज्यमें खूब हीं कीर्ति फैली। और अेक दो अपवादोंको छोड़कर राज्यकी नौकरी वफादारीके साथ बजाअी, यह कहा जा सकता है। आम तौर पर अितने वर्ष तक अुन्होंने जहां जहां नौकरी की, वहीं मालिक और अपने कामके प्रति बहुत वफादार और अीमानदार रहे। अैक मौके पर अुन्होंने वर्षों बाद सार्वजनिक रूपमें स्वीकार न किया होता तो किसीको खबर भी नहीं होती कि ठक्कर साहबने अपनी अिंजीनियरीके कार्यकालमें दो बार रिश्वत ली थी। अिंजीनियरीका धन्धा काजलकी कोठरी जैसा है। अुसमें से जो भाग्यशाली हो वही काले दाग लगे बिना बाहर निकल सकता है। ठक्कर साहबने अेक जगह लिखा है कि, "हजारों रुपये कमाकर देने या खो देनेकी जिसके हाथमें सत्ता होती है, वह अुस सत्ताका सदा ही कोअी दुरुपयोग न करे, यह कैसे हो सकता है? अपने पेशेके सिलसिलेमें वेश्याके साथ बहुत बार परिचयमें आना और अुसके प्रलोभनमें न फंसना, यह जितना साधारण मनुष्यके लिअे मुश्किल है अुतना ही मुश्किल अेक अिंजीनियरका ठेकेदारसे रिश्वत न लेना है। मुझे याद है कि मैंने अपनी २३ सालकी अिंजीनियरीकी नौकरीमें केवल दो बार रिश्वत ली थी। अेक बार पोरबन्दर राज्यमें भादरके बांधके अेक ठेकेदारसे ४०० रुपये लिये थे। अिसमें मेरा बचाव अितना ही है कि अुस वक्तका अुसका काम पूरा हो गया था; आखिरी बिल भी बन गया था। अुसके बाद अुसने रिश्वत दी थी और मैंने ली थी। दूसरी बार पोरबन्दर राज्यके लिअे आस्ट्रियाकी बनावटकी बेंतकी कुरसियोंकी बड़ी खरीद करने मैं बंबअी गया था, तब खरीदमें लगभग ३०० रुपये अधिक कीमत बता कर मार खाये थे। अिन दो बारके बाद किसी भी समय रिश्वत लेना मुझे याद नहीं है। अिस प्रकार अपनी कमजोरीका सार्वजनिक अिकरार करके मैं सार्वजनिक क्षमा-याचना कर सकता हूं।"

ये दो घटनाअें ठक्करबापाको मानवकी अुच्च कोटिमें रखती हैं। मनुष्यमात्र भूलोंका पात्र है, फिर भी वह अूंचा तभी अुठता है जब वे भूलें और दोष अुसे आंखकी किरकिरीकी तरह खटकते हैं और अुन्हें दूर करनेको वह सदा ही तत्पर रहता है। अैसे बहुतेरे अिंजीनियर होंगे जिनके हाथों दो बार तो क्या, बीसों बार रिश्वत लेनेके और दूसरे अपराध होते होंगे। परंतु अुनका अिकरार करनेवाले तो अेक ठक्कर ही पैदा हो सकते हैं। और सब तो यह जानकर भी कि हम भूल कर रहे हैं आरामसे रिश्वतका रुपया हजम कर जाते होंगे। परंतु अुनका अंतःकरण जड़ बन गया होता है। ठक्कर साहब ही अितने भाग्यवान थे कि अिस बारेमें जाग्रत रहे।

८

पूर्व अफ्रीकामें

अफ्रीकाका जो प्रदेश पहले ब्रिटिश अीस्ट अफ्रीकाके नामसे पुकारा जाता था, अुसका अेक भाग युगान्डा नामसे मशहूर है। वहां अेक रेलवे लाअिन ग्रेट ब्रिटेनके खर्चसे डालनेका वहांकी सरकारने विचार किया। और अिसके लिअे पैमायशका काम सन् १८८५–८६ में शुरू किया गया। रेलवे लाअिन बनानेके कामका आरंभ लगभग १८९९ में हुआ।

युगाण्डा देश अितना अधिक शिक्षित या विकसित नहीं था। वहां जंगली लोगोंको नियमबद्ध मजदूरी करनेकी तालीम नहीं मिली थी। अिसलिअे यह व्यवस्था हुअी कि अुस कामके सिलसिलेमें रेलवे-कामके निष्णात नौकर और मजदूर सब हिन्दुस्तानसे जुटाये जायं। अिंजीनियर और अूंचे पदोंके अफसर अिंग्लैण्डसे ही लिये जाते और अुनके मातहत छोटे नौकरोंका तमाम स्टाफ और दूसरे मजदूर भारतसे भरती किये जाते।

अमृतलाल ठक्कर पोरबंदर राज्यकी नौकरीसे मुक्त होनेकी तैयारीमें थे। अुस समय युगाण्डा रेलवे लाअिनके मुख्य ठेकेदारोंने अिंजीनियरों और दूसरे आदमियोंके लिअे विज्ञापन दिया। अिसी प्रकारका अेक विज्ञापन पढ़कर अुन्होंने अुस कंपनीके साथ पत्रव्यवहार किया और नौकरीके लिअे बाकायदा अर्जी भी भिजवाअी। अुनकी अर्जी मंजूर हुअी और अुन्हें तीन सौ रुपयेके वेतन पर रख लेना तय हुआ।

अफ्रीकामें नौकरी मिल जानेकी यह खबर जब पिताको और घरके लोगोंको लगी, तब अेक तरफ सबको बड़ी खुशी हुअी और दूसरी तरफ चिन्ता भी हुअी। अफ्रीका जैसे दूर स्थान पर जाना था, अिसलिअे मां-बाप और कुटुम्बी जनोंको चिन्ता होना स्वाभाविक था। अलबत्ता, अुस समय वेरावल और पोरबंदरसे बहुतसे व्यापारी अफ्रीका जाते थे। अुनमें से कुछ तो लोहाणा जातिके ही थे। फिर, कच्छी लोहाणा तो वर्षों पहलेसे समुद्र यात्रा करते रहे थे और अफ्रीकामें रहकर लाखोंका व्यापार करते थे। अुनमें से बहुतोंने तो वहां जाकर अितिहासका निर्माण किया था। अिस प्रकार विदेश-गमन सौराष्ट्रवासियोंके लिअे कोअी नअी बात नहीं थी। अितने पर भी भावनगरकी तरफसे समुद्र यात्रा करके विदेश जानेवाले तुलनामें बहुत

थोड़े थे और अुनमें भी ठक्कर साहब जैसे पढ़े-लिखे तो लगभग कोअी नहीं थे।

विट्ठलदास ठक्कर जैसे साधारण स्थितिके गृहस्थके घरवालोंको और खास तौर पर स्त्रियोंको तो सहज ही अैसा लगता होगा कि विदेशमें पता नहीं क्या क्या दुःख अुठाने पड़ें, अकल्पित आपत्तियां आ जायं और दिक्कतें भोगनी पड़ें। अिसलिअे यह विचार मां-बापको बहुत पसन्द नहीं आया था। अन्तमें मनको अिस तरह समझाकर कि तीन वर्ष तो देखते देखते गुजर जायेंगे और पुत्र घर लौट आयेगा, विट्ठलदास ठक्करने अमृतलालको अफ्रीका जानेकी अनुमति दे दी। परंतु पत्नीको साथ भेजनेका तो सवाल ही नहीं था। हिन्दू परिवारोंमें घरके बुजुर्ग जो तय कर दें वह परिवारके हितमें ही है, यह माना लिया जाता था। और अुनका निर्णय अन्तिम समझा जाता था। अमृतलाल ठक्करकी पत्नी श्रीमती जीवकोर बाअीसे पूछनेकी बात ही नहीं थी। अफ्रीका जैसे दूरके स्थान और अनजान देशमें अेकाकी जीवन बिताने जाना हो, वहां स्त्रियोंके लिअे अैसी यात्रा करना और अफ्रीकामें छत्र-छायाके बिना अकेले रहना खतरनाक ही माना जाता था। अुन दिनों पत्नीको साथ लेकर विदेश जानेका रिवाज ही नहीं था। अिसलिअे निश्चय हुआ कि अमृतलाल ठक्कर अकेले ही जायं। वहां अुन्हें खाने-पीनेमें कोअी अड़चन न हो, अिसके लिअे यह तय हुआ कि साथमें अेक रसोअिया भी ले जायं। ठक्कर विट्ठलदासने अमृतलालके लिअे अेक विश्वस्त ब्राह्मण रसोअिया ढूंढ़ दिया और अुसे पैंतीस रुपये मासिक वेतन पर तीन वर्षके करारके साथ अफ्रीका ले जानेका निश्चय किया। ठक्कर विट्ठलदासका परिवार कट्टर वैष्णवोंका था। अिसलिअे ब्राह्मणके सिवाय और किसी जातिके रसोअियेसे काम नहीं चल सकता था। अिस कारण अधिक रुपया देकर भी ब्राह्मण रसोअियेके साथ ही यह बात तय की। इस प्रकार सब व्यवस्था हो गअी तो ३०–३१ वर्षकी भर जवानीमें अमृतलाल ठक्करने वृद्ध मां-बाप, प्यारे भाअी-बहनों और निःसंतान पत्नीको घर छोड़कर अफ्रीकाकी ओर प्रयाण किया।

साधारण तौर पर यह हिसाब लगाया गया था कि अफ्रीकामें रसोअियेका और अपना सारा खर्च निकाल कर लगभग सौ रुपये देश भेजे जा सकेंगे। सौ रुपये देशमें कुटुम्बका काम चलानेको काफी हो जाते। अुस समय बड़े भाअी परमानंद तो वढ़वाणमें शिक्षक थे ही और अपनी गाड़ी अच्छी तरह चला रहे थे। अिसी प्रकार छोटे भाअी मगनलाल मैट्रिकमें फेल होनेके बाद धंधेमें लग गये थे। चौथे भाअी मणिलाल ग्रेज्युअेट होनेके

किनारे पर थे और अमृतलाल ठक्करके अफ्रीका जानेके बाद गोंडलके गरासिया कालेजमें शिक्षकके रूपमें काम कर रहे थे। दूसरे दो भाओी केशवलाल और नारायण अभी हाओीस्कूलमें पढ़ रहे थे। बड़ी बहन ब्याह कर सुसराल चली गओी थी। अिस प्रकार विट्ठलदास अपने लड़कोंको धंधेसे, ठीक रास्ते और पढ़ाओीमें लगे हुओे देखकर सर्वथा निश्चिन्त थे। अब मुझे धंधा या नौकरी करनेकी जरूरत नहीं रहेगी और मै निश्चिन्त होकर प्रभु-भजन, हवेली और जातिकी सेवाका प्रिय कार्य कर सकूंगा, अिस विचारसे वे आत्मसंतोष अनुभव करते थे। और वानप्रस्थ अवस्थामें ओीश्वरने यह सब अनुकूलता दी, अिसे अपना सौभाग्य समझते और अिसके लिओे ओीश्वरका अुपकार मानते थे।

अमृतलाल ठक्करने अफ्रीका पहुंचनेके बाद फौरन् अपना कामकाज संभाल लिया। अिस बार अुन्होंने देखा कि रेलवेके काममें अधिकांश मजदूर हिन्दुस्तानसे और अुसमें भी खास तौर पर पंजाबसे आये हैं। पंजाबी लोग सशक्त और विदेश जानेके अभ्यस्त थे। साथ ही काम करनेमें भी मजबूत थे। अिसलिओे भारतके लोगोंमें अुनका चुनाव पहले होता और अुन्हें कराची बन्दरगाहसे स्टीमरमें चढ़ा दिया जाता। तमाम नौकरों और मजदूरोंको पहलेसे निश्चित किया हुआ वेतन मिलता। अिसके सिवाय बंधी हुओी दरसे खानेपीनेका सामान मुहैया करनेकी व्यवस्था भी सरकारने कर दी थी। अैसा न किया जाता तो तमाम भारतीयोंको जरूरी अनाज और अन्य फुटकर चीजें न मिलतीं और मजदूर परेशान होते। अिससे नये मजदूर भरती करनेमें दिक्कत पेश आती और परिणामस्वरूप रेलवेका काम आगे न बढ़ पाता।

रेलवेके कामके लिओे मजदूरोंके सिवाय अिंजीनियरी विभागमें पैमायश करनेवाले, नापनेवाले, निरीक्षक, स्टेशनमास्टर वगैरा भी भारतके अनेक प्रान्तोंसे, विशेषतः बंगाल, युक्तप्रान्त (आजकलका अुत्तरप्रदेश), पंजाब वगैरासे लाये जाते। ये लोग वतन छोड़कर दूरके अिस देशमें कमाओी करनेके लिओे आते। देशमें तो वे जहां रहते हों अुस गांवमें कुटुम्बकी मर्यादामें तथा जातिके रीतिरिवाजके अनुसार चलते और आम तौर पर नीतिमय जीवन बिताते। परंतु अफ्रीका जैसे दूर स्थान पर जाति या गांवका नियंत्रण अुठ जानेसे वे निरंकुश बन जाते और स्वच्छंद जीवन व्यतीत करते। अिनमें अधिकांश लोग तो मांसाहारी थे, अिसलिओे मांस खानेमें अुन्हें आपत्ति नहीं होती थी। अिसके सिवाय वहां जाकर और भी तरह तरहकी कुटेवें सीख जाते। वे अंग्रेजोंकी नकल करके शराब पीते, भक्ष्याभक्षका सेवन करते और कुछ तो अिससे भी आगे बढ़कर वहांकी हब्शी स्त्रियोंके साथ दुराचार करते।

ये सब बातें ठक्कर साहबने पूर्व अफ्रीकामें अपनी· आंखोंसे देखीं और देखकर अुन्हें अचंभा हुआ। अिस संबंधमें ठक्करबापा अेक जगह लिखते हैं :

"रेलवेके नौकर, ओवरसीयर, सरवेयर, स्टेशनमास्टर, क्लर्क वगैरा भारतके अनेक प्रान्तोंसे आते। अुनका मेरे साथ समागम हुआ और अुनके भिन्न-भिन्न रीतिरिवाज और रहन-सहन जाननेका अवसर मिला।

"मैंने देखा कि अिस प्रकार विदेश जानेवाले अधिकांश शिक्षित नौकर विदेश आनेके बाद मर्यादा छोड़ देते हैं, शराब वगैराका अुपयोग खूब करते हैं और भ्रष्ट जीवन बिताते हैं। कुछ तो अंग्रेजोंका अनुकरण करके अफ्रीकाकी हब्शी स्त्रियोंको खुले तौर पर रखेलके रूपमें रखते और चरित्र-भ्रष्ट जीवन व्यतीत करते। अिस प्रकारका व्यवहार ८० फी सदी लोग वहां करते थे।

"अीश्वर कृपासे मैं अिससे बच गया हूं, अिसके लिअे अपने आपको भाग्यवान मानता हूं।"

"अेक बार अस्पतालमें जाने और छोटासा आपरेशन करानेका प्रसंग आया तब ब्रांडीका गिलास मेरे सामने रखा गया। मैंने अुसे नहीं पिया तो अुसका अुपयोग पास खड़े हुअे कंपाअुण्डरको करनेको मिल गया। अिससे अुसे आनन्द हुआ। यह घटना मुझे पैंतालीस वर्ष बाद भी याद आ रही है।"

पूर्व अफ्रीकामें ठक्कर साहबको नया देश और नये आदमी देखनेको मिले। अुसके साथ कुदरती लीला देखने — घने जंगल और विशाल सरोवर देखनेका भी अवसर प्राप्त हुआ। सैकड़ों वर्षोंसे बिना खेतीका अिलाका होनेसे वहां घने जंगलोंका पार नहीं था। अिन वनोंमें सैकड़ों वर्षोंसे खड़े हुअे पुराने महाभयंकर मोटे तनेवाले जटाजूट भीमकाय वृक्ष देखे। भारतके वीरान जंगलोंमें जैसे सैकड़ों हिरणोंके टोले छलांगें भरते देखे जाते हैं, वैसे वहां लम्बी और अूंची गर्दनवाले जिराफ भटकते देखे। कभी कभी तो सिंह गर्जना करते हों और सारे जंगलमें अुसकी गूंज फैलती हो, अैसे घने जंगलोंवाले प्रदेशोंमें भी घूमना हुआ। और अेक जगह तो दोनों ओर हरियालीसे छाअी हुअी १५००-१५०० फुट अूंची गिरिमालाके बीच मीलोंके विस्तारमें फैला हुआ चौड़ा नीचा घाटीवाला प्रदेश — जिसे अंग्रेजीमें Rift valley कहा जाता है — देखनेका भी अवसर मिला। रिफ्टवेलीके पास अूंचाअीवाले प्रदेशमें होकर रेलवेको नीचेके प्रदेशमें अुतारा गया है, अिस सिलसिलेमें बड़े अिंजीनियरीके काम देखे। विशाल पाटोंवाली बड़ी किन्तु सूखी नदियोंके पुल,

जिन्हें Viaduct के नामसे पुकारा जाता था, अुनकी रचना और अुनको बनानेके लिअे. काममें लाओी गओी अिंजीनियरीकी करामात देखनेको मिली। रेलवेके पश्चिमी सिरे पर स्थित विक्टोरिया न्याजा नामक पूर्व अफ्रीकाका विशाल सरोवर प्रत्यक्ष देखा। अिससे पहले अिस सरोवरके बारेमें भूगोलकी पुस्तकोंमें अुसका नामपता और थोड़ी रूखी-सी जानकारी और संक्षिप्त वर्णन पढ़ा था। परंतु जब यह भव्य सरोवर, अुसका बिल्लोरी कांचकी तरह चमकता हुआ पानी, अुज्ज्वल दूध जैसे फेनके गोले, अुसका विशाल विस्तार और आसपासकी प्रकृति आदि देखनेका मौका मिला, तब ठक्कर साहबका हृदय-सरोवर भी आनंदसे छलक अुठा। और अिस पर भी तालाबमें जहाज पर बैठकर विहार करनेको मिला अुस समयके आनंदका तो कहना ही क्या?

पूर्व अफ्रीकामें श्री ठक्कर जितने समय रहे अुतने समय हर पखवाड़े नियमित रूपमें घरको पत्र लिखते थे। अुसमें वे कैसे रहते हैं, क्या काम हो रहा है, कैसी सुविधा-असुविधा भुगत रहे हैं, कहां घूमना फिरना होता है, क्या क्या नया देखने-भालनेको मिलता है, वगैरा समाचार तो रहते ही थे। अिसके सिवाय अफ्रीकाके लोगोंके विषयमें, अुनके रीत-रिवाज और रहन-सहनके बारेमें विस्तारसे लिखते थे। जहां जहां जाते अुन स्थानोंका वर्णन भी लिखते। हर पखवाड़े अफ्रीकाकी डाककी मुहरवाला बड़ा लिफाफा आता तो देशमें सभी विट्ठलबापाके आसपास जमा हो जाते। विट्ठलबापा पत्रमें से पढ़ने लायक सब बातें सारे कुटुम्बको पढ़ सुनाते। अिस पत्रके साथ बड़े लिफाफेके भीतर अेक छोटा लिफाफा भी नियमित रूपमें आता और अुस पर 'जीवकोरको' यह पता लिखा रहता। विट्ठलबापा यह लिफाफा फौरन् घरमें भिजवा देते। पच्चीस वर्षकी अवस्थामें जिसकी अिकलौती छः वर्षकी संतान मर गओी हो और तीसवें वर्षमें सदा ही बीमार रहनेवाली पत्नीको अकेली घर छोड़कर जिसे अफ्रीका जाना पड़ा हो, अुस जवान पतिने अिन पत्रोंमें क्या क्या भावनाअें भरी होंगी, कैसी कैसी आशाअें और अभिलाषाअें अिन पत्रोंमें अक्षरोंके रूपमें अंकित की होंगी, दूर रहनेवाली पत्नीको कैसे आश्वासन दिये होंगे, वर्तमान विरह और भावी मिलनके कैसे सुहावने चित्र खींचे होंगे, अिसका कोओी ब्यौरा जाननेको नहीं मिलता जिससे अमृतलाल ठक्करकी अुस समयकी आंतरिक स्थितिके दर्शन हो सकें। परंतु अुनके कर्तव्यशील स्वभावको देखते हुअे दूर रहकर भी अफ्रीकाके प्रदेशके सतत सहवासका आनन्द शब्दोंके साधन द्वारा वे जरूर महसूस कराते होंगे और भावनगरके अुस छोटेसे घरमें सास-ससुर और अन्य कुटुम्बीजनोंके सहवासमें दिन बितानेवाली पत्नीके जीवनमें अभाव अनुभव न होने देने और

अपनी अनुपस्थितिकी कमी न खलने देनेका केवल पत्रोंके ही साधन द्वारा पूरा प्रयत्न करते होंगे, अिसमें शंका नहीं।

श्रीमती जीवकोरके पत्र भी अुनके नाम अफ्रीकामें समय समय पर जाते थे। अेक दो पत्रोंमें अुन्होंने स्त्री-स्वभावसे प्रेरित होकर अमृतलाल ठक्करको सोनेके गहने बनवाकर ले आनेको लिखा था। तब अुन्हें क्या पता था कि अफ्रीका जैसे दूर स्थान पर कमाने जानेवाले पतिका सारा वेतन अफ्रीकाके खर्चमें, परिवारका पुराना कर्ज चुकानेमें और चालू खर्चमें पूरा हो जाता है और जेवर बनवानेके लिअे अुनके पास कोअी खास रकम बचती ही नहीं? ठक्कर साहबने पत्नीको अपने लाक्षणिक हास्यसे भरा हुआ जवाब देते हुअे लिखा कि "यहांकी स्त्रियां सोने-चांदीका जेवर नहीं पहनतीं, अिसलिअे यह यहां नहीं मिलता। यहां तो सब लोहेके गहने पहनती हैं। तुम कहो तो आते समय वह लेता आअूं।"

यों तो अमृतलाल ठक्करके पत्र देशमें नियमित रूपसे हर पखवाड़ेमें अेक बार आते ही थे। पर अेक बार दो पखवाड़े तक लगातार कोअी पत्र नहीं आया तो घरके लोगोंको चिन्ता होने लगी। सारे घरने लगभग डेढ़ मासका समय चिन्तातुर बनकर अनिश्चित दशामें बिताया, अुसके बाद भी पत्र नहीं आया तो विट्ठलदास ठक्करने तारसे खबर पुछवानेका विचार किया। वे तार देने ही वाले थे कि अितनेमें सौभाग्यसे मोम्बासाकी डाक मिली और अुस दिन डाकमें अेक ही साथ तीन लिफाफे मिले! अमृतलाल ठक्करने तो नियमित पत्र लिख ही थे। परंतु डाककी भूलके कारण पहलेके दो पत्र देरसे पहुंचे।

ये पत्र विट्ठलबापाने वर्षों तक रख छोड़े थे और परिवारके बहुत लोगोंने अुन्हें बार बार पढ़ा था। अिन पत्रोंके बारेमें बातें करते हुअे श्री कपिलभाअी ठक्करने अेक बार कहा था, "जरा समझदार होनेके बाद मैंने बड़े काकाके ये पत्र और अफ्रीकाकी डायरी पढ़ी थी। अुस समय मेरी अुम्र दस-बारह वर्षकी थी। किशोर अवस्थामें अफ्रीका देश, अुसके लोग, जानवर, प्राकृतिक दृश्य, वन, जंगल, पहाड़, सरोवर अित्यादिके रसमय वर्णनसे भरे हुअे पत्र और डायरी मुझे अितने अच्छे लगते थे कि अुनका पढ़ना मुझे कहानी जैसा ही आकर्षक और रोचक प्रतीत होता और घंटों तक काकाके वे पत्र और डायरी मैं पढ़ता रहता। . . . अुन बातोंको भी आज अितने अधिक वर्ष बीत गये हैं कि पत्रों या डायरीके ब्यौरेका भी मुझे स्मरण नहीं रहा। केवल अफ्रीकाका अेक अद्भुत, रंगीन कल्पनाचित्र ही मेरी आंखोंके सामने तैर रहा है।"

दुर्भाग्यसे अुन डायरियों या पत्रोंमें से कोअी चीज आज अस्तित्वमें नहीं है। अिसलिअे वे मजेदार पत्र और चित्ताकर्षक डायरी पढ़कर आनन्द लेनेका योग अब किसीके लिअे नहीं रहा।

जैसे ठक्कर साहबके पत्र नियमित रूपसे अफ्रीकासे आते थे, वैसे यहांसे विट्ठलदास ठक्कर भी नियमित रूपमें अुनके नाम पत्र भेजते और कुटुम्बके बारेमें तथा वतनके बारेमें जो भी जानने योग्य समाचार होते वे सब लिखते। अुस समय देशमें छप्पनका अकाल पड़ा हुआ था और अकालके शिकार बने हुअे लोग वृक्षोंकी पत्तियां और थूरके डोंडे खाकर गुजारा करते थे। भावनगर शहरमें स्थित अकाल-पीड़ित लोगोंमें से अपने जातिभाअियोंके लिअे विट्ठलबापाने कोष अेकत्रित करके अुन्हें अेक बार खिलानेकी व्यवस्था की थी। अिस बारेमें सब हाल वे पुत्र अमृतलालको लिखते। अुन्हें पढ़कर अमृतलाल ठक्कर गौरव अनुभव करते। ये पत्र ही आगे चलकर ठक्करबापाके लिअे कैसे अकाल-पीड़ित लोगोंकी सेवाकी प्रेरणा देनेवाले सिद्ध हुअे, अिसका सारा वर्णन 'विट्ठलबापा' वाले प्रकरणमें विस्तारसे दिया गया है, अिसलिअे यहां अुसकी पुनरुक्ति करनेकी जरूरत नहीं।

अफ्रीका जैसी दूर जगह रहकर ठक्करबापा काठियावाड़ और गुजरातके समाचारोंके लिअे 'गुजराती' साप्ताहिक नियमित रूपसे पढ़ते थे। 'सरस्वतीचन्द्र' के प्रकाशित भाग अुन्होंने पढ़ लिअे थे। 'वसन्त' मासिक भी नियमित रूपसे पढ़ते थे।

अमृतलाल ठक्करके अफ्रीका निवासके दरमियान परिवारमें अेक बहुत ही दुःखदायक और करुण घटना हो गअी। और वह थी अुनके छोटे भाअी मणिलालकी अकाल मृत्युकी। मणिलाल हाल हीमें बी० अे० पास हुअे थे और गोंडलके गिरासिया स्कूलमें शिक्षकका काम करने लगे थे। थोड़े मास वहां नौकरी की न की कि अुन्हें ज्वर हो आया और जांघमें गांठ निकली। अिसलिअे अुन्हें नौकरीसे अिस्तीफा देकर अलग होना पड़ा। गोंडलसे वे भावनगर आये। अैसे गंभीर रोगकी घर पर देखभाल करना असंभव होनेसे अुन्हें भावनगरके तख्तसिंह अस्पतालमें भरती करा दिया गया। करीब तीन मास अस्पतालके मरीजके तौर पर अिलाज होने पर भी कोअी फर्क नहीं पड़ा, तो डाक्टरोंने आपरेशनकी सलाह दी। अिस खयालसे कि आपरेशन भावनगरकी अपेक्षा बम्बअीमें ही अधिक अच्छी तरह हो सकता है, ठक्कर विट्ठलदास अुन्हें बम्बअी ले गये। साथमें मणिलालकी पत्नी भी गअी। वहां भी डॉक्टरोंकी सलाह ली गअी और अन्तमें जे० जे० अस्पतालमें आपरेशन

करना तय हुआ। आपरेशन तो सफल हुआ, परन्तु क्लोरोफार्मका असर नहीं मिटा और आपरेशन टेबल पर ही मणिलालकी मृत्यु हुअी। अुस समय अुनकी अुम्र लगभग २७ वर्षकी थी। वे अपने पीछे चौबीस वर्षकी विधवा पत्नीको छोड़ गये। वृद्ध मातापिताके लिअे यह आघात बहुत कठोर सिद्ध हुआ। अैसी ही हालत परिवारके दूसरे लोगोंकी हुअी। सारे घरमें शोक छा गया। कारण, भरी जवानीमें पुत्रका अवसान होने और जवान स्त्रीका वैधव्य आंखों देखनेका प्रसंग अिस कुटुम्बमें यह पहला ही था।

अमृतलाल ठक्करको जब यह खबर अफ्रीका पहुंचाअी गअी, तब अुन्हें भी बड़ा आघात लगा। परन्तु वे पहलेसे ही अीश्वरेच्छाके अधीन रहनेवाले श्रद्धावान मनुष्य थे और आफतमें हिम्मत हारनेवाले नहीं थे। अिसलिअे अितना जबरदस्त आघात भी अुन्होंने अफ्रीकामें रहकर सह लिया होगा और मनका समाधान खोज लिया होगा।

अन्तमें तीन वर्षकी मियाद पूरी हुअी और वे देशमें लौट आये। भावनगर आनेसे पहले वे मथुरा, वृन्दावन, काशी वगैरा स्थानोंकी यात्रा कर आये। आम तौर पर ब्रह्मदेश, अफ्रीका और अैसे दूरके स्थानोंसे कोअी मनुष्य वापस आता है तो काफी कमाअी लेकर आता है। परन्तु अमृतलाल ठक्कर तो खाली हाथ ही लौट रहे थे। अुनके साथ गया हुआ रसोअिया भी अपनेको मिलनेवाले वेतनमें से ५०० रुपयेकी पूंजी बचाकर लाया था, जब कि ठक्कर साहबके पास तो लगभग कुछ भी नहीं था। वे जब बम्बअीसे काठियावाड़के लिअे रवाना हुअे, तो अुन्होंने भाअी परमानन्द ठक्करको तारसे अिसकी पूर्वसूचना की। तभी सबको अुनके आनेकी बात मालूम हुअी। बड़े भाअीके अुस तारमें बताया था कि रुपया खतम हो गया है, अिसलिअे वढ़वाणसे भावनगरके टिकटके लिअे दाम लेते आना।

अन्तमें वे बम्बअीसे भावनगरके लिअे रवाना हुअे। रास्तेमें परमानन्द ठक्कर और अुनका परिवार वढ़वाणसे साथ हो गया। सब भावनगर आये। वहां भी मां, बाप, भाअी, भाभियां, भतीजे, भतीजियां वगैरा सब चातककी तरह बाट देख रहे थे। तीन वर्षमें अमृतलाल भाअी घर आये तो घरमें आनन्द ही आनन्द छा गया। सबके हृदयोंमें केवल अेक ही बातका दुःख था कि अिस समय अमृतलालका छोटा भाअी मणिलाल जिन्दा नहीं है।

अफ्रीकासे अमृतलाल वहांकी कुछ नअी चीजें लाये थे। अुनमें वल्कल अर्थात् पेड़की छालके कपड़ोंके, जो अफ्रीकाके जंगली लोग पहनते हैं, कुछ टुकड़े, अफ्रीकाके असली निवासियोंके और दूसरे लोगोंके अलग अलग फोटो, अुनके चित्रविचित्र आभूषण, गेंडेके चमड़ेकी छड़ियां और दो अफ्रीकी

तोते लाये थे। अिनमें से कुछ चीजें अपने भतीजे-भतीजियोंको देकर अुन्हें खुश कर दिया।

शुरूके दिनोंमें भावनगरमें बहुत ही धूमधाम हो गअी। कारण, वसाणी मुहल्लेके अुस छोटेसे मकानमें अेक साथ करीब बीस तो परिवारके आदमी अिकट्ठे हो गये थे। अुनके अलावा बाहरसे मिलने आनेवाले परिजनों, मित्रों और अन्य स्नेहियोंका तांता भी काफी लगा रहता। अमृतलाल ठक्कर भी अुनके यहां आते जाते थे।

परदेशमें रहकर आनेके बाद आम तौर पर अपना महत्त्व लोग बढ़ा देते हैं और 'हम भी कुछ हैं' यह दिखानेके लिअे कपड़े-लत्ते, विदेशी आकर्षक चीजों वगैराका ठाटबाट बढ़ाकर अपनी बड़ाअीका प्रदर्शन करते हैं। परन्तु अमृतलाल ठक्करके मनमें अिनमें से कोअी भी बात नहीं थी। ये स्वभावसे ही सादे मनुष्य थे और अफ्रीकामें तीन वर्ष अेकाकी रहकर अधिक गंभीर और समझदार बन गये थे।

अुस समयकी अुनकी सादगी बतानेवाली और कुटुम्बके लोगोंको पाठ देनेवाली अेक छोटीसी घटनाका आलेखन अुनके भतीजे श्री कपिल ठक्करने नीचे लिखे शब्दोंमें किया है:

"अुस समयकी कुछ छोटी छोटी घटनाअें मुझे अब भी याद हैं। धोबीको धोनेके लिअे देनेके कपड़ोंका अेक बड़ा ढेर अिकट्ठा किया गया था। कपड़े बहुत थे, अिसलिअे अुस गट्ठरका बोझा काफी था। हमारे यहां अुस समय घरमें नौकर-चाकर नहीं थे। ये कपड़े या तो धोबी आकर हमारे यहांसे ले जाय या हम अुसके यहां रख आवें; दोमें से अेक बात हो सकती थी। सुबहके समय सदाकी भांति हमें कुछ स्नेहियोंसे मिलने जाना था। मिलने जानेवालोंमें बड़े काका, अुनके भाअी और मैं तीन आदमी थे। रास्तेमें ही धोबीका घर पड़ता था। अिसलिअे किसीने कहा कि जाते समय हम धोबीको कहते चलेंगे कि आकर कपड़े ले जाय। परन्तु अमृतलाल भाअीने कहा कि, 'हमीं ये कपड़े क्यों न ले जायं?' यह विचार हममेंसे किसीकी कल्पनामें ही नहीं आया था। हमारे जैसे अेक सुखी और प्रतिष्ठित कुटुम्बके आदमी दिन-दहाड़े भावनगरके आम रास्ते पर मैले कपड़ोंका गट्ठर अुठाकर चले, यह चौंकानेवाला विचार हमें स्वप्नमें भी नहीं आया था। हमारे जैसे प्रतिष्ठित परिवारके मनुष्योंसे अैसा हल्का काम नहीं हो सकता, अिस तरहके विचार हम रखते थे। परन्तु बड़े काकाने अैसे गलत खयालोंको कभी महत्त्व नहीं दिया था। अुन्होंने तुरन्त ही कपड़ोंका गट्ठर कंधे पर रख लिया और हम स्नेहीजनोंसे मिलने चले। रास्तेमें कितन ही परिचित

मनुष्य हमें मिले और अुन्होंने जय श्रीकृष्ण किया। अुनमें से कुछने स्वाभाविक रूपमें ही पूछा, 'यह क्या है, अमृतलाल भाअी?' और बड़े काकाने अुतनी ही स्वाभाविकता और शांतिसे जवाब दिया, 'धोबीके घरके कपड़े।' बड़े काका अैसा कर रहे हैं, यह देखकर अुनके दूसरे भाअियोंने और मैंने भी शिष्टताकी खातिर ही कपड़ोंका गट्ठर अुठानेमें साथ दिया। अुस वक्त मेरी अुम्र दसेक वर्षकी थी। परन्तु मैं समझता हूं कि परिवारके सब लोगोंके लिअे यह अेक पदार्थपाठ था।"

६

नौकरीके ग्यारह वर्ष

भावनगरमें अेकाध माससे अिकट्ठा हुआ कुटुम्बी जनोंका मेला अन्तमें बिखर गया। कारण, अिसी अरसेमें अमृतलाल ठक्करको सांगली राज्यमें नौकरी मिल गअी। सांगलीमें पोरबन्दरके समयके अुनके पुराने मित्र डॉ० हरि श्रीकृष्ण देव राज्यके दवाखानेमें डॉक्टरके रूपमें काम करते थे। अुनके साथ ठक्कर साहबका पत्रव्यवहार जारी था। अुनके प्रयत्नसे ही ठक्कर साहबको सांगली राज्यके मुख्य अिंजीनियरकी नौकरी मिल गअी।

ठक्कर साहब अपनी पत्नीको अफ्रीकामें तो साथ नहीं ले गये थे, क्योंकि वह दूर और अनजान मुल्क था। परन्तु यहां तो अैसी कोअी बात नहीं थी। और अफ्रीकाके श्री ठक्करके निवासकालमें तीन साल तक पति-पत्नी अलग रह ही चुके थे, अिसलिअे सांगली राज्यकी नौकरीका निश्चय होने पर वे अपनी पत्नी जीवकोरको साथ लेकर १९०३ में सांगली गये। अिस प्रकार बहुत लम्बे समयके बाद पति-पत्नीको काठियावाड़से दूर स्थानमें सम्मिलित परिवारसे अलग अकेले रहनेको मिला। अिसलिअे दोनोंको काफी स्वतंत्रता अनुभव हुअी और बापाके शब्दोंमें कहें तो 'दोनों विवाहित जीवनका आनन्द ले सके।' सांगलीमें अमृतलाल ठक्कर नौकरीके कामसे फुरसत पाते तब पति-पत्नी दोनों सांगलीसे दूर कृष्णा नदीके किनारे घाट पर बैठकर कैसा आनन्द करते और मुक्त मनसे विचरते, यह सब पहले कहा जा चुका है।

सांगलीका निवासकाल ठक्कर साहबके लिअे अनेक प्रकारसे सुखद साबित हुआ। अुस समयके अेक दो मीठे स्मरण बापाने सुरक्षित रखे हैं।

अुन्हें सेवाजीवनकी दीक्षा देनेवाले भारतसेवक गोपालकृष्ण गोखलेजीका प्रथम परिचय अिसी अर्सेमें सांगलीमें हुआ। और बापा जिन्हें गुरु मानते थे, अुन चार गुरुओंमें से अेक प्रो० धोंडो केशव कर्वेका परिचय भी अिसी अर्सेमें हुआ था। महाराष्ट्रके अेक प्रसिद्ध समाज-सुधारक और स्त्री-शिक्षाका आन्दोलन करनेवालोंमें अग्रणी श्री कर्वेने अुस समय विधवाओंका काम हाथमें लिया था। और समाजकी कट्टरताकी शिकार बनी हुअी अिन बहनोंको हाथ पकड़कर खड़ा करने और अुनके जीवनमें सार्थकता लाकर अुन्हें समाजका अुपयोगी अंग बनानेके लिअे अुन्हें तालीम देकर तैयार करनेके खातिर पूनासे थोड़े मील दूर हिंगणेभद्रुक नामक स्थान पर विधवा-आश्रम खोला था। साथ ही परोपदेशे पांडित्य दिखानेमें अितिश्री न मानकर अुन्होंने स्वयं अेक विधवाके साथ विवाह करके महाराष्ट्रीय समाजमें अुदाहरण पेश किया था। अुस समय कर्वे दादा पूनाके फर्ग्यूसन कालेजमें नौकरी करते थे और नौकरी करते करते वह आश्रम चलाते थे। दिनको कालेजमें पढ़ाते और शामको पूनासे पांच मील पैदल चलकर हिंगणेभद्रुक आश्रममें जाते। दूसरे दिन सुबह पूना वापस चले आते। घर पर बच्चे बीमार हों या और कुछ कारण हो, तो भी वे रातको आश्रममें गये बिना न रहते। यह क्रम लगभग बीस वर्ष तक चला था।

अमृतलाल ठक्कर जब सांगलीमें अिंजीनियरके रूपमें काम करते थे, तब श्री कर्वेके सम्पर्कमें आये। साधारणत: ठक्करकी भी विधवाओंके प्रति हमदर्दी रहती थी। वैधव्य दशा कैसी करुण दशा है, अिसका प्रत्यक्ष अनुभव अुन्होंने घरमें ही छोटे भाअीकी चौबीस वर्षकी विधवाकी दशा देखकर किया था। अिसलिअे अिन निराधार और दु:खी बहनोंकी मदद करनेवाले अिस पुरुषकी ओर वे आकर्षित हुअे और अेक बार हिंगणे जाकर अुनकी संस्था भी देखी। अिसके बाद अुनके प्रति सम्मान और प्रेम बढ़ने पर वह परिचय निजी मित्रतामें परिणत हो गया और जीवनके अन्त तक बना रहा। अिस सम्बन्धके कारण ही कर्वे साहब भावनगर आने जाने लगे और अुसीसे भावनगरमें महिला-शिक्षाका प्रारम्भ हुआ। आज भावनगरकी कितनी ही बहनें, जो अन्यथा शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकती थीं, शिक्षा प्राप्त कर सकीं और कुछ तो अक्षरज्ञान और प्रारम्भिक शिक्षासे आगे बढ़कर मैट्रिक और ग्रेज्युअेट भी हो गअीं। अिन सब बातोंमें कर्वेके साथ हुआ ठक्करबापाका परिचय बहुत कारणीभूत हुआ है।

सांगलीके अुनके निवासकालमें ही सन् १९०४ में गोखलेजी किसी कामसे सांगली आये थे। ठक्कर साहब अुन्हें नाम और कामसे तो जानते ही

थे। परन्तु विशेष परिचय डॉ० हरि श्रीकृष्ण देव द्वारा हुआ। वे गोखलेजीके बखान करते थकते ही न थे। अिसलिअे जब वे सांगली आये तो घर बैठे गंगा आने जैसी बात हो गअी और अुनसे मिलकर अुनके प्रत्यक्ष दर्शन करनेकी ठक्कर साहबकी अिच्छा हुअी। अिसलिअे अुन्होंने गोखलेजीसे मुलाकात करनेके लिअे प्रयत्न भी किया। अुन्होंने गोखलेजीको १३ नवम्बर १९०४ को अिस प्रकार पत्र लिखा :

"माननीय महोदय,

"मैं अिस समय सांगली राज्यका अिंजीनियर हूं। आपकी सुविधानुसार मैं आपसे लगभग पंद्रह मिनट बातचीत करनेकी अिच्छा रखता हूं। अिसलिअे मुझे सूचना देनेकी कृपा कीजिये कि मैं आपसे मिल सकता हूं या नहीं, और मिल सकता हूं तो कब और कहां।

"अितनी स्वतंत्रता लेनेके लिअे आशा है आप मुझे क्षमा करेंगे।

आपका,
अमृतलाल वि० ठक्कर"

गोखलेजीने यह पत्र पढ़कर अमृतलाल ठक्करको मिलनेका समय दिया। ठक्कर साहब अुनसे मिले और कोअी पंद्रह मिनट बातचीत करके चले आये।

अिस मुलाकातके सिलसिलेमें बापा अेक जगह लिखते हैं, "मेरा राजनैतिक जीवन अुस अर्सेमें कोअी अितना विकसित नहीं हुआ था कि मैं अुनके समागममें आनेका साहस कर सकता। परन्तु मेरे मित्र डॉ० हरिकृष्ण देव अुनके सम्पर्कमें आते थे और अुनकी सहायतासे मैं अेक बार १९०४ में अुनसे मिला था और कुछ बातें करके चला आया था।"

सांगलीमें अुनके दिन सरलता और सुखसे बीत रहे थे। अिसी बीच वहांके अेक अुच्च अधिकारीसे थोड़ी खटपट हो गअी और अुन्हें नौकरीसे अलग होना पड़ा।

अुस समय सांगली राज्यका राजा नाबालिग होनेके कारण वहां अंग्रेज अफसर द्वारा शासन हो रहा था। ठक्कर साहबका स्वभाव शुरूसे ही स्वतंत्र था। खुशामद जैसी वस्तु अुनमें कभी थी ही नहीं। और स्पष्टवक्ता तो अितने थे कि कभी कभी दूसरोंको बुरा भी लग जाता था। अेक बार राज्यका शासन चलानेवाला अंग्रेज अफसर किसी सार्वजनिक बांधकामका निरीक्षण करने आया। किसीने अुसके मनमें यह भूत भरकर भेजा था कि ठक्करने जो काम किया है वह ठीक नहीं है। अिसलिअे अिसकी जांच कीजिये। अिस पर वह अधिकारी वहां जाकर अिंजीनियरी काममें

दोष निकालने और भूलें बताने लगा। ठक्कर साहबने शुरूमें थोड़ी सफाअी देकर अुसे समझानेकी कोशिश की, परन्तु जब अुन्होंने देखा कि वह हेतुपूर्वक आलोचना कर रहा है तब अुन्होंने सीधा कह दिया कि "यह मामला टेकनिकल विषयका है। कोअी अिंजीनियर यहां बात करे तो मैं अुसे समझाअूं। परन्तु आप अिसमें क्या समझ सकते हैं?"

यह जवाब सुनकर वह अंग्रेज शासक खूब झुंझलाया, नाराज हुआ। परिणाम यह हुआ कि अुन्हें सांगली राज्यकी नौकरीसे अलग होना पड़ा।

सांगली राज्यसे अलग होनेके बाद तुरन्त ही ठक्कर साहबको बम्बअीमें नौकरी मिल गअी। बम्बअीकी म्युनिसिपैलिटीने अुन्हें वेतन तो अधिक नहीं दिया। सौ रुपये मासिक ही दिये। परन्तु कामके बिना बैठनेसे नौकरी स्वीकार कर लेना अधिक अच्छा है, यह मानकर ठक्कर बापाने नौकरी स्वीकार कर ली।

अिस सिलसिलेमें भी अेक मजेदार बात है। सांगली राज्यके अेक अुच्च अफसर मेजर वर्कके साथ ठक्करका अच्छा सम्बन्ध था। अुनकी सिफारिश लेकर अमृतलाल ठक्कर बम्बअी म्युनिसिपैलिटीकी नौकरी प्राप्त करने गये। बम्बअी म्युनिसिपैलिटीके मुख्य अिंजीनियर मि० मर्जबानसे अुन्होंने मुलाकात की और बातचीतके दौरानमें अुन्होंने मेजर बर्कका सिफारिशी पत्र भी दिखाया। अमृतलाल ठक्कर अूंचे, गोरे और रुआबदार थे। और अुस समय वे लम्बा कोट और पतलून पहनते थे, अिसलिअे मर्जबानने अुन्हें पारसी समझ लिया। साथ ही मेजर बर्कका सिफारिशी पत्र भी लाये हैं, यह अूपर अूपरसे देखकर कोअी अधिक पूछताछ किये बिना ही अुन्हें पारसी मानकर जल्दी जल्दी नियुक्ति कर दी। अुसके बाद दूसरे दिन जब वे काम संभालनेको दफ्तरमें आये तब पता चला कि ये तो पारसी नहीं, हिन्दू हैं। तब अुनके मनमें जरा ठेस लगी। परन्तु अेक बार स्वयं वचन दे चुके थे अिसलिअे अपने किये हुअे निर्णयमें परिवर्तन करना अुन्हे ठीक नहीं लगा। अलबत्ता बादमें अमृतलाल ठक्करका काम और अीमानदारी वगैरा देखकर अुन्हें वह नियुक्ति करने पर कभी असन्तोष या अफसोस नहीं हुआ। अुलटे वे बहुत सन्तुष्ट और खुश हुअे।

बम्बअीकी म्युनिसिपैलिटीने अुन्हें कुर्लामें कचरेकी लाअिट रेलवेके निरीक्षकका काम सौंपा। अिस गाड़ीमें बंबअी शहरके अलग अलग मुहल्लोंका कूड़ा-करकट भरा जाता और बंबअीसे दूर कुर्लाके अुस पार चेम्बूरके पासकी सैकड़ों अेकड़ अुजाड़ और वीरान जमीनमें जो बड़े बड़े खड्डे खोद रखे थे, अुनमें डाला जाता था। शहरका सारा कचरा गाड़ीमें भरा जाय और चेम्बूरके

पास भंगी लोग सारी गाड़ी खाली करके अुसे साफ कर डालें, यह देखनका काम श्री ठक्करको करना पड़ता था। श्री ठक्करने कहा कि यह काम मैला अुठानेसे भी ज्यादा खराब और गंदा था। सड़ा हुआ कचरा, कीचड़, पत्ते, घास, कागज, जूठन, पेशाब वगैरा सब अिकट्ठा हो जानेके परिणामस्वरूप जो सड़ांध पैदा होती और अुससे सिर फटनेवाली जो दुर्गन्ध आती वह असह्य थी। परंतु म्युनिसिपल कर्मचारियोंके लिअे अिस कामको किये सिवा कोअी चारा नहीं था। अिस कामका निरीक्षण करते हुअे श्री ठक्कर अिन सब लोगोंके संपर्कमें आये और ये लोग कैसे जीते हैं, क्या खाते हैं, कहां रहते हैं और कैसी स्थितिमें रहते हैं, अित्यादि बातें अुनके जाननेमें आअीं।

अुन्होंने देखा कि अुनमें से अधिकांश लोग गुजरात-काठियावाड़से आये थे। वे ढेढ़, चमार और भंगी जैसी हल्की और अछूत मानी जानेवाली जातिके थे। सन् १९०० में जब छप्पनिया अकाल पड़ा तब गुजरात-काठियावाड़का अपना वतन छोड़कर वे नौकरीकी तलाशमें यहां आये और धीरे-धीरे जब नौकरी मिल गअी तो यही बस गये। अिन लोगोंको शहरमें काफी वेतन मिलने लगा तो अुन गांवोंके दूसरे ढेढ़, चमार और भंगी लोग भी ललचाये और गांवोंमें से अुनका प्रवाह बम्बअीकी तरफ शुरू हुआ। अिस प्रकार गुजरात-काठियावाड़से बहुतसे अछूत अपने बापदादोंका सम्मानपूर्ण धंधा छोड़कर वेतनके लालचमें बम्बअी आकर बसने लगे। बंबअी नगरीने भी अिन दलित जातियोंके लिअे काफी आकर्षण पैदा कर दिया था। अिसलिअे वे बंबअीकी मौज अुड़ानेके लिअे बड़ी संख्यामें अिस महानगरीमें आ बसे थे।

अिनमें से कुछ म्युनिसिपैलिटीमें कचरा अुठानेका काम करते, जब कि दूसरे कुछ लोग मैला अुठानेका काम करते। अिन लोगोंकी बस्तियां बम्बअी शहरसे दूर दूरके अुपनगरोंमें चेम्बूर जाते हुअे बीचमें पड़ती थीं। बस्तियां गंदी और नीची जगहोंमें थीं। टूटे हुअे लोहेके पीपोंके टीन, टाटके टुकड़ों तथा सड़े हुअे लकड़ों और बांसकी खपचियोंकी मददसे मिट्टीके झोंपड़े खड़े करके वे गंदगीमें रहते थे। बापा अिसे जीता-जागता नरक कहते थे। काठियावाड़में अपने छोटेसे गांवमें रहकर संमानपूर्ण और नीतियुक्त जीवन जीनेके बजाय यहां अुन्हें सुबहसे शाम तक कचरेकी सफाअी करने या नरकके टोकरे अुठानेका गंदा काम करना पड़ता। झोंपड़े बिलकुल पास पास बने हुअे थे और अेक झोंपड़ीमें कितने ही लोगोंको रहना पड़ता था। अेक ही अंधेरी झोंपड़ीमें मां-बाप, बच्चे, सास-ससुर, नंनद-भावज, जेठ-जेठानी वगैरा साथ रहते थे। अिससे न पूरी स्वच्छता रखी जा सकती थी, न नीति-मर्यादा।

परिणामस्वरूप शिथिलता अितनी अधिक बढ़ गअी कि नीति-अनीति जैसी कोअी चीज अिन लोगोंमें बहुत कम रह गयी थी।

वतन छोड़कर बंबअी आ बसनेवाले अिन दलित जातियोंके स्त्री-पुरुषों और बालकोंकी स्थिति देखकर अमृतलाल ठक्करको बड़ी ठेस पहुंचती थी। अुनके मनमें कअी बार प्रश्न अुठता कि अिन लोगोंको अपने बापदादोंके समयका कपड़ा बुनने, चमड़ा कमाने और मुहल्ले झाड़नेका धंधा क्यों पसन्द नहीं है? ये देहातका अधिक सुख और आरामवाला जीवन छोड़कर अिस जीवित नरकागारमें क्यों आये होंगे? अुस समय तो अुन्हें अिसकी कोअी सफाअी नहीं मिली, परंतु वर्षों बाद अछूतोंकी सेवा करते करते जब वे अिन लोगोंके गाढ़ संपर्कमें आये और अिनमें से नारायणभाअी, कूकाभाअी, हीराभाअी और सामंत मास्टर जैसे कुछ बुद्धिशाली मनुष्योंके साथ प्रेम-संबंध रखने लगे, तब अुनमें से अेकको अुन्होंने यह सवाल पूछा था कि, "कूकाभाअी, आप जैसे संस्कारी मनुष्य अिस धंधेकी तरफ कैसे ललचाये?" अुस समय कूकाभाअीने यह जवाब दिया था:

"भूख और दुःखके मारे लोग क्या नहीं करते? चोरी करते हैं, हत्या करते हैं, झूठ बोलते हैं और अनेक पाप करते हैं। तब यह तो सख्त मेहनत और मजदूरीका काम है। पहले तो अैसा गंदा काम करते हुअे दिलमें नफरत होती थी, परंतु अब अुसकी आदत पड़ गअी है। और 'गंध रही कि सही' वाली कहावतके अनुसार अब हम पर अिसका कोअी असर नहीं होता।"

अिससे भी अधिक खराब और करुण बात तो यह थी कि अैसा गंदा काम करनेकी अरुचिकर नौकरी जुटानेके लिअे अिन अछूत भाअियोंको बहुतसे अनुचित मार्ग अपनाने पड़ते थे। अिसके लिअे अूपरके अफसरोंकी खुशामद करनी पड़ती थी और अुनको 'दस्तूरी' अर्थात् रिश्वत देनी पड़ती थी। जो लोग देशसे आते अुनके पास घूस देनेको रुपया नहीं होता। अिसलिअे अुन्हें सौ-पचास रुपयेकी रकम पठान या मारवाड़ी व्यापारियोंसे भारी ब्याज पर लेनी पड़ती। पठान अुसकी ड्योढ़ी दुगुनी पहले ही लिख लेता और ब्याज भी भारी लेता। नतीजा यह होता कि ब्याज चुकाने और कर्ज अुतारनेसे कभी भी अुसे मुक्ति नहीं मिलती और अुसकी सारी जिन्दगी कर्ज देते देते ही बीत जाती थी। अिस बातका पता ठक्कर साहबको दुःखी लोगोंके साथ ज्यों-ज्यों संपर्क बढ़ता गया, धीरे धीरे लगता गया।

ढेढ़ तथा भंगी लोगोंकी यह दुर्दशा देखकर ठक्कर साहबके मनमें अत्यंत खेद हुआ। अुनके हृदयमें दयाभाव जाग्रत हुआ और अछूत जातिके अिन अभागे लोगोंके प्रति अुनके दिलमें सहानुभूतिका स्रोत बहने लगा।

क्या करनेसे अिन बेचारोंके दुःख हल्के हों, क्या करनेसे अुनकी कठिनाअियां कम हों, क्या करनेसे अुनकी किसी हद तक मदद की जा सकती है, अिस प्रकारके विचार अुनके मनमें अुठते और अुठ अुठ कर ठंडे हो जाते थे। परंतु अब अुन्हें चैन नहीं पड़ रहा था। अिन अभागे लोगोंके लिअे कुछ कर गुजरनेकी वृत्ति अुनके हृदयमें जाग अुठी थी। परंतु अुनकी समझमें यह नहीं आ रहा था कि अिसके लिअे क्या करना चाहिये। मनमें अिस संबंधके विचार अुठते रहते थे। ठीक अिसी वक्त वे हरिजनोंके आद्यसेवक श्री विट्ठल रामजी शिन्देके संसर्गमें आये और अुनसे ढेढ़, भंगी, चमार, महार वगैरा समाजमें हल्की और अछूत मानी जानेवाली जातियोंके लोगोंकी सेवा करनेकी प्रेरणा, प्रकाश और मार्गदर्शन प्राप्त किया।

जैसे ठक्करबापाने विट्ठलबापाको अपना प्रथम गुरु बताया है, वैसे ही अिन विट्ठल शिंदेको अुन्होंने अपना दूसरा गुरु बताया है।

शिंदेजी महाराष्ट्रके निवासी थे। दलितोंकी सेवा करना ही अिनका जीवन-ध्येय और जीवन-कार्य था। जॉन बैप्टिस्ट जैसे अीसा मसीहके पुरोगामी थे, वैसे ही शिन्देजी भी गांधीजीके पुरोगामी थे; और अछूतोद्धार तथा हरिजन-सेवाका जो महान कार्य गांधीजी हाथमें लेनेवाले थे अुसके लिअे मानो पूर्वभूमिका तैयार करने ही आये हों, अिस प्रकार अुन्होंने अपने तपसे अिस क्षेत्रमें प्रारंभिक काम कर डाला था।

वे गरीबीमें रहकर और तकलीफें व मुसीबतें अुठाकर हिन्दू समाजकी कुछ हानिकारक पुरानी रूढ़ियोंके विरुद्ध अकेले दम लड़ रहे थे और गांधीजीके अस्पृश्यता-निवारणके महान आन्दोलनके लिअे रास्ता साफ कर रहे थे। अुन्होंने 'डिप्रेस्ड क्लासेज़ मिशन' तो बादमें शुरू किया। परंतु अुस समय भी अंत्यजोंके लिअे बंबअी प्रदेशमें जगह-जगह पाठशालाअें खोलकर अपने विनम्र ढंगसे कार्य शुरू कर दिया था।

शिन्देजी मुक्ति-सेनाके सैनिकोंकी तरह लाल साफा बांधते और लंबी काली दाढ़ी रखते थे। परंतु दलितोंके लिअे तो वे अेक खुदाअी फरिश्तेके समान ही थे। अुन्हें अिस कार्यकी प्रेरणा कहांसे मिली होगी, अिस बारेमें विशेष जानकारी नहीं मिलती। परंतु यह मालूम होता है कि जिस समय मद्रासमें अुन्नीसवीं सदीके अन्तिम दशकमें थियोसॉफिकल सोसायटीके आद्य अध्यक्ष कर्नल ऑल्कॉटने अडियारमें कुछ पंचम पाठशालाअें शुरू की थीं, तब शिंदेजीने भी बम्बअी प्रदेशमें अछूत पाठशालाअें शुरू की थीं। पंचमका अर्थ है हिन्दुओंके चार वर्णोंसे भी नीचा पांचवां वर्ण। और अन्त्यजका अर्थ है अंतिम वर्ण। शिन्देजीने अपने कार्य और सचाअीसे बम्बअीके कुछ प्रमुख

सुधारकों और नागरिकोंका विश्वास और प्रेम संपादन कर लिया था। और अुनकी सक्रिय सहानुभूति प्राप्त करके वे अपनी संस्था 'डिप्रेस्ड क्लासेज़ मिशन' के लिअे अेक प्रभावशाली कमेटी स्थापित कर सके थे। अिस कमेटीके अध्यक्ष न्यायाधीश सर नारायण गणेश चन्दावरकर थे। अिस मिशनके द्वारा वे अंत्यजोंके लिअे प्राथमिक शालाअें और बंबअीमें अेक छात्रालय स्थापित कर सके थे। वे अेक दो बार सौराष्ट्रमें भी आये थे और राजकोट तथा भावनगरमें अछूत पाठशालाअें कायम करनेमें सफल हुअे थे।

ठक्कर साहबके मातहत म्युनिसिपैलिटीके २५० से ३०० तक गुजरात-काठियावाड़के हरिजन और महाराष्ट्रके महार और मांग लोग कचरेकी सफाअीका काम करते थे। शिन्देजीने अुनके बच्चोंके लिअे भी अेक पाठशाला शुरू की थी। ठक्करबापा अिनके संपर्कमें आये और अुनकी कार्यपद्धतिका अवलोकन करनेका अुन्हें मौका मिला। अुस समय शिन्देजीने ठक्कर साहबको गुजरात-काठियावाड़के हरिजनोंके लिअे पाठशालाअें शुरू करनेकी प्रेरणा और सूचना दी और अिस दिशामें किसी मददकी जरूरत हो तो मदद देनेकी भी अिच्छा प्रगट की।

अिस संबंधमें शिंदेजीको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुअे बापा लिखते हैं, "वे मेरे चार गुरुओंमें से दूसरे गुरु थे और अपने पिताके बाद सार्वजनिक सेवाका कार्य मैंने अुनके चरणोंमें बैठकर सीखा है। अुम्रमें वे मुझसे छोटे थे तो भी राष्ट्रहितके कार्योंके अध्ययनमें वे मुझसे कहीं आगे बढ़े हुअे थे। बम्बअीकी तरफ दलित जातियोंके कल्याणकी हलचलके वे पिता थे।

". . . १९०६–७ के अर्सेमें जब मैं बम्बअी म्युनिसिपैलिटीकी नौकरीमें था और मेरे नीचे २०० से ३०० तक अछूत, महार और मांग जातिके नौकर मैला अुठानेके कामसे भी गंदा कचरा अुठानेका काम कर रहे थे, तब अुन्होंने मुझे यह पाठ पढ़ाया था कि अिन ढेढ़-भंगियों और मांग-महारोंके बच्चोंके लिअे पाठशालाअें कैसे चलाअी जायं और अुन्हें अधिक अधिकार कैसे दिलवाये जायं।

"और जब १८८८ के बंबअी म्युनिसिपल कानूनमें अेक जाब्तेकी भूल रह जानेके कारण मेरी शुरू की हुअी हरिजन पाठशालाके लिअे सहायता स्वीकृत नहीं हो रही थी, तब अुन्होंने म्युनिसिपैलिटीके किसी सदस्य-मित्र द्वारा अुस पाठशालाके खर्चका प्रबंध भी करवा दिया था।"

और काम करते-करते जैसे वे शिन्देजीके संसर्गमें आये, अुसी तरह काम करते-करते वे देवधर दादाके संपर्कमें भी आये। ठक्करबापा अिन्हें

अपना तीसरा गुरु मानते हैं। भारत-सेवक-समाज नामक संस्थाकी जानकारी तो अुन्हें अुसकी स्थापना हुअी तभीसे थी। फिर, अुस संस्थाके प्रति अुनके मनमें सम्मान और आकर्षण भी बहुत समयसे पैदा हो गया था। अिसलिअे वे अुसकी बंबअीकी शाखामें समय समय पर जाते और मुख्य कार्यकर्ताओं और सेवकोंसे परिचय बढ़ाते। अिन सेवकोंमें देवधर दादाका नाम मुख्य था। वे समाज सेवाके काममें गहरी दिलचस्पी रखते थे। अर्थशास्त्रके बड़े अभ्यासी थे। बारह-पंद्रह घंटे तक सतत काम करने पर भी वे थकते नहीं थे। पूनामें अुन्होंने सेवा-सदनकी स्थापना की थी और अुस संस्थाको विकसित किया था। ठक्करबापाको हरिजनोंके लिअे पाठशाला चलानेकी प्रेरणा और प्रवृत्तिका श्रेय जैसे शिंदेजीको था, वैसे ही अुनकी ऋण-मुक्तिकी योजनाको अमलमें लानेकी प्रेरणाका श्रेय देवधर दादाको था।

अिसी अर्सेमें वे अपने चौथे गुरु प्रो० धोंडो केशव कर्वेके अधिक निकट परिचयमें आये।

अेक तरफ ठक्कर साहब दलित वर्गके लोगोंसे संपर्क बढ़ा रहे थे और अुनकी सेवा द्वारा सुख और संतोष अनुभव करते थे, तो दूसरी ओर घरकी चिन्ता अुन्हें घेर रही थी। अुनकी पत्नी श्रीमती जीवकोरकी तबीयत पहलेसे ही नरम-गरम रहती थी। वह अब तेजीसे बिगड़ती जा रही थी। पहले प्रदर, फिर सिर-दर्द, बादमें हिस्टीरिया और अिस तरह करते करते बारीक बुखार और क्षयकी शुरुआत हो चुकी थी। शुरूमें ठक्कर साहब अकेले रहते थे, तब अुन्हें काफी असुविधा रहती थी। पत्नी जीवकोरको अकेली छोड़कर अुन्हें नौकरी पर जाना पड़ता था। परंतु बादमें अुनके छोटे भाअी और विधवा भाभी आ गये थे। अिस प्रकार जब ठक्कर साहबके कौटुम्बिक सुख-दु:खके दिन बीत रहे थे, तब नौकरीमें अुन्हें तेजीसे तरक्की मिलती जा रही थी। बंबअी आनेके बाद पहले ही सालमें अुन्होंने अपने अूपरके अधिकारी पर बहुत अच्छी छाप डाली थी। अिनकी व्यवस्था-शक्ति, कायदेसे काम करनेका ढंग, अुद्यमशीलता और प्रामाणिकता हर काममें दिखाअी देने लगी थी। यह सब देखकर वे अितने खुश हुअे कि अुन्हें चेम्बूर रेलवेके निरीक्षक-पदसे चढ़ाकर रोड विभागमें ज्यादा अच्छी जगह पर रख दिया और अुनका वेतन सौके बजाय दो सौ कर दिया गया। अिसके बाद तीसरे वर्षमें ही वह बढ़कर तीन सौ हो गया। बंबअीकी सड़कोंके अुच्च अधिकारीके रूपमें अुनकी नियुक्ति की गअी। वेतनके सिवाय अुन्हें सवारी भत्तेके ६० रुपये मासिक मिलने लगे। अिस प्रकार श्री ठक्करकी अेकाअेक बढ़ती होती देखकर सारी म्युनिसिपैलिटीके दफ्तरमें खलबली

मच गओी। कुछ म्युनिसिपल कर्मचारी तो सीनियॉरिटीका दावा पेश करके अुच्चाधिकारीके पास शिकायत तक ले गये। परंतु अुसने साफ कह दिया कि ठक्कर ही अिस जगहके लिअे अधिक योग्य हैं। सीनियॉरिटीमें मेरा विश्वास नहीं है। मुझे तो ठोस काम चाहिये।

और कामके ठोसपनके बारेमें तो ठक्कर साहबके विरोधी भी कोओी छोटीसी भूल तक नहीं बता सकते थे। ठीक समय पर वे काम पर जाते और पहले दिन नोट किया हुआ काम समय पर पूरा करते। वे म्युनिसिपैलिटीकी नौकरी करते थे, परंतु अपना तमाम काम फर्ज समझकर करते थे। अुनके समयमें बम्बअीकी सड़कें सुधरीं, काम भी अच्छा हुआ और रास्तों पर काम करनेवाले अछूतों और भंगियोंकी स्थिति भी किसी अंशमें सुधरी। अिस ओहदे पर रहकर अुन्होंने कोअी दस वर्ष काम किया, पर अिन दस वर्षोंमें अेक भी रिश्वत लेने या पैसा खानेकी घटना अुनके हाथों नहीं हुअी। म्युनिसिपैलिटीमें अुनके हाथसे हर साल दसेक लाख तककी बड़ी रकम खर्च होती थी। वे चाहते तो लाख दो लाख रुपया आसानीसे मार खाते। परंतु अुनके हृदयकी मानवता नष्ट नहीं हुअी थी। अुनका अन्तःकरण जाग्रत था। रुपयेके या किसी और लालचमें पड़नेके बजाय वे अीमानदारीसे अपना फर्ज पूरा करते थे। अिसमें वे किसीके प्रति पक्षपात या द्वेष प्रगट नहीं करते थे। न्याय और नीतिसे काम लेते थे।

अिस समयकी अुनकी सचाअी और अीमानदारीकी अेक-दो घटनाओंका अुल्लेख कर दें।

बंबअीके किसी रास्ते पर म्युनिसिपल फुटपाथ पर बैठकर अेक आदमी फल-मेवे बेचता था। यह सर्वथा अनुचित और गैरकायदे काम था। अिसलिअे ठक्कर साहबकी तरफसे अुसे मनाही कर दी गअी। अुसी दिन शामको ठक्कर साहबके घर अुस मेवा बेचनेवालेने नारंगी, मोसम्बी और सेबका टोकरा और मेवेकी टोकरी भेज दी। साथमें थोड़ेसे चांदीके बर्तन भी थे। ठक्कर साहबने शामको घर लौटने पर यह सब देखा और घरके लोगोंसे पूछा कि ये टोकरे कहांसे आये? घरके लोगोंने कहा कि पता नहीं, परंतु कोअी फल-मेवेका व्यापारी यहां आया और आपका नाम लेकर यह सब दे गया। ठक्कर साहब समझ गये। वे घरवालों पर नाराज हुअे और तुरंत मजदूर बुलवाकर सब टोकरे-टोकरियां अुस मेवेवालेकी दुकान पर वापस भिजवा दिये और फिर कभी अैसा न करनेकी अुसे सूचना कर दी।

अिसी प्रकार अेक ठेकेदार अुन्हें चांदीके बर्तन भेंट करने आया था। अुसे भी अुलहना देकर ठक्कर साहबने वापस भेज दिया।

ठक्कर साहबको घूंस और रिश्वतका बेअीमानीका रुपया लेने पर तो घोर आपत्ति थी ही, परंतु अपनी प्रामाणिकता और कार्यक्षमताके परिणाम-स्वरूप अुनकी जो कमाअी बढ़ रही थी अुसकी ओर भी वे लापरवाह और अुदासीन बनने लगे थे। लक्ष्मी अुनके पैरोंमें लोटने आ रही थी, परंतु ठक्कर साहब अुसे ठुकरा रहे थे। क्योंकि वे किसी और आराध्य देवकी अुपासना कर रहे थे।

अिस सिलसिलेमें अेक छोटीसी घटनाका अुल्लेख कर दें। बम्बअीमें जब अुनकी कारगुजारी तेजीसे आगे बढ़ रही थी, तब दूसरी ओरसे अुनके लिअे खींचतान शुरू हो गअी थी। पोरबन्दर राज्यमें अुन्हें कअी बार बंबअीसे अिंजीनियरी कामोंमें सलाह-मशविरेके लिअे बुलवाया जाता था। अुनकी सलाह अितनी ज्यादा कीमती साबित होती थी कि अुस समयके अेडमिनिस्ट्रेटर श्री वाजसूरवाला दरबारने स्पष्ट देख लिया कि अुनकी स्थायी अुपस्थिति पोरबन्दरमें ही रहे तो राज्यको बड़ा फायदा हो। अिसलिअे अुन्होंने अिन्हें ५०० रुपये वेतन पर पोरबन्दर आनेका प्रस्ताव किया। और अितने पर भी जब वे न माने तो यह असाधारण प्रस्ताव भी रख दिया कि 'वेतनका जो अंक आप लिख दें वही मंजूर है।' और अिन्हें खींचनेका प्रयत्न किया।

परंतु अिनका मन वेतन और तरक्कीकी तरफ न झुककर किसी और ही दिशामें खिंच रहा था और परिस्थितियां भी अिन्हें अुसके लिअे तैयार कर रही थीं।

अुनकी पहली पत्नीका स्वास्थ्य बहुत ही बिगड़ गया था। अिसलिअे देखभाल और जलवायु परिवर्तनके लिअे अुन्हें देशमें भेज दिया गया। परंतु वे अधिक समय नहीं जी सकीं। सन् १९०९ में भावनगरमें ही अुनका देहान्त हो गया। ठक्कर साहबके भाअी मणिलाल अेक वर्ष पहले ही गुजर गये थे और अपने पीछे २४ वर्षकी विधवा पत्नी और दो लड़कियां छोड़ गये थे। विट्ठलदास ठक्करने भी कभीसे कामकाज छोड़ दिया था। वे अपना सारा समय जातिसेवा और अीश्वर-भजनमें लगा रहे थे। अुनके तप और पुरुषार्थसे भावनगरमें लोहाणा जातिके बच्चोंके लिअे विद्योत्तेजक कोष और छात्रालय अच्छी तरह विकास पा चुके थे। छोटे भाअी केशवलाल ठक्कर डॉक्टरीकी परीक्षामें पास होकर सौराष्ट्रके अलग अलग राज्योंमें नौकरी कर रहे थे। सबसे छोटे भाअी नारायण बंबअीमें ठक्कर साहबके साथ रह कर कालेजमें अध्ययन कर रहे थे। माता मूली बा काफी वृद्ध हो गअी थीं और आंखोंमें मोतियाबिन्द हो जानेसे बिलकुल अंधी हो गअी थीं। बड़ी बहन विधवा हो गअी थीं और भावनगरमें मां-बापके साथ ही रहती थीं।

जीवनकी अिस धूपछांव और कुटुम्बके जंजालोंके बीच ठक्कर साहबका मन दूसरी दिशामें अधिकाधिक खिंचता रहता था। दूसरी तरफ अिनकी पहली पत्नीके गुजर जाने पर विट्ठलदास ठक्कर अिन्हें दूसरी बार ब्याहनेकी तैयारी कर रहे थे। ठक्कर साहबने शुरूमें तो अिन्कार कर दिया, परंतु जब पिताका आग्रह देखा और परिवारका बहुत दबाव पड़ा तो कुछ पिताके आग्रहके वश और कुछ अपनी भीतरी अिच्छाके अधीन होकर अेक बरस बाद अुन्होंने हां कह दिया और राजकोटके गणात्रा कुलकी कन्याके साथ विवाह कर लिया। यह विवाह, जैसा कि ठक्कर साहबने कहा, अनेक कारणोंसे, खास तौर पर दोनोंके बीच अुम्रके फर्कके कारण, सुखी साबित नहीं हुआ। अिस पत्नीका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहा। थोड़े समय अुन्हें राजकोटके वेस्ट अस्पतालमें रखा गया, परंतु शादीके बाद कोअी डेढ़ वर्षमें ही वे भी गुजर गअीं। अिस प्रकार गृहस्थ जीवनकी अेकके बाद अेक मजबूत गांठें छूटती जा रही थीं और ठक्कर साहबको भावी जीवनके लिअे तैयार कर रही थीं। अिस अर्सेमें देवधर दादाके साथ अुनका संपर्क बहुत ही गाढ़ हो गया था और सोसायटीमें अिनका आना-जाना भी खूब बढ़ गया था। रोज शामको नौकरी पूरी करनेके बाद वे नियमित रूपसे भारत सेवक समाजके दफ्तरमें जाते और वहां देवधर दादाके साथ अछूतोद्धार, दलित-सेवा, म्युनिसिपैलिटीके भंगी लोगोंकी ऋणमुक्ति वगैरा सवालों पर चर्चा करके विचारोंका आदान-प्रदान करते थे। अिस अर्सेमें अुन्होंने देवधर दादासे सेवाके बहुतसे पाठ सीखे। धीरे-धीरे अुनका अन्तर सेवामय बनता गया। अपनी आयमें से आधी रकम अर्थात् लगभग १५० से अधिक रुपये तो वे अलग अलग लोकोपयोगी संस्थाओंको दानके रूपमें भेज देते थे। घरका प्रबंध अुस समय छोटे भाअी नारायणजीके हाथमें था। अुन्होंने अिन्टर सायन्समें फेल हो जानेसे पढ़ाअी छोड़ दी थी और बम्बअीकी अेक पाठशालामें शिक्षकका काम कर रहे थे। अुनकी आय और ठक्कर साहबके वेतनमें से दान देनेके बाद बचे हुअे डेढ़ सौ रुपयेसे घरका खर्च चलता था। हर महीने वेतन मिलता कि तीन चार दिनमें ही भिन्न भिन्न संस्थाओंको जो मदद देना तय किया हुआ था, अुसके अनुसार मनीआर्डरसे रुपये भेज देनेकी हिदायत नारायणजीको पहलेसे ही अुन्होंने कर दी थी और तदनुसार अिस सूचना पर बराबर अमल हो जाता था।

अिस प्रकार नौकरी करते करते अेक तरफ अपनेको खपाकर सेवा करते और दूसरी तरफ अपनी कमाअीमें से पाअी-पाअी बचाकर आधा हिस्सा सार्वजनिक संस्थाओंको दानके रूपमें दे देते थे। फिर भी अुनके अंतरको संतोष

नहीं हो रहा था। अुन्हें अैसा लगता था कि अब भी कोअी चीज अधूरी है। देशकी दारिद्र्यपूर्ण स्थितिको देखते हुअे देशके काममें चौबीसों घंटे लगे रहनेवाले सेवकोंकी जरूरत ठक्कर साहबको अनिवार्य प्रतीत होने लगी थी। और अिसलिअे कुटुम्बकी जिम्मेदारीसे मुक्त होकर भारत सेवक समाजके सेवकोंकी तरह चौबीसों घंटे सेवामें लगे रहनेकी वृत्ति दिनदिन बलवती बनती जा रही थी। अिसलिअे अेक दिन पिताको पत्र लिखकर अुन्होंने पुछवाया कि, "छोटे भाअी केशवलाल अच्छी तरह अपने धंधेमें लग गये हैं और कुटुम्बका भार अुठाने लायक हो गये हैं। आप अिजाजत दें तो मैं नौकरीके जंजालसे छूटकर अपना समय दलितोंकी सेवामें बिताअूं।"

पिता अितने जड़ नहीं थे कि पुत्रकी अिस प्रबल आकांक्षाको न समझते। वे पुत्रकी बाहरी और भीतरी प्रवृत्तिसे पूरे परिचित थे। अुन्होंने पुराना और नया जमाना देखा था। और नये जमानेको भी पहचानते थे। फिर, सेवाजीवनका रसानंद तो अुन्होंने स्वयं ही अनुभव किया था। अिसलिअे पुत्रके अिस निर्णयको वे अुदार दृष्टिसे देख सकते थे, अुसकी कद्र भी कर सकते थे। फिर भी अुनकी दृष्टिकी मर्यादा थी। वे जिस युगके प्रतिनिधि थे, अुसकी सीमाअें लांघकर नूतन युगके सेवाक्षेत्रका अेक खास हद तक ही समर्थन कर सकते थे। पुत्र जो कदम अुठाना चाहता था, अुसे वे अनुचित तो कह ही नहीं सकते थे, परंतु अुसका वे भीतरी अुमंगसे स्वागत भी नहीं कर सकते थे। साथ ही अुनके अन्तरको यह अच्छा नहीं लगता था कि अुनका पुत्र अितनी छोटी अुम्रमें सब काम छोड़कर केवल सेवाके कार्यमें पड़ जाय। अिसलिअे अुन्होंने जवाबमें लिखा कि, "अभी तो जो काम कर रहे हो वही जारी रखो। जब तक मैं जीवित हूं, तब तक यह कदम न अुठाना। और अब मैं जीनेवाला भी कितने दिन हूं? जिन्दगीके अब बहुत वर्ष बाकी नहीं रहे हैं।"

अमृतलाल ठक्करने आज्ञाकारी पुत्रके नाते सब्र किया और पिताकी अिच्छाका आदर करके नौकरी पर बने रहे। अिसके बाद थोड़े अर्सेमें विट्ठलदास अुनके साथ रहनेको भावनगरसे बम्बअी चले गये। बम्बअीमें अुनके हमजोलिया मित्र थे। अुन्हें थोड़े आरामकी जरूरत थी। बम्बअीमें ही अुन्हें लकवेका हमला हुआ और अुन्होंने बिस्तर पकड़ लिया। अमृतलालने अुनकी खूब सेवा-चाकरी की। ठक्करबापाकी विधवा भाभी, जो अभी तक जीवित हैं, अिस सेवाकी साक्षी हैं। अुन्होंने कहा था कि, "अमृतलाल भाअीने ससुरजीकी खूब ही सेवा की। अुन्हें पक्षाघात हुआ तब अुन्हें सुलाने, अुठाने, खानापीना देने, पैर दबाने, मालिश करने वगैराका बहुतसा काम

अुन्होंने स्वयं किया और बापकी सेवाका आनंद लिया। अैसा अवसर किसी भाग्यशाली पुत्रको ही मिलता है।"

विट्ठलदास ठक्करका शरीर अब बिलकुल बेकार हो गया था। लकवेने अब अुनकी जबान पर असर कर लिया था और वे साफ बोल भी नहीं सकते थे। अिस समय अेक अैसी घटना हुअी, जिसने अमृतलाल ठक्करको बड़ी मुश्किलमें डाल दिया और पिताको दुःख न पहुंचने देनेके लिअे अुन्हें झूठ बोलने पर मजबूर किया। अिस घटनाने अुनकी काफी परीक्षा ली।

यह घटना लगभग १९१२ के अर्सेमें हुअी थी। बम्बअीके कुछ समाज-सुधारकोंकी तरफसे आर्यन-ब्रदरहुड अर्थात् आर्य लोगोंके बीच भ्रातृभाव बढ़ानेवाली संस्थाकी ओरसे अेक सहभोजका कार्यक्रम आयोजित किया गया था। अुसमें सभी जातियोंके लोगोंको आमंत्रण दिया गया था। अमृतलाल ठक्करने भी अुसमें भाग लिया।

गांधीजीके अिस युगमें अिस प्रकारकी सहभोजकी घटना बिलकुल साधारण लगती है, परंतु चालीस-पचास वर्ष पहले अैसा नहीं था। अुस समय जाति-संस्थाअें बड़ी बलवान थीं। अुनकी रीति-नीतिकी अुपेक्षा करनेकी हिम्मत और अपनेसे हलकी मानी जानेवाली जातिके मनुष्यके साथ अेक पंगतमें बैठकर खानेका साहस कोअी न करता था। अगर कोअी करता भी तो अुसे जातिसे बाहर निकाल दिया जाता था।

अलबत्ता, अुस समय बम्बअीमें थोड़ेसे महाराष्ट्रीय और गुजराती सुधारक थे, जो जातिभेदको नहीं मानते थे। अमृतलाल ठक्कर लोहाणा जातिके तंग दायरेको नहीं मानते थे, यद्यपि जातिकी सेवा करनेको हर क्षण तैयार रहते थे। १९१० के दिसंबर मासमें जब बम्बअीमें लोहाणा परिषद् हुअी तब वे स्वागत-समितिके अेक मजबूत कार्यकर्ता थे और परिषद्के लिअे जो बड़ा मंडप खड़ा किया गया था, अुसका काम अुन्हें सौंपा गया था। अितने पर भी वे जातिकी संकुचित चारदीवारियोंको नहीं मानते थे। दूसरी जातिके लोगोंके साथ भोजन-व्यवहार रखा जाय तो भ्रष्ट हो जाते हैं, अिस बातमें अुनका विश्वास नहीं था। अिसलिअे अुन्होंने आर्यन-ब्रदरहुडकी ओरसे आयोजित भोजन-समारोहमें भाग लिया। साथ ही कच्छी लोहाणा जातिके दो सज्जन, गोपालजी रामजी और मावजी गोविन्दजी सेठने भी अुसमें भाग लिया। अिस भोजनमें भाग लेनेवालोंमें बम्बअीके प्रख्यात हिन्दू क्रिकेटके खिलाड़ी श्री बालू और अुनके भाअी भी थे। ये अुस जातिके थे, जिसे आजकल 'हरिजन' कहा जाता है। अिस घटनासे

सारी बंबअीमें खलबली मच गअी। जिन जिन लोगोंने भोजन-समारोहमें भाग लिया था, अुनके नाम दूसरे दिन अखबारोंमें प्रकाशित हुअे। अिससे लोहाणा जातिमें खलबली मच गअी। तुरंत ही सभा बुलाअी गअी। साप्ताहिक 'गुजराती' पत्रमें खानेवालोंकी सख्त खबर ली गअी और अुनके विरुद्ध कार्रवाअी करनेका हिन्दू जातियोंकी पंचायतोंसे अनुरोध किया गया। पंचायतें भी अिस खबरसे गुस्सेमें भड़क अुठीं। अुन्होंने अपराधियोंका न्याय करने और दण्ड देनेका निश्चय किया। जिन जिन लोगोंने प्रीतिभोजमें भाग लिया था, अुन्हें पंचायतके सामने बुलाया गया। अमृतलाल ठक्करसे भी घोघारी लोहाणा पंचायतके पंचोंके समक्ष अुपस्थित होनेको कहा गया। अेक संबंधी जातिबंधुने अुन्हें यह कहकर भुलावा दिया कि पंचोंके सामने केवल मुंह दिखा आना है और २५-३० रुपयेके जुर्मानेमें सब निपट जायगा।

भुलावेमें आये हुअे ठक्कर साहब जातिके पंचोंके सामने हाजिर हुअे। पंचोंने फैसला सुनाया: "अस्पृश्य मनुष्योंके साथ भोजन करनेके लिअे अनिवार्य प्रायश्चित्त और अूपरसे डेढ़ सौ रुपये जुर्माना।

"प्रायश्चित्त करो और जुर्माना चुकाओ, नहीं तो सारा कुटुम्ब जातिसे बाहर कर दिया जायगा।"

ठक्कर साहबने चुपचाप फैसला सुन लिया और बाहर निकले। अुस दिन अुन्होंने बहुत मनोव्यथा भोगी। जब वे पंचायतसे बाहर निकले तब अुनका सिर चकरा रहा था। बाहर आकर मनको शान्त किया और बादमें विचार करने लगे कि क्या करूं?

प्रीति-भोजन करके पापका काम तो किया नहीं, अुल्टे सुधारका कदम ही अुठाया है। परन्तु पिता बिस्तर पर पड़े हैं। जाति बाहर हो जाअूंगा तो अुनकी श्मशान-यात्रामें कोअी नहीं आयेगा। पिताको मालूम होगा तो अुनके दिलको बहुत बड़ा धक्का लगेगा। और अीश्वर न करे, यदि अुन्होंने प्राण छोड़ दिये तो मुझे जीवन भर अफसोस रह जायगा।

अेक तरफ यह भावना बोल रही थी कि पिताका जी अुनके जीवनके अंतिम क्षणोंमें न दुखाया जाय, अुनके मन्तव्योंके विरुद्ध आचरणकी जानकारी करा कर अुन्हें आघात न पहुंचाया जाय। दूसरी तरफ अुन्हें विश्वास था कि सही बात तो यही है। अिस प्रकार कुटुम्बनिष्ठा और सत्यनिष्ठा, पितृप्रेम और सत्यप्रेमके बीच अुनके मनमें घमासान छिड़ गया और अन्तमें कुटुम्ब-प्रेम और पितृभक्तिने सत्य पर विजय प्राप्त की। अुपनिषदोंके वचनानुसार पिताके प्रति मोहके सुवर्ण पात्रसे सत्यका मुख ढंक गया। अुन्होंने

पंचोंका निर्णय शिरोधार्य किया। डेढ़ सौ रुपया जुर्माना अदा कर दिया और प्रायश्चित्तकी क्रिया करके दाढ़ी-मूंछ मुंडवा ली।

वह दिन ठक्कर साहबने गमगीनीमें बिताया। दाढ़ी-मूंछ मुंडवाकर घर आये तब पिताने अुनकी तरफ देखकर बाल अुतरवानेका कारण पूछा, तो अुन्हें अेक असत्य छुपानेके लिअे दूसरे असत्यका आश्रय लेना पड़ा। अुन्होंने अुत्तर दिया, "ससुरालमें किसीकी मौत हो गअी है। अिसलिअे दसवेंके बाल अुतरवाये हैं।"

अिस प्रकार ठक्करबापाने अधेड़ अुम्रमें पिताके प्रति मोहके कारण जो भूल की, अुसका सच्चा प्रायश्चित्त तो अुन्होंने लोहाणा जातिसे हल्की ही नहीं परन्तु अंतिम और नीची मानी जानेवाली हरिजन जाति और भीलोंकी आजीवन सेवाका व्रत लेकर किया। और अुनका कीर्ति-सूर्य अैसा चमका कि खुले आम ढेढ़, भंगी, हरिजन और आदिवासियोंके साथ रहने और भोजन करने पर भी अुन्हीं जातिके पंचोंने आगे चलकर बापाका बड़ा सम्मान किया और यह घोषणा की कि हरिजनों तथा भीलोंकी सेवा करनेके लिअे लोहाणा जातिने ठक्करबापा जैसे समर्थ पुरुषको जन्म दिया, अिसके लिअे जाति अभिमान और गौरव अनुभव करती है। और बापाको बम्बअीकी कच्छी, घोघारी और हालाअी तीनों जातियोंकी तरफसे सम्मिलित अभिनंदन-पत्र दिया गया।

अुपरोक्त घटनाके थोड़े ही समय बाद विट्ठलदास ठक्कर १९१३ में गुजर गये। अुनके जाते ही गृहस्थजीवनकी जो आखिरी गांठ अब तक अमृतलाल ठक्करको जकड़े हुअे थी वह भी छूट गअी। और अुन्होंने कुटुम्बके जंजाल और जिम्मेदारीसे मुक्त होकर वसुधारूपी परिवारकी सेवा करनेके लिअे महाभिनिष्क्रमणकी तैयारी की। अपने अिस कदमके बारेमें अुन्होंने अपने छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्करको भी जानकारी दी। डॉ० केशवलाल, जो सौराष्ट्रके देशी राज्योंमें नौकरी करते थे, अिस सम्बन्धमें बड़े भाअीसे बातचीत करने और हो सके तो यह निर्णय कुछ वर्ष और मुलतवी करनेको समझानेके लिअे बम्बअी गये। बम्बअीके पालवा बंदर पर दोनों भाअी अकेले घूमने गये, तब डॉ० केशवलालने अिस प्रश्नकी चर्चा शुरू करके कहा:

"बड़े भैया, पांच साल और ठहर जायं तो क्या बेजा है? पांच वर्षमें नौकरीके पंद्रह साल पूरे हो जायंगे। आपको अेक तिहाअी पेन्शन मिल जायगी। फिर आप गुजारेके लिअे किसीके अधीन रहे बिना स्वतंत्रतासे सेवाकार्य कर सकेंगे।"

छोटे भाअीका हिसाबी मस्तिष्क अुन्हें अिस ढंगसे समझा रहा था। अुनका हिसाब यह था कि बड़े भाअी अितने वर्ष नौकरीमें बने रहें, तो पासमें थोड़ी पूंजी अिकट्ठी हो जाय और स्थायी पेंशन मिल जाय, ताकि अुन्हें किसीके सामने अपने गुजरके लिअे हाथ फैलानेकी जरूरत न रहे। परन्तु बड़े भाअी अमृतलाल ठक्करका हृदय दूसरी ही योजना बना रहा था। अुन्होंने बम्बअीके पालवा बन्दरके समुद्रकी ओर देखकर कहा, "पांच वर्ष? पांच वर्षमें तो कितना काम हो सकता है? पांच वर्ष तक बाट देखना अब असंभव है। संकल्प करनेके बाद छः वर्ष तो मैंने सब्र किया, क्योंकि पिताजीका जी नहीं दुखाना था। परन्तु अब तो पिताजी चले गये हैं। अब मुझे पांच सालका समय नहीं गंवाना है।"

यह अुनका अचल और अंतिम निर्णय था। अिसमें परिवर्तन नहीं हो सकता था। अन्तमें १९१३ के दिसम्बर मासमें सब तैयारियां हो गअीं और बम्बअीका घर समेट लिया गया। परिवारकी सारी व्यवस्था सोच ली गअी। अुनके पांच भाअियोंमें से दो तो गुजर गये थे और दूसरे तीन भाअी अपने-अपने धंधोंमें अच्छी तरह जम चुके थे। बड़े भाअी परमानन्द ठक्कर शिक्षकके रूपमें और डॉ० केशवलाल ठक्कर काठियावाड़के अलग-अलग राज्योंमें डॉक्टरी अधिकारीकी हैसियतसे काम कर रहे थे। नारायणजी भी बम्बअीमें साथ रहकर शिक्षकके तौर पर काम कर रहे थे। बम्बअीका रहनेका बड़ा मकान छोड़ दिया गया, अिसलिअे वे छोटी कोठरी किराये लेकर अुसमें रहने चले गये। बाकी रही भाअी मणिलालकी विधवा पत्नी विजुबहन। अुन्हें वनिता-विश्राममें भेजनेकी व्यवस्था की गअी। फिर १४ जनवरीको म्युनिसिपैलिटीकी नौकरीसे त्यागपत्र दिया। यह त्यागपत्र वापस लेनेको म्युनिसिपल अधिकारियों और अूपरके अफसरोंने बापाको बहुत समझाया। नौकरी द्वारा जिन म्युनिसिपल हरिजन कर्मचारियों और दूसरे लोगोंकी वे सेवा कर रहे थे, अुन लोगोंने भी अुनसे खूब विनती की। परन्तु ठक्कर साहबने अुन्हें अपनी बात समझाकर कहा कि भविष्यमें तुम्हारी अधिक अच्छी सेवा कर सकूं, अिसीलिअे मैं जा रहा हूं।

म्युनिसिपल विभागके सारे लोगों पर श्री ठक्कर साहबका यह आत्म-समर्पण जादूका-सा असर कर गया। जो ठक्कर साहबकी बढ़तीसे अपने हक मारे गये समझकर अुनसे द्वेष करते थे, वे भी अुनके बारेमें ओछे विचार रखनेके लिअे पश्चात्ताप करने लगे और मनमें और प्रगट रूपमें अुन्हें हजारों धन्यवाद देने लगे। म्युनिसिपल कर्मचारियोंने अुन्हें बिदाअी-सम्मान दिया। गुजराती लोगोंकी तरफसे भी अुनके मान-सम्मानकी अितनी होड़

होने लगी और समारोह अितने बढ़ने लगे कि अुन्होंने डॉ० केशवलाल ठक्करको अेक बार अेक पत्रमें लिखा था, "मेरा खयाल है कि मैं यहां ज्यादा समय रहूंगा तो बिगड़ जाअुंगा।"

अिस तरह ठक्कर साहब आखिर म्युनिसिपैलिटीकी नौकरी छोड़कर सेवा-जीवनकी दीक्षा लेनेको तैयार हुअे।

१०

दीक्षा

ठक्कर साहबने भारत-सेवक-समाजमें शरीक होनेका जो निर्णय किया था, वह अकेले नहीं परन्तु अपने पुराने मित्र डॉ० हरि श्रीकृष्ण देवके साथ किया था। और दोनोंने अेक ही साथ आवेदनपत्र भेजे थे। अितना ही नहीं, परन्तु ठक्कर साहबका प्रार्थनापत्र भी अुनकी तरफसे डॉ० देवने ही लिख दिया था।

डॉ० देवका भारत-सेवक-समाजके अध्यक्ष श्री गोखलेजीके साथ बड़ा पुराना सम्पर्क था। साथ ही गोखलेजी यह भी जानते थे कि अुनकी समाजके सदस्य होनेकी अिच्छा बहुत वर्षोंसे थी। १९१० के वार्षिक अधिवेशनमें दिये गये व्याख्यानमें अुन्होंने अिसका अुल्लेख करके कहा था कि थोड़े समयमें दक्षिण महाराष्ट्रके अेक सज्जनके हमारे समाजमें जुड़नेकी संभावना है।

यह संभावना अन्तमें १९१४ में सफल हुअी और २१ जनवरीको डॉ० हरि श्रीकृष्ण देवने भारत-सेवक-समाजके अध्यक्षको समाजमें भरती होनेके बारेमें पत्र लिखा। ठक्कर साहब अुस समय थोड़े संकोचशील स्वभावके होने चाहिये, अिसलिअे समाजमें शामिल होनेका निर्णय करनेके बाद भी यह अिच्छा गोखलेजी पर प्रगट करनेका पत्र स्वयं न लिखकर डॉ० देवसे लिखवाया। डॉ० देवके लिखे हुअे वे दोनों पत्र अिस प्रकार हैं :

"पूना शहर,
२१ जनवरी, १९१४

"प्रिय महोदय,

"पिछले कुछ वर्षोंसे आप मुझे जानते हैं। मैं बम्बअी विश्वविद्यालयका अेल० अेम० अेण्ड अेस० हूं। अब तक सांगली राज्यमें मुख्य डॉक्टरी अधिकारी था। अुस अधिकार-पदसे हाल हीमें त्यागपत्र दिया है। मैं भारत-

सेवक-समाजमें भरती होनेको अुत्सुक हूं। मुझे यदि समाजमें दाखिल कर लिया जाय तो अुसके सभी मौजूदा नियमोंको मानना मैं स्वीकार करता हूं। अितना ही नहीं, समाजकी कौंसिल समय-समय पर जो भी नियम बनायेगी, वे भी सब मुझे मंजूर होंगे। समाज देशकी सेवा करनेका जो लक्ष्य रखेगा और अुसके कार्यको आगे बढ़ानेके लिअे मुझमें जो भी अुत्तमसे अुत्तम शक्ति होगी — और मैं जहां तक जानता हूं वह बहुत थोड़ी है — वह लगा दूंगा।

आपका
ह० श्री० देव"

ठक्कर साहबकी तरफसे लिखा गया पत्र:

"प्रिय महोदय,

"बम्बअी म्युनिसिपैलिटीके रोड सुपरिंटेन्डेन्ट श्री अे० वी० ठक्करने समाजमें भरती करनेके सिलसिलेमें अपनी तरफसे आपको प्रार्थनापत्र लिखनेका मुझसे कहा है। समाजके सभी नियम वे स्वीकार करते है। अुनका नियमानुसार आवेदनपत्र अेक-दो दिनमें आपको मिल जायगा। श्री ठक्करने बम्बअी म्युनिसिपैलिटीके रोड सुपरिन्टेन्डेन्टकी जगहसे अिस्तीफा दे दिया है और वे १ फरवरी, १९१४को मुक्त हो जायेंगे।

आपका
ह० श्री० देव"

गोखलेजीको ये पत्र लिखे सो तो नियमानुसार थे। परन्तु अिससे कुछ दिन पहले ही यह बात श्री देवने अुन्हें बता दी थी। ठक्कर साहबको अिस बारेमें थोड़ी शंका थी कि अुन्हें भारत-सेवक-समाजमें भरती करेंगे या नहीं। अिसलिअे पहले अुन्होंने डॉ० देवसे यह कहा था कि समाजको प्रार्थनापत्र दिया जाय और यदि वह स्वीकार हो जाय तो तुरन्त ही त्यागपत्र दे दिया जाय। परन्तु मान लीजिये प्रार्थनापत्र स्वीकार न हो तो फिर नये सिरेसे नौकरी करने कहां जायं? अिसलिअे प्रार्थनापत्रका परिणाम निकलने तक अुसे जारी रखा जाय और म्युनिसिपैलिटीसे लम्बी छुट्टी ले ली जाय। परन्तु गोखलेजी कच्ची मिट्टीके आदमी नहीं थे। समाजमें अेक अेक सेवकको भरती करनेसे पहले अुसकी पूरी परीक्षा कर लेते थे। वे ठोक बजाकर आदमी पसन्द करते थे। अिसलिअे अुन्होंने राय दी कि समाज अुन्हें भरती करे या न करे तो भी यदि भरती होनेकी अिच्छा हो और मनका संकल्प हो तो पहलेसे ही म्युनिसिपैलिटीसे अिस्तीफा दे देना चाहिये। अुसके बाद ही

भरती होनेके लिअे दूसरा कदम अुठाया जा सकता है। ठक्कर साहबने यह बात भी मंजूर कर ली और पहलेसे ही म्युनिसिपैलिटीकी नौकरीसे अिस्तीफा देनेका खतरा अुठाया। और जैसा अूपर कहा जा चुका है, डॉ० देव द्वारा पत्र लिखवाया और बादमें बाकायदा अर्जी दी।

अुस समय अत्यन्त सेवाभावी, शिक्षित और अुपाधिधारी युवकोंको ही समाजमें भरती किया जाता था। ठक्कर साहबमें सेवाभाव भरपूर था, यह बात तो साबित हो चुकी थी। वे पढ़े-लिखे और डिग्रीधारी थे, अिसमें भी कोअी कहनेकी बात नहीं थी। परन्तु अुनकी अुम्र अुस समय ४५ वर्षकी थी। अध्ययनकालके बाद अुन्होंने अिक्कीस वर्ष तो भिन्न भिन्न नौकरियोंमें बिताये थे। अिस प्रकार वे लगभग पेन्शन लेनेकी अुम्रके नजदीक पहुंच गये थे। अैसी अधेड़ अुम्रमें पहुंचे हुअे मनुष्यका भारत-सेवक-समाजमें कैसे मेल बैठ सकेगा? ये काम देंगे भी तो कितना देंगे? जवानोंमें जो अुत्साह, चपलता और अथक काम करनेकी शक्ति होती है, वह सब अिस पैंतालीस वर्षकी अुम्रमें पहुंचे हुअे आदमीमें कैसे हो सकती है? समाजका कड़े नियमोंवाला कठोर जीवन ये बिता सकेंगे? अिस प्रकारकी शंका समाजके कुछ प्रमुख सदस्योंको हुअी थी; खास तौर पर श्रीनिवास शास्त्रीको, जिन्होंने ठक्कर साहबको पहले कभी देखा नहीं था और न अुन्हें अुनका प्रत्यक्ष परिचय ही था। अिसीलिअे अुन्होंने ठक्कर साहबको समाजमें भरती करनेके बारेमें अपनी शंका प्रगट की थी।

भारत-सेवक-समाजके नियमानुसार जो भी नया आदमी अुसमें प्रविष्ट होनेके लिअे प्रार्थनापत्र देता, अुसका विचार समाजकी व्यवस्थापक समिति (कौंसिल) में होता था। और यह अपेक्षा रखी जाती थी कि अुस समय तमाम सदस्य अुपस्थित रहें। श्रीनिवास शास्त्री भी अुस दिन मौजूद रहे होते। परन्तु कोअी अनिवार्य कार्य होनेसे वे न आ सके, अिसलिअे पत्र लिखकर अुन्होंने अपनी राय गोखलेजीको भेज दी। अुसमें, जैसा अूपर बताया गया है, ठक्करको अितनी बड़ी अुम्रमें दाखिल करनेके विषयमें शंका और भय व्यक्त किये गये थे। परन्तु मनुष्य-परीक्षाके अुत्तम निष्णात गोखलेजीको ठक्कर साहबकी योग्यताके बारेमें जरा भी शंका नहीं थी। अुन्होंने अिनका तेज अच्छी तरह परख लिया था। अिसलिअे शंका और भयका निराकरण करनेवाला अेक पत्र अुन्होंने शास्त्रीजीको लिखा। अुसमें थोड़ेसे शब्दोंमें यह बता दिया कि ठक्कर किस मिट्टीके बने हुअे आदमी हैं। अुसमें गोखलेजीकी मनुष्यको परखनेकी शक्ति और ठक्कर साहबकी अुच्च कोटिकी गुणवत्ताके अेक साथ दर्शन होते हैं। अिस पत्रमें अुन्होंने लिखा था:

"मि० ठक्करके सम्बन्धमें बताअूं तो वे बम्बअी म्युनिसिपैलिटीके सबसे शक्तिशाली अधिकारियोंमें से अेक हैं । यह बात निश्चित है कि वे अपनी वर्तमान ३६० रुपये मासिककी जगहसे भी कहीं अूंचे पद पर पहुंच सकते हैं। साथ ही हमारी बम्बअीकी कुछ प्रवृत्तियोंमें वे पिछले दो सालसे श्री देवधरके साथ काम करते रहे हैं । और यह सब अतिरिक्त कार्य वे म्युनिसिपल अधिकारीकी हैसियतसे कामका भार ढोते ढोते करते रहे हैं । अिस बातसे आपको सन्तोष होना चाहिये। अिनमें अेक साधारण मनुष्यकी अपेक्षा बहुत अधिक शक्ति है। देवधर अिनके बारेमें बड़ी अूंची राय रखते हैं। ये डॉ० देवके निकटके मित्र हैं और दोनोंने अेक साथ समाजमें शरीक होनेका निर्णय किया है । दोनोंमें से अेकको भी किसी प्रकारका बन्धन नहीं है । और दोनों समाजके कार्यमें ही अपना जीवन पूरा करेंगे और अपने जीवनकार्यकी छाप अंकित करते रहेंगे। यदि अुनकी अिच्छा सुखचैनसे जिन्दगी बितानेकी होती, तो वे अपनी अितनी अच्छी आयवाली और सुख-सुविधा देनेवाली नौकरी छोड़कर हमारे नाममात्रके वेतन पर काम करने आगे न आये होते । अुन्हें समाजमें दाखिल करते ही दोनोंको अलाहाबादमें अकाल-निवारणके कामके सिलसिलेमें भेज देना है । अिससे आपको सन्तोष हो जायगा और आपका यह भय और शंका मिट जायगी कि वे किसी भी प्रकारके सख्त कामसे पीछे हट जायंगे ।

"...मैं आपको दुबारा अितना बता देता हूं कि ठक्करकी श्रेणीके आदमी ही समाजकी प्रतिष्ठा वास्तवमें जमायेंगे । वे शक्तिमान, अुत्साही और लगनवाले ही नहीं हैं, परन्तु सच्चे निःस्वार्थी और अुदात्त स्वभावके आदमी हैं।..."

अुत्तम जौहरी जैसे हीरेकी परख करता है और अुसका गुणदर्शन दूसरोंको कराता है, वैसे ही मनुष्यरूपी हीरेके पारखी गोखलेजी द्वारा ठक्करबापाकी शब्द शब्दमें की गअी यह प्रशंसा कितनी सच्ची थी, यह ठक्कर-बापाके अिसके बादके सैंतीस वर्षोंके सेवामय और कठोर जीवनने बता दिया है।

अन्तमें ठक्कर साहब और डॉ० देव दोनोंने २१ जनवरी, १९१४ को बाकायदा अर्जी दी । अुसी दिन अुनकी अर्जियां मंजूर हो गअीं और सब सदस्योंने अिन दोनोंको समाजमें भरती करनेका निश्चय किया तथा अिसकी जानकारी भी अुन्हें अुसी दिन करा दी गअी।

यह निर्णय होते ही ठक्कर साहबने बम्बअी आकर अपने भाअियोंको समाजमें शामिल होनेके अपने महान निर्णयकी जानकारी देनेवाला विधिवत् पत्र लिखा । यह पत्र अुस समयके अुनके मनोमंथनका, सेवाके लिअे अुनकी

अुत्कट अधीरताका, अुनकी सचाअीका और हृदयकी निर्मलताका द्योतक है। सेवाके क्षेत्रमें बहुतसे मनुष्योंको प्रेरणा देनेवाला वह अैतिहासिक पत्र यह है: (मूल पत्र अंग्रेजीमें है।)

"बम्बअी,
ता० २५-१-'१४

"प्यारे भाअियो,

"यह पत्र लिखते हुअे मुझे दुःख हो रहा है, क्योंकि मैं मानता हूं कि अिस समाचारसे तुम सबको बड़ा दुःख होगा। यह समाचार पहुंचानेका काम किसी अन्य मित्रके हिस्सेमें आया होता तो अच्छा होता। परन्तु यह कड़ा कर्तव्य अन्तमें मुझीको पालन करना पड़ रहा है।

"बम्बअी म्युनिसिपैलिटीकी नौकरीसे मैंने अिस्तीफा दे दिया है और अगली दूसरी तारीखसे नौकरीसे मुक्त होकर 'सर्वेन्ट्स ऑफ अिंडिया सोसायटी' में शामिल हो जाअूंगा। अिस सम्बन्धमें मैंने किसीकी सलाह नहीं ली। मैंने केवल अपने अन्तरकी आवाजकी सलाहके अनुसार अपनी अंतरात्माकी आज्ञाका पालन करके यह कदम अुठाया है। शायद अिसमें मैं भूल कर रहा होअूंगा, परन्तु वह भूल भी मेरे अन्तरकी आवाजकी ही भूल होगी। कुछ भी हो, परन्तु अिस आवाजकी मैं अब ज्यादा अवहेलना नहीं कर सकता।

"अपनी नौकरीके दौरानमें मुझे अपने मातहत काम करनेवाले लोगोंके साथ अपार मुहब्बत हो गअी है। अितना ही नहीं, मेरी सड़कें भी निर्जीव होनेके बावजूद मेरे स्नेहकी पात्र बन गअी हैं। मेरे आप्तजनोंकी अपेक्षा मुझे अपने अिन आदमियों और सड़कोंसे जुदा होते अधिक दुःख हो रहा है। जैसा मेरे अेक सह-कर्मचारीने कल कहा, अैसा लग रहा है मानों मैं अपने अधीनस्थ सैकड़ों मनुष्यों और मजदूरोंका कोअी अपराध कर रहा होअूं। अैसा लग रहा है मानो मुझ पर ममता बरसाने वाले और मुझे सदा मीठी दुआअें देनेवाले अिन हजारों आदमियोंको निराधार बनाकर मैं चला जा रहा हूं। किसीने यह भी कहा था कि नौकरीके दिनोंमें मैं अपने दर्जे और प्रतिष्ठाके आधार पर जनहितके जो काम कर सकता हूं, वे नौकरी छोड़नेके बाद बिलकुल नहीं कर सकूंगा।

"यह सब होते हुअे भी मैं निश्चयपूर्वक मानने लगा हूं कि भारतको आज समग्र जीवन अर्पण कर देनेवाले सेवकोंकी जरूरत है; फुरसत या सुविधासे काम करनेवालोंकी नहीं। और जब तक आजीवन कार्य करनेवाले

भारतको नहीं मिलेंगे, तब तक हमारी कोअी प्रगति नहीं हो सकेगी। सच्चे काम करनेवालोंके लिअे रुपयेके तो भंडार भरे हैं। गोखलेजी जैसोंके चरणोंमें तो हजारों और लाखों रुपयेका ढेर लगता है। अुन्हें सच्चे काम करनेवाले नहीं मिलते, अिसलिअे सब कुछ छोड़कर अिस ध्येयको स्वीकार करनेमें यदि मैं भूल भी कर रहा होअूं, तो भी वह भूल शुभ अिच्छाओंसे और अीमानदारीके साथ कर रहा हूं।

"तुम्हारा मुझ पर कुछ लेना हो तो समय पर बता देना, क्योंकि मैं अब अंतिम बार सबके साथ अपना हिसाब कर लेना चाहता हूं। अब तक जिन जिन संस्थाओं अथवा व्यक्तियोंको सहायता देकर अुपयोगी होनेका मुझे सौभाग्य मिला, वह आजसे खत्म हो जाता है, यह तो बिना कहे ही समझ लिया जायेगा।

"अब मेरी अन्तर्व्यथाका अन्त हो रहा है। जीवनमें सभी वियोग दुःखदायी होते हैं, परन्तु मैं तुम सबको अुम्दा काम करनेके लिअे छोड़कर जा रहा हूं और समझता हूं कि मुझे तुम सबके शुभाशीष प्राप्त हैं।

तुम्हारा भाअी
अमृतलाल"

६ फरवरी १९१४ को दीक्षा देनेकी विधि हुअी। भारत सेवक समाजके आद्य संस्थापक श्री गोपालकृष्ण गोखलेजीने श्री अमृतलाल ठक्कर और डॉ० हरि श्रीकृष्ण देवको गंभीर वातावरणके बीच नियत की हुअी नीचे लिखी सात प्रतिज्ञाअें लिवाअीं:

१. मेरे विचारोंमें देशका सदा प्रथम स्थान रहेगा। और मुझमें जो कुछ अुत्तम होगा वह मैं देशकी सेवामें ही अर्पण करूंगा।

२. देशकी सेवा करनेमें मैं किसी भी प्रकारका निजी लाभ अुठानेकी कोशिश नहीं करूंगा।

३. मैं तमाम भारतवासियोंको अपने भाअी मानूंगा। धर्म या जातिका भेदभाव रखे बिना सबकी प्रगतिके लिअे मैं काम करूंगा।

४. मेरे लिअे और मेरा कुटुम्ब हो तो अुसके लिअे भारत सेवक समाज योगक्षेमकी जो व्यवस्था करेगा या जो वेतन निश्चित करेगा अुसीमें मैं सन्तुष्ट रहूंगा। अपने लिअे रुपया कमानेमें अपनी जरा भी शक्ति नहीं लगाअूंगा।

५. मैं पवित्र व्यक्तिगत जीवन बिताअूंगा।

६. मैं किसीके साथ भी निजी झगड़े या टंटे-फिसादमें नहीं पडूंगा।

७. भारत सेवक समाजके ध्येयको मैं हमेशा अपने ध्यानमें रखूंगा और पूरी लगनके साथ अिस संस्थाके हितकी चिन्ता करूंगा। अुसके कार्यकी प्रगतिके लिअे करने योग्य सभी कुछ करूंगा। मैं भारत सेवक समाजके अुद्देश्य और हेतुके तथा ध्येय और राजनीतिके विरुद्ध अथवा अुनके साथ असंगत कोअी भी काम नहीं करूंगा।

अिस प्रकार अमृतलाल ठक्करने गोखलेजीके हाथों विधिपूर्वक दीक्षा ली और अुस दिनसे वे बम्बअीका अपने रहनेका मकान छोड़ कर सोसायटीके मकानमें रहने चले गये।

११

सेवाजीवनका प्रारम्भ

भारत सेवक समाजमें शरीक होनेके बाद ठक्कर साहब प्रथम पांच वर्ष बम्बअीमें ही रहे और देवधर दादाके मातहत अुन्होंने सेवाकी तालीम पाअी। बीच बीचमें अकाल और फुटकर कामकाजके लिअे वे महीने दो महीने अथवा चार छः मास प्रवास कर आते, परन्तु वह काम पूरा होते ही बम्बअी वापस आ जाते।

समाजमें शामिल होनेके बाद तुरन्त ही अुन्हें युक्तप्रान्त (वर्तमान अुत्तरप्रदेश)में अकाल-निवारणके कामके लिअे भेजा गया। अुस प्रान्तमें मथुरा और वृन्दावन जिलोंमें अतिवृष्टिके कारण घासचारेका अकाल पड़ गया था। वहां जाकर ठक्कर साहबने कष्टनिवारणका कार्य व्यवस्थित ढंगसे किया। श्री ठक्कर साहबके अलावा समाजके अेक और सेवक श्री कृष्णदास चितलियाको भी भेजा गया था। परन्तु अुन्हें अिस प्रकारके कामका कोअी अनुभव नहीं था। ठक्कर साहबको भी अकाल-निवारणके कामका विशेष सीधा अनुभव तो नहीं था, परन्तु अुनके पिता यह काम करते थे जिसकी प्रेरणा और संस्कार अुनके हृदयमें जमे हुअे थे। अिसके अतिरिक्त पोरबन्दरमें जब अिंजीनियरका काम करते थे तब छप्पनके अकालके समय नये बंदरगाहके पास बांध बनानेका काम पोरबन्दर राज्यने अुन्हें सौंपा था। अुस समय वे अकाल-पीड़ितोंके काफी संसर्गमें आये थे और अुनके साथ कैसे काम किया जाय, अिसका प्रत्यक्ष पाठ अुन्हें मिला था। अिसलिअे अुन्हें अैसे कामका प्रबन्ध करनेमें कोअी मुश्किल नहीं हुअी। मानो यह कला वे विरासतमें ही

लेकर आये हों, अिस तरह सहज ढंगसे अुन्होंने अिस कामको हाथमें लिया और आसानीसे पूरा किया।

अुनके अिस प्रथम अकाल-निवारण कार्य और अुनकी पद्धतिके सम्बन्धमें श्री चितलिया लिखते हैं:

"१९१४ में गोकुल-मथुरामें घासचारेका अकाल पड़ा, तब कष्टनिवारण कार्य करनेके लिअे मेरा वहां जाना हुआ। परन्तु अिस किस्मका काम मेरे लिअे बिलकुल नया ही था। फिर भी अिस मामलेमें ठक्करबापा मेरे मार्गदर्शक बने। हमसे काम लेनेका अुनका ढंग मुझे बहुत ही आनन्ददायी मालूम हुआ। व्यवस्थित ढंगसे और पद्धतिपूर्वक कैसे काम किया जाय और किफायत कैसे रखी जाय, यह सब अुन्होंने मुझे प्रत्यक्ष पाठ द्वारा सिखाया, यद्यपि यह सब शुरूमें मेरे कोमल स्वभावको बहुत कठोर मालूम होता था।"

भारत सेवक समाजके अेक जिम्मेदार सदस्यके रूपमें ठक्कर साहबका अकाल-निवारणका यह सबसे पहला काम था। अिसके बाद अुनके हाथों अकाल-निवारणके जो अनेक काम होनेवाले थे, अुनका यह प्रथम अंक ही था। धीरे-धीरे अिस कार्यमें वे अितने निष्णात बन गये कि हिन्दुस्तानमें अिसके बादके छत्तीस वर्षोंमें शायद ही अैसा कोअी अकाल पड़ा होगा जहां ठक्कर साहब कष्टनिवारण-कार्यके लिअे न पहुंचे हों।

मथुराका काम पूरा करके वे बम्बअी लौट आये और देवधर दादाके मातहत काम करने लगे। अिसमें सबसे पहला काम बम्बअीकी म्युनिसिपैलिटीके भंगी और ढेढ़ लोगोंकी ऋणमुक्ति और अुन्हें दूसरी कुछ राहत दिलवानेका था।

ठक्कर साहब बम्बअीकी म्युनिसिपैलिटीमें नौकरी करते थे तभीसे भंगियों और ढेढ़ भाअियोंकी दुर्दशा वे जानते थे। अिसके अलावा, अुस पद पर रहते हुअे वे पहले अुनकी सेवा भी कर चुके थे, अिसलिअे अुनमें से कुछ भाअी, जो थोड़े पढ़े-लिखे थे, ठक्कर साहबके निकट परिचयमें आये थे। और अुनके द्वारा ये अछूत भाअियोंके सुख-दुःख, अुनकी स्थिति और अुनके प्रश्नों वगैरासे भी परिचित थे। अिसलिअे भारत सेवक समाजमें आनेके बाद ठक्कर साहब देवधर दादाकी ऋणमुक्तिकी योजनाको सफल बनाने और अुसके लिअे सहकारी समितियां स्थापित करनेमें बड़े सहायक सिद्ध हुअे। भंगियोंकी स्थितिके तथ्य अिकट्ठे करनेमें, अुनके कर्जके आंकड़े जुटानेमें, अुनमें कौन कौन कितनी रकमके देनदार हैं, कौन लेनदार हैं, मूल रकम कितनी थी और ब्याज कितना मांगते हैं, वगैरा ब्यौरा प्राप्त करनेमें ठक्कर साहबने खूब मेहनत अुठाअी।

साथ ही अिस ऋणमुक्ति और सहकारी समितियोंका संचालन करते-करते अुन्हें अेक और प्रश्न हाथमें लेना पड़ा और वह था रिश्वतखोरीकी बुराअीको मिटानेका। अुन्होंने देखा कि अधिकांश अछूत भाअियोंके कर्जकी जड़में यह रिश्वतखोरी ही है। भंगियोंको पंद्रह-सोलह रुपयेकी म्युनिसिपैलिटीकी नौकरी प्राप्त करनेके लिअे अपने अूपरके अफसरोंको पचास-साठ या सत्तर रुपये भेंट देनी पड़ती है और अितनी रकम देनेके लिअे पठानसे भारी दर पर रुपया ब्याजसे लेना पड़ता है, यह बात ठक्कर साहब म्युनिसिपैलिटीमें थे तभीसे जानते थे। यह बुराअी अुन्हें बहुत समयसे खटक रही थी। वे जानते थे कि जब तक यह बुराअी नहीं मिट जाती, तब तक ऋणमुक्तिकी योजना भी पूरी सफल नहीं हो सकती। अिसलिअे सहकारी समितियोंके साथ ही साथ भेंट-पूजाकी प्रथाको निर्मूल करनेकी हलचल भी अुन्होंने शुरू कर दी।

अुस समय म्युनिसिपैलिटीके स्वास्थ्य-विभागके अफसर मि० टर्नर नामक अेक अंग्रेज सज्जन थे। अुन्होंने बरसों अिस पद पर काम किया था। ठक्करबापाके कहनेके अनुसार कुल मिलाकर वे अच्छे आदमी थे। वे जानते थे कि रिश्वतखोरीकी गंदगी अुनके विभागमें मौजूद है। परन्तु बहुत वर्षोंसे चले आ रहे रिवाजको बन्द करनेकी शक्ति या हिम्मत अुनमें नहीं थी। ठक्कर साहब अुनके पास गये और अुन्हें यह बात समझाअी कि म्युनिसिपैलिटीमें कितना भ्रष्टाचार फैला हुआ है और अेक अेक भंगीको नौकरी हासिल करनेके लिअे जरूरी दस्तूर देनेको पठान या साहूकारसे भारी ब्याज पर साठ-सत्तर रुपये लेने पड़ते हैं और किस तरह वे गले तक कर्जमें डूब जाते हैं। अिस गन्दगीको मिटानेके लिअे रिश्वत खानेवाले म्युनिसिपल अफसरोंके साथ सख्तीसे काम लेनेको कहा। टर्नर साहबने अुनकी बात सहानुभूतिपूर्वक सुनी और अुत्तर दिया कि "आपकी बात शायद सही होगी। परन्तु अितना कहनेसे ही बात पूरी नहीं हो जाती कि म्युनिसिपैलिटीमें अिस प्रकारकी रिश्वतखोरी चलती है। आप मेरे सामने निश्चित प्रमाणों सहित कुछ मामले अिकट्ठे करके पेश करें, तो मैं अिस मामलेमें आगे बढ़ सकता हूं और अिसका कोअी अिलाज कर सकता हूं।" ठक्कर साहबने अुनसे कहा कि, "आप अपना अेक खास आदमी मुझे दीजिये। अुसके साथ रहकर मैं अमुक अफसरने अमुक भंगीसे दस्तूरके अितने रुपये लिये हैं, अिस तरहके बयान अिकट्ठे कर दूंगा।" यह बात अुन्होंने स्वीकार तो की, परन्तु अिसमें बहुत अुत्साह नहीं दिखाया। किन्तु ठक्कर साहबने तो अपना काम जारी कर दिया। वे पहलेकी म्युनिसिपैलिटीकी नौकरीके वक्तसे जिन जिन

लोगोंको जानते थे और जिनके गाढ़ सम्पर्कमें आये थे अुन कूकाभाअी, नारायणभाअी, हीराभाअी और सामन्त मास्टर आदि शिक्षित अछूत भाअियोंसे मिले और अुनकी मददसे भंगी और ढेढ़ लोगोंके साथ रात-दिन माथापच्ची करके अुन्हें मुश्किलसे समझाकर लगभग तीस बयान अुन्होंने अिकट्ठे किये। अुनमें म्युनिसिपैलिटीके अिन्स्पेक्टर मि० हीगिन्सने अितने अितने नौकरोंसे अमुक अमुक रकमें रिश्वतमें ली हैं, यह अिकरार लिखवाकर मुहरबन्द करा लिये और अुनकी अेक पूरी किताब बनाकर डॉ० टर्नरके सामने पेश कर दी।

डॉ० टर्नर तो यह देखकर चौंक उठे। अितनी तेजीसे और अितना ठोस काम ठक्कर साहब थोड़े ही समयमें अुनके सामने पेश कर सकेंगे, अिसका अुन्हें स्वप्नमें भी खयाल नहीं था। अिसलिअे अचानक मय सबूतके ये तथ्य और बयान देखकर वे घबराये। जैसा बापाने अिस घटनाका वर्णन करते हुअे अेक जगह लिखा है, टर्नरने आंखें बदलकर गुनाह साबित करने-वाले असल मसालेकी किताब ही अुनके पाससे छीन ली। बादमें अुन्हें खानगी तौर पर कहा कि, "मि० ठक्कर आप अपना कोअी दूसरा काम हो तो कीजिये न। अिसमें क्यों सिरपच्ची करते हैं? क्योंकि अैसा तो चलता ही रहेगा। आप कितना ही प्रयत्न कीजिये, तो भी यह रुकेगा नहीं। आपको पता नहीं, अिन भंगियोंको अिस तरह रिश्वत देनेकी आदत ही पड़ गअी है। और अच्छा वेतन मिलनेसे वे अिस प्रकार रिश्वत दे सकते हैं। अिसलिअे यह रिवाज अेक दूसरेको अितना पसन्द आ गया है कि आप या मैं चाहे कितनी ही कोशिश करें तो भी अिसे मिटा नहीं सकेंगे।"

ठक्कर साहब तो टर्नरका यह धृष्टतापूर्ण व्यवहार देखकर स्तब्ध ही हो गये। अुन्हें टर्नर पर गुस्सा भी आया। थोड़ी गरमागरम बहस भी हुअी। परंतु अुसका कोअी परिणाम नहीं हुआ। गुनाह साबित करनेवाला असल मसाला हाथसे चला गया था, अिसलिअे ठक्कर साहब लाचार हो गये। फिर भी वे बिलकुल निराश नहीं हुअे। अुन्होंने अिस दिशामें प्रयत्न जारी रखा और भंगियोंको स्वयं ही अिस प्रकार रिश्वत न देनेकी बात समझाने लगे। अिसमें अुन्हें तत्काल खास सफलता नहीं मिली। अिस बारेमें अपना अनुभव बताते हुअे वे अेक जगह लिखते हैं:

"भंगियोंको मैं अुपदेश देता कि तुम लोग अपने अूपरके अफसरको घूस न दो। अुन्हें नौकरीकी जरूरत होगी और भरती करनी होगी, तब रिश्वत देनेवाला कोअी न होगा तो भी मजबूरन् तुम्हींमें से किसीको चुनना पड़ेगा। और अिस प्रकार घूस देनेसे अिस समय जितने लोगोंको नौकरी मिलती है, अुतनोंको घूस दिये बिना ही नौकरी मिल जायगी। परंतु

अैसा सूखा अुपदेश अुन्हें क्यों पसन्द आने लगा? बेरोजगार होनेके कारण अुन्हें तो तुरंत नौकरी चाहिये थी। अिसलिअे रिश्वत दिये बिना अुनकी बारी आ जाय और अुन्हें बुलाया जाय, तब तक प्रतीक्षा करनेका धीरज या समझ अुनमें नहीं थी। अुन्हें हर महीने पंद्रह-सत्रह रुपये मिलें तो ही अुनकी हांडी चूल्हे पर चढ़ सकती थी। अिसलिअे किसी भी अुपायसे जल्दीसे जल्दी नौकरी मिले, यही अुनका अुद्देश्य था और अिसीके लिअे अितनी स्पर्धा होती थी। अिसलिअे मेरे प्रयत्नका तत्काल कोअी परिणाम नहीं निकला।"

अितने पर भी रिश्वतके विरुद्ध अुन्होंने अपना आन्दोलन बिलकुल छोड़ नहीं दिया। जब जब अिसके लिअे थोड़ा भी अनुकूल अवसर मिलता, तभी वे अिस प्रश्नको बार बार अुठाते। थोड़े वर्षोंके बाद जब विट्ठलभाअी पटेल बम्बअी म्युनिसिपैलिटीके अध्यक्ष नियुक्त हुअे, तब फिर ठक्कर साहबने अिस प्रश्नके लिअे अनुकूल अवसर देखा। विट्ठलभाअी पटेलके पास अिन्होंने शिक्षा-संबंधी ममौदेके सिलसिलेमें मंत्रीका काम किया था, अिसलिअे वे अिन्हें जानते थे। अिसलिअे फिर अेक बार रिश्वतके मामले अिकट्ठे करके अुन्होंने सब तथ्य अुनके और म्युनिसिपैलिटीके तत्कालीन कमिश्नर मि० क्लेटनके सामने पेश किये। अिस बार अभियुक्त सब-अिंस्पेक्टर हीगिन्सको बुलाया गया और ठक्कर साहबके रूबरू अुससे पूछताछ करके सफाअी मांगी गअी। अुस समय अुसने बहानेबाजियां कीं, तो अुसे चेतावनी दे दी गअी। अितना होने पर भी रिश्वतकी बुराअी तो बनी ही रही। और अुसे रोकनेमें ठक्कर साहबको विशेष सफलता नहीं मिली। परंतु अुन्होंने निराश या नाअुम्मीद न होकर अिस दिशामें अुनसे जितना हो सका अुतना किया। अिस प्रयत्नमें ही अुन्होंने संतोष माना।

समाजमें भरती होनेके बाद ठक्कर साहबने जैसे देवधर दादाके अधीन तालीम पाअी, वैसे ही गोखलेजी जैसे महापुरुषकी छत्रछायामें रहकर अुनके सहवासका लाभ अुठाने और अुनके अधीन कुछ समय शिक्षा प्राप्त करनेकी भी अुनकी अभिलाषा थी। परंतु अुनकी यह अभिलाषा अधूरी ही रही, क्योंकि समाजमें प्रविष्ट होनेके दूसरे ही साल गोखलेजीका अवसान हो गया। गांधीजी जब दक्षिण अफ्रीकासे भारत आये तब गोखलेजीने बम्बअीमें अेक विशेष कार्यक्रम रखा था। भारत सेवक समाजके सब सदस्य गांधीजीके समागममें आयें और गांधीजी भी अुनके साथ प्रत्यक्ष परिचय बढ़ायें, अिस हेतुसे यह कार्यक्रम रखा गया था। और गांधीजी जब कलकत्ते होकर बम्बअी आये तब अुनका स्वागत करनेके लिअे अुस समारोहमें अुपस्थित रहनेको गोखलेजी रोगशय्यासे अुठकर भी बम्बअी दौड़ आये थे। अिस समय ठक्कर

साहबका गोखलेजीके साथ थोड़ा संसर्ग हुआ; कभी कभी पूना आते जाते अुनसे भेंट होने पर थोड़ा संपर्क आता। अिसके बाद अेक बार श्री ठक्कर समाजके कामकाजके सिलसिलेमें अलाहाबाद और बनारस गये थे, तभी गोखलेजीका देहावसान हो गया। अिसलिअे ठक्कर साहबको अुनके समागमका विशेष लाभ नहीं मिला। निधनके समाचार सुनकर वे पूना दौड़ गये और गोखलेजीकी स्मशानयात्रामें भी शामिल हुअे। अुस साल ठक्कर साहबने अहमदाबादके मजदूर मुहल्लोंमें मजदूर बालकोंके लिअे पाठशालाअें भी शुरू कराअी थीं।

१९१६ में कच्छमें अकाल पड़ा, तब वहां भी ठक्कर साहबने पहुंचकर कष्ट-निवारणका काम किया। अुसके बादके वर्षमें अुन्होंने देवधर दादा तथा श्री जोशीके साथ रहकर खेड़ा जिलेमें लगान-जांच-समितिके काममें मदद दी। अिसके सिवाय बम्बअी कौंसिलके गैरसरकारी सदस्योंके मंडलके वे मंत्री बने और मंत्रीके रूपमें अुन्होंने अपने फर्ज अदा किये। अिस पद पर रहकर अुन्होंने गुजरात और बंबअीमें शिक्षा संबंधी और सामाजिक संस्थाओंका निकटसे निरीक्षण करके अिन प्रश्नोंका अध्ययन किया। यह अनुभव और ज्ञान अिसके बादके वर्षोंमें अुनके लिअे काफी अुपयोगी साबित हुअे।

१९१५ में श्री विट्ठलभाअी पटेलने जब बम्बअीकी धारासभामें अनिवार्य शिक्षाका बिल पेश किया, तब बंबअी प्रान्तके जिलों और तालुकोंमें शिक्षाकी तत्कालीन स्थितिकी जांच करनेमें, अुस संबंधके आंकड़े और तथ्य अिकट्ठे करनेमें तथा बिलकी पूर्वभूमिका तैयार कर देनेमें श्री ठक्कर साहबने खूब मेहनत की। अुस समय अुन्होंने जो प्रवास किया था अुसकी पूरी कल्पना आजकलके मोटर गाड़ी और हवाअीजहाजके जमानेमें शायद ही हो सकती है। अुस समय जिलेके भीतरी भागोंमें दौरा करनेके लिअे गाड़ी, अिक्का या शिकरम ही मिलती थी। अैसी सवारीमें दिन भर बैठकर सफर करना पड़ता और अेक गांवमें पहुंचकर वहांके तथ्य अिकट्ठे करके दूसरे गांव जाना पड़ता। रास्ते पहाड़ी और अूबड़-खाबड़ थे। अिसलिअे दिनभर बैठनेसे शरीर अकड़ जाता, हड्डी-पसली हिल जाती और थकान व अुकताहट खूब बढ़ जाती। फिर भी ठक्कर साहबको तो काममें अितना रस था कि अिस प्रकारकी किसी भी तकलीफकी वे जरा भी परवाह नहीं करते थे और निश्चित कार्यक्रमके अनुसार अपना काम करते रहते थे।

अैसी अेक यात्रामें ठक्कर साहबके भतीजे श्री कपिलभाअी ठक्कर साथ थे। अुन्होंने अिस प्रवासके अेक-दो प्रसंग लिखे हैं जिनसे अिसकी कुछ कल्पना होती है कि अुन दिनों ठक्कर साहब कितना परिश्रम करते थे और भूख,

नींद और थकावटकी परवाह किये बिना हाथमें लिया हुआ काम पूरा करनेकी कितनी लगन और सावधानी रखते थे।

वे लिखते हैं:

"अपनी बाल्यावस्थासे ही मैं बड़े काका (ताअूजी)के जीवनकी कुछ घटनाअें सुनता और देखता रहा हूं। अुनमें से अुनके साथ अहमदाबाद जिलेके कुछ देहातोंका प्रवास मुझे खूब याद रहेगा।

"... श्री विट्ठलभाअी पटेलके शिक्षा-संबंधी बिलके लिअे कुछ आवश्यक आंकड़े प्राप्त करनेके लिअे राणपुर, धंधुका और धोलका जिलोंकी प्राथमिक पाठशालाओंके निरीक्षणका काम अुन्हें सौंपा गया था। बैलगाड़ीके रास्तेकी यह २०-२५ दिनकी यात्रा थी। भावनगर आकर वे जब राणपुरके लिअे रवाना हुअे, तब मेरी कालेजकी छुट्टियां थीं, अिसलिअे मुझे साथ ले लिया। राणपुरसे धोलका तक बैलगाड़ीमें दौरा करना था और मार्गमें पाठ-शालाओंवाले गांवोंकी मुलाकात लेनी थी। अिंजीनियरीके दिनोंमें ही अिनकी कार्यनियमनकी शक्तिका विकास हो गया था। और भारत सेवक समाजके सदस्यके नाते अुसके बादके अितने वर्षोंमें अुनके कार्यनियमनमें शायद ही कोअी कमी आअी होगी। अेक दिनकी या अेक मासकी यात्राका जो कार्यक्रम बन गया अुसे पूरा करना ही होता था। रेलवेसे तीस-चालीस या पचास मील दूरके गांवोंमें मोटरमें जाना होता तो भी अुनके नियत किये हुअे घंटों और दिनोंमें कोअी फेरबदल नहीं करा सकता था। सवेरे अुस दिन करनेका काम तय हो जाता और रातको अुसका ब्यौरा अुनकी डायरीमें लिख लिया जाता था।

"हमारे सफरके दौरानमें अेक रातको हम बारह बजे अेक गांवमें पहुंचे। गाड़ी पाठशालाके मुहल्लेमें खड़ी हुअी। पाठशालाके पास अपने मकानमें सोये हुअे शिक्षकका दरवाजा खटखटाया गया। भरी नींदमें सोये हुअे शिक्षक यह समझकर कि कोअी अिंस्पेक्टर अचानक पाठशालाका निरीक्षण करने आये हैं चौंक पड़े और गाड़ीके पास आये। ठक्कर बापाने अपना परिचय दिया और आनेका कारण समझाकर कहा:

"'विट्ठलभाअी पटेलके अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षाके संबंधमें जांचके लिअे निकला हूं। और मुझे आपकी पाठशालाके कुछ आंकड़े चाहिये। दीजियेगा न?'

शिक्षकने कहा, 'अभी तो आप आराम कीजिये, सुबह मैं आपको जरूरी ब्यौरा दे दूंगा।'

बापाने कहा, 'मैं आग्रह तो नहीं कर सकता, परंतु यदि आप यह काम अभी निपटा दें तो हमारा थोड़ासा समय बच जाय।'

"मास्टरने टूटी चिमनीवाला लैम्प जलाया। अेक दो घंटेमें आंकड़े वगैरा देखने-जांचनेका काम निपट गया। अुस वक्त रातके अेक या दो बजे होंगे। बापाने मास्तर साहबसे कहा: 'मास्टर साहब, हमने खाना नहीं खाया है। अभी भोजनकी कोअी व्यवस्था हो सकती है?'

"मास्टरने अुसी समय चूल्हा सुलगाया। दूध तो अुस वक्त मिल नहीं सकता था। खिचड़ी और साग तैयार हुअे। तीन बजे मेहमानोंने भोजन किया और मास्टर साहबको दक्षिणा देनेकी विधि पूरी करके तड़के ही चार बजे गाड़ी जुतवाकर हम रास्ते लगे।"

"धोलेरामें हमारा मुकाम चार-पांच दिन रहा। वहां केन्द्र रखकर आसपासके गांवोंमें रोज जानेका निश्चय किया। खानेके समय धोलेरा आ पहुंचते और फिर दोपहर बाद अेकाध जगह हो आते। खानेके लिअे किसी स्थान पर कितना ही आग्रह होता तो भी धोलेरामें जिस स्नेहीके घर डेरा लगाया था अुन्हीके यहां खानेके क्रममें कोअी परिवर्तन न किया जाता। डेढ़ दो मील पर भड़ियाद गांवके किसान और प्रजाजन सुखी और सम्पन्न थे। अुस गांवके विविध स्थान और पाठशाला आदि देखनेमें बारह बज गये। गांवके लोगोंने खानेके लिअे बहुत ही आग्रह किया। जवाबमें अिन्होंने धोलेरा जानेके लिअे अेक गाड़ीकी ही मांग की। और अन्तमें हमने डेढ़ दो बजे धोलेरा आकर भोजन किया।"

अिस प्रकार गुजरातके कुछ जिलोंमें घूम-घूमकर अुन्होंने आंकड़े अिकट्ठे किये, तथ्य प्राप्त किये और अिन ठोस तथ्योंके आधार पर ही प्राथमिक शिक्षाका बिल तैयार किया गया और अन्तमें पास हुआ। अिसके बाद जब बिलने कानूनका रूप ग्रहण किया, तब अुसके अमलके लिअे भी अध्ययनपूर्ण लेख लिखकर बापाने खूब प्रचार किया।

शिक्षाकी स्थितिके संबंधमें अेक लेखमें अुन्होंने कुछ ब्यौरे देकर बताया कि:

"हमारी आम जनताकी वर्तमान शिक्षा-संबंधी स्थिति बड़ी असंतोष-जनक है। १९११ की जनगणनाके आंकड़ोंके अनुसार भारतकी आबादीके केवल ११ प्रतिशत पुरुष और अेक प्रतिशत स्त्रियां ही लिखना-पढ़ना जानती हैं। अुसके बाद दूसरे दस वर्ष बीत गये तो भी अिस दिशामें कोअी विशेष सफलता मिली या प्रगति हुअी हो, अैसा नहीं जान पड़ता। अिस समय अनुमान लगाकर बताअूं तो ८० प्रतिशतसे ज्यादा पुरुष और ९७ प्रतिशतसे

अधिक स्त्रियां अभी तक निरक्षर हैं। अनिवार्य शिक्षाका कानून पास हो गया यह बात सही है, परंतु यह कानून अतिमर्यादित रूप और अति मर्यादित क्षेत्रमें ही लागू किया गया है। १,१०,००० और २२,००० की आबादीवाले केवल दो ही शहरोंमें अिसका अमल हो रहा है। अर्थात् प्रान्तकी सारी आबादीका ०.६७ प्रतिशत भाग ही अिस कानूनसे लाभ अुठानेको आगे आया है।"

अेक अच्छे सरकारी तंत्रके लिअे और साथ ही देशकी प्रगतिके लिअे प्राथमिक शिक्षाकी अनिवार्य आवश्यकता बताते हुअे अुन्होंने लिखा कि, "देशके लिअे और अच्छे राज्यतंत्रके लिअे जैसे सेनाकी जरूरत है, तार और डाककी जरूरत पड़ती है, रेलवे और नहरकी योजनाओंकी आवश्यकता होती है, वैसे ही राष्ट्रव्यापी शिक्षाकी, देशभरमें प्राथमिक शिक्षाकी भी अुतनी ही जरूरत होती है। और जब तक केन्द्रीय खजानेसे और वहांसे न मिले तो अंतमें प्रान्तके खजानेसे प्राथमिक शिक्षाके लिअे रुपयेका बन्दोबस्त न हो, तब तक सार्वत्रिक अनिवार्य शिक्षा अेक सुखद सपना ही बनी रहेगी।"

१२

जमशेदपुरमें मजदूर-कल्याण

गुजरातमें प्राथमिक शिक्षाके बिलका कामकाज पूरा होते ही अेक और बड़े कामका भार श्री ठक्कर साहबके सिर पर आ पड़ा। यह था जमशेदपुरमें मजदूरोंका कल्याण-कार्य।

जमशेदपुरमें टाटा कंपनीकी तरफसे अेक बड़ा लोहेका कारखाना चलता था। यह कारखाना रातदिन चौबीसों घंटे आठ-आठ घंटोंकी अेक अर्थात् तीन पालियोंमें काम करता था। कारखानेमें बुद्धिशाली और केवल श्रमिक मिलकर कुल २५,००० मजदूर काम करते थे। कारखानेमें व्यवस्थापक और निष्णात अमरीका, अिंग्लैण्ड और जर्मनीसे बुलवाये गये थे और दूसरे कारीगर और मजदूर पंजाब, मद्रास, बंगाल, युक्तप्रान्त और मध्यप्रान्तसे आये थे। साथ ही अिस कारखानेमें मजदूरी करनेके लिअे आसपासके जिलोंसे संथाल और कोल जैसी आदिवासी जातियोंकी स्त्रियोंको भी रखा गया था।

१९१४–१८ का प्रथम महायुद्ध समाप्त होनेके बाद लड़ाआी और बरसातकी कमीके कारण खुराक और कपड़ेकी महंगाआी सारे देशमें बहुत ज्यादा बढ़ गआी थी। और मजदूरोंको अपना गुजर चलाना मुश्किल हो रहा

था। अैसे समय टाटा कंपनीके व्यवस्थापकोंने अपने कारखानेमें काम करनेवाले मजदूरोंकी स्थिति आसान करनेके लिअे और अुन्हें खुराक, कपड़े तथा जीवनकी अन्य आवश्यक चीजें अधिक सस्ती मिलें, अिसके लिअे कुछ न कुछ कदम अुठानेका विचार किया और १९१८ के जुलाअी मासमें अिसके लिअे दस लाख रुपयेकी रकम अलग निकाली। कारखानेके गरीब मजदूरोंके लिअे आवश्यक वस्तुओंकी दुकानें खोलने और चलानेके लिअे यह रकम पूंजीके तौर पर काममें लेनेका अुनका विचार था।

टाटा कंपनीके मालिकोंने अिस मामलेमें भारत सेवक समाजसे मदद मांगी और अिस प्रकारकी कोअी योजना संभव है या नहीं तथा अुससे मजदूरोंको राहत पहुंचाअी जा सकती है या नहीं, अिसकी जांच करने और अिस संबंधमें ब्यौरेवार योजना तैयार करके अुसका संचालन करनेके लिअे अेक योग्य, विश्वसनीय और कुशल मनुष्यकी मांग की। भारत सेवक समाजने अिस कामके लिअे ठक्कर साहबको चुना और समाजके आदेशानुसार वे अगस्त १९१८ में जमशेदपुर गये। वहां सारी जांच की और प्रारंभिक विवरण तैयार किया। अुसमें अुन्होंने बताया कि व्यवस्थापक जिस प्रकारकी आशा रखते हैं अुसके अनुसार दस लाखकी पूंजी लगाकर कंपनीकी तरफसे ही दुकानें खोली जायं तो मजदूरोंको आजकी अपेक्षा काफी सस्ते दामोंमें माल मिलेगा। और अिस कठिन समयमें अुन्हें अच्छी राहत मिलेगी। अिसलिअे कंपनीने अिसके अनुसार निश्चय किया और ठक्कर साहबकी सेवाअें देनेके लिअे भारत सेवक समाजके अध्यक्षको पत्र लिखा। अध्यक्षकी मंजूरी मिल गअी। अिसलिअे ठक्कर साहबने तुरंत ही काम शुरू कर दिया।

पुरानी व्यवस्थाके अनुसार जमशेदपुरमें लगभग दर्जन भर थोक मालके बड़े व्यापारी थे। अिन व्यापारियोंके पास पूंजीकी सुविधा अच्छी होनेसे जहां जहांसे संभव होता वहांसे ये माल मंगवाते और अपना अच्छा नफा चढ़ाकर खुरदा व्यापारियोंको बेच देते। खुरदा व्यापारियोंकी संख्या लगभग ६० से ७० तक होगी। ये व्यापारी अपना खुरदा माल मजदूरोंको बेचते। अिस प्रकार मजदूरोंके पास अनाज, कपड़ा, नमक और जीवनकी अन्य आवश्यक वस्तुअें पहुंचनेसे पहले बड़े व्यापारी और छोटे व्यापारी अुन पर अपना नफा चढ़ा लेते थे। टाटा कंपनीका अिरादा अिन बीचके आदमियोंका नफा खतम करके, माल जैसे बने वैसे मजदूरोंको मूल कीमतसे कुछ अधिक दामोंमें मिलनेकी व्यवस्था कर देनेका था। अिसलिअे ठक्कर साहबने मजदूरोंको रोजमर्रा जिन जिन वस्तुओंकी जरूरत पड़ती थी, अुनकी अेक सूची बनाअी। अिसके सिवाय जिन वस्तुओंके बिना काम न चले अुनकी भी

फेहरिस्त बनाअी और लोगोंकी जरूरतोंका साधारण अंदाजा निकालकर जहां जहांसे भी सस्तेसे सस्ता और अच्छा माल मिले वहां वहांसे जांच कराकर माल मंगाना शुरू किया। अिस प्रकार चावल मिदनापुर, बालेश्वर, बांकुड़ा तथा संभलपुर जिलोंसे मंगवाया, गेहूं बिलासपुर जिलेसे, अरहरकी दाल गोर-खपुर जिलेसे, और नमक जो अब तक अदन और पोर्ट सैयदसे आता था कलकत्तेसे मंगवाया। और घी बिलासपुर जिलेसे पंड्रा रोड जंक्शनके रास्ते होकर मंगवाया। मालके अिन मुख्य मुख्य और बड़े बाजारोंमें ठक्कर साहब स्वयं हो आते। बाजारमें अच्छी तरह घूमते फिरते। हरअेक मालकी जात और भावताव वगैराकी पूरी छानबीन करनेके बाद ही किफायतशारीसे सौदा करते। अिस प्रकार सितम्बरमें २५,००० रुपये, अक्तूबरमें १५,०००, नवम्बरमें ३१,००० तथा दिसम्बरमें ६८,०००—कुल मिलाकर चार महीनेमें ही १,३९,००० रुपयेका माल खरीदा और जमशेदपुरमें कंपनीकी तरफसे अपने ही बड़े गोदाम खड़े कर दिये।

अितना अिकट्ठा माल नकद दाम देकर लेनेसे वह तुलनामें काफी सस्ता मिला। अिससे व्यापार करके बड़े व्यापारियोंकी तरह खूब नफा करने या प्रचुर धन कमानेका तो कंपनीका अिरादा था ही नहीं। अिसलिअे अुसने लगाअी हुअी रकम पर ब्याज तक नहीं चढ़ाया। अितना ही नहीं, धंधेका प्रारंभिक खर्च (establishment charges) तथा अन्य फुटकर व्यय मिलाकर मूल कीमत पर कुल पांच प्रति सैकड़ा चढ़ाकर खुरदा व्यापारियोंको माल मुहैया किया गया और अुनसे यह शर्त कर ली गअी कि कंपनीके थोक मालकी कीमत पर वे पांच फीसदीसे ज्यादा नफा न लें।

अिस प्रकार छोटे दुकानदारों तथा खुरदा व्यापारियोंको कंपनीकी बड़ी दुकानोंकी तरफसे अपेक्षाकृत सस्ते दामों माल मुहैया करनेकी व्यवस्था कायम हो जानेसे अेकाध दर्जन जो बड़े व्यापारी थोक मालका व्यापार करते थे, अुनका व्यापार बन्द हो गया और सारी बागडोर ठक्कर साहबके खड़े किये हुअे कंपनीके भंडारोंके हाथमें आ गअी।

अिसी प्रकार दूसरा कदम कपड़ेके भंडार खोलनेका अुठाया गया। बंगाल, बिहार और अुड़ीसामें पिछले कुछ वर्षोंसे कपड़ेकी काफी तंगी पैदा हो गअी थी और लोगोंको जरूरतके लायक भी कपड़ा नहीं मिल रहा था। अुसमें भी मजदूरों और गरीबोंको तो आवश्यक कपड़ा मिलता ही कहांसे? और जो मिलता भी अुसे ड्योढ़े भावों पर खरीदना पड़ता। मजदूरों और गरीबोंके सौभाग्यसे जब ठक्कर साहबने यह व्यवस्था संभाली अुसी समय

देशमें कपड़ेकी मिलोंमें मंदीकी जबरदस्त लहर आअी। अुससे लाभ अुठाकर ठक्कर साहबने भारतकी मिलोंका, खास तौर पर नागपुरकी अेम्प्रेस मिलका, कपड़ा बड़ी मात्रामें — लगभग साठ हजार रुपयेका खरीदा। और कारखानेके मजदूरोंके लिअे कपड़ेकी दुकानें खोल दी गअीं। अिसमें छोटे दुकानदारोंको भी बीचमें नहीं रखा गया। कंपनीकी दुकानें मजदूरोंको सीधा ही कपड़ा बेचतीं। अिसके सिवाय कपड़ा बेचनेवाले ठेलेवालोंको कंपनीके तय किये हुअे भावोंसे कपड़ा बेचनेकी शर्त पर माल दिया जाता था। अिस प्रकार मजदूरोंके लिअे ये दुकानें आशीर्वाद-स्वरूप बन गअीं। अुन्होंने देख लिया कि पहले अुन्हें जो कपड़ा डेढ़ रुपयेमें मिलता था वही अिस नअी व्यवस्थामें अेक रुपयेमें मिलता है। अिस सस्ती कीमतके कारण अेक पुलिसवालेने जो हर साल सिर्फ अेक ही धोती जोड़ा खरीदता था अिस वर्ष दो धोती जोड़े खरीदे। अिसी प्रकार अन्य बहुत लोगोंने किया। कपड़ेकी सब दुकानोंसे रोज लगभग ४०० रुपयेकी बिक्री होने लगी। और ज्यों ज्यों कपड़ा अुठता गया त्यों-त्यों नया माल खरीदा जाता रहा। अेकाध महीनेमें ही कंपनीको २६,००० रुपयेका दूसरा माल मंगवाना पड़ा।

अिस प्रकार मजदूरोंको चावल, दाल, अनाज, कोयला, तेल, कपड़ा, वगैरा जीवनकी आवश्यक वस्तुअें सस्ते दामों देनेका काम बहुत अच्छी तरह जम गया। यह काम करते करते ठक्कर साहबकी सावधान दृष्टि दूसरी कुछ बातोंकी तरफ चली गअी। अुन्होंने देखा कि ब्याजखोर पठान और काबुली लोग अेक हाथमें रुपयेकी थैली और दूसरे हाथमें लाठी लेकर यहां भी पहुंच गये हैं और मजदूरोंको ब्याज पर रुपये अुधार देकर अुनसे थोड़े ही समयमें मूलसे भी दुगुने वसूल कर लेते हैं। अैसे अेकाध दर्जन काबुली लोग अिन गरीब लोगों पर गुलछर्रे अुड़ाते थे। पैसा अुधार देनेके बदलेमें वे अिन गरीब मजदूरोंसे फी रुपया अेकसे दो आने प्रतिमास अर्थात् सालाना ७५ से १५० प्रतिशत ब्याज वसूल करते थे।

काबुली लोगोंकी अिस दिन दहाड़ेकी लूटको बन्द करनेके लिअे ठक्कर साहबने वहां ऋणदाता सहकारी समितियां शुरू कीं। पहले 'अिलेक्ट्रिक रिपेरर्स शॉप' के कामगारोंकी अेक समिति स्थापित की गअी। बादमें घासीस नामक भंगियोंकी और सूरतकी तरफके खलासी मजदूरोंकी समितियां स्थापित की गअीं।

अिसके अलावा समय बीतने पर ठक्कर साहबने अैसी और आठ नौ समितियां भिन्न भिन्न मजदूरोंकी कायम कीं। अिस प्रकार कुल कोअी बारह समितियों द्वारा अुन्होंने कारखानेके मजदूरोंको सूदखोर पठान लोगोंकी शोषण-

नीतिसे बचाया। सबसे पहले तो काबुली लोगोंका जो कुछ लेना था अुसकी जांच करके अुसे तय करवाया। और अैसी सहकारी समितियों द्वारा अुनकी रकमें पूरी पूरी चुकवा दीं और वे रकमें संबंधित मजदूरोंके नाम लिखवा दीं। अुन पर नामको ही ब्याज चढ़ाया जाता। और ये रकमें किस्तोंमें मजदूरोंके वेतनसे वसूल कर ली जातीं। अिस व्यवस्थासे मजदूरोंके कर्ज मिट गये। अुन पर अधिक बोझा नहीं पड़ा और कुछ समय बाद अुनकी स्थिति सुधर गअी।

अिस प्रकार शुरूके छः महीनोंमें ठक्कर साहबने सस्ते भावों पर माल मुहैया करनेवाली दुकानोंको व्यवस्थित किया, मजदूरोंको ब्याजसे छुड़वानेके लिअें समितियां स्थापित कीं और दूसरा कुछ फुटकर कामकाज किया। अितना काम भलीभाँति जम गया तो अुन्होंने बालकोंकी शिक्षा, खेलकूद, चायघर वगैरा मजदूर-कल्याणके दूसरे काम हाथमें लिये। यह सब करनेकी अुनकी कल्पना तो पहलेसे ही थी। परंतु अेक काम पूरा करनेके बाद ही दूसरा काम हाथमें लेनेकी अुनकी पद्धति थी। साथ ही टाटा कंपनीके व्यवस्थापकोंके भी यह बात गले अुतारनी थी। अिसलिअे शुरूमें तो कंपनीके संचालकोंने जो कार्यरेखा अंकित कर दी थी अुसकी मर्यादामें रहकर ही अुन्होंने काम किया।

ये दूसरे कार्य हाथमें लेनेके बारेमें अुन्होंने पांच छः महीने बाद 'टाटा आयर्न और स्टील वर्क्समें सामाजिक कार्य' शीर्षकसे भारत सेवक समाजके मुखपत्र 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया' में जो लेख लिखा था अुसमें कहा :

"मजदूर-कल्याणका यह काम मजदूरोंको सस्ती दरों पर जीवनकी आवश्यक चीजें मुहैया करने अथवा अुन्हें ऋणमुक्तिके मार्ग पर ले जानेमें ही समाप्त नहीं हो जाता। अलबत्ता, अिस समय यहां जो स्थिति है अुसे देखते हुअे कार्यारंभ तो अिन दो चीजोंसे ही करना चाहिये। यहां मेरे बिताये हुअे पांच महीनोंमें पहला महीना प्रारंभिक काममें लगा और दूसरे चार मास दुकानें शुरू करने, अुनके लिअे खरीदारी करने तथा ऋणदाता सहकारी समितियां स्थापित करनेमें लगे। अब दुकानें अच्छी तरह चल रही हैं, अिसलिअे समाज-कल्याणकी दूसरी प्रवृत्तियां, जैसे बच्चों और बड़ी अुम्रके आदमियोंके लिअे खेलकूदके मंडल, बालकोंके लिअे क्रीड़ांगण, मजदूरोंके बच्चोंके लिअे अुनकी अलग अलग मातृभाषाओंमें शिक्षा देनेवाली प्राथमिक शालाअें, पुरुषोंको शराबखानोंकी लतसे छुड़वाकर अिस तरफ खींच लानेके लिअे निर्दोष आनंद-विहारके जलपान-गृह और अिसी तरहके दूसरे कामोंके लिअे ज्यादा वक्त

दिया जा सकेगा। अिन सबसे मजदूरोंकी आर्थिक और नैतिक स्थितिमें स्थायी सुधार होगा, अिस बारेमें मुझे जरा भी शक नहीं है। मैं आशा रखता हूं कि आगेके सात महीनोंमें यह सब काम हाथमें लेनेकी मुझे स्वीकृति दी जायगी। अिस अर्सेमें मैं अधिकांश समय अब यहीं रहना चाहता हूं।"

कंपनीके संचालकोंने ठक्कर साहबको अुनकी अिच्छाके अनुसार काम करनेकी स्वतंत्रता दे दी और अिस अर्सेमें अुन्होंने खेलकूदके क्लब, प्राथमिक शालाअें, बाल-क्रीड़ांगण और जलपान-गृह आदि शुरू किये। अितना ही नहीं, मजदूरोंके रहनेके लिअे काफ़ी हवा और रोशनीवाले सादे मकान बनवानेकी अेक योजना तैयार की और अुसकी मंजूरी लेकर अुस पर अमल भी किया।

१३

पंचमहालके दो अकाल

१९१८-१९ में पंचमहाल जिलेमें अकाल पड़ा। १९१८ के चौमासेमें बरसात बहुत ही थोड़ी हुअी। अिससे अुस वर्ष अनाज और घासचारा दोनोंकी सख्त तंगी पैदा हो गअी। घासके अभावमें ढोर मरने लगे और अनाजके अभावमें गरीब लोग परेशान होने लगे। वैसे भी पंचमहाल जिलेका अिलाका पहाड़ी था। कम वर्षाके कारण वहांकी खेतीका बहुत विकास नहीं हुआ था। अिस पर अकालके सालमें तो सब जगह 'खाअूं खाअूं' मच जाती। जिलेकी आबादीके पौने भागसे भी अधिक भील लोग थे। अिन लाख सवा लाख भीलोंके पास गुजरका कोअी खास साधन नहीं था। जमीनोंका काफी हिस्सा बनियों या बोहरोंके नाम लिखा जा चुका था। अुनके शरीर काफी खुराक न मिलनेसे सूखकर बिलकुल अस्थि-पंजर जैसे बन गये थे। अकालका ज्यादा खराब असर जिलेके पूर्वी अिलाकेकी पट्टी अर्थात् दाहोद-झालोद तालुकोंके गांवों पर पड़ा था।

अिस वर्ष अिस प्रदेशको अकालग्रस्त घोषित करानेके लिअे गुजरातके कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओंने काफी मेहनत अुठाअी थी। अिन्दुलाल याज्ञिकने, जो हालमें ही गांधीजीके संपर्कमें आये थे, अकालजन्य परिस्थितिके बारेमें 'नवजीवन अने सत्य' नामक मासिकमें और दूसरे अखबारोंमें भी लेख लिखकर खूब अूहापोह मचाया था। परंतु शुरूमें अुन्हें अिन प्रयासोंमें सफलता नहीं मिली, क्योंकि पंचमहालमें अुस समय कुछ स्थानीय अफसर स्वार्थवश

यह नहीं चाहते थे कि वहां अकाल घोषित किया जाय। वे अनाज वगैराका खानगी व्यापार करते थे, जिसमें अुन्हें नुकसान होनेकी संभावना थी। अिसलिअे अखबारोंमें आनेवाली बातोंका सच्चा-झूठा खंडन करके वे अपने अूपरके अधिकारियोंकी आंखोंमें धूल झोंकनेकी और अिस प्रकार अिन्दुलाल याज्ञिक जैसे कार्यकर्ताओंके प्रयत्नों पर पानी फेरनेकी कोशिश करने लगे। परंतु ये अफसर अपने अिस काममें अन्त तक सफल नहीं हुअे। क्योंकि पंचमहालकी स्थिति ही दिन-दिन अैसी विकट बनती गअी कि झूठे तथ्यों और बनावटी विवरणोंके आच्छादन द्वारा वे सच्ची परिस्थितिको लम्बे समय तक छिपा कर नहीं रख सके। अुत्तरोत्तर बिगड़ती हुअी परिस्थिति तथा कार्यकर्ताओंके प्रचारकार्य और अुसके कारण बढ़ते हुअे अुग्र लोकमतके कारण अन्तमें सरकारको लगा कि अिस दिशामें कुछ न कुछ कदम अुठाना चाहिये। यद्यपि लोगोंकी मांग और अिच्छाके अनुसार पंचमहालके दाहोद-झालोद तालुकोंको तत्काल अकाल-ग्रस्त प्रदेश अथवा कमीका अिलाका घोषित नहीं किया गया, परंतु अुसके पहले कदमके तौर पर पंचमहालमें सचमुच अकालकी स्थिति पैदा हुअी है या नहीं, अिसकी जांच करनेके लिअे कुछ जगह आजमायशी काम (test works) शुरू कर दिये गये।

अैसे अेक काम पर सुखदेव विश्वनाथ त्रिवेदी नामक अेक ब्राह्मण मिस्त्रीके रूपमें काम करते थे। पंचमहाल जिलेमें सार्वजनिक निर्माण-विभागमें नौकरी करते-करते अुन्होंने दसेक वर्ष निकाल दिये थे। अुनकी अुम्र लगभग चंवालीस वर्षकी थी। स्वभावसे अुग्र होने पर भी अुनका हृदय दयालु था। पंचमहाल जिलेके राजकर्मचारी, साहूकार, जमींदार, शराबवाले, जादू-टोना जाननेवाले ओझे और व्यापारी भोलेभाले भीलोंको कैसे धोखा देते, लूटते, चूसते, अुनकी जमीनें छीन लेते, अुन्हें डरा धमकाकर अुनसे बेगार कराते, और दूसरी तरहसे परेशान करते थे, यह सब अुन्होंने दस सालकी नौकरीमें अच्छी तरह देख लिया था। अिसलिअे भीलोंके प्रति अुनके हृदयमें सहानुभूतिकी भावना तो थी ही। अुस पर अकालके कारण अुनकी हालत और भी खराब होनेके कारण अुनके प्रति श्री त्रिवेदीकी दया-ममता खूब बढ़ गअी। भीलोंकी दुर्दशा देखकर अुनका हृदय भर आता। अिसलिअे वे जिस केन्द्रमें थे वहां पूरी तरह मन लगाकर काम करने लगे और अकाल-ग्रस्त भीलोंकी भरसक सहायता करने लगे। अुनके अिस प्रकारके मानवता-भरे बर्तावके कारण सुखदेवभाअीकी अुनके अफसरोंके साथ अनबन हो गअी और अुसने आगे बढ़कर अैसा रूप धारण किया कि अन्तमें अुन्हें त्यागपत्र देकर अलग होना पड़ा।

अिसकी शुरुआत यों हुअी।

दाहोद तालुकेके अेक गांवमें अेक जगह अैसा आजमायशी काम शुरू किया गया था। वहां लोग छः-छः सात-सात मील पैदल चलकर काम पर आते और शामको काम पूरा करके अुतनी ही दूर चलकर घर जाते। अकाल-कानूनके अनुसार अुन्हें छः सात पैसे रोज मजदूरी चुकाअी जाती थी। ये छः सात पैसे पानेके लिअे भी भील लोग अितनी बड़ी संख्यामें आते कि सबको काम देना असंभव हो जाता। सरकारने अुस समय जो नियम बनाया था, अुसके अनुसार अेक केन्द्रमें केवल ४०० मनुष्योंको ही काम दिया जा सकता था। परंतु अकालकी परिस्थिति अितनी विकट थी कि अेक अेक केन्द्रमें ४०० से कहीं अधिक आदमी आने लगे। जिस क्षेत्रमें सुखदेवभाअी काम करते थे वहां भी निश्चित मर्यादासे अधिक आदमी आते थे। दूसरे केन्द्रोंमें अैसे आदमियोंको काम पर लेते नहीं थे, जब कि सुखदेवभाअी अपने यहां किसीको अिन्कार नहीं करते थे। यह अनुकूलता देखकर अिस केन्द्रमें दूसरे तमाम केन्द्रोंसे ख़ूब ज्यादा आदमी बढ़ गये और बढ़ते बढ़ते वहांका आंकड़ा अन्तमें १,१०० तक पहुंच गया।

तब सुखदेवभाअीने अपने अूपरके अफसरको यह हाल बताकर अुससे अेक और कारकूनकी मांग की। अुन्होंने कहा, "४०० के बजाय १,१०० तक संख्या बढ़ गअी है। अब अकेलेसे काम नहीं संभाला जा सकता। अिसलिअे मुझे अेक और आदमी मददगारके तौर पर दीजिये।"

अफसरने कहा, "तुम अितने ज्यादा आदमी भरती क्यों करते हो? दूसरा कारकून नहीं मिलेगा। ज्यादा आदमियोंको कम कर डालो।"

सुखदेवभाअीने जवाब दिया, "मैं अुन्हें बुलाने अुनके घर नहीं जाता। वे बेचारे निराधार लोग अपने पेटके लिअे मीलों लम्बा रास्ता तय करके आते हैं। अुन्हें मैं कैसे अिन्कार करूं?"

अफसर कहने लगा, "क्यों नहीं? अिन्कार तो करना ही चाहिये। नियमकी मर्यादामें रहकर जितने आदमी आ जायं अुन्हें लिया जाय। बाकीको साफ अिन्कार कर देना चाहिये।"

अिस घटनाके बाद किसी न किसी मुद्दे पर झगड़ा होता ही रहता। सुखदेवभाअीको अफसरोंकी मनमानी. तेज-मिजाजी, स्वार्थपरायणता और अकाल-पीड़ितोंके प्रति किया जानेवाला दुर्व्यवहार खटकता था। अकाल-कानूनकी सूचनासे तीस फी सदी अधिक काम ये अकाल-पीड़ित लोग करते, तो भी जरा सी देर होने पर अफसर खुद अुन पर जुर्माना कर देता अथवा मात-

हतोंको जुर्माना करनेकी हिदायत करता। परंतु सुखदेवभाओको अैसा करनेमें अन्याय मालूम होता था। अिसलिअे वे जुर्माना नहीं करते। छोटी बड़ी किसी भी बातमें वे झुकते नहीं थे। अिसलिअे दोनोंके बीच समय-समय पर झड़प होती रहती। सुखदेवभाओ पर अुस समय गांधीजीके लेखोंका प्रभाव हो गया था। अुन्हें सरकारी नौकरीसे घृणा हो गओ थी। अिसलिअे अुन्हें अधिक समय नौकरी करनेमें अपमान प्रतीत हुआ। अतः अेक दिन अफसरके साथ तेजीसे बोलचाल करके नौकरीसे अिस्तीफा दे दिया। अफसरको तो यही चाहिये था। अिसलिअे अुसने तुरंत ही त्यागपत्र स्वीकार कर लिया और सुखदेवभाओको सन् १९१९ के जनवरी मासमें मुक्त कर दिया।

नौकरीसे मुक्त होनेके बाद सुखदेवभाओ चुप नहीं बैठे। अुस समय गुजरातमें गांधीयुग आरंभ हो चुका था और अन्यायका प्रतिकार करनेकी लोगोंकी भावना जिलों और तालुकों तक पहुंच गओ थी। सुखदेवभाओने झालोद-दाहोदके गांवोंमें घूमना शुरू किया और गांव-गांवके हालचाल अिकट्ठे करके अुन्होंने तालुकोंकी परिस्थितिके विषयमें, आजमायशी कामोंके बारेमें और अिन कामोंको करने आये हुअे माल-विभाग और सार्वजनिक निर्माण-विभागके कर्मचारियोंके मनमाने बर्तावके बारेमें अेक तरफसे अखबारोंको समाचार भेजना शुरू किया और दूसरी ओर बम्बअीमें हालमें ही स्थापित गुजरात संकट निवारण समितिको भी अिस बातसे परिचित रखने लगे। सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास अिस समितिके अध्यक्ष थे और अिन्दुलाल याज्ञिक अिस समितिके गुजरातके प्रतिनिधि थे।

सुखदेवभाओने अिन्दुलाल याज्ञिकको लिखा,

"अकालके संबंधमें अखबारोंमें लेख लिखते हैं सो तो ठीक है, परंतु अेक बार यहां आकर सब परिस्थिति आंखों देख जायं तो बड़ा फर्क पड़ेगा।"

अिसके सिवाय बम्बअी जाकर वे सर पुरुषोत्तमदाससे स्वयं मिले और पंचमहालकी परिस्थितिका व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित वर्णन देकर कहा :

"तहसीलदार साहब कहते हैं, 'अकाल नहीं, अकाल नहीं', परंतु अेक बार आप आकर परिस्थिति खुद देख जायं तो पता चले कि सच्ची बात क्या है।"

अिन सब प्रयत्नोंके परिणामस्वरूप अिन्दुलाल याज्ञिक जनवरी मासमें आये और झालोद-दाहोदकी स्थिति आंखों देख गये। बम्बअीसे सर पुरुषोत्तमदास तो न आ सके, मगर अुन्होंने अपने मुनीमको अकालकी परिस्थितिके विषयमें सच्ची जानकारी प्राप्त करनेको भेजा। अिसके सिवाय भारत सेवक

समाजके श्री अेन० अेम० जोशी भी आ पहुंचे। अिन सबको सुखदेवभाअीने कुछ खास खास गांवोंमें घुमाया और सब कुछ आंखों दिखलाया। बाहरसे आये हुअे मुनीमने जांचके दौरानमें यह भी देखा कि तहसीलदार और दूसरे अफसर जुवार, मक्की वगैराका निजी व्यापार करते हैं और अूंचे भावों पर निकास करके अच्छी-सी रकम कमा रहे हैं। अिसलिअे वे नहीं चाहते थे कि यहां अकाल घोषित हो और अनाजका आना-जाना बन्द हो। सर पुरुषोत्तमदासके मुनीमने यह सब आंखों देखा और अुसे विश्वास हो गया। बम्बअी जाकर अुसने सर पुरुषोत्तमदासको अपनी रिपोर्ट देकर कहा कि सुखदेवभाअी कहते हैं सो अक्षरशः सच है। लोगोंकी परेशानीका पार नहीं है। गांवोंमें भीलोंकी स्थिति अत्यंत कंगाल बन चुकी है। दूसरी तरफ अिस स्थितिसे लाभ अुठाकर अफसर लोग गुप्त व्यापार कर रहे हैं।

सर पुरुषोत्तमदास पर अिस बातका काफी असर हुआ। अिसके सिवाय अुन्हें श्री जोशी तथा दूसरे कार्यकर्ताओंसे भी अैसे विवरण मिले। अिन्दुलाल याज्ञिकने तो पंचमहालसे लौटनेके बाद अकालजन्य परिस्थितिके बारेमें और अुसमें कर्मचारियों द्वारा दिखाअी गअी लापरवाहीके संबंधमें बड़े अुग्र लेख लिखे। सर पुरुषोत्तमदास बम्बअीके गवर्नरसे मिले और अुनके साथ अिस प्रश्नकी चर्चा की। परिणाम यह हुआ कि पंचमहालसे स्वार्थी कर्मचारियोंका तबादला हुआ और कष्ट-निवारण कार्य तेजीसे चलनेके लिअे कदम अुठाये गये। खुद गवर्नर भी पंचमहालके अकाल-ग्रस्त अिलाकेको देखने जा पहुंचे और अन्तमें वहां अकाल घोषित करके राहतके तमाम काम जारी कराये।

अिधर अिन्दुलाल याज्ञिक और बम्बअीकी समितिने भी जनताकी तरफसे कष्ट-निवारण कार्य शुरू कर दिया। दाहोदमें स्थानीय लोगोंकी मददसे अेक कष्ट-निवारण-समितिकी स्थापना की गअी और अुसके द्वारा जानवरोंको घास और लोगोंको रियायती भावों पर सस्ता अनाज मुहैया करनेकी व्यवस्था आरंभ की गअी। सुखदेवभाअी अुसके मंत्री बने और अिस प्रकार कार्य शुरू हुआ।

अिस अर्सेमें ठक्कर साहब (बापा अुस समय अिसी नामसे प्रसिद्ध थे) जमशेदपुरमें काम करते थे और वहांके मजदूरोंके मकानोंके निर्माण-कार्यके लिअे जरूरी चीजें खरीदनेके लिअे बम्बअी आये थे। अुन्होंने अखबारोंमें पंचमहालके अकालके विवरण देखे और अुन्हें लगा कि अिस काममें अुन्हें स्वयं कुछ न कुछ करना चाहिये। गांधीजीने भी अिस सम्बन्धमें अुन्हें लिखा था। अिसी बीच सर पुरुषोत्तमदाससे अुनकी किसी कामके सिलसिलेमें भेंट हुअी तो अुन्होंने भी ठक्कर साहबका ध्यान खींचकर कहा,

"मि० ठक्कर, यह आपका विषय है। आप जैसेको अेक बार वहां हो आना चाहिये। वहां तत्काल कष्ट-निवारण कार्य करनेके लिअे अेक स्थानीय समिति बनाअी गअी है और सुखदेव त्रिवेदी नामक अेक अुत्साही सज्जन यह सब काम कर रहे हैं। फिर भी अुन्हें आप जैसे प्रौढ़ और कुशल सेवकके पथ-प्रदर्शनकी जरूरत है।"

ठक्कर साहबके मनमें यह विचार बहुत दिनोंसे चक्कर काट रहा था। अिस पर गांधीजी जैसेकी सूचना मिली, सर पुरुषोत्तमदास जैसे प्रतिष्ठित आदमीका आग्रह हुआ और भारत सेवक समाजकी मंजूरी भी मिल गअी, अिसलिअे अुन्होंने जल्दीसे जल्दी पंचमहाल जाना तय किया। और बम्बअी समितिके विशेष प्रतिनिधिके रूपमें अुन्हें अकालकी स्थिति आंखों देखने, सरकारी राहत-काम होते हुअे भी जनताकी मददकी जरूरत है या नहीं, अिसके तथ्य अिकट्ठे करके रिपोर्ट पेश करने और राहतका काम अधिक व्यवस्थित करनेके लिअे पंचमहाल भेजा गया।

१९१९ के मार्च मासमें श्री अमृतलाल ठक्कर पहले-पहल पंचमहाल आये। आकर दाहोदमें तालाबके किनारे स्थित धर्मशालामें, जहां कष्ट-निवारण-समितिका कार्यालय था, डेरा डाला। नहा-धोकर थकान मिटानेके बाद सबसे पहला काम दाहोदकी कष्ट-निवारण-समितिसे मिलनेका किया। अुससे पंचमहालके अकाल-ग्रस्त तालुकों दाहोद और झालोदकी परिस्थितिकी कल्पना प्राप्त कर ली। स्थानीय अफसरोंसे भी मिले और अुनसे ब्यौरा जान लिया। कार्यकर्ताओंमें प्रत्येकसे बारीक और छोटी छोटी बातें पूछकर प्रारंभिक जानकारी जुटा ली और बादमें स्थानीय कार्यकर्ताओंको साथ रखकर अपने दौरेका कार्यक्रम तैयार किया।

पंचमहालमें अुस समय रेलमार्ग बहुत थोड़ा था और भीतरी भागोंमें आने-जानेके लिअे मोटर, तांगा अथवा बैलगाड़ीका ही अुपयोग हो सकता था। ठक्करबापाने अुस समय मोटरमें सफर करना तय किया होता तो अिसमें कुछ बेजा नहीं माना जाता। परन्तु बापाने सार्वजनिक सेवाका प्रथम पाठ अपने पिताजीसे ही सीखा था। किफायत, शरीरश्रम और काया-कष्ट अुनके लिअे सेवाके अनिवार्य अंग थे। अिसलिअे जिसमें कमसे कम खर्च हो वह बैलगाड़ी ही अुन्होंने पसन्द की।

प्रवासकी तैयारीके तौर पर ठक्कर साहबने अपने अेक दो जोड़ अधिक कपड़े, सादा बिस्तर, डायरी लिखनेकी नोटबुक, सफरी भोजनका डब्बा और लोटा-डोर साथमें लिया। अिसके सिवाय अकाल-पीड़ितोंमें बांटनेके लिअे सूती खेस, चादर तथा स्त्रियोंके लिअे तैयार सिले हुअे कपड़ोंकी गांठें

लीं। अिस प्रकार तमाम तैयारी करके बापाने दाहोद-झालोदके गांवोंका दौरा शुरू किया।

ठक्कर साहब गाड़ीमें बैठते और भील-सेवा-मंडलके सेवक श्री सुखदेवभाअी अुनके गाड़ीवान बनकर गाड़ी चलाते। थोड़े ही समयमें दोनोंकी तान मिल गअी। ठक्कर साहब अुन्हें गांवोंके बारेमें, वहांके लोगोंके बारेमें, भीलोंके जीवनके बारेमें अनेक प्रश्न पूछते और सुखदेवभाअी अुनके अुत्तर देते। वर्षा-हीन वर्षके बादकी ग्रीष्म ऋतु आगकी तरह धधक रही थी और गरम लू चल रही थी। परन्तु अिस अुजाड़ और वीरान प्रदेशमें ये दोनों मानव बातोंमें अितने तन्मय हो जाते कि दोनोंमें से अेकको भी अिस बरसती आगका खयाल न रहता। जब कभी बातोंसे थक जाते, तो ठक्कर साहब अिस अुजाड़ जंगलमें गहरे स्वरसे अेकाध भजन गाते अथवा 'ज्यां ज्यां नजर मारी ठरे यादी भरी त्यां आपनी' (जहां जहां मेरी नजर जाती है वहां आप ही आप दीखते हैं।) यह कलापीका अीश्वर-स्तुति सम्बन्धी काव्य जोरसे गाकर सूखे सुलगते निर्जन वनमें भी अीश्वरका दर्शन करते। सफरमें खानेका वक्त हो जाता अथवा भूख लगती तब किसी बड़े पेड़के ठूंठके नीचे (हरे पेड़ तो रहे नहीं थे) गाड़ी छोड़ देते और साथमें रखा हुआ खोपरा और गुड़ अथवा रोटी और गुड़ खाकर पेटका भाड़ा चुकाकर पानी पी लेते और फिर आगे बढ़ जाते।

अिस प्रकार बातें करते जाते, धरती और जलते हुअे आकाशके बीचके गरम वातावरणमें यात्रा करते जाते, अीश्वरके गुण गाते जाते, स्थानीय परिस्थितिकी जानकारी प्राप्त करते जाते और अकाल-पीड़ितोंकी सहायता करते जाते।

हर गांवमें जहां जहां जाते वहां गांवके लोगोंसे मिलते, अनाज वगैरा की पूछताछ करते। घरमें कितने आदमी हैं? आमदनी क्या है? खर्च कितना है? कैसे गुजर करते थे? अब कैसे काम चल रहा है? अित्यादि बारीकीसे किन्तु प्रेम और सहानुभूतिपूर्वक पूछते और जहां मदद देने जैसा लगता वहां अनाज, कपड़ों और कम्बलोंकी सहायता देते।

बैलगाड़ीसे प्रवास कर रहे थे, अिसलिअे सारे प्रदेशका दौरा जल्दी तो कैसे होता? रोज आठ-दस मील और कभी कभी अधिकसे अधिक बारह-पंद्रह मील तय कर लेते। और रोज अेक अथवा कभी कभी दो गांवोंका दौरा कर पाते। अिस प्रकार प्रवास धीरे-धीरे होता था परन्तु जितना काम हुआ अुतना बहुत निश्चित और ठोस होता गया।

अिस प्रकार ठक्कर साहबने अपने अिस प्रथम प्रवासमें दाहोद और झालोद तालुकोंके बहुतसे गांवोंका दौरा किया। कोअी दस दिनमें अुन्होंने लगभग १५० से अधिक मीलका सफर किया और कुल मिलाकर ११ कष्ट-निवारण केन्द्रोंकी जांच की और सैकड़ों अकाल-पीड़ितोंके सहायक बने।

सफरके दौरानमें अुन्होंने कार्यकर्ताओं, राजकर्मचारियों और लोगोंके साथ जिस ढंगसे काम किया, अुससे अुन सबका अुन्होंने खूब प्रेम और विश्वास सम्पादन किया। सुखदेवभाअी तो ठक्कर साहबके कार्य और सह-वाससे अितने अधिक प्रभावित हुअे कि बात ही न पूछिये। प्रवासके दिनोंमें ठक्कर साहबका सबसे ज्यादा सम्पर्क और परिचय अिन्हें हुआ था; और वह भी निकटसे। अुनका पितातुल्य वात्सल्य, अुनकी सहानुभूतिभरी बातें, सादा और कष्टसहिष्णु रहन-सहन, बालक-जैसा निष्पाप हृदय और गरीबोंके प्रति निर्व्याज प्रेम — अिन सब गुणों द्वारा सुखदेवभाअीका हृदय अुन्होंने प्रथम प्रवासमें ही जीत लिया। अितना ही नहीं, परन्तु अकालके कामके बारेमें सुखदेवभाअीकी चिन्ता और भार भी हलका कर दिया।

सुखदेवभाअी और ठक्कर साहबके बीच अिस पहली यात्रामें ही जो प्रीति बंध गअी सो हमेशाके लिअे बंध गअी। अिसके बाद वह कभी नहीं टूटी, बल्कि अुत्तरोत्तर बढ़ती ही गअी। दोनोंको अेक-दूसरेका स्वभाव, रहन-सहन वगैरा अच्छी तरह पसंद आ गया।

सुखदेवभाअी अिससे पहले अकालके सिलसिलेमें काफी नेताओंके संसर्गमें आये थे। अकालके सम्बन्धमें वे अिन्दुलाल याज्ञिक जैसे अुस समयके प्रखर लोकसेवक और राजनैतिक नेतासे मिले थे। सर पुरुषोत्तमदास जैसे प्रमुख सुधारक और सरकार पर भी प्रभाव रखनेवाले प्रतिष्ठित सज्जनसे मिले थे। अिनके सिवाय और भी कुछ नेताओंसे मिले थे। अिन सब नेताओंने अुनके काममें दिलचस्पी ली, सहानुभूति दिखाअी और अुनके कार्यका प्रचार किया, आर्थिक सहायता भी की। परन्तु अुनके कामका सारा बोझ अुनके कंधेसे अुतारकर अपने कंधे पर रख लेनेवाले तो ठक्कर साहब ही हैं, यह प्रतीति अुन्हें अिन ग्यारह दिनोंके सहवासमें ही हो गअी। अिसलिअे जब ग्यारह दिनके बाद जुदा होनेका समय आया तब पता नहीं क्यों अुन्हें अैसा दुःख हुआ मानो अुनका पथप्रदर्शक पिता जा रहा हो। अुन्होंने भारी हृदयसे ठक्कर साहबको बिदा दी।

दाहोदसे ठक्कर साहब बम्बअी गये और पंचमहालके अकालकी स्थितिके सम्बन्धमें अपनी खुदकी जांच और जानकारीकी रिपोर्ट तैयार करके बम्बअीकी

समितिके सामने पेश की। अुसमें अिन सब बातोंका ब्यौरा दिया कि यह अकाल कैसे शुरू हुआ, शुरूमें सरकारी कर्मचारियोंने कैसी भूलें कीं, कैसी गड़बड़ें मचाओं और अुसके बाद बहुत देर हो चुकने पर अुन भूलोंको सुधारनेके कैसे प्रयत्न किये और अब सरकारी तथा गैरसरकारी राहत-काम कैसे हो रहे हैं। आगे तीन-चार महीने काम किस ढंगसे होना चाहिये, अिस सम्बन्धमें अपनी तैयार की हुअी योजना भी पेश की। अकाल सम्बन्धी सारी परिस्थितिकी समीक्षा करनेवाला अेक लेख तैयार करके भारत सेवक समाजके मुखपत्र 'सर्वेन्ट्स ऑफ अिंडिया' में प्रकाशित किया। अिस प्रकार अुन्होंने पंचमहालके अकालके प्रश्नमें और कष्ट-निवारण कार्यमें जनताकी दिलचस्पी पैदा की और धनवानोंके हृदय अिस ओर मोड़नेके लिअे प्रयत्न किये।

अकालकी स्थितिका खयाल कराते हुअे अुन्होंने लिखा कि, "पंच-महाल जिलेके पूर्वी भाग अर्थात् दाहोद सब-डिविजन पर अकालका सबसे बुरा असर हुआ है। अिससे केवल दाहोद और झालोद तालुकेमें ही घूमनेकी मैंने मर्यादा बना ली थी। पशुओंमें अकालका बहुत बड़ा संकट पाया गया। यद्यपि अुनकी मृत्युसंख्या अभी तक बहुत बढ़ी नहीं है, फिर भी अुनके शरीर अिस समय हड्डियों और पसलियोंके पंजर जैसे बन गये हैं। मालूम होता है कि जिलेके अधिकारियोंने अिस परगनेमें पशुसंकटके विस्तार और मात्राका अंदाज लगानेमें पहलेसे ही भूल की। अिसलिअे सरकारने घासकी जो मात्रा अिस प्रदेशको दी है, वह अुसकी जरूरतके हिसाबसे बहुत ही कम है। अिसलिअे कुछ किसानोंको घास देनेके बजाय सरकारकी तरफसे घास खरीदनेके लिअे रुपया पेशगी दिया जाता है। लोगोंको जो राहत दी जाती थी वह भी अमुक समय तक तो काफी नहीं होती थी। और नकद दान द्वारा जो राहत देनी थी अुसमें भी अेकाध महीनेकी देर हो गअी। अिस प्रदेशके मेरे दौरेके समय तक भी अकाल-पीड़ित मजदूरों पर आधार रखनेवाले अुनके कुटुम्बीजनों अर्थात् बालकों, वृद्धों — जो मुफ्त राहत पानेके हकदार हैं — की संख्या भी अनावश्यक नियंत्रण लगाकर मर्यादित कर दी गअी थी। परन्तु पिछले महीने अिस स्थितिमें काफी सुधार किया गया है और अिस समय अकाल-निवारणके काममें जो अफसर लगे हुअे हैं अुन्हें यदि अुनकी भूलें बताअी जाती हैं तो वे भूल-सुधार करनेमें बहुत देर नहीं लगाते।"

गवर्नरके हाल ही के दाहोद आगमन और अुस अवसर पर अुनके दिये हुअे भाषणके कुछ मुद्दोंकी आलोचना करते हुअे अुन्होंने लिखा :

"फसल न पकनेके कारण भीलोंको भारी दुःख सहन करना पड़ा है। परंतु अुससे भी बड़ा दुःख तो अुनके पशुओंको सहन करना पड़ा है। दाहोदमें गवर्नरने म्युनिसिपल बोर्डके मानपत्रके जवाबमें भील किसानोंको खराब सालोंके लिअे घासका ढेर जमा कर रखनेकी जो सीख दी है, वह यों तो बड़ी अच्छी और संपूर्ण है, परंतु मुझे कहना चाहिये कि वह गलत जगह दी गअी है। खेड़ा जिलेके पाटीदार या काठियावाड़के कुनबीको वह सलाह दी जाय तो अुसका कुछ व्यावहारिक मूल्य होता है, मगर जब भीलको दी जाती है तो वह अुसे बिलकुल निकम्मी समझकर फेंक देता है।"

"दाहोद-झालोद तालुकोंकी मेरी यात्राके समय घासका जो संग्रह रखा गया था वह भी खत्म हो गया था। वन-रक्षा-विभागमें जो पेड़ थे वे भी पत्तोंके अभावमें सूखे ठूंठ भर रह गये थे; और किसान तो चिन्तातुर होकर अिसकी प्रतीक्षा कर रहे थे कि सरकार परोपकारी संस्थाओंसे घास खरीदकर अुन्हें सस्ते भाव पर देगी।"

माल-विभागके अधिकारियोंकी भूलोंका अुल्लेख करते हुअे अुन्होंने बताया कि, "भीलोंके दुर्भाग्यसे अुस समयके माल-कर्मचारियोंने अिस बातका बहुत बड़ा अन्दाज लगा लिया कि अिस प्रदेशमें तत्काल वहींका वहीं कितना घास मिल सकता है। जब परिस्थिति बिगड़ी और घास प्राप्त करनेमें अत्यंत विलम्ब हो गया, तब कहीं अुनमें समझदारी आअी। अिस प्रकारकी नादानी और गड़बड़का बुरा असर मअी और जूनके महीनोंमें अच्छी तरह दिखाअी देगा।"

अकाल-संकटके स्वरूप और विस्तारका पृथक्करण करते हुअे ठक्कर साहबने लिखा था:

"लोगोंमें अभी तक अकालका संकट बहुत बड़ा नहीं है, परंतु वे बड़ी संख्यामें कष्ट-निवारण केन्द्रोंमें अिकट्ठे होते हैं और रोजी पानेके लिअे सुबह शाम दो से छः मील तक चलते हैं। अंतिम आंकड़ोंके अनुसार १५,००० मनुष्योंको कष्ट-निवारणके केन्द्रोंमें काम पर लगाया गया था और लगभग १२,००० मनुष्योंको मदद दी गअी थी। अुनमें से अधिकांश दाहोद-झालोदके दो तालुकोंके ही थे। दाहोद-झालोद तालुकोंकी आबादी १,२५,००० है अर्थात् आबादीका २० फीसदी या पांचवां भाग सरकारी राहतकी सूचीमें दर्ज हुआ था। यह बहुत बड़ा अनुपात माना जायगा।"

गैरसरकारी कष्ट-निवारण कार्य किस ढंगसे हो रहा है, अिसकी कल्पना देकर कष्ट-निवारण कार्यमें लगे हुअे विद्यार्थियों, स्त्रियों, शिक्षकों और व्यापारियोंको श्रद्धांजलि देते हुअे ठक्कर साहबने लिखा:

"मौजूदा अकालमें अकाल-निवारणके सरकारी प्रयत्नोंमें गैरसरकारी संस्थाओंके प्रयत्न काफी मात्रामें पूरकका काम देते हैं। बम्बअी-कोष अकाल पीड़ित जिलोंको सिर्फ रुपया ही नहीं देता, परंतु अपने प्रतिनिधियोंको भी भेजता है। वे स्थानीय समितियोंको जानकारी देते हैं। ये समितियां मूल कीमत या सस्ते भाव पर लोगोंको माल या घास देती हैं। साथ ही सरकार निराधारोंको जो मुफ्त अनाज और कपड़ा बांटती है अुसमें पूरक सहायता देती हैं अथवा पशुओंका मुफ्त केन्द्र चलाती हैं। पंचमहालके दाहोद-झालोद परगनोंमें अैसी तीन समितियां हैं। अिनके सिवाय मुक्ति-सेनाके कर्मचारी और दूसरे मिशनरी भी लोगोंका दुःख दूर करनेके लिअे काम करते हैं।

"गरीब किसानोंके गाय, बैल, भैंस वगैरा पशुओंको बचा लेनेके लिअे मुफ्त अथवा नाममात्रका खर्च लेकर दुःखके दिन पूरे न हो जायं तब तकके लिअे पशुकेन्द्र चलाये जाते हैं। वकील और शिक्षक अपना सारा फालतू वक्त अिस काममें देते पाये जाते हैं। व्यापारी भी लोगों और पशुओंके दुखदर्दमें अुनकी सेवा करनेके लिअे अपने व्यापारिक कामकाजकी अपेक्षा अिस कार्यको तरजीह देते हैं। और ये दयाके कार्य करनेके लिअे कुछ सरकारी नौकर त्यागपत्र देकर नौकरी छोड़ते देखे जाते हैं। जब जब अकाल-पीड़ित प्रदेशोंमें सामाजिक सेवाका काम करनेके लिअे मांग की जाती है, तब कालेजके विद्यार्थी अपने नाम लिखानेमें होड़ करते हैं। अुच्च स्थान भोगनेवाली महिलायें, जो आम तौर पर शहरी जिन्दगीकी आदी होती हैं, भूखे और अर्ध-नग्न अकाल-पीड़ितोंको राहत पहुंचानेके लिअे बैलगाड़ीका सफर करके अेक गांवसे दूसरे गांवका दौरा करती हैं। अर्ध-नग्न स्त्रियोंके दृश्य अिन दिनोंमें साधारण हो गये हैं। गांवोंमें दिखाअी देनेवाली अिस दारुण गरीबीके बीच अपने मानव-बंधुओंकी सेवा करनेकी अिच्छा ही बड़ी भारी राहत है और भविष्यके लिअे बहुत बड़ी आशा दिलाती है।"

अिस प्रकार बम्बअी समितिका सौंपा हुआ कार्य तत्कालके लिअे निपटाकर ठक्कर साहब जमशेदपुर लौट गये और वहांके मजदूरोंके मकानोंका काम पूरा करनेमें लग गये। अिस बीच कृशकाय अर्धनग्न स्त्री-पुरुष और नंगे-भूखे बालक तो अुनकी आंखोंके आगे नाच ही रहे थे। अिसलिअे वहांका काम तेजीसे निपटाकर तथा बाकी रहा अपने साथी कार्यकर्ताओंको सौंपकर अप्रैलके अन्तमें वे अपने वचनके अनुसार पंचमहाल जा पहुंचे और अकाल-निवारण कार्यका संचालन फिर हाथमें ले लिया। अब तक अुनकी बनाअी हुअी रूपरेखाके अनुसार ही यह काम हुआ था और अुनके अनुरोध पर मोतीभाअी अमीनने जिन तीसेक कालेजके विद्यार्थी भाअी-बहनोंको कष्ट-

निवारण कार्य करनेके लिअे भेजा था, वे यह काम संभाल रहे थे। अिस प्रकार अुनका काम काफी हल्का हो गया था। आगेका अुनका मुख्य कार्य प्रवास द्वारा प्रत्येक केन्द्रका निरीक्षण करना और केन्द्रीय कार्यालयका संचालन करना था। अिस कार्यके लिअे वे थोड़े दिन दाहोदमें रहते और फिर वही बैलगाड़ी भरकर सुखदेवभाअी तथा अन्य अेक दो साथियोंको लेकर दौरे पर निकल पड़ते। अिस बारके दौरेमें भी अुन्हें कितने ही अनुभव हुअे और कितनी ही बातें सुननेमें आअी। भील लोगोंकी स्थितिके बारेमें और राज-कर्मचारियोंकी लापरवाही और तेजमिजाजीके बारेमें भी अुन्हें काफी जानने और सुननेको मिला। अिसमें धोला खाखरा गांवकी घटनाने तो अुनका पुण्य-प्रकोप प्रज्ज्वलित ही कर दिया।

ठक्करबापा जिन दिनों दौरा कर रहे थे अुन्हीं दिनों किसीने अुन्हें अुस घटनाके बारेमें कहा था। वह घटना अिस प्रकार हुअी थी:

धोला खाखरा गांवमें सड़क बनानेका अेक कष्ट-निवारण कार्य हो रहा था। दोपहरका समय था। अुस समय अेक ओवरसियरको चाय पीनेकी अिच्छा हुअी। अुसने सड़कके अेक जमादारसे कहा, "जा, गांवसे दूध ले आ।" जमादार दूध लेने गया। परंतु दूध नहीं मिला तो भटक भटकाकर खाली हाथ लौट आया।

यह देखकर साहबने गुस्सेमें कहा, "दूध क्यों नहीं लाया?"

जमादारने अुत्तर दिया, "साहब, सारा गांव छान डाला परंतु कहीं दूध नहीं मिला। ढोरोंको खानेको कुछ नहीं मिलता तब दूध कहांसे दें?"

"मैं यह कुछ नहीं जानता। चाहे जहांसे दूध लेकर आ।"

"कहांसे लाअूं साहब? देखिये तो गरमीमें सदा हरे रहनेवाले ढाकके पत्ते तक अिस बार सूख गये हैं।"

"तो तेरी औरतको दुहकर दूध ले आ।"

अैसा अपमानजनक और हल्का जवाब सुनकर जमादारको खूब आघात पहुंचा। परंतु बेचारा अेक गरीब नौकर था। मन मारकर बैठ रहा। ठक्कर साहबने अुस ओवरसियरके अिस अुद्दण्ड व्यवहारके बारेमें सुना तो वे बहुत खिन्न हुअे और अुस ओवरसियरको बुलाकर खूब फटकारा।

सरकारी ढंगसे होनेवाले अिन सब कष्ट-निवारण कार्योंकी खामियोंकी तरफ ठक्करबापाका ध्यान तो पहलेसे ही था। वहां कष्ट-निवारणका कार्य करने आनेवाले कर्मचारी भी हुकूमतको भूल नहीं सकते थे। वे पालकियोंमें बैठते, हुक्म देते, और साहबोंकी तरह रहते थे। अुनमें मानवता और सहानुभूति थोड़ी ही होती थी। यह सब देखकर सरकारी राहत-कामकी त्रुटियां

अुनकी दृष्टिमें कभीसे आ चुकी थीं। परंतु धोला खाखराकी घटनाके बाद गैरसरकारी कष्ट-निवारण कार्यकी अुपयोगिता और अनिवार्यता अुन्हें अच्छी तरह समझमें आ गअी।

तबसे बापाका दृढ़ निश्चय हो गया कि जब जब अकालका संकट खड़ा हो तब सरकार भले ही सारा काम अपने कर्मचारियों द्वारा कराये, तो भी सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा ही अैसे काम होने चाहिये।

धोला खाखरासे भी अधिक करुण और अुनके हृदयको हिला देनेवाली अेक घटना पंचमहालके अेक गांवमें १९२२ के अकालके दिनोंमें हुअी थी। अुस समय भी बापा पंचमहालके अकालग्रस्त प्रदेशमें कष्ट-निवारण कार्य करने गये थे।

तब झालोद तालुकेके गांवोंमें पीड़ितोंको राहतका अनाज और कपड़े बांटते-बांटते अेक दिन भर-दुपहरीमें वे शंकरपुरा गांवमें जा पहुंचे।

यह गांव बहुत अूंचाअी और सूखी जमीन पर बसा हुआ है। अुसकी धरती पथरीली और सख्त है। अुस वर्ष खेतीमें अिस गांवमें कोअी खास पैदावार नहीं हुअी थी। लोग भी बहुत ही गरीब थे। ठक्कर साहब वहांकी बिखरी हुअी आबादीमें घर-घर जाकर अनाज और कपड़े वगैराका वितरण कर रहे थे। बांटते बांतते वे अेक झोंपड़ीके पास जा पहुंचे। अुन्होंने देखा कि अुनके आगमनके कारण अेक स्त्री जल्दीसे झोंपड़ीके खुले भागसे हटकर अुसके अंधेरे कोनेमें घुस गअी और द्वार बन्द कर लिया।

ठक्कर साहबने खड़े खड़े आवाज दी, "अे बहन, बाहर आओ। अन्दर क्यों बैठी हो?" परंतु स्त्री बाहर नहीं निकल रही थी।

ठक्कर साहबको जरा आश्चर्य हुआ। उन्हें खयाल हुआ कि राहतका अनाज और कपड़ा लेने तो उल्टे सामनेसे लोग दौड़कर आते हैं, लेकिन यह स्त्री जरा भी हलचल क्यों नहीं करती?

ठक्कर साहबने दुबारा अुसे चिल्लाकर बुलाया, "अरी बहन, बाहर तो आओ। तुम्हें कुछ अनाज, कपड़े वगैरा चाहिये? हम समितिके आदमी बांटने आये हैं।"

तब भीतरसे स्त्री भीलोंकी भाषामें कुछ बोली, परंतु बाहर नहीं निकली।

ठक्कर साहबको आश्चर्य हुआ और अुन्होंने सुखदेवभाअीसे पूछा: "यह क्या कहती है, सुखदेव? अिससे पूछो तो सही कि बाहर क्यों नहीं निकलती?"

तब सुखदेवभाओीने, जो भील लोगोंकी बोली अच्छी तरह समझते थे, खोलकर कहा :

"स्त्री यह कहती है कि मदद तो चाहिये, मगर मै बाहर कैसे आअूं? मेरे पास लाज ढंकने लायक भी कपड़े नहीं। झोंपड़ीको ओढ़कर बैठी हूं।"

यह सुनकर ठक्कर साहब तो स्तब्ध हो गये! अुन्होंने तुरंत ही लहंगा, साड़ी वगैरा कपड़े दरवाजे और झोंपड़ीके छप्परके बीचके खुले भागमें से अन्दर फेंके और दोनों पीठ फेरकर खड़े रहे। थोड़ी देरमें कपड़े पहनकर स्त्री बाहर आओी। वह बेचारी वृद्धावस्थाके किनारे पहुंच गओी थी। अकालके कारण अुसके हाड़चाम सूख गये थे। अिसलिअे नये पहने हुअे अिन कपड़ोंमें वह नकली औरत-सी लगती थी। यह करुण दृश्य देखकर ठक्करबापाका हृदय द्रवित हो अुठा। अुनकी आंखोंसे आंसू निकल पड़े!

ठक्कर साहब जैसे देशकी सेवामें समपित मिशनरीके पंचमहालकी धरती पर गिरे वे ही आंसू आगे चलकर बापाका हृदय अिस धरतीके साथ जोड़ देनेमें कारण बने! भीलोंकी सेवाके संकल्पका बीज किसी अनजाने क्षणमें अुनकी हृदय-भूमिमें अुसी दिन बोया गया। अुस पर आंसुओंका सिंचन हुआ और अुससे भील-सेवा-मंडल जैसा वटवृक्ष पंचमहालकी सूखी धरती पर जम गया। अुसकी शीतल छायाका लाभ लाखों भील ले चुके हैं और आज भी ले रहे हैं। यह सब कैसे हुआ, अिसका ब्यौरा आगे देखेंगे।

१४

काठियावाड़में खादी-कार्य

१९२० में गांधीजीके नेतृत्वमें कलकत्ता और नागपुरकी कांग्रेसोंमें असहयोगका प्रस्ताव पास हुआ। अिसके बाद अुसे अमलमें लानेके लिअे सारे देशमें अुत्साहकी लहर फैल गओी। गांधीजीका गुजरात अिससे अलग कैसे रह सकता था? धारासभाओं, अदालतों और स्कूल-कालेजोंके बहिष्कारके साथ विदेशी वस्त्रके बहिष्कार और स्वदेशीके प्रचारका आन्दोलन भी जोरोंसे आगे बढ़ रहा था। सितम्बर मासमें कलकत्तेमें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ, तभीसे गांधीजीने देशके सामने अेक कार्यक्रम रखा था। अुन्होंने कहा था कि सारे देशमें धारासभाओंका बहिष्कार, विदेशी कपड़ेका बहिष्कार, सरकारी स्कूल-कालेजोंका बहिष्कार तथा सरकारी अदालतोंका बहिष्कार — ये चार बहिष्कार कारगर हों तो भारतके लोगोंको अेक वर्षमें स्वराज्य मिल जाय। अिसके

सिवाय अुन्होंने तिलक स्वराज्य कोषमें अेक करोड़ रुपये अिकट्ठे करने और बीस लाख चरखे चलानेका भी अेक कार्यक्रम देशके समक्ष रखा था। नागपुरके वार्षिक अधिवेशनके बादसे वे यह बात बार बार कहते रहे थे और अिस सिलसिलेमें भाषाणों और लेखों द्वारा जनतामें अुत्साह भर रहे थे।

गुजरातने गांधीजीका यह कार्यक्रम खूब अुत्साहसे अपना लिया था। और अपने हिस्सेमें आनेवाले कामसे भी ज्यादा कर दिखानेकी अुसकी अुमंग थी। तदनुसार गुजरातने अपने हिस्सेमें आनेवाले दसके बजाय पंद्रह लाख रुपये अिकट्ठे किये, कांग्रेसके सदस्य बड़ी संख्यामें बनाये और चरखेका कार्यक्रम पूरा करनेके लिअे भी प्रयत्न आरंभ कर दिया।

अिस सारे कार्यक्रममें गांधीजी ज्यादा जोर तो चरखे पर ही दे रहे थे। क्योंकि वे जानते थे कि रुपया देनेमें देश बहादुर है, अिसलिअे रुपया तो आसानीसे मिल जायगा। और सदस्य बनानेमें भी बहुत कठिनाअी नहीं होगी। असली काम चरखेका कार्यक्रम अमलमें लानेका था। चरखेमें अुन्हें स्वराज्यके दर्शन हुअे थे। देशके सारे दु:खदर्दोंके लिअे वे चरखेको ही रामबाण औषधि मानते थे। 'सूतके धागेसे स्वराज्य' का सूत्र अुन्होंने देश भरमें व्याप्त कर दिया था।

अिस अर्सेमें कुछ सुखी श्रीमान लोग गांधीजीके अिन नये नये प्रयोगों और अुनकी प्रवृत्तियोंको दिलचस्पीके साथ देख रहे थे। गांधीजीके कामकी तरफ अुनकी हमदर्दी थी। और धंधेके क्षेत्रमें लाखोंका व्यापार करते हुअे भी व्यक्तिगत जीवनमें वे गांधीजीके स्वदेशीके सिद्धान्तोंको मानने और खादीको अपनाने लगे थे। गांधीजीकी राष्ट्रव्यापी प्रवृत्तिमें वे खुद भी कुछ हाथ बटा सकें तो अच्छा है, यह अुमंग अुनके दिलोंमें रहती थी। अिन धनिकोंमें कलकत्तेके चोरवाड़वाले श्री जीवनलाल मोतीचंद और श्री हरखचंद मोतीचंद तथा अमरेलीके श्री रामजी हंसराज कामानी मुख्य थे। रामजीभाअी अुस समय अमरेलीमें रहते थे। अुन्होंने जीवनलालभाअीको लिखा कि सौराष्ट्रमें चरखे और खादीका पुनरुद्धार हो सकता है, परंतु योग्य आदमी हों तो यह काम सुन्दर ढंगसे सफल हो सकता है। जीवनलालभाअीके मनमें भी अिसी प्रकारके विचार चक्कर लगा रहे थे। अिसलिअे अुनके मनमें यह सुविचार अुत्पन्न हुआ और मन ही मन अुन्होंने अेक संकल्प किया कि यदि काठियावाड़में यह काम शुरू किया जाय तो खादी अुत्पत्तिके लिअे वे अपनी पूंजीमें से अेक लाख रुपया विना ब्याज लगा देंगे।

परंतु यह काम कौन कर सकता है? नया काम, नया क्षेत्र। अितनी बड़ी पूंजी यदि अनुभवहीन मनुष्योंके हाथोंमें पड़ जाय तो नष्ट हो जाय।

और जिस हेतुके लिअे यह कार्य करनेकी अुमंग पैदा हुअी है वह हेतु भी सिद्ध न हो। यदि कुशल और अनुभवी होने पर भी अप्रामाणिक आदमियोंके हाथोंमें चली जाय तो रुपयेकी गड़बड़ हो जाय, अधिकांश पूंजी लोग खा-पी जायं, जनतामें अप्रतिष्ठा पैदा हो और खादी जैसे पवित्र कार्यको शुरू होते ही हानि पहुंचे। यह सब विचार करने पर अुनकी नजर भारत सेवक समाजके श्री अमृतलाल ठक्कर पर पड़ी। अुन्हें लगा कि यदि ठक्कर साहब यह काम हाथमें ले लें तो जरूर सफलता और यश दोनों मिलें।

जीवनलालभाअी ठक्कर साहबके परिचयमें अिससे पहले ही आ चुके थे। जमशेदपुर और अुड़ीसामें पिछले वर्ष अुन्होंने जो कष्ट-निवारण कार्य किया था, अुसके बारेमें वे सब कुछ जानते थे। अुनकी सत्यनिष्ठा, सेवा-भावना, सादगी, किफायतशारी, सार्वजनिक धनकी पाअी-पाअीका अुचित अुपयोग करनेकी अुनकी आदत, हिसाबकी सफाअी और सचाअी तथा पारदर्शक प्रामाणिकता वगैरा गुणोंसे वे भलीभांति परिचित हो चुके थे। साथ ही अुनकी प्रबंध संबंधी कुशलताका भी अुन्हें पूरा परिचय मिल गया था। अिसलिअे ठक्कर साहबका खयाल आते ही अुनके मनमें जम गया कि अगर ठक्कर साहब अिस कामकी जिम्मेदारी संभाल लें तो अुनके लगाये हुअे रुपयेका अुचित अुपयोग होगा और अुसकी पाअी-पाअीका फल मिलेगा। जीवनलालभाअी गांधीजीके संसर्गमें आये थे और अुनके देशोपयोगी कार्यमें कभी कभी द्रव्यकी सहायता भी देते थे। अिसलिअे अुन्होंने अपना यह विचार पत्र द्वारा गांधीजीको बताया और लिखा कि आपके कहे अनुसार खादीके कामको वेग मिले और काठियावाड़में चरखे चलने लगें, अिसके लिअे अेक लाखकी रकम बिना ब्याज लगानेका मैंने संकल्प किया है। परंतु यह कार्य किसी होशियार कार्यकर्ताको सौंपा जाय तो ही सफल होगा। मेरी अिच्छा और शर्त यह है कि आप यह काम भारत सेवक समाजके श्री अमृतलाल ठक्करको सौंपें। गांधीजीको जीवनलालभाअीका यह प्रस्ताव स्वीकार करनेमें किसी भी प्रकारकी आपत्ति मालूम नहीं हुअी। जैसे जीवनलालभाअी श्री ठक्करको अच्छी तरह जानते थे, वैसे गांधीजी भी अुनसे भलीभांति परिचित थे। दक्षिण अफ्रीकासे गांधीजी भारत आये और गोखलेजीसे मिले तथा बंबअीमें समाजके कार्यकर्ता सदस्योंके साथ अुनका परिचय हुआ, तभी श्री ठक्क्कर भी अुनसे मिले थे और गांधीजीकी सादगी, संयमी जीवन और प्रभावशाली व्यक्तित्वकी ओर आकर्षित हुअे थे। अुसके बाद दोनों यदा-कदा अेक दूसरेके संपर्कमें आते थे। जीवबलालभाअीका सुझाव न आया होता तो भी गांधीजोको श्री ठक्कर साहबसे अधिक योग्य, कुशल, कार्य-

निष्ठ और अनुभवी आदमी अिस कामके लिअे दूसरा शायद ही मिलता। अिसलिअे अुन्होंने जीवनलालभाअीके अिस प्रस्तावका स्वायत किया और श्री ठक्करको अिस बारेमें पत्र लिखकर काठियावाड़में खादी-अुत्पत्तिका काम संभाल लेनेकी बात सुझाअी। दूसरी तरफ जीवनलालभाअीने भी जब ठक्कर साहब कलकत्तेमें थे तब अुनसे रूबरू बात करके अपनी अिच्छा बताअी और गांधीजीका प्रिय खादी-कार्य हाथमें लेनेकी विनती और आग्रह किया।

ठक्कर साहबके लिअे तो अिनकार करनेकी कोअी बात ही नहीं थी। अुनके लिअे यह ‘ दधि बेचन और हरिमिलन अेक पंथ दो काज ’ वाली बात थी। चरखे और खादीके द्वारा सौराष्ट्रके हजारों गरीबों और खास तौर पर अंत्यजोंकी सेवा होती थी और गांधीजीको प्रसन्न करनेवाला अुनका काम भी होता था। अिसलिअे अुन्होंने भी जीवनलालभाअीकी अिस मांगका स्वागत किया। यह काम करनेके लिअे भारत सेवक समाजकी मंजूरी भी ले ली, और बादमें काठियावाड़में यह खादी-कार्य शुरू करनेके लिअे कितनी और कैसी गुंजाअिश है, अिसकी जांच करनेके लिअे दौरे पर निकले। अुस समय ठक्कर साहबके अेक मित्र खादी-कार्य कर रहे थे। अुसका निरीक्षण करके खादी-अुत्पत्ति संबंधी आंकड़े जमा करके यह अंदाजी हिसाब लगाकर देखा कि प्रयोग संभव है या नहीं। और हिसाबके अन्तमें यह चीज संभव मालूम होने पर अमरेलीमें केन्द्र रखकर अिस प्रयोगको अमलमें लानेकी योजना तैयार कर डाली।

ठक्कर साहबने तारवाड़ीके रास्ते पर कपोल बोर्डिंगके पास अेक बड़े दरवाजेवाला मकान किराये पर लिया और अुसमें नीचे खादी कार्यालय तथा अूपर सोने-बैठने व रहनेका स्थान रखा।

शुरूमें काम करनेवालोंमें स्वयं ठक्कर साहब, सेठ रामजी हंसराज कामाणी, हरखचंद भाअी, देवचंदभाअी आड़तिया और करसनदास चितलिया वगैरा थे। अिनके अलावा, बादमें श्री त्रिभुवनदास गौरीशंकर व्यास भी कार्यालयमें वैतनिक कार्यकर्ताके रूपमें शरीक हो गये थे। अिस समय वे शिक्षा-विभागमें काम कर रहे थे और कुछ घंटे कार्यालयमें देकर हिसाब-किताबका काम संभाल रहे थे। ये सब कार्यालयमें अेक ही कमरेमें बैठते और अुसका प्रबंध करते थे।

भूतकालमें काठियावाड़में चरखे तो चलते ही थे। साथ-साथ हाथ-बुनाअीका अुद्योग भी खूब विकसित हुआ था। परंतु बादमें चरखा बन्द हो जानेसे ये सारे जुलाहे पेटीका सूत — मिलका सूत — बुनने लग गये थे। काठियावाड़में खादीका काम शुरू हुआ अुस समय अमरेलीके आसपासके

प्रदेशोंमें अेक गजके अर्जवाला मोटा कपड़ा तो गांव-गांवमें बुना ही जाता था। शहरके कुछ व्यापारी मिलके सूतकी पेटियां मंगवाते और गांवोंसे हरिजन जुलाहे आकर अुनसे बुननेको ले जाते। अुस सूतसे वे छोटे अर्जका मोटा कपड़ा बुनते और अुसीको व्यापारीको देकर बदलेमें मजदूरी पाते थे। अिस प्रकारका हाथ-बुनाअीका काम अमरेली, धारी, चलाला, बगसरा, कुंडला, लाठी और बांसावड़ वगैरा जगहों पर खूब बड़ी मात्रामें होता था। परंतु अब जो काम करना था वह तो हाथ-बुनाअीके साथ साथ हाथ-कताअीके अुद्योगका पुनरुद्धार करनेका था।

ठक्कर साहबने अिसके लिअे बड़े पैमाने पर रुअीकी गांठें खरीदीं। अुसे पिंजारोंसे पिंजवाया तथा थोकबंद पूनियां तैयार कराकर और पैसे देकर कातनेका काम शुरू कराया।

अमरेली शहर और आसपासके गांवोंसे कितनी ही कत्तिनें अमरेली आने लगीं। जिनके पास चरखे नहीं थे अुन्हें नये चरखे तैयार कराकर दिये गये। जिनके पास पुराने चरखे थे अुन्हें घरकी छत परसे अुतरवाकर और अुनकी धूल झड़वाकर मरम्मत करके चालू करनेकी व्यवस्था की।

स्त्रियां रोज खादी कार्यालयसे पूनियां ले जातीं और दूसरे दिन अुसका सूत कातकर दे जातीं। ज्यों ज्यों कामका विकास होता गया त्यों त्यों गांवोंमें भी नये नये केन्द्र खुलते गये। अमरेली, धारी, चलाला, लालपर, बगसरा, केरिया आदि गांवोंमें तो चरखा चलने लगा। अिनके सिवाय वढ़वाण, वीरमगांव जैसे राष्ट्रीय जागृतिके स्थानोंमें और वेरावल, धोराजी वगैरा छोटे शहरोंमें भी हाथ-कताअीका अुद्योग चलने लगा।

ठक्कर साहब अिस समय महीनेमें कुछ दिन मुख्य कार्यालयमें रहकर कार्य संचालन करते, योजना बनाते, हिसाब-किताबकी देखरेख रखते, पूनियोंसे शुरू करके सूत कतकर वापस आने और सूतसे खादी बुनकर तैयार होनेसे लगाकर अुसकी बिक्री तककी सारी व्यवस्था और प्रबंध देखते थे। रोजमर्राके अंतजामी काममें कोअी विघ्न पैदा होता तो अुसे दूर करनेकी कोशिश करते और कार्यालयके कर्मचारियोंसे अच्छी तरह काम लेते। अिसके सिवाय वे कुछ समय अुत्पत्ति-केन्द्रोंमें दौरा करनेके लिअे रखते और वहां संचालकोंसे मिलकर अुनके काम और प्रश्नोंसे परिचित रहते। कार्यकर्ताओंको कोअी तकलीफ होती तो तुरंत अुसे दूर करते। कातनेवाली स्त्रियोंकी भी कोअी शिकायत होती तो अुसे सुनते। जहां जहां केन्द्रकी संभावना होती वहां जाकर जांच करते और लोगोंमें खादीके बारेमें अुत्साह भरते। स्थानीय कार्यकर्ता खड़े करते और नये नये केन्द्र शुरू करते।

अिस प्रकार धीरे धीरे काठियावाड़में पच्चीस या अुससे अधिक केन्द्र स्थापित किये जा चुके थे। काठियावाड़में अुस समय अेक भी अैसा स्थान नहीं होगा, जहां खादी-अुत्पत्ति और चरखेकी पुनःप्रतिष्ठाकी संभावना हो और अुसे चरितार्थ करनेके लिअे ठक्कर साहबने परिश्रम न किया हो। अिनमें से कुछ जगहोंमें सफलता मिली, और कुछमें असफलता मिली। परंतु ठक्कर साहब निरुत्साह हुअे बिना अपना कामकाज आगे बढ़ाते ही रहे और चार मासके अन्तमें सौराष्ट्र-भरमें ५,००० चरखे जारी कर दिये।

अिस प्रयोगका ब्यौरा देते हुअे ठक्कर साहबने अुस समयके 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया' के १६ जून, १९२१ के अंकमें प्रकाशित हुअे अेक लेखमें लिखा, "कातनेवाली सब स्त्रियां ही होती हैं। वे किसानों, रोजाना मजदूरी पर काम करनेवाले लोगों और मजदूर वर्गोंमें से आती हैं और शहरोंमें निम्न मध्यम श्रेणीके कुटुम्बोंसे आती हैं। अिनमें से कुछ परदेवाली औरतें भी होती हैं, जो अपने घरोंके बाहर नहीं जा सकतीं। अुनमें से हरअेक औसत दो आने रोज कमाती है। यह रकम कितनी ही छोटी और तुच्छ दिखाअी देती हो, तो भी अुन्हें आशीर्वाद-स्वरूप लगती है और जिन महात्माजीने चरखेका पुनरुद्धार किया अुन्हें वे हृदयसे आशिष देती हैं। यहां यह याद रखना चाहिये कि यह आय केवल अतिरिक्त आय है। रोजके दो आने बहुत नहीं माने जा सकते। फिर भी अिन गरीब लोगोंको जहां पहले कुछ नहीं मिलता था वहां अितनी छोटी अतिरिक्त आय भी अच्छी ही कही जायगी। अिस पत्रके १९ मअीके अंकमें अेक सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्रीने लिखा था कि,

"'अेक गरीब किसान अथवा रोजाना मजदूरी पर कातनेवाले परिवारमें चरखेसे हो सकनेवाली आय लाखों कुटुम्बोंमें भरपेट भोजन और अधूरे भोजनके बराबर फर्क कर देती है। मतलब यह है कि जिस परिवारको काफी आयके अभावमें अधभूखा या थोड़ा भूखा रहना पड़ता है, उस परिवारमें चरखा जारी होते ही अुसे पेटभर खाना मिलने लायक आय बढ़ाअी जा सकती है।'"

चरखेके कारण जैसे कातनेवालोंको लाभ होता है, वैसे ही पिंजारों और जुलाहोंको भी लाभ होता है। अिसका अुल्लेख करते हुअे आगे चलकर अुसी लेखमें बापाने लिखा:

"कातनेवालोंको पींजी हुअी रुअीकी पूनियां दी जाती हैं। पिंजाअीका खर्च अेक आना सेर आता है। अिससे अेक साधारण शक्ति रखनेवाला पिंजारा दो रुपये रोज तक कमा सकता है। सूत गांवके जुलाहोंको, जो जातिसे ढेढ़ होते हैं, दिया जाता है, क्योंकि दूसरे साधारण जुलाहे यह हाथ-कता सूत

बुनना पसन्द नहीं करते। यह सूत अेकसा नहीं होता, समय समय पर टूटता रहता है; अिसलिअे मिलके सूतकी अपेक्षा अिसे बुननेमें अधिक समय लगता है। जुलाहेको अेक रतल सूतकी पांच आने बुनाअी मिलती है। अिस प्रकार अेक मामूली जुलाहा अेक रुपया रोज कमा सकता है।"

खादीकी बिक्री और अुसके आर्थिक पहलू दोनोंके संबंधमें लिखते हुअे अुन्होंने कहा, "यहां अुत्पन्न होनेवाली खादी यहां अथवा बम्बअीमें बिकती है। स्थानीय विक्रीका प्रतिशत अिस समय बहुत कम होता है। परंतु भविष्यमें अैसी आशा रखी जाती है कि थोड़ा ज्यादा विज्ञापन करनेसे अुत्पन्न होनेवाली अधिकांश खादी अिस प्रान्तमें ही बिक जायगी।"

खादी-अुत्पत्तिके आर्थिक पहलू पर आते हुअे अुन्होंने लिखा:

"अेक मन (कच्चा) रुअीकी कीमत आजकल लगभग ९ रुपये पड़ती है, जब कि अुतनी रुअीको पिंजवा कतवा कर कपड़ा बनाया जाता है तब अुसकी कीमत ३२ रुपये होती है (कपड़ेका वजन ३१ पौण्ड रहता है)। अिन ३२ रुपयोंमें से २॥ रुपये पिंजारेको, ६॥ रुपये कत्तिनोंको और १०। रुपये जुलाहेको तथा ३ रुपये व्यवस्था-खर्चमें जाते हैं। खादीकी लागत कीमत २७ अिंच अर्जके अेक गजकी लगभग सात आने होती है। अुत्पत्तिका काम परोपकारी दृष्टिसे नहीं परंतु धंधेकी दृष्टिसे ही किया जाता है। परंतु अिसमें नफा नहीं लिया जाता और खादी मूल कीमतसे ही बेची जाती है। अिस काममें अिस समय लगभग ८०,००० रुपयेकी रकम पूंजीके तौर पर लगाअी गअी है और पिछले महीनेमें सब मिला कर २०,००० रुपये अलग अलग काम करनेवालोंको वेतन और मजदूरीके रूपमें दिये गये। चौमासेके बाद अिस कामका अधिक विस्तृत पैमाने पर विकास करनेका विचार है। अिस व्यवस्थाके तीन अंग — कताअी, पिंजाअी और बुनाअीमें कताअीका अंग सबसे कम आय देनेवाला है। फिर भी रोज सुबह बहुतसी स्त्रियां चारसे छः मील पैदल चल कर पूनियां लेने और सूत देने आती हैं और अितनी तेजीसे कतनेवाले सूतका बुना जाना संभव न होनेके कारण कुछ स्त्रियोंको तो काम दिये बिना ही वापस भेज देना पड़ता है।"

चार मास प्रयोग करनेके बाद अुसके बारेमें अपनी राय देते हुअे अुन्होंने लिखा:

"अपने अनुभवसे मैं यह कह सकता हूं कि कताअी अर्थात् चरखेका भविष्य अुज्ज्वल है। वह भी मुख्य व्यवसायके रूपमें नहीं, परंतु सहायक धंधेके तौर पर। अिसके लिअे अलबत्ता कातनेवाली स्त्रियोंको पूनियां नियमित रूपमें मुहैया करनी चाहिये। अिस प्रकारका काम मिलनेसे देहातमें रहनेवाले

लोग अपनी मामूली आमदनीमें थोड़ी वृद्धि कर लेते हैं। यह काम साधारण अच्छे दिनोंमें देहाती लोगोंके शहरकी ओर बहनेवाले बहावको जरूर रोकेगा और अकालके दिनोंमें गांवोंके स्त्री-पुरुष गांव छोड़कर कष्ट-निवारण केन्द्रोंमें जो अुमड़ पड़ते हैं वह भी अिससे बन्द हो जायगा। अिससे जुलाहे और बढ़अीको जो अप्रत्यक्ष लाभ होता है वह स्पष्ट है। जब तक देश मुख्यतः कृषिप्रधान रहता है, तब तक जिन लोगोंका जीवन खेती पर निर्भर है अुनके लिअे अतिरिक्त आय देनेवाला कोअी धंधा पूरी तरह आवश्यक है। भोजनके बाद सबसे जरूरी चीज कपड़ा है और अिस देशके लिअे चरखा ही सबसे अधिक अनुकूल गृह-अुद्योग है। शायद यह कहा जाय कि खादीकी मांग तो कृत्रिम मांग है। अिसलिअे वह अल्पायु है और देर सबेर अिसका निश्चित अन्त होनेवाला है। परंतु यह विचार तो अिस डरसे अुत्पन्न हुआ है कि मिलें चरखे और करघेसे भी अैसी मोटी किस्मका कपड़ा ज्यादा सस्ता पैदा कर सकती हैं। परंतु जब अैसा कपड़ा अपने ही गांवमें पैदा हो और मिलसे ज्यादा मजबूत और टिकाअू हो तथा बीचके आदमियोंके मुनाफेकी गुंजाअिश खतम कर दी जाय, तब वह गरीब वर्गके अधिकांश लोगोंकी मांगको अच्छी तरह पूरा कर सकेगा। अिसलिअे चरखेका पुनरुद्धार भारतके ग्राम-जीवनका अेक कामचलाअू अस्थायी अंग नहीं, बल्कि स्थायी अंग है और अुसे अुसी तरह देखना चाहिये। हमारा देश गांवोंमें जीता है, शहरोंमें नहीं।"

बापाने जो काम काठियावाड़में शुरू किया था अुसकी गति चौमासेमें धीमी हो गअी। परंतु चौमासा बीतते ही फिर वह काम दुगुने वेगसे शुरू किया गया। तीन महीनेका सतत प्रवास करके सौराष्ट्रके जिस जिस गांवमें संभावना हो सकती थी वहां वीरमगांवसे वेरावल और भावनगरसे पोरबन्दर तक खादी-अुत्पत्तिकी नयी छावनियां डाल दी गअीं और केन्द्रोंकी संख्या पैंतीससे बढ़ाकर पैंसठ कर दी गअी।

जहां नअी शाखा खुलती वहां अेक रुअीकी गांठ और ५०० से १,००० रुपये नकद देकर कार्यकर्ताको बिठा देते। अिस ओर गांवोंमें चरखे खतम हो गये तो बढ़अीको बुलाकर नये चरखे बनवाने शुरू कर दिये। अिस प्रकार अमरेलीका मुख्य कार्यालय चरखोंका कारखाना बन गया। अेक तरफ चरखे, दूसरी तरफ पूनियां, तीसरी तरफ सूत और चौथी ओर बुनाअीका काम, अिस प्रकार खादी-अुत्पत्तिकी अेक अेक क्रियासे सारा कार्यालय गूंज अुठा।

शुरूमें तीनसे चार नंबरका सूत ही ज्यादा कतता था। यह सूत छोटे पनेकी खादी बनानेके लिअे हरिजनोंको बुननेके लिअे दिया जाता था। काम बहुत बड़े पैमाने पर होता था और फिर नया था। अिसलिअे कुछ हरिजन धोखे-

बाजी भी करते थे। और बुनाअीमें चूना और अिस तरहकी दूसरी चीजें मिलाकर कपड़ेका वजन बढ़ाते थे। कुछ चालाक कातनेवाले भी वजन बढ़ानेके लिअे सूत पर पानी छिड़कते अथवा सूतकी बड़ी बड़ी आटियोंमें छोटे छोटे पत्थर छिपा देते थे और अुतने वजनकी रुअी या सूत बेचकर खा जाते थे। परंतु धीरे धीरे काम काफी व्यवस्थित हो गया और सावधानी बढ़ गअी, तो अपने आप अिस प्रकारकी धोखेबाजी कम हो गअी।

ठक्करबापाके खादी-कार्यके कारण गांधीजीका नाम सौराष्ट्र भरमें प्रचलित हो गया। अिससे पहले गांधीजीका नाम देहातके हजारों और लाखों लोगोंमें अितना परिचित नहीं था। अिसके सिवाय खादी-कार्यके आसपास और भी कअी समाजोपयोगी प्रवृत्तियोंका विकास होने लगा। अिनमें से अेक थी देहाती जीवनकी सामाजिक और आर्थिक स्थितिकी जांच। खादी-अुत्पत्ति और चरखे द्वारा खादी-सेवक ठक्करबापाकी सूचनाके अनुसार संबंधित गांवोंकी हकीकतें भी अिकट्ठी करते थे। गांव गांवकी जातिवार और धंधेवार आबादी, अुन लोगोंकी आमदनी, खेतीकी स्थिति और मवेशियोंकी तादाद वगैराके आंकड़े जितने सरकारी दफ्तरोंसे नहीं मिलते अुतने व्यवस्थित खादी केन्द्रोंमे मिलते थे।

अिसके सिवाय ठक्करबापा खादी-अुत्पत्तिको बढ़ानेके लिअे जगह-जगह हरिजनोंके सम्मेलन करते और अुन्हें समझाते कि चरखेके जानेसे अुनके बुनाअी-अुद्योगको भी किस प्रकार आघात पहुंचा और चरखेका ही सूत बुननेको अुन्हें प्रोत्साहित करते। अिस कामसे अस्पृश्यता-निवारणकी प्रवृत्तिको भी अनायास वेग मिला। अिस प्रवृत्तिके सिलसिलेमें ठक्करबापा जिन थोड़ेसे संस्कारी हरिजनोंके संसर्गमें आये, अुनमें दूदाभाअी और अुनकी लड़की लक्ष्मी भी थी। बापाने ही अुन्हें गांधीजीके पास साबरमती आश्रममें भेजा था।

अुस साल सौराष्ट्रमें खादी-अुत्पत्ति अितनी अधिक हुअी कि भारतका दूसरा कोअी भाग अुसकी बराबरी नही कर सकता था। सच पूछा जाय तो अितने बड़े पैमाने पर खादी-अुत्पत्तिका श्रीगणेश काठियावाड़में ही किया गया था। अुस समय काठियावाड़की खादी देशके भिन्न भिन्न भागोंमें जाती थी। अितने पर भी अुत्पत्ति अितनी ज्यादा बढ़ गअी थी कि थोड़े ही समयमें माल खूब अिकट्ठा हो गया और अुसकी बिक्री कैसे की जाय, यह चिन्ताका विषय बन गया। अुस समय औसतन् १०० मन सूत रोज तैयार होता था। अन्तमें अिसके लिअे काठियावाड़में खादीका काम करनेवालोंकी अेक सभा की गअी और बेचनेके लिअे खादी-फेरी वगैरा अुपाय भी सोचे और किये गये। अिस बीच सौभाग्यसे अहमदाबादमें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ। बापूकी

सलाहसे वहां खादी-नगर खड़ा किया गया और कांग्रेसके अधिवेशनके लिअे जो विशाल मंडप बनाये गये, प्रदर्शन रखे गये और दुकानें खड़ी की गअीं, अुनकी सारी सजावट खादीसे ही की गअी। अिसके लिअे रेलके डिब्बे भर भरकर खादी अहमदाबाद भेजी गअी और अुस अधिवेशनके कारण ६३,००० रुपयेकी खादीकी बिक्री हुअी।

अिस अनुभवके बाद काठियावाड़में खादी-अुत्पत्तिका काम मर्यादित कर दिया गया। अिस बीच ठक्करबापाको खादीके कामके लिअे जितना समय दिया गया था अुसकी मियाद पूरी हो जानेसे अुन्हें पूना वापस बुला लिया गया। परंतु अुनका काम तो पीछे भी चलता ही रहा।

अिस संबंधमें अेक और बात भी प्रचलित है। ठक्कर साहब अमरेलीमें खादीका काम कर रहे थे, तब असहयोग आन्दोलन देशमें पूरे जोरसे चल रहा था। अमरेलीमें भी अिस सिलसिलेमें समय-समय पर सभाअें होतीं। अिन सभाओंमें ठक्कर साहब केवल अुपस्थित ही नहीं होते, बल्कि विदेशी कपड़ेकी होली वगैरा होती वहां भी अेक खादी सेवकके नाते मौजूद रहते थे। यह बात अेक या दूसरी तरह रंग चढ़ाकर भारत सेवक समाज तक पहुंचाअी गअी। भारत सेवक समाजके राजनैतिक विचार गांधीजीके विचारोंसे सर्वथा भिन्न थे। अिसलिअे ठक्कर साहब खादी-अुत्पत्तिका काम करते हुअे खंडनात्मक अथवा कानून-विरोधी राजनीतिमें दिलचस्पी लें, यह भारत सेवक समाजके सूत्रधारोंको पसन्द नहीं हो सकता था। अिसलिअे भी बापाको समाजके सूत्रधारोंने वापस बुला लिया था, अैसी अेक राय है।

काठियावाड़में बापाने खादी-अुत्पत्ति कार्यमें अेक बरस बिताया। अिस अवधिमें अैसी भी कुछ घटनाअें हुअीं, जो हमें अुनके चारित्र्यकी झांकी, अुनके हृदयके दर्शन कराती हैं। अुनमें से कुछ नमूनेके तौर पर यहां पेश करता हूं।

बापा अमरेलीमें बहुत सादगीसे रहते थे। शुरूमें अमरेली आये तब मिलके देशी कपड़े पहनते थे और सिर पर साफा बांधते थे। परंतु जैसे जैसे खादी मिलती गअी, वैसे वैसे अुन्होंने अपनी पोशाक खादीमय बना ली। अुस समय अुन्हें समाजकी तरफसे ९० रुपये मासिक वेतन मिलता था। अिसलिअे वे खादी-कार्यालयसे अेक पाअी भी वेतन नहीं लेते थे। अुल्टे अपने वेतनकी बचतमें से दूसरोंकी मदद करते थे।

अुन्होंने अपनी पोशाक बिलकुल सादी बना रखी थी। मोटे हाथ-कते सूतकी धोती, कुर्ता और अूंची दिवालकी मोटी खादीकी टोपी पहनते और गांवोंमें जाते समय हाथमें बड़ा डंडा रखते थे। दूसरे गांवोंमें जाना

होता तब मोटी धोती और तौलियाका बंडल बगलमें दबाकर किसी भी क्षण जानेको तैयार हो जाते थे।

हर महीने कुछ दिन वे बाहरके केन्द्रोंका निरीक्षण करने जाते थे। अुसी तरह बगसरा भी जाते थे। बहुत वर्षोंसे हड़ालाके दरबार श्री वाजसूरवालाके साथ अुनका खूब गाढ़ परिचय था। अुनके यहां रामायण-भागवतकी कथाअें होती थीं। जब जब वे बगसरा जाते, तब खादी-कार्यालयका निरीक्षण करनेके बाद कथा सुनने अवश्य जाते थे। दरबार साहबके साथ संबंध खूब बढ़ जानेके बाद वे बहुत बार कूंकावावसे बगसरा जानेके लिअे अपनी मोटर मंगा लेनेका बापासे आग्रह करते थे। परंतु ठक्करबापा अक्सर भाड़ेकी मोटर लारीमें ही जाते थे। अेक बार अिस तरह लारीमें बैठकर ठक्करबापा और रामजीभाअी बगसरा जा रहे थे। लारीमें बहुत भीड़ थी। अिसलिअे बापाको पीछेकी सीट मिली। रास्ता खराब हो गया था और अुस वक्त लारियोंमें ठोस टायर काममें लिये जाते थे। अिसलिअे जहां जहां खराब रास्ता आता वहां बैलगाड़ीकी तरह ही लारीमें भी दचके लगते थे। अिसके सिवाय लारी बड़ी होनेके कारण दचका भी बड़ा ही लगता था। अुसके कारण बापाको पेटमें बहुत ही दर्द होने लगा। अिस दुःखसे बचनेके लिअे अुन्होंने पेट पर खूब सख्त पट्टी बांध ली। ठीक अुसी समय हड़ालाके दरबार श्री वाजसूरवाला साहबकी मोटर बगसरासे कूंकावावकी तरफ जा रही थी। अुन्होंने लारीमें ठक्कर साहबको बैठा देखकर मोटर खड़ी कराअी। दरबार श्री वाजसूरवाला साहब अुनका धूलमें भरा शरीर, कपड़े और पेट पर बंधी हुअी पट्टी वगैरा देखकर परिस्थिति समझ गये। अुन्होंने कहा, चलिये, मोटरमें आ जाअिये। ठक्करबापा और रामजीभाअी अित्यादिको मोटरमें ले लिया। फिर दरबारश्रीने कहा, "अमृतलालभाअी, अमरेलीसे अिधर आना हो तब खबर दे दें तो मोटर भेज दूं और आपको यह व्यर्थ कष्ट न अुठाना पड़े। अब तो खबर देंगे न?" अुस दिन बापाको लारीमें जितनी परेशानी अुठानी पड़ी, वह सब दरबारश्रीने देख ली थी। बापाको शर्म आअी, अिसलिअे अुन्होंने कुछ भी आनाकानी किये बिना तुरंत ही कह दिया कि हां, आयंदा मैं समाचार भेज दिया करूंगा। अिस घटनाके बाद वे दरबारश्रीकी मोटर जरूरत पड़ती तब निःसंकोच होकर मंगा लेते।

ठक्कर साहबकी अिंजीनियरीकी कुशलताके बारेमें अेक बात दरबारश्री वाजसूरवाला प्रसंग आने पर कह सुनाते थे। यहां वह घटना देने जैसी है। १९०९ से १९१३ के वर्षोंमें दरबारश्री पोरबन्दर राज्यके सीनियर अेडमिनि-

ट्रेटर थे। अुन दिनों अुन्होंने बम्बअी म्युनिसिपैलिटीमें नौकरी कर रहे और पोरबन्दर राज्यमें नौकरी कर चुके अिंजीनियर अमृतलाल ठक्करको पोरबन्दर बुलाया था और अुन्हें सन्तोष हो अुतने वेतन पर अुस राज्यके अिंजीनियरकी जगह स्वीकार करनेका प्रस्ताव किया था, अिस घटनाका अुल्लेख मैं पहले कर चुका हूं। अुस समय दरबारश्री अुन्हें अपने वतन बगसरा भी ले गये थे।

बगसराके अुनके दरबारगढ़के दरवाजेके अूपर बने कमरेकी दीवारमें अेक बड़ी दरार पड़ गअी थी। यह शंका हो चली थी कि सारा मकान बैठता जा रहा है। अिसलिअे दरबारश्रीने दो तीन कुशल अिंजीनियरोंकी सलाह ली थी और अुनकी यह राय हुअी थी कि सारी दीवारको तुड़वाकर दुबारा चुनाअी करा लेनी चाहिये, नहीं तो मकानको खतरा है।

बगसरामें दरबारश्रीने अमृतलालभाअीसे सलाह ली। अुन्होंने अेक प्रयोग बताया। मोटे भूरे कागजके टुकड़े करके दीवारकी दरार पर थोड़े थोड़े अंतरसे चिपकवा दीजिये। महीने दो महीनेमें ये टुकड़े खिचकर फट जायं तो समझना चाहिये कि दीवार बैठ रही है। कागज जैसेके तैसे रहें तो अिस दरारमें सीमेंटका पलस्तर लगवा दिया जाय।

दरबारसाहबने अिस सुझाव पर अमल किया। कागज फटे नहीं। दरार बढ़ी नहीं। अिसलिअे अुसमें पलस्तर लगवा दिया गया। अुसके बाद आज तक वह दीवार नहीं तुड़वानी पड़ी।

काठियावाड़में खादी-कार्य कर रहे थे, अुस बीच अेक दुर्घटना हो गअी थी। बगसरामें खादी-कार्यालय नदीके सामनेवाले मोहल्लेमें था। अेक बार चौमासेके दिनोंमें खादी-कार्यालयका हिसाब-किताब और अन्य कार्यका निरीक्षण करके बापा कमर तक के पानीमें नदी पार करके गांव तरफ आ रहे थे। अितनेमें अूपरकी तरफ बरसातका जोर होनेके कारण नदीमें अचानक बाढ़ आ गअी। बापा नदीके बीचमें थे। अब आगे भी दौड़कर नहीं जा सकते थे और न पीछे ही जा सकते थे। बापा कोअी निर्णय करते, अिससे पहले तो पानीका अुछाल आ गया। बापाके पांव जमीनसे अुखड़ गये और वे पानीमें बहने लगे। खादी-कार्यालयके हरिजन जुलाहे श्री वालाभाअीने किनारे पर खड़े खड़े यह देखा तो दौड़कर पानीमें कूद पड़े, बापाको पकड़कर अुठा लिया और अपने कंधे पर बिठाकर बाढ़से निकालकर तुरंत घर ले आये। बापा डूबते-बहते हुअे थोड़ा पानी पी चुके थे। अुनकी प्रारंभिक सेवा-शुश्रूषा करके पेटमें से पानी निकलवा दिया

गया। अिस प्रकार अेक हरिजनकी साहसपूर्ण सहायतासे बापा अेक दुर्घटनासे बच गये।

यह घटना बापाको वर्षों तक याद रही। १९२१ के बाद बारह-तेरह वर्ष और बीत गये। अुसके बाद १९३४ में बगसरा बालशिक्षा मंडलकी संस्थाके मकानोंका शिलान्यास करनेके लिअे बापाको विशेष निमंत्रण देकर बुलवाया गया था। अुस समय अुन्होंने मकानोंका शिलान्यास किया। अिसके सिवाय अेक सौ हरिजनोंको शराब न पीनेकी प्रतिज्ञा लिवाअी। अिस अवसर पर अुन्होंने पुरानी जान-पहचान ताजी की। १९२०–२१ में अपनेको बचानेवाले जुलाहे श्री वालाभाअीको वे भूले नहीं थे। बापा अुनके घर गये, अुनसे मिले और पुरानी घटना याद दिलाअी। अुनके घरका प्रेमसे पानी पिया और वालाभाअीके छोटे लड़केको अपनी गोदमें बिठाकर अुसके हाथमें चांदीका सिक्का दिया।

१५

अुड़ीसामें कष्ट-निवारण कार्य

१९२० में अुड़ीसाके पुरी जिलेमें अकाल पड़ा। लोग भारी संकटमें फंस गये। जिलेके अेक विभागमें महानदीकी अेक शाखा कुशभद्रामें बाढ़ आ गअी। कितने ही गांव अिस बाढ़के शिकार बन गये। कितने ही लोग मारे गये। कितने ही बेघर हो गये। अिस बार गांधीजीने और भारत सेवक समाजने वहांकी परिस्थिति प्रत्यक्ष देखकर अुसके बारेमें रिपोर्ट तैयार करने और अकाल-पीड़ितों तथा बाढ़-ग्रस्त लोगोंके लिअे कष्ट-निवारण कार्य करनेके लिअे ठक्करबापाको अुड़ीसा भेजा। अिससे पहले बापा मथुरा, गुजरात, सौराष्ट्र वगैरा अनेक जगहों पर अकाल-राहतका काम कर चुके थे और अिस विषयके निष्णात बन चुके थे। अिसलिअे अुड़ीसा भेजनेके लिअे भी अुन्हींको पसन्द किया गया। १९२० के अप्रैलकी २७ तारीखको वे पुरी पहुंचे। अुसके बाद वे आसपासके गांवोंमें घूमे। बीसेक दिन दौरा करके अुन्होंने जो कुछ हकीकतें अिकट्ठी कीं अुनका विवरण पेश किया। अुस समयके भारत सेवक समाजके मुखपत्र 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया' में वह छपा। वह सारा विवरण अुड़ीसाके अुस समयके अकाल और अुसमें सरकारी और गैरसरकारी ढंगसे हो रहे कष्ट-निवारण कार्य पर अच्छा प्रकाश डालता है। विवरण अिस प्रकार है:

"१९१८–१९ का वर्ष सारे भारतमें आम तौर पर कमीका वर्ष था। अुड़ीसा भी अुसमें अपवाद नहीं था। पुरी जिला अपनी थोड़ी और असमान वर्षाके लिअे और महानदीकी शाखाओंमें बार बार आनेवाली बाढ़ोंके लिअे अत्यंत प्रसिद्ध है। अुड़ीसाके अिस जिलेमें चावलके भाव बहुत ही बढ़ गये। चावल रुपयेके छः (पक्के) सेरके हिसाबसे मिलने लगा। अिस प्रकारकी अूंची दरोंके सामने टिके रहनेके लिअे जिला बोर्डोंको पिछले साल लोगोंको सस्ते भाव पर मुहैया करनेके लिअे मोटे चावलके भंडार खोलने पड़े थे। मानो यह सब कम हो, अिसलिअे अैसे खराब वर्षके अन्तमें कुशभद्राके किनारे तोड़ कर बाढ़ छलक अुठी। नतीजा यह हुआ कि कुशभद्रा और भार्गवी नदीके बीचका १५० वर्गमीलका प्रदेश जलमय हो गया। कुछ निचाअीवाले भागोंमें तो पानी दस फुट तक चढ़ गया और यह बाढ़ अेकसे छः सप्ताह तक जारी रही। परिणामस्वरूप चौमासेकी फसलका सफाया हो गया। अिस पर भी नवम्बर मासमें असमयकी बरसात आ गयी, जिसने खरीफकी फसलको भी काफी नुकसान पहुंचाया। अिस प्रकार किसान और खेतोंके मजदूर सर्वथा निराधार बन गये और भुखमरीकी स्थितिमें फंस गये।

"अुड़ीसाके किसान स्वभावसे डरपोक और कमजोर होते हैं, क्योंकि सोलहवी सदीसे अफगान, मुगल और मराठा अुन पर जुल्म गुजारते आये हैं। अिसके अलावा ये किसान और खेती-मजदूर अत्यंत गरीब होते हैं और हमेशा भुखमरीके किनारे रह कर ही जीते हैं। पुरी शहरमें सार्वजनिक लोकमत बहुत बलवान न होने पर भी मअी १९१९ में अेक सभा करके सरकारसे अिस प्रदेशको भी कमीवाला अिलाका घोषित करनेकी मांग की गअी थी। पिछले मार्च मासमें श्री गोपबन्धुदासने बिहारकी धारासभाके सामने अकाल-पीड़ितोंकी तसवीरें और पेड़ोंके जिन कंदमूल पर वे जी रहे थे अुनकी जड़ें और धानके छिलके पेश करके अपने जिलेके अकाल-ग्रस्त लोगोंके संकट पर प्रकाश डाला था और कष्ट-निवारणकी आवश्यकता पर जोर देकर दो लाख रुपयोंकी मांग की थी। अितने पर भी संकटग्रस्त लोगोंके दुःख हल्के करनेको, अुन्हें राहत पहुंचानेको कोअी कदम सरकारकी तरफसे नहीं अुठाये गये। अिस बीच पुरी अकाल-निवारण-समितिकी तरफसे और पुरी जिलेके पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट रायबहादुर सखीचंदकी तरफसे अुनके निजी दानकी रकममें से लोगोंको मुफ्त चावल बांटनेकी गैरसरकारी योजना अमलमें लायी गयी। कलकत्तेका हिन्दी नाटच समाज भी अिन लोगोंकी सहायताके लिअे दौड़ा। और अिस प्रकार अकाल-पीड़ित लोगोंको गैरसरकारी ढंग पर मुफ्त चावलके रूपमें थोड़ी बहुत मदद मिली, साथ ही रायबहादुर सखीचंदने

पुरीमें अेक अनाथालय और दवाखाना खोला है। अुसमें बच्चे और आदमी अितनी बड़ी संख्यामें अुमड़ आये हैं कि अुन्हें संभाला नहीं जा सकता। पिछले मार्च महीनेसे भारत सेवक समाजने श्री लक्ष्मीनारायण साहूको थोड़ी रकम देकर गैरसरकारी ढंग पर कष्ट-निवारणका काम करने भेजा था।

"अिन तमाम सार्वजनिक प्रयत्नोंके फलस्वरूप सरकारको अपनी जगहसे हिलना पड़ा और अन्तमें अुड़ीसा विभागके कमिश्नर अकाल-ग्रस्त क्षेत्रको देखने गये। यह यात्रा बिलकुल अूपरी ढंगकी थी, अुसमें गंभीरताका नाम भी नहीं था। यात्राके अंतमें अुन्होंने बताया कि, 'अखबारों और सार्वजनिक सभाओंमें अकालकी परिस्थिति जैसी वर्णन की गअी है वैसी नहीं है। परिस्थिति जरा भी गंभीर नहीं। और श्री दासने स्थितिका जो बयान बिहारकी धारासभाके सामने रखा था, वह बहुत अत्युक्तिपूर्ण था।'

"अिस प्रकार अकालकी परिस्थितिके बारेमें और लोगोंके दु:खके बारेमें सरकारी और गैरसरकारी दृष्टिकोणके बीच अितना बड़ा फर्क पड़ जानेसे अन्तमें अुड़ीसाके लेफ्टिनेण्ट गवर्नर सर अेडवर्ड गेट गत अप्रैलकी ७ तारीखको संकटग्रस्त क्षेत्रका मुआअिना करने गये। लोगोंको अुस समय जिस संकटका सामना करना पड़ रहा था, अुसे देखते हुअे अुनकी यात्राका असर बहुत अच्छा हुआ। भले ही लोगोंने जितना चाहा था अुतना सब तो अुन्हें नहीं मिला, फिर भी अुनके आगमनके बाद संकटग्रस्त लोगोंको काफी सहायता मिली। लोगोंको चावल और पकाया हुआ भात बांटनेके लिअे गांवोंके झुंडोंके बीच बीचमें अेक अेक करके छ: केन्द्र शुरू किये गये। अिन केन्द्रोंमें कुल मिलाकर ५,२०० मनुष्योंको चावल और पकाया हुआ भात दिया जाता है। अिसके लिअे अेक खास डिप्टी कलेक्टरकी नियुक्ति की गअी है और यह काम अुसे सौंपा गया है। अितने पर भी अकाल-निवारण कानूनमें जो व्यवस्था है, अुससे कम अनाज अिन सब लोगोंको दिया जाता है। कानूनके अनुसार पुरुषोंको ६० तोला और स्त्रीको ५० तोला चावल मिलना चाहिये, परन्तु यहां सबको ४० तोला दिया जाता है। फिर, अितने सारे लोगोंको संभालनेके लिअे केवल छ: केन्द्र ही काफी नहीं हैं। दूसरे बहुतसे गांवोंको राहत पहुंचानेके लिअे अभी और नये केन्द्र स्थापित करनेकी जरूरत है। अकाल-ग्रस्त भूखे और अशक्त लोगोंको चावलका 'डोल' दिया जाता है। परन्तु जो सशक्त हैं और मेहनत-मजदूरी कर सकते हैं, अुन्हें काम भी मिलना चाहिये, जिससे वे अपने गांवमें या पासके स्थान पर काम करके रोजी कमा सकें और अपना गुजर कर सकें। जो क्षेत्र अुग्र संकटमें आ गया है अुसका क्षेत्रफल लगभग २५० वर्गमील है और अुसमें

बसे हुअे गांवोंकी संख्या लगभग ४०० है। आबादीके हिसाबसे सारे जिलेकी दस लाख जनसंख्यामें से डेढ़ लाख आदमी अकाल-ग्रस्त हैं। दूसरे प्रदेशोंकी अपेक्षा यहां अैसे समृद्ध किसानों और कारीगरोंकी संख्या बहुत थोड़ी है, जिन्हें मददकी जरूरत न हो। अिसलिअे और जगहोंके बनिस्बत यहां ज्यादा बड़ी संख्याको राहत मिलनी चाहिये और अुनके लिअे मुफ्त चावल और भातका प्रबंध होना चाहिये।

"अिस बीच अकालने अपने खप्परमें असंख्य मनुष्योंके जीवनकी बलि ले ली है। प्रत्येक गांवने — भले वह बड़ा हो या छोटा — थोड़े बहुत मनुष्य तो खोये ही हैं। यहां गांव बहुत ही छोटे होते हैं और अुनमें दससे लगाकर सौ घरों तककी बस्ती होती है। अैसे अेक अेक गांवमें केवल भुखमरीके कारण तीनसे चार दर्जन मनुष्य और अेक गांवमें तो ७५ मनुष्य मौतकी शरणमें गये हैं। भिखारी, कोढ़ी और आवारा आदमी आसानीसे अिसके शिकार बन गये हैं। बच्चे और बूढ़े बड़ी तादादमें मर गये हैं और जवान भी अिस अकालके खप्परमें समा गये हैं। यहां मैंने घर छोड़कर चले गये बड़ी अुम्रके स्त्री-पुरुषों और बालकोंका तो, जो रास्तेमें मर गये होंगे, अुल्लेख ही नहीं किया है। सरकारने कष्टनिवारण कार्य शुरू करनेमें अितनी देर न की होती तो अकालके परिणामस्वरूप मरनेवाले मनुष्योंकी संख्या बहुत थोड़ी होती।

"मृत्युसंख्याका कुल जोड़ कितना हुआ है, यह तो मैं नहीं कह सकता। अपने आठ दिनके दौरेमें मैंने ४० गांव देखे हैं। अिन गांवोंमें जांच करनेसे पता चला है कि अिन गांवोंमें और कुछ दूसरे गांवोंमें, जिनके मेरे पास आधारभूत आंकड़े हैं, कुल मिलाकर ४४० मनुष्य भूखके कारण मृत्युको प्राप्त हुअे हैं। अिस गणनाके अनुसार यदि सारे प्रदेशका कमसे कम अंदाज लगायें, तो भी १,५०० मनुष्य अवश्य भुखमरीसे मर गये होंगे। अपनी आंखोंके सामने ही मैंने नीमापारा केन्द्रमें अेक भूखे आदमीको मरते देखा। और अेक अन्य गांवमें अेक दूसरे आदमीको मरा हुआ देखा। मैं वहां पहुंचा तब तक मरनेको घंटों हो चुके थे, लेकिन स्मशानमें जलानेके लिअे अुसे हटाया नहीं गया था। पुरीकी गैरसरकारी अकाल-निवारण-समितिके तीन सदस्योंने ६० घरोंकी बस्तीवाले अेक गांवके बाहर मरे हुअे मनुष्योंकी तेरह खोपड़ियां और कुछ अस्थि-पंजर पड़े हुअे देखे थे। अिस गांवमें पिछले अगस्तसे अब तक २७ आदमी मर चुके हैं। अिस छोटेसे गांवके लिअे यह आंकड़ा बहुत बड़ा कहा जायगा और मृत्युका अनुपात बहुत भारी माना जायगा। पुरीसे केवल सोलह मील दूर सुतान नामक गांवमें पिछले अगस्तकी बाढ़के समयसे

लगभग ६० से ८० मनुष्य मर गये बताते हैं। और हम जिस दिन अिस गांवको देखने गये अुस दिन स्मशान-भूमिमें हमें दुर्भाग्यवश २८ मनुष्योंकी खोपड़ियां देखनेको मिलीं।

"आम तौर पर अिस प्रकारके अकालका संकट पैदा होनेकी संभावना हो, तो अुससे पहले अुसका सामना करनेकी तैयारीके तौर पर पुलिसको नीचे लिखी तीन बातोंका समय समय पर विवरण पेश करना चाहिये। १. भूखा या निराधार मनुष्य आवारा फिरता दिखाअी दे तो अुसकी खबर देना; २. मृत्युके अनुपातमें हमेशासे ज्यादा असाधारण वृद्धि हुअी हो तो अुसकी खबर देना; और ३. भुखमरीकी घटनाअें हुअी हों तो अुनकी सूचना करना (देखिये बिहार अकाल कानून, १९१३ की धारा ३४)। गांवोंके अेक समूहकी २,७५० मनुष्योंकी आबादीमें तो अिस वर्षके आरंभके चार महीनोंमें, यद्यपि वहां भुखमरी नहीं फैली थी, मैंने प्रति मील १८३ मृत्युसंख्या देखी। पुलिसकी रिपोर्ट हो या न हो, तो भी क्या यह अेक तथ्य अिस बातका निर्देश करनेको काफी नहीं है कि यहां असाधारण संकट पैदा हो गया है? अितनी सारी मृत्युओंमें से आधी तो केवल भुखमरीके कारण ही हुअी हैं। यह तथ्य गांवोंके चौकीदारोंने जो आंकड़े दिये हैं अुनसे साबित होता है। फिर छोटे छोटे पुलिसके आदमी यह मानते हैं कि अगर हम अिस बातका सही आंकड़ा पेश करेंगे कि लोग भुखमरीसे मर गये तो अुसके लिअे हमें जिम्मेदार माना जायगा। अिसलिअे लोग भुखमरीसे मरे हों तो भी वे सच्चा हाल नहीं बताते। अुसके बजाय यह बतानेका प्रयत्न करते हैं कि वे अमुक बुखार, हैजा, दस्त वगैरा रोगोंसे मर गये हैं। वास्तवमें अकाल कानून अिस प्रकारकी भुखमरीसे मरे हुअे मनुष्योंके सही आंकड़े पेश करना अुनका फर्ज मानता है। परन्तु अिस प्रकारकी रिपोर्ट देनेकी तकलीफसे बचनेके लिअे झूठी रिपोर्ट पेश करने और यह बात कहनेका मानो अुन्होंने नियम ही बना लिया है कि लोग भुखमरीके बजाय रोगसे मर गये हैं। यह चीज मैंने अनेक मामलोंमें देखी है। अिनकी अिस प्रकारकी रिपोर्टें सरकारको गुमराह करती हैं और लोगों और सरकारको गलत तौर पर यह माननेको प्रेरित करती हैं कि लोगोंकी स्थिति अच्छी ही है। अिस प्रकार सरकारको वे समय पर कदम अुठानेसे रोक कर निर्दोष जनोंकी मृत्युका कारण बनते हैं।

"और अिस समय भी भुखमरीके कारण मृत्युअें होनेके अुदाहरण अुपस्थित न होते हों सो बात नहीं है। आअिंदा अधिक मृत्यु न होने देनेके लिअे अिस समय जितने मनुष्योंको मुफ्त अनाज और पकाया हुआ चावल दिया जाता है, अुससे तिगुनी जनसंख्याको यह राहत मिलनी चाहिये। फिर,

अशक्त मनुष्योंको काम मिले अिसके लिअे कुछ केन्द्रीय गांवोंमें ही नहीं, परन्तु गांव-गांवमें काम खोलने चाहिये। अिसके साथ-साथ मुझे यह भी बताना चाहिये कि गैरसरकारी मनुष्योंको—लोगोंको आगे आकर खानगी तौर पर रुपया देना चाहिये और दूसरी जो भी मदद दी जा सके देनी चाहिये। चालीस-पचास बरसकी स्त्रीको घुटने तक पहुंचनेवाले फटे-टूटे कपड़े पहने देखना और तेरह-चौदह वर्षकी लड़कीको केवल लंगोटी पहने अर्धनग्न स्थितिमें खड़े देखना अत्यंत दुःखद वस्तु है। अैसे नंगे लोगोंके शरीर ढंकनेके लिअे, मरते हुअे बच्चोंको दूध देनेके लिअे, घर छोड़कर चले गये लोगोंको फिरसे बुलाकर अुनके घरोंमें बसनेकी अनुकूलता पैदा करनेके लिअे, निराधार और अनाथ बने हुअे मनुष्योंकी देखभाल करानेके लिअे और अुन्हें फिरसे अपने पैरों पर खड़ा कराके नये सिरेसे जीवन आरंभ करनेके लिअे पैसेकी—बहुत पैसेकी जरूरत है। बंगालके धनवान जमींदार और अन्य लोग, जिनकी अुड़ीसामें बड़ी बड़ी जागीरें हैं वे जागीरदार, कलकत्तेके धनाढ्य मारवाड़ी व्यापारी और सदा अुदारता दिखानेवाले बम्बअीके लखपति पुरीके वकील बाबू जगबंधुसिंहको अपना चंदा भेज दें। अिस अभागे और अुपेक्षित जिलेकी मदद करनेके लिअे अेक लाख रुपयेकी रकम कुछ ज्यादा नहीं मानी जा सकती।"

यह विवरण 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया' और 'नवजीवन' पत्रोंमें छपनेके बाद अुसके अुद्धरण भिन्न भिन्न समाचारपत्रोंमें भी आने लगे। और अिस समयकी सरकारकी लापरवाही और निष्ठुरताकी नीतिकी आलोचनाअें भी की गअीं। दूसरी तरफ, अिन लेखोंको पढ़कर बम्बअी-कलकत्तेके जिन अुदार सज्जनोंके हृदय पिघले, अुन दानियोंने दान भेजे और ठक्करबापाने जिस रकमकी मांग की थी अुसे लगभग पूरा कर दिया। अिस रुपयेसे ठक्कर-बापाने पुरीमें और आसपासके अनेक गांवोंमें अनेक स्थानों पर कष्ट-निवारण भोजनालय शुरू किये और अुड़ीसाके अस्थि-पंजर बने हुअे लोगोंको चावल देकर मौतके मुंहमें जानेसे बचाया।

अुड़ीसामें अुन्होंने अितना बढ़िया काम किया कि गांधीजी भी अुनके कामसे बहुत प्रभावित हुअे। यहां तक कि अिस असेंमें जब भारत सेवक समाजके अध्यक्ष श्रीनिवास शास्त्रीजीने ठक्करबापाको अफ्रीकाके भारतीयोंकी मदद करने और अुनके प्रश्नोंके निपटारेमें सहायक होनेके लिअे ब्रिटिश गियाना भेजनेका विचार किया और अुसके लिअे अुन्हें अुड़ीसाके कामसे मुक्त करनेकी गांधीजीसे अनुमति मांगी, तो गांधीजीने अुन्हें अिनकार करते हुअे अुत्तरमें लिखा:

"मैं आपके साथ श्री अमृतलाल ठक्करकी ब्रिटिश गियानाकी प्रस्तावित यात्राके बारेमें बात कर लेना चाहता था। वहां जो काम करना है असकी यहां अुड़ीसामें वे जो काम कर रहे हैं अुसके साथ तुलना ही नहीं हो सकती। वहां ब्रिटिश गियानामें तो कोअी तीसरी श्रेणीका साधारण कोटिका आदमी भी भेजा जा सकता है। परन्तु अुड़ीसामें अिनकी जगह ले सके और अिनकी अनुपस्थितिमें कुशलतापूर्वक काम संभाल सके, अैसा कोअी आदमी है ही नहीं। अिसलिअे मैं आशा रखता हूं कि अकाल-निवारणका काम पूरा होने तक आप अिन्हें वहांसे नहीं हटायेंगे।"

ठक्करबापा अुड़ीसामें रहकर जो काम करते थे अुसके समाचार गांधीजीको जरूर भेजते थे। अुसके साथ साथ अुड़ीसाकी स्थायी गरीबी, आलस्य, लोगोंकी कंगाल आर्थिक और मानसिक स्थिति वगैराके बारेमें भी अुन्होंने गांधीजीको परिचित कराया। समय समय पर हृदयद्रावक तथ्य भेजकर गांधीजीके हृदयकी करुणा-नदीको अुन्होंने अुड़ीसाकी तरफ मोड़ा और अन्तमें १९२१ में वे गांधीजीको प्रेमके बल अुड़ीसाके अकाल-पीड़ित क्षेत्रमें खींच लाये। गांधीजीने पुरी जाकर जो स्थिति देखी, अुसका चित्र अुन्होंने 'नव-जीवन के अेक लेखमें अिस प्रकार दिया है:

"सन् १९२१ में जब मैं जगन्नाथपुरी गया, तब वहां मैंने अैसा बहुत कुछ देखा जो आसानीसे भुलाया नहीं जा सकता। परन्तु अुसमें दो वस्तुअें तो अैसी थीं, जिन्हें मैं कभी नहीं भूलूंगा। अेक तो रात-दिन मेरे मस्तिष्कमें बार बार आती ही रहती है।

"अुन दिनों जगन्नाथपुरीमें अेक बहुत ही भला परोपकारी सुपरिन्टेन्डेण्ट था। अुसके आश्रयमें अेक अनाथालय चलता था। अुसे देखने वह मुझे ले गया था। अुसमें अनेक हृष्टपुष्ट प्रफुल्लित बालक रस्सियां गूंथना, टोकरियां बनाना, कातना-बुनना और अैसे ही अन्य अुद्योग करके सुखी जीवन बिताते थे। अुस पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्टने मुझसे कहा था कि ये सब बच्चे अकालपीड़ित माँ-बापोंके हैं और अिनमें से कुछ तो अस्थि-पंजर जैसी दशामें ही अनाथालयमें भरती किये गये थे।

"यह आश्रम दिखलानेके बाद वह भला सुपरिन्टेन्डेन्ट मुझे अेक खुली जगहमें ले गया। यहां जगन्नाथजीके मन्दिरकी ही छायामें नगरके आसपास बारह मीलके भीतर रहनेवाले अकाल-पीड़ित लोगोंको कतारबन्द बिठाया गया था। अुनमें से कुछके प्राणोंकी रक्षाका श्रेय तो अुदार गुजरातियोंको और गुजरातियोंसे प्राप्त धनसे चावल खरीदकर अुन्हें मुट्ठी-मुट्ठी बांटने-

आदिवासियोंके बीच (अुड़ीसा)
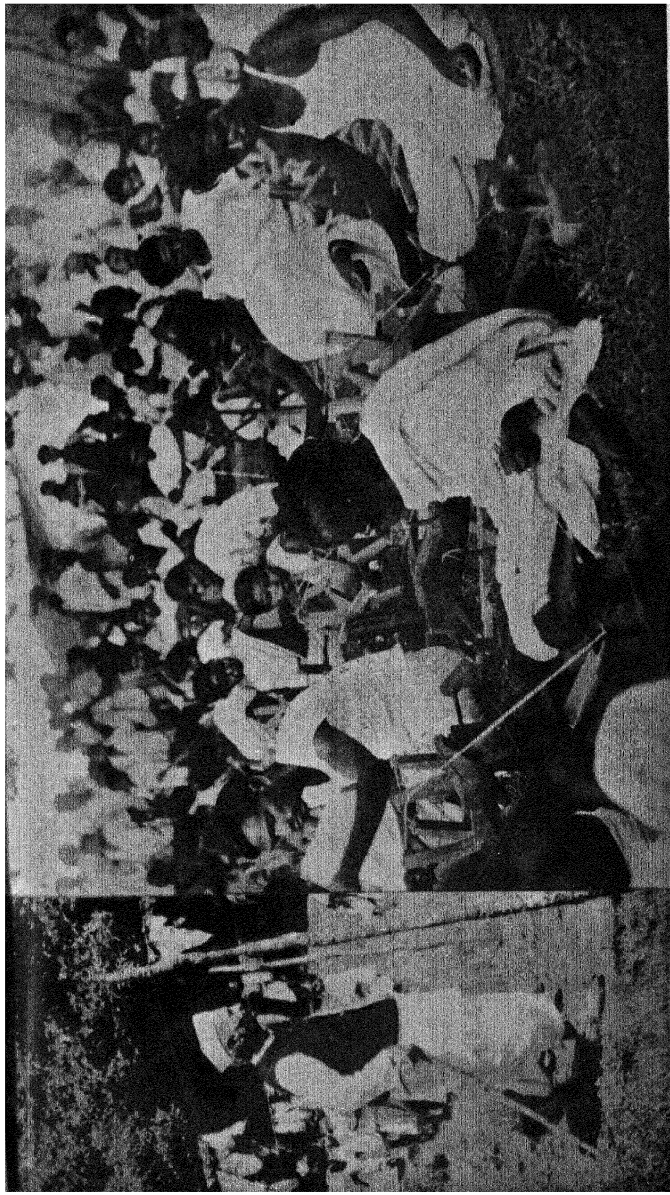
वाले श्री अमृतलाल ठक्करको था। अिन लोगोंमें प्राणोंकी ज्योति धीरे धीरे मन्द पड़ती जा रही थी। वे निराशाकी सजीव मूर्ति जैसे थे। अुनकी पसलियां अेक अेक करके गिनी जा सकती थीं। अेक अेक नस फूलकर बाहर आ पड़ी थी। किसीके शरीर पर मांस या स्नायुका नाम नहीं था। सिमटी हुअी झुर्रियोंवाली चमड़ी और हड्डियां ही नजर आती थीं। आंखोंका तेज अुड़ गया था। सबके चेहरों पर मानों मर जानेकी अिच्छा फैली हुअी थी। अैसा मालूम होता था मानो जो मुट्ठीभर चावल अुन्हें मिलता था अुसके सिवाय अिस संसारमें और किसी चीजमें अुनकी दिलचस्पी नहीं रह गअी थी। दाम लेकर वे काम करनेको तैयार नहीं थे। प्रेमके लिअे करते या नहीं, कौन जाने? हमारे दिये हुअे मुट्ठीभर चावल खाकर वे अपना जीवन टिकाये हुअे थे। यह भी कहीं वे हम पर मेहरबानी ही न कर रहे हों! अिस प्रकारकी स्थितिमें फंसे हुअे ये स्त्री-पुरुष — हमारे ही भाअी-बहन — अिस प्रकार धीरे धीरे यातनायें भोगकर मौतकी शरण जा रहे थे। यह मैंने अपने अनुभवमें सबसे बड़ी करुणाजनक घटना जानी है। अुनके लिअे तो जिन्दगीका अर्थ मजबूर होकर सहन किया जानेवाला अखंड अुपवास है। और जब वे सदाव्रतका चावल खाकर प्रसंगोपात्त अपना अुपवास तोड़ते हैं, तब अैसा लगता है कि कहीं वे हमारे सुखचैन भरे निष्ठुर जीवनके लिअे हमें शरमानेको तो नहीं कह रहे हैं? . . . "

बिहारकी धारासभामें श्री गोपबन्धु दासने अुड़ीसाके अकालकी परिस्थिति और पीड़ितोंका जो वर्णन किया था, वह अुड़ीसाके कमिश्नरको अतिशयोक्तिपूर्ण लगा। अुन्हीं अकाल-पीड़ितोंका गांधीजीका यह आंखों देखा चित्र है। सरकारी दृष्टि और राष्ट्रीय मानवताकी दृष्टिमें अुस समय कैसा जमीन-आसमानका फर्क रहता था, अिसका यह अेक ठोस प्रमाण है। परन्तु ठक्करबापाने १९१६ से १९४४ तकके अकालोंमें जब जब कष्ट-निवारण कार्य किया, तभी अुन्हें सरकारके साथ हमेशा टक्कर लेनी पड़ी और हर बार अुन्हें कड़वी बात सुनानेको विवश होना पड़ा। यह फर्ज बापा जरा भी हिचकिचाये बिना अदा करते थे।

पुरीके अकालके बारेमें बापाने अकाल-ग्रस्त लोगों और जिलेमें होनेवाली मृत्युओंका ब्यौरा देनेवाले लेख छपवाये और अुनके आधार पर अखबारोंमें सरकारकी लापरवाही और निष्ठुरता भरी नीतिकी आलोचनाअें आअीं, तब सरकार कुंभकर्णी नींदसे जागी और कष्ट-निवारण कार्य अधिक विस्तृत करनेके बजाय अुसने ठक्करबापाके पेश किये हुअे विवरणोंमें अुपस्थित कुछ मुद्दोंके स्पष्टीकरण किये तथा सरकारी कार्रवाअीका लंगड़ा बचाव करनेका

प्रयत्न किया। मगर ठक्करबापा यों किसीसे दब जानेवाले नहीं थे। सरकार द्वारा प्रकाशित कम्यूनिक — बयानका अुन्होंने जो करारा जवाब दिया, अुसमें अुनकी निर्भयता, सचाअी, सफाअी, अध्ययनशीलता, मानवता और सरकारी नीतिका खोखलापन और ढोंग साफ जाहिर हो जाते हैं। 'दि मडल ऑफ दि पुरी फैमिन' शीर्षक अुस लेखमें से कुछ महत्त्वपूर्ण भाग देखिये :

"आठ महीनेके लम्बे अरसेमें लोगोंके नेताओं द्वारा सरकारके सुप्त अन्त:करणको जाग्रत करनेके भरसक प्रयत्नोंके बाद अन्तमें अुसने मौन तोड़ा है और अकाल-पीड़ित लोगोंका अुग्र संकट दूर करनेके लिअे अुसने क्या क्या काम किया — अथवा यों कहिये कि काम किया ही नहीं — अुसकी सफाअी जनताके सामने दी है। पुरी जिलेमें फैले हुअे संकट और अुसे दूर करनेके लिअे सरकार द्वारा की गअी कार्रवाअियों सम्बन्धी जो कुछ पत्र और लेख अखबारोंमें छपे हैं, अुनकी ओर 'सरकारका ध्यान दिलाने पर अुन बयानोंमें जो अपार असावधानी और भूलें रह गअी हैं अुन्हें सुधारनेके लिअे' सरकारने अेक बड़ा वक्तव्य प्रकाशित किया है। यह कथित असावधानी सुधारनेमें सरकार स्वयं कुछ गंभीर भूलें कर बैठी है और लोगोंके दु:ख हलके बतानेके लिअे दूसरोंका किया हुआ काम अुसने अपने नाम पर चढ़ा दिया है। कर्मचारियोंकी अक्षम्य भूलों पर कलअी चढ़ाकर अुन्हें सुन्दर दिखलानेका प्रयत्न किया है। साथ ही सरकारके हाथों हुअी भूलें और दोष दूसरोंके मत्थे मढ़ दिये हैं और अेक युरोपियन आअी० सी० अेस० कमिश्नरको बचानेके लिअे भारतीय कलेक्टरको बलिदानका बकरा बनाया है। ये शब्द बहुत कड़े हैं, किन्तु ये शब्द घटना-स्थल पर पूरे दो महीने रहकर अिस प्रश्नके बारेमें पूरी तरह वाकिफ होनेके बाद ही लिखे गये हैं।

"अिस बयानमें सरकारने बहुत ही सावधानीसे सन् १९१८–१९ में गैरसरकारी ढंग पर हुअे कष्ट-निवारणके कार्यका अुल्लेख किया है। कोअी और समय होता तो सरकार अैसा न करती। तब फिर अुसकी प्रशंसाकी तो बात ही क्या? खानगी दानसे हुआ यह छोटासा काम भी अिस ढंगसे प्रदर्शित करके बताया गया है, मानो सार्वजनिक कोषमें से और सरकारी नौकरीमें सदा जागृत रहनेवाले शासनतंत्रकी सूचनानुसार ही किया गया हो! मानो हजारों रुपयेका दान करनेवाले दाता और अपने समय तथा शक्तिका बलिदान देनेवाले कार्यकर्ताओंकी कोअी गिनती ही नहीं! परन्तु सरकार जिला कष्ट-निवारण-समितिकी प्रतिष्ठा अपने सिर पर लेकर ही सन्तुष्ट नहीं हुअी। अिससे आगे बढ़कर जब अिन सेवकोंके पासका चन्दा खत्म हो

गया और वे आगे अधिक समय कष्ट-निवारण कार्य जारी न रख सके, तब अुनकी आलोचना और निन्दा करने लगी और अुन्हें दोष देने लगी। अिसके अलावा, सरकारी अधिकारी निजी रूपमें कुछ प्रतिभाशाली मित्रोंकी मददसे संकट-ग्रस्त लोगोंका संकट हलका करते थे और जब लोग देहातमें ही नहीं बल्कि पुरी शहरकी गलियों और रास्तोंमें मर रहे थे, तब भी सरकार जरा भी हिले-डुले बिना जड़की भांति बैठी रही थी।

"भला हो श्री गोपबन्धु दासका, जिन्होंने अुड़ीसाके अपने भाअियोंके दु:खमें मदद करनेके लिअे बिहारकी धारासभाके सामने सारी बात पेश कर दी और सचाअीको प्रकाशमें लाये। अुस समय अुनके सरकारी विरोधियोंने अुड़ीसाके कमिश्नर मि० ग्रुनिगके नेतृत्वमें अुनका मजाक अुड़ाया और अुनकी बातोंको हंसीमें अुड़ा दिया। मि० ग्रुनिग कभी संकट-ग्रस्त प्रदेशको देखने नहीं गये, फिर भी अुन्होंने गोपबन्धुबाबू द्वारा पेश की गअी सच्ची बातोंको चुनौती देने और अुनके बारेमें शंका प्रकट करनेकी धृष्टता और बेहयाअी दिखाअी। यह भला आदमी अपनी विशाल पीठ पर पांच ब्रिटिश जिलों और चौबीस देशी राज्योंका भार ढोता है। अुन्होंने अकाल जांच-समितिके अेक सदस्यसे जबानी कहा था और दूसरेको पत्रमें लिखा था कि 'मेरे जैसा अूंचे दरजेका अफसर रास्तेसे दूर दूर बसे हुअे गांवोंमें, जहां थोड़ेसे आदमी भूखसे मर जाते हों, जांच करने जाय, यह अपेक्षा किसीको नहीं रखनी चाहिये।' अुड़ीसाकी कुछ गरीब स्त्रियां जो पीतलकी चूड़ियां पहनती थीं, अुन्हें वह सोनेकी मान लेते थे और जसदकी पहनती थीं अुन्हें चांदीकी मान लेते थे। क्या यह माना भी जा सकता है कि वह परिस्थितिसे अिस हद तक अनजान थे? अैसी कल्पना भी की जा सकती है? मि० ग्रुनिगको अैसा लगता हो कि अुड़ीसाका भार वहन करने योग्य शक्ति अुनमें नहीं है, तो जितना बोझा वे अुठा सकें और जहां वे कुशलतापूर्वक अपना काम कर सकें अुतनेसे विभागमें ही नौकरी पर रखनेकी अुन्हें सरकारसे प्रार्थना करनी चाहिये। पुरी जिलेमें कष्ट-निवारणका काम व्यवस्थित ढंगसे नहीं हुआ, अिस असफलताके लिअे अगर कोअी आदमी दोषी हो सकता है तो वह मि० ग्रुनिग हैं। अुन्होंने बिहार सरकारको अकालकी घोषणा करनेसे हठपूर्वक रोका और अुसे गलत रास्ते ले गये। यह संकट-ग्रस्त क्षेत्र अिस समय १,००० वर्गमीलमें फैला हुआ है और अुसमें फंसे हुअे लोगोंकी आबादी ५ लाख है। फिर भी वह अिस क्षेत्रको 'बहुत छोटा' मानते हैं और शब्दोंकी क्रूर क्रीड़ासे अुस क्षेत्रको घटाकर केवल ९० वर्गमीलका अकाल-ग्रस्त प्रदेश बतानेका प्रयास करते हैं। अैसा करनेके लिअे अकाल कानूनकी ६८ वीं धारासे

भी तीस गुना अधिक कड़ा मापदंड रखकर वे शब्दोंकी बाजीगरीसे अपनी ही बात सच साबित करना चाहते हैं।

"... प्रस्तुत मामलेमें अुड़ीसा बिहारसे दूर होनेके कारण वहां मि० ग्रुनिंग खुद ही सरकार हैं। और अुड़ीसामें अकाल नहीं, अरे अन्नकी तंगी भी नहीं, दुःख नहीं, यह अुनका रवैया कलेक्टरसे लगाकर छोटे चौकीदार तक सबने अपना लिया। सरकारका मुख्य अधिकारी 'अकाल' शब्दका अुपयोग करनेकी अनुमति नहीं देता, अिसलिअे भुखमरीसे होनेवाली सैकड़ों और हजारों मृत्युअें भी अकालकी घोषणा करनेके लिअे पर्याप्त नहीं हुअीं। भुखमरीके कारण हुअी मृत्युओंके बारेमें सरकारी विज्ञप्ति कहती है:

"'भुखमरीके कारण अेक भी मृत्यु होनेकी रिपोर्ट चौकीदारोंने नहीं की और पुलिस अधिकारी रायबहादुर सखीचंदने लगातार जो अुत्तम कष्ट-निवारण कार्य किया है और जिसको सभी सम्बन्धित लोग स्वीकार करते हैं, अुसे देखते हुअे माननीय लेफ्टिनेन्ट गवर्नर साहब अिस बयानको सही नहीं मानते कि भुखमरीके कारण हुअी मौतोंको जान-बूझकर रोगके कारण हुअी मौतें बताया जाता है।'

"यह तो बड़ा विचित्र तर्क कहा जायगा। रायबहादुर सखीचंदने स्वयं अेक जैन सदस्य होनेके कारण व्यक्तिगत रूपमें दयाभावसे प्रेरित होकर संकट-ग्रस्तोंको सहायता दी है और कष्ट-निवारण कार्य किया है। परन्तु अुनका और दूसरे सैकड़ों चौकीदारोंका अेक-दूसरेसे कोअी सम्बन्ध नहीं। अिन दोनोंमें कोअी साम्य नहीं। और ये चौकीदार कोअी श्री सखीचंदके नीति और धर्मके अूंचे सिद्धान्तोंके अनुसार काम नहीं करते। अिस प्रकारकी दलीलोंसे सर अेडवर्ड गेट और अुनकी कार्यकारिणीके सदस्य यह निष्कर्ष निकालना चाहते हैं कि सखीचंदके मातहत काम करनेवाले अुनके सैकड़ों चौकीदारोंमें से अेक भी अपने रजिस्टरमें झूठा हाल लिखने जितना नीचे नहीं अुतरेगा। अिसके अतिरिक्त पटनाके 'सर्चलाअिट' पत्रने जिस हकीकतकी तरफ अुनका ध्यान खींचा था अुसे वे भूल गये दीखते हैं। अुसने बताया था कि १८७१ के चौकीदारी कानूनमें अिसकी व्यवस्था होने पर भी कि रजिस्टरकी नोंधमें चौकीदारके साथ साथ पंचायतके अेक सदस्यके भी हस्ताक्षर होने चाहिये, पुरी जिलेमें अिस बातकी जान-बूझकर और पद्धतिपूर्वक अुपेक्षा की गअी है। 'मैंचेस्टर गार्डियन' का मुख्य संवाददाता श्री वावॉन नैश सन् १९०० के भारतके अकालसे सम्बन्धित अपनी 'महाकाल' नामक पुस्तकके ४३ वें पृष्ठ पर लिखता है कि 'भुखमरी' शब्द सरकार मंजूर नहीं करती, अिसलिअे यह घोषणा की

गअी है कि यहां जो १५ बच्चे मर गये वे शरीर दुर्बल हो जानेसे सूखकर मर गये। भुखमरीसे मरनेवाले मनुष्योंको पहचाननेके लिअे सरकारने अकालके दिनोंमें यह नया रोग ढूंढ़ निकाला है। यहां पुरीमें अिस 'अिमेशियेशन' शब्दका स्थान दूसरे सामान्य रोगोंने ले लिया है, क्योंकि भोजनके अभावमें सूख गये लोगोंके लिअे 'अिमेशियेशन' जैसा हलका शब्द भी काममें लेनेकी मि० ग्रुनिंग अिजाजत नहीं देते।

"पिछले मअी मासमें मैंने यह घोषणा की थी कि जिलेके ४० गांवोंमें भुखमरीसे कुल ४४० मृत्युअें होनेके विश्वस्त और आधारभूत तथ्य मेरे पास हैं और अुस भूमिकाको ध्यानमें रखकर मैंने समस्त प्रदेशमें १,५०० मृत्युअें होनेका अंदाज लगाया था। परन्तु पुरीके लोगोंका अधिक नजदीकसे परिचय करनेके बाद मुझे अब मालूम हुआ है कि मेरा हिसाब कम था। और अुस दिन पुरीकी गलियोंमें और जिन प्रदेशोंको मैं जिलेके अकाल-मुक्त भाग समझता था, अुनमें भी जो असंख्य मृत्युअें हुअी थीं अुनकी मुझे कल्पना भी नहीं थी। वह अंदाज यदि आज दुबारा लगाया जाय, तो मैं यह आंकड़ा ३,००० से कम न रखूं। रिपोर्टमें भुखमरीसे हुअी दो मौतोंका अपना विवरण प्रकाशित करनेके बाद और दूसरोंके प्रकाशित किये हुअे पंद्रह अुदाहरणोंके बारेमें कलेक्टरके जांच करनेके बाद अुसका जो परिणाम हुआ अुस परसे मुझे अिस बातका अफसोस नहीं है कि मैंने भुखमरीसे मरे हुअे ४४० मनुष्योंके नाम, पते और दूसरा ब्यौरा सत्ताधारियोंको मुहैया नहीं किया। क्योंकि अिस मामलेकी सरकारी जांचमें भी अिन घटनाओंका परिणाम अिससे अधिक अच्छा न आता। भुखमरीके कारण होनेवाली मृत्युकी जांच करनेके लिअे निष्पक्ष जांच-समिति नियुक्त की जाय, तो सैकड़ों घटनाअें पेश की जा सकती हैं। अुस समय सही स्थिति अपने असली रूपमें सामने आ जायगी। परन्तु कलेक्टर और कमिश्नरके द्वारा, जिन्हें लोग अपने दुःखोंकी अुग्रताके लिअे जिम्मेदार मानते हैं, जांच की गअी तो अिसका कोअी परिणाम नहीं होगा।"

अिस प्रकार जिस जमानेमें बड़े बड़े निडर लोग भी सरकारके विरुद्ध बोलनेकी हिम्मत नहीं करते थे, अुस जमानेमें ठक्करबापाने अुड़ीसाके बड़ेसे बड़े युरोपियन अधिकारियोंकी गैरजिम्मेदाराना नीतिकी कड़ी आलोचना की और अुनका जनताके सामने भण्डाफोड़ किया। यह अुन्होंने किसी निजी रागद्वेषपूर्ण बुद्धिसे नहीं, बल्कि अिसलिअे किया कि अुड़ीसाके लाखों निःसहाय गरीब और मूक अकाल-पीड़ित लोगोंका दुःख अुनसे देखा नहीं जाता था। बापाने जो काम किया अुससे हजारों अकाल-पीड़ित मृत्युके मुखसे बच गये।

यह तो अुड़ीसाके अकाल-पीड़ितोंको हुअे तत्काल लाभकी बात हुअी। परन्तु अिसके सिवाय ठक्करबापा द्वारा अुड़ीसामें किये गये अिस कार्यके अन्य कुछ आनुषंगिक परिणाम भी आये। अुससे अेक बात यह हुअी कि अुड़ीसामें व्यवस्थित सार्वजनिक जीवनका प्रारंभ हुआ और बापाने अुसमें बहुत बड़ा भाग लिया। श्री हरिकृष्ण मेहताब, श्री वि० दासबन्धु, बाबू नवकृष्ण चौधरी, गोपबन्धु दास वगैरा अुड़ीसाके आजके नेताओंका निर्माण ठक्करबापाके हाथों ही हुआ। और अिसीलिअे वे बापाको अुड़ीसाके आधुनिक जीवनका पिता मानते हैं।

गोपबन्धु दासके साथ तो अुनका पहली मुलाकातमें ही प्रेम हो गया था। अुनकी सादगी, कर्तव्यनिष्ठा, सेवापरायणता, सचाअी और कामकी लगन वगैरासे बापा बहुत ही प्रभावित हुअे थे। अिसलिअे वे सदा अुनका ध्यान रखते और जब जब मौका आता, तभी अुनकी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमें सहायता करते।

अेक बार जब बापाको अुनके साथ हुअे पत्रव्यवहारसे यह गंध आअी कि अुन्हें कुछ आर्थिक कठिनाअी है, तब अुन्होंने चोरवाड़के परोपकारी और धनी व्यापारी (जो बादमें बापाके अेकनिष्ठ भक्त बन गये) श्री हरखचंद मोतीचंदसे ता० १६–१२–'२१ को पूनासे नीचेका पत्र लिखकर श्री गोपबन्धुको सहायता देनेका अनुरोध किया था :

"भाअी हरखचंद,

"खीजड़ियाके स्टेशन पर तुमने मुझसे कहा था कि देशके काममें अथवा परमार्थके काममें रुपया खर्च करने लायक कोअी बात हो तो मैं तुम्हें बताअूं और तुम तदनुसार रकम खर्च करनेको तैयार हो।

"अिसलिअे मैं यह लिख रहा हूं। अुड़ीसामें पुरी जिलेके सखीगोपाल गांवमें अुधरकी तमाम स्वदेशी और राजनैतिक हलचलके पिता पंडित गोपबन्धु दास हैं। वे अिस समय बड़ी कठिनाअीमें हैं। अुन्हें मदद भेजनेकी जरूरत है। वे मेरे परम मित्र हैं। अुन्होंने मुझसे सहायताकी मांग नहीं की है। परन्तु अुनके पत्रकी बातोंसे और अुनके स्वभावसे जान सकता हूं कि अुन्हें अिस समय अेक रुपया भेजा जाय तो वह सौके बराबर होगा। मैं स्वयं भी अपने मासिक खर्चकी रकममें से आज २५ रुपये भेज रहा हूं। अिसलिअे तुम अुन्हें दो-अढ़ाअी सौ रुपये भेज दोगे तो बहुत अच्छा होगा। अगर भेजो तो अुसीके साथ अंग्रेजीमें अेक पत्र लिख देना कि यह रकम तुमने मेरी सूचनासे भेजी है। रुपया रजिस्ट्री और बीमा कराकर भेजना। पता अिस प्रकार है।...

“अगर किसी कारणसे रुपया न भिजवा सको तो भी मुझे अुत्तर लिखना, ताकि मैं और कोअी व्यवस्था कर सकूं।

“यह रकम अकाल या अैसी कोअी कुदरती आफतमें मदद देनेके लिअे भेजनेको मैं तुमसे नहीं कह रहा हूं, यह मैं जानता हूं। परन्तु . . . बाबूकी जरूरत अैसी ही है, बल्कि अुससे भी अधिक है। अभी अभी सरकारने अुन्हें परेशान करनेमें कोअी कसर नहीं रखी। अुनका हाअीस्कूल लगभग टूट गया है। वे स्वयं बेहाल हो गये हैं। अेक बार २४ दिन जेल भी हो आये हैं। दूसरी बार जानेके आसार दिखाअी दे रहे हैं। अिन सज्जनके प्रति मुझे बहुत ही आदर है। . . . अुत्तर लिखना।

अमृतलाल वि० ठक्कर
के वन्देमातरम्”

श्री हरखचंदभाअीने बापाका पत्र मिलते ही तुरन्त २५० रुपये भेज दिये। बापाके शब्दोंका अुन दिनों भी अितना गहरा असर पड़ता था। अुनके शब्द अधिकतर व्यर्थ नहीं जाते थे।

अुड़ीसाके अकालके निमित्त यह अुनकी अुड़ीसाकी पहली मुलाकात थी। अुसके बाद अधिक नहीं तो कमसे कम छः सात बार तो वे किसी न किसी कामके सिलसिलेमें अुड़ीसा हो आये थे और वहांके लोगोंकी अलग अलग ढंगसे अुन्होंने सेवा की थी। अुड़ीसाके लोग आज भी बापाको विविध प्रसंगों पर याद करते हैं।

१६

पंचमहालमें क्या देखा ?

जैसा हम पहले देख चुके हैं, ठक्कर साहबका अकाल-निवारण कामके सिलसिलेमें और अुसमें भी खास तौर पर दाहोद-झालोद तालुकोंके भील प्रदेशमें सन् १९१९ और १९२२ में दो बार दौरा हुआ। अिस अरसेमें अुन्होंने आदिवासियोंकी जो करुण स्थिति देखी, अुसने अुनके हृदयको झकझोर डाला। अिस वक्त अुन्हें भीलोंके सामाजिक जीवन, अुनके रीति-रिवाज और रहन-सहन तथा अुनकी आर्थिक और सामाजिक स्थितिका बहुत ही निकटसे अवलोकन करनेका मौका मिला। अितना ही नहीं, दोनों बार अुनकी सेवा करनेके लिअे ही जानेके कारण भीलोंके हृदयका दर्शन करनेका जो अवसर आम

तौर पर राजकर्मचारियों, व्यापारियों और अन्य अूंचे वर्गके लोगोंको शायद ही मिलता है वह ठक्कर साहबको अनायास ही प्राप्त हो गया। ज्यों-ज्यों वे अुनके (भील लोगोंके) निकटतर सम्पर्कमें आते गये, त्यों त्यों अिन लोगोंको वे अधिकाधिक समझते गये और अिन बहादुर किन्तु डरपोक और क्रूर किन्तु सहृदय भोले लोगोंके प्रति अुनके हृदयमें प्रेम और सहानुभूतिकी सरिता अुत्कट रूपमें बहने लगी।

अबसे पहले आदिवासियोंके जीवनके सम्बन्धमें अुन्होंने जो तरह तरहकी बातें सुन रखी थीं, वे सब अूचे वर्गके लोगोंसे सुनी थीं और अुन परसे भील लोगोंके जीवन और रहन-सहनके बारेमें अपने मनमें चाहे जैसे विचार बना रखे थे। परन्तु जब अुनका प्रत्यक्ष जीवन देखनेका अवसर मिला, अुनके खेत, कुअें, घरबार, कुटुम्ब-कबीले और बालबच्चे वगैराको खुद जाकर देखा, तब अुन्हें अपने विचार बदलनेको मजबूर होना पड़ा।

भील लोग जंगली और क्रूर होते हैं, सुधरे हुअे मनुष्योंके सहवाससे दूर रहते है, आबदस्त नहीं लेते (शौच जानेके बाद पानीका अुपयोग नहीं करते), शिकार करके जंगली जीवन बिताते हैं, नीति-अनीतिका अुन्हें कुछ भान नहीं होता, सुधरे हुअे मनुष्यको देखकर जंगली पशुकी तरह या तो चौंककर भाग जाते हैं या जहरीले तीरोंसे अुसे जानसे मार डालते हैं अथवा घायल करके लूट लेते हैं, अुनके साथ घुलने-मिलनेकी बात तो दूर रही, अुनके प्रदेशमें जाना भी खतरनाक होता है। अिस प्रकारके विचारोंकी अस्पष्ट छाप भील लोगोंके बारेमें आम तौर पर अूंचे वर्गके लोगोंके मन पर होती है। अैसी थोड़ी बहुत छाप ठक्कर साहबके मन पर भी अस्पष्ट रूपमें पहले पड़ी हुअी थी। परन्तु भीलोंकी सेवा करनेवाले सेवकोंके सम्पर्कमें आनेके बाद और पंचमहालमें दो बार अकालके समय अुनकी प्रत्यक्ष सेवा द्वारा अुनके सीधे सम्पर्कमें आनेके पश्चात् ठक्कर साहबने जो कुछ देखा, जाना और अनुभव किया, अुस परसे अुन्हें विश्वास हो गया कि भीलोंके बारेमें अूंचे वर्गके लोग आम तौर पर जो विचार रखते हैं, वे अेक खास हद तक ही सच होते हैं। भील लोगोंके जीवनका दूसरा पहलू भी होता है और वह अुनके प्रति तुच्छता, तिरस्कार और घृणाके भाव प्रगट करनेके बजाय प्रेम, सहानुभूति और करुणा प्रगट करनेकी प्रेरणा देनेवाला होता है।

पंचमहालमें आनेके बाद अुन्होंने देखा कि सभी भील जंगली नहीं हैं। अुनका बड़ा भाग देहातमें रहकर खेती-बाड़ी करके अपना गुजारा करता है। अुन्होंने यह भी देखा कि अुनकी कल्पनाके अनुसार लोग गुजरातके अन्य ग्रामवासियोंकी तरह अेक ही जगह गांव बसाकर नहीं रहते, परन्तु अपने

अपने खेतों पर छुटपुट झोंपड़ोंमें अलग अलग रहते हैं। अुनमें से कुछके पास अपनी जमीन होती है, जबकि दूसरोंके पास जमीन नहीं होती। अथवा होने पर भी बादमें चली गअी है। वे सब दूसरोंकी जमीन पर मजदूरी करते हैं। ये भील कभी कभी शिकार भी जरूर कर लेते हैं। परन्तु शिकार पर ही अुनका जीवन-यापन होता हो सो बात नहीं।

अुनमें से अधिकांशको पहननेके लिअे लाज ढंकने लायक अेक छोटीसी लंगोटी, सिर पर चिंदी जैसा फेंटा और खानेको मक्की, बंटी, बावटा और गुजरा वगैरा अनाज पीस कर बनाअी हुअी कांजी मिलती है। बिछौनेमें गद्दी-गद्देकी तो बात ही नहीं। मवेशीके गोठमें घास बिछाकर और अूपर साफा फैलाकर वे रात बिताते हैं।

स्वभावसे भील भोलाभाला होने पर भी क्रोधी जरूर होता है। सौ बरसके बाद भी बापका कर्ज चुकावे, अैसा अीमानदार होते हुअे भी चोरी और शराबकी बुराअीमें वह काफी फंसा हुआ रहता है। अुन्होंने देखा कि भूखा भील चोरी करे, यह कहावत वहां खूब प्रचलित है। शराब तो अुसका परम मित्र मानी जाती है। धार्मिक क्रियाओंमें शराब, विवाहमें शराब, अतिथि-मेहमानके आने पर शराब, बीमारीमें शराब और अंतमें मौतके बाद भी शराब। शराब पीनेके लिअे पैसे न हों तो कर्ज करके अथवा बनाकर पिये, तभी अुसे चैन पड़ता है।

ठक्कर साहबने देखा कि पंचमहालके दाहोद-झालोद तालुकोंकी सवा लाखकी आबादीमें अेक लाखसे अूपर भील जातिकी ही आबादी होनेके बावजूद अुन्हें अपने बलका भान नहीं है। अुनमें सहयोगकी भावना विकसित नहीं हुअी है। स्वभावसे बहादुर और प्रामाणिक होते हुअे भी वे आलसी और अज्ञान हैं। ओझोंके जादू-टोनोंके चक्करमें फंसे हुअे हैं। साथ ही अंधविश्वास, व्यसन और कर्जमें गले तक डूबे हुअे हैं। हिसाब-किताब बिलकुल नहीं समझते। कड़ाकेके जाड़े और जलती हुअी धूपकी परवाह किये बिना नंगे शरीर पच्चीस-तीस मील चल लेनेवाले और सामने जाकर बाघको मार डालनेकी हिम्मत रखनेवाले ये भोले जीव अितने अधिक डरपोक होते हैं कि पुलिस और सरकारी कर्मचारीसे डरें तो डरें, लेकिन अूंचे मामूली वर्गके लोगोंसे भी डरते हैं। कहीं कानूनके चंगुलमें न फंस जायं, अिस डरसे सदा घबराहट अनुभव करते रहते हैं। अपने अिस अज्ञान, कायरपन, व्यसन, कर्ज और फिजूलखर्चीके कारण वे लगभग गुलाम और अर्ध-गुलाम जैसी स्थितिमें रहते हैं और अुनके जैसा ही करुण और अपमानजनक जीवन बिता रहे हैं।

दौरेमें अुन्होंने यह भी देखा कि भीलोंको लूटनेके लिअे, चूसनेके लिअे और दबानेके लिअे सरकार, साहूकारों, कर्मचारियों, जागीरदारों, जादू-टोने-वालों, व्यापारी बनियों और बोहरोंकी सारी सेना खड़ी है। यह फौज अुन्हें परेशान करती है, समय पड़ने पर धोखा देती है और अुनकी मेहनत-मजदूरीका मुफ्त अुपभोग करती है।

अुपरोक्त अूंचे वर्गके तरह तरहके लोग अुन्हें किस तरह लूटते हैं, चूसते हैं और दबाते हैं, यह भी ठक्कर साहबको पंचमहालके अपने प्रवास और निवासके दिनोंमें देखने-सुननेको मिला।

व्यापारी अुन्हें रुपया अुधार देता, कलाल शराब पिलाता, और दोनों अुन्हें बरबाद करके धीरे धीरे अुनके पास जो कुछ मालमत्ता हो अुसे छीन लेते। ढोर-डंगर और खेत-जमीन गिरवी रख लेते और कलके खातेदार भील किसानको भूमिहीन और बेगार करनेवाला बना देते।

दूसरे, भील लोगोंको अपना कच्चा माल बेचने और चीज-वस्तुअें खरीदने अथवा और किसी कामके लिअे शहरमें आना पड़ता। शहरकी सीमामें घुसें और कोअी कर्मचारी सामने मिल जाय तो अुनकी कमबख्ती ही आ जाती। तुरन्त अुन्हें पकड़वा मंगवाते, पानी भराते, लकड़ी फड़वाते और दूसरे काम बेगारमें कराते। अफसरोंकी बात तो दूर रही, पुलिसके सिपाही भी यदि अुन्हें सामने मिल जायं, तो वे भी अफसरी रुआबसे ही डरा-धमकाकर अुनसे काम कराते। खुदका कितना ही जरूरी काम हो तो भी वह अेक तरफ पड़ा रहता और खाकी कपड़ोंवाला आदमी धमकाये तो किसी भी प्रकारकी चूं-चां किये बिना हाथ जोड़कर अुसके आगे हो जाना पड़ता। वह कहे वहां जाकर वह जो काम बताये अुसे पूरा कर देनेके बाद ही वे बाजार जा पाते।

घरके लिअे खरीदी करनी हो, अपना माल बेचना हो, या दूसरा काम करना हो, वह सब बादमें ही हो सकता था। अिन शहरी 'साहबों' से वे अितने डरते कि साहब लोगोंकी नजरमें चढ़ जानेके भयसे अक्सर जरूरी काम होने पर भी वे शहर जाना छोड़ देते।

शहरके व्यापारी भी अुन्हें किस प्रकार धोखा देते हैं, अिसकी घटनाअें और तरीके भी ठक्कर साहबके काफी जाननेमें आये। जंगलमें दिनभर भटक-भटकाकर बबूलके अेक अेक पेड़से अिकट्ठा किया हुआ दो चार सेर गोंद बाजारमें बेचने जाय तो अुसकी मेहनतके पूरे दाम नहीं मिलते। व्यापारी अुसे बुलाकर कहते, "ला, देखें क्या लाया है? गोंद? ला, तौल लें।" फिर अुससे

भीलोंकी भाषामें मीठी-मीठी बातें करके समझाते और कहते, "तू जंगलसे गोंद ले आया, अिसमें क्या बड़ी बहादुरी की? यह तो बड़ा आसान काम है। परंतु हमारा नमक मालूम है, कहांसे आता है? दूर, ठेठ समुद्रमें से। फिर भी तू हमारा परिचित है, अिसलिअे ला तुझे बदलेमें बराबर नमक तौल दूं।" यों कहकर व्यापारी मानो अुस पर अुपकार कर रहा हो, अिस तरह गोंदके बराबर नमक तौल देता और तीन चार गुनी महंगी चीज सस्तेमें छीन लेता।

जिस प्रकार चीजें तौलनेमें धोखेबाजी की जाती, अुसी प्रकार अनाज मापनेमें भी धोखेबाजी की जाती। अनाज लेनेके लिअे जो 'पाली' या दूसरा माप होता, अुसके लिअे अेक गोल किनारा रखा जाता, जिसे मापके सिरे पर फंसा देनेसे मापके अूपरका गोलाकार सिरा थोड़ा बढ़ जाता और मापनेमें अनाज अधिक आता। जब व्यापारियोंको भीलोंके खेत या खलिहानसे अनाज लेना होता तो यह किनारा फंसा कर अनाज मापते और भीलोंको अनाज देना होता, तब यह किनारा हटाकर असल मापसे कम अनाज मापकर देते।

अिसी प्रकार घी, तेल, मक्की और दूसरी जो चीजें भील स्वयं पैदा करते, वे शहरोंमें साहूकार सस्ते दामोंमें छीन लेते। खेतके अनाजके बारेमें तो यह स्थिति थी कि भीलोंके खेतमें फसल खड़ी हो तभीसे साहूकार अुनके खेतमें चक्कर काटने लगते और रुपया अुधार देकर अुसके पेटे फसल सस्ते भावों लिखवा लेते। खलिहानमें अनाज आता तब थोड़ा बहुत अनाज रहने देते। अिस प्रकार अपने ही खेतमें फसल आनेके बाद पूरे दो-तीन महीने भी न बीतते कि भीलोंको खानेके लिअे फिर साहूकारके यहांसे अुधार अनाज लाना पड़ता। अिस प्रकार लगान चुकानेके लिअे सस्तेमें अनाज बेचकर वे नकद पैसे लाते और बादमें सस्तेमें बेचा हुआ वही अनाज महंगी कीमत पर साहूकारसे खरीदते। साहूकार सवाये ब्याज पर अुन्हें अनाज अुधार देता। खानेका ड्योढ़ा और बीजका दुगुना तो मामूली बात हो गअी थी। अिस प्रकारके विषचक्रमें भील अैसे फंसे हुअे रहते थे कि अुससे कभी छूट नहीं पाते थे।

संयोगसे कदाचित् किसी भीलके पास घरमें नकद रकम बच गअी हो, तो अुसे बरबाद करा देनेके लिअे अुस समयकी ब्रिटिश सरकारने अुनके लिअे पारसी लोगोंको शराबके ठेके देकर दुकानें खोलनेकी सुविधाअें दे रखी थीं। अिस प्रकार अेक ओर शराबमें रुपया अुड़ाकर वे कमजोर और कर्जदार बनते और दूसरी तरफ आपसके लड़ाअी-झगड़े खड़े करके टंटे-फसादमें जीवन बिताते। अिस पर हर दूसरे-तीसरे साल अकाल पड़ता। अिस लगातार पड़नेवाली मारसे

वे अितने लथड़ जाते कि वर्षोंकी मेहनतके बाद भी बहुत ही थोड़े खड़े हो सकते थे। अिस प्रकार हजारों भील पीढ़ी दर पीढ़ी तंगहालीमें, गरीबीमें, व्यसनमें और कर्जमें डूबकर दु:खी जीवन बिताते थे, आधे पेट रहकर जिन्दगी गुजारते थे और अन्तमें बर्बादीके रास्ते लगकर मृत्युकी शरणमें चले जाते थे। अुन्हें अिस रास्तेसे हटाकर अेकता, संगठन और सहयोगके मार्ग पर ले जानेवाला, अुनके अंधकारमय जीवनमें प्रकाशका दीपक जलानेवाला कोअी न था। मुक्ति-सेनाके अिनेगिने आदमी जरूर थे, परंतु वे अिनके शरीरको बचाकर आत्माको बिगाड़ते थे। संसारके भौतिक सुखोंके लालच और स्वार्थपूर्ण सेवा द्वारा वे अपनी धर्म-परिवर्तन करनेकी हलचलको आगे बढ़ाते थे। किसी भी प्रकारकी आशा रखे बिना संपूर्ण नि:स्वार्थ भावसे अुनकी सेवा करनेवाला कोअी नहीं था। ठक्कर साहबने भीलोंकी यह दुर्दशा देखी। देखकर अुनका हृदय रो अुठा। अुन्हें लगा कि अिस अज्ञान, अंधविश्वासी और बिखरी हुअी बहादुर जातिका हाथ पकड़नेवाला कोअी नहीं मिला तो सारी जाति विनाशके पथ पर जाकर बर्बाद हो जायगी।

अुनके जीवनमें सेवा द्वारा प्रवेश पाकर किसी भी तरहका राजनैतिक, धार्मिक या सामाजिक स्वार्थ रखे बिना अुन्हें रास्ते पर लाया जा सकेगा, अिसी विचारमें से भील-सेवा-मंडलका जन्म हुआ। अिसका विचार-बीज तो १९१९ में ही अैसे ढंगसे बोया जा चुका था जिसकी ठक्करबापाको भी कल्पना नहीं थी। अुस समय तो अुन्हें पता भी नहीं होगा कि यह बीज किसी दिन परिपक्व होगा और जो संस्था समस्त भारतमें अपना अैतिहासिक भाग अदा करनेवाली है अुसकी बुनियाद अुनके अपने ही हाथों पड़ेगी। परंतु कुदरत अपना काम अजीब ढंगसे करती रहती है। वह अिस विचार-बीजको अुनकी हृदय-भूमिमें अैसे अनजाने ढंगसे बो रही थी, जिसकी अुन्हें कल्पना भी नहीं होगी। और अिस बातका अिन्तजार कर रही थी कि समय पाकर वह परिपक्व हो। अब हम देखें कि यह कैसे हुआ।

१७

बुनियाद डाली

१९१९ के मार्च मासमें पंचमहालके अकाल-पीड़ित प्रदेशका प्रवास करनेके बाद भारत-सेवक-समाजके 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया' नामक साप्ताहिक मुखपत्रमें अुन्होंने अेक लेख लिखा था। अुससे मालूम होता है कि भीलोंकी सेवाके लिअे सेवकोंकी सेना खड़ी करनेका विचार-बीज अुसी वक्तसे अुनके मनमें पड़ गया था। अुस लेखमें अन्य कुछ बातोंके साथ-साथ अुन्होंने लिखा था :

"मैंने बम्बअीकी समितिके सामने अकाल-निवारणके बड़े कामोंके लिअे अवैतनिक सामाजिक कार्यकर्ता रखनेकी अेक छोटीसी योजना पेश की है। मैं आशा रखता हूं कि अुसका अमल जितना बने अुतना जल्दी होगा। ये कार्यकर्ता कालेजमें अध्ययन करनेवाले अुन विद्यार्थियोंमें से चुने जायं, जो अपनी छुट्टियां भीलोंके साथ रहकर अुनकी सेवामें व्यतीत करना चाहते हों। ये कार्यकर्ता भीलों और अुनके बच्चोंके बीच बसकर अुनकी मदद करनेकी कोशिश करें, अुन्हें लिखना-पढ़ना वगैरा सिखायें और अुन्हें अूंचा अुठायें।"

यद्यपि अुनका यह विचार दाहोद-झालोद तालुकोंके अकाल-ग्रस्त भीलों और अुनके बालकोंको तात्कालिक राहत और सहायता देनेके लिअे ही था। अुस समय अुन्होंने कोअी स्थायी योजना नहीं सोची थी। अिसलिअे १९१९ के जूनके अन्तमें कष्ट-निवारण कार्य पूरा हुआ, तो अुसीके साथ यह तात्कालिक विचार भी पूरा हुआ और यह योजना भी पूरी हो गअी।

अिसके बाद १९२२ में फिर अकाल पड़ा और फिर कष्ट-निवारण कार्य करनेके लिअे ठक्कर साहब पंचमहाल गये। अुस समय चरखे द्वारा कष्ट-निवारण कार्य करते करते भील लोगोंके निकट सहवासमें आये। अिस बीच मीराखेड़ी आश्रममें अेक ब्राह्मण दंपतीको भील बालकोंको पढ़ाते और कथा सुनाते देखकर ठक्कर साहबके मनमें भीलोंकी सेवा करनेका पुराना संस्कार फिर जाग्रत हुआ। और अिसके लिअे अेक स्थायी संस्था खड़ी करनेकी अुन्हें प्रेरणा हुअी। या अैसा भी कहा जा सकता है कि शंकरपुरा गांवमें अुस भील बुढ़ियाकी करुण स्थितिने और अुसके बादकी अनेक घटनाओंकी परम्पराने भील-सेवाका जो विचार-बीज अुनके मनमें डाल दिया था और जो बहुत समय तक सुप्त रूपमें पड़ा हुआ था, अुस बीजके अंकुर मीराखेड़ी

आश्रममें अुन्हींकी कल्पनाका काम करते हुअे ब्राह्मण दंपतीको देखकर फूट निकले और भीलोंकी सेवा करनेके लिअे स्थायी संस्था कायम करनेकी अुन्हें प्रेरणा हुअी। अुन्होंने अिस विचारको मूर्तरूप देनेका निश्चय किया। सन् १९२२ के दिसम्बर मासमें ही सारी योजना बना डाली और अुस योजनाकी रूपरेखा 'युगधर्म' मासिक और 'सर्वेण्ट्स आॅफ अिंडिया' में प्रकाशित कर दी।

अिस योजनाके अनुसार भीलोंका काम करनेके लिअे सेवाकी भावनावाले और मिशनरी ढंगके युवकोंका अेक दल खड़ा करने और अुसके द्वारा काम करनेकी बात सोची गअी थी। यह अपेक्षा रखी गअी थी कि ये युवक कर्तव्यनिष्ठ, सेवाभावी, निःस्वार्थी और अपने तथा अपने परिवारकी साधारण जरूरतोंके लायक ही वेतन (३० से ५० रु० मासिक) लेकर काम करनेमें संतोष माननेवाले हों। कल्पना यह थी कि अैसे सेवकोंका अेक सेवा-मंडल बने और अुसका अध्यक्ष भारत-सेवक-समाजका अेक सदस्य अथवा अुतनी ही योग्यतावाला कोअी और सज्जन रहे। और वह तीन वर्ष तक दूसरा कोअी काम न करके अिसीमें अपनी सारी शक्ति लगाये।

संस्थाके अुद्देश्य, कार्य और कार्यक्षेत्रके संबंधमें नीचेकी रूपरेखा बनाअी गअी थी :—

संस्थाका प्रारंभ अेक मुख्य कार्यकर्ता और अन्य बारह सेवकोंसे किया जाय। अिन सेवकोंको मुख्य कार्यकर्ता ही चुन ले, जो अिस संस्थाका अध्यक्ष हो। ये कार्यकर्ता दाहोद-झालोद तालुकोंके भील प्रदेशमें अेक अेक केन्द्र स्थापित करके आसपासके गांवोंमें भी काम करें। अिसके अलावा, अिन दोनों तालुकोंकी सीमा पर संथरामपुर, बांसवाड़ा, कुशलगढ़, जांबुवा, राजपुर, देव-गढ़-बारिया और संजेलीके जो देशी राज्य स्थित हैं, वहां भी परिस्थिति अनुकूल होने पर सेवाकेन्द्रोंकी स्थापना की जाय और अुनके द्वारा भील-सेवाके कार्यका विस्तार किया जाय।

ये सेवक भील लोगोंके गहरे संपर्कमें आकर अुन्हें शारीरिक स्वच्छता सिखायें। गांवमें पाठशाला हो तो भील बालकों और अुनके मांबापको समझा-कर अुन्हें पाठशाला भेजें। गांवमें पाठशाला न हो तो स्वयं शुरू करें और भीलोंके लड़के-लड़कियोंको पढ़ायें। बड़ी अुम्रके भील लोगोंको बातोंसे अथवा प्रत्यक्ष दिखलाकर खेती-बाड़ीके काममें सुधार करावें तथा अुनसे आलस्य छुड़वाकर अिस प्रकारके प्रयत्न करें कि वे अुद्योगी बनें।

वे साहूकारके जबर्दस्त ब्याजके पंजेमें फंसनेसे भील लोगोंको बचायें। पुलिस, जंगल-विभाग और माल-विभागके सरकारी अफसरोंकी बेगार और अन्य

प्रकारके जुल्मोंसे अुनकी रक्षा करें। अेक गांव अथवा मुहल्लेके लोगोंकी बीज और नकद पैसेकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे परस्पर सहकारी समितियां स्थापित करनेके लिअे भील लोगोंको समझायें। खेतीबाड़ीके अलावा फुर्सतके समय-कातने, बुनने और असी प्रकारके जो अन्य गृह-अुद्योग हों अुनके लिअे सुविधा कर दें। सामाजिक कुरीतियोंको तिलांजलि देने और शराब तथा मांसाहार छोड़नेकी धीरे-धीरे अुन्हें शिक्षा दें। शामको रामायण-महाभारतकी कथा सुनायें और साथ साथ देश-विदेशमें होनेवाली घटनाओंकी जानकारी और समझ भी दें। भीलोंको अुनकी बीमारीमें सहायता देनेके लिअे छोटासा दवाखाना चलायें। और ढेढ़, चमार, भंगी, डबगर वगैरा अस्पृश्य जातियोंके मित्र बनकर अुनकी सेवा करें।

असके लिअे दाहोद, गरबाड़ा, जेसावाड़ा, गराडू, लीमड़ी, डूगरी वगैरा स्थानों पर दसेक केन्द्र शुरू हों। अुनमें से दो जगह भील बालकोंके लिअे अेक भील आश्रम स्थापित किया जाय और अुसका संचालन किया जाय।

कार्यकर्ताओंके तीससे पचास रुपये तक मासिक वेतन, दो आश्रमके मकानों और चालीस विद्यार्थियोंका खर्च तथा शुरूका कुछ खर्च वगैरा कुल मिलाकर तीन वर्षके लिअे लगभग ५२,००० रुपयेका अंदाज लगाया गया। और यह रुपया ठक्कर साहबने गुजरातसे सार्वजनिक चंदेके रूपमें प्राप्त करनेकी आशा रखी। जबसे अुन्होंने यह योजना प्रकाशित की तभीसे अुन्होंने पूरी श्रद्धा रखी थी कि गुजरात अितना रुपया अवश्य दे देगा। यह बात योजनाके अंतिम भागमें अुन्होंने जो अपील की है, अुस परसे साफ देखी जा सकती है।

अुन्होंने लिखा है :

"अिन बारह सेवकों और अेक अध्यक्षके लिअे तीन सालके खर्चके ५२,००० रुपयेकी जरूरत होगी और गुजरात अथवा गुजरातियोंसे अितने सेवक और अितनी रकमकी भिक्षा मांगना ज्यादा तो हरगिज नहीं है। अनुभवसे अितना तो कह सकता हूं कि यदि अिस कामके लिअे गुजरातके युवक वर्गमें से बारह अैसे सेवक निकल आयें, जो भील भाअियोंकी कमसे कम तीन साल तक सेवा करनेका व्रत लें, तो रुपया जरूर मिल जायगा। जनताको थोड़ा-बहुत सेवाकार्य करके बताया जायगा, तो गरीब भारत भी आवश्यक रुपया अिकट्ठा कर देनेमें पीछे नहीं रहेगा।"

अिस प्रकार पंचमहाल जिलेसे भील-सेवा-मंडल संबंधी जो अपील और योजना शुक्रवार ता० १–१२–'२२ को अुन्होंने प्रकाशित की, वह बेकार नहीं गअी। यद्यपि अुन्होंने जैसी आशा रखी थी वह तो पूरी तरह सफल नहीं

हुआी, परंतु शुरूके हिसाबसे अुन्हें लोगोंकी तरफसे ठीक जवाब मिला। रुपयेकी चिन्ता तो थी ही, परंतु अुससे भी अधिक चिन्ता अुन्हें योग्य मनुष्य प्राप्त करनेकी थी। परंतु जो मनुष्य अेक बार अपना सारा स्वार्थ छोड़कर प्रभु-प्रीत्यर्थ काम करनेको निकल पड़ता है, अुसकी अीश्वर हमेशा सहायता करता है।

ठक्कर साहबको भी अीश्वर अथवा प्रकृतिने अनपेक्षित सहायता दी। अुन्होंने नये प्रारंभ किये हुअे अिस कार्यमें जिन बारह साथियोंका हिसाब लगाया था, अुनमें से मुख्य माने जाने लायक पांच छः साथी सेवक तो लगभग बिना परिश्रमके और सहज रूपमें ही मिल गये।

सबसे पहले तो सुखदेवभाअी त्रिवेदी — भीलोंके सुखदेव काका — अुन्हें १९१९ में ही अनायास मिल गये थे। अुन पर ठक्कर साहबका ध्यान तभीसे था। अुनके बारेमें ठक्कर साहबकी राय बहुत अूंची थी। अेक जगह सुखदेव भाअीका परिचय देते हुअे वे बताते हैं कि "सुखदेव विश्वनाथ त्रिवेदी, जो आम तौर पर सुखदेव काकाके नामसे मशहूर हैं, भीलोंकी सेवा करनेवाले पिता हैं और मैं अुनकी माता हूं, अैसा माना जा सकता है। सुखदेव दाहोदके सार्वजनिक निर्माण-विभागमें १९०८ से १९१८ तक सरकारी नौकरी करते थे। वे स्वभावसे अुग्र किन्तु प्रामाणिक और गरीबोंके प्रति दयाभाव रखनेवाले थे। अिसलिअे अुन्हें अिस बातकी पूरी जानकारी थी कि भीलोंको अिजीनियरी विभागके ठेकेदार तथा गांवके बोहरे-बनिये वगैरा किस प्रकार चूसते और धोखा देते हैं तथा अुनकी जमीनें छीन लेते और अंतमें अुन्हें केवल मजदूर बना देते हैं। अुन्होंने यह भी देखा था कि अकाल-निवारणके कामके लिअे जो कष्ट निवारक अफसर बनकर आते, वे भी राजाकी तरह कुरसीकी पालकी बनाकर भीलोंसे किस तरह अुठवाते थे। यह सब देखकर वे मन ही मन झुंझलाया करते। फिर १९१९ में पंचमहालमें अकाल पड़ा, तब भील किसानोंको कुछ राहत पहुंचानेके लिअे क्या काम किया जा सकता है, अिसकी जांच करने जब मैं वहां गया, तब वहां भाअी सुखदेवसे मेरी जान-पहचान हुअी। अुन्हें मेरे जैसा कोअी आदमी चाहिये था और मुझे अुनके जैसा कोअी स्थानीय जानकार आदमी चाहिये था। अिसलिअे हमारा अच्छा मेल बैठ गया। भाअी सुखदेवने तो सेवाक्षेत्रमें अुतरनेके बाद भी खूब अुतार-चढ़ाव देखे हैं। फिर भी वे अिस क्षेत्रमें अन्त तक डटे रहे, यह अुनके सेवाभाव और मनकी दृढ़ताका परिचायक है।"

दूसरे श्री डाह्याभाअी नायक ताजे ही गुजरात विद्यापीठसे स्नातक बनकर निकले थे और श्री अिन्दुलाल याज्ञिकके नेतृत्वमें वीरमगांव तालुकेम

रहकर ग्रामसेवा और कांग्रेसका काम कर रहे थे। बादमें वे भ्रमण करते करते श्री अिन्दुलाल याज्ञिकके आदेशसे पंचमहाल आ पहुंचे और अुनके पथ-प्रदर्शनके अनुसार मीराखेड़ीमें अंत्यज आश्रम खोलकर भील बच्चोंके साथ रहकर सुखदेवभाओके साथ शिक्षा और सेवाका काम करने लगे थे।

अिनके बारेमें ठक्करबापाने बादमें लिखा था कि, "विश्वासपात्र, अुद्योगी और पूरी तरह लगनसे काम करनेवाले डाह्याभाओ जैसे कार्यकर्ताका मिलना भी ओश्वरकी कृपासे ही संभव हो सकता है। सिर पर कुटुम्बका भार, लड़कियोंके ब्याह करनेकी अपार चिन्ता और लड़कोंको पढ़ानेके खर्चका बोझ होने पर भी जिन्हें सार्वजनिक कार्यकी लगन लगी हो, अैसे ये अेक ही आदमी हैं। अिनकी स्थिति मेरे जैसा विधुर और अकेला आदमी नहीं समझ सकता। व्रतके बीस वर्ष पूरे हो जाने पर भी भीलोंकी सेवामें ही रमे रहते हैं। पिछले आठ दस सालसे भीलोंमें रहकर अुन्होंने क्रम-विक्रयकी सहकारी समितियां और सहकारी बैंक स्थापित किया है। अुनका वह कार्य प्रशंसनीय है।

अिसके सिवाय गिनतीके महीनोंमें ही भील-सेवा-मंडलके आधार-स्वरूप दो और महत्त्वपूर्ण कार्यकर्ता भी ठक्करबापाको सहज ही मिल गये।

अुस समय तक भील-सेवा-मंडल या अैसी कोओ संस्था बाकायदा स्थापित नहीं हुओ थी। ठक्कर साहब मओ मासमें अकाल-निवारणका काम पूरा करके पूना चले गये थे। भारत-सेवक-समाजका अेक रिवाज था (जो आज भी प्रचलित है) कि जून मासमें अेक बार समाजके सब सदस्य अिकट्ठे हों और सब अेक जगह महीने भर साथ रहें। अपने अपने कामकी जानकारी देकर प्रसंगोपात्त चर्चा करें, मुश्किलें पेश करें और अेक दूसरेके साथ विचार-विनिमय करके परस्पर सहायता और मार्गदर्शन प्राप्त करें। यह संमेलन पूनामें ही भारत-सेवक-समाज संस्थाके मकानोंमें रखा जाता है। ठक्कर साहब अिस प्रकार सारा जून मास पूनामें बिताकर अुत्तर भारतमें बड़ी धारासभाका कामकाज किस ढंगसे होता है, यह प्रत्यक्ष देखने और ज्ञान प्राप्त करनेके लिअे शिमला गये थे। वहांसे सीमाप्रान्तका दौरा करके लौट रहे थे कि अितनेमें पंजाबमें लाहौर और अमृतसरके बीच किसी छोटे स्टेशन पर अुनकी गुजराती मालूम होनेवाले व्यक्तियोंसे भेंट हो गओ। अुनमें से अेक थे पारसी श्री लोखंडवाला और दूसरे थे बम्बओके धनाढ्य कांग्रेसी कार्यकर्ता श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त। वे पंजाब कांग्रेस कमेटीका हिसाब जांचने जा रहे थे। भारत-सेवक-समाजके अेकनिष्ठ कार्यकर्ताके रूपमें ठक्कर साहबका नाम तो अुन्होंने सुन ही रखा था, अिसलिअे अुन्हें गाड़ीमें जाते देखकर सहज ही मिलने गये। मिलने पर अनेक बातें हुओं।

श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तने — जो गांधीजीके आदेशके अनुसार कालेजकी पढ़ाअी छोड़कर सेवाकार्यमें लगे थे और बम्बअीमें खादीभंडार और चरखा वर्ग चलाते थे तथा कांग्रेसका काम कर रहे थे — बातचीतमें बताया :

"मेरे अेक मित्र हैं। वे शहरमें रहकर कांग्रेसका काम करते हैं, परन्तु शहरी जीवनसे अुकता गये हैं। वहांके कामसे अुन्हें सन्तोष नही होता। अिसलिअे किसी गांवमें बैठकर गांधीजीके बताये हुअे मार्ग पर सेवा करना चाहते हैं। अुन्होंने गांधीजीकी पुकारको सुनकर कालेजकी पढ़ाअी छोड़ दी है और अब वे साधक आश्रममें तालीम पा रहे हैं। साथ ही कांग्रेसका दफ्तर भी संभाल रहे हैं।"

मानो श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तके साथ अुनका वर्षोंका सम्बन्ध हो, अिस प्रकार ठक्कर साहबने तुरन्त अुनकी बात पकड़ ली और कहा :

"तब अुन्हें दाहोद क्यों नहीं भेज देते? वहां भी गांवोंका ही काम करना है और वह भी बेचारे अुन अनपढ़, अज्ञान और गरीब भीलोंके बीच करना है, जो समाज द्वारा खूब कुचले और चूसे गये हैं। अुनके जैसे नवयुवकोंको वहां अवश्य आना चाहिये। आप अपने अिन मित्रसे बात कीजिये और अेक बार सीधे अुन्हें वहां जरूर भेज दीजिये।"

यह बात सुनकर श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तके हर्षका पार नहीं रहा। बहुत दिनसे वे अंधेरेमें कोअी चीज ढूंढ़ रहे थे, वह अुन्हें अेकाअेक मिल गअी। ठक्कर साहबकी बात अुन्होंने सहर्ष स्वीकार कर ली और अपने मित्रकी अुनसे मुलाकात करा देना मंजूर कर लिया।

श्रीकान्तभाअीके मित्र थे श्री पांडुरंग वणीकर। ये महाराष्ट्री युवक बड़ौदाके निवासी थे और श्रीकान्तके साथ रहकर गिरगांवमें कांग्रेस कमेटीके मंत्रीके रूपमें काम करते थे। ठक्कर साहबके साथ अुनकी पहली मुलाकात बम्बअीके स्टेशन पर ही हुअी और वे अिनकी ओर आकर्षित हुअे। अिसके बाद वे दाहोदमें ठक्कर साहबका भील-सेवा-मंडलका काम देखने गये। वहां पहले तीन महीने रहे और तीन महीनेसे तीन बरस सेवा करनेके लिअे ठहर गये। अिस प्रकार करते करते अंतमें अुन्होंने बीस वर्ष तक सेवा करनेकी प्रतिज्ञा ली और जैसा बापाने अेक जगह कहा है, अुन्होंने यह प्रतिज्ञा अंत तक अुत्तम ढंगसे पालन की। अुनके सेवा-जीवनके वर्षोंका परिचय देते हुअे ठक्करबापाने अेक जगह लिखा है कि :

"दाहोद तालुकेके जेसावाड़ा गांवमें भील बालकोंके लिअे अेक मिट्टीके घरमें आश्रम स्थापित किया और अुसमें शुरूके दो चार वर्ष श्री वणीकरने

अैसे कंगाल घरमें निकाले कि अुस घरका चित्र अब भी जब मेरी आंखोंके सामने आ जाता है तो मैं कांप अुठता हूं। गांवके घरकी मिट्टीकी दीवारें थीं। अुनके छेदमें से अेक दिन तो छः सात फुट लम्बा सांप निकला और भाअी वणीकर और अुनकी पत्नीको न काटकर चला गया। यह मेरी आंखों देखी घटना है।

"दूसरी बार अेक ढोर बांधनेके ठानके अूपरके कोठेमें — जहां पूरी तरह खड़े रहना भी संभव नहीं था — दोनों पति-पत्नी रहते थे और मैं अुनके यहां आता-जाता था, यह मुझे याद है। अैसी सेवा करते हुअे बम्बअीके अेक अुदार भाटिया सज्जनको दया आअी और अुसने पांच-सात हजारकी रकम दी। अुससे अेक खेत खरीदकर रहने और विद्यार्थियोंके छात्रालयके लिअे अच्छे मकान बनाये गये। तब अुन्हें कुछ सुख हुआ। आजकल ये भाअी वणीकर मेरे आग्रहसे मध्यप्रान्तमें सरकारकी तरफसे गोंड वगैरा आदिवासियोंका काम पिछले दो सालसे कर रहे हैं।"

श्री वणीकरकी तरह ही अुनके पीछे पीछे श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त भी आकर्षित हुअे और धीरे धीरे वे भी बम्बअीका महलोंका रहना छोड़कर पंचमहालकी सूखी जमीन पर वीरान मुल्कमें देहातके मिट्टीके मकानमें रहकर भीलोंकी सेवा करने लगे। अुनके पीछे अुनकी श्रीमंत पत्नी भी आ गअी।

अिन दो सेवकोंके सिवाय अंबालाल व्यास जैसे अेकनिष्ठ और मूक भीलसेवक पंचमहालकी भूमिमें ही मिल गये। वे गुजरात विद्यापीठके स्नातक हो गये थे। ठक्कर साहबके व्यक्तित्व और भीलोंकी सेवाके लोभसे आकर्षित होकर अिस नये मंडलमें शरीक हो गये और अुन्होंने वतनमें ही सेवायज्ञ शुरू कर दिया।

अिनके सिवाय श्री अीश्वरलाल वैद्य, श्री रूपाजीभाअी परमार, श्री मगनलाल महेता वगैरा सेवकोंका स्रोत भी जारी ही रहा। अिस प्रकार ठक्कर साहबने जब १९२२ के दिसम्बरमें अपनी योजना प्रकाशित करके गुजरातके सामने ५२,००० रुपयेकी रकम और बारह सेवकोंकी मांग रखी, तब अिसके लिअे अुन्होंने जो आशा रखी थी अुसके अनुरूप सौ प्रतिशत नहीं तो भी लगभग साठ-सत्तर प्रतिशत अुत्तर अुन्हें प्रथम छः मासमें ही मिल गया। अीश्वरका नाम लेकर पंचमहालकी सूखी धरतीमें भील-सेवा-मंडलकी बुनियाद डाली गअी और पूर्ण श्रद्धा और भक्तिसे सेवाका श्रीगणेश कर दिया गया।

१८

कार्यका आरम्भ

भील-सेवा-मंडलकी बाकायदा स्थापना तो १९२२ के दिसम्बरमें ठक्कर साहबने योजना प्रकाशित की अुसके बाद हुअी। परन्तु कार्यका आरम्भ तो बहुत पहले हो चुका था। मीराखेड़ीमें सुखदेवभाअीने तीस रुपयेकी जमीन लेकर अुस पर झोंपड़ी बना ली थी और अुसमें आश्रम शुरू कर दिया था। बादमें अुसमें नंदलाल आचार्य और डाह्याभाअी नायक वगैराके शरीक होने पर वहां शिक्षाका कार्य भी शुरू कर दिया गया था। अिस आश्रम और पाठशालाका जो खर्च आता, वह गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस समितिकी तरफसे मिलता था और श्री अिन्दुलाल याज्ञिक अुसकी देखरेख रखते थे। ठक्कर साहबका अिस संस्थाके साथ कोअी सीधा सम्बन्ध नहीं था, परन्तु १९२२ के आरम्भमें पंचमहालमें भारत-सेवक-समाज और बम्बअीकी कष्ट-निवारण-समितिकी तरफसे काम करने आये और मार्चमें अुनके हाथसे अिस संस्थाका अुद्घाटन हुआ, तबसे संस्थाके कार्य-संचालनमें प्रेरणा और पथप्रदर्शन देनेमें वे प्रमुख थे। श्री अिन्दुलाल याज्ञिक तो अुस समय असहयोगकी राजनीतिमें अितने अधिक गुंथे हुअे थे कि अिस संस्थाका आर्थिक भार वहन करनेके सिवाय अधिक जिम्मेदारी अुन्होंने अपने सिर नहीं रखी थी; अुन्हें अितनी फुरसत भी नहीं थी। अिस पर भी ठक्कर साहब जैसे बुजुर्ग, अेकनिष्ठ और निष्णात मानवसेवक अिस विभागमें मौजूद हों, तब श्री अिन्दुलाल याज्ञिक अिसकी चिन्ता क्यों करें? सार यह कि मीराखेड़ीमें जो कुछ काम शुरू होता, अुसके खर्चका प्रबन्ध श्री अिन्दुलाल याज्ञिक और प्रान्तीय समितिके अधीन काम कर रहा अन्त्यज मंडल करता और अुसकी देखरेख, संचालन और पथप्रदर्शन ठक्कर साहब करते। अिस प्रकार मीरा-खेड़ीके आश्रमके पीछे दो महान संस्थाओंके प्रतिनिधि-स्वरूप दो महान पुरुषोंका पृष्ठबल और समर्थन विद्यमान था।

१९ मार्च, १९२२ को होलीके पर्वके बाद ठीक सातवें दिन मीरा-खेड़ी आश्रमका अुद्घाटन श्री ठक्कर साहबके शुभ हाथोंसे किया गया और अुस दिन चार भील बालकोंको पहले पहल आश्रममें भरती किया गया।

अिस सिलसिलेमें ठक्कर साहबने आश्रमके रोजनामचेमें अिस प्रकार लिखा :

"आज रविवार फाल्गुन वदी सप्तमीके दिन भील आश्रमका प्रारम्भ किया। नीचे लिखे चार लड़के भरती किये गये:

१. वेस्ता कमजी अुम्र ८ वर्ष
२. चूनीलाल कमजी अुम्र ५ वर्ष
३. मानजी तेलिया अुम्र १० वर्ष
४. जबिया धनजी अुम्र १३ वर्ष

"अिन चार लड़कों और अन्य पांच लड़कोंको दोपहरके दो बजे नहलाकर और तिलक लगाकर गुड़ खिलाया। अुपरोक्त चार लड़कोंको नये कपड़े पहनाये। प्रार्थना कराअी और आजसे आश्रम खोला।

"निम्नलिखित सज्जन अुपस्थित थे:

१. भाअी जेठालाल विश्वनाथ
२. भाअी सुखदेव विश्वनाथ
३. भाअी दलसुखराम केशवलाल पुरोहित
४. भाअी जशभाअी चूनीभाअी अमीन
५. आचार्य नंदलाल हरजीवन महेता

"दाहोदके नारायण छत्रमलजी दलालकी तरफसे अिस अवसर पर २।। सेर गुड़ भेंटमें मिला है।

फाल्गुन वदी ७, संवत् १९७८: १९ मार्च, १९२२

अमृतलाल वि० ठक्कर"

आश्रमके रोजनामचेमें "भील बालकोंको नहला-धुलाकर, नये कपड़े पहनाकर, तिलक लगाकर और गुड़-धानी खिलाकर भरती किया" — ये शब्द लिखते समय बापाके मनमें क्या क्या भाव अुठे होंगे, यह बतानेको आज वे जीवित नहीं हैं। मगर आज भी हम जंगल और वीरान प्रदेशमें स्थित अुस अूंचे टीले पर खड़ी झोंपड़ीमें मन्द मन्द मुसकाते हुअे और भील बालकोंको प्रेमसे नहलाते और तिलक लगाते हुअे अुन वयोवृद्ध पुरुष और अुनके अुल्लासपूर्ण वदन तथा प्रेम बरसाती आंखोंकी कल्पना आसानीसे कर सकते हैं। अुनके हृदयमें बसा हुआ स्वप्न मानो मीराखेड़ीकी धरती पर साकार बन रहा हो, अैसा आश्रमके रोजनामचेमें पहले पन्ने पर आजसे तीस वर्ष पहले लिखे गये अिन अक्षरोंसे पढ़ा जा सकता है।

ठक्कर साहब अुस समय दाहोद-झालोदके अकाल-पीड़ित प्रदेशमें १९२२ के जनवरीसे मअी अंत तक रहे और चरखे द्वारा कष्ट-निवारण कार्य किया। अिस अरसेमें वे समय समय पर मीराखेड़ी आश्रम देखने आ जाते।

महीनेमें अेक दो बार तो अचूक आते थे। आते तब मकान देखते, पाठशाला देखते, विद्यार्थियोंको क्या पढ़ाया जाता है, कैसे पढ़ाया जाता है, अिसका निरीक्षण करते। विद्यार्थियोंको जो पढ़ाया जाता है अुसे वे पूरी तरह समझते हैं या नहीं, अिसकी परीक्षा करनेके लिअे पूछताछ करते। अिसके सिवाय अुन्हें कैसे रखा जाता है, अिसकी भी अुतनी ही बारीकीसे जांच करते।

जूनके महीनेमें अकाल-निवारणका काम पूरा करके वे अमरेली गये और अमरेलीसे अेक मास पूना रहकर पंजाबके दौरे पर गये। वहांसे लौटनेके बाद अुन्हें मिले हुअे साथियोंकी मददसे पंचमहाल जिलेके दाहोद-झालोद तालुकोंमें रामका नाम लेकर भील-सेवा-मंडलकी स्थापना करके कार्यारंभ किया। दाहोदके अकाल कार्यालयको ता० ५–११–'२२ को भील सेवा मंडल कार्यालयमें बदल डाला गया। दिसम्बरमें योजना प्रकाशित की गअी और बादमें जैसे जैसे सेवक मिलते गये वैसे वैसे गरबाड़ा, जेसावाड़ा, गुलतोरा, मुड़ाहेड़ा वगैरा गांवोंमें केन्द्र खोले गये और अेक अेक सेवकको वहां रख कर अुसे कामकी जिम्मेदारी सौंपी गअी।

ये सेवक अपने अपने केन्द्रोंमें पाठशाला चलाते, गरीबों और कंगालोंको अनाज और कपड़ेकी मदद देते, धार्मिक पुस्तकोंमें से प्रसंगोपात्त कथा सुनाते, बीमार और रोगियोंको अुपयोगी दवा देते और मद्यनिषेधका अुपदेश करते। अिस प्रकार प्रत्येक केन्द्रमें रखा गया सेवक अेक ही साथ शिक्षक, अुपदेशक और वैद्यका काम करता था।

दाहोदसे दक्षिणमें बारह मील दूर गरबाड़ा गांवमें अेक पाठशाला शुरू की गअी। वहां लगभग ६० भील बालक और २० हरिजन लड़के पढ़ने आने लगे। अिस गांवमें जिला बोर्डकी पाठशाला बहुत वर्षोंसे चलती थी। परन्तु कुछ कारणोंसे भील लड़के वहां बहुत नहीं जाते थे, जबकि अिस नअी पाठशालामें ८० तक विद्यार्थी आने लगे। अिन लड़कोंको मंडलकी तरफसे स्लेट, पेन्सिल, पुस्तक वगैरा मुफ्त दी जाती थीं। पाठशालाके अलावा जुलाहोंकी अेक सहकारी-समिति भी शुरू की गअी।

दूसरा केन्द्र जेसावाड़ा था। यह गांव दाहोदसे वायव्य दिशामें आठ मील दूर स्थित है। वहां केवल पाठशाला ही नहीं परन्तु छात्रालय भी शुरू किया गया और श्री पांडुरंग वणीकर जैसे विद्वान और अुत्साही कार्यकर्ता और अुनकी पत्नीको वहांका सारा काम सौंपा गया। विद्यार्थियोंको मुफ्त खानापीना, रहना तथा कपड़ा वगैरा दिया जाता था। विद्यार्थियोंको लिखने-पढ़ने और हिसाबके सिवाय बढ़अीगिरी और कताअी जैसे अुद्योग

भी सिखाये जाते थे। अिसके सिवाय वहां अीश्वरलाल वैद्यके संचालनमें अेक दवाखाना भी शुरू किया गया। जेसावाड़ाके आसपास तीन तीन चार चार कोस दूरसे लोग यहा दवा लेने आने लगे। वहांके लोग कच्चे कुअेंका पानी पीते, अिसलिअे नहरूका रोग अुस अिलाकेमें खूब फैलता था। अिन रोगियोंको अिस दवाखानेसे काफी राहत मिलती। अीश्वरलाल वैद्य रोज औसत तीस बीमारोंको दवा देते। अुनमें बुखार, दस्त और नहरूके रोग आम थे।

तीसरा केन्द्र गुलतोरा दाहोदसे ११ मील दूर था। यहां दिन और रात दोनोंकी पाठशाला शुरू की गअी। अुसमें विद्यार्थियोंकी औसत हाजिरी ४९ तक रहती थी। विद्यार्थियोंको स्लेट, पेन और पुस्तक मुफ्त दी जाती थी। ४२५ रु० खर्च करके यहां अेक पाठशाला और शिक्षकके रहनेका मकान — लकड़ीके खंभों और खपचियोंकी दीवालोंका अेक झोंपड़ा — बनाया गया। शालाके लिअे जमीन अिसी गांवके अेक भील किसानने दी थी।

चौथा केन्द्र मुड़ाहेड़ा दाहोदके अुत्तरमें १६ मील दूर था। अिस गांवमें अेक शाला शुरू की गअी, जिसमें ३० से ४० तक विद्यार्थी आने लगे। अेक पंचाल गृहस्थने शालाके मकानके लिअे मुफ्त जमीन दी। वहां भी गुलतोराकी तरह ही ४२५ रुपये खर्च करके शाला तथा शिक्षकके रहनेका मकान बनवाया गया।

अिसके अतिरिक्त दाहोदसे पूर्वमें १२ मील दूर टीमरड़ा गांवमें भी काम शुरू हुआ। यहां आसपासके गांवोंमें लगभग चार स्थानों पर जिला बोर्डकी पाठशालाअें थीं। अिसलिअे दूसरी नअी पाठशाला शुरू नहीं की गअी। लेकिन सेवकोंकी तरफसे अिसके लिअे प्रचार कार्य शुरू हुआ कि अिन्हीं पाठशालाओंमें विद्यार्थी पढ़ने जाने लगें। बालकोंको पाठशालाओंमें ले जानेका काम कार्यकर्ता और सेवकोंको सौंपा गया।

ठक्कर साहब स्वयं तो दाहोद रहते और वहां रहकर अिन सब केन्द्रोंमें जाया करते थे। महीनेमें कमसे कम अेक बार वे लगभग प्रत्येक केन्द्रमें बैलगाड़ीसे जाते और अेक दो दिन केन्द्रमें बिताकर कार्यका निरीक्षण करते। कार्यकर्ताओंकी कोअी कठिनाअी होती तो अुसे दूर करते। अुनकी जरूरतोंका ध्यान रखते। अिसके सिवाय जरूरत होती वहां काममें अुनका पथप्रदर्शन भी करते थे।

प्रथम छः मासमें अिस प्रकार चार जगहों पर पाठशालाअें, अेक जगह छात्रालय, अेक जगह औषधालय और दो जगह सहकारी समितियां शुरू की गअीं।

यद्यपि अिसमें सभी जगह अुतनी सफलता नहीं मिली जितनी सोची गअी थी और काममें अपार कठिनाअियां आअीं, फिर भी पहले छः महीनोंमें अितना काम अवश्य हुआ जिससे अुत्साह बना रहे।

अिस सम्बन्धमें ठक्कर साहबने रिपोर्ट प्रकाशित करके संस्थाकी जरूरतें बताते हुअे लिखा, "फिलहाल शिक्षकों और सेवकोंका वेतन, जेसावाड़ा आश्रमके भोजनालयका खर्च तथा अन्य खर्च, दवाओंकी कीमत, पाठशालाओंमें विद्यार्थियोंको दिये जानेवाले कपड़े, पुस्तकें और साबुन वगैराका खर्च मिला कर कुल चालू खर्च ७०० रु० से अधिक हुआ है। अब तक कुल दान केवल २,७४८ रु० मिला है। यह सब रकम चालू खर्चमें काम आ गअी है। अिसके सिवाय थोड़ा कर्ज भी हो गया है। अिस प्रकार हर महीने लाकर हर महीने खाना पड़े, अैसी हमारी स्थिति है। खर्चमें कोअी कमी होना संभव नहीं। अितना ही नहीं, आगामी वर्षमें तो मूल योजनाके अनुसार केन्द्र बढ़ाकर पांचके दस करनेका विचार है। अिस प्रकार अुस हिसाबसे चालू मासिक खर्च बढ़कर दुगुना अर्थात् १,४०० रुपये हो जायगा।"

अिसके बाद देशमें रहनेवाले धनवानोंसे अिस संस्थाको दान देनेके लिअे दर्दभरी अपील करते हुअे कहा:

"बम्बअी-अहमदाबाद जैसे शहरोंमें तथा अन्य स्थानों पर रहनेवाले सज्जनोंसे मैं विनती करता हूं कि हमारे समाजकी अैसी नीची पंक्तिकी और कुचली हुअी जातियोंका भविष्य बदलना जरूरी है और अिसके लिअे सेवकों और धन दोनोंकी जरूरत है। भील लाखोंकी संख्यामें हैं। यह जाति पानीवाली है। परन्तु आज अुसे अपने अिन्सानी हकोंका भान नहीं है। अिस नीचे गिरी हुअी जातिको मददके जरिये खड़ा करके देशकार्यमें लगाना चाहिये। यह काम आसान नहीं है। अिसके लिअे सेवाभाववाले सच्चे सेवकोंकी खास जरूरत है और रुपयेकी भी अुतनी ही जरूरत है। धनवानोंके भण्डारमें पतित जातियोंको सीधा खड़ा करनेके लिअे आवश्यक धन-सामग्री भरी हुअी है। अुसमें से थोड़ी सहायता अुन्नतिके लिअे तैयार खड़ी अिस जातिके लिअे नहीं मिल सकती? मुझे पूरी आशा है कि दुखियोंकी पुकार अवश्य सुनी जायगी।"

१९

कठिनाअियां

भील-सेवा-मंडलकी स्थापनाके बाद शुरूमें काम काफी आगे बढ़ा, लेकिन ज्यों-ज्यों अुसका विकास होता गया, त्यों त्यों अनेक प्रकारकी परेशानियां और मुश्किलें भी सामने आने लगीं। दाहोद-झालोद तालुकोंमें जब तक ठक्कर साहब केवल अकाल-निवारणका ही काम करते थे, तब तक सरकारी कर्मचारियों, व्यापारियों, भील लोगों, बोहरों और अन्य वर्गोंका साथ अुन्हें काफी मात्रामें मिला। जनताने तो अुनका स्वागत ही किया। कर्मचारियोंने विवेकपूर्वक अुनके काममें सहयोग और सहायता दी। अूंचे वर्गोने भी अेक परोपकारी सज्जन और सच्चे सेवकके नाते अुनका बड़ा सम्मान किया। यहां तक वे सबकी नजरोंमें बड़े आदमी लगते और 'दूरके पहाड़ सुहावने' वाली कहावतके अनुसार कलेक्टरसे लगाकर साधारण कर्मचारी और अूंचे वर्गसे लगाकर आम जनता तक वे सबको अच्छे लगते थे। परन्तु ज्यों ही अुन्होंने भील-सेवा-मंडलकी स्थापना करके शिक्षा, सहकारी समितयां, औषधालयों और आश्रमों द्वारा गरीबोंकी सेवा करना शुरू किया, त्यों ही अुन्हें कर्मचारियों और कुछ स्थापित स्वार्थोंका विरोध सहन करना पड़ा। यह सब तो ठीक है, मगर जिनके कल्याणके लिअे अुन्होंने अपना जीवन अर्पण कर दिया और अिस प्रदेशमें सेवा केन्द्र स्थापित किये थे, अुन भीलोंकी तरफसे भी कुछ अपवाद छोड़कर अुन्हें सहयोग मिलनेके बजाय कठिनाअियोंका ही अनुभव होने लगा।

मंडलकी तरफसे जहां जहां पाठशाला खोलने या आश्रम शुरू करनेके लिअे सेवक गांवमें जाते, वहां वहां शुरूसे ही अुनके पैर न जमने देनेकी नीति कुछ कर्मचारियोंने अपना ली थी। कारण, थोड़े समयमें ही अुन्होंने साफ देख लिया कि यदि अिन लोगोंने यहां अपने केन्द्र खोल दिये और गहरी जड़ें डाल दीं, तो हमारी हुकूमत तो खतम ही समझना चाहिये। फिर भीलों जैसी अज्ञान और पिछड़ी हुअी जातिसे जो अनेक प्रकारकी मुफ्त सेवा मिलती है, वह बन्द हो जायगी। भील हमसे डरना छोड़ देंगे। फिर हमारा हुक्म नहीं मानेंगे और जो काम अिस समय आसानीसे अुनसे बेगारमें करा लिया जाता है, वह मुश्किलसे भी नहीं कराया जा सकेगा। कुछ अपराधोंमें अुन्हें अनुचित रूपमें फंसाकर बादमें छुड़वानेके लिअे अुनसे रिश्वतका रुपया नहीं अैंठा जा सकेगा। ये और अिस प्रकारके जो अन्य तरह तरहके

लाभ वे निरंकुश होकर भोग रहे थे, अुन पर अंकुश लग जायगा और हुकूमतसे मिलनेवाले तमाम लाभ बन्द हो जायंगे — यह दहशत अुन्हें लगने लगी।

अिसलिअे वे टेढ़े या सीधे ढंगसे अिस तरहकी कोशिश करते कि भील-सेवकोंको न तो देहातमें रहनेके लिअे मकान मिले और न पाठशालाओंके लिअे जमीन मिले। कोअी भील गांवके कार्यकर्ताको अपने घर ठहरने न दे अिसका वे ध्यान रखते। अगर कोअी ठहरानेकी हिम्मत करता, तो अुससे बैर रखते और मौका मिलने पर बदला लेकर अुस भीलको अितना तंग करते कि फिर वह कार्यकर्ताके पास फटकनेका साहस भी न करता। कार्यकर्ता लोकलबोर्ड या अिस तरहकी धर्मशालामें ठहरने जाता, तो अुसमें भी कुछ बहाने बनाकर विघ्न डालते और ठहरना मुश्किल कर देते। पाठशालाके लिअे जमीन खरीदने जाते तो अिसकी सावधानी रखते कि कोअी अुन्हें जमीन न बेचे; अितने पर भी जमीन मिल जाती तो आसपास या लगी हुअी जमीनवाले पड़ोसी भीलों या स्थानिक मनुष्योंको मंडलके विरुद्ध अुभाड़कर बीचमें सीमा या मेड़का झगड़ा करा देते। जमीन पर झोंपड़े खड़े किये हों तो कुछ न कुछ बहाना बनाकर अथवा बिना बहानेके ही पटवारी अुन्हें अुखड़वा देते। कानूनकी बारीकियोंसे फायदा अुठाकर मंडलके कार्यकर्ताओंके विरुद्ध सच्चे-झूठे मुकदमे खड़े करते और लम्बे समय तक अदालतोंमें धक्के खिलाकर परेशान कर डालते।

मंडलके कायम होनेके बाद शुरूके चार-पांच वर्षोंमें शायद ही कोअी वर्ष अैसा बीता होगा, जिसमें मंडलके किसी न किसी कार्यकर्ता पर मुकदमा न चलाया गया हो।

मंडलका कामकाज शुरू हुआ, अुन्हीं दिनों अेक मुकदमा अुन्होंने सुख-देवभाअीके विरुद्ध जमीनके बारेमें दायर किया। मीराखेड़ीमें सुखदेवभाअीने संस्थाके लिअे खेतीकी जमीन लेकर अुस पर आश्रमके लिअे झोंपड़ा बनाया था। अिसलिअे खेतीकी जमीनका खेतीके सिवाय दूसरे कामके लिअे अुपयोग करनेका अुन पर अभियोग लगाया गया और अिसके लिअे अुन पर ९० रुपये जुर्माना हुआ। सुखदेवभाअी कलेक्टरसे मिले, अुनसे अपील की और अुन्हें समझाया कि गांधीजी जैसे निष्णात वकीलकी सलाहके बाद ही मैंने यह झोंपड़ी बनाअी है। खेती तो मैं करता ही हूं। अिसके सिवाय फुरसतके समय लड़कोंको पढ़ाता हूं। अिसलिअे कानूनके अनुसार मुझ पर जुर्माना नहीं होना चाहिये। अिसके बाद भी जुर्माना पूरी तरह तो माफ नहीं हुआ, परन्तु ९०

रुपयेके जुर्मानेकी सजा घटा कर केवल दस रुपये ही रखी गयी। अन्तमें सुखदेवभाअीने दस रुपये भर दिये और अपना पीछा छुड़ाया।

अिसके अतिरिक्त सुखदेवभाअी पर सरकारी कामकाजमें दखल देने और अेक स्त्रीको मारपीट करनेके सम्बन्धमें दो अलग अलग मुकदमे चलाये गये। अेक मामलेमें तो लोगों पर धाक बैठाने और यह बतानेके लिअे कि वे मंडलके चाहे जैसे स्तंभ स्वरूप कार्यकर्ताको भी पकड़ कर जेलमें ठूंस सकते हैं वारंटकी तामील शनिवार शामको की, ताकि सुखदेवभाअी कोर्टमें हाजिर होकर जमानत पर छूट न सकें और शनिवारकी रात और रविवारके दिन अुन्हें जेलमें ही सड़ना पड़े।

साथ ही धूलाभाअी नामक अेक भील शिक्षकको जिस दिन वे मंडलमें शरीक हुअे अुसी दिन पकड़ लिया गया और अुन पर भी अेक झूठा मुकदमा चलाया गया।

मंडलके कार्यकर्ताओंके खिलाफ चलाये गये अिन सब मामलोंका जिक्र करते हुअे बापाने सं० १९८१ के वार्षिक विवरणमें अिस प्रकार लिखा था:

"पिछले साल मंडलके कार्यकर्ताओंके विरुद्ध जनताके अेक दुष्ट नौकरने (अर्थात् सरकारी कर्मचारीने) झूठे मुकदमे खड़े किये थे। अिन मुकदमोंके बारेमें आप सब जानते हैं, क्योंकि सारे दोहद शहर और पंचमहाल जिलेका ध्यान अुनकी तरफ आकर्षित हुआ था। अुस समय हमारे मंत्री श्री सुखदेव-भाअीको तो चार दिन हवालातमें भी रखा गया था, परन्तु अन्तमें तीनों मामलोंमें अलग अलग मजिस्ट्रेटोंने अुन्हें छोड़ देना ही मुनासिब समझा था। अंग्रेजीमें कहावत है कि अन्त भला तो सब भला। अुसके अनुसार अिस मामलेका ब्यौरेवार अितिहास नहीं पेश कर रहा हूं। परन्तु —

'भलो न तजे भलाअी ने बूरो तेम बूराअी;
न गया कोअी निशाळमां, भणवा भलमनसाअी.'

(भला आदमी अपनी भलाअी नहीं छोड़ता और बुरा आदमी बुराअी नहीं छोड़ता। भलमनसाहतकी शिक्षा लेनेके लिअे कोअी स्कूलमें नहीं जाता।)

"अिस प्रकार बुरेकी बुराअी मालूम हो गयी। हमने तो अिस विपत्तिको अपनी परीक्षा मान ली थी और अुसमें बिना किसी विघ्नके अुत्तीर्ण हो गये थे।"

परन्तु अिन विपत्तियोंका यहीं अन्त नहीं होना था। मंडलकी अभी और परीक्षा होनी बाकी थी।

१९२४ में मंडल पर फिर आफत आअी। जांबुआ गांवमें मंडलके किशोर अवस्थाके कार्यकर्ता और पाठशालाके आचार्य मगनलाल झवेरचंद महेता पर अेक झूठा अभियोग लगाकर अुन्हें अेक रात हवालातमें रखा गया और दूसरे दिन मुश्कें बांधकर दाहोद शहरमें घुमाया गया।

अिस मुकदमेके बारेमें असल बात यों हुअी। पाठशालाके आचार्य मगनलाल महेता अपने मिलनसार स्वभाव और कार्यदक्षताके कारण भील विद्यार्थियोंमें बहुत प्रिय हो गये थे। मगनलाल आचार्य अुन्हें अक्षरज्ञान देते ही थे।

अिसके सिवाय शराब न पीने, मांस छोड़ने और रोज नहानेके बारेमें भी अुपदेश देते थे। अुनके अुपदेशोंका बहुत असर अिन विद्यार्थियों पर होता था। अुनमें से कुछ निरामिषाहारके समर्थक बन गये। अेक दिन दो भील गांवके तालाबमें मछलियां मार रहे थे। अुन्हें गांवके कुछ लड़कोंने देखा। अिसलिअे अुन्होंने पाठशालामें आकर आचार्य मगनलालजीसे बात कही। मगनलालजी पाठशालासे तालाब पर गये। अुन्हे देखकर वे भील कुछ शर्मसे और कुछ अिस अपराधी अन्तःकरणसे कि वे जनसमाजके विरुद्ध आचरण कर रहे हैं, तालाबमें जाल फेंककर तुरन्त भाग गये। अिसलिअे मगनलाल भी पाठशालामें लौट आये। अिस बीच गांवके कुछ लड़के, जिनमें अेक पाठशालाका विद्यार्थी भी था, तालाबके पानीमें से जाल ढूंढ़ लाये और अुत्साहमें सबने मिलकर अुन्हें जला दिया। अिसके बाद कुछ दिन बीत गये। पंद्रह दिनके बाद गरबाडा थानेदारका गांवमें मुकाम हुआ तब अुसे अिस बातका पता चला। अुसने देखा कि पाठशालाके आचार्यको फन्देमें फंसानेका यह अच्छा मौका है। अिसलिअे अुसने झूठे गवाह और सबूत खड़े करके मगनलाल पर यह आरोप लगाया कि अुन्होंने खुद जाल लाकर जला दिया और हाथोंमें हथकड़ियां डालकर रातभर जंगल-विभागके थानेमें अुन्हें कैद रखा और दूसरे दिन सबेरे दाहोद गांवमें घुमाकर अुन पर अदालतमें मुकदमा चलाया। परिणामस्वरूप अुन पर ३१ रुपया जुर्माना हुआ।

अिस घटनाके सम्बन्धमें ठक्करबापाने पुलिस कर्मचारियोंके वैरवृत्तिसे भरे हुअे व्यवहारकी आलोचना करते हुअे सन् १९२५ के वार्षिक विवरणमें सख्त टिप्पणी लिखी है। अुसमें वे कहते हैं कि:

"गत वर्ष मंडलके अेक कार्यकर्ता भाअी मगनलाल झवेरचंद महेताके विरुद्ध गरबाड़ाके पुलिसवालोंने अेक झूठा मुकदमा खड़ा किया था। मंडलके भिन्न भिन्न कामोंसे जिन सरकारी नौकरोंको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमें चिढ़ है अथवा जिनके आचरणका भंडाफोड़ होता है, वे अिस मंडलके सेवकोंको तंग

करने या कष्ट देनेमें थोड़ा भी विचार नहीं करते। सं० १९८१ के सालमें भी गरबाड़ाके थानेदारने तीन फौजदारी मुकदमे चलवाये थे, परन्तु अुनमें अुन्हें सफलता नहीं मिली। परन्तु पिछले वर्ष मगनलाल महेताके खिलाफ जो मुकदमा खड़ा किया गया, अुसमें वे फिलहाल कामयाब हो गये हैं।...

"...दाहोदकी अदालतने मगनलाल महेताको कसूरवार ठहराकर अुन पर ३१ रुपये जुर्माना किया है। अिस मामलेकी अपीलका अूपरकी अदालतसे फैसला नहीं हुआ है। अिसलिअे अधिक लिखनेकी जरूरत नहीं। परन्तु केवल द्वेषभावसे और सार्वजनिक हितके लिअे अुसके दुष्कृत्योंका भंडाफोड़ करनेवाले मंडलको नुकसान पहुंचानेके अुद्देश्यसे दुष्ट पुलिस झूठे मामले खड़े कर सकती है, अिसका यह अेक नमूना है। सत्य पर डटे रहनेवालेको थोड़ा दुःख सहन कर ही लेना चाहिये, अिस न्यायसे हम अैसी बातें बर्दाश्त करनेको तैयार ही बैठे हैं।"

अिसके बाद दूसरे ही वर्ष फिर रायणवाड़ियामें आचार्यके रूपमें कार्य करनेवाले श्री दुर्लभजीभाअी पर मछली मारनेवालोंके साथ मारपीट करके अुन्हें लूट लेनेका झूठा अभियोग लगाया गया। अिस घटनाका मंडलके वार्षिक विवरणमें अुल्लेख करते हुअे ठक्करबापा सरकारी नौकरोंकी विरोधी नीतिकी कलअी खोलकर सख्त और स्पष्ट शब्दोंमें आलोचना करते हैं। वे लिखते हैं:

"भीलों जैसी अज्ञान जातिका फायदा अुठाकर सरकारी नौकर अुन्हें खूब तंग करते हैं। अैसी परिस्थितिमें मंडलके केन्द्रोंका सरकारी नौकरोंकी आंखोंमें किरकिरी बनकर खटकना स्वाभाविक है। मंडलके नये केन्द्रके आरम्भसे ही अुनकी तरफसे कठिनाअियां अुपस्थित की जाती हैं, अिसलिअे बहुत असुविधायें अुठाकर केन्द्रको जमानेमें देर लगती है।

"अिस वर्ष भी मंडलके नये केन्द्र रायणवाड़ियाके आचार्य दुर्लभजी-भाअी पर पुलिसने मच्छीमारोंको मारपीट कर लूट लेनेका आरोप लगाकर मुकदमा चलाया है। अैसे मुकदमोंसे पाठशाला या आश्रमके कार्यमें विघ्न जरूर पड़ता है। परन्तु अब तो मंडल अिन विघ्नसंतोषी मनुष्योंका आदी हो गया है। मुकदमेका नतीजा अभी नहीं निकला है, परन्तु अुसके परिणामकी बाट देखे बिना रायणवाड़िया पाठशाला आगे बढ़ रही है। मछली मारनेके जालके सम्बन्धमें यह दूसरा मुकदमा है। वास्तवमें तो सरकारी नौकर अैसा जाल डालकर मंडलके आदमियोंको पकड़ने जाते हैं। परन्तु अन्तमें निराश होते हैं। 'सत्यमेव जयते नानृतम्।'"

अिस प्रकार अफसरों और सरकारी नौकरोंकी तरफसे समय समय पर विघ्न डाले जाते सो तो ठीक। जैसा बापाने कहा, अिस बातका अुन पर कोअी असर नहीं होता था। परन्तु अेक और मुश्किल खुद भीलोंकी तरफसे ही पैदा हो गअी। वह यह कि भीलोंके बच्चे पढ़ने ही न आते। बड़े शहरोंकी बस्ती छोड़कर केवल सेवाभावमें रंगकर जो सेवक यहां आये, अुन्हें सरकारी शिक्षा-विभागकी भांति तैयार पाठशालाअें और तैयार विद्यार्थी नहीं मिले थे कि कुर्सी पर बैठकर पांच घंटे पढ़ा दिया और छुट्टी मिली। यहां तो जड़से ही काम खड़ा करना था। अुन्हें दाहोदसे कुछ मील दूर गांवोंमें बैठना पड़ता था। अिस पर भी कअी जगह न तो रहनेके पूरे साधन और अन्य सुविधायें मिलती और न लोगोंका पूरा सहयोग। शुरूमें प्रत्येक कार्यकर्ताको देहातमें जाकर भीलोंको जमा करके, समझाकर अुनके बच्चोंको पाठशाला या आश्रममें भरती करानेका काम करना पड़ता था।

फिर, शुरूमें तो भीलोंके बालक कुतूहलवश पढ़ने और रहने आ जाते। परन्तु आखिर तो वे जंगलके जीव ठहरे। दो चार दिन आश्रममें रहते, अुसके नियमानुसार प्रातःकालीन प्रार्थनासे लगाकर रातको सोने तक समय बिताते तो अुन्हें मानसिक आकुलता अनुभव होती। अुन्हें लगता मानो अुनका जीव पिंजड़ेमें बन्द कर दिया गया है; और फिर वे मौका पाकर कोअी न देख सके अिस तरह रातको बिस्तरसे अुठकर अथवा बाहर कहीं कामसे जानेका बहाना बनाकर आश्रमसे पांच, सात या दस मील दूर अपने गांव भाग जाते। भील-सेवा-मंडलने प्रारम्भमें देहातमें जहां-जहां केन्द्र कायम किये, वहां-वहां प्रत्येक कार्यकर्ताको अैसा ही अनुभव हुआ। भीलोंके बालक आते, पाठशाला या आश्रममें भरती होते, दो चार दिन ठीक तरहसे रहते और फिर शिक्षककी आंख बचाकर चले जाते। झालोदमें आश्रम शुरू किया गया तब अुसमें २७ विद्यार्थी भरती हुअे, परन्तु दो तीन दिन बाद ही बारह विद्यार्थी भाग गये।

अेक बार आश्रमका अेक विद्यार्थी फागुन मासमें आचार्यसे छुट्टी लिये बिना अपने गांव भुणखेसल जानेको आश्रमसे भाग गया। रास्तेमें अुसे धूप लगी या और कुछ कारण हुआ और वह मर गया। भील लड़कोंकी यह भागदौड़ केवल झालोद आश्रम तक ही सीमित नहीं थी। जेसापरा, मीराखेड़ी, गरबाड़ा, जांबुवा, भीमपुरी वगैरा प्रत्येक केन्द्रमें वह मामूली बात थी। अिस कारण कार्यकर्ता अथवा शिक्षक अपना कार्य निश्चित रूपमें नहीं कर सकते थे। भीलोंके अिन भाग जानेवाले बालकोंको कैसे रोका जाय और

भागकर गये हुओंको समझाकर कैसे वापस लाया जाय, यह बड़ा भारी कठिन कार्य हो गया था।

झालोद तथा अन्य स्थानों पर अिस प्रकार भील बालक भाग जाते तब शिक्षक या गृहपति अुन्हें बुलाने जाते। यह देखकर वहांके बनिये व्यापारी लोग हंसते और कहते कि अिन जंगली भीलड़ोंके पीछे खूनका पानी क्यों कर रहे हो? ये कभी समझनेवाले हैं? अिन्हें पढ़ाकर क्या करोगे? अितने पर भी कार्यकर्ताओंमें स्वयं ही अितनी लगन थी और बापाकी अैसी प्रेरणा थी कि वे कठिनाअियोंकी परवाह न करके अपने काममें लगे रहते।

अुन दिनों दाहोद-झालोद तालुकोंके प्रदेशमें पगडंडीके रास्ते या पहाड़ीके किनारे, नदी पार करता हुआ या भीलोंके झोंपड़ोंमें भटकता हुआ खादी-धारी आदमी नजर आता, तो सभी अुसे पहचान लेते कि यह भील-सेवा-मंडलका कार्यकर्ता, शिक्षक, मिशनरी या जो भी कहिये सब कुछ है और वह या तो भील बालकोंको बुलाने गया होगा अथवा बुलाकर पाठशाला जा रहा होगा। मंडलके शुरूके दिनोंमें जहां जहां आश्रम स्थापित हुअे वहां यही स्थिति रही। शुरूके दस-बारह महीनोंमें तो अुग्र रूपमें। अिसके बाद कार्यकर्ताओंके पुरुषार्थ और समझानेके कारण कुछ अंशमें हलकी हो गअी। फिर भी पांच छः वर्ष तक वह थोड़ी बहुत मात्रामें बनी ही रही।

दूसरा परेशान करनेवाला सवाल था मकानोंकी कठिनाअीका। कार्य-कर्ता किसी गांवमें जाता तो वहां रहनेके लिअे या पाठशालाके लिअे मकान न मिलता। अिस बारेमें पहले कहा जा चुका है कि बापाने अिस दिशामें कार्यकर्ताओंको नया ही हल सुझाया। अुन्होंने शुरूसे ही स्वावलम्बन और स्वाश्रयका पाठ पढ़ाया। कार्यकर्ता जिस गांवमें जाय वहां स्वयं ही लोगोंको समझा-बुझाकर कमरा जुटा ले और रहना शुरू कर दे। रहनेकी जगह लोग न दें तो गांव छोड़कर चला न जाय परन्तु तब तक तपश्चर्या की जाय। गांवके बाहर किसी विशाल पेड़की छायामें जैसे अवधूत धूनी रमा-कर पड़ा रहता है वैसे ही अुसे सेवाकी धूनी जगाकर पड़े रहना है। जांबुवाके तरुण आचार्य मगनलाल झवेरचंद महेताने शुरूमें पेड़के नीचे ही रहना और शिक्षण कार्य शुरू किया था। अुसके बाद ज्यादातर बन्द रहने-वाले सरकारी मकानोंके बन्द बरामदोंमें और बादमें अेक लुहार भवतके लुहारखानेके सायबानमें पाठशाला शुरू की। अिसी प्रकार झालोदसे ३२ मील दूर भीमपुरीमें जब आश्रम खोलनेके लिअे भीलसेवक श्री रूपाजी परमारको भेजा गया, तब बैलगाड़ीसे सामान अुतारकर अुन्होंने बड़के नीचे

ही डेरा लगाया और भील बालकोंको अिकट्ठा करके वहीं पाठशाला शुरू की। रूपाजी बड़की टहनीके साथ सनकी चटाअीकी दीवार खड़ी करके रातको पेड़के नीचे ही सो रहे थे कि रातको छलांगें भरता हुआ बाघ आया। आकर अुसने दहाड़ मारी। दहाड़ सुनकर रूपाजीभाअीके हाथपैर ढीले हो गये। फिर भी दूसरे दिन डरके मारे अुन्होंने गांव और वह स्थान छोड़ नहीं दिया, परन्तु मिशनरीके अुत्साहसे काम जारी ही रखा। बापाको यह खबर मिली तो अुन्होंने रूपाजीको बधाअी भेजी और कहा कि, "हमें तो खतरोंके बीच ही जीकर काम करना है।"

जेसावाड़ा आश्रममें, जहां श्रीकान्तके मित्र श्री पांडुरंग वणीकरने डेरा डाला था, अुनकी गोठान जैसी जीर्ण-शीर्ण कोठरीमें अेक दिन सांप निकला। निकलकर वापस बांसकी टट्टीमें घुस गया। रात थोड़ी कठिनाअीसे बीती, परन्तु काम तो आगे बढ़ाना ही था। जेसापराकी जमीन खेतीकी थी, अिसलिअे सांप तो कभी कभी ही निकलते, मगर बिच्छू और कनखजूरेका कोअी पार ही नहीं रहता था। फिर भी अीश्वर पर श्रद्धा रखकर खतरेके बीच जीकर अुन्होंने काम किया।

भील लोग अपने बालकोंको आश्रम और पाठशालामें पढने भेजें, यह अुन्हें समझानेमें आरम्भ-कालमें शिक्षक और सेवकोंको बड़ी दिक्कत अुठानी पड़ी थी। भीलोंको अिन सेवकोंका परिचय नहीं था, अिसलिअे शुरूमें तो वे डर-डरकर अिनसे दूर भागते थे। सेवककी अपेक्षा वे अुन्हें चूसनेवाले कसाअी वोहरे और बनिये आदि व्यापारी वर्ग पर ही अधिक विश्वास रखते। और ये लोग भीलोंके भोलेपनका पूरी तरह लाभ अुठाते। अुन्हें अुल्टी-सीधी पट्टी पढ़ाकर कहते कि, "ये लोग तुम्हें मुफ्त खिलाते और पढ़ाते हैं, परन्तु अिसमें मत लुभा जाना। ये तो अपने स्वार्थके लिअे अैसा करते हैं। स्वार्थ न हो तो कोअी पराये लड़कोंको मुफ्त खाना-पीना और कपड़ा क्यों देगा? दुनियामें कभी अैसा कहीं हुआ है? ये थोड़े दिन अिस तरह खिला-पिलाकर तुम्हारे लड़कोंको लड़ाअीमें भेज देंगे। अिसलिअे अपना भला चाहते हो तो अपने लड़कोंको मंडलकी पाठशालाओंमें मत भेजो।"

बेचारे भोलेभाले भील लोग अिनका कहा सच मान लेते, अिनकी बात झट अुनके गले अुतर जाती और वे बच्चोंको आश्रममें न भेजते।

भीलोंको पढ़ाअीके लाभ समझाये जायं, तो भी बच्चोंको पाठशालामें भेजनेकी बात अुनकी समझमें ही नहीं बैठती थी। कोअी शिक्षक अुन्हें कहने लगे तो वे ठंडे दिलसे भीलोंका अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र समझाकर कहते :

"अेक लड़का ढोरोंमें जाता है, दूसरा खेतमें काम करता है और अेक घर संभालनेको रहता है। अब अेक और ज्यादा हो तो दे दूं।" दूसरा भील अिससे भी आगे बढ़कर कहता कि, "हम भीलोंको पढ़नकी क्या जरूरत? हमें कहां नौकरी करने जाना है? हम भीलोंके लिअे तो चौदह विद्याअें हलकी नोकमें हैं।"

साथ ही जो लोग अज्ञान भीलोंको रुपया अुधार देकर अुन्हें सदाके लिअे कर्जमें डुबाये रखते थे और अुन्हें अनेक प्रकारसे चूसते थे, अुन व्यापारी और सूदखोर वर्गोंकी तरफसे भी मंडलके बारेमें भीलोंमें गलतफहमी पैदा करनेकी पूरी कोशिश होती थी।

मीराखेड़ीमें आश्रम स्थापित हुआ तब वहांका अेक बोहरा अिन भीलोंके दिलोंमें आशंका पैदा करनेके लिअे अुन्हें अुल्टी-सीधी बातें समझाता और चेतावनी देता कि, "अिन लोगोंसे वास्ता रखा तो खेत छीन लेंगे। अिस लिअे तुम अिनसे कोअी सम्बन्ध न रखो और अिन्हें अपने खेतोंमें न आने दो।" असल बात यह थी कि यह बोहरा ही भील लोगोंके खेत छीन लेनेकी कोशिशमें लगा हुआ था। अुसे यह डर था कि मंडलके कार्यकर्ता भीलोंके साथ सम्बन्ध बढ़ायेंगे तो अुसकी लूट बन्द हो जायगी। यह बोहरा बड़ा बदमाश था। वह फी रुपया चार आने ब्याज लेता था। अुसे सब 'अूभो वहोरो' (खड़ा बोहरा) कहते थे, क्योंकि वह हिसाब-किताब कुछ नहीं रखता था; जबानी ही हिसाब करके भीलोंको धोखा देता और हर साल अुनसे खूब रुपया अैंठ लेता था।

अैसा ही अेक और बनिया व्यापारी था। अुसका नाम मगन गोपालजी था। वह भी भीलोंके साथ लेन-देन करनेमें काफी कमाअी करता था। वह तो मंडलके कार्यकर्ताओंकी हंसी अुड़ाता और कहता था:

"आप लोग भीलोंको पढ़ाने और सुधारनेकी व्यर्थ माथापच्ची करते हैं। आप कितनी ही मेहनत कीजिये, परन्तु अेक बात आपको मालूम है? ये भील लोग जो अनाज पैदा करते हैं, वह हमारे ही भाग्यमें लिखा है। अुनकी मक्की और दूसरा सारा अनाज खेतोंमें से सीधा हमारी कोठीमें ही जाता है। अिसके लिअे विधाताने पाअिप लाअिन बना दी है। अिसलिअे कहावत पड़ गअी है कि 'आअी होली कि निपटे भील और कोली'। होलीके बाद भीलके पास खानेको कुछ होता ही नहीं। अुसे तो बनियेकी दुकानसे ही लेना पड़ता है।"

भील लोगोंकी सेवा ये अूंचे वर्गके लोग करें, यह दाहोदके अूंचे वर्गके व्यापारियोंको पसंद नहीं था। अेक और धनवान व्यापारी कहता था:

"आप लोग अिन भीलोंके लिअे क्यों परिश्रम कर रहे हैं? बनिये-ब्राह्मणोंके लिअे काम करें तो फल निकलेगा। ये जंगली लोग आबदस्त लेते नहीं, खरहे मार कर खा जाते हैं, आचार-विचारका अुन्हें भान नहीं। अैसे लोगोंके लिअे अितना अधिक परिश्रम करनेकी अपेक्षा बनिये-ब्राह्मणोंका बोर्डिंग चलायें तो कामका फल निकले।" अिन दलीलोंके बारेमें बापा सुनते तो कहते: "आप सब बनिये-ब्राह्मणोंका बोर्डिंग चला रहे हैं। फिर अुन्हें हमारी क्या जरूरत? हम तो अिन गरीब लाचार लोगोंका काम कर देते हैं, जिनका कोअी बेली नहीं और जिन्हें सब लूट खाते हैं।"

मीराखेड़ीमें मंडलके कार्यकर्ताओंको जो जमीन मिली थी, वहां अेक छोटासा आश्रम खड़ा किया गया था। अुस आश्रममें जाना हो तो जल्दीके रास्ते अेक पड़ोसी भीलके खेतमें होकर जाना पड़ता था। शुरूमें अिसी तरह चलता था, परन्तु अिस बीच अेक विघ्नसंतोषी व्यापारीने भीलोंको भड़काया। अिससे मंडलके सेवकों और विद्यार्थियोंका वह रास्ता बंद कर दिया गया। अिसलिअे बादमें अुन्होंने घूम कर लम्बे रास्ते जाना शुरू कर दिया।

भीमपुरीमें हरजी महाराज नामक अेक भील पटेल था। अुसने पाठशालाके लिअे थोड़ीसी जमीन दी। अुसे तहसीलदारने धमकाया और कहा, "जमीन क्यों दी? वापस ले लो।" अिस बातकी खबर लगते ही मंडलके मंत्री सुखदेवभाअी वहां पहुंच गये और अुसके नोटिस देनेके पहले ही अुससे मिले, अुसे हिम्मत दिलाअी और समझा लिया। अिसलिअे जमीन मंडलके पास रह गअी।

मुड़ाहेड़ामें भी अेक पाठशाला बनानी थी। अिसके लिअे अेक भीलने मुफ्त जमीन दी। परन्तु झालोदके कमासदारने अुसे बुलाकर खूब धमकाया। बेचारा भील डर गया। अुसने बापाके पास आकर सारी बात सुनाअी और हाथ जोड़ कर कहा, "चाहिये तो सौ रुपये ले लीजिये। परन्तु जमीन नहीं दूंगा। मैं मारा जाअूंगा।"

सरकारी नौकरोंकी अैसी मनमानी और गुंडागिरी देख कर बापा अुस दिन बहुत क्रोधमें आ गये। अुनका पुण्यप्रकोप भड़क अुठा और अुन्होंने सेवकोंसे अपना कार्य अधिक लगन और जोशसे जारी रखनेका अनुरोध किया। अुस दिन बापाने अिस घटनाकी आलोचना करनेवाला अेक लेख लिखा और अखबारोंमें छपनेको भेजा। अुसमें अुन्होंने सरकारी नौकरोंकी मनमानी नीति और मंडलके प्रति वैरवृत्तिकी निन्दा करके लिखा कि, "कितने ही विघ्न आयें तो भी भील-सेवा-मंडलने भीलोंकी सेवा करनेकी जो प्रतिज्ञा ली है, अुसे वह पूरा करेगा। मंडल शिक्षा और सेवा द्वारा अपना काम

जारी रखेगा। जो अीश्वर पक्षियोंको घोंसला बनानेकी बुद्धि देता है, वह हमें भी जंगलके बीच जीनेकी बुद्धि देगा। अिस कार्यमें कर्मचारी कितने ही विघ्न डालें तो भी मैं डरकर या अुकताकर आश्रम बन्द नहीं करूंगा। मकान मिले तो अच्छा, न मिले तो बड़के पेड़के नीचे भी हमारी पाठशाला चालू रहेगी।"

दाहोद-झालोद तालुकोंकी सीमा पर स्थित देशी राज्योंमें भी भीलोंकी आबादी बहुत थी। अुनकी हालत तो जिलेके भीलोंसे भी खराब थी। वहां न सरकारी पाठशाला होती थी, न संस्थाकी तरफसे। अिन भीलोंमें कभी कभी सामाजिक सुधार करनेके लिअे मंडलके कार्यकर्ता जाते थे। परन्तु वहां अुनकी प्रवृत्तियों पर जिलेसे भी अधिक कड़ा अंकुश रहता था। पहले पहले तो देशी राज्योंकी हदमें अिजाजतके बिना आने ही नहीं देते थे। कोअी आ जाय तो कर्मचारी जल्दी ही रवाना कर देते अथवा दूसरी अड़चनें अुपस्थित करते। अुस समय जिला कलेक्टरने पोलिटिकल अेजेंट द्वारा देशी राज्योंके नाम अेक गुप्त परिपत्र भेजा था, जिसमें यह हिदायत दी गयी थी कि, "१९१३–१४ में गोविन्द गुरुने जैसा तूफान कराया था, वैसा यह ठक्कर न करा दे, अिसकी सावधानी रखें।"

गोविन्द गुरु भीलोंके गुरु थे। अिधरके बांसवाड़ेके देशी राज्यमें अुन्होंने धर्मका झंडा गाड़कर भीलोंको हजारोंकी संख्यामें 'भगताअी'की कंठी बंधवाअी और मांस-मदिरा छोड़नेकी प्रतिज्ञा करवाअी। देखते देखते यह हलचल खूब फैल गअी। और हजारों लोग गुरुकी कंठी बांधकर भक्त बनने लगे। धीरे धीरे अिस आन्दोलनने अुग्र रूप धारण किया और धार्मिक प्रवृत्तिसे बढ़कर राजनैतिक रूप धारण करने लगा। अुस समय पोलिटिकल अेजेण्टने मानगढ़की पहाड़ी पर अिकट्ठे हुअे भीलोंको बिखर जानेका हुक्म दिया। परन्तु भीलोंने यह हुक्म नहीं माना। अिसलिअे पुलिसने हवामें गोली चलाअी। गोली चलानेसे कोअी भील घायल नहीं हुआ और न मरा। अिसलिअे समस्त प्रदेशमें अैसी हवा फैल गअी कि गुरु गोविन्दमें चमत्कार है, दुश्मनकी गोली भी अुनके मंत्रके सामने कुछ काम नहीं कर सकती। अिससे अधिक भील अिकट्ठे हुअे और जोशमें आ गये। नतीजा यह हुआ कि सेनाने अुन पर गोली चलाअी और अुसमें सैकड़ों भील मारे गये। गुरु गोविन्दको पकड लिया गया और अुनको लम्बी सजा दी गअी। दस वर्ष बाद जब वे छूटकर आये तब भील-सेवा-मंडलने अुन्हें आश्रय दिया। अिससे कलेक्टरको ठक्करबापाकी प्रवृत्तियोंमें भी गुरु गोविन्दकी प्रवृत्तियोंकी गन्ध आअी हो तो आश्चर्य नहीं!

देशी राज्योंमें यों भी 'गांधीवालों' और कांग्रेसी आन्दोलनकारियोंके लिअे द्वार बन्द ही थे। अिस पर कलेक्टरका परिपत्र और मिल गया। फिर तो पूछना ही क्या? हमेशा गोरे हाकिमोंको ही खुश रखनेमें राज्यका हित समझनेवाले राजा और अुनके दीवान अिस मामलेमें दुगुने अुत्साहसे काम करते और ठक्करबापा या गांधीजीके दूसरे अनुयायियोंसे पूरी तरह सावधान रहते। सावधानी कैसी रखते, यह १९२३ में दशहरेके दिन बापा और अुनके साथियोंके प्रति पासके ही सरहदी देशी राज्य देवगढ़-बारियाके दीवान और पुलिस अधिकारीने जो अुद्धत और अुद्दण्ड व्यवहार किया अुससे सिद्ध हो जाता है। देवगढ़-बारियाकी घटना भील-सेवा-मंडलके अितिहासमें चिरस्मरणीय बन गअी है और वह देशी राज्योंकी अुस समयकी मनमानी कार्रवाअियोंका भंडाफोड़ करती है।

दाहोद-झालोदकी सीमा पर ही देवगढ़-बारियाका देशी राज्य था। वहां हर साल दशहरेके दिन राजाकी सवारी निकलती और भीलोंका बड़ा मेला भरता था। अिस मेलेमें भील हजारोंकी संख्यामें जमा होते और अुस दिन खूब शराब चढ़ाकर गाने-बजानेमें मस्त होकर रुपये और स्वास्थ्यकी बरबादी करते। बापाने दशहरेके दिन भील बालकोंको लेकर देवगढ़-बारियाके प्रवासमें जानेका निश्चय किया। अुन्होंने साथियोंसे यह बात करके कहा कि अिससे अेक आनन्ददायक पर्यटन हो जायगा। भील लड़कोंको राजाकी सवारी और मेला वगैरा देखनेको मिलेगा और साथ साथ भीलोंमें मद्य-निषेध और समाज-सुधारका प्रचार होगा। बापाने श्रीकान्तभाअी, कुछ और साथी तथा विद्यार्थी वगैरा मिलाकर कोअी चालीस यात्रियोंका पैदल संघ निकाला। जेसावाड़ासे सवेरे रवाना हुअे। दिन भरमें कोअी बाअीस मील तय करके शामको देवगढ़-बारिया पहुंचे। सब थककर चूर हो गये थे, अिसलिअे थोड़े आरामके बाद स्वस्थ होकर तुरन्त मेला देखने निकले। विद्यार्थी खादीके कपड़े पहने हुअे थे और हरअेकके हाथमें शराब मत पीओ, शराब पीनेसे बच्चे ठंड और भूखसे मरेंगे, रोज नहाओ, रोज नहानेसे तुम्हारे शरीर साफ रहेंगे, दाद-खुजली नहीं होंगे और नहरू नही निकलेगा, जादू-टोना करने वाले ओझासे मत डरो, वे लुटेरे हैं, तुमको ठग लेंगे — अिस प्रकारके सूचनात्मक वाक्योंवाले तख्ते थे। किसीने गलेमें डाला, किसीने लकड़ी पर लटकाया। अिस प्रकार विद्यार्थियों, कार्यकर्ताओं और सेवकोंका संघ मेलेमें घूमता-घामता तालाबके किनारेके पास आया। अितनेमें राजाकी सवारी निकली। आगे आगे भीलोंका दल हाथमें तीर-कमान और भाले लिये हुअे, अुनके पीछे राज्यके दूसरे पुलिसवाले और बादमें राजाकी सवारी थी। अुस

समय दीवानकी नजर अिस खादीधारी संघ पर पड़ी। अुसकी आंखें फिर गअीं। अुसने तुरन्त ही पुलिस अधिकारीको बुलाया और अुसके साथ कानाफूसी की। अिसके बाद सवारी खतम हुअी और बापा और अुनकी मंडलीके तमाम भाअी डेरे पर आ गये। अितनेमें ही पुलिसका आदमी बुलाने आया: "होमरूलिये कौन हैं? होमरूलियोंको साहब बुलाते हैं।"

बापा और साथके चालीस आदमियोंका संघ पुलिसके थाने पर गया। वहां देखा तो थानेदार नहीं था। थाने पर अुन्हें रातको देर तक यों ही हिरासतमें बैठाये रखा। थानेदार अुस समय दीवानके पास गया होगा। अन्तमें रातको ग्यारह बजे वह आया और अुसने बापाको जबानी हुक्म दिया कि अिस राज्यमें सरकारके या राज्यके विरुद्ध हलचल करनेका हुक्म नहीं। अिसलिअे अिसी वक्त वारिया राज्यकी हद छोड़कर चले जाओ।

बापा अुस समय अितनी रात गये सब विद्यार्थियोंको लेकर कहां जाते और कैसे जाते? राज्यकी सीमाके बाहर जानेमें तो आठ मीलका जंगल पार करना पड़ता था। रातको यह किसी भी तरह हो नहीं सकता था। फिर भी बापाने थानेदारसे लिखित आज्ञा मांगी। लिखित आज्ञा थी नहीं। थानेदारके जबानी हुक्मको बापाने माननेसे अिनकार कर दिया और कहा कि, "अिस समय अितनी रात गये अिन लड़कोंको लेकर जाना मेरे लिअे संभव नहीं। आप लिखित हुक्म भी नहीं देते। अिसलिअे मैं स्वेच्छासे अिस समय यहांसे नहीं जाअूंगा। आप चाहें तो हमें जबरदस्ती अुठाकर राज्यकी सीमासे बाहर फेंक दे सकते हैं। "

थानेदारने अन्तमें रातको अुन्हें छोड़ दिया। अिस प्रकार रातको देर तक अुसके साथ झकझक करके बापा डेरे पर आये तो डेरेवालेने मकान खाली कर देनेकी सूचना दी। बापा समझ गये कि यहां तक हुकूमतका दबाव आ पहुंचा है। अिसलिअे मकान खाली कर देनेके सिवाय कोअी चारा नहीं था। बापा मकान खाली करके संघको लेकर तालाबके किनारे पर गये और वहां बिस्तर लगाकर सब घेरा बनाकर सोये। सोनेके बाद भी दो-तीन बार पुलिसके आदमी आकर देख गये। अेक बार तो थानेदार घोड़े पर चढ़कर आया और कहने लगा "क्यों अमृतलाल काका कोअी अड़चन तो नहीं?" अिसकी जड़में अुन लोगोंका अुद्देश्य बापा पर सतत निगरानी रखनेका था। बादमें दीवान मोतीलालने भी अपना आदमी भेजा। अुसने आकर बापाको जगाया और कहा, "दीवान साहब आपको याद कर रहे हैं।" बापा बहुत बिगड़े और पूछा: "और क्या काम बाकी रह गया है? पुलिस थानेमें लम्बे समय बिठा रखनेसे सन्तोष नहीं

हुआ तुम्हारे दीवानको ?" अुस आदमीने नरम होकर कहा, "साहबने यह कहलाया है कि आप यहां खुलेमें ठहरकर कष्ट क्यों पा रहे हैं ? आप मेहमान घरमें ठहरिये।" बापाने कहा, "दीवान साहबसे कहना कि अुनका सन्देश मिल गया। अुसके लिअे धन्यवाद। वैसे अुन्होंने हमारा आतिथ्य बहुत अच्छा किया।"

अिस प्रकार वह आदमी चला गया और बापा और अुनके साथियोंने पिछली रात नींदमें बिताअी। दूसरे दिन सुबह अुठकर सबने बिस्तर समेटे तो पता चला कि तालाबके किनारे गन्दगी पड़ी हुअी है और वहां सबने रात बिताअी है!

सवेरे फिर दीवानने आदमीके साथ सन्देशा भेजा कि पहलेसे कहलवा दिया होता, (अर्थात् अिजाजत ले ली होती!) तो यह नौबत न आती। बापाने अिसका जवाब भेजा, "हम तो भारत-सेवक-समाजके आदमी हैं, अिसमें कहलवानेकी क्या बात थी?"

अिसके बाद बापा और दूसरे सब पैदल जेमावाड़ा आश्रम लौट आये।

बापाको राज्यके दीवान और पुलिसका बरताव बहुत ही अखरा था। बादमें अुन्होंने अिस सम्बन्धमें पत्रव्यवहार भी किया। साथ ही अिसकी भी परीक्षा कर ली कि दीवानकी 'पहलेसे कहलवाने' की बातमें कितना सार है। अिसलिअे दीवानको अेक और पत्र लिखकर अुन्होंने सूचित किया कि, "देवगढ़-बारियामें भील लोगोंकी आबादी बहुत है। वे सब हमारे आश्रम या पाठशालामें अपने बच्चोंको नहीं भेज सकते। अिसलिअे राज्यमें ही किसी अनुकूल स्थान पर आश्रम बनाने या पाठशाला खोलनेकी अिजाजत दीजिये।"

दीवानने मीठे शब्दोंमें चालाकीभरा जवाब दिया, "आपको यहां तक आनेका कष्ट क्यों अुठाना पड़े? पाठशाला या आश्रम जो भी शुरू करने लायक मालूम हो वह राज्यको बताअिये। राज्य स्वयं ही शुरू कर देगा।"

अिसके बाद वर्षों तक अुसने राज्यमें न तो आश्रम या पाठशाला शुरू करनेकी अिजाजत दी और न राज्यकी तरफसे शुरू की। अितने पर भी बापाने अपनी कोशिश नहीं छोड़ी। राज्यकी हदमें से भीलोंके अच्छे तेजस्वी लड़कोंको चुनकर अपने आश्रममें रखा और पढ़ा-लिखाकर तैयार किया। और बादमें जब बारियामें भीलोंके बीच सेवा करनेके लिअे अुन्हींको रखने लगे, तब वह समझ गया और नरम हो गया। अुन दिनों देशी राज्योंमें भीलोंकी शिक्षा और समाज-सुधारका निर्दोष काम करना भी कितना कठिन था, यह अिस घटनाने अच्छी तरह साबित कर दिया।

अपरोक्त कठिनाअियोंकी शृंखला देखकर कोअी यह न समझ लें कि अुन्हें कभी कहीं अनुकूलता प्राप्त ही नहीं हुअी। गुजरात या भारतमें अैसी बहुत कम जगहें हैं, जहां लोग सब बातें नकारात्मक दृष्टिसे ही देखा करें। हमारे यहां आम तौर पर लोग साधुओं, सेवकों और कार्यकर्ताओंको पहले कसौटी पर कसते हैं और अुस पर यदि वे सच्चे अुतरें तो अुन्हें पूजते भी हैं।

पंचमहालमें छावनी डालकर पड़े हुअे बापा और अुनके सेवकोंके प्रति सम्मान रखनेवाले, वे अच्छा काम कर रहे हैं अैसा विचार रखनेवाले आदमी भी जरूर थे। वे मंडलकी स्थापना हुअी तभीसे बापाके काममें मदद देते थे। कुछ सहृदय व्यापारी अक्सर थोड़े रुपये-पैसेकी भी सहायता करते थे। गरीब लोगोंकी, गांवोके लोगोंकी सेवा करके भील-सेवा-मंडलने थोड़े ही वर्षोंमें अैसा वायुमंडल पैदा कर दिया था कि वे संस्थाको अन्नके रूपमें अथवा दूसरी तरह भी कुछ मदद देते थे। मंडलके प्रारंभिक वर्षोंमें कठिनाअियो-रूपी बादलोंमें अितनी-सी विद्युतरेखा थी।

फिर, अुपरोक्त कठिनाअियोंके सिवाय और भी अेक कठिनाअी थी, जो आम तौर पर प्रत्येक संस्थाके साथ लगी रहती है। और वह थी आर्थिक संकट की। भील-सेवा-मंडलको शुरूके वर्षसे ही रुपयेकी हमेशा तंगी रहती थी। अुसका व्यय आयसे हर साल ज्यादा होता था। संस्थाके वार्षिक विवरणमें अिस बारेमें बापाको हर बार लगभग अेकसा ही लिखना पड़ता कि, 'मंडलकी आर्थिक स्थिति हरगिज संतोषजनक नहीं कही जा सकती।' अिसके बावजूद हर बार काफी रकम मिल जाया करती थी।

सन् १९२३ में मंडलका वार्षिक खर्च १७,२१६ रुपये हुआ। अिसमें से १२,९०४ दानमें मिले और ४,३१२ का कर्ज हो गया। अिसमें दवाखानेकी फीस तथा ब्याजके १,३९३ रुपयेकी आय होने पर खालिस कर्ज २,९१९ रुपये बाकी रहा। अिसी प्रकार दूसरे साल चालू खर्च १८,५०० तथा मकान बनानेका खर्च ३,१४३ मिल कर कुल २१॥ हजारसे अूपर खर्च हुआ था और मिले हुअे दानकी रकम २०,६३९ थी। अिस तरह हर साल थोड़ा थोड़ा कर्ज बाकी रहता था। फिर भी बापाको अपने काम और अीश्वर पर अटूट श्रद्धा थी। वे हर बार वार्षिक रिपोर्टमें लिखते कि, 'मंडलकी आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं।' फिर भी पैसेकी बहुत चिन्ता नहीं रखते थे। अुन्हें भगवान पर पूरी श्रद्धा थी। वे कहते, "जिसे सारे विश्वकी चिन्ता है वह स्वयं चिन्ता रख कर मंडलका काम चलाये जा रहा है। अीश्वर दे अुसी पर गुजर करनेवाला किसान जैसे रोज अपने लायक जुटा लेता

है, वैसे ही मंडल भी हर वर्ष प्रभु पर श्रद्धा रख कर जुटा लेता है। अैसे संयोगोंसे बंधी हुअी आमदनीसे होनेवाला प्रमाद रुक जाता है और जनताके सामने अपने कामके हिसाबके साथ खड़ा रहनेका मौका मिलता है।"

बापा मंडलके लिअे चंदा करने स्वयं तो जाते ही थे। साथ ही कभी कभी सुखदेवभाअी, डाह्याभाअी, श्रीकान्तभाअी वगैरा साथियोंको भी भेजते थे। अुन्हें रुपया कम ज्यादा मिले, अिसकी वे चिन्ता नहीं करते थे। परन्तु वे मानते थे कि सार्वजनिक कार्यकर्त्ताके लिअे यह बड़ी जरूरी तालीम है।

शुरूके दिनोंमें अुन्होंने मंडलके चंदेके लिअे सुखदेवभाअीको अहमदाबाद भेजा था। अुस समय मिल-मालिकों और सेठोंके बंगलोंके चक्कर काट काट कर वे अपने पैरोंके तलवे घिस डालते थे, तब मुश्किलसे कहीं अुनका स्वागत होता था। कुछ तो यों ही चक्कर लगवाते थे। कोअी अपमानजनक अुत्तर देते। सुखदेवभाअी बहुत ही निराश हो जाते थे और बापाको रोज पत्र लिखते। अितने निराशाभरे पत्र पढ़कर बापा अुन्हें साहस और अुत्साह दिलाते और कहते कि निराश होनेकी जरूरत नहीं। अेक बार रेवड़ीबाजारमें सुखदेवभाअी अेक सेठकी दुकान पर गये। अुसने जवाब दिया, "फुर्सत नहीं, कल आना।" अुन्होंने कहा, "ठीक है, यह रख जाता हूं, अिसे आप पढ़ लेना। मैं कल आपसे फिर मिलूंगा।"

वह सेठ बिगड़ा, "भाअी, तुम जाते हो या चपरासीसे धक्के देकर निकालनेको कहूं।"

सुखदेवभाअीने कहा, "चपरासीसे कहनेकी जरूरत नहीं; मैं यह चला।" यह सब अुन्होंने जाकर गांजीधीको कहा। गांधीजीने कहा, "ठक्कर साहबको लिखो। वे मेरे नाम पत्र लिखें और संस्थाके बारेमें बतायें। मैं व्यवस्था कर दूंगा।"

तदनुसार सुखदेवभाअीने बापाको पत्र लिखा। तब बापाने लिखा कि गांधीजीको क्यों कष्ट दिया जाय? स्वयं कमायें और स्वावलंबी बनें तभी खर्च करते समय पता चले कि पाअी पाअी कहांसे आती है।"

अिस प्रकार बापाको मंडलकी आर्थिक चिन्ता निरंतर बनी रहती थी। बीच बीचमें तो कड़ी कसौटीमें से भी पार होना पड़ता था। फिर भी बापाने संस्थाके लिअे स्थायी कोष जमा कर जानेका कभी विचार नहीं किया। कारण, वे मानते थे कि अैसा करनेसे संस्थाकी स्थिति मठ जैसी बन जायगी। सेवक आजकलके मठाधीशोंकी तरह आलसी और अहदी बन जायेंगे और संस्थाको जंग लग जायगा।

अिस प्रकार बापाने मंडलका काम आगे बढ़ाना शुरू किया, तब अूपर बताअी अनेक कठिनाअियां आअीं। परन्तु अुनसे न घबराकर अुन्होंने धीरज और लगनसे धीरे धीरे लोगोंका सहयोग प्राप्त करके अुनका प्रेम और विश्वास संपादन करके मार्ग निकालनेकी कोशिश की।

२०

साधना और कार्यविकास

हमने देख लिया कि भील-सेवा-मंडलके प्रारंभिक वर्षोंमें किस किस प्रकारकी कठिनाअियां पैदा होती थीं, कार्यकर्ताओंको कैसी परेशानी अुठानी पड़ती थी, कुछ स्वार्थी व्यापारी अुनके रास्तेमें किस तरह रोड़े डालते थे और भीलोंका अज्ञान और आलस्य भी मंडलके कार्यमें किस प्रकार रुकावट पैदा करता था। अिन कठिनाअियों और विडम्बनाओंके बीचसे मार्ग निकाल कर मंडलके कार्यका विकास करना था। अिसके लिअे आवश्यक धीरज, सहनशीलता, कार्यपरता, अुद्योग, परिश्रमशीलता और साहस आदि गुण बापामें अच्छी मात्रामें थे। बापाकी जगह कोअी अुग्र कार्यकर्ता होता, तो सरकारी कर्मचारियोंके साथ लड़ बैठता और झगड़ेमें मंडलका काम भी अेक तरफ रह जाता। अुनसे भी कोअी नरम स्वभावका विनीत वर्गका कार्यकर्ता होता, तो यह समझकर कि अितनी मुश्किलोंके बीच काम करना असंभव है, अपना क्षेत्र बदल डालता। अिससे भी ढीला कोअी आदमी होता तो कर्मचारियोंकी खुशामदमें लग जाता अथवा अिस हद तक नीचे न अुतरता तो भी अुन्हें खुश रख कर काम निकालनेकी मनोवृत्ति बना लेता। नतीजा यह होता कि कामकी आत्मा मर जाती। परन्तु बापाकी नजरके सामने कार्य, कार्यकी दिशा, ध्येय और ध्येय तक पहुंचनेका मार्ग वगैरा सब स्पष्ट था। साध्य और साधन दोनों चीजें अुन्होंने तय कर डाली थीं। किनके बीच रह कर काम करना है, आसपास किस किस प्रकारके तत्त्व विद्यमान हैं, कैसे कैसे बल काम कर रहे हैं, कहां कहां संघर्षकी संभावना है, यह सब, वे जानते थे। और यह जान लेनेके बाद ही अुन्होंने मंडल, मंडलके कार्य, मंडलके कार्यकर्ताओं और आसपासके समाजका चित्र खींच रखा था। अेक कुशल अिंजीनियर जैसे सारे मकानका नकशा बनाता है, वैसा ही नकशा अुन्हों नेमंडलके बारेमें तैयार कर रखा था। अब तो अुन्होंने बुनियाद खोदकर अिमारत खड़ी करके अींट-चूना भरना शुरू कर दिया था।

भील-सेवा-मंडलके प्रथम दस वर्षका समय अुसके संस्थापक और साथी कार्यकर्ताओंके लिअे साधनाका काल था। बापाने अेक साधककी वृत्ति और लगनसे ही ये वर्ष बिताये और हाथमें लिया हुआ काम पूरा करनेके लिअे कड़ा परिश्रम किया। वे शुरूके अिन दिनोंमें मंडलके अध्यक्षके रूपमें दाहोदके मुख्य कार्यालयमें रहते और वहां रह कर मंडलका संचालन करते। भील-सेवा-मंडलका मुख्य कार्यालय अुस समय दाहोदके अेक मिट्टीके मकानमें था। वहां थोड़े समय रहनेके बाद गांवके बीचमें दाहोदके अेक व्यापारीके दुमंजिले मकानमें बदल लिया और बादमें जो तीसरा मकान मिला वह भी अैसा ही था। मिट्टीकी दीवारें और अूपर खपरेल अैसे बिलकुल मामूली मकानमें बापा रहते। अुनके साथ अेक हिसाबनवीस, अेक व्यवस्थापक और अेकाध संस्थाका रसोअिया वगैरा मिलाकर दूसरे तीन-चार आदमी रहते थे। आगे चलकर जैसे-जैसे काम बढ़ता गया, वैसे-वैसे आदमी भी बढ़ते गये। बापाने सब कार्यकर्ताओंके लिअे दाहोदमें अेक आम भोजनालय रखा। वहां सब साथ खाते। अिसके अलावा, शुरूसे ही वे अपने साथ अेक-दो भील विद्यार्थी भी रखते थे। अिस भोजनालयमें बापा सबके साथ बिलकुल सादा, गरीब आदमीके लायक खुराक खाते थे। हफ्तेमें दो तीन बार मक्कीकी रोटियां होतीं, अेक दो बार जुवारकी भी होतीं। गेहूंका अुपयोग होता जरूर था, मगर थोड़ी मात्रामें।

पचपन-साठ वर्षके बुजुर्ग आदमी होने पर भी कभी अैसा नहीं हुआ कि अुन्होंने खाने-पीनेमें ‘यह क्यों बनाया, वह क्यों नहीं बनाया’ का कभी कोअी प्रश्न अुठाया हो। जो होता वही सबके साथ खा लेते। बाहरसे कभी नजदीकी रिश्तेदार या अैसे ही कोअी मेहमान आते, तब परेशानी पैदा होती थी। अेक बार ठक्करबापाके छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्कर अुनसे मिलनेके लिअे दाहोद आये। अुस दिन बापाकी विशेष सूचना पर गेहूंकी रोटी वगैरा चीजें बनीं और अुन्हें परोसी गअीं। डॉ० केशवलाल ठक्करने स्वाभाविक तौर पर ही मानो अपने घर भोजन कर रहे हों अिस तरह सब चीजें खा लीं और अुन्हें कोअी शंका या विचार भी न होता। परन्तु बादमें घूमते-घूमते अुन्होंने अेक तख्ता देखा। वह भोजनका समयपत्रक था और हर रोज मंडलके आम भोजनालयमें क्या क्या बनाया जाय, अिसका ब्यौरा अुसमें दिया हुआ था। डॉ० केशवलाल ठक्करको बादमें पता चला कि यह समयपत्रक, जो वहां हमेशा टंगा रहता था, बापाकी सूचनासे ही अुनके आनेसे पहले अुतरवा लिया गया था। कारण, वह समयपत्रक अुनके देखनेमें आता तो नाहक अुनका जी दुखता अथवा बड़े भाअीको अिस बारेमें अुलहना

देते या प्रेमपूर्ण आग्रह करके अिस प्रकार मक्की और जुवारकी रोटियां खानेके बजाय अुन्हें रोज नियमित रूपमें बनिये-ब्राह्मणोंकी खुराक दाल-चावल-रोटी-साग वगैरा खानेका अनुरोध करते। यह स्थिति पैदा न होने देनेके लिअे बापाने समयपत्रक अुतरवा कर अेक तरफ रखवा दिया था। परन्तु अिस बातका डॉ० ठक्करको अचानक ही पता चल गया।

दाहोद कार्यालयके कामकाजमें वे रोज संस्था संबंधी नियमित डाक लिखते, स्थानीय पाठशाला और आश्रममें समय देते, गांवमें जुलाहों और हरिजनोंके मुहल्लोंमें जाकर चरखे और खादीका प्रचार करते और मुसलमान भाअियोंके साथ भाअीचारा बढ़ाते। मंडलके गांवोंमें चलनेवाले केन्द्रोंको हिदायतें भेजते। वहांसे कार्यकर्ताओंने जो जो चीजें मंगाअी हों, वे बाजारसे मंगवाकर गांवोंमें भिजवाते। अिसके सिवाय और जो भी काम सौंपा गया हो अुस पर अमल करते।

दाहोदमें वे महीनेमें पंद्रह सोलह दिन मुश्किलसे रहते थे। बाकीका अधिकांश समय वे सब केन्द्रोंका दौरा करनेमें बिताते। वही दो बैलोंकी छोटी गाड़ी, वही साथी सुखदेवभाअी और वही भीलोंके गांव, झोंपड़े और मुहल्ले। अुस समय बापा पगड़ी बांधते थे। देहातमें जाते समय गाड़ी होने पर भी बहुधा पैदल चलते। चलते समय धोतीका कच्छ बना लेते और हाथमें संन्यासीके दण्ड जैसा लम्बा सोटा रखते थे। हरअेक केन्द्रमें महीनेमें अेक बार तो कमसे कम जाते ही थे। वहांकी पाठशालाका निरीक्षण करते। लड़के क्या पढ़ते हैं, कैसे पढ़ते हैं, शिक्षक अुन्हें किस प्रकार पढ़ाते हैं, अित्यादि बातोंकी खुद जांच करते। चलते वर्गमें आकर पाठशालामें बैठते और शिक्षण कार्यका निरीक्षण करते। लड़कोंको कविता सिखाते। हिसाब-पहाड़े पूछते, कहानी कहते और अुपदेश भी देते। और पाठशाला और आश्रममें स्वच्छता तथा सुव्यवस्था रहती है या नहीं, अिसका सबसे पहले ध्यान रखते। कहीं भी कागजका टुकड़ा पड़ा हो, दातुनकी चीर पड़ी हो या दूसरा बेकार कूड़ा पड़ा हो तो शुरू-शुरूमें कुछ भी न बोलकर चुपचाप अुठा लेते और कचरेकी टोकरीमें या अुसके लिअे नियत किये हुअे स्थानमें डाल देते। कागजके टुकड़े पड़े हों तो अुठाकर जेबमें डाल लेते।

विद्यार्थियोंके नाखून बढ़ गये हों, बाल बढ़ गये हों, कपड़े फट गये हों, आंखोंमें कीचड़ हो, कान गंदे हों, नखोंमें मैल हो, तो यह बताते कि अिन सबको साफ कैसे रखा जाय और अेक-दो बार खुद ही धोकर अुदाहरण अुपस्थित करते।

अेक बार झालोद आश्रममें पाठशालाके अेक कमरेके आंगनमें चूना चिपट गया था। चूना लगाते समय गिर गया था और जहां का तहां सूख गया था। कितने ही दिन तक अिस स्थितिमें रहनेसे अुसके पिंडे सख्त होकर जम गये थे। बापा अेक बार अिस आश्रमको देखने गये, तब वह चूना अुनकी नजर पड़ा। अुसे देख कर अुन्होंने वहांके अेक जिम्मेदार शिक्षक और कार्यकर्ताको आदेश दिया कि अिसे साफ करवा देना। शिक्षकने वह चूना साफ करनेका विचार तो रखा था, मगर चूना यों निकलेगा नहीं और जमीन साफ होगी नहीं, यह मानकर कुछ अश्रद्धा और कुछ आलस्यके मारे यह काम मुलतबी रखा। दूसरे दिन भी स्थिति ज्यों की त्यों थी। यह देखकर बापाने कुछ भी न कहकर अेक विद्यार्थीसे फावड़ा मगवाया और धोतीका कच्छ चढ़ाकर फावड़ेकी धारसे सारा चूना घिस कर अुखाड़ डाला। अितने समयमें बहुतसे विद्यार्थी जमा हो गये। अुन कार्यकर्ता शिक्षकको पता चला तो वे भी दौड़ते हुअे आये और बापाके हाथसे फावड़ा छुड़ा कर और यह कह कर कि 'लाअिये बापा, मैं कर डालूं' साफ करने लगे। अुनकी शर्म-संकोच और पछतावेका पार नहीं था। परन्तु बापाने अुन्हें जरा भी अुलहना न देकर केवल अितना ही कहा कि, "देखो, अितना काम करनेमें पूरा आध घंटा भी नहीं लगा। अितनेसे समयके आलस्यके कारण कितने दिन पाठशालाके कमरेमें गंदगी पड़ी रही और विद्यार्थियोंके सामने गलत अुदाहरण अुपस्थित हुआ? अगर हम ही सफाअी, स्वच्छता तथा सुघडताका आग्रह नहीं रखेंगे, तो विद्यार्थी ये बातें किससे सीखेंगे?" वे शिक्षक भाअी लिखते हैं कि, "मेरे लिअे तो यह प्रसंग जीवन भरका अेक पदार्थपाठ हो गया।"

बापाने शुरूमें ही मंडलकी संस्थाओंमें स्वच्छताका यह आदर्श रखा, अिसलिअे अुनके अधीन तालीम पाकर तैयार हुअे कार्यकर्ता द्वारा चलनेवाले किसी भी आश्रम या पाठशालामें आज भी जायें तो वहां आंगन, पाठशाला और मुहल्ला साफ मिलेगा। मकान बिलकुल सादे होंगे, परन्तु मिट्टीसे लिपे हुअे होंगे। मुहल्लेमें पेड़ या फूलोंके पौदे लगे होंगे। छोटे छोटे रास्तोंके दोनों ओर अींटों या खपरेलोंकी किनार खड़ी की गयी होगी। पाठशाला, भोजनालय, भंडार, कमरे सब स्वच्छ और सुघड़ होंगे और प्रत्येक वस्तु अपनी जगह रखी हुअी नजर आयेगी। दाहोद, झालोद, मीराखेड़ी, जेसा-वाड़ा वगैरा आश्रमोंको मैंने आंखों देखा है और वहां की सफाअी, सादगी और सुघड़ता आंखोंमें समा जानेवाली मालूम हुअी है। अिन आश्रमोंमें पढ़नेवाले भील कुमार और कन्यायें भी देखने लायक हैं। अुनके मुख पर,

भले वे परिश्रम कर रहे हों या पढ़ रहे हों, गाते हों या खेलकूद करते हों, अेकसा आनन्द नजर आता है। अुनकी पोशाक ज्यादातर खादीकी ही होती है। और वह भी स्वच्छ, सादी और सुघड़ होती है। शहरोंमें साबुन और नील लगाकर बगुलेके पंख जैसे कपड़े पहननेवाला जो खादीधारी वर्ग होता है, अुसके साथ अिन लोगोंकी तुलना नहीं की जा सकती। अिनके कपड़ों पर मिट्टीका रंग चढ़ा हुआ दिखाअी देता है, फिर भी अिस रंगका बखान तो बिनोबाजीने भी किया है। और अुनके शब्दोंमें कहें तो "यह तो जमीनके साथ मनुष्यका सम्बन्ध बताता है।" वैसे अुनके कपड़े बिलकुल साफ, बिना मैलके, बिना दागके, बिना फटे हुअे और सुघड़ होते हैं। फटे हुअे कपड़ों पर पैबन्द लगाया हुआ होगा, परन्तु फटे-टूटे कपड़े किसीके शरीर पर नहीं पाये जायेंगे।

भील कन्याओं और बालकोंमें स्वच्छताका अितना अूंचा स्तर बना रहा है, अिसकी जड़में बापाका सफाअीका आग्रह ही है। वे जिस किसी पाठशालामें जाते, वहांके विद्यार्थियोंके कपड़े देखते; अुनके नख बढ़े हुअे हैं या कटे हुअे, और बाल कंघी किये हुअे हैं या नहीं, यह भी देखते। कपड़ों या बालोंमें जूं पड़ी है या नहीं, अिसकी भी जांच करते। और अिनमें से कुछ भी मालूम पड़ता कि तुरंत अुसकी सफाअी करके शिक्षकके सामने मिसाल पेश करते।

मंडलके शुरूके वर्षोंमें अेक दिन बापा मंडाहेड़ा गांव गये थे। वहां विद्यार्थियोंसे मिलेजुले। शिक्षकके साथ बातें की। बादमें सब विद्यार्थियोंको साथ लेकर तालाब पर नहाने गये। वहां जाकर सब विद्यार्थियोंको नहलाया। अुस समय अेक विद्यार्थीके सिरमें फोड़े हो गये थे। फोड़े अभी गीले थे और सिर पर मक्खियां बैठकर तंग करती थीं। बापाने अुस विद्यार्थीको पास बुलवाया। फिर अुसे अितने प्रेमसे नहलाया मानों अपने लड़केको नहलाते हों और बादमें सहज भावसे ही अपना अंगोछा लेकर धीरे-धीरे अुसका सिर पोंछा। फिर सिरके फोड़ोंकी जांच करके शिक्षकसे पूछा, "ये फोड़े कितने दिनसे हैं? अिसका अिलाज हो रहा है या नहीं?" शिक्षकने कुछ गोलमोलसा जवाब दिया। बापाने अुसके लिअे दवाका प्रबंध कराया और अुसके सिरके फोड़े मिटनेके बारेमें पूरी चिन्ता दिखाअी।

जैसा आग्रह वे अलग अलग आश्रमोंमें रहनेवाले विद्यार्थियोंकी शारीरिक स्वच्छताका रखते थे, वैसा ही आग्रह वे अिस बातका रखते थे कि अुन्हें मिलनेवाला भोजन स्वच्छ, सादा और पौष्टिक हो। साथ ही वे यह भी अच्छी तरह देखते थे कि वह भोजन अच्छी तरह पकाया हुआ मिलता है या नहीं। और अिसमें कहीं भी फर्क मालूम होता तो पाठशालाके आचार्य अथवा गृहपतिको हिदायत देते।

मीराखेड़ीमें अेक बार वे आश्रम तथा पाठशाला देखने गये, तब निरीक्षक-पोथीमें लिखे हुअे अुनके नीचेके वाक्य अिस बातका समर्थन करते हैं:

"कल दोपहर बाद भाअी सुखदेव और नर्मदाशंकरके साथ आया। आज सुबह दाहोद जा रहा हूं।

"डाह्याभाअी आचार्य सूरत गये हैं। हरगोविन्ददास, मथुरभाअी तथा छगनलाल काम कर रहे हैं। विद्यार्थियोंकी संख्या अच्छी है। आज ४४ हाजिर हैं।

"कल शामको कोदर रसोअियेने बच्चोंको दलिया कच्चा खिलाया। यह भी अबजी जैसे बड़े लड़केको मैंने पूछा तब मालूम हुआ। आचार्य बच्चोंसे अलग खाते हैं, अिसीका यह परिणाम है। हमारा ध्येय यह होना चाहिये कि आचार्य और बच्चे अेक ही भोजनालयमें खायें। यह ध्येय जैसे गोधरा और नवसारीके अंत्यज आश्रमोंमें पालन किया जाता है, वैसे यहां नहीं किया जा सकता? भगवान वह दिन जल्दी लाये।

"जाड़ेमें सबेरे साढ़े पांच बजेके बजाय छः बजे अुठनेका नियम रखनेका अनुरोध है।

ता० १-१-'२८ अमृतलाल वि० ठक्कर"
पौष सुदी ९, सं० १९८४

अुनका यह खयाल होने पर भी कि आचार्योंको विद्यार्थियोंके साथ रखना चाहिये, अुन्होंने यह खयाल आचार्यों पर जबरन् लादनेकी कभी कोशिश नहीं की। यहां भी अैसा प्रयत्न न करके बापा अीश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि अैसा दिन जल्दी आये। साथे ही, छात्रालयमें छोटे बड़े परिवर्तन सुझानेके लिअे सचालककी हैसियतसे हुक्म नहीं देते, परंतु अनुरोध करते हैं।

बापाका यह दृढ़ विचार था कि आचार्यों और विद्यार्थियोंको साथ खानेका नियम रखना चाहिये। दाहोदके कार्यालयमें रहकर संचालन करते तब वहां आश्रम जैसा नहीं था, परंतु बापा स्वयं अेक दो विद्यार्थियोंको साथ रखते और साथ ही खिलाते। अिस सिलसिलेमें भी अेक सूचक घटना मिलती है। अेक बार दाहोदमें खानेका समय होते ही रसोअियेने तीन थालियां परोसीं। अुनमें से अेक थालीमें घी ज्यादा परोसा और वह अधिक घीवाली थाली बापाके आसनके सामने रखी। बापाने यह देख लिया। अुन्होंने फौरन वह थाली हाथमें लेकर पासके अेक भील विद्यार्थीकी थालीके साथ बदल ली। रसोअियेने यह देखकर बेचैन होकर कहा, "बापा यह थाली आपकी है।" बापाने कहा, "कोअी परवाह नहीं। अिसमें घी अधिक है, अितनी

ही बात है न? बापा तो अब बूढ़ा हो गया। अुसे अितना घी पचेगा नहीं। अधिक घी जवानोंको ही पच सकता है।"

यों कहकर हंसते हंसते रसोअियेंको समानता और बन्धुताका अेक पदार्थपाठ दे दिया। अुस दिनसे रसोअिया बापाकी मौजूदगीमें परोसनेमें किसी भी प्रकारका पक्षपात करना भूल गया और बादमें सबको अेक ही ढंगसे परोसने लगा।

मीराखेड़ीमें अेक भील कार्यकर्ता थे। अुन्होंने प्रथम तीन वर्षकी और फिर बीस वर्षकी सेवाकी प्रतिज्ञा ली थी। वे आश्रमकी पाठशालामें पढ़े थे। और पढ़कर बापाकी प्रेरणासे संस्थामें शरीक हुअे थे। अेक दिन बापा आश्रम देखने आये। कार्यकर्ताकी खुशीका पार नहीं था। अुनका हर्ष समाता नहीं था। जिस भावसे शबरीने भगवान रामचंद्रजीके लिअे बेर रखे थे, अुसी भावसे भील कार्यकर्ताने बापाके लिअे अपने घर हलुवा, पूरी, शाक वगैरा बनवाया। बापाको अुस दिन कुछ काम था, अिसलिअे वे बाहर चले गये। जाते जाते कह गये कि मैं अेक घंटे बाद आश्रमके भोजनके समय लौट आअूंगा और विद्यार्थियोंके साथ खाअूंगा। अिसलिअे अगर पांच सात मिनट देर हो जाय तो प्रतीक्षा करें। अिससे अधिक देर तो हरगिज नहीं होगी। . . . कार्यकर्ता भाअीको तो बापाको खिलानेका अुत्साह था। अुनके लिअे अुन्होंने खास खाना बनवाया था। फिर भी शर्म और संकोचसे अिस बातको खोल नहीं सके। मनमें बापाको खिलानेकी चोरी भी जरूर थी। अिसलिअे अुन्होंने कहा, 'ठीक है।' परंतु बापाके चले जाने पर अिस डरसे कि कहीं बापा समय पर न आ पहुंचे अुसने सदासे पहले भोजनकी घंटी बजाकर विद्यार्थियोंको जल्दी खिला दिया। अिसके तुरन्त बाद ही बापा नियत समय पर आ पहुंचे और कार्यकर्ता भाअीको सामने खड़ा देखकर बोले, "क्यों, समय पर आ गया न?" अुस भाअीने कहा, "हां, परन्तु विद्यार्थियोंने तो भोजन कर लिया है और आपके लिअे मेरे घर पर भोजन तैयार करवाकर रखा है।" बापा वहां खाने गये। भील सेवकने हलुवा, पूरी वगैरा परोसे। बापाने अुस समय तो चुपचाप खा लिया। मगर बादमें अुसे मीठा अुलहना देकर कहा, "शिक्षकों और विद्यार्थियोंको सदा अेक ही भोजनालयमें खाना चाहिये। शिक्षकोंसे यह न हो सके तो दरगुजर किया जा सकता है। परन्तु मेरे जैसा संस्थाका मुख्य मनुष्य महीने भरमें अेकाध बार यहां आये, तब विद्यार्थियोंके साथ रहने, खाने, बातें करने और भाअीचारा बढ़ानेका जो मौका मिलना चाहिये वह अैसी घटनाओंसे छिन जाता है। साथ ही, भीलों जैसे गरीब लोगोंकी सेवा करनेवालेके लिअे अैसा भोजन पुसा भी नहीं सकता

और शोभा भी नहीं देता। अिसलिअे अैसा फिजूल खर्च कभी न किया जाय और मेरे निमित्तसे तो खास तौर पर न किया जाय।"

अैसी ही अेक और घटना अिसी गांवमें हुअी थी। शहरसे सेवा करने आये हुअे अेक-दो भाअी देहातके सादे भोजनसे कुछ कुछ अुकता गये थे। अुन्हें थोड़ी नवीनता चाहिये थी और स्वाद भी। अिसलिअे अेक भाअी दाहोद गये तब कुछ पपीते और पकौड़ियां बनानेके लिअे कुछ और सामग्री ले आये। बादमें कुछ भाअियोंने अिकट्ठे होकर पूरी, पकौड़ियां और शकर डालकर पपीतेका 'सीकंजवीन' वगैरा तैयार किया। ठीक अुसी दिन बापा आश्रमकी देखरेखके लिअे आ पहुंचे। आश्रममें चक्कर काटते हुअे अुनकी नजर शिक्षकोंके अिस समारोहकी तरफ गअी। परन्तु अुस समय वे कुछ न बोले। थोड़ी देर अिधर अुधर घूमे। अितनेमें छात्रालयमें भोजनका घंटा बजा। बापा भी सब विद्यार्थियोंके साथ खानेको अुठे। जाकर पंगतमें बैठ गये। शिक्षकोंने अुन्हें समझाया और कहा, "बापा, आपको तो हमारे साथ खाना है।" बापाने कहा, "यहीं सबके साथ ठीक है।" शिक्षकोंने बहुत आग्रह किया परन्तु बापाने कहा, "मुझे यहां सबके साथ ही अधिक अनुकूल होगा।" अन्तमें शिक्षकोंने अपनी भूल समझी। वे तैयार की हुअी रसोअी छात्रालयके भोजनालयमें लाये। सबको थोड़ी थोड़ी परोसी। बापाने भी ली। अध्यापकोंने भी ली और अुस दिन शिक्षक, विद्यार्थी, बापा और अन्य मेहमानों वगैराने सामूहिक भोजन किया और थोड़ेसे मित्रोंके लिअे सोचा हुआ प्रीतिभोज सबके लिअे प्रीतिभोज बन गया।

दाहोदमें रहकर बापा अलग अलग केन्द्रोंके अवलोकनार्थ जाते, तब अुनका कार्यक्रम पहलेसे ही तैयार हो जाता था। कार्यकी आवश्यकताके हिसाबसे कहीं अेक दिन, कहीं अेक रात तो कहीं केवल दो चार घंटे ही ठहरते और पाठशाला या आश्रमका निरीक्षण हो जाता, प्रबंध और शिक्षा सम्बन्धी प्रश्नोंका फैसला हो जाता और गांवके दूसरे सवाल निपट जाते तो चल देते। जरूरतसे ज्यादा अेक दिन तो क्या अेक घंटा भी कहीं ठहरते नहीं थे। जिस कामके लिअे जितना समय तय किया हो अुतने ही समय वे रहते थे।

अिसमें अेक दिन अैसा हुआ कि दौरेमें अलग अलग केन्द्रोंका निरीक्षण करते करते वे जांबुवा गांवकी पाठशाला देखने आ पहुंचे। जांबुवामें अुनके प्रिय शिष्य मगनलाल झवेरचंद महेता आचार्यके रूपमें काम करते थे। बापाके मन तो सब कार्यकर्ता अेकसे थे। परंतु मगनलाल पर अुनका लड़के जैसा प्रेम था। वे वहां रहे, खाया, पाठशालाके कामकाजका निरीक्षण किया

और फिर रात वहीं बिताअी। दूसरे दिन सुबह जल्दी ही साढ़े पांच बजे वहांसे रवाना हो जानेका निश्चय किया। परंतु संयोगवश अुस दिन सारी रात झिरमिर झिरमिर वर्षा हुअी। आकाश अभी तक निरभ्र नहीं हुआ था। काले काले बादलोंका घटाटोप होता जा रहा था ओर अैसा लगता था मानो अभी बरसात टूट पड़ेगी।

मगनलाल महेताने सोचा कि अैसी भयंकर वर्षा सिर पर मंडरा रही है तब बापा थोड़े ही जायंगे? अिसलिअे वे अिस विचारसे कि बापाके साथ अेक दिन और रहनेको मिलेगा मनमें खुश होकर दूसरे दिनका कार्यक्रम सोचने लगे और अिस संबंधमें विचार करके सो गये।

परंतु दूसरे दिन प्रातःकाल होनेसे पहले ही बापा जल्दी अुठकर प्रातःकर्मसे निवृत्त हुअे, बकरीका दूध पिया और जानेके लिअे तैयार हो गये। धोतीका कच्छ चढ़ाकर अुन्होंने तो लाठी हाथमें ले ली। मगनलालको आश्चर्य हुआ। पूछा, "बापा, कहां चले?"

बापाने कहा, "कहां क्यों? यहांसे आगे दूसरे गांवको।"

"मगर बापा, अैसेमें जायगे? सिर पर वर्षा मंडरा रही है।"

बापा कहने लगे: "अिससे क्या, बरसात होगी तब देखा जायगा। अुससे पहले तो रास्ता तय करके आगेके मुकाम पर पहुंच जाअूंगा।"

मगनलालने बापासे खूब अनुनय-विनय किया। कहा, "बापा, आज जाना रहने दीजिये। यह बरसात अभी टूट पड़ेगी और परेशानीका पार नहीं रहेगा।"

परंतु बापाने कहा, "मैं अिस तरह ठहर नहीं सकता। अिस वर्षाको अपना काम है तो मुझे भी अपना काम है। अपना काम पूरा करनेमें अगर वर्षाको जल्दी या देर नहीं होती, तो मैं कैसे देर कर सकता हूं? कुदरत अपना काम करेगी और अिन्सान अपना।"

मगनलालने बहुत दलीलें दीं। आग्रह किया। विनती की। फिर भी जब अुन्हें निश्चय हो गया कि बापा किसी तरह नहीं मानेंगे, तब अुन्होंने कहा, "जानेका निर्णय कर ही लिया है तो भले जाअिये। मैं आपको नहीं रोकूंगा। परंतु रास्तेमें शायद मुश्किल हो, अिसलिअे मैं आपको अकेले नहीं जाने दूंगा। मैं आपके साथ चलूंगा।"

बापाने कहा, "नहीं, यह भी नहीं हो सकता। तुम्हारा जो कर्तव्य है अुसे छोड़कर तुम मेरे साथ नहीं चल सकते। अिससे पाठशालाका काम बिगड़ेगा, बच्चोंकी पढ़ाअीमें हानि होगी और दूसरे कामोंमें भी हर्ज होगा। अिससे ज्यादा अच्छा है कि तुम यहीं रहो। मैं आरामसे पहुंच जाअूंगा।"

अन्तमें बहुत ही आग्रह करनेके बाद मगनलालने बीचका रास्ता निकाला और अेक अन्य भील सेवकको बापाके साथ भेजा।

अिस प्रकार बापाने मगनलालसे बिदा ली और जांबुवा गांवसे निकलकर हाथमें लाठी लेकर रवाना हुअे। अभी थोड़ी दूर भी नहीं पहुंचे थे कि अितनेमें मूसलधार बरसात पड़ने लगी। खेत और रास्ते पानीसे छलाछल भर गये। जूते दस दस सेरकी मिट्टीके ढेले अुखाड़ने लगे। बापा लाठीके सहारे बरसातके पानीमें भीगते भीगते चल रहे थे। अुस समय अुनके पास छत्री नही थी। बकरीके बालोंका कम्बल बापाने ओढ़ लिया था। परंतु वह बरसातको कितना रोकता? बरसातके पानीमें आधे भीगते भीगते वे आगे बढ़ रहे थे। साथमें वह भील कार्यकर्ता भी चल रहा था। चलते-चलते रास्तेमें नदी आ गअी। नदीमें बाढ़ आ गअी थी। अब क्या किया जाय अिसका विचार करते हुअे बापा अेक पेड़के नीचे खड़े रहे। वहां खड़े खड़े अुन्होंने नदीकी तरफ देखा। अुन्होंने अपनी नजरसे नदीके पाटको नाप लिया और मन ही मन विचार करने लगे, मानो वे अपने जीमें निश्चय कर रहे हों: मेहनत तो होगी, परंतु थोड़ासा परिश्रम करुंगा तो किसी जगह तंग पाट ढूंढ़कर वहांसे कम मेहनतमें सामनेके किनारे पहुंच जाअूंगा। अिस प्रकार विचार करके वे अुस भीलके साथ नदीके किनारे किनारे थोड़ी दूर चले। फिर जहां पानीका पाट तुलनामें तंग मालूम हुआ वहां गये और वहांसे वे बाढ़के प्रवाहमें अुतरे। थोड़े कदम तो वे गये। परंतु फिर आगे जाना खतरनाक मालूम हुआ। अुन्होंने चारों तरफ नजर डाली। सौभाग्यसे अुसी समय नदीके किनारेकी अेक टेकरी पर अुन्होंने अेक झोंपड़ा देखा। वहां अेक भील परिवार रहता था। अुस भीलको पुकार कर बापाने बुलाया। सौभाग्यसे वह भील बापाका परिचित निकला। भीलने बापाको पहचान लिया: "यह तो अकालमें सहायता देनेवाला और कपड़े बांटनेवाला बाबा है।" देखकर वह दौड़ता हुआ आया। दो-चार मित्रोंको अुसने और बुलाया और सबकी मददसे बापाको अुस दिन नदी पार कराअी। अन्तमें बापा दोपहरको अेक बजे गरबाड़ा पहुंचे। सुबहके छः बजे चले थे सो चलते चलते पांच मीलका रास्ता तय करके सात घंटेमें मुकाम पर पहुंचे।

अिस प्रकार बापा चाहे जैसी कठिन परिस्थितिमें भी कर्तव्य कर्म छोड़ते नही थे, न मुलतबी रखते थे और न अुसे ढीला करते थे। परंतु अन्तरकी जागृति रखकर शुद्ध आचरणको जीवनमें अुतारते और शिक्षक, सेवक, साथी, विद्यार्थी सबकी प्रीति संपादन करते। कठिनसे कठिन काम सबसे पहले स्वयं

करके अुदाहरण स्थापित करते। कठिनाअियां और विडम्बनाअें दूसरोंके सिरसे अुठाकर अपने सिर ओढ़ लेते। दूसरोंके दुःखको अपना बना लेते।

मंडलके प्रारंभके बाद अेक ही वर्षमें अेक सेवकका बलिदान दिया गया। यह बापा और अन्य साथियोंके लिअे भी अेक आघात पहुंचानेवाली घटना थी। ता० १२-९-'२४ से दाहोदसे नौ मील दूर जंगलमें रोझम गांवमें मंडलके अेक सेवक श्री गंगाशंकर ओझा पाठशाला चलाते थे। यह गांव जंगलके बीचमें होनेसे वहां मच्छर बहुत थे। हवा मलेरियावाली थी। और अिधरके लोग और सेवक अिस स्थानकी अंदमानके काले पानीके साथ तुलना करते थे। भाअी गंगाशंकरने वहां मेहनत करके अेक वर्षमें पाठशालाके कामका तेजीसे विकास किया। अेक दिन अचानक गंगाशंकरको बुखार आया। बुखारके साथ दस्त शुरू हो गये और अुन्हें अेकाअेक हैजा हो गया और बीमारी शुरू होनेके बाद केवल चौबीस घंटेमें ही अुनके प्राण-पखेरू अुड़ गये। अिस प्रकार वे अचानक गुजर जायंगे, यह तो किसीको सपनेमें भी खयाल नहीं था। गांवके लोगोंको भी अुनके गुजर जानेके बारह घंटे बाद ही खबर लगी। क्योंकि वे गांवसे बाहर अपनी अेक अलग झोंपड़ीमें रहते थे। पता लगनेके बाद गांवके लोगोंने दाहोद खबर देनेके लिअे आदमी दौड़ाया। खबर सुनकर बापाके दिलको गहरा आघात लगा। तुरंत ही बापा और अन्य साथी कार्यकर्ता वहां दौड़ गये। मृतकको श्मशान पहुंचाया और बादमें अुनकी अुत्तरक्रिया भी की। अिस प्रकार बिना किसीको पता चले जंगलके बीच आदिवासी भीलोंकी सेवा करते करते ये सेवावीर सद्गतिको प्राप्त हुअे। अुनकी स्थिति देखकर सबको बड़ा दुःख हुआ। सुखदेवभाअीकी तो मानो छाती ही फट गअी। बापाको अैसा दुःख हुआ जैसे अपने सगे पुत्रकी ही मृत्यु हुअी हो। आश्वासन केवल अितना ही था कि अिस भाअीने कर्तव्य कर्म करते करते ही मृत्युका आलिंगन किया और भील-सेवा-मंडलके अितिहासमें अपना मूक स्वार्पण लिखवाकर चले गये। बापा और अुनके अन्य साथियोंने अुस सेवक वीरके नामसे अेक चबूतरा बनवा दिया है। अुस पर सादे पत्थरका स्तंभ खड़ा करके अुनके नामके अक्षर खुदवा दिये हैं। भाअी गंगाशंकरकी शहादतकी गवाही देनेवाला यह चबूतरा और अुस पर खड़ा किया गया स्तंभ आज भी खेतोंके बीच खड़ा है और सैकड़ों मुलाकातियोंको प्रेरणा दे रहा है।

रोझमके खराब जलवायुका खयाल करके थोड़े समयके लिअे वह केन्द्र बन्द करके अुसके नजदीकके गांवमें बदल दिया गया। अिसके बाद थोड़े

अरसेमें ता० २१–११–'२३ को झालोद आश्रम शुरू हुआ। बम्बअीसे आये हुअे सेवक श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तको अिस आश्रमका संचालन सौंपा गया। बम्बअीका यह अमीरका लड़का महलोंका निवास छोड़कर झालोदके अेक कलालके साधारण मकानमें रहकर भीलोंकी सेवा करने लगा। अिनके आस-पास भील, पटेलिया और अैसी ही दूसरी आबादी रहती थी। अिनके बीचमें रहकर वे भील बालकोंको पढ़ाते, तालाबमें नहाने ले जाते और अुनकी हर तरहकी सेवा करते। शुरूके वर्षोंमें सवर्णोंकी आलोचना और हंसी सहन करके और कअी तरहकी दूसरी असुविधाअें अुठाकर अुन्होंने झालोदके आश्रमको स्थिर किया। बादमें अंबालाल व्यास और वीरसिंहने अिस आश्रमका विकास किया।

यह अुस समयकी बात है जब मीराखेड़ी आश्रम आरंभमें अिन्दुलाल याज्ञिकने शुरू किया था और बापा अिसकी देखरेख रखते थे। बापाने आश्रमके वार्षिक समारोहके अवसर पर अेक अंधे सब-जजको अध्यक्षके तौर पर बुलाया था। ये सज्जन यद्यपि सरकारी नौकर थे तो भी अुन्हें भीलसेवाकी प्रवृत्तिमें अच्छी दिलचस्पी थी। अिसलिअे बापाने अुन्हें अध्यक्षपद स्वीकार करनेकी प्रार्थना की। अुन्होंने अिसे स्वीकार कर लिया। श्री अिन्दुलाल याज्ञिकको यह पसन्द नहीं आया, क्योंकि वे अुस समय असहयोगके रंगमें पूरी तरह रंगे हुअे थे। अिसलिअे अिस रचनात्मक कार्यके वार्षिक समारोहके अवसर पर अध्यक्षकी हैसियतसे अेक सरकारी नौकर (सब-जज) आये और वह भी विदेशी वस्त्रके कोट-पतलूनमें सज्जित होकर आये, यह सब अुन्हें अच्छा नहीं लगा। अिसलिअे अुन्होंने बापाको अेक कड़ा पत्र लिखकर अपने दिलका गुबार निकाला। पत्र यद्यपि विनयपूर्ण भाषामें लिखा हुआ था, फिर भी दिलमें भरा हुआ अुबाल अुसमें अच्छी तरह अुंड़ेला गया था। अिसलिअे शब्दोंमें काफी अुग्रता आ गअी थी। अैसे विदेशी वस्त्रोंमें आनन्द माननेवाले सब-जजकी अध्यक्षके रूपमें बापाने जो पसन्दगी की थी अुसके बारेमें अरुचि व्यक्त की गअी थी। यह पत्र पढ़कर बापाको अितना बुरा लगा कि अिस घटनाके बादसे अुन्होंने मीराखेड़ी आश्रममें जाना बिलकुल बन्द कर दिया। अेक दिन बापा दाहोदसे गरबाड़ा पाठशाला देखने जा रहे थे। रास्तेमें अुन्हें खूब प्यास लगी। सड़कके किनारे पेड़के नीचे अुन्होंने गाड़ी खड़ी कराअी और पासके मीराखेड़ी आश्रमसे पानी मंगवाया। आश्रमके अन्य कार्यकर्ताओंको खबर लगने पर सब पानी वगैरा लेकर बापाको बुलाने आये और बापासे थोड़ी देर आश्रममें विश्राम करनेके लिअे विनती करने लगे। परंतु बापाने आनेमें आनाकानी की। कार्यकर्ताओंने बापासे खूब प्रार्थना की, समझाया, आग्रह किया

परंतु अुस दिन बापा मीराखेड़ी आश्रममें नहीं गये। अुन्होंने क्रोधमें भरकर कहा, "अिन्दुलाल समझता क्या है? अुन सब-जजको अध्यक्ष बनाकर मैं बुला लाया, अिसमें मैंने बुरा क्या किया? भील सेवाके लिअे अुनके दिलमें भावना है, श्रद्धा है। अुनके आगमनसे आश्रमको नुकसान नहीं होगा, लाभ होगा। जो असहयोगी हैं वे तो सब काम कर ही रहे हैं, परंतु जो दूसरे क्षेत्रोंमें हैं वे भी अिस ढंगसे अिस कामकी तरफ मुड़ेंगे।" अुस दिन तो बापा मीराखेड़ी आश्रममें नहीं गये। और थोड़े दिन तक अुनकी यह नाराजी बनी रही। बादमें अेक बार श्री अिन्दुलाल याज्ञिक बापासे मिले और अिस प्रश्नके बारेमें बापाका समाधान कर दिया। बापाको बुरा लगा हो तो अफसोस जाहिर किया। अिसके बाद बापा फिर आश्रममें आने-जाने लगे। अिसके पश्चात् लगभग अेक दो वर्षमें अर्थात् ता० २९–१२–'२४ तक मीराखेड़ी आश्रम भील-सेवा-मंडलको सौंप दिया गया। तबसे वह बापाकी सीधी देखरेखमें आ गया और प्रान्तीय समितिकी तरफसे वार्षिक खर्चके पौने भागके बराबर रकम भी अुसे चलानेके लिअे मिलने लगी। ता० ८-५-'२५ को मीराखेड़ी राष्ट्रीय आश्रमका वार्षिक अुत्सव सरदार श्री वल्लभभाअी पटेलकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

अिस प्रकार अेक आश्रम और चार पाठशालाओंमे शुरू हुआ काम धीरे धीरे विकसित होते होते सारे दाहोद और झालोद तालुकेमें फैल गया और तीन वर्षके अन्तमें कुल चार आश्रम तथा आठ पाठशालाअें मंडलकी तरफसे चलने लगीं। सब जगह कुल मिलाकर ५०० भील बालक पढ़ाअी करने लगे। मंडलका कुल खर्च पहले साल रु० १७,२१६, दूसरे वर्ष रु० १८,५०० और तीसरे वर्ष रु० २१,५०० आया। हर साल आयसे खर्च अधिक होता और मंडलके सिर पर थोड़ा थोड़ा कर्ज बढ़ता गया। फिर भी बापाने अिसकी झूठी चिन्ता करके अेक साथ ज्यादा पूंजी जमा करनेका लोभ कभी नहीं रखा।

अिस प्रकार भील-सेवा-मंडलके कामको जब बापा आगे बढ़ा रहे थे, अुसी समय अुन्हें विचार आया कि सारे भारतमें भीलों जैसे आदिवासी तो बहुत होंगे। अगर गुजरातके आदिवासी भीलोंकी यह स्थिति हो, तो भारत भरमें अिनकी स्थिति खराब ही होनी चाहिये। ये लोग दूसरे प्रान्तोंमें कैसे रहते हैं, क्या काम करते हैं, कैसे जीते हैं, अुनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति कैसी है, अित्यादि देखना-जानना चाहिये। अिसलिअे अुन्होंने अिस सिलसिलेमें भारतके भिन्न भिन्न भागोंमें दौरा करनेका निर्णय किया। प्रवाससे पहले अिस संबंधमें जो भी साहित्य प्रकाशित हुआ था, वह सब देख लेनेका

और अिस बारेमें और भी कुछ पूर्व तैयारी करनेका अुन्होंने विचार किया। बम्बअीमें मित्रोंसे मांग-तांगकर तथा भारत-सेवक-समाज और रॉयल अेशियाटिक सोसाअिटीके पुस्तकालयोंसे कुछ पुस्तकें मंगवाकर और दूसरी कुछ खरीदकर अुन्होंने आदिवासियों सम्बन्धी काफी साहित्य अिकट्ठा कर लिया। अेक महीनेमें तो अिस विषयमें बहुतसी पुस्तकें बापाने पढ़ डालीं। रसेलकी अेटनोग्राफीकी पुस्तक, मर्दुमशुमारीकी रिपोर्टें, अलग अलग प्रान्तों और जिलोंके विवरण, गजट और अन्य कुछ प्रकाशन अुन्होंने देख लिये। अिसके सिवाय कुछ दूसरे साहित्य पर भी नजर डाल ली। जैसा बापा अेक जगह कहते हैं, "अिस वाचनके अन्तमें मेरे सामने अिसकी स्पष्ट रूपरेखा तैयार हो गअी है कि मुझे प्रवासमें क्या करना है।" भूगोलका ज्ञान भी अिस प्रवासमें अुपयोगी होगा, यह सोचकर जिन जिन प्रान्तोंमें जाना था अुनका आधारभूत और विस्तृत भूगोल भी पढ़ लिया।

अिसके बाद जनवरी १९२६ से अप्रैल तक अुन्होंने जहां जहां आदिवासी बसते थे अुन मध्यप्रान्त, बिहार और आसामके कुछ पहाड़ी प्रदेशोंमें दौरा किया। अिसमें मध्यप्रान्तमें मांडला और रायपुर जिलोंमें, बिहार और बंगालके संथाल परगनेमें और आसाममें सिलहट नागा तथा खासी चेरापूंजी और जंटिया जिलोंका दौरा किया। वहांसे लौटकर संथाल, नागा, खासी, मुंडा वगैरा आदिवासी जातियोंके बारेमें, अुनके जीवनके बारेमें, अुनके रहन-सहनके बारेमें, अुनके आर्थिक-सामाजिक प्रश्नोंके बारेमें, अुनकी राजनैतिक स्थितिके विषयमें, और अुनके होनेवाले धर्म-परिवर्तनके सम्बन्धमें विस्तृत लेख लिखे। गुजराती और हिन्दीमें अिस प्रकारका प्रयत्न बापाने ही पहले पहल किया था। अुन्होंने वर्षोंसे अंधेरेमें पड़े हुअे अिन अिलाकोंको अेकदम प्रकाशमें ला दिया। गांधीजीने बापाके ये लेख 'नवजीवन' में 'हमारी पुरानी जातियां' और 'पहाड़ी जातियोंमें धर्म-परिवर्तन' शीर्षकोंसे ता० २८-३-'२६ और ४-४-'२६ को लगातार दो सप्ताह तक छापे। अितना ही नहीं परन्तु अुन पर नीचेकी बहुत ही मार्मिक टिप्पणी भी लिखी:

"भाअी अमृतलाल ठक्कर अपने संन्यासको सुशोभित कर रहे हैं। अुन्होंने भगवा नहीं पहना, अपनेको संन्यासी बताते भी नहीं, फिर भी काम तो वे संन्यासीको शोभा देनेवाला ही कर रहे हैं। बूढ़े हो गये हैं तो भी चैनसे बैठते नहीं और अपने आसपासवालोंको भी नहीं बैठने देते। जब दुःखका दावानल चारों ओर जल रहा हो, तब चैनसे कौन बैठ सकता है? अथवा आलसी ही बैठ सकता है। भाअी अमृतलाल अछूतोंके गुरु तो हैं ही। अब पहाड़ी जातियोंके गुरु बननेकी साधना कर रहे हैं। मैं आशा रखता हूं

कि अुनके मर्मभेदी लेख सब कोअी पढ़ेंगे और अुन पर विचार करेंगे। जिन्होंने पिछले सप्ताहका लेख न पढ़ा हो वे पढ़ लें। अिस सप्ताहका भी पढ़ें और विचार करें। जो काम भाअी अमृतलालने सुझाया है अुसमें हम क्या और कैसे भाग ले सकते है, अिसका विचार बादमें करेंगे।"

जेसावाड़ामें भील-सेवा-मंडलकी तरफसे श्री वणीकर काम कर रहे थे। वहां भीलोंके लिअे अेक मंदिर बनवाया गया था। अुसमें मूर्तिकी प्रतिष्ठा करनी थी। दौरेसे लौटनेके बाद बापा अुसके समारोहकी तैयारीमें लग गये। मंडलका कार्य आरम्भ करनेके बाद तुरन्त ही बापाको भीलोंमें धार्मिक संस्कार डालनेकी अनिवार्य आवश्यकता महसूस हुअी थी। अुनकी मान्यता थी कि भीलोंको सदाचारके मार्ग पर लगाना हो तो अुनमें अिस प्रकारके धार्मिक संस्कार शुरूसे ही डालने चाहियें। अिसके लिअे अुन्होंने आश्रमों और पाठशालाओंमें रामायणका प्रचार शुरू कराया था। संस्थाके ही अेक तरुण कार्यकर्ता और जांबुवाकी पाठशालाके आचार्य मगनलाल महेताकी भीली भाषामें लिखी हुअी रामायण बापाने प्रकाशित कराअी थी। बादमें अिस कथाको श्री वणीकरके भानजे दत्तु महाराजने कविताका रूप देकर और अुसमें संगीतके स्वर भरकर खूब लोकप्रिय बनाया था। अिस रामायणकी कथाकी रचना अिस ढंगसे की गअी थी कि अेक ही घंटेमें कही जा सके। अिस सम्बन्धका प्रसंग बहुत ही रोचक और सूचक है। अुसे मगनलाल महेताके ही शब्दोंमें देखें।

"दाहोदमें काम करते करते अेक बार बापाकी जांघमें फोड़ा हो गया था। सौ बार धोये हुअे घीका मरहम लगाने पर भी वह मिटा नहीं। अुसकी वेदना भी काफी होती थी। चलना तो दूर रहा बापासे अच्छी तरह बैठा भी नहीं जाता था। हम कार्यकर्ता कभी कभी आकर अुनकी खबर ले जाया करते थे। अेक दिन अिस प्रकार वणीकर दादा, अीश्वरलालभाअी और अन्य कार्यकर्ता वहां आये थे। मैं भी चौदह मील पैदल चलकर दोपहरके बारह बजे आ पहुंचा था। खा-पीकर सब बापाके पास बैठे थे। गांवोंके कामके सम्बन्धमें बात चली। अुसमें से भीलोंको धार्मिक शिक्षा देनेकी कुछ बात निकली। बापाने कहा :

"'वणीकर, तुममें से कोअी भीली भाषामें रामायण लिख दे तो अच्छा हो। भील तुलसीकृत रामायण समझते नहीं। और अितने बड़े लम्बे काव्यमें अुन्हें रस भी नहीं आता। अिनके मानसके अनुकूल संक्षेपमें रामायणकी कथा लिख दो, जो सारी की सारी अेक बैठकमें पढ़ी जा सके।'

"यह सुनकर मेरे हृदयमें हर्ष समाया नहीं। कौन जाने बापाने अज्ञात रूपसे मेरे ही हृदयको प्रेरणा की हो। मैंने तीन चार दिन पहले ही रामायणकी कथा अेक ही बैठकमें तीन चार घटे बैठकर लिख डाली थी। अुसके कागजोंका पुलिंदा मेरी जेबमें ही था।

"मैंने हर्षसे बापाको कहा: 'बापा, मैंने असी अेक कथा लिखी है।'

"हैं?" कहते ही बापा सो रहे थे सो आधे बैठ हो गये। "कब?" अुन्होंने पूछा।

"तीन चार दिन पहले ही।"

"कहां है?"

"यहीं मेरी जेबमें," कहकर मैंने बापाको कागजोंका पुलिंदा दिया।

"बापा अुस पर अेक नजर डाल गये। फिर मुझसे कहने लगे, 'तुम पढ़ जाओ' और मैं अुसमें से कुछ पन्ने पढ़ गया।

"सुनकर वे आनन्दसे बिस्तरमें बैठ गय और बोले, 'मैं अिसे छपवाअूंगा।

"अिसके बाद तो बापा दूसरी प्रवृत्तियोंमें अितने डूब गये कि आठ महीने तक प्रस्तावना लिखनेकी अुन्हें फुरसत ही नहीं मिली। और अुनकी प्रस्तावनाके बिना छपवानेकी मेरी अिच्छा नहीं थी। अिसलिअे वह पांडुलिपि ज्योंकी त्यों पड़ी रही।

"आठ महीनेके बाद बापाने तीन पन्नोंकी लम्बी प्रस्तावना लिखी, जिसमें अुन्होंने कहा:

"...भाषाको फेरबदल करनेकी कला बहुत थोड़ोंको साध्य होती है। कोअी गुजराती बंगाल या महाराष्ट्रमें जाकर बसे, तो बंगाली या मराठी भाषा ग्रहण करना, बंगाली या महाराष्ट्रीकी तरह बोलना अुसे बड़ा मुश्किल मालूम होता है। सूरत या भड़ोंचके आदमीको काठियावाड़की भाषामें बहुत विचित्रता और परायापन लगता है। यह तो संस्कारी भाषाकी बात हुअी। परन्तु अपनी भाषा संस्कारी और सामनेवालेकी अपूर्ण, असंस्कारी या जंगली हो, तब तो अपनेसे हलकी, नीची मानी जानेवाली जातियोंकी बोली बोलना सीखनेकी, अशुद्ध परन्तु दूसरी जातिकी बोलीमें पूरा अनुकरण करके बोलनेकी कला पूर्ण सहानुभूतिके बिना और सामनेवालेके जीवनके साथ ओतप्रोत हुअे बिना नहीं सिद्ध हो सकती। यह कला कुछ अंशोंमें अिस छोटीसी 'वार्तार' के लेखक मगनलाल महेताने साधी है। तीन वर्ष तक लगातार अुन्होंने जांबुवाकी पाठशालाके मुख्य शिक्षकका काम किया है। १६-१८

वर्षकी अुम्र होने पर भी अुन्होंने जंगलमें वहांकी पाठशाला स्थापित की, अुसे बढ़ाया, अितना ही नहीं पैरों पर खड़ा किया और दो तीन तूफानोंमें से भी पार कर लिया है। अितना ही नहीं, अुस गांवके बड़ी अुम्रके भील भाअियोंके साथ परिचय पैदा किया है, अुनके सुख-दुःखमें भाग लिया हैं, अुन्हें रामायणकी पुस्तकमें से कथा सुनाअी है और दूसरी कअी तरहसे अुनमें घुलमिल गये हैं। अुनकी बोली पर अुन्होंने पूरा काबू पा लिया है और भीलोंकी ही बोलीमें अथवा भीली भाषामें यह संक्षिप्त रामायण लिख डाली है। अिसलिअे अुन्हें बधाअी देता हूं और दूसरे बड़ी अुम्रके भीलसेवकोंसे अुनका अनुकरण करनेका अनुरोध करता हूं। साथ ही यह छोटीसी प्रस्तावना लिखनेमें मैंने आठ महीने लगा दिये, अिसके लिअे भाअी 'मगन' से क्षमा चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि यह 'वार्ता' भील बालकों तथा अधेड़ोंमें खूब पढ़ी जाय और अुसकी कथायें हों।"

अिस प्रकार लगभग १९२६ के मअी मासमें यह कथा लिखी गअी। अुस समय तमाम आश्रमों और पाठशालाओंके भील बालकोंमें और देहातके भील भाअियोंमें भी रामका प्रचार बहुत अच्छी तरह हो चुका था। साथ ही भीलोंमें रामचन्द्रजीके बारेमें जाग्रत हुअी अिस श्रद्धाको बनाये रखनेके लिअे और अुनके धार्मिक संस्कारोंको पोषण देनेके लिअे मंदिरकी जरूरत मालूम होने पर बड़ोदाके अेक सज्जनसे अुसके लिअे रकम जुटाअी गअी और अुससे जेसावाड़ामें मंदिर बनवाया गया। भील समाजमें अिस तरहके मंदिरके निर्माणकी यह पहली ही घटना थी। अिसलिअे अिस प्रसंगको शोभा देनेवाला अेक भव्य समारोह करनेका अुन्होंने निश्चय किया था।

गांधीजीने, जो बापाकी लगभग प्रत्येक प्रवृत्ति पर खुश थे, अिस मौके पर 'नवजीवन'में टिप्पणी लिखकर अुनके कार्यको प्रोत्साहन और वेग देनेका प्रयास किया। 'भीलोंमें प्राणप्रतिष्ठा' शीर्षकसे ता० १८–४–'२६ के अंकमें वह टिप्पणी प्रकाशित की। अुसमें लिखा था:

"रामनवमीके दिन भाअी अमृतलाल फिर भीलोंका मेला भरनेवाले हैं। अुस समय रामजीके मंदिरका अुद्घाटन होगा अर्थात् अुस दिन मूर्तिकी प्राणप्रतिष्ठा होगी। अिसे हम भीलोंकी प्राणप्रतिष्ठा क्यों न कहें? भाअी अमृतलालने हमें अुनके प्रति हमारा धर्म सुझाया है।"

अिस प्रकार निश्चयके अनुसार रामनवमीके दिन जेसावाड़ा आश्रममें खूब ठाठसे अुत्सव मनाया गया। हजारों भील और आमंत्रित मेहमान आश्रमके चौकमें अिकट्ठे हुअे। मूर्तिकी प्रतिष्ठा गोवर्धन पीठके अधीश्वर श्री भारती कृष्णतीर्थके वरद हस्तसे हुअी। दाहोदसे राम, लक्ष्मण और

जानकीजीकी बनवासी स्वरूपकी मूर्तियोंकी पालकीकी सवारी निकाली गअी। हज़ारों भीलोंकी अुत्साहपूर्ण अुपस्थितिमें बड़ी धूमधामसे और विधिपूर्वक राम, लक्ष्मण और जानकीजीकी मूर्तियोंकी मंदिरमें प्रतिष्ठा की गअी। मंगल गीत गाये गये, पुण्य प्रवचन हुअे। प्रो० देशबन्धुन बाणविद्याके अद्भुत खेल दिखलाये। अमरेलीके अंधकवि हंसराजने अपने धार्मिक गीत और भजन गाये। सौराष्ट्रके लोककवि श्री झवेरचन्द मेघाणीने लोकगीतों और लोक-वार्ताओंकी झड़ी लगा दी। अुस दिन जेसावाड़ामें सर्वत्र आनन्दोत्सव फैल गया और अुस दिनसे पंचमहालके भीलोंमें रामनवमीके मेलेकी प्रथा शुरू हुअी।

अुस दिन बापाने अपने अेक मित्रके नाम ता० २१–४–'२६ को लिखे पत्रमें बताया: "राममंदिरकी आज प्राणप्रतिष्ठा हुअी। जटाशंकर शिवलाल जोशीने विधिके अनुसार पूजा कराअी। पूजा करनेवाले भाअी वणीकर और बड़ोदा निवासी सेठ चिमनलाल शामल बेचर थे। ध्वजारोहण जग-न्नाथजीके श्रीमद् शंकराचार्यजी भारती कृष्णतीर्थने कृपा करके बडोदासे पधार कर किया। मंडलकी तरफसे यह प्रथम धार्मिक संस्था स्थापित हुअी। . . . जबरदस्त मेला भरा था। . . . भगवानकी कृपासे यह समारोह बहुत अच्छी तरह सम्पन्न हुआ।"

जेसावाड़ामें मंदिरकी स्थापनाका अुत्सव पूरा हो जानेके बाद अुस समयकी बम्बअी सरकारकी कार्यकारिणीके सदस्य सर चूनीलाल महेता दाहोदके दौरे पर आये। अुनके साथ अुत्तर विभागके कमिश्नर पेंटर साहब तथा कलेक्टर श्री गोवान टेलर थे। सब दाहोद स्टेशन पर अुतरे। स्टेशन पर ही ठक्करबापाको खड़े देखकर सर चूनीलालने अुन्हें बुलाया और अुनके साथ भील-सेवा-मंडलके सम्बन्धमें बातें हुअीं। परिणामस्वरूप मीरा-खेड़ी आश्रम देखनेका निश्चय हुआ। आश्रमकी पाठशाला और छात्रालय वगैरा देखकर और वहां हुआ काम देखकर सर चुनीलाल प्रभावित हुअे और अुसमें दिलचस्पी पैदा होने पर संस्थाकी स्थितिसे भी परिचित हुअे। सब हाल मालूम करनेके बाद अुन्होंने कमिश्नर और कलेक्टरसे प्रश्न पूछे:

"भील-सेवा-मंडल अैसा अच्छा काम कर रहा है, तो फिर अुसे पास वाली जो २० अेकड़ पड़ती जमीन चाहिये अुसे देनेमें देर क्यों कर रहे हैं?"

कमिश्नरने जवाब दिया: "साहब, ये लोग राजनैतिक आन्दोलन-कारियोंके साथ मिलकर अपना काम करते है।"

सर चुनीलालने कहा: "श्री ठक्कर तो भारत-सेवक-समाजके प्रसिद्ध समाज-सेवक है। अिनके बारेमें अैसी बात माननेको मैं तैयार नहीं।"

कलेक्टरने बीचमें पड़कर सरकारी नीतिका बचाव करते हुअे कहा: "साहब, वे सब खादीकी टोपी पहनते हैं और खादी टोपीवालोंकी टोलीके साथ मिलकर सरकारसे सहायताकी मांग नहीं करते।"

सर चूनीलालने कहा: "खादीकी टोपी पहननेसे ही हमें अुनके साथ क्यों छुआछूत रखनी चाहिये? श्री ठक्कर, आप सरकारसे सहायताकी मांग क्यों नहीं करते?"

ठक्करबापाने जवाब दिया, "अगर आपके अफसरोंको मुझमें विश्वास न हो तो मैं सहायताकी मांग कैसे करूं?"

सर चूनीलालने अुन्हें आग्रहपूर्वक मांग करनेको कहा और अुसके फलस्वरूप २० अेकड़ पड़ती जमीन मीराखेड़ी आश्रमको मिली।

अिसके बाद दूसरे वर्ष झालोद आश्रममें भी राममंदिर बनवाया गया और अुसकी प्राणप्रतिष्ठाका अुत्सव रामनवमीके दिन शंकराचार्य श्री कुर्त-कोटिजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस बार सरकारकी तरफसे विशेष पुलिस बुलाअी गअी थी, फिर भी भील निडर होकर दूर दूरके गांवोंसे हजारोंकी संख्यामें श्री रामबाबाके अुत्सवके निमित्त अुमड़ आये थे। झालोद शहरसे ठेठ आश्रम तक लम्बा जुलूस निकाला गया। सारा रास्ता मानव-समूहसे छा गया। दाहोद-झालोदके साहूकारों, व्यापारियों, देसाअियों तथा गोधरा, कलोल वगैरा स्थानोंसे आये हुअे मेहमानोंने अिस अुत्सवमें खूब रसपूर्वक भाग लिया। गुजरातके सुप्रसिद्ध संगीत विशारद श्री ओंकारनाथजी और अुनके भाअी श्री रमेशचंद्रजीने श्रोताजनोंको भारतीय संगीतसे मंत्रमुग्ध किया। दूसरे दिन मंडलका वार्षिक विवरण पढ़कर सुनाया गया। अिस मौके पर खास तौर पर अुपस्थित हुअे श्री किशोरलाल मशरूवालाने मंदिर-प्रवृत्तिके बारेमें और मंडलके कामकाजके सम्बन्धमें चर्चा करके प्रेरणा और पथप्रदर्शन दिया।

झालोद आश्रममें मंदिरकी स्थापना होनेके बाद अुसकी पूजा करनेके लिअे किसी श्रद्धालु रामभक्तकी खोज हो रही थी। अितनमें वणीकरके भानजे श्री दत्तुभाअी बडनेरकर मंडलमें आ पहुंचे। अुन्होंने गांधर्व महाविद्यालयमें वर्षों तक रहकर संगीतकी तालीम पाअी थी। संस्थाकी तरफसे अुन्हें आश्रमोंकी प्रार्थनाओं और भीलोंमें भजन-प्रचारके लिअे रख लिया गया। अुन्होंने मगनलाल झवेरचंद महेता द्वारा रचित भीली रामायणकी कथाको अलग अलग राग-रागिनियोंमें जमा लिया और गांव गांव घूमकर वे अिस गीत-रामायणका प्रचार करने लगे। अपनी सुन्दर और सादी भीली तर्ज

और सरल शब्दों वगैराके कारण भीलोंमें यह रामायण खूब लोकप्रिय हो गअी और सैकड़ों भील बालक अुसके गीतोंको कंठस्थ करके पाठशालामें या आश्रममें, घरमें या खेतमें गाने लगे। अिस प्रकार रामायणका खूब प्रचार हुआ। अिसी तरह अुन्होंने महाराष्ट्रके पैसा फंडके ढंग पर 'भील बाल-गोपाल मेला' चालू किया और बम्बअी, अहमदाबाद जैसे शहरोंमें ले जाकर अुसका खूब प्रचार किया।

मंडलकी शुरूसे ही दो और प्रवृत्तियां भी ठक्करबापाने शुरू की थीं। अेक, अुपदेश द्वारा मद्य-निषेध और दूसरी सहकारी समितियां। अिन दोनों कार्योंमें भी अुन्हें काफी सफलता मिली थी। भीलोंमें प्रचारके कारण और व्यवस्थित प्रयास द्वारा कड़ला और विजयगढ़में शराबकी दो दुकानें वे बन्द करा सके थे।

मंडलके कुछ कार्यकर्ताओंने अेक सहकारी कोष स्थापित करके अुसके द्वारा मंडलके सेवकोंको कठिनाअीके समय सहायक होनेवाली अेक सहकारी समिति स्थापित की थी। अुसमें संस्थाके कोषसे बापाने ४०० रुपयेके शेर लिवाये। धीरे धीरे अिस समितिका विकास हो गया।

अिस प्रकार मंडल अनेक तरहसे विविध क्षेत्रोंमें प्रगति कर रहा था और अपने कामकाजको आगे बढ़ा रहा था। अिस अरसेमें भीलोंकी सेवाका व्रत लेनेवाले कितने ही सेवकोंकी तीन सालकी मीयाद पूरी होने आ रही थी। अिसलिअे अब सबके बीस वर्षकी सेवाकी प्रतिज्ञा लेनेका समय आ पहुंचा था। जिन बापाने सेवकोंको तीन वर्ष तक भीलोंकी सेवा करनेकी प्रेरणा दी थी, अुन्होंने अुन्हें बीस वर्षकी प्रतिज्ञा लेनेकी प्रेरणा और अुत्साह दिया। बापाने स्वयं बीस वर्षकी प्रतिज्ञा लेनेका निश्चय प्रगट किया।

यह घटना भील-सेवा-मंडलके अितिहासमें सुवर्णाक्षरोंमें लिखी जायगी। बापाकी अुम्र अुस समय ५५ वर्ष पार कर चुकी थी। फिर भी अेक नौजवानको शोभा देनेवाले अुत्साहसे भीलोंकी सेवा करनेके लिअे अुन्होंने और सत्रह वर्ष देनेकी तैयारी दिखाअी। अिसी प्रकार अुनकी प्रेरणासे श्री सुखदेवभाअी, श्री पांडुरंग वणीकर, श्री डाह्याभाअी नायक, श्री मंगलदास आर्य, श्री अंबालाल व्यास, श्री रूपाजीभाअी परमार, श्री अीश्वरलाल वैद्य वगैरा सात भाअी भी बीस वर्षकी प्रतिज्ञा लेनेको तैयार हुअे। फरवरी १९२७ की २२ तारीख! वह दिन धन्य था। वह समय मंगलमय था।

यशवाटिका आश्रम (जेसावाड़ा) में स्थित रामजीके मंदिरमें ब्राह्म मुहूर्तमें आरती पूरी हुअी। अुस समय मंडलकी दीक्षा लेनेवाले सेवक प्रातःकाल

जल्दी अुठकर नहा-धोकर तैयार हो गये और समारोहके मंडपमें आकर अपने अपने आसनों पर बैठ गये थे। पहले बापाने प्रतिज्ञा ली! फिर अुन्होंने प्रत्येकसे विधिपूर्वक सेवाकी प्रतिज्ञा लिवाअी। बापा प्रत्येक वाक्य टुकड़े टुकड़े करके बोलते जाते और सेवक भी अुसी तरह अुन शब्दोंको दुबारा बोलते जाते।

प्रतिज्ञा अिस प्रकार थी:

"मैं आज मंगल प्रभातमें भगवान श्री रामचन्द्रजीके समक्ष नीचे लिखे अनुसार सेवाके लिअे काया-वाचा-मनसा बंधता हूं।

१. मैं अपनी सारी बुद्धि और शक्ति भील भाअियोंकी सामाजिक अुन्नतिके कार्यमें लगाअूंगा। भीलोंमें पटेलिया तथा अैसी ही अन्य पिछड़ी हुअी जातियोंका समावेश हो जाता है।

२. यह सेवा करनेमें मैं अपना किसी भी प्रकारका स्वार्थ नहीं साधूंगा और मंडलकी तरफसे मेरे अपने और मेरे परिवारके निर्वाहके लिअे जो व्यवस्था कर दी जायगी अुससे सन्तोष करूंगा।

३. मैं वर्तमान संवत् १९७९ की चैत्र शुक्ला पूर्णिमा, १ अप्रैल, १९२३ से संवत् १९९९ की चैत्र शुक्ला पूर्णिमा, १ अप्रैल, १९४३ तक बीस वर्ष भील भाअियोंकी सेवा करूंगा।

४. मैं मन, वचन और कायासे शुद्ध जीवन बिताअूंगा तथा सब भील भाअियोंको अैसा ही करनेको यथाशक्ति प्रेरित करूंगा।

५. मैं यथासंभव किसीके साथ किसी भी प्रकारके झगड़ेमें नहीं पड़ूंगा। भील-सेवा-मंडलके नियम शुद्ध बुद्धिसे पालूंगा और मंडलके अुद्देश्योंको पूरा करनेका प्रयत्न करूगा।

६. भीलोंके साथ अछूत जातियों — ढेढ़, भंगी, डबगर, चमार वगैराकी भी सेवा करूंगा। और प्रयत्न करूंगा कि अुनका सामाजिक दरजा अूंचा हो।

७. अिस मंडलका काम फिलहाल दाहोद-झालोद तालुकोंमें व्याप्त है। अुनमें रहकर ही सेवा करूंगा। मंडल दूसरी जगह रहकर भीलोंकी सेवा करनेका निश्चय करेगा तो वहां भी जाअूंगा।"

अिस प्रकार श्री वणीकरने प्रतिज्ञा ली और अन्य भाअियोंने भी अपनी अपनी निश्चित की हुअी तिथि और तारीखके अनुसार प्रतिज्ञाअें लीं।

प्रतिज्ञाके अन्तमें बापाने अेक संक्षिप्त किन्तु सामयिक मंगल प्रवचन किया और सेवकोंमें से प्रत्येकको बारी बारीसे सीख देकर कहा, "पवित्र रहना, जो काम हाथमें लिया है अुसमें अन्त तक ओतप्रोत होकर अपनी

हड्डियां अिन्हीं लोगोंमें गिराना। और अपने निर्दिष्ट ध्येय तक पहुंचे बिना बीचमें कभी थकावट मिटानेके लिअे नहीं रुकना।"

रूपाजी भाअी नामक भील जातिके लोकसेवकको सम्बोधन करके बापाने कहा :

"तुम बीस बरसकी प्रतिज्ञा ले रहे हो, अिससे मुझे प्रसन्नता होती है। दूसरे भाअियोंसे तुम्हारी जिम्मेदारी दूसरी तरहकी है। मैं तुम्हें आशिष देता हूं कि तुम अपने कार्य और व्यवहारसे अपने जातिभाअियोंके लिअे ध्रुव-तारा बन कर रहोगे। दूसरी जातियोंके सेवक जो प्रयत्न करेंगे, अुनकी अपेक्षा भीलों और पिछड़े हुअे वर्गोंकी सच्ची अुन्नति तुम्हारे जैसे जो अनेक सेवक होंगे अुनसे ही ज्यादा होगी। अिसलिअे तुम योगियोंके लिअे भी कठिन अिस परम गहन सेवाधर्ममें संभाल-संभालकर कदम रखना और अिसके लिअे सतत जाग्रत रहना कि कहीं कोअी भूल न हो जाय।"

शपथ लिवाअी गअी तब वातावरण गंभीर था। प्रतिज्ञा और प्रवचन पूरे होनेके बाद 'अेक ज दे चिनगारी'[1] और 'शिर साटे नटवरने वरिये'[2] दो भजन गवाये और फिर सबको सम्बोधन करके बापाने कहा कि, "याद रखना, तुम टुकड़े टुकड़े होकर गिर जाना, परन्तु ली हुअी प्रतिज्ञा न तोड़ना। मुझे विश्वास है कि तुम सब अैसे ही हो।"

यह बापाके लिअे धन्य दिवस था। आज अुनका सपना लगभग पूरा हुआ था। जिन्हें अधिकांश अूंचे वर्गके लोग चूसते और लूटते थे, अुनकी आजीवन सेवाका व्रत लेनेवाले सात सेवक अुन्हें मिल गये थे। तीन वर्ष समाप्त हो चुके थे। तीन वर्षमें काफी काम हो चुका था। और बाकीकी सत्रह वर्षकी सेवाके अन्तमें निर्दिष्ट ध्येय तक पहुंचनेके लिअे अब वे अकेले नहीं थे। (अकेले जानेमें भी अुन्हें कोअी डर नहीं था) परन्तु अन्य सात कार्यनिष्ठ और ध्येयनिष्ठ सेवकोंका समूह अिस लम्बी मंजिलको तय करनेमें अुनके साथ था। अब अुन्हें पूरा विश्वास हो गया था कि अिस कार्यके लिअे अीश्वरके आशीर्वाद हैं, अिसलिअे वह जरूर फूले-फलेगा। अिस विश्वासके कारण अुनके पैरोंमें नअी शक्ति और आंखोंमें नया तेज आ गया था।

---

१. हे अीश्वर तेरी ज्योतिकी अेक ही चिनगारी दे!

२. सिर देकर नटवरकी भक्ति कर।

२१
देशी राज्योंकी प्रजाके सेवक

१

जिस समय ठक्करबापा पंचमहालमें भीलोंके बीच रहकर काम कर रहे थे और अपने साथियों द्वारा अुस कार्यको धीरे-धीरे देहातमें फैला रहे थे, अुन दिनों अुन्हें अेक और फर्ज अदा करनेका आमंत्रण आ पहुंचा। वह था भावनगर राज्य प्रजा-परिषद्के दूसरे अधिवेशनके अध्यक्षपदका और अुस स्थान पर रहकर प्रजा-परिषद्का पथप्रदर्शन करने और अुसका संचालन करनेका।

ठक्करबापा स्वभावसे ही राजनीतिके आदमी नहीं थे। सक्रिय राजनीतिमें अुन्होंने पहले कभी भाग या दिलचस्पी नहीं ली थी। समाज-सेवा और मानव-सेवा ही अुनका कार्यक्षेत्र था। फिर भी भावनगर राज्य प्रजा-परिषद् जैसी राजनैतिक संस्थाके अध्यक्षपद सम्बन्धी प्रस्तावको स्वीकार किया, अिसकी तहमें दो कारण थे।

अेक तो वे स्वयं भावनगर राज्यके निवासी थे। और राज्यके वतनीकी हैसियतसे अुन्हें धर्मका पालन करनेको कहा जाय, तो अुससे अिनकार नहीं किया जा सकता था। दूसरे, जो लोग भावनगरमें प्रजा-परिषद्का काम संभाल रहे थे, अुनके साथ बापाका वर्षों पुराना सम्बन्ध था। खास तौर पर परिषद्के कार्यकारी मंत्री श्री बलवन्तराय महेताको वे बहुत समयसे जानते थे और कुछ ही समय पहले बिलीमोरामें हुअे बड़ोदा राज्य प्रजामंडलके अधिवेशनके समय अुनके सीधे सम्पर्कमें आये थे। ठक्करबापाको वे अुत्साही, सेवाभावी और कार्यक्षम युवक-कार्यकर्ता मालूम हुअे थे। अिसलिअे अुनके प्रति बापाको ममता थी। साथ ही देशी राज्योंकी प्रजाके अपने दुःखदर्द थे। वर्षोंसे वह अुपेक्षित और राजनैतिक विकासकी दृष्टिसे पासके ब्रिटिश भारतके लोगोंकी अपेक्षा अधिक दबी हुअी थी। और बापा तो दीन-दुखियोंके बेली थे, शोषितों और पीड़ितोंके सहायक थे! 'जहांसे भी दुःखकी पुकार कानों पर पड़ती, वहीं तुरन्त दौड़ जाना अुनका सिद्धान्त था। अिसलिअे जब भावनगर राज्य प्रजा-परिषद्के महुवा अधिवेशनका अध्यक्षपद स्वीकार करनेके लिअे मंत्रियोंकी ओरसे अुन्हें अनुरोध किया गया, तब बापा अुनकी प्रार्थनाको अस्वीकार न कर सके। अलबत्ता, अध्यक्षपद स्वीकार करनेमें

शुरूमें तो अुन्होंने आनाकानी की और सूचित कर दिया कि भावनगरकी राजनीतिके बारेमें मैं कुछ नहीं जानता, अुसके भीतरी प्रवाहोंको नहीं समझता, अिसलिअे मेरे बजाय और किसी अधिक अनुभवी और जानकारको चुनेंगे तो अच्छा होगा। पर बादमें जब अिसी पदके लिअे अुनसे आग्रह किया गया, तो बापा अिस प्रार्थनाको अस्वीकार न कर सके। जवाबमें बलवंतराय महेताको सूचित किया कि दो शर्तों पर मैं परिषद्‌का अध्यक्षपद स्वीकार करनेको तैयार हूं। अेक तो परिषद् होनेसे पहले मैं भावनगर राज्यके कुछ गांवोंका दौरा करके अुन्हें स्वयं देख लूं और अुनके प्रश्नोंका खुद अध्ययन कर लूं, तथा अिसके लिअे सफरकी सारी व्यवस्था की जाय; दूसरे, अध्यक्षका भाषण भी आप तैयार कर दें।

परिषद्‌के मंत्री श्री बलवंतराय महेताने ये दोनों शर्तें स्वीकार कीं। अधिवेशनके थोड़े दिन पहले बापा भावनगर आये। भाषण मांगा। बलवंतराय महेताने यह सोचकर भाषण लिखा नहीं था कि बापाके आने पर मुख्य मुद्दों पर अुनके साथ बैठकर चर्चा करनेके बाद लिखूंगा। परंतु बापाने तो अुसी वक्त मांग की, अिसलिअे अुसी रात जागरण करके श्री बलवंतराय महेताने भाषण लिख डाला। दूसरे दिन बापाने अुसे पढ़ लिया। अुसमें अेक दो मुद्दे छूट गये थे, जो अुन्होंने जोड़ दिये। खास तौर पर अुस समयके भावनगर राज्यकी नाबालिगी शासन-कौंसिलके अध्यक्ष सर प्रभाशंकर पट्टणी समय समय पर राज्य और प्रजाके संबंधकी बाप-बेटेके संबंधसे जो तुलना किया करते थे, अुसकी बापाने अपने भाषणमें कुछ आलोचना की।

अिसके बाद निश्चित कार्यक्रमके अनुसार ठक्करबापाको भावनगर राज्यके राजुला, लीलिया और अमराला महालके गांवोंमें तीन दिन भ्रमण कराया। वे आठ-दस गांवोंमें घूमे। वे जहां जाते वहां सभाकी पहलेसे ही व्यवस्था कर ली जाती। लोग भी काफी संख्यामें अुपस्थित होते। अिस सबका असर ठक्करबापाके मन पर बहुत अच्छा हुआ। अुन्हें लगा कि भावनगरके कार्यकर्ता सिर्फ बातें ही नहीं बनाते, बल्कि काम भी अच्छा कर रहे हैं। अिन दिनोंमें वे भावनगर राज्यके किसानों, व्यापारियों, कार्यकर्ताओं और विद्यार्थियोंके सीधे संसर्गमें आये। राज्यके अनेक प्रश्नों, दावपेचों और कठिनाअियों वगैरासे परिचित हुअे।

अिधर परिषद् संबंधी तमाम तैयारियां हो चुकी थीं। १९२६ के मअी मासकी १२ तारीखको महुवामें परिषद् हुअी। मालण नदीके विशाल पाट पर अमराअीमें मंडप बनाया गया था। वहां अुसका अधिवेशन हुआ। अुसमें किसान, प्रतिनिधि और दर्शक अच्छी संख्यामें अुपस्थित हुअे। बाहरसे भी बहुत

लोग आये थे। परिषद्के अध्यक्ष श्री ठक्करबापाके साथ 'सौराष्ट्र' पत्रके संचालक और अुस समयके देशी राज्योंके राजनैतिक आन्दोलनके नेता श्री अमृतलाल सेठ, श्री अब्बास तैयबजी, श्री रामदास गांधी वगैराने अुपस्थित होकर परिषद्में चेतना और अुत्साह भरा था। अिसके सिवाय महात्मा गांधी, डॉ० सुमंत महेता, 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के सम्पादक श्री सैयद अब्दुल्ला ब्रेलवी, श्री देवचंद अुत्तमचंद पारेख, काठियावाड़की स्थायी सेनाके सरदार श्री फूलचंद कस्तूरचंद शाह, श्री मोहनलाल मोतीचंद, कवि श्री नानालाल, श्री गिरजाशंकर त्रिवेदी वगैराके परिषद्की सफलता चाहनेवाले और अुसके प्रति सहानुभूति प्रगट करनेवाले संदेश आये थे। गांधीजीने अपने संदेशमें कहा था :

"परिषद्ने अछूतों और भीलोंके गुरु अमृतलाल ठक्करको अध्यक्ष चुनकर अपनी ही अिज्जत बढ़ाअी है। मैं आशा रखता हूं कि अैसी परिषद्में जिस खादीके जरिये सैकड़ों अछूत भाअी अीमानदारीसे रोजी कमाते हैं और जिसके द्वारा भूखसे पीड़ित अनेक बहनें अपनी लाज कायम रखकर भी कुछ आने कमा सकती हैं, अुस खादीको स्थान मिलेगा और अस्पृश्यताका जो मैल हिन्दूधर्ममें घुस गया है वह धुल जायगा।"

स्वागताध्यक्ष सेठ श्री हरिलाल मोहनलाल नगरसेठने भी अपने व्याख्यानमें भावनगर राज्यके विविध प्रश्नोंकी चर्चा की। परिषद्के सभापति श्री अमृतलाल ठक्करकी सेवा-भावना और कार्यदक्षताको अंजलि अर्पित की। अुनके जैसे सेवाजीवनके महारथी, साधुचरित, धुरंधर प्रजासेवक नेताके मिलने पर धन्यता अनुभव की और अुनके नेतृत्वमें अच्छे समाज-सेवक जुटाकर अुनका संगठन करके काम करनेकी आशा व्यक्त की।

अिसके बाद ठक्करबापाने अध्यक्षकी हैसियतसे अपना व्याख्यान पढ़ा।

अध्यक्षके नाते श्री ठक्करबापाने जो भाषण दिया, अुसमें भावनगर राज्यके छोटे बड़े तमाम प्रश्नोंको ले लिया। खेती संबंधी प्रश्नों, शहरों और देहातके प्रश्नों, प्रजा-प्रतिनिधि सभाके अधिकारोंको विस्तृत करनेसे संबंध रखनेवाले प्रश्नों, अस्पृश्यता-निवारण और खादीके प्रश्नों, चमड़ा-कर और अिजारेके प्रश्नों तथा बेगारके प्रश्नोंकी छानबीन की। अुन्होंने भावनगर राज्यकी शासन नीतिको प्रतिक्रियावादी कहकर कौंसिलके अध्यक्ष सर प्रभाशंकर पट्टणीके प्रबंधकी मर्यादित किन्तु स्पष्ट आलोचना की। अितना ही नहीं, सर प्रभाशंकर पट्टणी राज्य और प्रजाके संबंधको जो बाप बेटेका संबंध बताते थे, अुसका असली स्वरूप दिखाकर अिस बातकी पोल खोलनेकी भी

हिम्मत दिखाअी। बेगार और जकातके प्रश्नके प्रति न्याय करके अैसे अन्यायपूर्ण रीत-रिवाजोंको मिटानेकी स्पष्ट हिमायत की और मकान-करकी भी कडी निन्दा की। अुनके सारे भाषणमें तथ्योंकी निश्चितता, राज्यके अलग अलग विभागोंका बारीकीसे किया गया अध्ययन और स्पष्ट मतप्रदर्शन स्थान स्थान पर दिखाअी देता है।

परिषद्‌की अिस बारकी कार्रवाअी, अध्यक्षके भाषणमें अिस्तेमाल की गअी अति विवेकपूर्ण भाषा, प्रार्थनाके रूपमें पास किये गये बहुतसे प्रस्ताव और डरते डरते की जानेवाली आलोचनाअें वगैरा देखकर आज हंसी आती है। छोटे छोटे मामूली सुधार करानेके लिअे और हल्केसे हल्के प्रस्तावोंका अमल करानेके लिअे अुस समयके अुग्रसे अुग्र माने जानेवाले कार्यकर्ताओंको भी 'माननीय दरबारश्रीसे' 'प्रार्थनाके' रूपमें ही प्रस्ताव पास करने पड़ते थे। अितना ही नहीं, जहां भी अैसी परिषद् होती, वहां जो लोग भाग लेते अुनमें से किसी भाअीसे कोअी कड़ा शब्द भूले भटके अिस्तेमाल हो जाता तो वह दो खुशामदके शब्दप्रयोग करके अुसकी क्षतिपूर्ति कर देता था। परंतु अिन सबका कारण अुस समयका निरंकुशता, जुल्म और खुशामदसे भरा हुआ वातावरण था। लोगोंके दिलमें राज्यसत्ताका डर था। सौराष्ट्रके २०२ छोटे बड़े रजवाड़ोंमें से अेक दो अपवादोंको छोड़कर बाकीमें निरंकुशताका ही बोलबाला था। राजकोट, भावनगर जैसे गिनतीके राज्योंको छोड़ दें, तो समस्त सौराष्ट्रमें नागरिक स्वातंत्र्यका नामोनिशान भी नहीं था। और भावनगर जैसे राज्यमें भी वह मर्यादित मात्रामें ही था। सौराष्ट्रके बित्ते जितने छोटेसे राज्यमें भी कोअी परिषद् करनी हो, अरे साधारण सभा करनी हो तो भी पहलेसे राज्यकी मंजूरी लेनी पड़ती थी। अुस समयकी प्रजाशक्तिका अंदाजा लगाकर खुद गांधीजी और सरदार पटेल जैसोंने भी अलग अलग देशी राज्यों और अुनके राजाओंके साथ पहलेसे कुछ समझौता करके सभा करनेका तरीका अपनाया था।

अिस भूमिकाको नजरमें रखकर यदि हम ठक्करबापाका भाषण देखें और सत्यके प्रकाशमें अुसका मूल्यांकन करें, तो कहा जायगा कि ठक्कर-बापाने अध्यक्षके रूपमें बहुत निडर और ठोस काम कर दिखाया।

राज्यके अूंचेसे अूंचे अधिकारीके प्रभाव और रोबसे दबे बिना पूरी तरह विनय और विवेक रखकर भी भावनगर राज्यकी नीति और प्रबंधमें कहां दोष थे, दीवान साहब कहां भूल कर रहे थे और आयंदा अिन दोषों और भूलोंका निवारण करनेके लिअे क्या क्या हो सकता है, यह सब अुन्होंने मित्रभावसे बताया था। प्रजाकी भूलें भी अुन्होंने अुतनी ही

निडरतासे बताअी थी। अुन्होंने अिस बात पर जोर दिया था कि जब तक प्रजा अपनी भूलें और दोष दूर न करे, डर और आलस्यको तिलांजलि नहीं दे, अपने ही भाअियोंके प्रति किये जानेवाले अन्याय न मिटाये, अस्पृश्यताको दूर न कर दे और खादीको न अपनाये, तब तक सच्ची प्रगति या अुन्नतिकी आशा नहीं रखी जा सकती।

परिषद्में १५-१६ प्रस्ताव पास हुअे। अुनमें प्रजा-प्रतिनिधि सभा और अुसकी कार्य-दिशा विस्तृत करने, मुफ्त प्राथमिक शिक्षाका प्रबंध करने, बेगारकी प्रथा अुठा देने, चमड़ा-करके अिजारे बन्द करने, महालोंकी म्युनिसिपैलिटियोंके प्रबंधके लिअे खर्चकी पूरी व्यवस्था करने, और पानीकी योजनाअें हाथमें लेनेके बारेमें दरबारसे प्रार्थना करनेवाले अधिकांश प्रस्ताव अध्यक्षपदसे ही पेश हुअे थे।

अिस प्रकार बापाकी अध्यक्षतामें परिषद्का काम बहुत सरलतासे पूरा हुआ। अिसके बाद आखिरी प्रस्तावके मुताबिक अध्यक्ष श्री अमृतलाल ठक्कर, अुपाध्यक्ष तथा मंत्री आदि सहित आठ आदमियोंका शिष्ट-मंडल परिषद्में पास हुअे प्रस्ताव दरबारके सामने रखनेके लिअे राज्यकी कौंसिलके अध्यक्ष श्री प्रभाशंकर पट्टणीसे मिलने गया। अुसका वर्णन शिष्ट-मंडलके अुस समयके अेक सदस्य और कांग्रेसके वर्तमान मंत्री श्री बलवंतराय महेताने अिस प्रकार किया है:

"दीवान श्री प्रभाशंकर पट्टणीको अिस परिषद्में जो कुछ कार्रवाअी हुअी वह पसन्द नहीं आअी थी। फिर भी वे ठक्करबापा जैसे मानव-सेवकसे, जो भारत-सेवक-समाजके सदस्य थे और मानी हुअी नरम राजनीतिवाली सामाजिक संस्थाके काममें लगे हुअे थे, मिलनेसे तो अिन्कार कैसे कर सकते थे? अिच्छा या अनिच्छासे अुन्होंने मिलनेका समय दिया। तदनुसार शिष्ट-मंडल मिलने गया। ठक्करबापाने सारे प्रस्ताव पेश किये। अेकके बाद अेक सवालकी चर्चा हुअी। बेगार, रिश्वतखोरी, 'तोबकड़ा' (अेक तरहका अतिरिक्त भूमिकर), चमड़ा-करका अिजारा, निकासीकी जकात वगैरा अुठ जाने चाहिये, अैसी मांग सदस्योंकी तरफसे पेश हुअी। चर्चामें दीवान श्री प्रभाशंकर पट्टणीने अुद्धतता दिखाअी। यह चीज असंभव है, यह नहीं हो सकती, यह मैं नहीं करूंगा, वगैरा अुनका नन्ना चलता रहा और अुन्होंने अैसा अकड़ा हुआ रवैया दिखाया मानो वे मुद्देकी चर्चा ही करनेको तैयार न हों। बापाको तो जैसे सिरसे पैर तक आग लग गअी। अुनका चेहरा गुस्सेसे लालसुर्ख हो गया। हमें क्षणभर अैसा लगा मानो ज्वालामुखी फट पड़ेगा। परंतु

अुस दिन अुन्होंने खूब आत्मसंयम रखा और वे कुछ नहीं बोले। मुलाकात पूरी करके बाहर निकले, तब ठक्करबापाने पट्टणी साहबके आदमीसे कहा, 'पट्टणी साहबसे कह देना कि अुन्होंने जिस ढंगका रवैया अख्तियार किया है, वह अच्छा नहीं है। और आयंदा में कभी अुनसे मिलने नहीं आअूंगा।' यह सन्देश जब पट्टणी साहबके पास पहुंचा, तब शायद अुन्हें भी पछतावा हुआ होगा या बादमें अपनी भूलका भान हुआ होगा। अिसलिअे अुन्होंने बापाके लिअे शामको खास तौर पर आदमी और गाड़ी भेजकर अुन्हें मिलने बुलाया। अुस समय पट्टणी साहबको जो कुछ कहना था दिल खोलकर कहा। अुन्होंने बापाको शान्त करनेका प्रयत्न किया, परिषद्में की गअी मांगोंमें से बेगार अुठा देनेकी मांग स्वीकार की और दूसरे मुद्दोंके संबंधमें अुदारतासे विचार करनेको कहकर ठक्कर साहबको मना लिया।

"अिस मुलाकातके बाद बापाको थोड़ा संतोष हुआ कि चलो, अितना काम तो निपटा।"

आम तौर पर हमारे यहां परिषदोंमें यह होता था कि परिषद्के लिअे चुने हुअे अध्यक्ष तीन दिन तक अर्थात् परिषद्की बैठकके होते रहने तक अुसका कामकाज संभालते, भाषण देते और प्रस्ताव पास करते, परंतु फिर बारह महीनों तक अुनकी प्रवृत्ति ठंडी हो जाती। वे किसी परिषद्के अध्यक्ष हैं, यह बात भी लगभग भूल जाते। परंतु ठक्करबापाकी बात अलग थी। भारत-सेवक-समाज और गांधीजी दोनोंके असरमें रहकर अुन्होंने बहुत सीखा था, अिसलिअे परिषद् खतम होनेके बाद भी पत्रव्यवहार द्वारा अुन्होंने परिषद्के साथ संबंध कायम रखा। अितना ही नहीं, वे हर दो महीनेमें भावनगर राज्यके तालुकों और महालोंमें अुन प्रदेशोंके कार्यकारिणी समितिके सदस्योंको साथ लेकर देहातका दौरा करते, अुनके प्रश्न समझते, लोगोंकी शिकायतें और दु:खदर्द सुनते और अुनका निवारण करनेका प्रयत्न करते। अिस प्रकार अेक दो बार बापा भावनगर राज्यके दौरे पर आकर बैलगाड़ीमें देहातमें घूमे। परंतु बादमें दूसरे कामोंका दबाव अितना अधिक रहा कि अिच्छा होते हुअे भी वे अधिक प्रवास नहीं कर सके। फिर भी अुन्होंने पूरे साल भावनगर राज्यके प्रजा-परिषद्के अध्यक्षकी हैसियतसे पूरी पूरी जिम्मेदारी निभाअी और राज्यके लोगोंके लिअे जी-तोड़ काम किया। राज्यके शासनकर्ताओंसे मिलकर, अुनके साथ सिरपच्ची करके लोगोंकी कुछ शिकायतें दूर कराअीं और अैसा वातावरण पैदा करनेकी कोशिश की, जिससे साधारण प्रजाको शासनका भार यथासंभव हल्का महसूस हो।

२

भावनगर राज्य प्रजा-परिषद्के अध्यक्षके रूपमें ठक्करबापाने जो काम किया, अुससे वे काठियावाड़के देशी राज्योंके प्रमुख कार्यकर्ताओंके बड़े घनिष्ठ संपर्कमें आये। यह संबंध अध्यक्षपदका अेक वर्ष पूरा होने पर वही खतम नही हो गया, परंतु आगे भी जारी रहा और दिन दिन अधिकाधिक दृढ़ होता गया। अिस बीच काठियावाड़ राजनैतिक परिषद्का चौथा वार्षिक अधिवेशन पोरबन्दरमें करना तय हो चुका था। अिसके लिअे अध्यक्ष किसे चुना जाय, यह सवाल था। अिसके लिअे तीसरी राजनैतिक परिषद्के अध्यक्ष महात्मा गांधी, मंत्रियों तथा कुछ अन्य सदस्योंकी अेक अुपसमिति बनाअी गअी थी। अुसमें मंत्रियोंकी हैसियतसे श्री देवचंद अुत्तमचंद पारेख और श्री फूलचंद कस्तूरचंद शाहके सिवाय श्री अमृतलाल सेठ, श्री मणिलाल कोठारी, श्री बलवंतराय महेता वगैरा भी थे। अिस अुपसमितिकी अेक बैठक ता० ३०–११–'२६ को साबरमती आश्रम अहमदाबादमें हुअी थी। अध्यक्षके स्थान पर गांधीजी थे। चर्चा और विचारके बाद सबने ठक्करबापाको अध्यक्ष चुन लिया और यह तय किया कि १९२७ के मार्च मासमें परिषद् की जाय। परंतु अुस समय पोरबंदरमें प्लेग फैला हुआ होनेके कारण १९२७ में अधिवेशन नहीं हो सका। अतः १९२८ की जनवरीमें ता० २०, २१ और २२ के तीन दिन अधिवेशनके लिअे तय किये गये।

ठक्करबापा जैसे अराजनैतिक पुरुषके सिर पर परिषद्के अध्यक्षपदका मुकुट रखनेके निश्चयकी तहमें खास कारण थे। सौराष्ट्रमें अुस समय देशी राज्योंकी प्रजाके दुःखदर्द दूर करनेकी जो लोग कोशिश करते थे और प्रजाके नाम पर अुसकी तरफसे लड़नेका दावा करते थे, वे श्री अमृतलाल सेठ और अुनकी मंडली तथा अुनके विचारोंके साथ मेल रखनेवाले कुछ और कार्यकर्ता देशी राज्योंके प्रश्नों और अुनके हलके बारेमें कांग्रेससे भिन्न विचार रखते थे। ये विचार बाहरसे अुग्र दिखाअी देते थे, लेकिन अुन्हें अमलमें लानेका कार्यक्रम सुरक्षित स्थान पर रहकर सभाअें, भाषण और अखबारी प्रचार करनेके अलावा आगे नहीं बढ़ता था। साथ ही श्री अमृतलाल सेठ और अुनके साथी व्यक्तिगत रूपमें कितने ही अुग्र विचार रखते हों और अिसके लिअे राजाओंके मनमाने शासनके विरुद्ध पूरा जोश दिखाते हों, तो भी देशी राज्योंकी जिस प्रजासे अुन्हें काम लेना था वह बिखरी और दबी हुअी पड़ी थी। अपनी शक्तिका भी अुसे पूरा भान नहीं था। अुसमें राज्यके विरुद्ध सिर अुठाने लायक हिम्मत और संगठन-शक्ति पैदा करनी बाकी था। देशी

राज्योंकी सरहदके बाहर रहकर देशी राज्योंके प्रजाके ये नेता राजाओंके जुल्मों और निरंकुशताकी क्रूर कहानियां प्रगट करके दुनियामें अुनका ढिंढोरा पीटते थे। यह कार्य कितना ही आकर्षक लगता हो, अुससे जुल्मोंकी चक्कीमें पिसती हुअी प्रजाकी भावनाको अपनी तरफ खींचा जा सकता हो, तो भी अुससे देशी राज्योंकी प्रजाके मूलभूत दुःख दूर नहीं हो सकते थे। यह बात गांधीजीने, जिनका समस्त भारतकी राजनीति पर पूर्ण प्रभाव था, स्पष्ट रूपसे समझ ली थी। काठियावाड़ राजनैतिक परिषद्‌की अध्यक्षता अेक वर्ष तक संभालनेके बाद तो अुनका यह विचार और भी स्पष्ट हो गया था। अुन्होंने देख लिया था कि देशी राज्योंकी प्रजाके दुःखदर्द कोअी स्वतंत्र दुःख-दर्द नहीं थे। वे तो भारत पर ब्रिटिश सत्ताके अन्यायी आधिपत्यके ही अेक अंगके रूपमें अस्तित्व रखते थे। अिसलिअे जब तक भारत परसे ब्रिटिश सत्ता न अुठ जाय, तब तक अलग अलग देशी राज्योंके प्रश्नोंके लिअे अुन राज्योंमें लड़ाअी-झगड़े पैदा करके अुनको हल नहीं किया जा सकता था। गांधीजीकी और अुनके नेतृत्वमें काम करनेवाली कांग्रेसकी नीति ब्रिटिश भारत और देशी राज्य दोनोंमें रचनात्मक कार्यों द्वारा जनशक्ति पैदा करके और अुसे संगठित करके अुससे ब्रिटिश सत्ताका मुकाबला करानेकी थी। देशी राज्योंकी दबी हुअी और बिखरी हुअी प्रजा पूरी तरह संगठित होने से पहले राजाओंसे टक्कर ले और सीधी लड़ाअीमें फंस जाय और परिणाम-स्वरूप निरंकुश सत्ताका पहला हमला होते ही दब जाय, अिस प्रकारके अुग्र आन्दोलनको वे देशी राज्योंमें मंजूरी नहीं देते थे। वे मानते थे कि देशी राज्योंमें जागृति लानेके लिअे प्रजा अपनी सारी शक्ति रचनात्मक कार्योंमें ही मर्यादित रखे। अिसलिअे अिन दो विचारधाराओंके बीच हमेशा संघर्ष बना रहता था। केवल ठक्करबापा ही अैसे दोनों विचारप्रवाह रखनेवाले तत्त्वोंके बीच सन्तुलन कायम रखकर अुस समयके काठियावाड़के सार्वजनिक जीवनको आगे बढ़ा सकते थे। विचारोंमें अुग्र मतवादी नौजवानोंके दिलकी आकांक्षाओंकी वे कद्र करते थे और अुनका अुत्साह बढ़ाकर अुन्हें गांधीजीके कार्यक्रममें विश्वास रखनेको प्रेरित करते थे और दूसरी ओर काठियावाड़में राजनैतिक जागृति लानेके लिअे रचनात्मक कार्यक्रम पर ही विशेष जोर देते थे।

अैसी परिस्थितिमें गांधीजीकी सूचना और सलाहसे अुन्होंने काठियावाड़ राजनैतिक परिषद्‌के चौथे अधिवेशनकी अध्यक्षता स्वीकार की। भावनगरका राजनैतिक अधिवेशन होनेके तीन वर्ष बाद पोरबन्दरमें अिस परिषद्‌की बैठक हो सकी। और वह भी महात्माजीकी विचारसरणी और नेतृत्व अुस समयके

परिषद्के नेताओंने स्वीकार किया, अिसी कारण पोरबन्दरमें यह परिषद् करना संभव हुआ था।

अधिवेशनके दिन परिषद्के अध्यक्ष श्री ठक्करबापा सुबह ही पोरबंदर आ पहुंचे थे। पहलेसे दी हुअी सूचनाके अनुसार महात्माजी भी अध्यक्षके साथ ही आये थे। अुनके साथ कस्तूरबा, सरदार वल्लभभाअी पटेल, दरबार गोपालदास, रानी भक्तिलक्ष्मीबा, गुजरातके वयोवृद्ध नेता श्री अब्बास तैयबजी वगैरा भी आये थे। अिन सब नेताओंका सम्मान करनेके लिअे पोरबंदरकी अुत्साहमें पागल बनी हुअी प्रजाने सारे शहरको ध्वजा-पताकाओं और तोरणोंसे सजाया था। रास्तों और चौकोंमें पानीका छिड़काव किया था। और घंटों पहलेसे गाड़ीके आनेकी राह देखती हुअी लोगोंकी भारी भीड़ स्टेशनके प्लेटफार्म पर और स्टेशनके बाहर खड़ी थी।

२० तारीखको सुबह जब गाड़ी पोरबन्दर स्टेशनके प्लेटफार्म पर पहुंची, तब महात्मा गांधीकी जय, भारत माताकी जय, ठक्करबापाकी जय आदि जयघोषोंसे जनताने सारा स्टेशन गुंजा दिया था। अुसके बाद गांधीजी, अध्यक्ष ठक्करबापा और अन्य नेताओंको फूलमालाअें पहनाअी गअीं। लोगोंकी अत्यंत भीड़के कारण गांधीजीको पोरबंदरसे पहलेके स्टेशन पर ही अुतार कर मोटर द्वारा सीधे निवासस्थान पर ले जानेकी स्वागत-समितिने व्यवस्था कर रखी थी। परंतु गांधीजीने अैसा करनेसे अिन्कार कर दिया और अध्यक्ष महोदयका स्वागत हो जानेके बाद ही जानेकी अिच्छा प्रगट की थी। अिसलिअे वह कार्यक्रम बदल दिया गया था। गांधीजी डिब्बेसे बाहर निकले। अुनके पीछे कस्तूरबा, अुनके पीछे परिषद्के अध्यक्ष ठक्करबापा, अब्बास तैयबजी, श्री वल्लभभाअी पटेल, अिमाम साहब, दरबार गोपालदास, रानी भक्तिलक्ष्मीबा, साध्वी मीराबहन, महादेव देसाअी, प्यारेलालजी और कुमारी मणिबहन पटेल वगैरा अुतरे और लोगोंकी भीड़के बीचसे मार्ग करके स्टेशनसे बाहर निकले। अिधर गांधीजीको मोटरमें राज्यके अतिथिगृहमें ले जाया गया। अुधर कार्यकर्ताओंने अध्यक्ष महोदयको आगे करके जुलूस निकाला। अध्यक्ष महोदयके दर्शनोंके लिअे पोरबंदरके विशाल रास्तोंके दोनों ओर लोगोंकी भीड़ लगी हुअी थी। शहरमें प्रवेश करते ही गली-गली और चौराहे-चौराहे पर स्त्रियों, बच्चों, व्यापारियों, विद्यार्थियों और अन्य प्रजाजनोंने अध्यक्ष महोदयके दर्शनके लिअे अेक-दूसरे पर गिरना शुरू कर दिया। जगह-जगह जुलूसको ठहराकर अध्यक्ष महोदयको फूलमालाअें पहनाअी गअीं। मुख्य रास्तों और गलियोंमें घूमकर लगभग दो बजे जुलूस समाप्त हुआ। अुसके बाद ठक्करबापाको अध्यक्षके निवासस्थान पर ले जाया गया।

परिषद्का कामकाज शामको चार बजे शुरू हुआ। अिससे पहले ही सारा मंडप झालावाड़, गोहिलवाड़, सोरठ, हालार वगैरा प्रान्तोंके भिन्न भिन्न देशी राज्योंकी प्रजाके लगभग ४५० प्रतिनिधियों और शहर तथा गांवोंसे आये हुअे हजारों दर्शकोंसे खचाखच भर गया था। अुनमें देहातसे आये हुअे लगभग २,००० किसान भाअी और मेर लोग खास तौर पर ध्यान आकर्षित करते थे। बहनोंके लिअे अलग जगह रखी गअी थी। ठीक चार बजे गांधीजी, ठक्करबापा और अुनके साथके सब लोग सभामंडपमें आ पहुंचे थे। लोगोंने जयघोषसे अुनका स्वागत करके सारे सभामंडपको गुंजा दिया। अिसके बाद थोड़ी देरमें ही शांति फैल गअी और परिषद्का कामकाज शुरू हुआ।

राजकोटकी राष्ट्रीय पाठशालाके विद्यार्थियोंने अीश्वरस्तुति तथा मातृभूमिका प्रशंसागीत गाकर मंगलाचरण किया। स्वागताध्यक्ष श्री देवीदास लक्ष्मीचंद घेवरियाने अपना व्याख्यान पढ़कर सुनाया और बादमें अध्यक्ष महोदयको सुनहरी चन्द्रक पहनाया। अिसके बाद भारतकोकिला श्री सरोजिनी नायडू और अन्य देशनेताओंके परिषद्की सफलता चाहनेवाले संदेश पढ़े गये।

सन्देशवाचन पूरा होनेके बाद ठक्करबापा अपना अध्यक्षीय व्याख्यान पढ़ने खड़े हुअे, तब सभाजनोंने हर्षनाद और जयघोषसे अुनका स्वागत करके अपूर्व सम्मान किया। अुसके बाद दूसरे ही क्षण शांति स्थापित होने पर अुन्होंने धीर गंभीर वाणीमें तीस पन्नोंका अपना लम्बा व्याख्यान पढ़ना शुरू किया।

प्रारम्भमें ही बापाने अपनी स्वभाव-सहज विनम्रता प्रगट करके कहा : "समाजमें नीचा दर्जा रखनेवाली भील और अछूत जातियोंके गाढ़ परिचयमें रहनेवाले, ज्यादासे ज्यादा थोड़ा बहुत शिक्षा और समाज-सेवाका काम करनेवाले और अपने लिअे कोअी दूरका अगम्य कोना ढूंढ़ लेनेवाले मुझे आपने राजनैतिक परिषद्का अध्यक्षपद दिया है, यह जब मैंने अिस शहरके भाअी कालीदास गांधीसे पहले-पहल सुना, तब मुझे यह खयाल हुआ था कि कुछ न कुछ भूल हो रही है। राजनैतिक क्षेत्रमें न अुतरे हुअे, अुसकी अुलझनोंको सुलझानेकी आदत न रखनेवाले और राजनीतिज्ञता शब्दमें जिन सद्गुण-दुर्गुणोंका समावेश होता होगा अुनसे अलिप्त रहनेवाले अेक आदमीको आपने याद करके पंचमहालके पहाड़ी प्रदेशसे पकड़ लिया। अिसके पीछे आपका अुद्देश्य क्या होगा, अिसके बारेमें तर्कवितर्क करनेका साहस मैं नहीं करता। परन्तु स्व० लोकमान्य गोखले साहबकी भारत-सेवक-समाज जैसी

राजनैतिक संस्थाका मैं अेक आजीवन सदस्य हूं, अिस अेक बातके सिवाय परिषद्‌के अध्यक्षकी योग्यता मुझमें है, यह मेरे प्रति बहुत ज्यादा पक्षपात रखनेवाले मित्र भी नहीं कह सकेंगे।

"मुझे भय है कि जिस पद पर पूज्य और जगद्‌विख्यात गांधीजी किसी समय विराजे थे, अुस पदको मैं कैसे सुशोभित कर सकूंगा। साथ ही सन् १९०० के बाद तो मैं नाममात्रका ही काठियावाड़ी रहा हूं। काठियावाड़के राजनैतिक प्रश्नोंसे भी मैं ज्यादातर नावाकिफ हूं। काठियावाड़के दु:खदर्दोंसे, किसानोंकी मुश्किलोंसे और अछूत जातियोंको सहनी पड़ रही मुसीबतोंसे मैं अपरिचित हूं, तो फिर राजा-प्रजाके गाढ़ सम्पर्कमें तो आ ही कैसे सकता हूं? फिर भी मैं आपका हूं। काठियावाड़में जन्मा हूं, पला हूं और 'सरल सौराष्ट्रवासी' होनेका अभिमान रखता हूं। अिसीसे आप सब भाअियोंने मेरे प्रति जो पक्षपात बताया है अुसके लिअे मैं आप सबका ऋणी हूं।

अिस प्रकार ऋण स्वीकार करनेके बाद ठक्करबापाने पोरबन्दर राज्यके पुराने संस्मरण याद करके मृत्युको प्राप्त हुअे भावनगरके साथी कार्यकर्ता सेठ नरोत्तम भाणजीको श्रद्धांजलि दी और बादमें परिषद्‌के ध्येय और कार्यक्रमके विषयमें अेकके बाद अेक मुद्देकी छानबीन की। काठियावाड़के देशी राज्योंमें राजा-प्रजा दोनोंके अुत्कर्षके लिअे जिम्मेदार शासन-तंत्रकी जरूरत बताते हुअे कहा, "हमारी परिषद्‌ने देशी राज्योंमें जिम्मेदार शासन-प्रणाली जारी करनेका ध्येय पहली ही बैठकमें स्वीकार किया है। मैं मानता हूं कि जिम्मेदार राज्यतंत्रकी शासन-पद्धति राज्यसंस्थाकी रक्षाके लिअे मजबूतसे मजबूत किलेबन्दी है। जो राजा या दीवान यह दीर्घ दृष्टिवाली राजनीति अंगीकार करेंगे, अुनका आनेवाला समय स्वागत ही नहीं करेगा, बल्कि अुनकी संतानें अुनकी स्तुति करेंगी। मैसूर, त्रावणकोर-कोचीन और औंध जैसे राज्य धन्य हैं, जो राज्यसंस्थाके अिस परम हितकारी मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। काठियावाड़में भी माननीय राजकोट नरेशने विशाल मताधिकार पर बनी हुअी प्रजा-प्रतिनिधि सभा स्थापित करके अुसे प्रश्न पूछने, प्रस्ताव पेश करने, आमद-खर्चका अन्दाज तैयार करने, कानून पास करने और अिस प्रकारके अुदार अधिकार प्रदान किये हैं जिनसे राज्यतंत्रको प्रजाके प्रति अपनी जिम्मेदारीका सतत भान रहे। अिसके लिअे मैं अुन्हें बधाअी देता हूं।

"वांकानेरके राजासाहब और भावनगरके स्व० महाराजा साहबने भी प्रजा-प्रतिनिधि सभाके सम्बन्धमें प्राथमिक कदम अुठाकर जमानेकी जरूरतको स्वीकार किया है। परन्तु अब तो दोनों सभाओंका विकास होना बहुत जरूरी है।"

नागरिक स्वतंत्रताके प्रश्नकी समीक्षा करते हुअे अुन्होंने बताया कि, "देशी राज्योंकी प्रजाकी तुलनामें काठियावाड़के केवल दो-चार राज्योंमें ही सार्वजनिक जीवन विकसित हो रहा है। व्यक्ति-स्वातंत्र्य सार्वजनिक जीवनका प्राण है। अर्थात् कानूनकी मर्यादामें रहकर राज्यका प्रत्येक प्रजाजन लोक-जागृतिकी हलचल कर सकता है। जिस राज्यमें अिस अीश्वरीय वरदानका संपूर्ण अुपभोग नहीं करने दिया जाता, अुसे पिछड़ा हुआ माना जाता है। अपनी प्रजामें से भीरुता, चुगलखोरी, खुशामद और षड्यंत्रबाजीके दूषण मिटाकर अुसमें निर्भय और विनयशील मनुष्यत्वका विकास करना हो, तो प्रजाको नागरिक स्वतंत्रताके अधिकार देने पड़ेंगे।

"सार्वजनिक जीवनको प्राणवायु देनेवाले तत्त्व ये हैं — सभा तथा संस्थाकी स्वतंत्रता, जान और मालकी स्वतंत्रता, वाणीकी स्वतंत्रता, लेखनकी स्वतंत्रता और अखबार छापने-मंगानेकी स्वतंत्रता। ये सब तो मानवजातिके प्रारम्भिक अधिकार हैं। ये बच्चेके लिअे मांके दूध जैसी वस्तुअें हैं। अिनका दुरुपयोग हो तो भारतीय फौजदारी कानूनमें दण्ड देनेकी सत्ता है। अितने पर भी आज अिनमें से अेक या दूसरी या सभी स्वतंत्रताओंके विरुद्ध खास तौर पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। मित्रोंको याद होगा कि कुछ वर्ष पहले मेरे जैसे अहानिकर मनुष्यको भी खादी और मदिरा-निषेधका काम करते करते अेक समर्थ राज्यकी पुलिसके हाथों कष्ट सहन करना पड़ा था। अिसके सिवाय, कुछ देशी राज्योंके भीतर स्वयं न्यायमंदिरमें भी अभियुक्तको न्याय प्राप्त करनेके साधनोंसे जबरन् वंचित रखा जाता है। कानूनकी संपूर्ण पदवी प्राप्त वकीलोंको भी अुनका किसी भी प्रकारका अपराध बताये बिना सनदें न मिल सकीं और अिसके फलस्वरूप अभियुक्तोंको अिन्साफकी छानबीनके बारेमें असन्तोष रहा, यह जानकर तो मुझे हैरत होती है। यह व्यक्ति-स्वातंत्र्यका ही नहीं, परन्तु पवित्र न्यायका भी लोप कहा जायगा।"

अखबारों और सभाओं पर लगाये गये अंकुशोंका अुल्लेख करते हुअे अुन्होंने सौराष्ट्रके देशी राज्यों द्वारा अिस सम्बन्धमें अपनाअी गअी हास्यजनक नीतिका पृथक्करण करके अुसका खोखलापन और व्यर्थता समझाअी:

"छापाखानों और समाचारपत्रों पर जगह जगह अनुचित अंकुश पाये जाते हैं। अिससे नये विचारोंकी अुत्पत्ति अथवा प्रचार बन्द नहीं होता — और बन्द नहीं हुआ है, यह तो दीये जैसी स्पष्ट बात है। राज्य क्या नहीं जानते कि अुनके पड़ोसमें ही अेजेंसी और ब्रिटिश भारतकी सीमायें मौजूद हैं जहां परिषदें हो सकती हैं, छापाखाने खोले जा सकते हैं और अखबार भी आजादीसे निकलते हैं? अुन सबमें अुनकी समालोचना तो अुनके प्रतिबंधोंकी

हंसी अुड़ाते हुअे जारी ही रहती है। अखबारोंका प्रवेश-निषेध कर दिया जाता है तो प्रजा रेलगाड़ीमें अथवा राज्यसे सटकर लगी हुअी सरहदमें जाकर अुसे पढ़ सकती है। तो फिर अिस हवा जैसी चीजके विरुद्ध दरवाजे बन्द करनेसे क्या फायदा है? अिसके बजाय तो युगबलके तत्त्वोंको अुदार हृदयसे स्वीकार करके अुन्हें अपना लेना चाहिये। देशी राज्योंका कोअी भी संस्कारी प्रजाजन अपने राजाका सम्मान कायम रखकर संयमी और मर्यादित वाणीमें राज्यतंत्रकी आलोचना करे, तो वह अुल्टे राज्यसत्ताके लिअे भूषण-स्वरूप है। राजा-महाराजाओंसे अनुरोध करनेके बजाय मैं खास तौर पर रजवाड़ोंके शासन-प्रबंधकोंसे अनुरोध करता हूं कि अपने भोले नृपालोंको राजद्रोह या असन्तोषकी परछाअींका मायावी भय दिखाकर निर्भयताकी लहरोंको न रोकिये। अुल्टे, अुन्हें व्यर्थके डरसे मुक्त करके राजा-प्रजाके बीच विश्वासका वातावरण फैलाअिये।"

काठियावाड़में अुस समय अलग अलग राज्योंमें किसी जगह भाग-बटाअी और किसी जगह वीघोटीकी प्रथा* प्रचलित थी। अुसका अध्ययन-पूर्ण अवलोकन करके दोनों प्रथाओंके गुण-दोष बताये। और बादमें अिस बात पर जोर दिया कि किसानोंको जमीनके रहन, बिक्री वगैराके हक मिलने चाहिये।

काठियावाड़की अपढ़ और दबी हुअी ग्रामजनताको कष्ट दे रही वेगारकी प्रथा पर आते हुअे अुन्होंने अुस पर कड़े प्रहार किये। अुन्होंने कहा:

"बेगार भी हमारे यहां गुलामीके अेक अन्य अवशेषकी तरह रह गअी है। और सत्ताधीश अुसे अपनी सत्ताके महान चिन्हके रूपमें मिली हुअी अमूल्य वस्तुके तौर पर कायम रख रहे हैं। अिमी परसे भारतीय फौजदारी कानूनके कर्ता मैकालेने गुलामी सम्बन्धी धाराओंमें से अन्तकी ३७४ वीं धारा द्वारा कानूनकी पुस्तकमें यह स्थापित किया है कि, "जो भी शख्स दूसरेसे अुसकी मरजीके विरुद्ध गैरकानूनी मजदूरी (बेगार) करायेगा, अुसे अेक साल तककी सादी या सख्त कैदकी सजा दी जायगी या अुस पर जुर्माना किया जा सकेगा अथवा वह कैद और जुर्माना दोनों सजाओंका पात्र होगा।"

यह धारा अुद्धृत करके अुन्होंने बताया कि, "हमारी रियासतोंमें सभी जगह ताजीरात हिन्द लागू होता है, परन्तु अुन्होंने तो अिस धाराको अपनी हदमें से बिलकुल निर्वासित ही कर दिया है। 'यह धारा हमें मान्य नहीं'—अैसी घोषणा अुन्होंने अपने राज्यकी कानूनकी पुस्तकमें कर दी हो,

* जमीनके हर बीघे पर कर लगानेकी प्रथा।

अैसा मालूम नहीं होता। अितने पर भी कौन राजा, कौन तालुकेदार, कौन बड़े अफसर बेगार नहीं कराते? अपने हकके रूपमें अुसे स्थापित नहीं करते? बेगारके दाम दिये जाते हैं या नहीं, यह बड़ा सवाल नहीं। मेरी आपत्ति तो बेगारके सिद्धान्तके विरुद्ध है। और ब्यौरेका भी विचार करें तो यह जग-प्रसिद्ध बात है कि कराअी हुअी बेगारके बदलेमें या ली हुअी खाद्य-सामग्रीकी अेवजमें पूरे या थोड़े दाम भी शायद ही मिलते हैं। बेगारके प्रश्नका तात्त्विक दृष्टिसे विचार करें तो भी अुसके समर्थनमें कुछ नहीं कहा जा सकता। अिस दण्डविधानके — ताजीरात हिन्दके मीमांसक सर हरिसिंह गौड़ कहते हैं कि, 'किसीको — राज्यको भी — किसी मनुष्यसे अुसकी अिच्छाके विरुद्ध काम लेनेका अधिकार नहीं।' अैसी हालतमें किसान भर बरसातमें अपने खेतमें हल चला रहा हो तब अुसके हल छुड़वाकर अफसर अपनी गाड़ीमें जोतनेके लिअे बैल ले जाय, अपने लिअे दूधकी जरूरत हो तब लोगोंकी भैंसें खुलवाकर अपने तंबूके पास बंधवाये ... अेक ताल्लुकेदारके बालकुंवरके लिअे धायको भी अपने बच्चेसे जुदा करके बेगारमें ले जाया जाय, तो यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि अैसी बेगार लेनेका अमानुषिक कृत्य करनेवाले पग पग पर फौजदारी जुर्म करते और सख्त कैदके पात्र बनते हैं। ये अपराध पुलिसके हस्तक्षेपके योग्य (Cognizable) हैं, फिर भी पुलिस विभाग अुन्हें क्यों दर्ज करने लगा?

"राजा-महाराजाओं तथा अेजेंसीके अधिकारियोंको अपने अपने अिलाकेमें बेगार अुठा देनी चाहिये। प्रजाजनोंसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि वे बेगार करनेसे अिन्कार करके जो दुःख आयें अुन्हें सहन करनेको तैयार रहें और अिस गुलामीके रिवाजसे मुक्त हो जानेका साहस दिखायें।"

काठियावाड़की रेलवे और अुसके रद्दी अिंतजाम पर आते हुअे अुन्होंने कहा: "पच्चीस लाखकी छोटीसी आबादी पर बीसों शासकोंका शासन है। अिस भिन्न भिन्न रचनासे जो संकुचित दृष्टि, जो षड्यंत्रबाजी, जो संकुचित मन हमारे हो गये हैं, होते हैं और भविष्यमें होते रहेंगे, अुसी नियमके आधार पर हमारे रेलवे तंत्रकी नीतिके परिणाम भी आये हैं। कुल १,०२८ मीलकी हमारी रेलवे है। अुसमें छः अलग अलग तंत्र हैं — भावनगर, गोंडल, जूनागढ़, पोरबंदर, जामनगर और बी० बी० सी० आई० रेलवे कंपनी। प्रत्येकका अिंतजाम, मैनेजर और मुसाफिरोंके साथ बर्ताव अलग अलग है। भूतकालमें छोटे पैमानेके प्रबंध रमणीय मालूम होते होंगे, परन्तु अिस नये युगमें वे असंगत

प्रतीत होते हैं और बहुत खर्चीले हैं। और रेलवेको कमाअी करानेवाले यात्रियों तथा व्यापारियोंको अुससे बड़ा कष्ट होता है।"

अितनी कड़ी आलोचना करनेके बाद अिस व्यवस्थामें सुधार करनेके पहले कदमके तौर पर वे प्रजाजनोंकी सलाहकार-समिति बनानेकी सिफारिश करते हैं और कहते हैं कि "जैसे भारतकी तमाम रेलोंके प्रबंधकोंने अपनेको सलाह देनेके लिअे नये खास मंडल बनाकर अुन्हें आमंत्रण दिये हैं, वैसे यहांके मौजूदा छः अलग अलग रेलवे-तंत्र क्यों नहीं कर सकते?"

बादमें अुसका कारण बताते हुअे खुद ही कहते हैं कि "परन्तु अेक अनियंत्रित मनुष्यकी शासन-सत्ताको माननेवालोंके गले यह घूंट अुतरना हम मुश्किल मानते हों, तो फिर हमींको काठियावाड़की रेलोंके लिअे अैसी समिति बनाकर अभी तो अपना काम चलाना चाहिये।"

अिसके बाद राजाओंसे फिजूलखर्ची और विलासकी तरफसे मुंह मोड़ कर अपने खर्चमें कमी करने और 'जमानेकी तेजीसे बढ़ी आ रही प्रजाबलकी बाढ़ अुन्हें मजबूर करे अुसके पहले स्व० सिंधिया महाराजकी दूरंदेशीसे काम लेकर अपना अुचित सालियाना स्वयं ही तय कर लेने' के लिअे पुकार पुकार कर अनुरोध किया।

आगे चलकर बापाने अपने व्याख्यानमें अछूत भाअियोंकी सेवा और अस्पृश्यता-निवारण, मद्य-निषेध, कन्या-विक्रय-निषेध तथा खादी-प्रचार अित्यादि रचनात्मक कार्यको अपनाकर प्रजाशक्ति बढ़ाने और अुसका संगठन करनेकी हिमायत की, और अंतमें काठियावाड़की तत्कालीन परिस्थितिका करुण चित्र खींच कर अुसकी १९५० के संयुक्त सौराष्ट्रके भावी रंगीन चित्रके साथ तुलना की।

१९२८ में सौराष्ट्रकी प्रजाकी स्थिति क्या थी, अिस बारेमें बापा नीचे लिखा वर्णन करते हैं:

"हमारे छोटे तालुके, राज्य और अन्य राज्यसत्ताअें अनेक और अनेक प्रकारकी होनेके कारण संकीर्णता, षड्यंत्रबाजी, पराधीनता, राज्यकर्ताओंका विलासीपन, रैयतकी मतिमंदता आदि खूब बढ़ गये हैं। काठियावाड़ीका अर्थ ब्रिटिश गुजरातमें आम तौर पर षड्यंत्री, धूर्त, मुंहमें राम बगलमें छुरीका प्रतीक, दिलका काला, अस्पष्टवक्ता आदि होता है। फिर छोटे राज्यतंत्रके कारण हमारे यहां राज्यप्रबंध बहुत महंगा होता है, राजकुटुम्बोंके विलासोंमें लाखों-करोड़ों रुपये पानीमें जाते हैं और हमारे मनुष्यत्वका हनन होता है, सो अलग।"

अिन सब कष्टों और अनिष्टोंका अुपाय बताते हुअे बापा कहते हैं, "अिन सब खराबियोंका अेक ही अिलाज है कि हम संयुक्त हो जायं। समस्त काठियावाड़का अेक राज्यतंत्र खड़ा किया जाय। हम जो जूनागढ़ी, जामनगरी और भावनगरी कहलाते हैं और अपनी अपनी अलग अलग पगड़ियोंसे पहचाने जाते हैं, अुसके बजाय सौराष्ट्रवासीके रूपमें पहचाने जायं और अेक ही प्रान्तके शहरी होनेका अभिमान रखने लगें, अिस प्रकारका अेक चित्र खींचनेका मैंने प्रयत्न किया है। मेरा अनुरोध है कि अुसे आप हंसीमें न अुड़ा कर शान्तिसे अुस पर विचार करें।"

क्या है वह चित्र? कैसी अुसकी रेखाअें हैं और कैसे अुसके रंग हैं? यह बापाके ही शब्दोंमें देखें :

"अब मैं आपसे भविष्यकी, बहुत दूरके नहीं, परन्तु २०–२२ वर्ष बादके भविष्यकी कल्पना करनेकी प्रार्थना करता हूं। आज काठियावाड़में पहलेसे सातवें वर्गके ६६ राज्य हैं। अिनके सिवाय अेजेंसीके थानोंका अिलाका है। फिर गायकवाड़ सरकारके अमरेली और ओखा प्रान्त तथा अहमदाबाद जिलेका धंधुका तालुका और घोघा महाल है। ये सब प्रदेश संयुक्त हो जायं तभी अखिल सौराष्ट्र कहलायेगा। यह सारा अिलाका अेक ही राज्यतंत्रके अधीन आ जाय, सौराष्ट्र प्रान्तके सभी छोटे बड़े राज्य मिल कर अुसके अंगभूत बनें, अुसकी अेक प्रजा-प्रतिनिधि सभा और अेक राजमंडल या अुमराव सभा बने, अिस सारे प्रान्तकी आय अेक ही कोषमें जमा हो और अुसका अेक ही बजट अिन दोनों सभाओंमें पास हो — अिस चित्रकी कल्पना करने और अुसमें रंग भरनेके लिअे मैं आप सबको, केवल आप ही को नहीं, परन्तु राजा साहबोंको भी आमंत्रण दे रहा हूं। छब्बीस लाखकी आबादीवाला प्रान्त क्या आप सबको बहुत बड़ा प्रान्त लगता है? ब्रिटिश भारतमें तो अेक अेक जिला अिससे अधिक आबादीवाला है। ब्रिटिश भारतके गोरखपुर और दूसरे जिलोंकी जनसंख्या समस्त काठियावाड़की जन-संख्यासे ज्यादा है। पिछली सदीमें जर्मनीमें छोटे छोटे राज्योंको अिकट्ठा करके जर्मन साम्राज्य बनाया गया; पिछली ही शताब्दीमें जापानकी डेमीअेटोंके अेकत्र होनेसे अेक 'जापानी साम्राज्य' बना। तो फिर १९५० के सालमें काठियावाड़के ७० राज्य मिल कर अेक हो जायं तो अिसमें आपको क्या आश्चर्य या विस्मय होगा? संघबल बढ़नेसे हमारी प्रगति बहुत होगी, ब्रिटिश भारत और दूसरे देशोंमें सौराष्ट्रकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और संयुक्त भारतका अेक प्रान्त बन कर, अभी हम भारतवर्षमें जो 'फोरेनर्स' अर्थात् कानूनकी दृष्टिसे विदेशी माने जाते हैं सो नहीं रहेंगे।

"परन्तु अिस चित्रकी थोड़ी-सी रूपरेखा हम खींचें। पहले और दूसरे वर्गके अर्थात् जिन्हें अपने राज्यमें रहनेवाले प्रजाजनोंके लिअे अपने कायदे-कानून बनानेका पूरा अख्तियार है और अपने प्रजाजनों पर पूर्ण सत्ता है, अैसे अिस समय चौदह राज्य हैं। और तीसरेसे सातवें दर्जे तकके बावन रजवाड़े हैं। जिन अिलाकोंमें पूरा अख्तियार राज्यकर्ताओं और ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधियोंके बीच कम या ज्यादा मात्रामें बंटा हुआ है, अुनकी आबादी दो लाख है। अेजेंसीके प्रान्तमें अढ़ाअी लाखकी आबादी है और अुसमें पूरा अख्तियार अिस समय ब्रिटिश हुकूमतके हाथमें है। अन्तमें गायकवाड़ सरकारका और घोघा-धंधुका तालुकोंका अिलाका आता है। अब अिसमें मुख्य प्रश्न पहले और दूसरे दर्जेके राज्योंका है। अुन राज्योंमें कहीं कहीं प्रजातंत्री शासनके बीज बोये गये है और आशा रखी जा सकती है कि वहां बीस वर्षके बाद या अिससे पहले भी प्रजा-प्रतिनिधि सभाअें पूर्णतया विकसित हो जायंगी। तीसरेसे सातवें वर्गके राज्योंकी प्रजाको प्रजा-प्रतिनिधित्व मिलनेमें लंबा समय लग ही नहीं सकता, बल्कि अुसमें तो अुल्टे यह माना जा सकता है कि ब्रिटिश हुकूमत सहायता देगी। और अेजेंसीकी हदके प्रजाजन तो अिस समय दरअसल ब्रिटिश प्रजाजनों जैसे ही है। फिर रह गये गायकवाड़ी प्रान्त और अहमदाबाद जिलेके दो तालुके। अगर १९५० में ब्रिटिश भारतमें प्रचलित प्रजातंत्रकी संस्थाअें पूरी तरह काठियावाड़ प्रान्तमें काम करने लगें, तो फिर मौजूदा गायकवाड़ी और ब्रिटिश माने जानेवाले अुपरोक्त प्रदेश काठियावाड़में मिल जानेमें हिचकिचाहट या आनाकानी नहीं करेंगे।

"परन्तु अेक मुख्य बात बाकी रह गयी। पहले और दूसरे वर्गके जो चौदह राजा अिस समय राज्य और राज्यकी आयको अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति मानते हैं, अपनेको वैधानिक राजा न मानकर सर्वसत्ताधीश मानते हैं, अुनका क्या हो? अुन्हें नवयुगमें अपनी निरंकुश सत्ताका, अपने राज्य-लोभका राजी-खुशीसे त्याग करके, अपने मंडल और प्रजा-प्रतिनिधियोंकी संयुक्त रूपमें बनी हुअी राज्यसत्ताको अपने अधिकार सौंपने पड़ेंगे और अपने दर्जेके योग्य मानमर्तबा कायम रखने लायक सालियाने स्वीकार करने पड़ेंगे। क्या वे अितनी कुरबानी किये बिना रहेंगे? जापानके 'डेमी' अर्थात् बड़े बड़े तालुकोंके राजा आजसे ६० वर्ष पहले अपनी कुल सत्ता वहांके सम्राट् 'मिकाडो' के चरणोंमें रख सके, वहांके हजारों मनुष्योंका सारा क्षत्रिय वर्ग — सेमुराअी — अपनेको मिलनेवाली वंशपरम्परागत आय केवल नाममात्रका ही मुआवजा लेकर छोड़ सके, तो फिर हमारे चौदह

राजा क्या अितना त्याग नहीं कर सकते ? मातृभूमिकी सेवाका यह अुदीयमान युग क्या अुनके अन्तरमें अितनी अुदारता और दीर्घदृष्टि पैदा नहीं करेगा ? यह बात अलवत्ता सही है कि जापान संयुक्त हुआ तो विदेशी भयके कारण। परन्तु जो बात डरके कारण हुअी, वह अपनी खुशीसे क्यों नहीं हो सकती ? बिस्मार्ककी राजनीतिज्ञता और शासन-नीतिसे यदि जर्मनीके रजवाड़े अेक हो सके, तो क्या काठियावाड़के रजवाड़े भी अपने पूर्ण विकासके लिअे, प्रजाके स्वातंत्र्यमें सहायता देनेके लिअे और सारे भारतकी प्रगतिके लिअे संयुक्त नहीं होंगे, और स्वयं अपनी अनियंत्रित सत्ताका बलिदान नहीं देंगे ? भविष्यके गर्भमें क्या है यह कहनेका सामर्थ्य किसमें है ? परन्तु अपने प्रान्तकी भावी वैधानिक रचना — अुसके सपने कहें तो हर्ज नहीं — करनेका प्रत्येक बुद्धिमान और भावनाशील मनुष्यको हक है। आपको पसन्द हो तो अिस चित्र पर विचार कीजिये, अुसे विकसित कीजिये और अुसमें विविध रंग और छोटी-बड़ी खूबियां भरिये। अगर आपको यह विचार अनुचित प्रतीत हो, तो अिसे फेंक दीजिये, अपनी कल्पनाके घोड़े दौड़ाअिये और भविष्यका सौराष्ट्र कैसा होना चाहिये, अिसका चित्र अपनी बुद्धिके अनुसार बनाकर प्रजाके सामने रखिये।"

कितना सुन्दर चित्र! बीस-बाअीस वर्षके बादके सौराष्ट्रकी कितनी सुन्दर कल्पना!

बापाने अपनेको अराजनैतिक समाज-सेवक, काठियावाड़के अटपटे राजनैतिक प्रश्नोंसे अपरिचित, कूटनीतिज्ञतासे परे अेक 'सरल सौराष्ट्रवासी' के रूपमें बताया है, सो अक्षरशः सच है। फिर भी सौराष्ट्रकी राजनीतिको जाननेवाले, अेक अेक राज्य और अुसके प्रश्नोंका सांगोपांग ज्ञान रखनेवाले राजनैतिक नेता और राजनीतिज्ञ भी सौराष्ट्रके भावीकी जो कल्पना नहीं कर सके, वह सुन्दर और वास्तविक कल्पना ये राजनीतिसे अलिप्त और पंचमहालके अेक कोनेमें पड़े हुअे 'सरल सौराष्ट्रवासी' कर सके और २०–२२ वर्षके बादके सौराष्ट्रका चित्र खींच सके, यह कैसी आश्चर्यकी बात है! अीश्वरकी कैसी अगम्य गति है कि अुसमें श्रद्धा रखनेवाले सर्वथा अराजनैतिक और 'सरल सौराष्ट्रवासी' के दिलमें जो स्वप्न पैदा हुआ, अुसे अुसने अक्षरशः सत्य सिद्ध कर दिखाया। संतोंके वचन कभी मिथ्या नहीं जाते, यह बात बापाके अिन वचनोंने फिर अेक बार साबित कर दी।

१९२८ में अुन्होंने २०–२२ वर्ष बादके अर्थात् १९४८–'५० के सौराष्ट्रकी कल्पना करनेको कहा, और अुन्होंने जो सोचा था वही हुआ। अुनकी अिस कल्पनाने २०–२२ वर्षके बाद सौराष्ट्रमें मूर्त रूप लिया। अुस समय १९२८ में

काठियावाड़ राजनैतिक परिषद्में अुपस्थित होनेवाले सरदार वल्लभभाअी पटेलके हाथोंसे ही बापाने सौराष्ट्रके जिस संयुक्त राज्यकी कल्पना की थी अुसका ठीक बीस वर्ष बाद निर्माण हुआ। अुसमें काठियावाड़के सभी छोटे-बड़े राज्य शामिल हुअे और सौराष्ट्रकी अेक अिकाअी बनी। राजाओंने सारी सत्ता सौंपकर सालियाना लेना स्वीकार किया। अुसकी रेल अेक हुअी, अुसका खजाना अेक हुआ। बाकी रह गया है सिर्फ अमरेली और धंधुका तथा घोघा तालुकोंके प्रदेशका सौराष्ट्रके साथ विलय। परन्तु वह भी जल्दी ही होनेवाला है।

बापाने अध्यक्षकी हैसियतसे जो सुन्दर, वास्तविक, राजा-प्रजा दोनोंको अपना कर्तव्य बतानेवाला और दोनोंको अपनी शक्ति और मर्यादा बतानेवाला तथा लोगोंके समक्ष अेक ठोस कार्यक्रम रखनेवाला व्याख्यान दिया था, अुसका आम लोगों पर बहुत अच्छा असर हुआ। दर्शकों, प्रजा-परिषद्के अधिकांश प्रतिनिधियों और अखबारोंके सम्वाददाताओं तथा अखबारनवीसों वगैरा सबको राजा-प्रजा दोनोंके कल्याणकी भावनावाला बापाका अध्यक्षीय भाषण पसन्द आया। स्वयं गांधीजीने भी यह कह कर कि अध्यक्षके भाषणमें 'भीलों और ढेढ़ोंके गुरुको शोभा देनेवाला गांभीर्य था' अुसका बखान किया। अितने पर भी अुस समयके देशी राज्योंकी प्रजाके अुत्कर्षके लिअे काठियावाड़में काम कर रहे अुग्र माने जानेवाले प्रजाके छोटेसे नेतावर्गको यह व्याख्यान पूरा संतोष नहीं दे सका। अुनकी दृष्टिमें वह अधूरा और नरम था। अिस व्याख्यानकी समालोचना करते हुअे अुस समयकी काठियावाड़की राजनीतिमें अुग्र माने जानेवाले देशी राज्योंकी प्रजाके नेता श्री अमृतलाल सेठने अपने साप्ताहिक पत्र 'सौराष्ट्र' में अिस प्रकार सम्पादकीय टिप्पणी लिखी :

"हमारी आज होनेवाली परिषद्के अध्यक्ष कोअी अुद्दाम युवक न होनेके कारण — शान्त वृद्ध पुरुष होनेके कारण — वे प्राचीन प्रणालियोंका भंग करेंगे, यह हमने बिलकुल नहीं माना था। परन्तु आज अन्यत्र प्रकाशित अुनका भाषण पढ़ कर अुनके किये हुअे प्रणालिका-भंगके लिअे हमें खास तौर पर अफसोस हुआ है। अुनके जैसे शान्त, अभ्यासी और विचारकसे काठियावाड़का भूतकालीन अितिहास समझनेकी हमने आशा रखी थी। अुनके भाषणमें आज तेजीसे घटनेवाली राजनैतिक घटनाओंकी बारीक समीक्षा पढ़नेकी हमने अुम्मीद रखी थी। हमारी दोनों आशाअें पूरी नहीं हुअीं। अगर अुन्होंने भविष्यका अेक मधुर स्वप्न न खींचा होता और आजकलकी राज्य-संस्थाओंमें प्रचलित कुछ प्रथाओंका विवेचन न किया होता, तो हमें अुनके सारे

भाषणको निराशाके निष्कर्षके रूपमें ही वर्णन करना पड़ता। भरतपुरका मामला, नरेन्द्र-मंडलकी हलचल, बटलर कमेटी, वाअिसरॉय महोदयका काठियावाड़का दौरा, जाम साहबका खानेके समयका भाषण, काठियावाड़के बंदरगाहोंका प्रश्न, काठियावाड़म चौतरफ गुंथी हुअी (चुंगीकी) सीमा-रेखाओंका जाल आदि मौजूदा सुलगते हुअे प्रश्नों पर जो अध्यक्ष चुप रह सकता है, वह या तो राजनैतिक आदमी ही नहीं, या अितना भीरु है कि राजनैतिक परिषद्का राजनैतिक अध्यक्ष होने पर भी राजनैतिक विचार प्रगट करनेमें डरता और कांपता है। और हमारा दुःख खास तो अिसलिअे अधिक है कि श्री ठक्करबापा अिनमें से किसी भी वर्गके मनुष्य नहीं। वे अच्छे अच्छे नौजवानोंको शर्मानेवाली बहादुर मनोदशा रखनेवाले हैं। १९५० का स्वप्न देखनेवाले भविष्यकालके आदमी हैं और राजनैतिक विचारणा अुनके बाकीके भाषणमें साफ नजर आती है। अैसे पुरुषसे हमने अधिक अच्छी आशा रखी थी। वह आज भंग हो गअी, अिसके लिअे हम अपना शोक प्रगट करते हैं।"

श्री अमृतलाल सेठ ठक्करबापाको, अुनकी निर्भयता और निःस्वार्थताको अच्छी तरह जानते थे। अिसीलिअे तो अुन्होंने अुनके भाषणके अधूरेपनकी आलोचना करते करते भी अन्तमें अुन्हें श्रद्धांजलि ही दी है। और भाषणके अधूरेपनका दोष किसी और तत्त्व पर डाला है। परन्तु अुनकी जगह कोअी और अध्यक्ष होता, तो वह अपने अैसे भाषणके लिअे कड़ी-से-कड़ी आलोचनाका शिकार बना होता।

अितने पर भी यह सम्पादकीय लेख पढ़कर बहुतसे अखबारी मित्रोंने भी श्री सेठसे कहा कि 'आज तकके तमाम अध्यक्षोंके भाषणोंसे यह भाषण कहीं बढ़ाचढ़ा है।' और अेक अन्य मित्रने यहां तक कहा कि 'पिछला अग्रलेख लिखकर श्री ठक्कर साहबके प्रति आपने अन्याय किया है।' तब अुसकी सफाअी देते हुअे श्री सेठने स्पष्टीकरण किया कि, 'भाषण जरूर बढ़िया है, परन्तु ठक्कर साहब जैसे ज्ञानवीर, कर्मवीर और निर्भय नेतासे सुलगते हुअे प्रश्नों पर जिस स्वतंत्र विचारकी हमने आशा रखी थी अुसे यह भाषण पूरा नहीं कर सका। अिसके लिअे ठक्कर साहब कम जिम्मेदार हैं यह भी हम जानते हैं। पोरबन्दर परिषद्के सिर पर लादी हुअी कुछ मर्यादाअें अध्यक्षके भाषणका गला घोंटनेके लिअे जिम्मेदार हैं, यह भी हम जानते हैं। ठक्कर साहबकी शक्तिके साथ 'सौराष्ट्र' के अग्रलेखने अन्याय नहीं किया, परन्तु अुनकी परिस्थितियोंका अुल्लेख किया था।'

ये परिस्थितियां कौनसी थीं? ये परिस्थितियां थीं परिषद्में महात्माजीकी अुपस्थिति और जब तक प्रजामें निर्बलता मौजूद हो तब तक अेक संस्थाके रूपमें जबान पर स्वेच्छासे अंकुश रखने और अुसके द्वारा प्रजाबल पैदा करनेकी परिषद्को दी हुअी सलाह। यह सलाह काठियावाड़के अधिकांश कार्यकर्ताओंके गले तो अुतर गअी थी, परन्तु अेक छोटे-से किन्तु अच्छा प्रभाव रखनेवाले काठियावाड़के नेतावर्गके गले नहीं अुतर रही थी। सच पूछा जाय तो अिस सलाहका अनुसरण किया गया अिसीलिअे तो पोरबंदरमें अिस बार राजनैतिक परिषद् की जा सकी और कुछ हद तक वह वास्तविक भूमिका पर काम कर सकी। अितने पर भी यह वर्ग अपने ढंगसे काम न कर सका, अिसका क्षोभ तो अुसके मनमें रह ही गया।

परिषद्में विषय-विचारिणी समिति और खुली बैठक दोनोंमें दो दिन तक जो कार्रवाअी हुअी, अुसमें अिस चीजकी प्रतिक्रिया दिखाअी दी। दो दिनकी कार्रवाअीमें खूब जोशीले भाषण हुअे, चर्चाअें हुअीं। अेक प्रस्ताव पर परिषद्के कार्यकर्ताओंकी खानगी बैठकमें खूब रस्साकशी हुअी। वह प्रस्ताव गांधीजीने पेश किया था और काठियावाड़के सार्वजनिक जीवनका किस दिशामें और किस ढंगसे विकास किया जाय, अुसकी कुंजीके तौर पर था। वह प्रस्ताव अिस प्रकार था:

"राजा-प्रजाके बीच किसी प्रकारकी गलतफहमी न हो और अिस परिषद्को अपनी शक्तिका पूरा भान रहे, अिस हेतुसे और कुछ समयसे चली आ रही प्रथाको निश्चित करनेके लिअे यह परिषद् निश्चय करती है कि परिषद् किसी भी राज्यकी व्यक्तिगत निंदा अथवा आलोचनाके रूपमें कोअी प्रस्ताव न करे।"

अिस प्रस्ताव पर विषय-विचारिणी समितिमें और काठियावाड़में काम करनेवाले कार्यकर्ताओंमें दो भाग हो गये। अेक भाग, जिसका नेतृत्व श्री अमृतलाल सेठ करते थे, अिस प्रकारकी मर्यादा स्वीकार करनेमें विश्वास नहीं रखता था। परिषद् जिये या मरे, परन्तु अुनका विचार था कि अैसी मर्यादा स्वीकार न की जाय। अुन्हें डर था कि अैसी मर्यादासे देशी राज्योंको अधिक जुल्म करनेकी छूट मिल जायगी, देशी राजाओंकी लूट और शोषण-वृत्ति बढ़ती जायगी, अुनके पाप बढ़ते जायंगे, अुनके अन्याय बढ़ते जायंगे और फिर भी परिषद्को चुप ही रहना पड़ेगा। वे मानते थे कि परिषद्को अिस प्रकार बंधनशील बनानेसे देशी राज्योंकी प्रजाके दु:ख रोनेवाला कोअी नहीं रहेगा और अुसके हितोंको बहुत नुकसान पहुंचेगा। अिस वर्गकी संख्या परिषद्में थोड़ी थी, परन्तु

अुसका प्रभाव काफी था। गांधीजीने कार्यकर्ताओंकी खानगी सभामें अपना हृदय अुंड़ेला। अलग अलग ढंगसे अनेक कार्यकर्ताओंसे चर्चा और विचार-विनिमय करके अुन्होंने अुनके मनका समाधान किया और अन्तमें वह प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे पास करवाया तथा जो वर्ग अिस प्रस्तावके विरुद्ध विचार रखता था, अुसके नेता श्री अमृतलाल सेठके ही द्वारा अुसका समर्थन कराया। अलवत्ता श्री सेठने जो कहा वह विचारपूर्वक नहीं, परन्तु महात्माजीके प्रति सम्मान और आदर होनेके कारण और यह समझकर कहा कि गांधीजी जो कुछ विचारते होंगे वह अच्छा ही होगा।

ठक्करबापाका मत भी शुरूमें अिस तरहकी मर्यादा स्वीकार करनेके पक्षमें नहीं था। परन्तु अुन्हें तो गांधीजीके प्रति अपार श्रद्धा थी। अिसलिअे यह मानकर कि गांधीजी जो भी तय करेंगे, वह अच्छा ही परिणाम लायेगा, वे भी अिस प्रस्तावको माननेके लिअे तैयार हो गये।

परिषद्की खुली बैठकमें अिस मुख्य प्रस्तावके सिवाय काठियावाड़में व्यायाम-प्रचार करनेसे सम्बन्ध रखनेवाला, खादी-प्रचार और खादीकी बिक्री बढ़ानेके लिअे अमुक रकमका प्रबंध करनेवाला, अस्पृश्यता-निवारण आन्दोलनको आगे बढ़ानेसे सम्बन्ध रखनेवाला, देशी राज्योंका भावी सम्बन्ध भारत सरकारके साथ ही रहना चाहिये अैसा प्रजामत घोषित करनेवाला, देशी राज्योंमें प्रजा-प्रतिनिधि सभाओंकी स्थापना और राजाओंके निजी खर्चमें सालियाना (सिविल लिस्ट) की मांग करनेवाला प्रस्ताव तथा अैसे दूसरे प्रस्ताव पास हो गये। और तीन दिन बाद गांधीजी और ठक्करबापाके पथप्रदर्शनमें परिषद्का कामकाज पूरा हुआ। तीनों दिन ठक्करबापाने काफी चतुराअीसे काम लिया और लगभग सबको संतोष देनेका प्रयत्न किया। अिस प्रकार पोरबन्दर राजनैतिक परिषद्का अधिवेशन सफल हुआ और काठियावाड़की प्रगतिकी दिशामें अुसने अेक कदम अुठाया।

भावनगर-प्रजा-परिषद् और काठियावाड़ राजनैतिक परिषद्की तरह ही बापाका अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद्के साथ भी गहरा सम्बन्ध था। अितना ही नहीं, अिस संस्थाके सर्जनमें भी अुनका प्रमुख भाग था। काठियावाड़के देशी राज्योंके कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं और भारतके अन्य राज्योंके प्रमुख कार्यकर्ताओंको अैसी भारतव्यापी संस्था कायम करनेकी जरूरत जान पड़ती थी, जो भारतके सारे देशी राज्योंका प्रतिनिधित्व करे और अुनके दुःख-दर्दकी आवाज अुठा सके। भारतके देशी राज्योंका ही नहीं, परन्तु समस्त भारतके लोगोंका प्रतिनिधित्व करनेवाली भारतव्यापी संस्था कांग्रेस थी। परन्तु अुसके कार्यों और देशी राज्योंमें काम करनेकी अुसकी नीतिसे अिन

लोगोंको संतोष नही था। कांग्रेसने देशकी और लोगोंकी शक्तिकी मर्यादा देख कर और तत्कालीन परिस्थितिको ध्यानमें रखकर अपना सारा ध्यान और कार्यशक्ति ब्रिटिश भारतमें ही केन्द्रित की थी। अिससे देशी राज्योंके कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओंको अैसा लगा कि यदि ब्रिटिश भारतमें कांग्रेस प्रजाकीय संस्थाके तौर पर काम करती हो और राजा भी अपने स्वार्थी हितोंकी रक्षाके लिअे नरेन्द्र-मंडल नामकी अलग संस्था बना कर बैठे हों, तो सारे भारतके देशी राज्योंकी प्रजाके लिअे, जिसका कोअी रक्षक नहीं, अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् होनी चाहिये। १९२६ में ब्रिटिश सरकारने बटलर कमेटीकी नियुक्ति की, तब तो अैसी संस्थाकी जरूरत अिन लोगोंके लिअे अनिवार्य हो गअी। यह जरूरत समझनेवाले जो थोड़ेसे प्रमुख व्यक्ति थे, अुनमें ठक्करबापा भी अेक थे। भारत-सेवक-समाजके सदस्य श्री वझे, श्री पटवर्धन तथा देशी राज्योंकी प्रजाके कुछ प्रमुख कार्य-कर्ताओंने मंत्रणा करके ठक्करबापाकी प्रेरणासे बम्बअीमें अेक सम्मेलन बुलाया। अिस सम्मेलनने देशी राज्योंकी प्रजाकी तरफसे अेक घोषणापत्र प्रकाशित करके प्रजाकीय अधिकारोंकी घोषणा की और अिस सम्मेलनमें ही अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् जैसी संस्था बनानेका विचार पेश किया। सम्मेलन होने तक तो कुछ न कुछ अुत्साह बना रहा। परंतु बादमें लोगोंका अुत्साह मंद पड़ गया और छः महीने तक अिस दिशामें कोअी खास काम नहीं हो सका। अन्तमें ठक्करबापाने फिरसे यह प्रश्न हाथमें लिया और श्री बलवंतराय महेताको प्रोत्साहन देकर अिस कार्यमें लगाया। साथ ही अैसी व्यवस्था की कि श्री अमृतलाल सेठ, श्री मणिलाल कोठारी, श्री पोपटलाल चूड़गर वगैरा श्री बलवन्तराय महेताके काममें मदद करें। अिस प्रकार थोड़ी सी पूर्वभूमिका तैयार होनेके बाद दीवानबहादुर रामचंद्र रावकी अध्यक्षतामें बम्बअीके माधवबागमें परिषद् हुअी। विजयसिंहजी पथिक स्वागताध्यक्ष बने। अिस परिषद्में बटलर कमेटीके सामने देशी राज्योंकी प्रजाका दृष्टिकोण रखनेका निश्चय किया गया।

अिस बीच राजाओंकी फिजूलखर्ची और जुल्म वगैरा बढ़ते जा रहे थे। अुनकी निरंकुश सत्तामें किसी भी प्रकारका फर्क पड़ता दिखाअी नहीं देता था। अुल्टे, नरेन्द्र-मंडल द्वारा दावपेंच लगाकर और लाखों रुपये खर्च करके भारत और अिंग्लैण्डमें अपने परोपकारीपन और प्रगतिका विज्ञापन करके वे लोगोंको भ्रममें डाल रहे थे। अुस समयका 'सौराष्ट्र' पत्र अनेक राजाओंकी प्रजाविरोधी प्रवृत्तियोंकी, अुनकी फिजूलखर्चीकी और अुनकी स्वच्छंदताकी तफसील जुटा जुटाकर छाप रहा था और अुनकी पोलें खोल रहा

था। विलायतमें राजाओंकी हलचलोंके बारेमें 'सौराष्ट्र' का अेक लेख पढ़कर ठक्करबापा आगबबूला हो अुठे। अुन्होंने अपनी मनोव्यथा व्यक्त करनेवाला निम्न लिखित पत्र 'सौराष्ट्र' के संपादकके नाम लिखा था :

"कलके 'सौराष्ट्र' के अंकमें 'विलायतकी हवाअें' लेख पड़ा। पढ़कर मुझे तो बड़ा गुस्सा आया। बटलर कमेटी, हमारी स्मशान-शान्ति, हमारे देशी राज्योंका फर्ज वगैरा बातोंका मैं बहुत समयसे विचार करता हूं और निराश होता हूं। परंतु निराश होकर बैठे रहनेसे क्या होगा? कुछ न कुछ सक्रिय काम करना ही चाहिये। अभ्यंकर, चूड़गर, आप, पथिकजी वगैरा लोगोंको यह काम तुरन्त हाथमें लेना चाहिये। चुपचाप बैठे रहनेसे कोअी कुछ नहीं देगा और किसीको हम पर दया नहीं आयेगी। हमें अवश्य ही जोशके साथ आंदोलन करना चाहिये। . . . अैसा लगता है कि अभीकी हमारी चुप्पी Criminal Silence — घोर पातकभरी चुप्पी बन रही है। हमें Concerted Action — संगठित कार्य आरंभ कर ही देना चाहिये, नहीं तो हमारी पूरी लापरवाहीके कारण हमारा मामला जरूर बिगड़ जायगा।"

अन्तमें बटलर कमेटीके सामने प्रजाकीय दृष्टिबिन्दु रखनेके लिअे अेक शिष्टमंडल विलायत भेजना तय हुआ। बापासे अिस डेप्युटेशनमें शरीक होनेका अनुरोध किया गया, परंतु अुन्होंने अिन्कार कर दिया। अिसलिअे श्री रामचंद्र राव, श्री अभ्यंकर और श्री पोपटलाल चूड़गरको अिस शिष्टमंडलके सदस्योंके रूपमें भेजा गया। अुन्होंने बटलर कमेटीके सामने देशी राज्योंकी फिजूलखर्ची, मनमानी, प्रजाके हकोंकी अवहेलना, नागरिक स्वातंत्र्यका सर्वथा अभाव और लोगों पर ढाये जानेवाले भयंकर जुल्मोंकी कहानी पेश की और अुसके समर्थनमें अध्ययनपूर्ण आंकड़े और ब्यौरे आदि दिये। परिणामस्वरूप भारतके देशी राज्योंमें और विलायतके राजनैतिक लोगोंमें काफी खलबली मची।

सन् १९२९ के मअी मासमें बम्बअीमें अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद्का दूसरा अधिवेशन श्री सी० वाय० चिन्तामणिकी अध्यक्षतामें हुआ। अिस अधिवेशनमें पटियाला राज्यके कुछ प्रजाजनोंने पटियालाके निरंकुश शासनके विरुद्ध पुकार करनेवाला जो अेक स्मृतिपत्र वाअिसरॉयके नाम भेजा था, अुसकी प्रतियां छपवाकर छूटसे बांटी गअीं।

अिस स्मृतिपत्रमें पटियालाके अुस समयके महाराजा श्री भूपेन्द्रसिंहजीके विरुद्ध हत्या, बलात्कार, लूट, स्त्रियोंकी गैरकानूनी हिरासत, व्यभिचार, झूठे मुकदमे खड़े करके विरोधियोंको रास्तेसे साफ कर देना, युद्धकोषका रुपया हजम कर लेना वगैरा आरोपों और आक्षेपोंकी लंबी सूची दी गअी थी।

अिन आक्षेपोंका ब्यौरा सुनकर सब दिङ्मूढ़ बन गये थे और अुसे पढ़कर सबको यह खयाल होता था कि क्या सचमुच ये आक्षेप सही भी हो सकते हैं? सही हों तो भारतकी ब्रिटिश सरकार अिन्हें अेक दिन भी बर्दाश्त नहीं कर सकती। फिर भी यह सच था कि ये आक्षेप मौजूद थे और सरकार अुन्हें बर्दाश्त कर रही थी। दूसरी तरफ पटियालाके जिन दस नागरिकोंने वाअिसरॉयके नाम स्मृतिपत्र भेजा था, वे अेक अेक आक्षेप सिद्ध कर देनेको तैयार थे।

देशी राज्य प्रजा-परिषद्की कार्रवाअीमें अिस विषय पर खूब चर्चा हुअी। और चर्चाके अन्तमें निम्नलिखित सदस्योंकी अेक जांच-समिति नियुक्त करना तय किया गया:

श्री सी० वाय० चिंतामणि, अध्यक्ष
श्री लक्ष्मीदास आर० तेरशी
श्री शार्दूलसिंह कवीश्वर
प्रो० जी० आर० अभ्यंकर
श्री अमृतलाल दलपतभाअी सेठ

सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वरके अिस जांच-समितिमें शरीक होनेमें असमर्थता प्रगट करने पर अुनकी जगह ठक्करबापाको लिया गया। जांच-समितिके सदस्योंमें से श्री सी० वाय० चिन्तामणि तथा श्री लक्ष्मीदास तेरशी पंजाब न जा सके, अिसलिअे श्री ठक्करबापा, श्री सेठ तथा प्रो० अभ्यंकरने जांच की। ठक्करबापाने समितिके कार्यवाहक अध्यक्षकी हैसियतसे काम किया।

जांच-समितिने १९२९ के दिसम्बर मासमें अपना कामकाज शुरू किया। मार्गमें खड़ी कठिनाअियोंका कमेटीको पूरा पूरा खयाल था। पटियालाके महाराजा समस्त भारतके राजाओंके मुखिया थे। नरेन्द्र-मंडलके सभापति थे। बीस वर्षसे निरंकुश और अनियंत्रित सर्वाधिकारसे वे अपनी सत्ता भोग रहे थे। दूसरी ओर अनेक जुल्मोंसे कुचली और दबी हुअी प्रजाका कोअी आधार नहीं था। अिस राजाके पाप कर्मोंके विरुद्ध अेक शब्द भी कहना और अुसके गुस्सेसे बचे रहना, ये दोनों बातें नहीं हो सकती थीं। अितने पर भी समितिने अपना काम शुरू किया। समितिने १६ से ३० दिसम्बर १९२९ तक जांचका काम किया। अिस बीच हजारों साक्षी अपनी गवाही देने आये। समितिके सदस्योंने गवाहोंकी निजी जांचके लिअे बलधान, अंबाला और लुधियाना आदि स्थानोंका दौरा किया। अपनी १२ बैठकोंमें ४६

साक्षियोंके बयान लिये। अुसके बाद अुनमें से ३५ आदमियोंकी कैफियतें लीं। अिसके सिवाय समितिके सामने अन्य ५६ लिखित कैफियतें पेश हुअीं। कुछ और भी दस्तावेजी साहित्य प्राप्त किया गया।

अिन कैफियतों और अन्य जो भी साहित्य मिला अुस सब परसे समितिने जितने अिलजाम कानूनकी दृष्टिसे साबित किये जा सकते थे अुनकी भूमिका सामने रखकर सारा विवरण तैयार कर लिया और अुसके सार-रूपमें महाराजा पटियालाके विरुद्ध निम्नलिखित १२ प्रकारके अभि-योगोंकी अेक तालिका तैयार कर ली।

१. अपने ससुरके चचेरे भाअी सरदार लालसिंहकी रूपवती पत्नी दिलीपकुंवर पर मोहांध होकर अुसे अपने महलमें पकड़वा मंगाया और अुसे तलाक देनेके लिअे लालसिंहको खूब समझाया। परन्तु लालसिंहके अिनकार करने पर अेक पुलिस अफसरको रुपया देकर अुसके द्वारा लालसिंहकी हत्या करानेका प्रयत्न हुआ। अुसमें असफलता मिलने पर दूसरी बार प्रयास किया और लालसिंहका खून कराया। महाराजा भूपेन्द्रको दिलीपकुंवरसे दो लड़कियां हुअीं। लालसिंहके कत्लके बाद अुन्होंने दिलीपकुंवरके साथ खुले आम शादी कर ली।

२. पटियाला राज्यके बहादुरगढ़ किलेमें बमका कारखाना खोला और चलाया गया।

३. विचित्रकुंवर, अुसके लड़के और लड़कीको गुम कर दिया गया, जिनका अभी तक पता नहीं चला। डॉ० बख्शीसिंहने जब पटियाला छोड़ा तब वे अपने कुटुम्बको घर पर छोड़ गये थे। बख्शीसिंह कहते हैं कि अुनकी पत्नी विचित्रकुंवरका महाराजाकी मौजूदगीमें खून हुआ और लड़कीका खून बिजलसिंहकी पत्नीने किया। लड़का भी गुम कर दिया गया।

४. सरदार अमरसिंहकी पत्नी जब पटियालामें अपने पिताके घर पर थी, तब महाराजा अुसे अुठा ले गये। बीस वर्ष अुसे अपने अंतःपुरमें रखा। राजासे अुसके अेक लड़का और अेक लड़की हुअी है। सरदार अमरसिंह पर तरह तरहके झूठे मुकदमे चलाये गये और अुसे जेलमें डाल दिया गया (१९३० तक)। अभी तक अुसे छोड़ा नहीं है। सरदार अमरसिंहने अिस मामलेमें पंजाब सरकार और भारत सरकारसे न्याय मांगा, परन्तु अुसे न्याय न देकर भारत सरकारके अेजेण्टने २०,००० रुपये नकद लेकर पत्नी परसे हकदावा अुठा लेनेकी सलाह दी।

५. सरदार हरचंदसिंहको गैरकानूनी तौर पर गिरफ्तार किया और अुसकी २० लाखकी सम्पत्ति जब्त कर ली।

६. जो महाराजाके क्रोधभाजन बने अैसे कितने ही प्रजाजनों पर पटियालाकी पुलिसने झूठे मुकदमे खड़े किये।

अिसके अलावा महाराजाकी शिकार लीला, गैरकानूनी गिरफ्तारी, अनेक प्रकारकी बेगार, कर, युद्धऋणका रुपया प्रजाजनोंको न लौटाकर स्वयं हजम कर जाना, मेहसूल और प्राणी-महकमोंके जुल्म और त्रास तथा सार्वजनिक कामोंके नाम पर अिकट्ठे किये गये रुपयेकी फिजूलखर्ची वगैरा अभियोग भी समितिने महाराजा पर लगाये।

अिन अभियोगोंके समर्थनमें काफी सामग्री थी। अुस सबके अध्ययनके अन्तमें समितिने अपना यह मत व्यक्त किया कि "वाअिसरॉयसे किये गये निवेदनमें पटियालाके प्रजाजनोंने महाराजाके विरुद्ध जो आरोप लगाये हैं वे गैरजिम्मेदारीसे नहीं लगाये गये हैं, परन्तु प्रत्येक आरोपके पीछे ठोस प्रमाण हैं और कुछ मामलोंमें तो चौंकानेवाली और आघात पहुंचानेवाली हकीकतें हैं।"

समितिके अध्यक्ष ठक्करबापा और अन्य दो सदस्योंके हस्ताक्षरसे यह सारा विवरण तैयार हुआ और अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद्‌की तरफसे प्रकाशित हुआ।

अुसकी प्रस्तावनामें श्री बलवन्तराय महेता और श्री मणिशंकर त्रिवेदीने लिखा कि "... विवरणमें जिस परिस्थितिका भंडाफोड़ किया गया है वह अत्यन्त दुःखदायक है।

"हिन्दुस्तानमें राष्ट्रीय हृदय है भी? हमारी राष्ट्रीय स्वतंत्रताकी लड़ाअी सच्ची और वास्तविक है? राष्ट्रीय आत्मप्रतीतिके प्रयत्न सच्चे हैं? अिनका अुत्तर 'हां' में हो तो हमें जरा भी शक नहीं कि अिस विवरणमें प्रगट किये गये तथ्य भारतके सार्वजनिक जीवनमें प्रमुख भाग लेनेवाले नेताओंके हृदयको भारी आघात पहुंचायेंगे और देशी राज्योंमें अेकतंत्री सत्ताके कारण लाखों देशबान्धवोंके प्रति गुलामों और अर्ध-गुलामों जैसा जो बरताव हो रहा है अुसके प्रति असंख्य हृदयोंमें रोषकी ज्वाला भभक अुठेगी।"

और सचमुच ही पटियालाके विवरणमें प्रगट किये गये तथ्योंने देश भरमें जगह जगह खलबली मचा दी। हजारों मनुष्य पटियाला महाराजकी अिस पिशाचलीलाके विरुद्ध रोषसे भड़क अुठे। देशके कुछ अखबारोंने अिस विवरण पर ध्यान देकर अुग्र सम्पादकीय लेख लिखे। भारत-सेवक-समाजके मुखपत्र 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिंडिया'ने 'अुन पर मुकदमा चलाओ' शीर्षक अग्रलेखमें अिस प्रकार लिखा:

"जांच-समितिकी जांचके दौरानमें अपनी सफाअी देनेका महाराजा पटियालाको पूरा मौका होने पर भी अुन्होंने अुससे लाभ नहीं अुठाया।

परन्तु अिससे अेकत्रित प्रमाणोंका ठोसपन और सचाअी जरा भी कम नहीं होती। ... अिस विवरणको प्रकाशित करके प्रजा-परिषद्‌ने अपना फर्ज अदा किया है। भारत-सरकारको अपनी प्रतिष्ठाकी थोड़ी भी परवाह है, अैसा नहीं लगता। फिर भी क्या सरकार अब अपना कर्तव्य पालन करेगी ? "

'अमृतबाजार पत्रिका' ने सारा विवरण छापकर अुस पर दो अग्रलेख लिखे और परिषद्‌के मंत्रियोंको विवरण प्रकाशित करने पर बधाअी देते हुअे लिखा कि, "सारा विवरण अितनी गंभीर बातोंसे भरा हुआ है कि किसी भी प्रकारकी कानूनबाजी या शब्दाडम्बरपूर्ण तर्कवाद सरकारको अपने कर्तव्यसे मुक्त नही कर सकेगा। ... महात्मा गांधी, पं० नेहरू और कअी दूसरे ब्रिटिश भारतीय नेताओंने वाअिसरॉय लार्ड अर्विनकी शुभनिष्ठाकी कद्र की है। आज अुस शुभनिष्ठाकी परीक्षाका सच्चा और अेकमात्र अवसर आया है। ..." आक्षेपोंकी क्रमशः आलोचना करके 'पत्रिका' ने आगे लिखा कि : "सर्वोपरि सत्ताका रियासतोंके साथ सम्बन्ध हो जानेके बाद आज तक किसी भी भारतीय राजाके विरुद्ध दस्तावेजी और जबानी सबूतोंके साथ अैसे गंभीर आरोप नहीं लगाये गये।"

अुस समयके कलकत्तेसे निकलनेवाले अेक दूसरे पत्रने अिस विवरणकी आलोचना करते हुअे लिखा था कि, "जो राजा (पटियालाका राजा) अपना चालचलन सुधारनेका वचन देकर लार्ड मिण्टोकी सरकारके हस्तक्षेपसे बाल बाल बच गया था, अुस राजाके अपने अेक प्रजाजनकी स्त्रीको बीस हजार रुपयेमें खरीद लेनेके प्रयत्नमें भारत सरकारकी सम्मति देखकर सचमुच आश्चर्य होता है।"

कलकत्तेके अेक तीसरे अखबार 'अेडवान्स' ने अपनी सम्पादकीय टिप्पणीमें बताया कि, "जिस समय नरेन्द्र-मण्डलकी सभामें राजाओंकी अिज्जत-आबरू और अुनके सुधरे हुअे शासनकी नेकनियतीकी पटियालाके राजा बड़ी चड़ी बातें कर रहे थे, अुसी समय स्वयं दिल्लीमें पटियाला जांच समितिने अेक अति गंभीर विवरण जनताके हाथोंमें रखा है। भाषणके समय अिस विवरणकी प्रति पटियालाके राजा या लार्ड अर्विनके पास थी या नहीं, यह हम नहीं जानते। परन्तु अिस विवरणमें महाराजाके विरुद्ध हत्या कराने, रिश्वत लेने और गंभीर कुशासनके आरोप लगाये गये हैं। अिस विवरणके त्रासजनक ब्यौरेसे महाराजाके हैवानियत भरे आचरण पर से परदा हट जाता है। ... महाराजा और लार्ड अर्विन दोनोंको हम समय रहते चेतावनी

देते हैं कि समस्त भारतकी जनता अिन ब्यौरोंसे अितनी थर्रा गअी है कि वह अिन आरोपोंको जरा भी अधिक समय तक सह लेनेको तैयार नहीं।"

बम्बअीके अुस समयके युवक नेता वीर नरीमानने अेक अखबारी बयानमें 'वर्तमान युगके अिस सबसे भयंकर आक्षेपपत्र' के समर्थनमें आवाज अुठाकर बताया कि, "अेक बावलाके खूनके लिअे अिन्दौरके राजाको विलायतके बर्फीले पहाड़ोंमें धकेल दिया गया, अघोषित आरोपोंके आधार पर नाभाके राजाको अुटकमंडमें नजरबन्द रखा गया, तो अिस राजाके प्रति अितना अुदार और विशेष व्यवहार किस लिअे किया जा रहा है? यदि ये आक्षेप बेबुनियाद हों तो पटियाला नरेश चुप क्यों हैं? और यदि अिनमें सार हो तो भारत-सरकारकी चुप्पी और लापरवाही बहुत ही अर्थपूर्ण बन जाती है।"

अिस प्रकार पटियालाके विवरणके आधार पर जब देशके कुछ समाचारपत्र और वीर नरीमान जैसे कुछ कांग्रेसजन महाराजा पटियालाके आचरण पर अितने अुग्र रूपमें टूट पड़े, तब गांधीजी और जवाहरलालजी जैसे नेता अिस प्रश्न पर चुप क्यों रहे, यह सवाल कुछ लोगोंके मनमें अुठ सकता है। क्या पटियाला राज्यमें जो कुछ हो रहा था, अुसमें अुनकी मूक सम्मति थी? अथवा पटियालाके प्रजाजनोंके प्रति अुन्हें कम सहानुभूति थी? जो बहनें पटियालाके महाराजाकी वासनाका शिकार बनीं, अुनके प्रति गांधीजी और कांग्रेसके दूसरे नेताओंके हृदयमें अनुकंपा नहीं थी? क्या पटियालाके महाराजाके विरुद्ध अुनके हृदयमें रोष नहीं भड़क अुठा? क्या अुनका 'राष्ट्रीय हृदय' जाग्रत नहीं था? ठक्करबापाके गले जो बात अुतर गअी वह गांधीजीके गले क्यों नही अुतरी? गांधीजी भी अिस जांच-समितिमें शामिल होकर महाराजा पटियालाके विरुद्ध लगाये गये आक्षेपोंको प्रगट करने और वाअिसरॉय द्वारा अुन्हें पदभ्रष्ट करानेमें क्यों कार्यरत नहीं हुअे? अिस तरहके प्रश्न अुस समय भिन्न भिन्न राजनैतिक दलों और अखबारोंने अुठाये भी थे। गांधीजी या कांग्रेसने यह प्रश्न अुस समय हाथमें नहीं लिया, अिसका कारण देशी राज्योंके प्रति कांग्रेसकी निश्चित नीति थी। गांधीजीने देख लिया था कि देशी राज्योंमें राजाओंकी तरफसे जो दमन, अत्याचार, लम्पटता और दूसरे जुल्म हो रहे हैं, अुनका मूल कारण देशी राज्य नहीं, परन्तु अुस विदेशी सत्ताका भारत पर आधिपत्य है जिसके आधार पर देशी राज्य टिके हुअे हैं। अिसलिअे जब तक यह आधिपत्य दूर न हो तब तक कितने ही प्रयत्न किये जायं, कितने ही आंसू बहाये जायं, कितना ही गुस्सा भड़काया जाय, कितने ही जोशीले भाषण और लेख लिखे

जायं, तो भी देशी राज्योंकी प्रजा पर होनेवाले जुल्मोंका अन्त नहीं होगा। मुक्ति-मंदिरमें प्रवेश करनेके लिअे दरवाजेसे सिर टकरानेसे कार्य सिद्ध नहीं होगा, परन्तु दरवाजेके तालेको कुंजी लगाकर खोलना चाहिये। अिसलिअे देशी राज्योंकी प्रजाको राजाओंके जुल्मोसितमसे छुड़ानेके लिअे अुन्हें सहारा देनेवाली सत्ताकी ही कोड़रज्जु तोड़नेके काममें कांग्रेस, गांधीजी और जवाहरलालजी अुस समय लगे हुअे थे।

तब बापा अिस दृष्टिसे क्यों नहीं देख सकते थे? क्योंकि शुरूमें वे भारत-सेवक-समाजकी नीतिमें तैयार हुअे थे। अुस समय अुस नीतिके अनुसार वे ब्रिटिश भारतमें नरम अर्थात् वैध रवैया अख्तियार करते थे और देशी राज्योंके बारेमें अुग्र विचार प्रगट करते थे। अिससे आगे जाना और लड़ाअी चलाना तो अुनके कार्यक्रममें था ही नहीं। जबकि गांधीजी और कांग्रेसकी नीति विचारको तुरन्त ही आचरणमें लानेकी होनेके कारण वे देशी राज्योंकी प्रजाके दुःखदर्दके साथ सहानुभूति तो रखते थे, परन्तु अिन राज्योंके राजाओंके दोषोंकी तालिका प्रजाके सामने रख कर अुनकी आलोचनाओंकी डोंडी पीटनेमें ही रियासती प्रजाकी सेवाकी अितिश्री नहीं समझते थे।

कांग्रेस और अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद्‌के बीच नीतिका यह मतभेद अिसके बाद भी बहुत वर्षों तक — ठेठ लखनअू कांग्रेस तक बना रहा। अिस गज-ग्राहमें बापाकी स्थिति बड़ी नाजुक और विचित्र प्रकारकी थी। विचारोंमें अुनकी सहानुभूति रियासती प्रजाके कार्यकर्ताओंके साथ थी। परन्तु बापा स्वयं मूलमें मानव-प्रेमी और दुखियोंकी मददको दौड़ने वाले सेवकवीर थे, अिसलिअे जहां कहीं दुःख देखते, अुसी तरफ अुनकी सहानुभूति चली जाती थी। दूसरी ओर गांधीजीके प्रति बापाकी भक्ति और अपार श्रद्धा अुन्हें गांधीजीके साथ जोड़े रखती थी। गांधीजी कहते हैं सो भी सही है, फिर भी किसी राज्यमें प्रजा दुःखी होती हो तो अुसकी पुकार सुनाना और दुःख देनेवाले राजाकी खबर ले डालना भी बुरा नहीं — अैसा कुछ अुनका विचार था। अिसलिअे अुनकी कोशिश अेक ओर देशी राज्योंकी प्रजाके नेताओंको समझानेकी और दूसरी तरफ अैसे अुपाय करनेकी रहती, जिससे गांधीजीका हृदय अिन कार्यकर्ताओंके प्रति कोमल रहे।

अेक बार मैंने देशी राज्योंकी प्रजाके किसी समयके नेता श्री अमृतलाल सेठसे यह सवाल पूछा था कि देशी राज्योंमें काम करनेके विषयमें गांधीजी और सरदार वल्लभभाअीकी नीति तथा अखिल भारतीय देशी राज्य

प्रजा-परिषद् और अुसकी नीतिमें अुत्तर दक्षिणका अन्तर होने पर भी, दोनोंकी कार्यपद्धति और प्रश्नोंको हल करनेकी दृष्टि अलग होते हुअे भी बापा दोनों पक्षके लोगोंके साथ अच्छा सम्बन्ध कैसे बनाये रख सके? तब अुन्होंने अुत्तर दिया था कि बापाका सदा अेक सूत्र था और वह सूत्र वे समय समय पर मुझे भी सुनाते थे। वह सूत्र था: "गांधीजी सन्त हैं। सन्तका जी मत दुखाओ।" जब जब हमारे बीच तीव्र मतभेद पैदा होते, सघर्ष अुत्पन्न होते, तब तब वे यह अेक ही वाक्य हमें बार बार सुनाते। दूसरी तरफ हमारी प्रत्येक आवश्यकताके क्षणमें, कसौटीकी घड़ीमें, दुःखमें, आफतमें वे हमारे पास ही खड़े होते थे, अिसलिअे अुनके वचनोंको भी हमें कअी बार मानना पड़ता था। अिस प्रकार बापा अिन दो भिन्न भिन्न तत्त्वोंको जोड़नेवाली कड़ी बन गये थे।

सरदारके साथ भी देशी राज्योंके प्रश्नके सम्बन्धमें जब गरमागरम बहस हो जाती, तब वे कहते कि "तुम्हें सरदारसे मिलजुलकर रहना चाहिये।"

अिस समझौतेकी नीति और सहानुभूतिपूर्ण रवैयेके कारण ही ठक्करबापा दोनों पक्षोंकी प्रीति प्राप्त कर सके और आगे चलकर देशकी शक्ति बढ़ जानेके बाद जब कांग्रेसने देशी राज्योंकी नीतिमें फेरबदल करके राजकोटमें सत्याग्रह किया, अुसके बाद तो सरदार और प्रजा-परिषद्के बीचका अन्तर बिलकुल घट गया। यह परिणाम लानेके लिअे जिन थोड़ेसे लोगोंने प्रयत्न किये, अुनमें बापाका हिस्सा बहुत बड़ा था।

१९४७ में स्वराज्य मिलनेके पश्चात् सरदारने थोड़े ही महीनोंमें बापाके शब्दोंमें कहें तो 'जादूकी लकड़ी' फेरकर भारतके तमाम देशी रजवाड़ोंका प्रश्न हल कर डाला और अुन्हें स्वतंत्र भारतके साथ जोड़ दिया। यह देखकर तो बापाका हर्ष समाता ही नहीं था। सरदारके प्रति वे यदा-कदा धन्यवाद और हर्षके अुद्गार प्रकट करते ही रहते थे। सरदारकी अिस सफलताके लिअे बापाने अुन्हें बारम्बार मुक्तकंठसे श्रद्धांजलि दी है और कहा है कि, "ब्रिटिश सत्ताके जमानेमें देशका जो तीसरा हिस्सा बिलकुल अलग-सा था, अुसे अब भारतके साथ मिला देनेका श्रेय अकेले सरदार साहबको देना चाहिय।"

अिस प्रकार ठक्करबापाने अपनी सूझबूझके अनुसार १९२५-२६ से देशी राज्योंकी प्रजाके हितके लिअे मेहनत की और जब जब अुसके लिअे काम करनेका मौका मिला, तब तब यथाशक्ति प्रयत्न किया। देशी राज्योंकी प्रजा अुनके अिस परिश्रमके लिअे अुन्हें हमेशा याद करेगी।

२२

१९३०-३२ की लड़ाओी

१९३० का साल जैसे देशके लिअे अेक परीक्षाका वर्ष था, वैसे ही भील-सेवा-मंडलके लिअे और अिस कारण ठक्करबापाके लिअे भी था। लाहौर कांग्रेसका पूर्ण स्वाधीनताका प्रस्ताव, गांधीजीका स्मरणीय दांडी-कूच आदि घटनाओंने देशभरमें लड़ाओीका अुग्र वातावरण पैदा कर दिया था। अैसे समय भील-सेवा-मंडलमें सम्मिलित युवा देशभक्त सेवक अुस हवासे अछूते कैसे रह सकते थे? वातावरणकी छूत तो अुन्हें कभीसे लग चुकी थी, और अुनमें से अुग्र कार्यकर्ता श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त, श्री पांडुरंग वणीकर, श्री सुखदेव-भाओी वगैरा लड़ाओीमें जानेको अुतावले हो रहे थे। बापा अुन्हें समझा रहे थे कि भील-सेवाका आजीवन व्रत लेनेवाले सेवक लड़ाओीमें नहीं जा सकते। लड़ाओी कोओी बुरी नहीं। लड़ाओीमें सबको जाना चाहिये। यह अुनका धर्म भी है। फिर भी जो लोग अेक विशिष्ट कार्यसे बंधे हुअे हैं और जिन्होंने अेक खास जिम्मेदारी सिर पर ले रखी है, वे अुस कामको अधूरा छोड़कर अथवा खटाओीमें डालकर नहीं जा सकते। अुधर कार्य-कर्ताओंकी दलील यह थी कि अिस समय जब सारे देशमें आग लगी हुओी है और देशकी स्वतंत्रताके लिअे सर्वस्वकी बाजी लगा देनेको गांधीजी सबका आह्वान कर रहे हैं, तब कोओी भी संस्थाको लिये बैठा नहीं रह सकता। अुनकी सबसे ठोस दलील यह थी कि "साबरमती आश्रमसे बडी तो कोओी संस्था नहीं? वहांसे यदि ८० आश्रमवासियोंको लेकर गांधीजी आज ब्रिटिश साम्राज्यके विरुद्ध मैदानमें अुतर आये हैं और अपना सर्वस्व होमनेको निकल पड़े हैं, तो फिर हमारी क्या बिसात? स्वराज्य आ जायगा तो संस्थाअें अनेक पैदा हो जायंगी। परन्तु यदि हमारे दोषसे स्वराज्य पीछे हटेगा, तो ये संस्थायें भी नहीं टिक सकेंगी।" सच बात यह थी कि अुस समय गांधीजीने देशमें अैसा गरम वायुमंडल बना दिया था कि कोओी भी स्वाभिमानी और तेजस्वी आदमी बैठा नहीं रह सकता था। नौजवान तो खास तौर पर! फिर अूपरके अेक दो सेवक तो अिस शर्त पर मंडलमें शरीक हुअे थे कि भविष्यमें स्वतंत्रताकी लड़ाओी छिड़ी तो अुसमें शरीक होंगे।

बापाने साथियोंसे खूब बहस की और अुन्हें लड़ाओीमें न जाने और मंडलका काम करनेके लिअे ठहर जानेको बहुतेरा समझाया, बिनती की,

परन्तु कार्यकर्ता अपने निश्चयमें अटल रहे। अुनका यह अटल निश्चय था कि भले ही मंडलसे स्थायी रूपमें त्यागपत्र देकर अलग होना पड़े, लेकिन लड़ाओीमें तो हर हालतमें जाना ही चाहिये। अुनके साथ चर्चा करते करते बापाको बड़ा क्रोध चढ़ आया और अन्तमें वे रो पड़े। अुनके रुदन और गहरी व्यथाका असर कार्यकर्ताओंके दिलों पर हुआ। वे भी गद्गद हो गये। लेकिन वे अपने निर्णयमें फेरबदल नहीं कर सके। व्यक्तिके दुःखदर्दसे देशका दुःखदर्द अुनके लिअे अधिक था। अिसलिअे वे अन्त तक अटल रहे। अन्तमें बापा झुक गये। अुन्होंने अुदारता दिखाकर मध्यम मार्ग निकाला। अपने साथियोंको अिकट्ठा करके अुन्होंने बताया कि तुम सबको लड़ाओीमें जाना हो तो भले जाओ। मैं तुम्हें रोकूंगा नहीं। लड़ाओीमें जानेकी सबको छूट दूंगा। परन्तु साथ साथ मंडलकी जिम्मेदारी भी अदा करनी होगी। यह काम भी चलता रहे और लड़ाओीमें भी भाग लिया जा सके, अैसी कोओी व्यवस्था सोचनी चाहिये। मैं अैसा कुछ करूंगा। अिस बीच तुम मुझे अपने ढंगसे सारा प्रबन्ध करने दो। अन्तमें कार्यकर्ताओंने मंजूर किया और बापा जैसा कहें वैसा करनेकी तैयारी बताओी।

बापाने भी अुस समयका वातावरण देखकर श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त, श्री पांडुरंग वणीकर, श्री सुखदेवभाओी, श्री डाह्याभाओी नायक, श्री मंगलदास आर्य और श्री चूनीलाल वगैराको भील-सेवा-मंडलसे कामचलाअू रूपमें मुक्त करके लड़ाओीमें जानेकी छूट दी और स्वयं मंडलका सारा भार वहन किया।

लड़ाओीके कारण और अनुपस्थित रहनेवाले कार्यकर्ताओंके कारण संस्थाके कामको कमसे कम नुकसान पहुंचे और अुसकी सारी प्रवृत्तियां पूर्ववत् जारी रहें, अिसका अुन्होंने बराबर ध्यान रखा। दूसरी तरफ जो भी भाओी जेल चले गये अुनके परिवारोंकी अेक बुजुर्गके नाते संभाल रखी। मंडलके हर कार्यकर्ताके सुखदुःखकी और कुटुम्बकी चिन्ता अुन्होंने अपने सिर पर ले ली। जिनके परिवार आर्थिक तंगीमें फंस गये थे अुनके खर्चके लिअे प्रबन्ध किया; अितना ही नहीं, सौराष्ट्रके कुछ कार्यकर्ता, जो ठक्करबापाके संसर्गमें आये थे, कठिनाओीमें तो नहीं हैं, अिसकी जांच कराकर अुनके परिवारोंकी भी दूर बैठे बैठे चिन्ता रखी और अुन्हें सहायता पहुंचाओी।

अिस प्रकार बापा भारत-सेवक-समाजकी नीतिके प्रति वफादार रहकर सीधी लड़ाओीसे दूर रहे थे। फिर भी अुस नीतिकी मर्यादामें रहकर लड़ाओीमें लगे हुअे सैनिकोंकी मदद करते थे। अिसके बावजूद अुनके मनमें द्वंद्व शुरू हो गया था। समाजमें ली हुओी प्रतिज्ञाके अनुसार अुन्हें संस्थाकी

नीतिके प्रति वफादार रहना था। दूसरी ओर गांधीजीकी लड़ाओीके प्रति अुनका हृदय आकर्षित हो रहा था। स्वयं अुन्होंने तो स्वेच्छासे अनुशासनकी बेड़ी पहन ली थी, अिसलिअे वे लड़ाओीमें नहीं गये। परन्तु दूसरे जो जाते थे अुन्हें अब वे नहीं रोकते थे। अुल्टे, जो लोग लड़ाओीमें भाग ले रहे हैं, वे महान देशसेवाका कार्य कर रहे हैं, यह मानकर अुन्हें दूसरी तरहसे मदद करते थे।

साथ ही, भारत-सेवक-समाजके सदस्यके नाते स्वयं अिस लड़ाओीसे दूर रहकर भी अुन्हें अैसा लगता था कि दूसरी तरह अुन्हें अिसमें महत्त्व-पूर्ण भाग लेना चाहिये। अिसलिअे गुजरातमें जगह जगह जहां सरकारी कर्मचारी और पुलिसवाले कानूनकी मर्यादाको लांघकर प्रजा पर जुल्म कर रहे थे, वहां पहुंचकर वे सच्चे तथ्य अिकट्ठे करके वक्तव्यों द्वारा सरकारका ध्यान खीचते थे। अिसके सिवाय बाहर रहते हुअे वे लड़ाओीको अप्रत्यक्ष रूपमें बल पहुंचानेवाले गांधीजीके रचनात्मक कार्य, स्वदेशी प्रचार, विदेशी कपड़ेका बहिष्कार और मद्यनिषेध वगैरामें भाग लेते थे। विदेशी कपड़ेके बहिष्कारको बल पहुंचानेके लिअे वे भावनगर, राजकोट, जोधपुर वगैरा स्थानोंके दौरे पर गये थे। और ता० २४ तथा २५ अगस्तको वे डाकोर तथा पंचमहालके दौरेमें मालवीयजीके साथ रहे थे और राजकर्मचारियोंके कानून विरुद्ध व्यवहारकी कड़ी आलोचना करते थे। अिस प्रकार जेल जानेवाले सैनिक या प्रमुख कार्यकर्ताके बराबर ही काम करते हुअे भी वे सीधी लड़ाओीमें शामिल नहीं हो सके और गांधीजीकी छेड़ी हुओी अिस लड़ाओीमें प्रमुख भाग लेकर गांधीजीका बोझ हलका नहीं कर सके, अिस बातका अुन्हें बड़ा दुःख था। अिससे यह मालूम होता है कि अिस महापुरुषके अंतरमें परस्पर विरोधी दिखाओी देनेवाले कैसे घोर द्वंद्व चल रहे थे। अेक तरफ अुन्होंने साथियोंको लड़ाओीमें न जानेके लिअे समझाया था, दूसरी ओर स्वयं लड़ाओीमें सीधा भाग न ले सकनेके कारण वे ग्लानि और थोड़ा संकोच अनुभव करते थे। अिसीलिअे जब गांधीजी यरवदा जेलमें दिन बिता रहे थे तब अुन्होंने गांधीजीके नाम लिखे पत्रमें अपना यह संकोच और दुःख व्यक्त करते हुअे कुछ अिस आशयके अुद्गार प्रगट किये थे कि, "अिस लड़ाओीमें मैंने आपका कोओी काम नहीं किया, अिसलिअे आपको लिखनेका मुझे कोओी अधिकार नहीं है।"

परन्तु बापाका गांधीजी पर कितना अधिकार था और अुन्होंने कितना काम किया था, अिसकी कुछ कल्पना करानेवाला अेक पत्र गांधीजीने जेलसे बापाके पत्रके अुत्तरमें अुन्हें लिखा था। अुसमें बापाके बारेमें गांधीजीका

कितना अूंचा खयाल था, अिसके अेक बार और दर्शन होते हैं। अुस पत्रमें गांधीजीने बापाको लिखा था :

"भाअी ठक्करबापा,

"आप यह क्यों मानते हैं कि आपने मेरा कुछ काम नहीं किया, अिसलिअे आपको मुझे लिखनेका अधिकार नहीं? सच पूछें तो मेरे काम जैसी कोअी चीज ही कहां है? हम सबको यथाशक्ति यथामति भगवानका काम करना है। वह तो आप प्रतिक्षण कर ही रहे हैं। काका और मैं कितनी ही बार आपकी बातें करते हैं। आपको लिखने जैसा लगे तो मुझे जरूर लिखें। आप लिखनेके खातिर ही लिखें, यह न तो मैं आपसे मांगता हूं और न चाहता हूं। आप तो प्रत्येक क्षणका हिसाब रखने और देनेवाले हैं।"

अिस प्रकार बापाके सीधी लड़ाअीमें न पड़ने पर भी गांधीजीने अुनके कामको भगवानका काम बताकर अुसकी बड़ाअी ही नहीं की, बल्कि प्रत्येक क्षणका हिसाब रखने और देनेवाले व्यक्तिके रूपमें अुनके कार्यका मूल्यांकन किया।

परन्तु गांधीजीने अुन दिनों जिस हुकूमतको शैतानी हुकूमत कहा था और जिस सरकारका वर्णन 'राक्षसी' सरकारके रूपमें किया था, अुसे बापाका 'भगवानका काम' भी पसन्द नहीं आया। जो बापा भारत-सेवक-समाजकी नरम नीतिके प्रति वफादार रहे थे और अपने कामकी मर्यादा बनाकर अुसके अनुसार चल कर सीधी लड़ाअीसे दूर रहे थे, अुन्हें भी अुसने अेक झूठा आरोप लगाकर पकड़ा और जेलमें डाल दिया।

ठक्करबापाने अैसा कौनसा अपराध किया था, जिससे अुस समयकी नौकरशाहीने अुनके जैसे साधु पुरुषको जेलमें डाला? अुन्होंने लड़ाअीमें भाग नहीं लिया था। कानूनका भंग भी नहीं किया था। वे भारत-सेवक-समाजके अेक प्रमुख सदस्यके नाते अपना फर्ज अदा कर रहे थे। यह निर्दोष कर्तव्यपालन भी अुस समयकी ब्रिटिश हुकूमतको आंखकी किरकिरीकी तरह खटका।

६ अप्रैल, १९३० को देशभरमें सविनय कानून भंगकी लड़ाअी जोर-शोरसे शुरू हुअी। भारत भरमें तमाम शहरी जिलों और तहसीलोंमें लोग खुले आम कानून तोड़ने लगे और अिस प्रकार ब्रिटिश हुकूमतको खुली चुनौती देने लगे थे। अुस समय सल्तनतकी नौकरशाहीका फर्ज लोगोंको पकड़कर अुनके खिलाफ कानूनी कार्रवाअी करना था। परन्तु अिस प्रकार लाखोंकी संख्यामें लोगोंको पकड़ने और जेलमें भेजनेका काम अुसके लिअे

असंभव था। अिसी तरह वह लम्बे समय तक कानून भंगकी मूक साक्षी बनकर सब कुछ देखा करे और सत्ताकी अवहेलनाको बरदाश्त कर ले, यह भी नहीं हो सकता था। अिसलिअे सरकारने सविनय कानून भंग करनेवाले कांग्रेसके सैनिकों और अुनका समर्थन करनेवाले प्रजाजनोंको पकड़कर अुन पर अदालतमें बाकायदा मुकदमा चलानेका सीधा मार्ग ग्रहण करनेके बजाय अुन पर जोर-जुल्म करना शुरू कर दिया और अुसकी मात्रा दिनोंदिन अितनी बढ़ा दी कि जुल्म ठेठ अमानुषिक हद तक पहुंच गये।

देशके कांग्रेसी नेता ही नहीं, अराजनैतिक पुरुष और नरम नेता भी सरकारके जुल्मोंसे चौंक अुठे थे। ब्रिटिश न्याय-नीति और शुद्ध बुद्धिमें नरम नेताओंने जो विश्वास रखा था, अुसे भी नौकरशाहीकी अिस अत्याचारी नीतिने बड़ा आघात पहुंचाया था। बापा भारत-सेवक-समाजके सदस्यकी हैसियतसे गुजरातमें सब जगह घूमते थे और जहां कहीं जुल्म होता वहीं पहुंचकर सरकारके दुष्कृत्योंका भंडाफोड़ करते थे।

धोलेरामें पुलिस सैनिकों पर जुल्म कर रही है और नमक लाने और बेचनेवालोंको पकड़कर अदालतमें खड़ा करनेके बजाय कुत्ते-बिल्लियोंकी तरह नोचकर अेक अेक सैनिक पर पांच पांच पुलिसवाले टूट पड़ते हैं और अुनके हाथोंसे नमक छीनकर अुन्हें धूलमें घसीटते हैं, यह बात सुनकर बापा धोलेरा पहुंचे। सब बातोंकी खुद जांच की। सैनिकोंके बयान लिये और अुनके बारेमें वक्तव्य प्रकाशित करके सरकारकी नीतिकी कलअी खोली।

अिसी प्रकार जब लड़ाअीने अधिक अुग्र रूप धारण किया और धरासणामें पुलिसने कांग्रेसके स्वयंसेवकों पर अितिहासमें कभी न सुना गया निर्दय लाठी प्रहार किया और बहुतसे स्वयंसेवकोंको पशुओंकी तरह मार-पीटकर अुनकी हड्डियां तोड़ डालीं, तब वे धरासणाकी रणभूमिकी तरफ दौड़े गये और अपनी नजरके सामने पुलिसने जो लाठी प्रहार किया अुसके बारेमें वक्तव्य प्रकाशित करके सरकारके आचरणकी अुन्होंने निन्दा की। साथ ही मंडलके मंत्री सुखदेवभाअी अेक टोलीमें सैनिक बनकर धरासणा पर धावा करने गये अुस दिन बापा समरभूमि पर मौजूद थे और जब सुखदेवभाअी पुलिसकी लाठीसे घायल होकर समरांगणमें गिर पड़े तब अुन्हें प्रेमसे अुठाकर अुन्होंने डोलीमें डाला और दवाखाने ले गये तथा अुनकी मरहमपट्टी वगैरा हुअी तब तक वहां खड़े रहे। खेड़ा जिलेके अेक गांवमें पुलिसने गोली चला दी थी और अुसके फलस्वरूप अेक नौजवानकी अुसी समय मृत्यु हो गअी थी। अिस सम्बन्धमें वकीलोंके साथ रहकर बापाने जांच की थी।

मुहम्मदाबादमें शराबकी दुकान पर पहरा देनेवाले स्वयंसेवकों पर पुलिस असह्य जुल्म करती है, यह बात सुन कर बापा मुहम्मदाबाद दौड़े गये और वहांकी स्थिति आंखों देखनेके लिअे दुकान पर पहुंच कर अुस समयके कानूनके अनुसार दुकानसे जितनी दूर खड़े रहना चाहिये था अुतनी दूर खड़े रहे। परन्तु अुस समय ब्रिटिश नौकरशाहीने दमनका ही राज चला रखा था। गांधीजी जैसेको भी अुसने मुक्त नहीं रखा था। जिसने भारतकोकिला सरोजिनी नायडु जैसी भारतकी प्रथम सन्नारी और कवयित्रीको घंटों तक घेर कर खुली धूपमें खड़ा रखा और पानी तक नहीं पीने दिया, जिसने नरहरि परीख जैसे गुजरातके प्रथम पंक्तिके सेवकों पर पशुओं जैसा लाठीप्रहार करके सिर फोड़ दिये, अुस सरकारका मिजाज बिगड़ गया था। कोअी कितना ही तटस्थ क्यों न हो, वह किसी भी आदमीको सरकारी जुल्मोंकी जांच नहीं करने देती थी। किसी भी व्यक्तिका हस्तक्षेप सहन नहीं किया जाता था। ठक्करबापाका नाम भी पुलिसकी काली फेहरिस्तमें दर्ज हो चुका था, अिसलिअे जब वे मुहम्मदाबादमें कांग्रेसी स्वयंसेवकोंके शराबखानेके पहरेका निरीक्षण कर रहे थे, तब अुन्हें १९३० के आर्डिनेंस नं० ५ के मातहत पकड़ लिया गया और अुन पर सरकारी कामकाजको जबरन् रोकनेका आरोप लगाया गया।

सच बात यह थी कि बापा सरकारी कर्मचारी या पुलिसको अुसका फर्ज अदा करनेसे रोकनेके लिअे नहीं, परन्तु कर्तव्यकी कानूनी मर्यादाका अुल्लंघन करके पुलिस स्वयंसेवकों पर जो नाजायज जुल्म कर रही थी अुसे आंखों देखने और यह बात सच हो तो सरकारी नीतिका पर्दाफाश करके जनताके सामने रखनेको वहां गये थे। और यही बात सरकारी कर्मचारियोंको खटकती थी, अिसलिअे अुन्हें पकड़ लिया गया।

अुनकी गिरफ्तारीका समाचार देनेको श्री चूनीलाल परीखने भारत-सेवक-समाजके नाम जो पत्र लिखा, वह तथा श्री छगनलाल जोशीका पत्र अिस हकीकत पर अच्छा प्रकाश डालते हैं।

श्री चूनीलाल परीखने अपने ३–८–'३० के पत्रमें अिस प्रकार लिखा था :

"सविनय निवेदन है कि भील-सेवा-मंडलके अध्यक्ष श्री अमृतलाल ठक्करको, जो खेड़ा जिलेमें पुलिसकी कार्रवाअी देखने आये थे, मुहम्मदाबादके थानेदारने कल दोपहरको साढ़े तीन बजे गिरफ्तार कर लिया है। श्री ठक्कर मुहम्मदाबादके शराबखानेसे कुछ फुटकी दूरी पर खड़े रह कर यह देख रहे थे कि स्वयंसेवक जो पहरा दे रहे हैं वह कितना शान्तिपूर्ण है और अैसे शान्त पहरेदारोंके साथ पुलिस कैसा बर्ताव करती है।

"... पहले दिन धरना देनेवाले स्वयंसेवकोंको पुलिसने खूब मार मारी थी, अिसलिअे आज भी अैसा अमानुषिक और गैरकानूनी कृत्य पुलिसके हाथों न हो, यही वे देखना चाहते थे।..."

साबरमतीके व्यवस्थापक श्री छगनलाल जोशी अुस समय बाहर थे। अुन्होंने भी अिस घटनाके सम्बन्धमें लिखा था कि,

"मुहम्मदाबादमें हमेशा ११ से १८ की संख्यामें पिकेटिंग करनेवाले स्वयंसेवकोंको दिनमें पकड़ा जाता था और बादमें पुलिस चौकी पर ले जाकर अुन पर निर्दयतासे लाठीप्रहार किया जाता था। अुन्हें दस दस घंटे खड़े रहनेको मजबूर किया जाता था और अुनमें से अेक स्वयंसेवकके गुह्यांग भी दबाये गये थे।"

अिस प्रकार ठक्करबापाका अुद्देश्य सिर्फ अितना ही देखना था कि पुलिसके आदमी अिन स्वयंसेवकोंको बेजा तौर पर परेशान न करें, गैर-कानूनी ढंगसे मार न मारें और अुन पर दूसरा जुल्म न करें, बल्कि अुनके विरुद्ध कानूनी कार्रवाअी करें। परन्तु पुलिस-विभागकी अुस समयकी अुद्धतता की कोअी सीमा नहीं थी। वह बौरा गया था। अुसका कुछ अैसा खयाल था कि "कानून भंग करनेवाले अुच्छृंखल लोगोंकी मददको आनेवाला यह ठक्कर कौन है?" अिसलिअे अपने बीचमें आनेवाले ठक्करबापा जैसे विनीत और तटस्थ पुरुषको भी अुसने झूठा अभियोग लगाकर पिंजड़ेमें बन्द कर दिया था।

३ तारीखको दोपहरमें बापाके पकड़े जानेके बाद आम तौर पर यह माना जाता था कि अुनके मुकदमेकी सुनवाअी दूसरे दिन शुरू हो जायगी। परन्तु अिसके बजाय सुनवाअी ८ तारीखको शुरू हुअी। अिन चार दिनोंमें सरकारी कर्मचारियोंने यह आशा रखी थी कि यदि ठक्कर आगेसे पिकेटिंग न करनेका वचन दें तो अुन्हें छोड़ दिया जाय। परन्तु अिस बारेमें वे पूरे असफल रहे। भारत-सेवक-समाजकी नीतिके अनुसार वे ब्रिटिश हुकूमतके किसी भी कानूनको भंग नहीं करना चाहते थे। परन्तु साथ ही पिकेटिंग करनेका अपना कानूनी अधिकार भी नहीं छोड़ना चाहते थे। अिसीलिअे अुन्होंने किसी भी प्रकारका वचन देनेसे साफ अिन्कार कर दिया। अिसलिअे बादमें पुलिसको अुनके विरुद्ध मुकदमा चलाना पड़ा।

८ तारीखको पहले ही दिन केसकी सुनवाअी हुअी। अिसका वर्णन बापाने ही अपने अेक पत्रमें किया है:

"मुकदमा बहुत अच्छी तरह चला। पहले पहल पुलिस थानेदार मुनशीकी गवाही ली गअी। गवाही बहुत संक्षिप्त थी। अुसमें मुनशी साफ

झूठ बोले। गवाहीमें अुन्होंने कहा कि 'मैं २ सितंबरको बारह और सवा बारहके बीच शराबकी दुकानके पास मौजूद था और मैंने ठक्करको पंद्रह स्वयंसेवकोंके साथ पासके पेड़के नीचे खड़े देखा था।' अैसा सफेद झूठ मुझसे सहन नहीं हुआ। अिसलिअे मैंने मजिस्ट्रेटको साफ कह दिया कि यह आदमी सरासर झूठ बोल रहा है। जिरहमें अुनकी पूरी फजीहत हुअी। वे सर्वथा असफल रहे। अपना अेक झूठ छुपानेको अुन्होंने और बहुतसी झूठी बातें पैदा कर लीं और दूसरी कअी असंबद्ध बातें अुन्हें कहनी पड़ीं।

"तीनसे छः बजे तक मामलेकी सुनवाअी फिर हुअी। १ और ३ के बीचका वक्त समझौतेके निष्फल प्रयत्नमें गया। अब ११ तारीखको मुकदमेकी सुनवाअी फिर होगी।"

अुन्हें दो सप्ताह हवालातमें रखा गया। बापा जब तक हवालाती कैदी थे तब तक हवालातमें अुनके साथ कैसा बर्ताव किया जाता था, अिस बारेमें वे लिखते हैं:

"अब मुझे खेड़ा जिलेमें बदल दिया गया है। वहां मुझे कैदीकी तरह नहीं, परंतु शाही मेहमानकी तरह रखा जाता है। हां, संगीन लगी हुअी बंदूकवाले संतरी पहरा जरूर देते हैं। परंतु अुन्हें अितनी दूर रखा जाता है कि मुझे दिखाअी न दें। . . . मुहम्मदाबादसे मेरी बदली खेड़ा होनेसे मैं प्रसन्नचित्त रहता हूं और तबीयत भी बहुत अच्छी रहती है। साथ ही दाहोदके अेक कारकुनको मेरे पास रहने दिया जाता है। अिस प्रकार मेरी गाड़ी अच्छी तरह चल रही है।"

मुकदमेकी दो तीन पेशियां पड़ीं तो बापा अुकता गये। जिस ढंगसे मुकदमा चल रहा था और जिस प्रकार पुलिस कर्मचारी झूठका जाल बिछाते जा रहे थे, अुस सबको देखकर बापाके मनमें जम गया कि अब मुकदमेमें कोअी दम नहीं रहा। अिसलिअे यह जानकर कि अिसे अधिक लम्बानेमें सार नहीं, अुन्होंने सफाअी देना छोड़ दिया और अपने वकीलको यह बात बता दी। अदालतमें सिर्फ अेक लम्बा बयान दिया और अुसमें जो कहना था सो कह दिया। अिस बयानमें अुन्होंने कहा:

"मेरे विरुद्ध चल रहे मुकदमेकी सुनवाअीकी अिस मंजिल पर मैंने अपने विद्वान मित्र श्री सोमाभाअीसे विनती की है कि अब वे अिस मामलेमें मेरा बचाव करनेकी और तकलीफ न करके सफाअी देना छोड़ दें। अिस प्रकारके मेरे जल्दीमें या अेकाअेक अुठाये गये कदमकी तहमें कारण अिस प्रकार हैं।

"१. मुझे जिस कामके कारण पकड़ा गया है, वह काम पूरी तरह जायज है। अितना ही नहीं, अुसकी जड़में सरकार और मुहम्मदाबादके शराबखाने पर पहरा लगानेवाले स्वयंसेवक दोनोंकी सेवा करनेका अुद्देश्य था। यह तभी हो सकता था जब मैं स्वयं जाकर देखता कि शराबकी दुकान पर क्या हो रहा है और अिस बारेमें सही बात आम जनताके सामने रखता। परंतु थानेदारको यह अरुचिकर और कष्टप्रद मालूम हुआ कि मेरे जैसा बाहरका आदमी अुसके गैरकानूनी व्यवहारमें दखल दे। और अुसने मुझे मौजूदा आर्डिनेंसों द्वारा अुसके हाथमें सौंपी हुअी निरंकुश सत्ताके जोर पर गिरफ्तार कर लिया।

"२. दूसरे मैं अेक महीनेसे कुछ अधिक समय जमानत पर छूटकर बाहर रहा, अुस बीच सरकारकी कार्रवाअियोंकी मैं अखबारोंमें आलोचना करूं अथवा जहां दंगेकी संभावना हो अुस हिस्सेमें जाकर जांच करूं अर्थात् सत्य वस्तुका निश्चय करके अुसे जाहिर करूं, अिस पर कलेक्टर और जिला-न्यायाधीशने अेतराज किया।

"मेरे अिस कथित अपराधके लिअे मेरे नाम नोटिस तामील किया गया है और अिसका कारण पूछा गया है कि मेरी जमानतका मुचलका क्यों न रद्द कर दिया जाय।

"महोदय, अिस नोटिसके संबंधमें मेरा अुत्तर यह है कि मैं अपनी किसी भी प्रकारकी स्वतंत्रता स्वेच्छापूर्वक छोड़ना नहीं चाहता। अिसलिअे आप खुशीसे मेरा जमानत-मुचलका रद्द करके मुझे वापस हिरासतमें भेज सकते हैं।

"केसकी सुनवाअीके दौरानमें मेरे विरुद्ध तथाकथित जिम्मेदार पुलिस और आबकारी दोनों विभागोंके कर्मचारियोंके मुंहसे बहुतसी नीचताकी हद तक पहुंची हुअी झूठ बातें मैंने धीरज खोये बिना सुनी हैं। अिनमें भी आबकारी-विभागके अिन्स्पेक्टर श्री मुनशीने अदालतके सामने जो झूठी बातें पेश कीं, वे तो सचमुच आश्चर्यकारक और स्तब्ध बना देनेवाली थी। जिस दिन मेरे गुनाह करनेकी बात कही जाती है, अुस दिन ११ से ३ के बीच अेक मिनट भी अुपस्थित न होनेके बावजूद शपथ लेकर अुन्होंने यह कहनेकी धृष्टता दिखाअी है कि वे वहां तीन घंटे मौजूद थे। यह आश्चर्य पैदा करनेवाली बात है। मैं अैसे सफेद झूठ बोलनेवाले आदमियोंके सामने अिस अदालतमें खड़ा रहना नहीं चाहता। और वह झूठ बोले हैं, अिसका विश्वास अदालतको करा देनेकी मुझे अिच्छा नहीं होती। वादी पक्ष सरकारी नौकरीसे बाहरका अेक भी स्वतंत्र साक्षी पेश नहीं कर सका। मैं पिकेटिंग कर रहा था अथवा

दूसरोंको अैसा करनेको भड़का रहा था अथवा छूटसे यह जो कहा जाता है कि मेरे साथ पेड़के नीचे १५ पिकेटर बैठे थे—यह सब साबित करनेके लिअे वादी पक्ष अेक भी स्वतंत्र साक्षी, अर्थात् सरकारी नौकरोंके सिवाय अेक भी साक्षी, पेश नहीं कर सका। यहां तक कि जिन शराब पीनेवालोंके बारेमें कहा जाता है कि मैंने अुन्हें न पीनेको समझाया, अुनमें से भी अुसे कोअी साक्षी नही मिला।

"मुझ पर मुकदमा चलानेवाले न्यायाधीशसे, जो प्रबंध विभागके अधिकारी भी हैं, मुझे शुद्ध न्याय मिल सकेगा, अिस बारेमें मुझे अिस मामलेके प्रारंभसे ही शंका थी। फिर भी अन्तमें मित्रों और शुभाशयी साथियोंकी बात मानकर अपने मित्र और वकील श्री सोमाभाअीकी हार्दिक सहायता द्वारा अपना बचाव करनेकी बात मैंने मंजूर की थी। परंतु अब मैं पहले तो वादी पक्षकी तरफसे जो झूठ बातें पेश की गअी हैं अुनसे और दूसरे अिस्तिगासेके वकीलके मुंहसे प्रगट होनेवाली सरकारी नीतिसे—जो नीति सचाअीको दबाती है और तथाकथित दंगेके हिस्सेमें होनेवाली घटनाओंके लोकपक्ष द्वारा वर्णन किये जानेवाले समाचारोंका प्रकाशन रोकती है—बिलकुल अूब गया हूं। साथ ही, आपने भी सरकारी नीति व्यक्त करके मुझे यह आदेश दिया है कि तंगदिलीके अिन दिनोंमें मैं सरकार-विरोधी आलोचना न करूं। अिससे मैं अिस निर्णय पर पहुंचा हूं कि मुझे अिस अदालतसे न्याय मिलनेकी आशा नहीं रखनी चाहिये। अिसलिअे मैं आपसे केवल वादी पक्षका सबूत सुनकर तथा १५ तारीखको दिये हुअे मेरे बयानसे आपकी मरजीमें आवे वैसा फैसला देनेकी विनती करता हूं। आप जो भी फैसला देंगे वह मुझे मंजूर होगा और अुस सजाको स्वेच्छापूर्वक भोगनेकी मेरी तैयारी है।

"महोदय, अिन दिनोंमें किसीको न्याय मिलनेकी आशा क्यों रखनी चाहिये? जब समस्त राष्ट्र महा बलवान और शस्त्रसज्जित ब्रिटिश साम्राज्यके विरुद्ध अहिंसक युद्ध करने निकल पड़ा हो, तब राष्ट्रीय मुक्तिके आन्दोलनसे सहानुभति रखनेवाला मेरे जैसा आदमी अन्यायके फंदेसे छूट नहीं सकता। और अैसा हो तो अुसके लिअे शिकायत नहीं करनी चाहिये। जब अेक मामूली थानेदारके दर्जेके पुलिस कर्मचारीके दुर्व्यवहारकी जांच करनेके लिअे गैर-सरकारी जांच-समितिको मनाही कर दी जाती हो और अैसी जांचकी घोषणा करनेकी कोअी हिम्मत करे तो अुसे कैदमें डाल दिया जाता हो, जब जिलेके न्यायाधिकारीकी अुपस्थितिमें और अुसकी आंखोंके सामने खुले तौर पर राष्ट्रीय झंडे जला दिये जाते हों, जब सत्याग्रहियोंको आसरा देनेवाले

लोगोंको राज्य और देशके भयंकरसे भयंकर दुश्मन मानकर जेलमें धकेल दिया जाता हो और अिसी भूमिकी संतानोंको अवांछनीय विदेशी मानकर निर्वासित अथवा जेलमें बन्द कर दिया जाता हो, तब मेरे जैसा आदमी अपने लिअे न्याय पानेकी आशा रखे तो वह मूर्खता ही होगी। भले ही मै यह काम अेक आन्दोलनकारीके रूपमें नहीं, परंतु सामाजिक कल्याणकी दृष्टिसे करता हूं, तो भी मेरा अिस सरकारकी अदालतोंसे न्यायकी आशा रखना व्यर्थ है।

"वैसे, मैं तो न्यायकी आशा अुस अधिक अूंचे न्यायाधीशसे ही रखता हूं जो मेरा और आपका दोनोंका न्याय सच्चे स्वरूपमें करेगा।

"अीश्वर मुझ पर मुकदमा चलानेवाले झूठे वादी पक्षको सत्य सिखाये और वह अपने दुष्कृत्योंके लिअे पश्चात्ताप करे, यही प्रार्थना है।"

अिस प्रकार बापाने अदालतके सामने सच्ची हकीकत पेश करके पुलिस कर्मचारियोंके झूठ और सरकारी नीतिरीतिका भण्डाफोड़ करके अुसकी कड़ी आलोचना की।

यह बयान हो जानेके बाद न्यायाधीश चाहते तो अुसी दिन फैसला दे सकते थे। परंतु अुन्होंने तीन दिन बाद अुसका फैसला दिया।

फैसलेमें न्यायाधीशने पुलिसकी बात मान्य रखी और बापाकी बात अमान्य करके कहा कि, "हकीकत अगर जैसा श्री ठक्करने कहा अुसके अनुसार हो तो पुलिसके लिअे अेक निर्दोष मनुष्यको और वह भी श्री ठक्कर जैसी हैसियत और प्रतिष्ठा रखनेवाले व्यक्तिको गिरफ्तार करनेका कोअी कारण नहीं हो सकता और अिनके जैसे प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध व्यक्तिको झूठे मुकदमेमें फंसानेकी पुलिस थानेदारने हिम्मत भी न की होती। . . . संक्षेपमें प्रतिवादी पक्षकी अपेक्षा वादी पक्षकी बात अधिक सच होना संभव है। अिसलिअे अभियुक्तके विरुद्ध अुत्तेजना फैलानेका जो आरोप है, अुसे मै पूरी तरह साबित हुआ मानता हूं और अुसे १९३० के आर्डिनेंस नं० ५ के अनुसार कसूरवार ठहराकर छः महीनेकी सजा देता हूं।"

अिस प्रकार बापाको छः मासकी सजा हुअी और अुन्हें साबरमती जेलमें भेज दिया गया। वहांसे फिर मित्रोंकी सलाह और दबावके वश होकर अुन्होंने अूपरकी अदालतमें अपील की। नड़ियादकी सेशन्स कोर्टमें बापाकी तरफसे १९ अक्तूबरको अपील दायर कर दी गअी। सौभाग्यसे अुसी दिन अपीलकी सुनवाअी हुअी, जिसमें दोनों पक्षोंकी दलीलें सुननेके बाद फैसला देते हुअे नड़ि-यादके सेशन्स जज पटवर्धनने बताया कि, "अिस मामलेमें यह स्पष्ट नहीं होता कि अभियुक्तने किसको परेशान किया। अिसलिअे मैं नीचेकी अदालतके

दिये हुअे फैसले और सजाको रद्द करके यह हुक्म देता हूं कि सारा मुकदमा फिरसे चलाया जाय।"

अिस प्रकार लगभग सवा महीने साबरमती जेलमें सजा भोगनेके बाद बापाको छोड़ दिया गया।

यह सवा महीना बापाने साबरमती जेलमें किस प्रकार बिताया, अिसकी झांकी अुनके ३ अक्तूबरको लिखे हुअे अेक पत्रसे मिलती है। अुन्हें 'ब' वर्गमें रखा गया था, फिर भी वे अपने हजारों कांग्रेसी भाअियोंकी, जिन्हें 'क' वर्गमें रखा गया था, खुराक दाल-रोटी तथा भाजी-रोटी स्वेच्छापूर्वक खाते थे और अुसीमें आनंद मानते थे। अुस पत्रमें अुन्होंने लिखा था:

"मुझे यहां आये दस दिन हुअे। पहले ही दिनसे में यहांके वातावरणके अनुकूल बन गया हूं और अुसीके अनुसार मैंने अपना जीवनक्रम बना लिया है। जैसा तुम जानते हो, मुझे 'ब' वर्गमें रखा गया है। अिससे 'अ' वर्ग में रखने पर मुझे जितने मित्र मिलते अुसकी अपेक्षा बहुत अधिक मित्र और साथी मिल गये हैं। साथ ही तुम यह भी जानते हो कि मैं रेलमें शायद ही दूसरे दर्जेमें सफर करता हूं। नियमके तौर पर ही मैं तीसरे दर्जेमें यात्रा करता हूं और जब लोगोंकी भीड़में होता हूं तभी मुझे सुख होता है। अिसलिअे यहां अधिक विस्तृत संख्याके मित्रोंके संसर्गमें मुझे आनन्द आता है। 'अ' वर्गमें केवल १५-२० भाअी ही हैं, जब कि 'ब' वर्गमें साठ-सत्तर लोग हैं। मानो अितने सारे सदस्योंका अेक बड़ा परिवार बन गया है। और जैसे बाहर जहां जहां जाता हूं वहां सबका बापा बन जाता हूं वैसे यहां भी अिन सबका बापा बन गया हूं।

"खुराकके मामलेमें मैं पूरी तरह सुखी हूं। मेरे करोड़ों देशबंधु विविध बानगियोंसे रहित जो सादा भोजन करते हैं वह मुझे यहां जेलमें करते आनंद होता है। तुम्हें शायद पता होगा कि हममें से अधिकांश भाअी स्वेच्छापूर्वक हल्कीसे हल्की किस्मका ('क' वर्गका) भोजन लेते हैं। परंतु मुझे तो यह भी अब तक काफी अनुकूल आया है। और यदि मैंने बहुत वजन नहीं खोया अथवा बीमार न पड़ा, तो मैं अुसी पर डटा रहना चाहता हूं।

"मैं रातको नौ बजे सो जाता हूं और पांच बजे अुठता हूं। दोपहरको भी थोड़ा लेट लेता हूं। अिस प्रकारकी नियमितताके कारण मेरा स्वास्थ्य बिलकुल अच्छा रहता है। अीश्वरने मुझे बहुत अच्छा शरीर और मजबूत

काठी दी है और अुसे मैं नियमित आदतों और अच्छे आहार-विहारसे कायम रख सका हूं।"

बापाको जेलमें सूतकी गेंद बनानेका काम दिया गया था, यह अुनके भाअी डॉक्टर ठक्कर साहबके नाम लिखे अेक पत्रसे जान पड़ता है।

नड़ियादके सेशन्स जजके सजा रद्द कर देनेके बाद ठक्करबापा छूट गये। और नये सिरेसे मुकदमा चलानेकी पेशीकी तारीख पहली दिसम्बर पड़ी। परंतु अुस दिन या बादमें मुकदमा चला ही नहीं, क्योंकि जिस आर्डिनेन्सके अनुसार बापा पर अभियोग लगाया गया था, अुसकी मीयाद २९ नवम्बरको पूरी हो जानेसे वह रद्द हो गया। अिसलिअे अुस आर्डिनेंसके मातहत सब मामले खारिज हो गये। बापाका मुकदमा भी अिसी तरह खारिज हो गया और अुन्हें किसी भी प्रकारके बंधनके बिना पूरी तरह मुक्ति मिल गअी।

जेलके बाहर आनेके बाद भील-सेवा-मंडलका कार्य बाट देख रहा था। १९३० की लड़ाअीके दौरानमें केवल बापाके मुख्य साथियोंने ही नहीं, परंतु मंडलके २० विद्यार्थी और अन्य शिक्षकोंनें भी लड़ाअीमें सक्रिय भाग लिया था और कारावास भी भोगा था। अिस प्रकार देशव्यापी राष्ट्रीय युद्धमें अुन्होंने अपना हिस्सा अदा किया था। बापाके तैयार किये हुअे कार्यक्रमके अनुसार मंडलके दो आजीवन सदस्य श्री अंबालाल व्यास और रूपाजी परमारकी कानून भंग करके जेल जानेकी बारी अिसके बाद आनेवाली थी। अितनेमें गांधी-अर्विन समझौता हो गया और वे अिस सौभाग्यसे अुस समय तो वंचित रहे।

परंतु आगे चलकर अुन्हें भी यह सौभाग्य मिला। १९३१ में जेलसे छूटकर मंडलके कार्यकर्ता थोड़ी थकान मिटाकर मंडलका काम आगे बढ़ायें, अितनेमें तो गांधी-अर्विन समझौता टूट गया और देशभरमें नेताओंसे लगाकर साधारण कार्यकर्ताओं तककी बड़े पमाने पर गिरफ्तारियां हुअीं। भील-सेवा-मंडल सामाजिक कार्य करनेवाली संस्था होने पर भी पिछले वर्ष अुसके मुख्य कार्यकर्ताओं और नेताओंने लड़ाअीमें भाग लिया था, अिसलिअे अिस बार मंडल सरकारके दमनचक्रसे बच नहीं सका। अेक बापाके सिवाय अुसके अधिकांश आजीवन सदस्योंके नाम सरकारकी काली सूचीमें आ गये थे। अिसलिअे गुजरातमें जो सामूहिक गिरफ्तारियां हुअीं, अुनमें मंडलके मुख्य आजीवन सदस्य पहले ही झपट्टेमें आ गये।

बापा अिस बार बिलकुल अकेले रह गये। मंडलके मुख्य नेता जेलमें थे। गुजरात प्रान्तीय समितिसे मंडलको जो आर्थिक सहायता अब तक मिल

रही थी, वह लड़ाअीके कारण बन्द हो गअी थी। दूसरे दान भी अुगाहनेवालेके अभावमें कम मिले थे और खर्च तो लगभग अुतना ही रहा। अिसके सिवाय जेल गये हुअे कार्यकर्ताओंकी भी संभाल रखनी थी। बापाने अिस बार सारी रचना जड़से बदल डाली। संस्थाका खर्च बिलकुल कम कर दिया। मंडलका बोझा अुन्होंने गुजरातकी अलग अलग शिक्षा-संस्थाओं पर डाल दिया। जो भील विद्यार्थी आठ-दस वर्ष संस्थामें तालीम पाकर अंग्रेजी पढ़ने लगे थे, अुन सबको चरोतर शिक्षा मंडलमें भेज दिया गया। कुछको देवगढ़-बारियाकी अंग्रेजी पाठशालामें भेज दिया गया। बढ़अी और छपाअीका काम सीखनेवाले विद्यार्थियोंको भी बाहर भेज दिया। मीराखेड़ी आश्रममें बुनाअी अुद्योग मंदिर स्थापित किया गया। भील कन्याओंको सूरतके वनिता विश्राममें भेजकर अुनकी आगेकी पढ़ाअीके लिअे व्यवस्था की। साथ ही १९३०–३२ की जागृतिसे लाभ अुठाकर पाठशालाओंमें भील कन्याओंको अधिकाधिक संख्यामें भरती करनेके लिअे प्रोत्साहन दिया। अुन्हें खास तौर पर छात्रवृत्तियां देनेका अिंतजाम किया।

भील विद्यार्थियोंके सिवाय कार्यकर्ताओंके प्रति भी जिम्मेदारी अदा करनी थी। बापाने जेल गये हुअे कार्यकर्ताओंके कुटुम्बोंको थोड़ी बहुत मासिक रकम मिलते रहनेका प्रबंध किया। और कुछको तो अपने साथ रखकर अेक ही घर और अेक ही भोजनालय बना दिया। अिस कठिन स्थितिमें किसीको तंगी या अभावका अनुभव नहीं होने दिया। भील-सेवा-मंडलके अेक प्रमुख कार्यकर्ता श्री डाह्याभाअी नायक अिस संबंधमें लिखते हैं: "बापाके साथ काम तो बहुत वर्षोंसे किया था, परंतु अुनके साथ अेक कुटुम्बीजनके रूपमें रहने और घरके बड़ेके तौर पर पिताके रूपमें वे कितने प्रेमल हैं, छोटेसे बड़े तक सबको वे कितनी अुष्णता प्रदान करते हैं, अपनी सुविधा-असुविधाका खयाल रखे बिना छोटेसे छोटे कुटुम्बीजनकी सुविधाकी जल्दी व्यवस्था कर देनेकी अुनकी कितनी कोशिश रहती है, अिन सब बातोंका अवर्णनीय अनुभव जब मैं अुनके साथ अपनी पत्नी और बच्चों सहित रहा तभी हुआ। बापाके कार्यकी सफलताकी जो अनेक कुंजियां थीं अुनमें से यह मुख्य कुंजी थी, अिसकी मुझे प्रतीति हो गअी।"

२३

तपकी सिद्धि

१९२२–२३ से १९३२–३३ तकके दस वर्ष पूरे करके भील-सेवा-मंडलने सेवाकार्यकी पहली मंजिल पूरी की। अिन दस वर्षोंमें ठक्करबापा और अुनके साथियोंने कितनी कड़ी तपश्चर्या की, कैसी साधना की और अुस तपस्याके अंतमें अुन्हें क्या मिला? अुन्होंने क्या सिद्धि प्राप्त की?

केवल स्थूल दृष्टिसे ही देखें तो अिन दस वर्षोंमें जिस भील प्रदेशमें अज्ञान, दरिद्रता, बेकारी, गरीबी और वहम फैले हुअे थे, अुसके भीतरी हिस्सोंमें केन्द्र खोलकर पाठशालाअें और आश्रम स्थापित किये और हर साल औसतन् ५०० बालकोंको शिक्षा दी। अिसी तरह प्रति वर्ष करीब २०० बालकोंको आश्रमोंमें रखकर अुन्हें संस्कारी जीवनकी तालीम दी। अुन्हें वाचन, लेखन, गणित और हिसाब-किताबके अलावा खेती, खादी-विद्या, सिलाअी, बढ़अीगिरी और स्काअुटिंग अित्यादि विषयोंका ज्ञान देकर कार्य-क्षम बनाया और अिस प्रकार भीलोंके लगभग दो से तीन हजार कुटुम्बोंमें पढ़े-लिखे विद्यार्थी रखकर अुनके आचार-विचार और जीवनमें परिवर्तन किया। दाहोद-झालोद अिलाकेमें दो तीन जगह दवाखाने खोलकर हजारों बीमारोंको आयुर्वेदकी सादी दवाओं द्वारा सहायता दी। सहकारी समितियों और खादी द्वारा हरिजनों और भीलोंको साहूकारोंके पंजेसे छुड़ाया। सरकारी कर्मचारियोंके जुल्म और बेगारसे भील भाअियोंको मुक्ति दिलवाअी। शराबके भयंकर व्यसनसे अनेकोंको छुड़वाया। केवल लंगोटी पहनकर जंगलमें निरुद्देश्य जीवन बितानेवाले भीलोंको सिखा-पढ़ाकर अिस तरह तैयार किया कि भारतके स्वातंत्र्य संग्राममें अिन लोगोंने भी अपनी कुर्बानी देकर हाथ बटाया। अज्ञान, वहमी और गरीब भीलोंमें से स्वातंत्र्य संग्रामके सैनिक खड़े किये। अितना ही नहीं, बाहरसे पैसे आदिकी भीख मांगकर लगभग पांच लाख रुपयेकी रकम बापाने अकाल-निवारण, ऋण-निवारण और शिक्षाके रूपमें भील-सेवा-मंडल द्वारा खर्च की। तालुकेमें दो जगह राम-मंदिरकी स्थापना करके भीलोंको वहम और जादू-टोनेसे छुड़ाया और सबसे बड़ी सिद्धि तो यह थी कि भील लोगोंके मानसमें आमूल परिवर्तन कर दिया। बापाकी तपश्चर्याने अिन बिखरे हुअे, लहरी और बहादुर किन्तु डरपोक, शराब और ताड़ीमें फंसे हुअे और गले तक व्यसन और कर्जमें डूबे हुअे भीलोंमें से

संयमी, सदाचारी, मितव्ययी और अुपयोगी कार्यकर्ता तैयार किये। अिसकी प्रतीति भीलोंके संबंधमें अुन्हींके दो अलग अलग जातिभाअियोंकी अलग अलग समय पर रची हुअी भीली भाषाकी कविताअें अच्छी तरह करा देती हैं।

बापाके भील-सेवा-मंडलकी बुनियाद डालनेसे पहलेके सुधारोंसे दूर रहे असंस्कृत भीलका चित्र देखिये :

सरियुं लअीने कामठी लअीने वगडामां अमु फरीअे रे,
मनखा मारी डगरां मारी वगडामां अमुं राजा सिये रे.
सोरी करी, लोक लूंटीने दाणा पैहा लायहुं रे,
डगरां ने बोकडां मारी, तेनुं मांह खाहुं रे.
महुडां गाळी हरो पीने कीरियाटी करी नाचहुं रे,
मनमां फावे तेम फरीअे नी खाअी पी मझा करीअे रे.

भावार्थ :—हम लोग हंसिया और धनुष-बाण लेकर वनमें यथेच्छ विहार करेंगे। मनुष्यों और पशुओंका शिकार खेलेंगे, क्योंकि जंगलमें हमारा शासन चलता है, हम जंगलके राजा हैं। हम लोग चोरी करेंगे और लोगोंको लूटेंगे और अुनसे अनाज और पैसे छीनकर लायेंगे। पशुओं और बकरोंको कत्ल करके अुनका मांस खायेंगे। महुअेकी शराव बनाकर खूब पीयेंगे, मत-वाले बनकर नाचेंगे और शोरगुल मचायेंगे। मनमें आये वैसे वनमें विहार करके और खा-पीकर मजा अुड़ायेंगे।

अिस प्रकार अिनकी आकांक्षा और अभिलाषा तीर-कमान लेकर जंगलमें घूमनेकी, मनुष्य और पशु मारकर राजा बनकर फिरनेकी, चोरी करके और लोगोंको लूटकर अनाज और रुपया प्राप्त करनेकी, ढोर मारकर अुनका मांस खानेकी, महुअेकी शराब बनाकर और अुसे पीकर पागल बनकर नाचने और जैसे जीमें आये वैसे घूमफिर कर जीवनका आनंद लूटनेकी थी। अिसके बजाय अुन्हीं भील भाअियोंको बापाके संसर्गसे सुसंस्कृत बना हुआ अेक शिक्षित भील कार्यकर्ता अुपदेश देकर कहां ले जाना चाहता है, यह अुसीके शब्दोंमें देखिये। कारण, भील-सेवा-मंडल द्वारा भीलोंमें जागृति पैदा करके अुनके जीवनमें सुधार करनेका बापाका जो लक्ष्य था, वह अिस कवितामें भलीभांति बताया गया है।

हांमळो वीरा हांमळो बूनो (२) हासी हासी वात रे
रामजीनी भगति मने हासी वाली लागे.
गांधी बाबो रअीने बोल्या हांमळो वीरा वात रे—रामजीनी
हरो सोडो मांह सोडो, सोडो सोरी साडी रे—रामजीनी

रीटियां कांतो, तकली कांतो, कांतो घरे घरना रे — रामजीनी
ठक्कर बाबो रओने बोल्या हांमळो वीरा वात रे — रामजीनी
सोरा सोरी भणावो भूंडा, भणो तमु डाहां रे — रामजीनी
बाबा रामने मंदरे आवो मेलो मेलां देवतां रे — रामजीनी
सरीकांत बाबो रओने बोल्या हांमळो वीरा वात रे — रामजीनी
जाजु देवुं करो मती, राखो हासी टेक रे — रामजीनी
सुखदेव काको रओने बोल्या हांमळो वीरा वात रे — रामजीनी
मीनत मजूरी करो वीरा, करो हासी खेड रे — रामजीनी
वणीकर दादो रओने बोल्या हांमळो वीरा वात रे — रामजीनी
वीर बणो, होड बणो, राखो हांड कामठुं रे — रामजीनी
मोटाजी भगत रओने बोल्या हांमळो वीरा वात रे — रामजीनी
अुंगली धुंगळी भगति करो, बोलो हांसु हासुं रे — रामजीनी
डाया गरुजी रओने बोल्या हांमळो वीरा वात रे — रामजीनी
घोरमां बाहेर संप राखो राखो हासी रीत रे — रामजीनी
मगन भायो रओने बोल्या हांमळो वीरा वात रे — रामजीनी
गुंदरा जातर करवा मेलो राखो बाबा राम रे — रामजीनी
रूपो भायो रओने बोल्या हांमळो वीरा वात रे — रामजीनी
बडवा करवा मेलो वीरा हगळां धूती खातां रे — रामजीनी
पोगे पडी वीनवुं वीरा धरती राखो हात रे — रामजीनी
हांमळो वीरा हांमळो बूनो लालचंद भाओनी वात रे — रामजीनी

भावार्थ: — हे भाअियो और बहनो, सुनो। मैं तुम्हें सच सच बात बताता हूं। मुझे रामजीकी भक्ति सचमुच प्यारी लगती है। मालूम है गांधी बाबा तुमसे क्या कह रहे हैं? वे कहते हैं कि भाअियो, शराब छोड़ दो। मांस छोड़ दो, चोरी और लूट-पाट भी छोड़ दो। और चरखा चलाओ, तकली चलाओ, हरअेक घरमें चरखेकी आवाज गूंजा दो। ठक्करबापा कहते हैं कि हे भाओी-बहनो, अपने लड़के लड़कियोंको पढ़ाओ और तुम समझदार बड़े लोग भी पढ़ो। तुम्हारे लिअे बाबा रामका मंदिर बनवाया है। तुम अपने झूठे देवी-देवताओंको छोड़कर सच्चे प्रभु रामके मंदिरमें आओ। श्रीकान्त बाबा अुपदेश देते हैं कि हे भाअियो, ज्यादा कर्ज मत करो और अपनी सच्ची टेक पर अटल रहो। सुखदेवकाका कहते हैं वह भी सुनो। वे कहते हैं कि हे भाअियो, मेहनत-मजदूरी करो और सच्ची खेती करो।

वणीकर दादाकी बात भी सुनो। अुनका कहना है कि भील भाअियो तुम सच्चे वीर और धीर बनो, अपने पास धनुष-बाण रखो और अुसका सच्चा अुपयोग करो। बड़े भगत अम्बालाल व्यास कहते हैं कि तुम लोग रोज स्नान करो और नहा-धोकर शुद्ध बनकर पूजा-पाठ और भगवानकी भक्ति करो। डाह्या गुरुजीका कहना सुनो। वे कहते हैं कि घरमें और बाहर मिलकर रहो। अिस सच्ची रीतकी रक्षा करो। मगनभाअीका कहना है कि झूठे देव-देवियोंके सामने मानता रखकर पशुओंकी बलि चढ़ानेकी बात अब छोड़ दो और बाबा रामको भजो। रूपाजी भाअी अुपदेश करते हैं कि ओझा और जतीको बुलाना छोड़ दो। वे धूर्त लोग हैं, तुम्हें ठग लेंगे। लालचंद भाअी हाथ जोड़कर और पांव पड़कर तुमसे कहते हैं कि हे भाअी-बहनो, होशियार रहो और अपनी जमीनको साहूकारोंसे बचाकर अपने हाथमें रखो।

अिस प्रकार भीलोंके दोषों और अपूर्णताओंके वर्णनके अलावा बापा और सेवकोंकी लाक्षणिकताअें भी अुपरोक्त गीतमें दी गअी हैं और बापाकी शुरू की हुअी यह संस्था भीलोंको किस स्थितिसे किस आदर्श स्थितिकी तरफ ले जाना चाहती थी और अुसमें भीलोंसे क्या क्या काम कराना चाहती थी, यह सब सीधेसादे शब्दोंमें बहुत ही लाक्षणिक ढंगसे दिया गया है।

भील भूखों मरते हैं, लूटे जाते हैं, चूसे जाते हैं, दूसरोंसे दबाये जाते हैं, अुन्हें सरकारी नौकरोंकी बेगार करनी पड़ती है। अिस सबका कारण यह है कि अुन्होंने अेक अीश्वरको छोड़कर झूठे देवी-देवताओंकी, वहमकी, झूठकी और पापकी पूजा की। यदि अुन्हें दुःख छोड़कर सुख प्राप्त करना हो तो पाप छोड़ना चाहिये, डर छोड़ना चाहिये, वहम और अंधश्रद्धा छोड़नी चाहिये, परिश्रम करना चाहिये और अीश्वरमें श्रद्धा रखनी चाहिये। भील-सेवा-मंडलका यह अुपदेश भीली रामायणके अेक गीतमें सुन्दर ढंगसे दिया गया है। पहले रामराज्यका चित्र देकर अुसे प्राप्त करनेके लिअे क्या करना चाहिये, अिसके अुपाय बताये गये हैं। पंचमहालकी धरतीमें दस दस वर्ष तक धूनी रमाकर बैठे हुअे बाबा और आजीवन सेवाव्रतधारी साथियोंका लक्ष्य किस दिशामें था, यह अिस काव्यमें अच्छी तरह व्यक्त हुआ है।

वह भजन अिस प्रकार है:

बाबा रामना राजमां तो जबरुं सुख हतुं रे,
बाबा राम रैयतने सोरां जेम पाळता रे जी.

बाबा रामना राजमां लोकुंने न्याय मळे रे,
लोकुंने जुलम कोओी दन थायो नथी रे जी.
बाबा रामनां राजमां तो लोकुं भगति करे रे,
अेतरे बाबा राम दया राखता रे जी.
बाबा रामना राजमां कदी दुकाळ नी पड़े रे,
धान जबरुं पाके अेवुं रामराज रे जी.
बाबा रामना राजमां तो लोकुं अेवा हुता रे,
पाप कोओी दन करता नी अेवुं रामराज रे जी.

भावार्थ :— बाबा रामके राज्यमें तो बड़ा सुख था, बड़ा आनन्द था। बाबा राम अपनी प्रजाका अपनी सन्तानकी तरह लालन-पालन करते थे। अुनके राज्यमें लोगोंको न्याय मिलता था। प्रजा पर कभी जुल्म नही होता था। बाबा रामके राज्यमें लोग भक्ति करते थे, अिसलिअे भगवान अुन पर दया करते थे। अुनके राज्यमें कभी अकाल नहीं पड़ता था। अनाज खूब पकता था। अैसा रामराज्य था। बाबा रामके राज्यमें अैसे लोग थे, जो कभी पाप नहीं करते थे।

अकाल, सरकारी कर्मचारियोंके कष्टों, कर्ज और साहूकारोंके अत्याचारोंसे सदा दुःखी रहनेवाले भीलोंके समक्ष अैसा सुन्दर रामराज्यका चित्र खीचकर अुन्हें भी अैसे रामराज्यमें रहना हो, सुखी होना हो तो क्या करना चाहिये, अिसका आगे चलकर भजन अुपदेश देता है :

रामनी दयाथी तमुंने सुखी थावुं होय रे,
भूंडां काम, भूंडां बोल ने पाप सोडी दो रे जी.

भावार्थ :— अगर रामकी कृपासे तुम सुखी होना चाहते हो, तो बुरा काम छोड़ दो, बुरी भाषा बोलना छोड़ दो और पापका त्याग करो।

अिसके बाद पापोंकी सूची दी गअी है :

मनखांने गना वगर मारे ने तीहुंना रे,
दाणां सीथरां लूंटे ते पाप केवाय रे जी.
डगरां बोकडां ने पंखी कूकडां तुं मारे रे,
माछलां मारे ती पाप केवाय रे जी.
सोरी करी पैसा लावे जूठुं बोले भाया रे,
बडवा भोपा करे ती पाप केवाय रे जी.
महुडां गाळीने हरो पीने मांह खाय रे,
अुगळे नी कोओी दन ती पाँप केवाय रे जी.

सोख्खाओी राखे नी कोओी दन डाळां जातर करे रे,
गुंदरुं करे ती पाप केवाय रे जी.

भावार्थ : — मनुष्यको किसी अपराधके बिना मारना, और अुसका अनाज, कपड़ा वगैरा लूटना पाप कहलाता है। तुम जो पशुओं, बकरों, पक्षियों और मुर्गोंको मारते हो और मछलियोंका शिकार करते हो, वह पाप कहलाता है। तुम जो चोरी करके पैसे लाते हो और झूठ बोलते हो और ओझासे जादू-टोना कराते हो, वह पाप है। तुम महुअे गाल कर शराब पीते हो और मांस खाते हो तथा स्नान करके साफ-सुथरे नहीं रहते, यह पाप कहा जाता है। तुम गंदे देवी-देवताओंके सामने मानता मान कर पशुओंकी बलि चढ़ाते हो और अपनी अभिलाषा पूरी करनेकी अुनसे प्रार्थना करते हो, यह भी पाप कहा जाता है।

अिस प्रकार पापोंकी सूची देकर आगे अुनसे छूटनेके लिअे ओीश्वरकी शरण लेने और पापको छोड़नेका अुपदेश देता है :

दुनियाना धणी बाबा रामजी तो मोटा रे,
रामनी दयाथी सुख मळहे आपुंने रे जी.
दख जहें सुख मळहे राम भजवाथी रे,
भजन तमुं करो नी ती पाप केवाय रे जी.
पाप सोडी भाया तमुं भाव थकी भजो रे,
दुनियाना धणी बाबा रामनी जे बोलो रे जी.

भावार्थ : — दुनियाके मालिक रामजी बड़े भगवान हैं। अुनसे बड़ा कोओी नहीं। अुनकी कृपासे हमें निश्चित ही सुख मिलेगा। रामका भजन करनेसे हमारा दुःख मिटेगा और हमें सुख मिलेगा। अगर तुम अुनका भजन न करो तो वह बड़ा भारी पाप होगा। तुम सब पाप छोड़ दो और भक्ति भावसे रामजीका भजन करो। दुनियाके स्वामी रामजीकी जय बोलो।

बापा और अुनके आजीवन व्रतधारी सेवकोंकी साधना और कार्य-परायणताके फलस्वरूप हजारों भीलोंने बाबा रामको अपनाया, सैकड़ोंने शराब छोड़ी, असंख्य लोग ऋणमुक्त हुअे, बहुतसे भाओी-बहनोंने अक्षर-ज्ञान, स्वच्छता, शरीरश्रम, व्यवस्थित परिश्रम और संघ-जीवनकी तालीम पाओी। अिस तरह बापाने भीलोंके सामाजिक जीवनके भिन्न भिन्न पहलुओंमें परिवर्तन किया और अुन्हें सच्चे मनुष्य बनाया। जो लोग चोरी और लूट-खसोट करते थे अुन्होंने बापाके पुण्य प्रभावसे और भील-सेवा-मंडलके कार्यकर्ताओंके तपसे चोरी और लूट न करनेकी प्रतिज्ञा बापाके सामने ली।

और अन्त तक अिस प्रतिज्ञा पर डटे रहनेके भी अुदाहरण हैं। यह कोअी अैसी वैसी सफलता नहीं कही जायगी।

भील-सेवाके कामके साथ साथ पिछले कुछ वर्षोंसे बापाने हरिजन-सेवाका काम भी हाथमें लिया था। गुजरातमें अिस काममें बापा गांधीजीके पुरोगामी माने जा सकते हैं। गांधीजीने 'हरिजन' शब्द तो १९३२–३३ में अपनाया। अिससे पहले गुजरातमें हरिजनोंके लिअे अन्त्यज शब्द काममें लिया जाता था। गुजरातमें गांधीजीकी प्रेरणासे पहले पहल हरिजन कार्य गोधरा आश्रमके श्री विट्ठल ब० फड़के — मामासाहब फड़के — ने शुरू किया। अुन्होंने गोधरामें हरिजनोंकी सेवा करनेके अुद्देश्यसे अेक अंत्यज आश्रम स्थापित किया। बापाने अिस काममें जो सहायता की और प्रोत्साहन दिया और अुसमें लगे हुअे भाअियोंका जो साथ दिया, अुससे अिस प्रवृत्तिका गुजरात भरमें विकास हुआ। बापाने भील लोगोंकी सेवा करनेके लिअे पंचमहालमें स्थायी छावनी डालना तय करके भील-सेवा-मंडलकी स्थापना की। अुसी कल्पनासे हरिजनोंकी सेवा करनेके लिअे गुजरात अंत्यज सेवा-मंडलकी स्थापनाका विचार अुत्पन्न हुआ।

शुरूमें 'अंत्यज कार्यालय' नामकी संस्था प्रारंभ हुअी। श्री अिन्दुलाल याज्ञिक और ठक्करबापाने अुसके मंत्रीके रूपमें काम किया। अछूतोंके लिअे गुजरातमें दो-चार अलग अलग पाठशालाअें शुरू हुअीं और नड़ियादमें आश्रम स्थापित किया गया। अुसके बाद १९२३ में गुजरात अंत्यज-सेवा-मंडलकी बाकायदा रचना की गअी और ठक्करबापा अुसके पहले अध्यक्ष हुअे। अुस समय आजीवन सदस्योंके रूपमें कुछ भाअियोंने प्रतिज्ञा ली। अिस मंडलने १९२३ से १९३३ तक दस वर्ष काम किया। १९२४ में श्री परीक्षित-लाल मजमुदार अिस मंडलके मंत्री बने। अिसके बाद गुजरातमें अंत्यजोंकी सेवाके लिअे जितने भी दौरे हुअे, अुनमें श्री परीक्षितलाल मजमुदार सदा बापाके साथ रहते थे। अिस मंडल द्वारा बापाने गुजरातमें अंत्यजोंकी पाठ-शालाअें जारी कराअीं। दिन दिन अुनकी संख्या बढ़ती गअी और पिछले वर्षोंमें गुजरातमें अंत्यजोंके अुत्कर्षके लिअे दो आश्रम तथा तीस पाठशालाअें जारी हो गअीं। अिस कार्यमें श्री चूनीभाअी और अुनकी पत्नी, श्री जुगतराम दवे, श्री नरहरिभाअी परीख, डॉ० सुमंत महेता वगैरा साथ देते थे। अिनमें से कुछ लोग अनेक मुश्किलोंके बीच रह कर अंत्यजोंकी सेवाका यह कार्य कर रहे थे। अुस समयके संस्मरण याद करते हुअे बापाने अिन सब सेवकोंकी निःस्वार्थ सेवा और कठिनाअियोंके साथ लड़-झगड़ कर मार्ग निकालनेकी दृढ़ मनोवृत्ति और सेवा-भावनाको अंजलि अर्पण की है।

गुजरातमें जब बापा भीलों और हरिजनोंकी सेवाका कार्य कर रहे थे, अुस अर्सेमें १९२७ के जुलाअीमें अतिवृष्टिके कारण भारी बाढ़ आअी। अिस बाढ़-संकटके कारण भाल और गुजरातके धोलका, धंधुका, आणंद तथा बड़ोदा और कड़ी राज्योंके कुछ प्रदेशोंमें पानी फैल गया। अुस समय सरदार श्री वल्लभभाअी पटेलने गुजरातमें कष्ट-निवारणका काम व्यवस्थित ढंग पर शुरू किया। अुनके साथ रह कर अुनके अधीन जिन्होंने काम किया, अुनमें श्री ठक्करबापा भी थे। ठक्करबापा अुम्रमें सरदारसे बड़े थे। अिसलिअे सरदार अिनका बहुत आदर करते थे। अिस कारण जब ठक्करबापाने कष्ट-निवारण कार्यमें सक्रिय सहायता देनेकी अिच्छा प्रदर्शित की, तब सरदारने अुनसे पूछा कि आपको कहां काम करना पसंद होगा? और क्या काम करेंगे? तब ठक्करबापाने अुन्हें जवाब दिया कि आप जहां भेजेंगे वहां और जो काम बतायेंगे वही करूंगा। ठक्करबापाकी अिस नम्रतासे सरदार खूब प्रभावित हुअे थे और अुनकी अिच्छा जानकर जहां कामकी विशेष आवश्यकता थी अैसे प्रदेशमें — आणंदमें — छावनी डाल कर अुन्हें काम करने बैठाया।

बापाने अुन दिनों बाढ़-संकटमें फंसे हुअे लोगोंको राहत देनेके लिअे खूब काम किया और बड़ी मेहनत अुठाअी। अिस कार्यके सम्बन्धमें बापा लिखते हैं, "गुजरातमें बाढ़ आनेके बाद तुरंत ही समितिके ध्यानमें यह बात लाअी गअी कि गांवोंके बहुतसे कुअें, खास तौर पर अंत्यजोंके लिअे खुद-वाये गये कुअें, भर गये हैं अथवा अेक खास हद तक अुन्हें नुकसान पहुंचा है। देहातमें सवर्ण अपने कुओंसे अंत्यजोंको पानी नहीं भरने देते। अिसलिअे कुछ गांवोंमें अुन्होंने खुद अपने कुअें खोद लिये हैं और अन्य कुछ स्थानों पर पानीके लिअे अुन्हें सवर्णोंसे भिक्षा मांगनी पड़ती है, या जहां गांव भरके कपड़े धोये जाते हैं और दूसरी गंदगियां भी होती हैं, अुस तालाबका गंदा पानी काममें लेना पड़ता है। अिसलिअे समितिने सबसे पहले अंत्यजोंके कुअें खुदवानेके लिअे अपने कोषसे ५०,००० रुपयेकी बड़ी रकम खर्च करना तय किया है और अिसके लिअे ५ दिसंबर, १९२७ को विशेष प्रस्ताव पास किया है।"

यह काम कष्ट-निवारण समितिने ठक्करबापाको सौंपा था। अुन्होंने जिला और तालुका बोर्डके साथ पत्रव्यवहार करके जिन जिन गांवोंमें अैसे कुओंकी जरूरत थी अुनकी सूची तैयार की। बादमें कार्यकर्ताओंके मंडल द्वारा यह काम अुन्होंने आगे बढ़ाया। अक्तूबर १९२८ तक अैसे १२० कुअें खुदवानेमें आर्थिक सहायता देनेका निश्चय किया गया और अुस पर ३६,१९१ रु०

खर्च करनेकी मंजूरी दी गअी। अुसमें से अक्तूबरके अधबीच तक २३,६८९ रु० खर्च कर दिये गये। अिसके बाद बरसात शुरू हो जानेसे कुअें खुदवानेका काम मंद पड़ गया और चौमासेके बाद वह फिर हाथमें लिया गया। अिसके सिवाय समितिने सार्वजनिक धर्मशालाओं और पुस्तकालयोंके मकानों आदिको, जो जल-संकटके दिनोंमें टूट गये थे अथवा जिन्हें थोड़े बहुत अंशमें नुकसान पहुंचा था, सुधरवानेके लिअे ७५,००० रु० की रकम मंजूर की। अिन धर्मशालाओंकी मरम्मतके लिअे अथवा अुन्हें नये सिरेसे बनवानेके लिअे १९२८ के अक्तूबर तक लगभग रु० ४९,२९४–८–० की सहायता मंजूर की गअी, जिसमें से अक्तूबर तक रु० २३,३४०–९–६ की रकम खर्च हो गअी। गांवके लोग धर्मशालाकी मरम्मत अथवा पुनर्निर्माणके काममें जो खर्च होता, अुसके आधे या पाव भागका खर्च दे देते थे।

अिन दिनों ठक्करबापाने जल-संकटमें फंसे हुअे लोगोंके बीच रह कर जो राहत-काम किया, अुसका असर बम्बअीकी अिस राहत-केन्द्रकी संस्था पर बहुत ही पड़ा। अुसने अपने वर्णनमें ठक्करबापाकी निःस्वार्थ सेवाओंकी बहुत प्रशंसा की है। ठक्करबापाके अिस कार्यसे साधारण प्रजाजनोंको तो मदद मिली ही, परन्तु गुजरातके हजारों अंत्यजोंको खास तौर पर बड़ी राहत मिली।

अंत्यजोंकी अुपरोक्त सेवाओंके अतिरिक्त बापाने भंगी भाअियोंके लिअे नअी सहकारी समितियां स्थापित करनेमें और पुरानी समितियोंको व्यवस्थित बनानेमें भी काफी रस लिया था। नवसारी और नड़ियादकी सहकारी समितियों पर तो वे स्वयं ही सीधी देखरेख रखते थे। नड़ियादकी भंगी सहकारी समितिके सदस्योंको साहूकारोंके कर्जसे छुड़वानेके लिअे अेक योजना अुन्होंने तैयार की और अुस पर अमल करके कर्ज पेटे निकलनेवाले कुल ७०,००० रुपयेमें से भंगियोंकी तरफसे ३०,००० रु० चुका कर तमाम भंगी सदस्योंका कर्ज मिटा दिया और अुन्हें ऋणमुक्त कर दिया। अिसी तरह झालोद तथा महुधाकी भंगी सहकारी समितिके सदस्योंको भी साहूकारोंके कर्जसे मुक्त किया।

भंगी भाअियोंके लिअे कुअें खुदवा देनेको बापाने बम्बअीके केन्द्रीय कोषसे ५०,००० रु० की जो रकम ली, अुसके सिवाय बिड़ला कोषसे २२,००० और महात्मा गांधी कोषसे २०,००० अिस प्रकार कुल ९२,००० रु० की रकम प्राप्त करके भंगियोंके लिअे कुअें खुदवानेका काम हाथमें लिया और पांचेक वर्षमें लगभग २०० नये कुअें खुदवाये तथा दूसरे बहुतसे पुराने कुओंकी मरम्मत कराअी।

गुजरात अंत्यज मंडलके अध्यक्षके रूपमें बापा अंत्यजोंकी जो विविध प्रकारकी सेवा कर रहे थे, अुसके पीछे कुदरतका संकेत मालूम होता था। निकट भविष्यमें ही अुनके कंधों पर भारतव्यापी हरिजन-सेवाकी जिम्मेदारीका जो बोझ पड़नेवाला था, अुसीके लिअे मानों प्रकृति अुन्हें तैयार कर रही थी। बापाको अिसका स्वप्नमें भी खयाल नहीं था कि थोड़े ही समयमें गांधीजी हरिजनोंके कल्याणके लिअे, हिन्दू जातिकी अेकताके लिअे, जो आमरण अुपवास आरंभ करेंगे, अुससे अस्पृश्यता-निवारणका राष्ट्रव्यापी आन्दोलन होगा और अुसके परिणामस्वरूप हरिजन-सेवाकी जो अखिल भारतीय संस्था खड़ी होगी अुसका मंत्रीपद बापाको ग्रहण करना पड़ेगा। परन्तु बापाने सोचा भी नहीं होगा अुतनी तेजीसे यह सब काम अुनके पास आ गया। अिसके ब्यौरेमें जानेसे पहले भील-सेवा-मंडलने बापाकी प्रत्यक्ष अनुपस्थिति किन्तु अुनके पथ-प्रदर्शनमें पिछले २० वर्षोंमें कितनी प्रगति की, अिसका विहंगावलोकन कर लें।

२४

भील-सेवा-मंडलकी दूसरी मंजिल

हरिजन-सेवक-संघके मंत्रीकी हैसियतसे जिम्मेदारी अुठानेको बापाको दिल्लीमें रहना पड़ा और देशके अलग अलग भागोंमें लम्बे लम्बे सफर करने पड़े। फिर भी भील-सेवा-मंडलकी जिम्मेदारी अुन्होंने छोड़ी नहीं थी। हरिजन-सेवाका काम करते-करते भी अुन्होंने मंडलके अध्यक्षके नाते बरसों तक काम करना जारी रखा। पंचमहालमें दस वर्षकी साधना और तपस्याके परिणामस्वरूप मंडलके कार्यकर्ताओंका जो समूह तैयार हो गया था, अुसके हाथोंमें रोजमर्राके कामकी बागडोर सौंप कर वे दूर रहते हुअे भी मंडलकी संभाल रखते और अुन्हें समय-समय पर प्रेरणा, मार्गदर्शन और सलाह-सहायता वगैरा देते थे।

कम बरसातके कारण जनवरी १९३३ से पंचमहाल जिलेमें साल बिगड़ गया। फसल नहीं हुअी। नतीजा यह हुआ कि बहुतसे भील-परिवार आधी भुखमरी भोगने लगे। १९ जनवरीको मंडलने अकालके संकटसे घिरे हुअे भीलोंकी स्थितिके बारेमें अेक वक्तव्य प्रकाशित करके चंदेके लिअे अपील की। फलस्वरूप मअी मासके अंत तक ७४६ रु० मिले। और १९३० के सस्ता अनाज दुकान कोषकी बचतके ८३० रु० रखे थे। अिन दो रकमोंकी

मददसे मंडलके आश्रमोंमें जमीन बराबर करने, कच्चे कुअें खुदवाने और अिसी तरहका दूसरा काम फरवरी माससे शुरू किया गया। भीलोंको मजदूरीके बदलेमें अनाज दिया जाता था। पुरुषको २।। सेर, स्त्रीको २ सेर और बच्चेको १ सेर मक्की अथवा जवार मजदूरीके बदलेमें मिलती थी।

फरवरी मासमें मीराखेड़ी, झालोद और भीमपुरी आश्रमोंमें काम खोले गये। वहां मजदूरोंकी औसत हाजिरी मार्चमें ७८ और अप्रैलमें ८८ रहने लगी। परिस्थिति दिनोंदिन बिगड़ती गयी। अप्रैलकी पहली तारीखको ठक्करबापाने सर रुस्तम वकील और दीवानबहादुर काबलीको जो पत्र लिखा, वह अुस समयकी स्थितिका वास्तविक चित्र अुपस्थित करता है। अुस पत्रमें अुन्होंने लिखा था :

"... बेचारे भील लोग अपने प्राण टिकाये रखनेके लिअे नीचीसे नीची दर पर भी कामकी खोजमें भटक रहे हैं। अुनके और अुनके कुटुम्बके लिअे अकाल कानूनके अनुसार सस्तेसे सस्ते अनाज पर गुजर करनेकी नौबत आ गयी है। और कानूनके अनुसार अुन्हें डेढ़ सेर अथवा अिससे भी कम अनाज मिलता है। अिससे अुनकी हड्डियां और चमड़ी मुश्किलसे साथ रह सकें, अैसी स्थिति आ गअी है। फिर, मान लीजिये कि अनाज सस्तीसे सस्ती दर पर मिलता हो तो भी अिन सैकड़ों और हजारों लोगोंको अिस मंदीके जमानेमें काम कौन दे? वे छोटे छोटे शहरोंके आसपास कामकी तलाशमें झुंडके झुंड आते हैं, परन्तु काम नहीं मिलता। कल्याण-कार्यकर्ताओं द्वारा थोड़े खानगी काम जरूर खोले गये हैं, परन्तु वे सैकड़ों और हजारोंको रोजी नहीं दे सकते। अिनके पास गुजारेके लिअे कुछ भी नहीं है। अिस मामलेमें जिला लोकल बोर्ड भी बड़ी ढिलाअी दिखा रहा है। अूपरसे चाबुक फटकारनेवाला कोअी नहीं है अिसलिअे सुस्त होकर पड़ा है। सरकार भी भील लोगोंकी खराब और दुःखी हालतको समझ नहीं सकी। अुसने पूरा लगान वसूल करनेके हुक्म दे दिये हैं। खानगी कामों पर वेतनके बजाय अढ़ाअी सेर जवार अर्थात् अेक आना रोज मजदूरी दी जाती है। परन्तु वह भी बहुत मर्यादित संख्याको, क्योंकि हजारोंको काम देनेकी अुनकी शक्ति नहीं।

"क्या सरकार अिस बारेमें समय रहते नहीं चेतेगी? या वह अिस बातकी राह देखते बैठी रहेगी कि भील लोग प्राणोंकी बाजी लगा कर पेटका खड्डा पूरनेके लिअे किसी बाजार या दुकानको लूटें? छप्पनके अकालमें सन् १९०० में जब भीलोंने लीमड़ी शहरको लूटा, तभी सरकारको भीलोंकी भुखमरीकी सच्ची स्थितिका भान हुआ। मैं आशा करता हूं कि सरकारको फिरसे अैसा

ही चेतावनीका सिग्नल देनेकी जरूरत नहीं पड़ेगी। आम तौर पर भील जाति कानूनको माननेवाली है, सिवाय अुस हालतके जब कुदरत या समाज अुसे अन्नसे वंचित रखकर मरने-मारने पर अुतारू कर दे। भुखमरीसे तड़प रहे अिन लोगोंको अन्न देना और भूखके कारण मरने-मारने पर अुतारू होकर और पागल बनकर अुनकी लूटनेकी वृत्ति जागृत न हो यह देखना राज्यका धर्म है। हम सब अुन्हें अितनी नीची हद तक न पहुंचायें जिससे अुन पर पागलपन सवार हो जाय और वे काबूसे बाहर होकर अुत्पात मचायें। अिसके बजाय अिस समय वे जो पसीनेकी रोटी खाना चाहते हैं, अुसमें हम अुनकी मदद करें।"

अिस पत्रमें तत्कालीन अकालकी स्थिति, सरकार और जिला लोकल बोर्डका अुपेक्षाका रवैया और बापाका अुसके प्रति रोष प्रतिबिम्बित होता है। और अुनकी बात भी बिलकुल सच थी। भीलोंके झुंडके झुंड मजदूरी ढूंढ़ने दाहोद-झालोद और लीमड़ीमें रोज अुमड़ पड़ते और मजदूरीके अभावमें निराश होकर लौट जाते। अिसके अलावा कितने ही लोग घास और सूखी लकड़ियोंके भारे, कच्चे आम और दूसरे जंगली फल, ढाकके पत्ते वगैरा लाकर शहरमें बेच जाते।

अन्तमें परिस्थिति जब दिनोंदिन अुग्र बनती गअी, तब जिला तथा तालुका लोकल बोर्डोंकी तरफसे कुछ काम शुरू हुअे। शहरके अुदार सज्जन भूखे लोगोंको चने-धानी बांटने लगे। भील-सेवा-मंडलने अकालकी परिस्थितिके सिलसिलेमें दूसरा वक्तव्य निकाल कर धनके लिअे फिर लोगोंसे अपील की। अिसका जवाब अच्छा मिला। बम्बअीसे १,५०० रु० की रकम मिली। अिसके सिवाय मंडलके पास १९२० के अकाल-कोषकी जो रकम बची हुअी थी अुसमें से अकाल-ग्रस्त लोगोंको अन्न-दान देना शुरू हुआ। अिसके लिअे अलग अलग छः केन्द्रोंमें कार्य आरंभ हुआ। ीश्वर-कृपासे ता० १८-६-'३३ को अच्छी वर्षा हो गअी। परन्तु लोगोंके पास खानेको भी पूरा अनाज नहीं था, तब बुवाअीके लिअे अनाज कहांसे लाते? अिस अर्सेमें ता० २५-६-'३३ को बापा दाहोद गये और तालुकेके गांवोंमें दो दिनमें १०६ मीलका सफर करके लोगोंकी स्थिति आंखों देखी। जेसावाड़ा, मीराखेड़ी, झालोद, गरबाड़ा, भाभरा, लीमड़ी वगैरा स्थानों पर गये। सेर भर अन्नके लिअे तरसते हुअे हजारों स्त्री-पुरुषोंके झुंडके झुंड अुन्होंने केन्द्रों पर अुमड़ते देखे। यह दृश्य देख कर बापाका हृदय द्रवित हो अुठा और मीराखेड़ीके टीले पर अेकान्त स्थानमें अुन्होंने आंसू बहाये। अुसी दिन बापाने जीवदया-

मंडलके नाम तार देकर ५,००० रुपये बीजके लिअे मंगवाये और गुजरातसे २५,००० रुपये देनेकी अपील की।

ता० २६-६-'३३ को बापाने दाहोदके प्रमुख व्यापारियों और अन्य प्रतिष्ठित नागरिकोंकी अेक सभा बुलाअी और अुनके सामने संकटग्रस्त भीलोंका चित्र खींचकर अुनसे मदद मांगी। शहरकी पंचायतने अन्न-दानके लिअे जो अनाज चाहिये, अुसमें रोज छः मानी (मानी = १२ मन) अनाज १२ रु० मानीके हिसाबसे प्रत्येक मानी पर रु० २-३ का नुकसान अुठा कर देना मंजूर किया। बम्बअीमें भी फंडके लिअे जीवदया-मंडल द्वारा रुपया अिकट्ठा करनेका काम हाथमें लिया गया। परिणामस्वरूप जो सहायता मिली, अुसमें से जूनके अंतिम सप्ताहमें १७५ गांवोंके ५,००० आदमियोंको दानका अनाज बांटा गया। ये दिन तो ठीक निकले। लेकिन जुलाअीमें फिर बरसात खिंच गअी और हालत ज्यादा खराब हो गअी। ६ से १२ जुलाअीके दिन तो बहुत ही भयंकर थे। आकाश बिलकुल साफ था। बरसातकी कहीं भी आशा नहीं थी। अन्न-दान लेनेवालोंकी संख्या अिन दिनों बढ़ कर २५,००० तक पहुंच गअी। अेक ही सप्ताहमें ३,००० मन अनाज दानके रूपमें बांटा गया। अिन दिनोंमें बापा तो तालुकेके गांवोंमें घूमते ही थे। अिसके सिवाय बम्बअीके जीवदया-मंडलके मंत्री श्री मानकर भी परिस्थिति देखने आये। साथ ही सौभाग्यसे सर दोराबजी टाटा ट्रस्टसे भी ५,००० रु० की अकल्पित सहायता आ गअी। अुससे तत्काल राहत देनेमें सरलता हो गअी। थोड़े दिन अपनी निजी देखरेखमें कष्ट-निवारण कार्यकी व्यवस्था करके बापा दिल्लीके लिअे रवाना हुअे। परन्तु गाड़ीमें बैठे बैठे अुनके हृदयमें तो दाहोद-झालोदके अकालकी और अकाल-पीड़ितोंको बचानेकी बात ही रम रही थी। अिसलिअे अुन्होंने मंडलके कार्यकर्ता श्री चूनीभाअी और श्री डाह्याभाअी नायकके नाम ता० ८-७-'३३ को कोटासे दिल्ली जाते हुअे पत्र लिखा। अुसमें अुन्होंने मंडलके विद्यार्थियोंका कष्ट-निवारण कार्यमें अुपयोग करने और अुन्हें सेवाका पाठ सीखनेका अवसर देनेका सुझाव रखा।

पत्रमें अुन्होंने अिस प्रकार लिखा था :

"भील-संकट-निवारण कार्यके संबंधमें अेक बातकी तुम्हारे साथ चर्चा करनी रह गअी। वह पत्र द्वारा कर रहा हूं।

"हमारे भील विद्यार्थियोंको अेक कामकी तालीम मिलनी चाहिये। और वह देहातमें घूमनेकी। अंग्रेजी पढ़नेवाले सभी और गुजराती पढ़ने-वाले बड़ी अुम्रके तमाम विद्यार्थियोंको सप्ताहमें कमसे कम दो दिन पढ़ाअीका

त्याग करके भी भीलोंमें भेजनेका प्रबंध करना चाहिये। अुनके सामने आया सेवाका यह सुन्दर अवसर खो नहीं देना चाहिये। . . . वे शनि-रवि या और किसी दिन तीन-चारकी टोलीमें कुछ गांवों और झोंपड़ोंमें जायं, सहायताका सन्देश पहुंचायें, भूखोंको ढूंढ़ निकालें, नंगोंको ढकें, और मूक भील कष्ट अुठा अुठाकर मरणासन्न न होने पायें, अिसलिअे अुन्हें ढूंढ़कर अुचित राहत दिलावें। १९१९ में मोतीभाअीके भेजे हुअे अेक श्रेणीके २० चरोतरी युवक मेरे पास थे, जिनके लिअे मैं गौरव अनुभव करता था। अब तो हमारे अपने आश्रमोंके भील बालक भी वही काम कर सकते हैं। अिसलिअे यह अवसर न खोना। हमारे आश्रमोंकी पढ़ाअी पन्द्रह दिन बन्द रहे, अंग्रेजी पाठशालाओंसे अेकाध सप्ताहकी छुट्टी लेनी पड़े तो भी हर्ज नहीं। परंतु यह सेवाका पाठ पढ़ानेका मौका नहीं चूकना चाहिये। थैलेमें जुवारकी रोटी रखकर, पानीकी बोतल गलेमें डालकर और हाथमें लाठी लेकर अुन्हें दो दिनमें छः सात गांवोंका या लगभग सौ झोंपड़ोंका चक्कर लगा आना चाहिये और दयाका सन्देश पहुंचाना चाहिये। बच्चूभाअीके सुनाये हुअे कथीरके गहने बेचने या दो दो दिनके भूखे आदमी मिलनेके किस्से सुनता हूं, तब मेरा हृदय रोता है। जगन्नाथपुरीके जिलेमें अपनी आंखोंके सामने अकाल-ग्रस्तोंको मुर्दे हो जाते देखनेके दृश्य याद आते हैं, तब अैसा डर लगता है कि कहीं मेरे भोले भीलोंकी भी अैसी हालत न हो जाय। रुपयेकी चिन्ता मत करो। सेरके बजाय डेढ़ सेरका अन्न-दान कर देना। परंतु यदि कोअी भील भूखसे पीड़ित होकर मर गया, तो अुसके लिअे हम अीश्वरको क्या जवाब देंगे? बिड़ला, टाटा, वाड़िया, सब हमारे सहायक और तरफदार हैं। रुपयेकी कमी नहीं। काम शरीरको खपाकर करना-कराना और भीलोंको शांति देना। मूक भीलोंका आशीर्वाद लेना और लिवाना। मैं तुमसे दूर रहता हूं और दूरसे वेदान्तकी बातें करता हूं, अिसलिअे शरमाता हूं। यह भी अीश्वर-निर्मित है।"

बापाकी सूचनानुसार अुनके साथियोंने जी-तोड़ काम किया। दाहोद-झालोद और सरहदके देशी राज्योंके कुल मिलाकर ३५ गांवोंको अुन्होंने संभाल लिया। अिसके सिवाय झालोद और लीमड़ीके व्यापारी संघोंने ३३ गांवोंमें अन्न-दान देना बन्द कर दिया, तो वह जिम्मेदारी भी मंडलके कार्यकर्ताओं पर आ गअी। जुलाअीके तीसरे सप्ताहमें अन्न-दान लेनेवालोंकी संख्या बढ़कर ३६,५०० से अूपर पहुंच गअी। अेक लाखकी भीलोंकी आबादीमें से तीसरे भागके लोगोंका निर्वाह धनिकोंकी अुदारता पर हुआ। अैसी विकट परिस्थिति होने पर भी सरकारकी तरफसे अन्न-दानके लिअे

केवल २,००० रुपयेकी तुच्छ रकम मिली और ८,००० रुपये तकावीके लिअे मंजूर किये गये।

अिन दिनोंमें मंडलकी तरफसे मजदूरीके ग्यारह केन्द्र खुले हुअे थे और १,००० आदमियोंको रोज मजदूरी दी जाती थी। पुरुषको डेढ़ आना, स्त्रीको सवा आना और बच्चेको अेक आना। यह मजदूरी अकालके अिन दिनोंमें भीलोंके लिअे आशीर्वादरूप हो गअी थी।

दिल्ली चले जानेके बाद भी ठक्करबापा पंचमहालके अिन तालुकोंके अकालके विषयमें चिन्तित थे। वहांकी परिस्थितिके बारेमें पत्रव्यवहारसे सदा परिचित रहते हुअे भी अुन्हें दिल्लीमें चैन नहीं पड़ा। ता० २१–७–'३३ को श्री जयन्तीलाल मानकरके साथ बम्बअीसे दाहोद आये। कष्ट-निवारण केन्द्रोंका अवलोकन किया। फिर बंबअी गये और चंदेके लिअे कोशिश करके जरूरतके लायक रुपये जुटाये। अिसके सिवाय टाटा ट्रस्टसे भी ३,००० रुपयेकी दूसरी रकम प्राप्त की।

अीश्वर-कृपासे बादमें बरसात हो गअी और लोगोंके जीमें जी आया। कार्यकर्ताओंके मन भी हल्के हुअे और बापाकी चिन्ता कम हुअी। २२ अगस्तको अन्न-दान करनेका काम बन्द कर दिया गया। आठ सप्ताह अर्थात् लगभग दो महीनेमें मंडल द्वारा भिन्न-भिन्न केन्द्रोंमें पैंतीससे चालीस हजार भीलोंको नियमित अन्न-दान दिया गया। लगभग ५ हजार मनसे ज्यादा अनाज बीजके लिअे दिया गया। ७२,००० मजदूरोंको रोजी दी गअी। फटेहाल और अर्धनग्न स्त्रियों और पुरुषोंको ५,२३६ रुपयेकी कीमतका लगभग ३३ गांठ कपड़ा सिलवा कर बांटा गया। अिस प्रकार ठीक समय पर राहत-काम हाथमें लेनेसे हजारों भील बच गये। बापा और अुनके कार्यकर्ताओंकी तपश्चर्यासे अनेक संस्थाअें, पंचायतें, मंडल और व्यक्ति काम करने बाहर निकल आये। नतीजा यह हुआ कि भुखमरीके कारण अेक भी भीलकी मृत्यु नहीं हुअी और अीश्वर-कृपासे सब बच गये।

अकालके अंतमें लगभग ७,००० रु० की रकम बची। अिससे हर साल १०० कच्चे और १०० पक्के कुअें खुदवाने, १०० खादके खड्डे तैयार करने और २०० अेकड़ जमीनमें पाड़ बांधनेके लिअे भील किसानोंको प्रोत्साहन और सहायता देनेमें खर्च करनेका कार्यक्रम तैयार किया गया और अुसे अमलमें लाया गया।

अिधर बापा पर हरिजन कार्यकी भारी जिम्मेदारी मौजूद थी, अिसलिअे अकालका काम अच्छी तरह पार लग जाने पर वे फिर हरिजनोंके काममें लग गये। अिन वर्षोंमें मंडलको थोड़ी धूप-छांहमें से गुजरना पड़ा। अुसका

आर्थिक भार भी बढ़ता गया। मंडलके कार्यकर्ता चिन्तातुर थे, परंतु बापाने अिसकी चिन्ता नहीं की। यह मानकर कि यह अनुभवसे अुनके सीखनेका समय है, अुन्हें सीखने दिया। जुलाअी १९३५ में तीन आजीवन सेवक कुछ मतभेद और कुछ निराशाके कारण मंडलसे अलग हो गये, परंतु बादमें अुनमें से अेक सेवक श्री डाह्याभाअी बापाके समझाने और आग्रहसे फिर आ गये।

मंडलका बारहवां वार्षिक अुत्सव झालोदमें गुजरातके लोकसेवक श्री चंदूलाल देसाअीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अुस समय श्रीमती लीलावती खांडवालाके दिये हुअे २,५०० रु० के दानसे भील पुस्तकालय और भील धर्मशालाके जो मकान बनवा दिये गये थे अुनका अुद्घाटन किया गया। अुसके बादके वर्षमें सरदार वल्लभभाअी पटेलकी अध्यक्षतामें मीराखेड़ी आश्रममें तेरहवां वार्षिकोत्सव मनाया गया। मंडल शिक्षा और वैद्यकीय राहतकी दिशामें धीरे धीरे प्रगति कर रहा था। अितनेमें १९३६-३७ के सालमें फिर अकाल पड़ा। अिस वर्ष शुरूमें तो अच्छी बरसात हुअी। अिसलिअे लोगोंने अुनके पास जो कुछ पैसा था अुसे बीज खरीदनेमें खर्च कर दिया। बुवाअी कर ली। परंतु बादमें बरसात बन्द हो गअी और छप्पनके अकालको भुला देनेवाले दिन देखनेकी नौबत आअी। १९३३ में अकाल पड़ा था, १९३४-३५ में फसलको पाला मार गया था और १९३६ में फिर अकाल। अिस अेकके बाद दूसरे अकालने अैसी स्थिति पैदा कर दी कि अच्छे अच्छे भी हिम्मत हार जायं। परंतु भील-सेवा-मंडलने अिस बार भी अगस्त माससे कष्ट-निवारण कार्य हाथमें लिया। पंचमहालकी परिस्थितिके संबंधमें अेकके बाद अेक तीन वक्तव्य प्रकाशित करके सरकारसे अिस बार तुरंत ही शीघ्र कार्रवाअी करनेका अनुरोध किया। मंडलके प्रचारके फलस्वरूप सरकारने आजमायशी काम शुरू किये। अिस बार सारे गुजरातमें अकालकी स्थिति थी। सरदार वल्लभभाअीने अिसके लिअे रुपया देनेकी अपील प्रकाशित की। गुजरातने ७५,००० रु० की रकम देकर सरदारकी झोली भर दी। अिस बीच गुजरात प्रान्तीय समितिके मंत्री श्री मोरारजी देसाअी अकाल-जन्य परिस्थितिका अध्ययन करने पंचमहाल आये। अुनके सामने निम्नलिखित कैफियत पेश की गअी: "रात बीतती है, पर दिन नहीं कटता। हमारी स्थिति असह्य है। अब तक घास-लकड़ी बेचकर काम चला, परंतु अब तो वे भी नहीं रहे। हमारे पास निर्वाहका कोअी भी आधार नहीं है। २०–२५ रुपये कीमतके मवेशीके पूरे दो तीन रुपये भी नहीं मिलते। झोंपड़ीकी बल्लियां बेचना बाकी रहा है। पशुओंके लिअे घास नहीं। पीनेको पानी

नहीं । हमारी समझमें नहीं आता कि अब हम कैसे जियेंगे । हमसे सख्त मजदूरी नहीं होगी, क्योंकि पिछले महीनेसे थोड़ीसी पतली राब पीकर आधा पेट रह कर काम चला रहे हैं। अब हममें शक्ति ही नहीं रही।"

श्री मोरारजीभाअी पर अिस बयानका बहुत अच्छा असर हुआ । और यह चीज अुनके हाथमें लेनेके बाद सरकार भी जाग्रत हुअी और अुसे मजदूरीके राहत-काम अधिकाधिक संख्यामें खोलने पड़े।

गुजरात प्रान्तीय समितिने सारे गुजरातमें कष्ट-निवारणका काम शुरू कर दिया था। अिसलिअे दाहोद-झालोद तालुकोंका कष्ट-निवारण कार्य समितिने भील-सेवा-मंडलको सौंपा। मंडलने ता० २–९–'३६ से सस्ते अनाजकी दुकानें खोलीं। १५,००० रु० की पूंजी लगाअी। दाहोद और आसपासके गांवोंसे अिकट्ठा अनाज खरीद लिया। सरकारकी तरफसे कष्ट-निवारणके काम शुरू हुअे। अगस्तमें ५००, सितम्बरमें ४,३८० और अक्तूबरमें ७,६०० मजदूर कष्ट-निवारण कार्यमें काम करने लगे। यह संख्या बढ़ते बढ़ते फरवरी १९३७ में १८,०००, अप्रैलमें ३०,००० और मअीमें ३८,००० तक पहुंची । अकालके छः सात महीनोंमें औसतन् ३,००० आदमियोंको अन्न-दान दिया गया। घासके अभावमें जब ढोर मरनेके किनारे पहुंचे, तब मंडलकी प्रार्थना पर सरकारने दाहोदमें ५०,००० पौंड घासका पुराना ढेर मुक्त किया । बंबअीके जीवदया-मंडल और गोग्रास-मंडलने भी पशुओंको बचानेके लिअे मेहनत अुठाअी। जीवदया-मंडलने पचास लाख पौण्डका घास अिस वर्ष मंडल द्वारा सस्ती दरों पर बेचा और अुसमें १६,००० रु० का घाटा अुठाया। सामूहिक रूपमें पशुओंको घास डालनेके २० केन्द्र चलाये गये। अितने पर भी अकाल अितना तीव्र था कि मंडलकी तमाम कोशिशोंके बावजूद काफी संख्यामें पशु मर गये। तथापि अिन प्रयत्नोंके अभावमें जिस बड़ी संख्यामें ढोरोंको बचाया जा सका वह नहीं हो सकता था। मंडलने गुजरात प्रान्तीय समितिकी तरफसे अकाल-निवारणका काम किया, कुल पौने दो लाख मन अनाज सस्ते भावसे बेचा, १३,००० मन बीज सस्ते दामों पर मुहैया किया और २,००० मन बीज तथा नमक मुफ्त बांटा गया।

अकाल-निवारणके अिस कामके साथ-साथ मंडलके शिक्षा और अन्य सेवाकार्य भी व्यवस्थित रूपमें जारी रखे गये थे ।

१९३७ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके प्रान्तोंमें पद ग्रहण करनेके बाद शासन-प्रबंध कांग्रेसी नेताओंके हाथमें आया । बम्बअीमें बालासाहब खेर मुख्यमंत्री और श्री मोरारजी देसाअी गृहमंत्री हुअे । साथ ही मंडलके अुपाध्यक्ष

श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त बम्बअीकी धारासभामें चुने गये। अिस कारण मंडलको अच्छा फायदा हुआ। सरकारकी तरफसे मंडलको ३,००० रु० की वार्षिक सहायता दी गअी। साथ ही मंडल द्वारा संचालित पाठशालाअें रजिस्टर कराअी हुअी होनेके कारण अुन्हें भी जिला स्कूल-बोर्डकी तरफसे मदद मिलने लगी।

१९३७ के अक्तूबर मासमें बड़ोदा राज्यके वांकल नानछल टप्पे पर आश्रम चलानेवाले मंडलके अेक कार्यकर्ता श्री गणपतिशंकर भट्ट जंगलकी जलवायुके शिकार बने और अन्तमें मर गये। मंडलने सेवाक्षेत्रमें अिस प्रकार दूसरा बलिदान दिया। अुन्होंने अेक भील महिलासे विवाह किया था। अुनकी पत्नी विजयाबहन आज भी कस्तूरबा स्मारक कोषकी तरफसे तालीम पाकर गरबाड़ामें काम कर रही हैं।

अिस बीच दाहोदमें मंडलके नये मकान बनानेकी मंजूरी मिली। जमीन तो वर्षों पहले ले रखी थी। परंतु मंडल सदा सरकारकी आंखोंमें खटकता था, अिसलिअे मकान बनानेकी अिजाजत नहीं मिली थी। वह अब जाकर मिली। श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तने वहां मकान तथा कुआं बनवा दिया और अिसी जमीन पर सिंधके नगरपारकरकी अेक बहन श्रीमती विजयाकुंवर विट्ठलदासने जो दो हजार रुपये दिये थे अुनसे कन्या आश्रमका मकान खड़ा किया गया। ता० १२–१–'३९ को बम्बअीके अुस समयके मुख्यमंत्री बालासाहब खेरके हाथों अुसका अुद्घाटन किया गया। अिस अवसर पर श्री मोरारजीभाअी भी आये थे और अुनके हाथों आश्रमके चौकमें वृक्षा-रोपण किया गया। अिस प्रसंग पर भील किसानों और दाहोदके नगरजनोंने बड़ी संख्यामें अुपस्थित होकर अपना अुत्साह दिखाया था।

अिसके बाद बापाकी प्रेरणासे थाना जिलेमें आदिवासी-सेवा-मंडलकी स्थापना की गअी और मंडलके अेक आजीवन सदस्य और पुराने कार्यकर्ता श्री पांडुरंग वणीकरको अेक वर्षके लिअे वहां भेजा गया। बापाकी अिच्छा धीरे धीरे मंडलमें काम करनेवाले आजीवन भील सदस्यों पर मंडलके संचालनकी जिम्मेदारी डालनेकी थी। और अिसके लिअे अुन्हें तालीम देकर तैयार भी किया जाता था। परिणामस्वरूप १९४०-४१ में मंडलकी व्यवस्थापक-सभामें अैसे आजीवन भील सदस्योंको अधिक संख्यामें लिया गया। अुसी वर्ष श्री मोरारजी देसाअीकी अध्यक्षतामें मीराखेड़ीमें भील-परिषद् की गअी और अुसमें भीलोंके प्रश्नोंकी चर्चा और विचार किया गया।

बापाने भील-सेवा-मंडल द्वारा जैसे शिक्षा और आरोग्यकी प्रवृत्तियां शुरूसे ही चलाअीं, वैसे ही सहकारी प्रवृत्तिके बीज भी बहुत शुरूसे ही

झालोद और दाहोद तालुकोंमें डाले गये थे। प्रारंभमें ये सहकारी समितियां भील पटेलिया किसानोंको खाद और बीजके लिअे रुपया अुधार देती थीं। अुसके बाद अुनका विकास होता गया। सहकारी समितियोंके सदस्योंके अनाजका संग्रह करके अुसे खरीद लिया जाता और अुसकी अमानत रकम जमा करके अुन्हें जरूरी कपड़ा और अन्य वस्तुअें बेची जातीं। ३०–३५ समितियोंके समूहके बीच अेक क्रय-विक्रय संघ खोल दिया जाता। अैसा अेक संघ गरबाड़ामें १९३९ में, लीमड़ीमें १९४० में, जेसावाड़ामें १९४१ में और झालोदमें १९४६ में स्थापित किया गया। ये चारों संघ कुल १०० समितियोंको संभाल लेते हैं। अुनके सदस्योंकी संख्या ३,९६६ है और अुनकी कुल शेयर-पूंजी २६,६०० और अमानत पूंजी ७५,९०० रु० है। अिन सब संघोंको शृंखलाबद्ध करनेवाली केन्द्रीय संस्था 'दाहोद सहकारी क्रय-विक्रय संघ' की स्थापना ता० १५–१२–'४३ को श्री वैकुंठराय महेताके हाथों हुअी। यह संघ किसानों, मजदूरों और आम लोगोंको नफाखोरी और कालाबाजारके पाशसे बचाकर बंधे हुअे भावों पर जीवनकी आवश्यक चीजें मुहैया करनेका काम कर रहा है। अुसकी सदस्य संख्या २,००० है। शेयर-पूंजी ३७,७०० और अमानत पूंजी ५५,००० रु० है।

सराफी सहकारी समितियोंकी संख्या बढ़कर कुल १२९ हो गअी है, जिनके कुल ६,५६५ सदस्य हैं। अुनकी शेयर-पूंजी १,०६,५०० रु० है, जब कि अमानत पूंजी १,८६,६०० रु० है। भील सदस्योंके बड़ी संख्यामें निरक्षर होनेके कारण समितियोंका कामकाज करनेके लिअे संघके मंत्री और कारकुन रखे गये हैं और अुनके कामकी देखरेख रखनेके लिअे अेक खास अफसरकी नियुक्ति की गअी है।

साथ ही, सहकारी समितियों, ग्रामोद्योग समितियों और शहरी बैंकोंको रुपया अुधार देनेके लिअे पूर्व पंचमहाल बैंकिंग यूनियन लिमिटेडकी ता० १६–४–'४७ को श्री वैकुण्ठराय महेताके हाथों स्थापना की गअी है। अुसकी शेयर-पूंजी ८५,००० रु० है और अुसमें समितियोंकी अमानतें २,१६,००० रु० की और व्यक्तियोंकी अमानतें २,८४,००० रु० की हैं। अुसके कामकाजकी पूंजी ७,५०,००० रु० की है। अिन तमाम सहकारी संस्थाओंके संचालकोंके तौर पर भील-सेवा-मंडलके आजीवन सदस्योंमें से ही कोअी न कोअी काम करते हैं।

१९४० में भील-सेवा-मंडलके अुपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त व्यक्तिगत सत्याग्रहमें शरीक हुअे और कानून-भंगके परिणामस्वरूप अुन्हें अेक वर्षकी जेल हुअी। सजाकी अवधि पूरी करके जेलसे बाहर निकलनेके

थोड़े ही समय बाद गांधीजीका 'भारत छोड़ो' आन्दोलन शुरू हो गया। गांधीजी और कार्यसमितिके तमाम सदस्य पकड़े गये। नतीजा यह हुआ कि देश भरमें आन्दोलनने अुग्र रूप धारण कर लिया। सरकारने बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां शुरू कीं। मंडलके लगभग तमाम मुख्य कार्यकर्ताओं — श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त, श्री डाह्याभाअी नायक, श्री सुखदेवभाअी त्रिवेदी, श्री पांडुरंग वणीकर और श्री अंबालाल व्यास — को बिना मुकदमा चलाये अनिश्चित अवधिके लिअे भारत-रक्षा-कानूनके मातहत नजरबन्द कर दिया गया। अिनके सिवाय मंडलके लगभग ३५ विद्यार्थियों और ६ विद्यार्थिनियोंने लड़ाअीमें कूदकर कारावास स्वीकार किया। अिस स्थितिमें मंडलका रोजमर्राका काम खटाअीमें पड़ने लगा। अिसलिअे बापाने दिल्लीसे आकर मंडलका कामकाज दाहोदके दो वकील मित्रों — श्री रामचंद्र शुक्ल और श्री रामचंद्र पंड्या — को सौंपा। सुअेज फार्मवाले श्री शान्तिलाल पंड्याको मंडलका अवैतनिक मंत्री नियुक्त किया गया। अिसके सिवाय मंडलके ट्रस्टी श्री हरखचंद मोतीचंद शाह तथा श्री वैकुण्ठराय महेता समय-समय पर दाहोद आकर सलाह-सूचना दे जाते थे। अिस प्रकार मंडलके मुख्य सेवकोंकी गैरहाजिरीमें भी कामकाज जारी रखा गया।

नजरबन्दी कानूनके अनुसार पकड़े गये पांच सेवकोंमें से कुछ १९४३ में और बाकीके १९४४ में जेलसे छूटे। अुसके बाद ता० २–३–'४४ को मंडलकी व्यवस्थापक-सभा बुलाअी गयी। अिस सभाके समक्ष बापाने अपने मनकी अभिलाषाअें व्यक्त करते हुअे कहा :

"मैं अब बूढ़ा होने आया हूं। मेरी अिच्छा आंखें बन्द होनेसे पहले यह देखनेकी है कि दूसरे प्रान्तोंमें आदिम जातियोंके कल्याण-कार्यका प्रारंभ हो जाय। भील-सेवा-मंडलके आजीवन सदस्योंमें से भाअी वणीकर जैसेको अब दाहोद-झालोद, पंचमहाल और गुजरात छोड़कर मध्यप्रदेश जैसे प्रान्तमें जाकर यह काम करना चाहिये।"

आदिवासियोंकी सेवा सिर्फ गुजरातमें ही नहीं, परंतु भारतके अन्य प्रान्तोंमें भी हो, यह अिच्छा बापाके दिलमें वर्षोंसे घर कर रही थी। और अुसीके अनुसार अुन्होंने दो वर्ष पहले अपने अेक साथी श्री सुखदेवभाअीको राजस्थानमें आदिवासियोंकी सेवा करने भेजा था। अिसी अिच्छाके अनुसार बरसों पहले अेक भील-सेवकके साथ कच्छका रेगिस्तान पार करके अुन्होंने थरपारकरमें अेक केन्द्र स्थापित किया और अुस सेवकके सुपुर्द किया था। अुसी अिच्छाके अनुसार अब अुन्होंने श्री वणीकरसे मध्यप्रदेशमें जाकर आदि-वासियोंके जिले मंडलामें डेरा डालनेका अनुरोध किया। वर्षों तक अेक ही

भूमि पर काम करनेवाले और भाअीकी तरह रहनेवाले सेवकोंको शुरूम तो जुदा होनेमें धक्का लगा। परंतु बापाके लिअे तो 'सबै भूमि गोपालकी, तामें अटक कहां' वाली स्थिति थी और अुनके साथी भी बापाके साथ रहकर अिस भावनाको थोड़े बहुत अंशोंमें जीवनमें अुतार सके थे। अिसीलिअे ठक्करबापाकी आज्ञा होते ही श्री पांडुरंग वणीकर आदिवासियोंकी सेवा करनेके लिअे मध्यप्रदेशमें गये और वहां मंडलामें छावनी डालकर रहे। अुसके बाद बापाने मध्यप्रदेशकी सरकारके सम्मुख जो योजना रखी थी अुस पर अमल करनेके लिअे सरकारकी ओरसे श्री वणीकरकी सेवाअें अुधार देनेका अनुरोध करने पर आदिम जाति-सेवक-संघने अुनकी सेवाअें मध्यप्रदेशकी सरकारको अुधार दी हैं। श्री वणीकर मध्यप्रदेशके आदिवासियोंकी आबादीवाले तमाम प्रदेशके संगठनकर्ताके रूपमें मंडला जिलेमें काम कर रहे हैं। अिसी प्रकार मूक और निस्पृह हृदयवाले श्री अंबालाल व्यास अुड़ीसामें सरकारकी मददसे आदिवासियोंके पुनरुत्थानका काम कर रहे हैं। अिस तरह जिन जिन प्रान्तोंमें आदिवासियोंके कामके लिअे जरूरत पड़ी, वहां वहां भील-सेवा-मंडलके मंजे हुअे और अनुभवी कार्यकर्ताओंको बापाने भेजा।

अिस प्रकार जब अेक तरफ आदिवासियोंकी सेवाका काम विस्तृत होता जा रहा था, तब यहां घरमें भी मंडलकी प्रवृत्तियां विकास पाती जा रही थीं। ता० २०–४–'४५ को झालोदमें शबरी कन्या आश्रमके मकानका अुद्घाटन बम्बअीके तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बालासाहब खेरके हाथों हुआ। अुसके बादके दो दिनोंमें मीराखेड़ीमें पश्चिम भारतीय आदिवासी सेवकों और कार्यकर्ताओंका अेक सम्मेलन किया गया। वहां आदिवासियोंके प्रश्नोंकी चर्चा-विचारणा की गअी और सब सेवकों और कार्यकर्ताओंने अिस आशयका मत व्यक्त किया कि अब अखिल भारतीय आदिवासी-सेवक-संघ जैसी राष्ट्र-व्यापी संस्था स्थापित करनेका समय आ पहुंचा है। परंतु यह खयाल करके कि अखिल भारतीय संस्था शुरू होनेसे पहले पश्चिम भारतकी अेक मध्यस्थ संस्था स्थापित होनी चाहिये, पश्चिम भारतीय आदिवासी-सेवक-संघकी स्थापना की गअी। अिस संस्थाने ता० २४–६–'४६ को बम्बअी सरकारके सामने आदिवासियोंके सर्वांगीण अुत्कर्षके लिअे अेक पंचवर्षीय योजना पेश की। साथ ही हरिजन-सेवक-संघके कार्यके सिलसिलेमें दिल्ली जानेके बाद बापा वहां बैठे बैठे 'आदिम जाति कल्याण-कार्य' नामक जो संस्था चला रहे थे, अुसकी लगाम भी अुन्होंने श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तको सौंप दी।

भील-सेवा-मंडल द्वारा जिस तरह शिक्षा, सहकारी समिति, खादी, खेती, अस्पृश्यता-निवारण और डॉक्टरी राहत वगैरा अनेक कार्य पंचमहालमें

जारी हो गये थे, अुसी तरह मद्यनिषेधकी प्रवृत्ति भी निरंतर चालू ही रही। बापाने जिस दिन मंडलकी स्थापना की, अुसी दिनसे यह काम भी शुरू कर दिया था। अिस सिलसिलेमें अुन्हें दाहोदके शराबखानेके मालिक श्री मंचेरशा और सरकारी कर्मचारी, दोनोंके साथ काफी संघर्षमें आना पड़ता था। परंतु अिसकी परवाह किये बिना बापा तो भीलोंमें घर की हुअी अिस बुराअीको मिटानेके लिअे लगातार प्रयत्न करते रहे; वे सरकार पर अिस मामलेमें प्रहार करनेमें जरा भी न हिचकते और न कोअी प्रहार करनेका मौका चूकते। बार बार भीलोंके मेले और परिषदें करके शराबसे होनेवाली हानियां अुन्हें समझाते और मद्यनिषेधके प्रचारके लिअे तो आसपासके देशी राज्योंमें भी जाते। अिस संबंधमें समय-समय पर लेख लिखते। अेक बार सरकारने राज्यकी आय बढ़ानेके लिअे अुस समय जो शराबकी दुकानें मौजूद थीं अुनके सिवाय देहातमें भी सस्ती शराबकी दुकानें शुरू कर दीं। अुस समय तो बापाका पुण्य प्रकोप भड़क अुठा।

अुन्होंने अिस सिलसिलेमें लेख लिखते हुअे बताया कि "राज्यका फर्ज गांवोंमें रहनेवाले लोगोंके लिअे गांव-गांव शालाअें खोलनेका है। यह बात तो दूर रही। अुल्टे, अुसने गांव गांव शराबकी दुकानें खोल दी हैं, ताकि जो लोग अज्ञान हैं, वे अधिक अज्ञान रहें, अुनका आलस्य और व्यसन ज्यादा बढ़े और वे निरन्तर काल्पनिक सुखके भ्रममें फंसे रहें! अैसा करके सरकार केवल अपना प्रारंभिक कर्तव्य ही पालन नहीं करती, बल्कि अिन भले और भोले लोगोंको अेक नअी लत लगाकर घोर पाप कर रही है।"

अिस प्रकारकी गांव-गांव खोली गअी अिन दुकानोंके विरुद्ध बापाने अैसा जिहाद छेड़ दिया कि अन्तमें सरकारको ये सस्ती शराबकी दुकानें अुठा लेनी पड़ीं।

शराबबन्दीकी मांग करनेके लिअे तथा अिनामदारों और तालुकेदारोंके जुल्मोंके खिलाफ भीलोंको संगठित करने और अुनमें जाग्रति लानेके लिअे किसान संघकी तरफसे श्री शान्तिलाल पंड्याने दोनों तालुकोंमें भीलोंका अेक कूच निकाला और २६ जनवरी, १९४७ को स्वातंत्र्य-दिवसके दिन लीमड़ीमें श्री रविशंकर महाराजकी अध्यक्षतामें भील-परिषद् की गअी। अिस परिषद्में तालुकोंके गांवोंके और आसपासकी सरहदके देशी राज्योंके भीलोंने हजारोंकी संख्यामें आकर दिलचस्पीके साथ भाग लिया। अिसी वर्ष अगस्तके महीनेमें भारत स्वतंत्र हुआ। और अुसके बाद सरदार पटेलकी कार्यदक्षताके परिणामस्वरूप देशी राज्य बम्बअी प्रान्तमें मिल गये, तो तुरंत बापाकी सूचनाके अनुसार संतरामपुर, देवगढ़-बारिया वगैरा तथा राजपीपला और

साबरकांठामें आश्रम स्थापित किये गये। अिस प्रकार बापाकी बहुत वर्षोंकी मुराद पुरी हुअी। सरहदके अिन देशी राज्योंमें मंडलकी सेवाओंका असर तो पहलेसे ही पड़ चुका था। और वहांके कितने ही भील भाअियोंके बालक मंडलके आश्रमोंमें रह कर पढ़ाअी भी कर गये थे। अिसलिअे अिन नये आश्रमोंको वेग प्राप्त करनेमें देर नहीं लगी। साथ ही स्वतंत्रता मिलनेके बाद बम्बअी प्रान्तने भील-सेवा-मंडल द्वारा मीराखेड़ी और आसपासके ४५ गांवोंमें सर्वोदय योजना चलाअी। यह काम अभी भी हो रहा है। अिसके सिवाय भीलोंकी सहकारी प्रवृत्तिमें भी अच्छा वेग आया है। बम्बअी सरकारने जंगल ठेकेदारोंको न देकर जंगल सहकारी समितियोंको देनेकी नीति अख्तियार की है, अिसलिअे अिस कार्यमें भी अच्छी प्रगति हो रही है।

अिस प्रकार पच्चीस वर्ष पहले श्री ठक्करबापाने पंचमहालकी सूखी धरती पर सेवाका जो पौदा लगाया था, वह बढ़कर आज वटवृक्ष बन चुका है और अुसकी छायाके नीचे अनेक भील बालक, स्त्रियां और पुरुष कल्लोल कर रहे हैं। बापाने जिस संस्थामें भील सेवाकी अुपासना करके दस दस वर्ष तक प्रत्यक्ष रूपमें काम किया और दूसरे पंद्रह वर्ष जिसका सतत पथ-प्रदर्शन किया, अुस संस्थाने अपने पच्चीस वर्षके कार्यकालमें क्या किया? अिस प्रश्नके अुत्तरमें वर्तमान अध्यक्ष ही कहते हैं कि "अिसका हिसाब रुपये–आने–पाअीमें नहीं किया जा सकता।" परन्तु रुपये–आने–पाअीमें यह हिसाब लगाना हो तो भी खुशीसे कहा जा सकता है कि भील-सेवा-मंडल द्वारा अिन पच्चीस वर्षोंमें भीलोंकी सेवा और अुनके सेवकोंके निर्वाहके लिअे जो दसेक लाख रुपये खर्च हुअे, अुनमें से अेक अेक रुपयेने सौ सौ रुपयेका काम किया है। भीलोंके समाज-जीवनका प्रवाह जिस अुल्टी दिशामें बह रहा था, अुसे अुधरसे हटा कर सही दिशामें मोड़ा है। अिन आश्रमोंमें तालीम पाये हुअे भाअियोंमें से अनेक शिक्षक हो गये, कर्मचारी हो गये, सेवक बन गये, खादी कार्यकर्ता बन गये, स्वातंत्र्य-संग्रामके सैनिक हो गये, और रचनात्मक कार्यकर्ता बन गये हैं। प्रान्तीय और बड़ी धारासभाओंके सदस्य भी हो गये हैं। और वे जीवनके अलग अलग क्षेत्रोंमें अपना नैतिक जौहर दिखा रहे हैं। अितना ही नहीं, बापाके शुरू किये हुअे भील-सेवा-मंडलका संचालन अेक अपवाद (श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त जो अुसके अध्यक्ष हैं) के सिवाय बाकी सब भील कार्यकर्ता ही कर रहे हैं। अिन कार्यकर्ताओंमें परिश्रमशीलता तो थी ही, परन्तु कामकी नियमितता, हिसाबकी सफाअी, प्रामाणिकता, सेवावृत्ति, दूसरोंके लिअे कष्ट सहनेकी तैयारी, असुविधाअें

अुठा लेनेकी शक्ति, निरभिमानता और सरलता अित्यादि बापाके मुख्य गुण भी अुनमें आ गये हैं। संक्षेपमें कहें तो अिन पच्चीस वर्षोंमें भील–सेवा–मंडलने पंचमहालकी धरतीका और अुसके बालकोंके जीवनका कायापलट कर डाला है।

यहां अक बातकी सफाअी जरूरी हो जाती है। बापा स्वयं क्रान्तिकारी नहीं थे, परंतु पुरानी परंपराके सुधारवादी समाज-सेवक थे। अुनमें अटूट मानव-प्रेम भरा था, अिसलिअे जहां कहीं भी दुःख देखते वहां अुसे दूर करनेका वे सदा प्रयत्न करते थे। भीलोंको अज्ञान और वहममें सड़ते देखा तो अुनके लिअे अुन्होंने पाठशालाअें और आश्रम शुरू कर दिये। अिन पाठशालाओंमें जो शिक्षा दी गअी थी वह पुराने ढंगकी थी। अूंचे वर्गके लोग यह शिक्षा पाकर जैसे हाथ-पैर काममें लेनेकी कला खो बैठे हैं और नौकरी ही अुनमें से अधिकांशका लक्ष्य बन गया है, वैसे ही अिन भील भाअियोंमें दाखिल हुअी पुराने ढंगकी शिक्षाके फलस्वरूप अुनमें से अधिकांशका लक्ष्य भी नौकरी ही हो गया। अिस प्रकार अिस शिक्षाके परिणामस्वरूप जो लाभ मिलनेवाले थे वे तो भीलोंको मिले ही, साथ ही अुसकी हानियां भी अुन्हें मिल गअीं। अितने पर भी गांधीजीके सर्वग्राही आन्दोलन और गांधीजीके प्रति बापाकी श्रद्धा और भक्तिके कारण शिक्षा और आश्रम-संचालनकी पद्धतिमें थोड़े-बहुत सुधार तो जारी हुअे ही और अुस हद तक पुराने ढंगकी शिक्षाके परिणामस्वरूप जो हानियां होती थीं अुनसे कुछ अंशमें वे बच गये। यह अेक बात छोड़ दें तो मंडलकी प्रवृत्तिने और कअी तरहसे भीलोंके जीवनमें महान परिवर्तन किये हैं तथा अुन्हें सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक लाभ पहुंचाये हैं।

बापाका यह ऋण अेक अेक समझदार भील पूरे अंतःकरणसे स्वीकार करता है और यह समझता है कि बापा न होते तो अीश्वर जाने हमारी जातिके कल्याण-कार्यकी क्या हालत होती।

दूसरे, भील-सेवा-मंडलके संचालक ठक्करबापा थे और बापाका अेक तरफ भारत-सेवक-समाज और दूसरी तरफ कांग्रेस वगैराके साथ घनिष्ठ संबंध था। अिसलिअे यह संस्था कांग्रेस और भारत-सेवक-समाज दोनोंकी प्रीतिभाजन बनी रही। जब जब संस्थाको जरूरत हुअी तभी गांधीजी और अुनकी मंडली तथा श्री देवधर और समाजके अन्य नेता भील-सेवा-मंडलके अुत्सवके अवसर पर भील-परिषदोंमें यदा कदा आते और अिस कार्यको प्रेरणा, सहानुभूति और प्रोत्साहन देते थे। चार्ली अेण्ड्रूज, सरदार वल्लभभाअी पटेल और रविशंकर महाराज जैसे महापुरुषोंने १९२३ से १९४७ की अवधिमें

अलग अलग समयमें भील परिषद्का अध्यक्षपद स्वीकार किया और अुसे प्रेरणा तथा पथप्रदर्शन देकर वे भील-सेवा-मंडलके कार्यको अच्छा वेग प्रदान कर गये। यह भी बापा और बापाके कार्यके प्रति अिनकी प्रीतिके कारण ही हुआ। गांधीजीने तो शुरूसे ही अिस संस्थाको अपनी संस्था माना और गुजरात प्रान्तीय समिति द्वारा आवश्यक आर्थिक सहायताका अेक हद तक प्रबंध कर दिया। अिसके सिवाय प्रो० धोंडो केशव कर्वे, श्री देवधर दादा, श्री हृदयनाथ कुंजरू, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, फादर अेल्विन और अैसे ही अन्य नामांकित स्त्री-पुरुष भी अिस संस्थाको देखने आये और अुसे काफी प्रोत्साहन दे गये। अिस प्रकार भारतभरके बड़े-बड़े आदमियोंका लाभ अिस संस्थाको मिलता रहा, अिसमें बापाके संबंध, अुनकी निर्व्याज मनोवृत्ति और सेवाकी लगन कारण-भूत थे। भील-सेवा-मंडल द्वारा बापाने भीलोंकी जो सेवा की है, वह गुजरातमें अनन्य और अद्वितीय है। और समस्त भीलजाति अपने अिस धर्म-पिताको, बापाको हमेशा याद करेगी।

२५

हरिजन-सेवक-संघके मंत्रीपद पर

१

भारतके राजनैतिक प्रश्नके निपटारेके लिअे ब्रिटिश अधिकारियोंने अेकके बाद अेक तीन गोलमेज परिषदें लंदनमें बुलाअीं। अुसके बाद १९३२ में अुस समयके ब्रिटिश प्रधानमंत्री राम्से मेक्डोनल्डने साम्प्रदायिक निर्णय देकर भारतके नये तैयार होनेवाले संविधानमें अंत्यजोंको हिन्दू जातिसे अलग मताधिकार दिया और अिस प्रकार राष्ट्रके शरीर पर अेक और शस्त्राघात करके अुसके टुकड़े करनेका प्रयत्न किया। गांधीजी पहलेसे ही अिस किस्मके अलग मताधिकारके विरुद्ध थे, क्योंकि अिसमें अुन्हें भारतमें आपसी झगड़ेके बीज दिखाअी देते थे और अन्तमें देशका नाश जान पड़ता था। अिसलिअे १९३१ के गांधी-अिर्विन समझौतेके बाद ब्रिटेनके आमंत्रण पर जब वे कांग्रेसके अेकमात्र प्रतिनिधिके रूपमें गोलमेज परिषद्की बैठकमें भाग लेने गये, तब अुन्होंने अिस साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध पहलेसे ही अपना मजबूत विरोध प्रकट कर दिया था। अुसी समय अुन्होंने ब्रिटिश अधिकारियोंको चेतावनी देते हुअे कहा था कि नये संविधानमें भारतके अंत्यजोंको यदि अलग मता-

धिकार दिया जायगा, तो मैं अुसका अपनी सारी शक्तिसे, प्राणोंकी बाजी लगाकर भी विरोध करूंगा।

अुस समय गांधीजीके कहे हुअे वचनोंमें निहित गांभीर्यको ब्रिटिश सत्ताधीशोंने समझा नहीं। अुन्होंने सोचा होगा कि यह तो गांधीजीकी खाली धमकी ही है, अिस पर कभी अमल नहीं होगा। परंतु जब यह निर्णय प्रकाशित होनेकी तैयारीमें था, तब गांधीजीने अुस समयके भारत-मंत्री श्री सेम्युअल होर और प्रधानमंत्री श्री राम्से मेक्डोनल्डके साथ पत्रव्यवहार करके हिन्दुओं और अंत्यजोंके बीच स्थायी भेद पैदा करनेवाला साम्प्रदायिक निर्णय न देनेका अनुरोध किया और दलीलें देकर अुन्हें समझानेके प्रयत्न किये। परंतु अुसका कोअी परिणाम नहीं हुआ। गांधीजी अुस समय जेलमें थे। और जेलमें रहकर अिस निर्णयके विरुद्ध प्रचार करके लोगोंको समझा नहीं सकते थे। अिसलिअे सब प्रयत्न असफल हो जानेके बाद यह निर्णय रद्द घोषित न हो जाय, तब तक आमरण अुपवास करनेका अुन्होंने फैसला किया। और यह फैसला अुन्होंने अधिकारियोंको बताया। २० सितम्बरको गांधीजीने अुपवास शुरू किया। देखते देखते यह समाचार भारतवर्षमें बिजलीकी तरह फैल गया। सारा देश तिलमिला अुठा। जगह-जगह गांधीजीको बचा लेनेके लिअे प्रयत्न होने लगे। भारतके कोने-कोनेसे दिल्ली और लंदन तार गये। लोकमतके अुग्र दबावका अन्तमें लंदन पर असर हुआ और ब्रिटेनके प्रधानमंत्रीको अपने निर्णयमें परिवर्तन करना पड़ा। अुसने यह बात स्वीकार की कि यदि भारतके अंत्यज स्वयं ही अलग मताधिकारका विरोध करते हों, संयुक्त मताधिकार स्वीकार करते हों और अिस मुद्दे पर दोनों पक्ष मिल कर कोअी समझौता कर लें, तो अुस समझौतेके आधार पर अिस साम्प्रदायिक निर्णयमें फेरबदल करनेमें ब्रिटेनको आपत्ति नहीं होगी।

अुनकी अिस प्रकारकी घोषणाके बाद भारतके बड़े बड़े नेता अंत्यजोंके नेता डॉ० भीमराव आंबेडकरको समझानेकी कोशिश करने लगे। श्री आम्बेडकरने तो हाथमें आये हुअे अिस सुवर्ण अवसरसे पूरा लाभ अुठानेका निश्चय कर रखा था। अिसलिअे वे रूठकर बैठ गये। अन्तमें बड़े बड़े नेताओंने अुन्हें मनानेका पूरा-पूरा प्रयत्न किया। साम्प्रदायिक निर्णयमे मिलनेवाली बैठकोंसे भी अधिक बैठकें देकर अन्तमें अुन्हें मना लिया गया और अुनके साथ समझौता हो गया। अिस आशयका तार विलायत भेजा गया, तब ब्रिटेनके प्रधानमंत्रीने अपने साम्प्रदायिक निर्णयका अुतना भाग रद्द घोषित किया। और यह समाचार भारत आने पर अन्तमें गांधीजीका अुपवास छूटा।

यह परिणाम लानेमें पंडित मदनमोहन मालवीयजी, श्री घनश्यामदास बिड़ला और अन्य प्रथम पंक्तिके नेताओंने जो अग्रगण्य भाग लिया, अुसमें ठक्करबापाका नाम भी गिना जा सकता है। गांधीजीके अुपवास शुरू करनेके समाचार दाहोदमें मिलते ही ठक्करबापा दाहोदसे सीधे पूना दौड़ गये। यरवदा जेलमें गांधीजीसे मुलाकात की। अुपवाससे पहलेकी अुनकी मनोभूमिका समझी। अुपवासके पीछे रहा अुनका दृष्टिबिन्दु भी समझा। और गांधीजीसे यह समझकर कि वे देशसे क्या चाहते हैं, खास तौर पर सवर्ण हिन्दुओंसे क्या चाहते हैं, बम्बअीमें सर्वदल-सम्मेलन करने और सम्मेलनके सामने गांधीजीकी बात रखनेमें बापाने बड़ा महत्त्वपूर्ण भाग लिया।

दूसरी तरफ डॉ० भीमराव आंबेडकरको, जो मौका देखकर घात लगाये और मुंह फुलाये बैठे थे, मना लेनेमें, अुन्हें राजी करनेका रास्ता निकालनेमें और सबको सर्वमान्य समझौते पर लानेमें बापाने सुलह करानेवालेके रूपमें बहुत महत्त्वपूर्ण भाग लिया।

अुस समय सबसे विवादास्पद विषय यह था कि अलग अलग प्रान्तोंमें अंत्यजोंको किस अनुपातमें बैठकें दी जायं। अिसमें लोदियन-कमेटीके विवरणमें अलग अलग प्रान्तोंमें हरिजनोंकी जो संख्या बताअी गअी थी अुसका आधार स्वीकार किया गया था। अिस विवरणमें मद्रास, बंबअी (सिन्ध सहित), पंजाब, बिहार, अुड़ीसा, मध्यप्रान्त और आसाम प्रान्तोंके हरिजनोंकी जो संख्या दी गअी थी वह तो ठीक थी। परंतु बंगाल और युक्त प्रान्त (मौजूदा अुत्तर प्रदेश) के आंकड़े निश्चित नहीं थे।

अिस मामलेमें बंगालके हरिजनोंकी आबादीके आंकड़ोंके बारेमें सवर्ण और अवर्ण हिन्दू दोनों अेकमत हो गये थे। परंतु अुत्तर प्रदेशका प्रश्न अन्त तक नहीं निपटा था। डॉ० आंबेडकरने सारा हिसाब लगाकर यह मांग की थी कि अलग अलग प्रान्तोंमें कुल मिलाकर १७५ बैठकें हरिजनोंके लिअे सुरक्षित रखी जायं। परंतु सायमन-कमीशनके विवरणको आधार माना जाय, तो हरिजनोंको १७५ के बजाय १३१ बैठकें मिलनी चाहिये थीं। अन्तमें बातचीतके परिणामस्वरूप हरिजनोंको १४८ बैठकें देकर अुनके मनका समाधान कर दिया गया था।

यह बात अुनके गले अुतारनेमें भारतके भिन्न भिन्न प्रान्तोंकी आबादी, हिन्दू आबादीमें अुनका अनुपात, आम आबादीमें अुनका अनुपात, अुन्हें कितनी बैठकें मिलनी चाहिये, अित्यादि तथ्य अिकट्ठे करनेमें ठक्करबापाने खूब परिश्रम किया था। अुन्होंने अुन दिनों जागरण कर करके लोदियन-कमीशनके विवरण, सायमन-कमीशनके विवरण और अलग-अलग समयमें हुअी

भारतकी जनगणनाके विवरणों आदिके पन्ने पल्टे थे। और बड़ी मेहनत करके अलग अलग कमेटियों तथा नेताओंको आंकड़े मुहैया किये थे। अितना ही नहीं, पूना-समझौते द्वारा हरिजनोंको और किसी फैसलेसे जो मिलनेवाला था अुससे अधिक मिला है, यह हकीकत अुन्होंने आंकड़ों और दलीलोंसे सिद्ध करके हरिजनोंके मनका समाधान करनेका सफल प्रयत्न किया था।

बापाने अपने 'व्हॉट दे हैव गेण्ड' नामक लेखमें जो तफसीलें दी हैं, वे अुनकी अध्ययनशीलता और अुद्योगपरायणताकी अच्छी प्रतीति करा देती हैं।

यरवदा-समझौतेका समर्थन करनेवाले अिस लेखके अन्तिम भागमें सारे प्रश्नकी समीक्षा करते हुअे बापा लिखते हैं: "गांधीजीके प्राण बचाये जा सके, यह अेक ही चीज पूना-समझौतेका औचित्य दिखानेके लिअे काफी है। परंतु तथाकथित सवर्णों और जिन्हें वे अछूत बताते हैं अुन हरिजनोंके बीच अिस अैतिहासिक अुपवासने जो अेकता स्थापित की, अुस सिद्धिको अलग रखें, ब्रिटेनके प्रधानमंत्रीको अपना निर्णय बदलना पड़ा, अिस बातको भी अेक तरफ रख दें, तो भी अिस समझौतेका नैतिक मूल्यांकन कम नहीं करना चाहिये। अुसने ब्रिटेन और दुनियाको यह बात बता दी कि हिन्दुत्वमें अब भी सामाजिक सजीवता और सांस्कृतिक अेकवाक्यता मौजूद है। और वह स्वयं अपने प्रयत्नसे अपना राजनैतिक भविष्य भी निर्माण कर सकता है।

"अिस अुपवाससे हिन्दूधर्म और हिन्दू जातिने अपनी भीतरी अेकताका दर्शन किया है और ब्रिटेनके प्रधानमंत्री और अुनके मंत्रिमंडलकी तरफसे बार बार दी गअी अिस चुनौतीका कि भारतीयोंको अपने साम्प्रदायिक प्रश्नोंका निराकरण स्वयं ही कर लेना चाहिये, अिस अुपवासने कारगर तरीके पर जवाब दिया है, यह कहूं तो मैं अतिशयोक्तिपूर्ण दावा करता हूं अैसा नहीं माना जायगा। साम्प्रदायिक निर्णयने राष्ट्रवादियोंके डरको वाजिब ठहराया, तो यरवदा-समझौतेने गोलमेज परिषद्में कुछ भारतीय प्रतिनिधियों द्वारा प्रधानमंत्रीसे घरके झगड़ेमें पड़कर निपटारा करनेके लिअे किये गये अनुरोधमें गांधीजीने शरीक होनेसे जो अिनकार किया था अुसका औचित्य सिद्ध कर दिखाया।"

अिस लेखमें जैसे बापाने हरिजनोंके मनका समाधान करनेका प्रयत्न किया है, वैसे ही समझौतेसे अस्पृश्योंने जरूरतसे ज्यादा हिस्सा छीन लिया, अिस खयालवाले सवर्ण हिन्दुओंको भी समझानेकी कोशिश की है। अिसी लेखमें अुन्होंने अेक जगह लिखा है कि:

"कुछ लोग अिस समझौतेसे १४८ बैठकें हरिजनोंको देनेका जो निश्चय हुआ है अुसकी तुलना पिछले अगस्तमें प्रधानमंत्रीके दिये हुअे साम्प्रदायिक निर्णयमें अुल्लिखित ७१ बैठकोंके साथ करते हैं और यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अंत्यजोंको जरूरतसे ज्यादा दे दिया गया है। परंतु वे यह बात भूल जाते हैं कि अछूतोंको ७१ बैठकोंके सिवाय हिन्दू जातिकी अथवा साधारण बैठकोंके लिअे चुनाव लड़नेका अधिकार मिला था। अिसके अलावा, यह भी याद रखना चाहिये कि दलित वर्गको दिया जानेवाला अलग मताधिकार कमसे कम बीस वर्ष तक जारी रहा होता, जब कि यरवदा-समझौतेके अधीन अिस चीजका तुरंत ही अंत हो गया है।"

थोड़ेमें कहें तो अिस समझौतेकी तहमें बापाकी पहली दृष्टि यह थी कि अिससे गांधीजीके जीवनकी रक्षा हो रही है। और सब दलीलें तो अुनके सरल और समाधानमूलक स्वभावने ही ढूंढ़ निकाली थी।

अिस प्रकार यरवदा-समझौता हुआ। गांधीजीका अुपवास छूटा, देश और संसारके लिअे अुनके बहुमूल्य जीवनकी रक्षा हो सकी और यह परिणाम लानेमें बापा स्वयं भी अपने यथाशक्ति प्रयत्न द्वारा हाथ बंटा सके, अिससे अुनके आनंदकी सीमा नहीं रही। अिस प्रकार बंबअीमें अेकत्र हुअे सवर्ण नेताओंका गांधीजीको बचा लेनेका तात्कालिक हेतु तो सिद्ध हुआ, परंतु साथ ही वे यह भी समझते थे कि जब तक हिन्दू समाज और हिन्दू धर्ममें से अस्पृश्यताका पाप नष्ट नहीं हो जाता, तब तक देश पर आफतके जो बादल छाये हुअे हैं, वे सदाके लिअे नहीं बिखर सकते। जब तक अस्पृश्यता नहीं मिटती, तब तक गांधीजीके मनको भी चैन नहीं पड़ेगा। और अैसा होगा तो गांधीजीकी जानका खतरा हमेशा बना ही रहेगा। अिन दिनोंमें जैसे अुन्होंने अस्पृश्यताके अस्तित्वके कारण गांधीजीकी आन्तरिक व्यथाको समझा, वैसे ही अस्पृश्यता-रूपी राक्षसका संहार करके हिन्दू धर्म और हिन्दू समाजको शुद्ध करनेकी जरूरतको भी समझा। साथ ही पूना-समझौतेके अनुसार वे अछूतोंके लिअे कुअें, तालाब, धर्मशालाअें और सार्वजनिक अुपयोगके स्थान खोल देनेके लिअे अुसे कानूनी रूप देनेका प्रयत्न करनेको भी रजामंद हुअे थे। स्वराज्यकी स्थापना तक यह चीज कानूनी रूप ग्रहण न करे, तो स्वराज्यकी पार्लियामेण्टमें यह कानून पास करानेका भी वे पहला वचन दे चुके थे।

अिस सारी परिस्थितिको ध्यानमें रखकर बम्बअीमें अिकट्ठे हुअे नेता यरवदा-समझौता करके ही नहीं रुके, बल्कि वे भारतसे अस्पृश्यताका काला मुंह कैसे हो अिसका भी विचार करने लगे। और विचारके अन्तमें गांधीजीकी

प्रेरणा, आशीर्वाद और मार्गदर्शन द्वारा अुन्होंने अस्पृश्यता नष्ट करनेके लिअे अेक भारतव्यापी संस्थाकी स्थापना की। अिसका नाम अखिल भारतीय अस्पृश्यता-निवारण-संघ रखा। गांधीजीने अिस संघके अध्यक्षके लिअे श्री घनश्यामदास बिड़लाका नाम सुझाया। परंतु बिड़लाजीको अैसा नही लगा कि वे अकेले हाथों अिस भगीरथ कार्यको चला सकेंगे। अिसलिअे अुन्होंने अध्यक्षपद संभालनेके लिअे गांधीजीके सामने अेक शर्त रखी। और वह यह कि अिस संघके मंत्रीका काम करनेको श्री ठक्करबापा तैयार हों। गांधीजीने अिस बातका तुरंत स्वागत किया और ठक्करबापासे संघका मंत्रीपद स्वीकार करनेको कहा। बापा पर भील-सेवा-मंडलके संचालनकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी। साथ ही लडाअीके दिनोंमें मंडलको आर्थिक मुसीबतोंका भी काफी सामना करना पड़ा था। अिसलिअे भील-सेवा-मंडलके कामको अिस प्रकार छोड़कर दिल्ली जाकर हरिजन-सेवक-संघका मंत्रीपद संभालना बड़ा कठिन था। परंतु बापूने बापाको समझाया। अुनके हृदयमे अपील करके कहा कि "भील-सेवा-मंडलका काम अुपयोगी तो है ही, परंतु देश और हिन्दू जातिके अितिहासकी अिस घड़ीमें हरिजन-सेवा अधिक जरूरी है। अिसकी जड़में सारे राष्ट्रकी आत्मशुद्धि करके अुसे अूंचा अुठानेकी आध्यात्मिक भावना विद्यमान है। अैसा करनेके लिअे अुच्च नैतिक बलवाले मनुष्योंकी अिस कार्यमें पहली आवश्यकता है। हिन्दू जातिने सदियों तक अस्पृश्यता जारी रखकर जो पाप किया है, अुसका प्रायश्चित्त करना है। अिस मामलेमें बापा जैसे व्यक्ति ही पहल कर सकते हैं।"

अन्तमें गांधीजीकी बात बापाकी भी समझमें आ गअी और अुन्होंने संघका मंत्रीपद स्वीकार कर लिया। अिस प्रकार भारतसे अस्पृश्यताका नाश करनेके लिअे अस्पृश्योंकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति सुधारने और सवर्णोंके हृदयोंमें पश्चात्तापकी भावना जाग्रत करके अुन्हें अपने पापका प्रायश्चित्त करनेकी प्रेरणा देनेके लिअे अस्पृश्यता-निवारण-संघकी स्थापना हुअी। बादमें जब गांधीजीने अछूतोंके लिअे 'हरिजन' शब्द अपनाया, तब अिस संघका नाम बदलकर हरिजन-सेवक-संघ रखा गया।

सवर्ण नेताओंकी बम्बअीमें जो बैठक की गअी थी, अुसमें अस्पृश्यता-निवारण-संघकी नीति और कार्यक्रम तैयार कर लिये गये और संघके अध्यक्ष और मंत्रीके हस्ताक्षरोंसे प्रकाशित किये गये अेक सम्मिलित वक्तव्यमें अिस प्रकार घोषित किये गये :

"यह संघ भारतमें सब प्रकारके प्रचलित अस्पृश्यताके कलंकसे हिन्दू जातिको सभी शांतिमय अुपायों द्वारा मुक्त करेगा।

"यह संघ सवर्णोंके मानसमें जड़मूलसे अैसा परिवर्तन करनेका प्रयत्न करेगा, जिससे वे हरिजन भाअियोंको अपने बराबर समझें और अुनके साथ वैसा ही बर्ताव करें। परंतु जाति-प्रथाका नाश और अन्तर्जातीय भोजन वगैरा संघके कार्यक्षेत्रकी मर्यादाके बाहर रहेंगे।

"अस्पृश्यताकी संस्थाके फलस्वरूप देशमें जो अनेक बुराअियां फल-फूल रही हैं, अुन सबसे भारतमें रहनेवाली समस्त जातियोंको सभी शांतिपूर्ण साधनों द्वारा संघ मुक्त करेगा। हमारी प्रजाके अेक पददलित विभागको जो अनेक प्रकारके नागरिक अधिकारोंके अुपभोगसे वंचित रखा गया है और अुनके लिअे जो रुकावटें पैदा कर दी गअी हैं, अुन्हें दूर करके हमारे ये पददलित भाअी सब प्रकारके नागरिक अधिकार भोग सकें, अिसके लिअे संघ सभी प्रयत्न करेगा।

"संघका कार्यक्षेत्र सवर्णों और जिन्हें अब तक अछूत माना गया है अुन हरिजनों, दोनों प्रकारके लोगोंमें रहेगा; और जब तक अस्पृश्यताका छोटा-सा भी निशान बाकी रहेगा, तब तक संघ सवर्णोंको धीरजसे समझा-बुझाकर अपना काम जारी रखेगा। अितने पर भी अुसके कामका मुख्य झुकाव तो रचनात्मक ही रहेगा। शिक्षाकी दिशामें हरिजनों और दलितोंको अूंचा अुठाने तथा अुनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति सुधारकर अुनकी प्रगति करनेका काम मुख्य रहेगा। यही कार्य अस्पृश्यता-निवारणकी दिशामें हिन्दू समाजको तेजीसे आगे बढ़ा सकेगा।"

संघके कार्यक्रमका ब्यौरा समझाते हुअे अुसी बयानमें बताया गया है कि,

"भारत भरमें अस्पृश्यता-निवारणका काम व्यवस्थित ढंगसे होनेके लिअे अुसे २२ प्रान्तों और १८४ केन्द्रोंमें बांट दिया गया है। प्रत्येक केन्द्रके लिअे ३,००० रु० की रकमका प्रबंध करनेको कहा गया है। अिस प्रकार सारे देशके सभी केन्द्रोंमें काम शुरू हो तो प्रतिवर्ष ६ लाख रुपये खर्च होनेका अंदाज है। अितनी रकम केन्द्रीय कोष और प्रान्तों तथा जिलोंसे होनेवाले चंदेसे प्राप्त कर ली जायगी। अिस प्रकार यह हिसाब लगाया गया है कि संघके कार्यके लिअे प्रति वर्ष छः लाख रुपयेकी रकम अिकट्ठी की जाय और हर साल खर्च कर डाली जाय।

"यह कार्यक्रम पांच वर्ष तक जारी रखनेका अिरादा है। अिस कार्यके साथ ही भारत हितवर्धक मण्डल (अिण्डिया वेल्फेयर लीग) के संचालक बंबअीके श्री डेविडका अेक सुझाव भी जोड़ दिया गया है। अिस सुझावके अनुसार १,००० हरिजनोंकी प्रारंभिक शिक्षासे लगाकर अूंची शिक्षा तकका

खर्च जुटाना है। अुनके सुझाये हुअे मार्गके अनुसार देशमें कमसे कम १,००० धनवान मनुष्योंको आगे आना चाहिये और प्रत्येक धनवान सज्जनको अेक अेक हरिजन विद्यार्थीकी शिक्षाकी जिम्मेदारी अपने सिर पर ले लेनी चाहिये। श्री डेविडका यह सुझाव हमें (अध्यक्ष और मंत्रीको) बहुत मुनासिब लगा है और हम आशा रखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति और कुछ नहीं तो कमसे कम अेक हरिजन विद्यार्थीका खर्च अुठा लेगा।"

अिस प्रकार बंबअीमें संघकी स्थापनाका काम पूरा हुआ। अुसके बाद अनुकूलताकी दृष्टिसे संघका मुख्य कार्यालय दिल्लीमें रखा गया। और तबसे ठक्करबापाने दाहोदका निवास छोड़कर दिल्लीमें रहना शुरू किया। भील-सेवा-मंडलके रोजमर्राके कामकी जिम्मेदारी अपने पुराने, विश्वस्त और अनुभवी साथी कार्यकर्ताओं पर डालकर यह नया मिशन पूरा करनेको अुन्होंने कमर कसी। और अिस प्रकार बापाने हरिजन-सेवक-संघके नये कार्यका श्रीगणेश किया।

सबसे पहला काम अुन्होंने सारे देशमें दौरा करने, प्रान्त प्रान्तमें हरिजनोंकी स्थितिका अध्ययन करने, सवर्णोंके हृदय पिघलाने और अस्पृश्यताके विरोधमें जोरशोरसे प्रचार करनेका किया। अिन छः महीनोंमें दिल्लीमें वे मुश्किलसे महीनेमें आठ-दस दिन बिताते थे। बाकीके बीस-बाअिस दिन और कअी बार तो सारा महीना वे लम्बे सफरमें गुजारते थे। अेक बरसमें ठक्करबापाने देशके भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें दौरे किये। भूख, थकावट और जागरणकी अुन्होंने परवाह नहीं की। जगह जगह घूमकर अुन्होंने हरिजनोंके प्रश्न समझे, तथ्य अिकट्ठे किये और अखबारोंमें अपनी यात्राके अनुभव और विवरण दिये। हरिजनोंकी कैसी स्थिति है, अिसका हूबहू चित्र दिया।

प्रवासमें जहां जहां गये वहीं हरिजनोंकी असली हालत आंखों देखनेका अुन्हें मौका मिला। और अुन्होंने यह देखा कि सवर्ण भाअियोंने धार्मिक मान्यताके झूठे भ्रममें पड़कर हरिजनोंको कैसी करुण स्थितिमें डाल दिया है, अुन पर वे कैसे कैसे जुल्म गुजार रहे हैं। हरिजनोंकी बस्ती गांवके बाहर अैसी गंदी जगह पर होती, जहां सारे गांवका कूड़ा-करकट डाला जाता था। वे अच्छे कपड़े नहीं पहन सकते थे। कहीं कहीं शक्ति होने पर भी शादीमें बारातका जुलूस नहीं निकाला जा सकता था, और अिसी तरहके दूसरे ठाट नहीं हो सकते थे। वर राजा घोड़े पर बैठकर या पालकीमें नहीं निकल सकता था। सोने-चांदीके जेवर नहीं पहने जा सकते थे। अिस तरह हरिजनों पर भांति भांतिके प्रतिबंध रूढ़ियोंके रूपमें प्रचलित थे। अिनके सिवाय गांवकी चौपाल, मंदिर, रास्ते, तालाब, कुअें और पाठशालाअें वगैरा सार्वजनिक अुपयोगके

स्थानोंमें वे नहीं जा सकते थे और न अुनका अुपभोग अथवा अुपयोग कर सकते थे। और दक्षिणमें तो कहीं कहीं यह हाल था कि सवर्ण हरिजनोंकी परछाईं भी अपने पर नहीं पड़ने देते थे। अगर किसी पर अुनकी परछाईं पड़ जाती तो वह भ्रष्ट हो जाता था। साथ ही दक्षिणके कुछ भागोंमें हरिजनोंको 'सेवकम् सेवकम्' बोलते हुअे चलना पड़ता था। शहरोंसे गांवोंके हरिजनोंकी स्थिति और भी खराब थी।

अिस स्थितिमें हरिजन कहीं सिर अुठाते, तो सवर्ण अुन पर क्रुद्ध होकर अुनका बुरा हाल करते थे। अुन्हें पशुओंकी तरह मारते-पीटते, अुनके झोंपडे जमींदोज कर डालते या आग लगाकर जला देते। कभी कभी बहुत अधिक मारके कारण हरिजनोंकी मृत्यु भी हो जाती। अिनमें से अधिकांशकी तो दाद-फरियाद भी नहीं सुनी जाती और यदि कोअी हरिजन-सेवक अुनकी मदद करनेका प्रयत्न करता तो अुसकी भी दुर्दशा होती। सवर्ण अुनका सामाजिक बहिष्कार करते और अन्य कअी प्रकारसे अुन्हें परेशान करते।

अधिकांश हरिजन तो सवर्णोंसे अितने ज्यादा दबे हुअे रहते कि कोअी भले सवर्ण यदि पाठशाला, चौपाल, तालाव, कुअें वगैरा सार्वजनिक स्थानोंका अुपयोग करनेके नागरिक अधिकारोंका अुपयोग करनेके लिअे हरिजनोंको अुत्साह दिलाते भी, तो वे अुनके कहने पर ध्यान न देते और कहते, 'अरे, बाबा, हम जहां पड़े हैं वहीं ठीक हैं। व्यर्थ हमें दुःखी करने क्यों आये हो?"

अिस प्रकार देश भरमें हरिजनोंकी आर्थिक स्थिति ज्यादातर बहुत खराब थी। अिसके सिवा सामाजिक और राजनैतिक अधिकारोंसे वंचित रहनेके कारण अूपर बताअी हुअी और न बताअी हुअी अनेक प्रकारकी दिक्कतें भी अुन्हें अुठानी पड़ती थीं। यहां तक कि अधिकांश हरिजनों और सवर्णोंको अिसमें कोअी बुराअी ही नहीं दिखाअी देती थी। 'हरिजन सामाजिक रूपमें अछूत हैं, आर्थिक दृष्टिसे गुलामोंसे भी बदतर हैं और धार्मिक हैसियतसे जिन मंदिरोंको हम गलत तौर पर अीश्वरके धाम कहते हैं अुनके दरवाजे अिनके लिअे बंद हैं'—गांधीजीके ये वाक्य बापाने अपने प्रवासमें जगह-जगह चरितार्थ हुअे पाये।

दूसरी तरफ गांधीजीके सितम्बर मासके 'युगप्रवर्तक' अुपवासके बाद सवर्णोंमें, अिन-गिने स्थानों पर ही सही, जागृति पैदा हो गअी थी। अुन्हें हरिजनोंके प्रति किये जानेवाले छुआछूतके पापका भान हो गया था और परिणामस्वरूप छुटपुट स्थानोंमें प्रायश्चित्तकी गंगोत्री बहनी शुरू हो गअी

थी। २० सितम्बर १९३२ से २ अक्तूबर तकके समयमें, गांधीजीके अुपवासके फलस्वरूप और ठक्करबापा तथा अन्य बहुतसे हरिजन-सेवकोंके प्रयासके कारण देशभरमें लगभग १५० मंदिर खुल गये थे और अिसी प्रकार कितनी ही पाठशालाओंमें हरिजन विद्यार्थियोंको प्रवेश मिलने लगा था। बम्बअी, दिल्ली, नागपुर, पूना और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें हरिजनोंके साथ सहभोजके कार्यक्रमोंका भी सफलतापूर्वक आयोजन किया गया था। परंतु यह सब तो समुद्रमें बूंदके बराबर था। सैकड़ों वर्षोंसे अस्पृश्यताका कीड़ा हिन्दूधर्मको भीतरसे कुतर रहा था। अुसे पूरी तरह निकाल डालनेके लिअे व्यवस्थित, संगठित और बड़े पैमाने पर अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलन छेड़नेकी और साथ साथ रचनात्मक दृष्टिसे जगह जगह काम शुरू कर देनेकी जरूरत थी। ठक्करबापा रात-दिन अेक करके भारतके लगभग तमाम प्रान्तोंमें खूब घूमे। जहां रेल नहीं जाती थी अैसे भागोंमें भी घूमकर हरिजनोंकी दशा सुधारनेके लिअे और अस्पृश्यतारूपी राक्षसका संहार करनेके लिअे देशभरमें २२ प्रान्तीय शाखाओं और १७८ जिला केन्द्रोंका जाल बिछा दिया। और अुनके द्वारा अस्पृश्यता विरोधी आन्दोलन सब मोर्चों पर छेड़ दिया।

अिस प्रकार बापा जब देशके अलग अलग भागोंमें प्रवास कर रहे थे और हरिजन-सेवाके कार्यमें मन और कर्मसे डूब गये थे, तब अचानक अेक दिन अुन्हें गांधीजीके अुपवासके निर्णयकी खबर मिली। सारे देशमें यह समाचार फैल गया था कि यह अुपवास १९३३ के मअी मासकी तारीखसे शुरू होगा। आठ दिन पहले तो अुसकी किसीको खबर भी नहीं थी। जेलमें अुनके साथ रहनेवाले श्री महादेवभाअी और सरदार वल्लभभाअी पटेल तकको नहीं थी। २७ अप्रैलको आधी रातके समय जब गांधीजीके मनमें मंथन चल रहा था, तब तो वे निश्चिन्त सो रहे थे। मनोमंथनके फलस्वरूप गांधीजीने यह निर्णय किया और रातके डेढ़ बजे अुन्होंने बयान तैयार करके दूसरे दिन सबेरे प्रार्थनाके बाद सरदार वल्लभभाअी पटेलके हाथोंमें रख दिया। महादेवभाअीका पिछली रातका जागरण होनेके कारण गांधीजीके आदेशसे वे वापस सो गये थे। दुबारा जागे तभी अुन्हें भी अिसका पता चला।

अिस दुःखद समाचारसे बहुतोंको धक्का लगा। बहुतोंको दुःख हुआ। परंतु गांधीजीको अन्तरकी जो आवाज सुनाअी दी, अुस पर अमल करनेसे अुन्हें कैसे रोका जा सकता था? अिस कदमके बारेमें सरदार वल्लभभाअीने अेक पत्रमें लिखा था, "बापूने अिस बार की हुअी प्रतिज्ञामें

किसीकी सलाह या सम्मति ली ही नहीं। . . . अिस बारकी प्रतिज्ञा केवल धार्मिक थी, अिस कारण अिसमें मेरी सम्मतिका सवाल ही नहीं था।

"रातको अेक बजे जब हम सब नींदमें पड़े हुअे थे, तब अुन्होंने अपना निर्णय किया और डेढ़ बजे अुठकर वह वक्तव्य तैयार कर लिया जो प्रसिद्ध हुआ। मैंने देखा कि अुसमें फेरबदलकी जरा भी गुंजाअिश नहीं रखी गअी थी। फिर भी अिस बारेमें पूछकर विश्वास कर लिया और जब जान लिया कि निर्णय हो ही चुका है, तब तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे लिअे अीश्वरके अधीन होनेके सिवाय कोअी चारा ही नहीं। . . .

" . . . प्रतिज्ञाके गुण-दोषोंका विचार करने पर अैसा लगा कि यरवदा-समझौतेके बाद हिन्दू समाजके कुछ भागके बर्ताव और खास तौर पर सनातनी और कुछ शिक्षित हिन्दुओंके प्रचारके ढंगको देखते हुअे जल्दी या देरसे अुपवास तो आने ही वाला था। तो फिर अितनी-सी बातके लिअे शोक क्यों किया जाय कि अुपवास थोड़े दिन और न टाला जा सका?"

जो मनोदशा, समझ और दृष्टि सरदार वल्लभभाअीकी थी, लगभग वही मनोदशा ठक्करबापाकी थी। अिसलिअे वे तो गांधीजीके अुपवासको अीश्वरेच्छा मानकर अुसके अधीन हो गये और किसी भी प्रकारका शोक करनेके बजाय गांधीजीके प्रिय अस्पृश्यता-निवारणके कार्यमें ही दुगुने वेगसे जुट गये।

अस्पृश्यताकी भावनाके कारण हिन्दू समाजने हरिजनोंकी कैसी करुण और भयंकर दशा कर दी थी, अिसका चित्र लेखों और भाषणों द्वारा वे जनसमाजके सामने बिना थके रखते ही रहे। गांधीजीके अुपवासके दौरानमें अुन्होंने 'भंगी बस्ती या नरक' शीर्षकसे अलाहाबाद, दिल्ली, कलकत्ता, मथुरा और भावनगर वगैरा बड़े शहरोंके मेहतर-मुहल्लों, अुन्हींके पास खड़े किये जानेवाले पाखानों, अुनके झोंपड़ोंके सामने ही अुंड़ेली जानवाली मैलेकी टोक-रियों और गाड़ियोंका जो कंपकंपानेवाला चित्र दिया, वह अितना हूबहू है कि पढ़नेवालेके नाक-मुंहको दुर्गंधसे भर देता है। तब जिन्हें दिन-रात अिस मैली गंदी जगहमें नरकके ढेरके बीच रहना पड़ता है अुनकी दशा क्या होती होगी? हिन्दू समाजके हाथों भंगी भाअियोंकी यह जो दुर्दशा हुअी है, अुसे दूर करना सवर्णोंका धर्म है या नहीं? यह दशा कैसे दूर हो? अिस विषयमें समझाते हुअे लेखके अंतिम भागमें ठक्करबापा लिखते हैं, "हमारे शिक्षित वर्गके लोग जब तक भंगियोंके मुहल्लेमें जाकर नहीं बसते, चौबीसों घंटे अुनके सुख-दुःखमें भाग नहीं लेते, दिन-रात अुनकी सेवा नहीं करते, तब तक अिस नरकवाससे अुन्हें मुक्ति नहीं मिलेगी।

"पतितसे पतित लोगोंके, चोर-डाकुओंके, हत्यारे लोगोंके निवास-स्थानमें जाकर हमारे साधु-संतोंने सेवा की है। गुजरातमें स्वामीनारायणकी अैसी सेवा प्रसिद्ध है। हमारी नजरके सामने ही भाअी रविशंकरने चोर-डाकुओंके बीच रहकर अुनके जीवन पलट दिये हैं। विदेशी भी अैसी सेवा करने यहां आते हैं। भंगी तो चोर, डाकू और हत्यारोंसे हजार दर्जे अच्छे हैं। अुनकी दीन-हीन दशा सुधारना हमारा धर्म है। परंतु हमने आज तक अिस तरफ ध्यान ही नहीं दिया। अिस नरकवासकी ओर अेक निगाह डालने तककी परवाह नहीं की।

"अब हमारी आंखें कुछ कुछ खुली हैं। गांधीजीके महाव्रतसे हमारी निद्रा कुछ-कुछ अुड़ी दीखती है। अैसी महाविपत्तिके समय हरिजनोंकी क्या सेवा हो सकती है, अिसका विचार करना चाहिये। आशा है कि यह सब चार दिनका तमाशा नहीं हो रहेगा और गांधीजीका महाव्रत पूरा होते ही दलित हरिजनोंकी सेवाका हमारा जोश ठंडा नहीं पड़ जायगा। दीन-दलितोंकी हायकी प्रलयाग्निसे बचना हो, तो हम जालिमोंको आज ही, अिसी क्षण चेतकर सावधान हो जाना चाहिये।"

८ तारीखको शुरू हुआ अुपवास २९ तारीखको पूरा हुआ। अुस समय गांधीजीके कुछ साथी कार्यकर्ता पूना पहुंच गये थे। ठक्करबापा भी अिस पवित्र दृश्यके साक्षी बननेके लिअे पूना गये थे। और जब बापूने प्रार्थना पूरी करनेके बाद दोपहरके बारह बजे प्रेमलीला बहन ठाकरसीके हाथों मुसंबीके रसका प्याला लिया, तब अुनके साथी, सेवक, डॉक्टर और हरिजन वगैरा बड़ी संख्यामें अुनके पास बैठे थे। महादेवभाअीके वर्णनके अनुसार "सब हरिजन भाअी सच्चे हरिजन-सेवक ठक्करबापा और जमनालालजीके चारों ओर घेरा डाले बैठे थे।"

गांधीजी अीश्वर-कृपासे बच गये। २१ दिनके अुपवास पूरे हुअे और गांधीजीने पारणा किया। अिस शुभ अवसर पर कस्तूरबा गांधी, सरदार वल्लभभाअी पटेल, मालवीयजी, राजाजी, श्री जमनालाल बजाज वगैरा नेताओंने जो संदेश भेजे थे, अुनमें ठक्करबापाने भी बापूके अनशनकी सफलताके लिअे अीश्वरका आभार व्यक्त करनेवाला यह संदेश भेजा था:

"राजाजीके कथनानुसार आज चमत्कार हो गया। हम सब अीश्वरका जितना आभार मानें अुतना ही थोड़ा है। 'रघुपति राघव राजा राम' की धुन पंडितजी लगा रहे थे, तब बापूकी अंगुलियां ताल दे रही थीं, अीश्वर-परायणताका अिससे अधिक सबूत शंकाशीलोंके लिअे और क्या चाहिये? अगर मैं यह कहूं कि हरिजनोंकी सेवा अब अधिक जोरसे, धार्मिकतासे और

सर्वव्यापी होगी और अिसमें सारा देश भाग लेगा, तो यह मेरी धृष्टता नहीं मानी जायगी। जिस धार्मिकतासे अिस आन्दोलनको पुष्टि मिली है, अुससे अधिक जोरसे वह सफल हो। हम हरिजनोंको पूरी तरह अपनायें और दुनियामें अूंचा सिर करके और छाती तानकर चल सकें, अितनी मुराद हमारी अीश्वर पूरी करे।"

२

बापूके अुपवास पूरे होनेके बाद ठक्करबापा फिर अपने काममें लग गये और पहलेके कार्यक्रमके अनुसार प्रांत प्रांतमें घूमकर प्रवास करने लगे तथा जहां जहां अनुकूलता मिली, वहां हरिजन-सेवाके केन्द्र स्थापित करने और हरिजनोंके प्रति कर्तव्यपालनके लिअे सवर्णोंके हृदय जाग्रत करनेमें अपनी सारी शक्ति लगाने लगे।

हरिजनोंकी सेवामें वे अितने तन्मय हो गये थे कि दौरेके दौरानमें अेक दिन अचानक अुन्हें अेक विचार आया। अुनके मनमें खयाल आया कि गांधीजी यदि अस्पृश्यता-निवारणके लिअे सारे देशमें घूमें और जगह जगह प्रत्यक्ष अुपदेश देकर लोगोंके अन्तःकरणको जाग्रत करें, तो अिस काममें अच्छी सफलता मिल सकती है। यह विचार बापाको खूब जंचा। अिसलिअे अुसी दिन गांधीजीके नाम अेक पत्र अुन्होंने लिख डाला और अपने काममें लग गये। दो दिन बाद अुन्हें गांधीजीका पत्र मिला। अुसमें अिस आशयकी बात कही गअी थी कि "आपका विचार अुत्तम है। अिसलिअे मैं अुसका स्वागत करता हूं। अब मुझे किस प्रकार और कहां कहां दौरा करना होगा, अिसका कार्यक्रम आपको तैयार कर लेना है। और तदनुसार मुझे सूचना दीजिये तो हम प्रवास शुरू कर दें।"

गांधीजीका जवाब पढ़कर बापाके हर्षका पार नहीं रहा। अुन्हें सपनेमें भी यह खयाल न था कि प्रवासके दिनोंमें मामूली तौर पर लिखे हुअे अुनके अिस पत्रका अितना सुन्दर और तात्कालिक अुत्तर मिलेगा। ठक्करबापाने अलग अलग प्रान्तोंके कार्यकर्ताओंके साथ पत्रव्यवहार करके गांधीजीका प्रवासक्रम बनाया। और बादमें अुसमें छोटे-मोटे जरूरी सुधार करके अिस संबंधमें अिस प्रकार वक्तव्य निकाला :

"गांधीजीकी हरिजन-यात्राके लिअे अेक कार्यक्रम तय किया गया था। परंतु हरिजन-कार्यकी प्रगतिका विचार करने पर अुसमें कुछ बड़े परिवर्तन अनिवार्य हो गये हैं। योजना यह है कि गांधीजीकी यात्रा नौ महीने तक यानी ८ नवम्बरसे ३१ जुलाअी १९३४ के अन्त तक जारी रहे। अिस

यात्राकी तारीखें और प्रान्तवार ब्यौरा नीचे दिया जाता है। प्रत्येक प्रान्तके कार्यक्रमका ब्यौरा संबंधित प्रान्तोंके हरिजन-सेवक-संघके मंत्री और अध्यक्ष तय करेंगे। जो सूचनाअें पहले जारी की गअी हैं, अुनके अनुसार क्रम निश्चित करना है। परंतु ये तीन नियम तो पालने ही चाहिये :

(१) हर रोज दोपहरके चार घंटे -- जहां तक हो सके १० से २ बजे तक सार्वजनिक कार्य बंद रखा जाय, ताकि नहाने-धोने, खाने और पत्रव्यवहारके लिअे समय मिल जाय।

(२) दिनके कार्यका आरंभ सुबह ६-३० से पहले न हो और रातके ८ बजेसे ज्यादा काम न रहे।

(३) जहां तक हो सके मोटरकी अपेक्षा रेलकी यात्रा ही पसन्द की जाय। परंतु जहां मोटरकी यात्राके बिना काम ही न चले वहां वह यात्रा प्रतिदिन ७५ मीलसे ज्यादा नहीं होनी चाहिये।

प्रवासक्रम

सप्ताहमें दो दिन -- जहां तक हो सके सोम और मंगलको -- यात्रा, मुलाकातें, भाषण वगैरा कोअी कार्यक्रम न रखा जाय, जिससे अुन दिनोंमें गांधीजीको पत्रव्यवहार निपटाने और 'हरिजन' तथा 'हरिजनबंधु' के लिअे लेख लिखनेका काफी वक्त मिल जाय। सोमवार तो मौनवार ही होता है। अिसलिअे हर हफ्ते यात्राके लिअे कामके पांच ही दिन रहेंगे।

प्रान्त	कुल दिन	तारीखें	कामके दिन
मध्यप्रान्त	३१	८ नव० से ८ दिसं०	२३
	९ दिसम्बर रेलमें और झांसीमें		
दिल्ली	५	१० से १४ दिसं०	३
	१५ दिसम्बर रेलमें -- दिल्लीसे बेजवाड़ा		
आंध्र	१४	१६ से २९ दिसं०	१०
मद्रास शहर	५	३० दिसं० से ३ जन०	३
मैसूर मलाबार	१०	४ से १३ जन०	८
कोचीन-त्रावणकोर	७	१४ से २० जन०	५
तामिलनाड	२०	२१ जन० से ९ फर०	१०
	(६ दिनका पूरा आराम)		
	१० फरवरी रेलमें -- मद्रासससे अुत्कल		
अुत्कल	७	११ से १७ फर०	५
बंगाल	२८	१८ फर० से १७ मार्च	२०

आसाम	७	१८ से २४ मार्च	५
बिहार	१४	२५ मार्चसे ७ अप्रैल	१०
युक्तप्रान्त	३५	८ अप्रैलसे १२ मअी (आरामके ७ दिनों सहित)	२०
पंजाब	१४	१३ से २६ मअी	१०
सिन्ध	७	२७ मअीसे २ जून	५
राजपूताना	७	३ से ९ जून	५
अहमदाबादमें आराम	७	१० से १६ जून	—
गुजरात काठियावाड़	१४	१७ से ३० जून	१०
बम्बअी	७	१ से ७ जुलाअी	५
महाराष्ट्र, निजाम राज्य	१७	८ से २४ जुलाअी	११
कर्नाटक	७	२५ से ३१ जुलाअी	५

अिस कार्यक्रमकी रूपरेखा कामचलाअू मानी जायगी। अिसमें परिवर्तन करने पड़े तो होंगे, परंतु वे हरिजन-कार्यके लिअे ही किये जायंगे।

अिस प्रकार अेक अिंजीनियर जितनी निश्चिततासे अपने कामका नकशा खींचता है, अुतनी निश्चिततासे ठक्करबापाने गांधीजीकी हरिजन-यात्राका नकशा खींचकर दे दिया। अिसमें, जैसा अुन्होंने बताया, परिस्थितिके अनुसार परिवर्तनकी गुंजाअिश रखी गअी थी।

यात्राका प्रारंभ मध्यप्रान्तमें स्थित सेठ जमनालालजीके निवासस्थान वर्धासे हुआ। अुपवासके बाद गांधीजी बहुत ही कमजोर हो गये थे, अिसलिअे लगभग डेढ़ मास तक अुन्होंने वर्धामें ही आराम लिया और अुसके बाद नवंबरकी ७ तारीखको अुन्होंने हरिजन-यात्रा शुरू की। वर्धामें सेठ श्री जमनालालजीने लक्ष्मीनारायणका मंदिर बनवाया था और हरिजनों सहित तमाम वर्गोंके लिअे किसी भी प्रकारके भेदभावके बिना खोल दिया था। अिसके बाद अेक और मंदिर — राममंदिर — भी वर्धामें बापूके निवासकालमें खुला। अिन मंदिरोंमें दर्शन करके गांधीजीने कार्यारंभ किया। अुसी दिन वर्धासे नौ मील दूर स्थित सेलू गांवमें अेक सज्जनने अपना मंदिर हरिजनोंके लिअे खोल देनेकी घोषणा की। अुस शुभ अवसर पर गांधीजी वहां गये और अस्पृश्यता-निवारणका संदेश दिया। अिसके बाद मध्यप्रान्तमें वे नागपुर, कटोल, कामठी, रामटेक, तुमसर, देवली, चांदा, यवतमाल, अमरावती, खामगांव, अकोला, चीखलदा, बडनेरा वगैरा गांवों और शहरोंमें घूमे।

जगह जगह सभाअें हुअीं। नागपुरमें तीस हजारकी बड़ी सार्वजनिक सभाके सामने गांधीजीने अस्पृश्यता-निवारणके संबंधमें व्याख्यान दिया। अिन सब गांवोंमें हरिजनकार्यके लिअे चंदा हुआ। पहले ही सप्ताहमें लगभग रु० १४,८१२-६-२ चंदेमें मिले। अिसी तरह दूसरे सप्ताहके दौरेमें अुन्हें रु० ९,८७८-२-६ मिले। दो हफ्तेमें गांधीजीने कुल ५०० मीलकी यात्रा की। प्रवासके दौरानमें पंडित लालनाथ और अुनकी मंडलीने गांधीजीके कार्यमें रुकावट डालनेके प्रयत्न किये। गांधीजी जहां जाते वहां वे मोटरके आगे लेट जाते, अुनके पैर पकड़ लेते और अिस प्रकार अुनके मार्गमें कठिनाअी पैदा करते। परंतु गांधीजी धर्मकार्य समझकर जिसे अपना चुके थे, अुस प्रिय यात्राको छोड़ देनेवाले नहीं थे। वे प्रेमसे समझा-बुझाकर पंडित लालनाथ और दूसरे विरोधियोंके दिल जीतनेका प्रयत्न करते।

मध्यप्रान्तका अेक विभाग पूरा करके दौरा करते-करते गांधीजी जबलपुर पहुंचे, तब अिस प्रकारके तेज दौरे और भरे हुअे कार्यक्रमके कारण अुनका खूनका दबाव बढ़ गया। अिसलिअे जबलपुरमें अुन्हें चारेक दिन आराम करना पड़ा। डॉ० अन्सारीने अुनकी देखभाल की और तबीयत सुधरते ही अुनकी यात्रा आगे बढ़ी। दिसम्बरके पहले सप्ताहमें अुन्होंने ६०० मीलकी यात्रा पूरी की। और लगभग २१,००० रुपये हरिजन-कोषमें अिकट्ठे किये। मध्यप्रान्तका दौरा खतम करके गांधीजी दिल्ली गये और वहां अेक सप्ताह रहकर लगभग अेक दर्जन सभाओंमें भाषण दिये। वहांसे चलकर कुछ समय वर्धामें आराम करके दक्षिण भारतकी यात्रा शुरू की। बेजवाड़ा, मछलीपट्टम्, मद्रास वगैरा स्थानों पर अुन्होंने भाषण दिये। प्रत्येक स्थान पर अुन्हें थैलियां भेंट की गअीं। मद्रासमें समुद्र तट पर अेक लाखके जनसमूहके समक्ष अुन्होंने भाषण देकर लोगोंसे अस्पृश्यताका नाश करके हिन्दू धर्मका कलंक मिटानेका अनुरोध किया। अिसके बाद अुन्होंने गुन्तूर, कोकोनाड़ा, अिलोर, राजमहेन्द्री, विशाखापट्टनम् वगैरा स्थानोंका दौरा किया और कुल मिलाकर अेक हजार मीलसे ज्यादाकी यात्रा की। ७६ गांवोंमें गये। और ६८,४३० रुपये जमा किये। वहांसे आगे बढ़कर वे मैसूर गये। वहांसे बंगलोर होकर अुन्होंने मलाबार, कोचीन, त्रावण-कोर वगैरा स्थानोंका दौरा किया। जगह-जगह मंदिर, कुअें, धर्मशालाअें वगैरा हरिजनोंके लिअे खुलने लगे थे, लोग बड़ी संख्यामें गांधीजीकी सभामें अुपस्थित होते थे और खुले हाथों हरिजन-कोषमें रुपया देते थे। अिस प्रकार अुनकी यात्रा और हरिजन-सेवाका कार्य वेगके साथ चल रहा था। अितनेमें अेक अैसी घटना हुअी, जिसने अुनके प्रवासको रोक दिया। १५

जनवरी, १९३४ को बिहारमें भारी भूकम्प हुआ। हजारों आदमी मारे गये। तीन मिनटमें ही अुत्तर बिहारमें अधिकांश शहर मिट्टीमें मिल गये। ९०० मीलकी रेल्वेका नाश हो गया। पुल टूट गये। रास्ते टूट गये। लाखों देहाती बेघरबारके हो गये। अुस समय बिहारके सबसे बड़े नेता राजेन्द्रबाबू जेलमें थे। सरकारने अुन्हें छोड़ दिया। अुन्होंने गांधीजीको बिहारकी परिस्थितिके समाचार दिये। तो भी गांधीजीने जहां तक हो सका हरिजन-यात्रा जारी रखी। बादमें जब अुन्हें महसूस हुआ कि अुनका धर्म अुन्हें वहां बुला रहा है, तब वे हरिजन-यात्रा स्थगित करके मार्च मासमें बिहार जानेको तैयार हुअे। हरिजन-यात्राकी अिस पहली मंजिलके अन्तमें अेक अखबारी प्रतिनिधिके हरिजन-कोषमें हुअी प्रगतिके संबंधमें प्रश्न पूछने पर अुन्होंने बताया, "दौरेमें २ मार्च तक रु० ३,५२,१३०–९–७ अिकट्ठे हो सके हैं। तीन हिसाब-किताब जाननेवाले कार्यकर्ता हमारी मंडलीके साथ प्रवास कर रहे हैं और केन्द्रीय बोर्डके सदा जाग्रत रहनेवाले मंत्री ठक्करबापाकी सीधी देखरेखमें दिनरात काम करते हैं। कअी बार अुन्हें रातमें जागकर काम करना पड़ता है। और कोषमें प्राप्त हजारों चांदी और तांबेके सिक्कोंका हिसाब मिलानेके लिअे आधी रात तक दिया जलाना पड़ता है। यह सब रुपया दिल्लीके केन्द्रीय कार्यालयमें भेजा जाता है और वहां बैंकमें सुरक्षित रखा जाता है। ये हिसाब बार बार जांचे जाते हैं और हरिजन बोर्डकी समय-समय पर होनेवाली बैठकोंमें पेश किये जाते हैं।"

हरिजन-यात्रामें गांधीजी जहां जहां गये, वहां वहां लगभग सभी जगह ठक्करबापा बापूकी छायाकी तरह अुनके साथ ही रहे। अिनका मुख्य काम गांधीजीके प्रवासकी व्यवस्था करना, अुनका समय-पत्रक ठीक करना, अेकत्रित होनेवाले चंदेको संभालकर रखना और भिन्न भिन्न प्रदेशोंमें हरिजनोंकी स्थानीय परिस्थितिके संबंधमें विस्तृत जानकारी अिकट्ठी करना था। गांधीजीकी अिस यात्राका विरोध कुछ सनातनी करते और अुनके मार्गमें विघ्न डालते थे। गांधीजी अहिंसा और प्रेमके प्रभावसे विघ्न दूर करते थे। परंतु हरिजन-यात्रा ज्यों ज्यों आगे बढ़ती गअी, त्यों त्यों कुछ सनातनी लोगोंका धीरज टूटता गया और असहिष्णुता बढ़ती गअी। बिहारके भूकम्पके बाद गांधीजीने फिर हरिजन-यात्रा शुरू की, तब जसीड़ी स्टेशन पर पंडोंने गांधीजी पर हमला किया और वे जिस मोटरमें बैठे थे, अुस पर लाठी प्रहार करके अुसकी पिछली छत्री तोड़ डाली। गांधीजी अुस वारसे बाल बाल बचे। अिसी प्रकारकी और भी दो घटनाअें बिहारमें हो गअीं। गांधीजीने 'हरिजनबंधु' के अेक अंकमें 'तीन दुःखद प्रसंगों' में अुसका जो हूबहू वर्णन

किया है, अुसमें ठक्करबापा भी कैसे अिस हमलेके शिकार हुअे थे, अिसका थोड़ासा चित्र अिस प्रकार दिया गया है:

"...दूसरे दिन २६ तारीखको सुबह दो बज कर दस मिनट पर देवगढ़ जानेके लिअे जसीड़ी जंकशनसे गाड़ी पकड़नी थी। पंडित लालनाथ अपनी टोलीके साथ हर स्टेशन पर अुतरते और 'हम अिन्हें हरिजन कामके लिअे आगे नही बढ़ने देंगे' के नारे लगा कर गाते और दूसरी घोषणायें करते। अिससे मेरी वह रात बिगड़ गअी। मेरी जानकारीके अनुसार अुन्हें किसीने ये प्रदर्शन करने पर सताया नहीं था। जैसा हमेशा होता है, हर स्टेशन पर मुझसे मिलने झुंडके झुंड लोग आते। मैं अपनी यात्रा बन्द कर दूं, अिस ढंगसे सनातनी मुझे सतानेका प्रयत्न करते। परन्तु लोग शान्त रहते। अिस प्रकार मैं जसीड़ी पहुंचा, जहां पर मानव-सागर अुमड़ रहा था। स्टेशन पर दिये-बत्तीका बंदोबस्त ठीक नहीं था, अिसलिअे मैं किसीका मुंह नहीं देख सकता था। पुलिस तो वहां थी ही। मुझे सहीसलामत ले जानेमें स्वयंसेवकोंके साथ वह भी थी।

"जहां टिकट लिये जाते हैं अुस दरवाजे पर पहुंचनेके बाद हम दम घोंटनेवाली भारी भीड़में से गुजरे। बीच बीचमें काले झंडेधारी भी थे। अत्यंत कठिनाअियोंके बीच पुलिस कर्मचारियों और स्वयंसेवकोंने मुझे मोटर-गाड़ीमें बिठाया। ठक्करबापा जो मेरे साथ ही आनेवाले थे, न आ सके। गाड़ीको वहां अधिक देर ठहराना खतरनाक मालूम हुआ। अिसलिअे गाड़ी धीरे धीरे आगे बढ़ने लगी। गाड़ीकी छत पर सख्त चोटें पड़ने लगीं। मुझे लगा कि छत अभी टूट कर चूर चूर हो जायगी। अितनेमें छतके पिछले हिस्से पर अेक प्रहार हुआ। कांचके टूटे हुअे टुकड़े मेरे पास गिरे। शशिबाबूको, जो आगेकी बैठक पर बैठे थे, विश्वास था कि यह पत्थरकी चोट है और कांच तोड़नेके लिअे लगाअी गअी है। मुझे अिसका पक्का पता नहीं। परन्तु मैंने अितना जान लिया कि मैं अधिक नहीं तो भारी आघातसे बच गया।"

जसीड़ी स्टेशन पर हुअी घटनाके सम्बन्धमें देवगढ़में व्याख्यान देते हुअे गांधीजीने कहा था, "...परन्तु यहां भाषामें तो सभ्यता है ही नहीं, लोग मार-पीट पर भी अुतर आये हैं। सबेरे जल्दी ही अढ़ाअी बजे मैं जसीड़ी स्टेशन पर अुतरा तो अुन्होंने तिरस्कारभरी वाणीसे आकाशको गुंजा दिया। वे हिंसक भी बन गये। अुनसे होता तो वे मोटरकी छत्री अवश्य तोड़ डालते। छत्री पर भारी चोटें तो पड़ीं ही। पिछला कांच तोड़ डाला गया और मैं अीश्वर-कृपासे ही गंभीर चोटसे बचा। मैं मानता

हूं कि मुझे शारीरिक हानि पहुंचानेकी अुनकी अिच्छा नहीं थी। छत्री पर लाठियां मार कर और कांच तोड़ कर अुन्हें केवल मुझ पर आये रोषका प्रदर्शन करना था। परन्तु अुनका हेतु कुछ भी हो, अुनका कृत्य अवश्य हिंसक था। अुसके शायद अैसे परिणाम होते, जिनसे अुन्हींको खेद होता।"

देवगढ़की गांधी-स्वागत-समितिके मंत्री और कांग्रेस महासमितिके सदस्य श्री शशिभूषण रायने, जो गांधीजीकी मोटरमें थे, अिस घटनाका वर्णन करते हुअे बताया कि, "जसीड़ीमें गांधीजीके शरीर पर हमला करनेवाले वैद्यनाथ धामके पंडे थे। अुनके नेता देवगढ़के कुछ पंडे थे, जो बिहार प्रान्तीय वर्णाश्रम संघके पदाधिकारी हैं और देवगढ़में रहते हैं।

"गांधीजी २६ अप्रैलको प्रातः २-१० बजे जसीड़ी स्टेशन पर पहुंचे। पुलिस द्वारा किये गये प्रबंधके अनुसार स्वागत-समितिके पांच सदस्योंको प्लैटफार्म पर जाने दिया गया था। गांधीजी और ठक्करबापाको अुसी गाड़ीसे आये हुअे स्वयंसेवक घेर कर चलने लगे। अिस संघको गौरीशंकर डालमियाके हवाले कर दिया गया। दरवाजे पर गांधीजीको अेक दो मिनट रुकना पड़ा, क्योंकि बाहरका मोटर तकका रास्ता काले झंडेवाले पंडोंने रोक लिया था। श्री कमलादत्त द्वारी और श्री राधेश्याम पाठपति अुनके नेता थे। मैंने स्वयंसेवकोंकी कतारको रुक जानेका हुक्म दिया और अुन्हें प्लैटफार्म पर रह कर संघके दूसरे आदमियोंकी मदद करनेको कहा। श्री बालेश्वरसिंहको, जिन्हें गांधीजीका अंगरक्षक मुकर्रर किया गया था और जो दायीं तरफ खड़े थे, गांधीजीको संभालनेका हुक्म दिया गया। मैं मोटरको चलनेके लिअे तैयार रखनेको आगे गया।

"गांधीजी मुश्किलसे दरवाजेके बाहर निकले। अुस समय अुनके मुंहके सामने और सिरके अूपर जोर जोरसे काले झंडे फहराये जा रहे थे। बालेश्वरसिंहने और दूसरोंने अपने सिरों पर और हाथों पर वार झेल कर गांधीजीकी रक्षा की। ठक्करबापा हमसे अलग पड़ गये; और हम गांधीजीको अकेले ही मोटर तक ले जा सके। मोटरकी अगली बैठक पर पंडित विनोदानंद झा और मैं बैठे थे। गांधीजीने पूछा कि ठक्करबापा कहां हैं? हमने कहा कि वे दूसरी मोटरमें आयेंगे। गांधीजीकी मोटरके आगे स्वयंसेवकोंकी लारी चल रही थी। गाड़ियां धीरे धीरे चलने लगीं। परन्तु थोड़ी ही दूर गये कि लारी रोक दी गअी। अिसलिअे गांधीजीकी मोटरको लारीसे आगे निकल जाना पड़ा। मोटर आगे चली तो बन्द मोटरकी छत्री पर लाठियोंकी मार पड़ी। अिसलिअे मोटरको बहुत नुकसान हुआ। यह देख कर कि गांधीजीकी जान जोखिममें है कैप्टन सत्यनारायण पांडे मोटरके

पीछे कांचकी तख्तीकी रक्षा करते हुअे खड़े रहे। परन्तु वे नीचे गिर गये और दूसरी मोटरके नीचे दब गये। अुन्हें गंभीर चोट पहुंची है और वे अस्पतालमें पड़े हैं। अिस प्रकार मोटरका पिछला भाग अरक्षित हो गया, तो पत्थर फेंके जाने लगे। अुनमें से अेक पिछले हिस्सेमें लगा और दूसरेसे गांधीजीके सिरसे लगी हुअी पीछेके कांचकी तख्ती टूटी। तख्ती मोटी होनेके कारण अुसने पत्थरके वेगको रोका, नहीं तो अुससे गांधीजीके सिरको गहरी चोट लगती। मैंने कल गाड़ीकी जांच की है और जैसा गांधीजीने कहा है, मुझे अिसमें जरा भी शंका नहीं कि वह पत्थर गांधीजीके सिरको ताक कर ही मारा गया था और अुसीसे तख्ती टूटी थी। अिस प्रकार लाठीकी मार सहन करती–करती मोटर धीरे धीरे पचासेक गज चल कर भीड़से बाहर निकली और फिर आजादीके साथ चलने लगी। अिस प्रकार देवगढ़के काले झंडेवाले पंडों और दो तीन मारवाड़ियोंके हमलेसे भगवानने गांधीजीको बचा लिया। स्वयंसेवकोंके कप्तान श्री मदियाके सिर और पीठ पर सख्त घाव लगे हैं। अिसके सिवाय गांधीजीको बचानेकी कोशिश करनेमें २४ स्वयं-सेवकोंको चोटें आअी हैं।"

अैसे प्रसंग पर ठक्करबापाके मनकी स्थिति भी अस्थिर रहती थी। गांधीजीके प्रति भक्तिभावके कारण अुन्हें चिन्ता होती थी कि कहीं गांधीजीको चोट न पहुंचे। फिर भी अुन्हें हमेशा यह श्रद्धा रहती थी कि गांधीजी अिन सब विघ्नोंको पार करके अन्तमें सुरक्षित रूपमें बाहर आयेंगे। कठिनाअियोंमें से मार्ग निकालनेकी गांधीजीकी शक्तिमें अुन्हें पूरा विश्वास था।

अप्रैल मास पूरा बिहारके दौरेमें बीता। अुसके बाद मअी मासकी ४ तारीखको गांधीजी, ठक्करबापा और अुनकी मंडली अुड़ीसाके लिअे रवाना हुअी। यहां गांधीजीको पैदल यात्रा करनेका विचार सूझा। बादमें ठक्करबापा और अुत्कलके कार्यकर्ताओंके साथ अुन्होंने अिस बारेमें चर्चा की। ठक्करबापा और अुत्कलके कार्यकर्ता दोनोंने यह राय जाहिर की कि शुरूमें पुराने तय किये हुअे कार्यक्रमके अनुसार ही यात्रा करनी चाहिये। परन्तु गांधीजीने पैदल यात्राका मर्म अुन्हें समझाया तो अन्तमें ठक्करबापा और अुड़ीसाके कार्य-कर्ता दोनों सहमत हो गये। जगन्नाथपुरीसे कटक तक ५५ मीलका रास्ता पैदल तय करनका निश्चय किया और अुसके अनुसार दौरा शुरू भी हो गया। अुसका बहुत ही रसप्रद वर्णन ठक्करबापाने अपने छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्करके नाम प्रवासके तीसरे दिन लिखे गये पत्रमें किया

है। यह पत्र सहृदय बापाकी कोमल भावना और आदर्शनिष्ठाकी झांकी करानेवाला होनेके कारण पूरा यहां अुद्धृत किया जाता है:

"पुरी जिलेका दांड मुकुन्दपुर गांव
ता० ११–५–१९३४

"भाअी केशवलाल,

"तुम्हारा पत्र बहुत दिनोंसे नहीं आया। मेरा खयाल है कि तुम्हारा पत्र मिले बहुत दिन हो गये। संभव है मैंने अुत्तर नहीं दिया हो। अिसलिअे तुम मेरे खतका अिंतजार कर रहे होगे।

"गांधीजीको नयी सृष्टिकी रचना और पुरानीका अन्त करनेमें देर नहीं लगती — यही अभी अभी हुआ है। राजनैतिक मामलेमें अुन्होंने जो किया अुसकी बात मैं नहीं लिखता — अिसका तो जिन्हें दुःख हुआ हो, जो बर्बाद हो गये हों, वे रोना रोयेंगे। मैं तो हरिजन-यात्राके सिलसिलेमें लिख रहा हूं। अब तक रेल और मोटरसे छः महीने यात्रा की। बीचमें बिहार भूकम्पके कष्ट-निवारणका काम आ गया और अुसके लिअे अेक मास बिहारमें लगाया। वह ठीक था। अैसा करना जरूरी था। परन्तु अभी तक जिन जिन प्रान्तोंका दौरा करना बाकी रहा है वहां घूमनेमें रुकावट आ गअी; अुन्होंने डाल दी। अभी बंगाल, यू० पी०, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र और सिंध — अितने प्रान्त बाकी रहे हैं। अिन सबकी यात्रा बिहार-भूकंपके दिनोंसे पहले जितने दिन दिये थे अुनसे आधे दिनोंमें पूरी कर लेनी थी। अैसा करनेमें ३१ जुलाअी आ जाती और गांधीजीके जेलसे छूटनेको अेक वर्ष पूरा हो जाता, अथवा अुनके वापस जेलमें जानेका समय आ पहुंचता।

"परन्तु अितनेमें ही बुढ़अूको अीश्वरीय आदेश मिल गया। विचार-स्फुरणा तीव्र हो गअी। 'बस, अब मैं तो रेल-मोटरसे तंग आ गया हूं। शहरोंके लोगोंके 'गांधीजीकी जय' के नारोंसे मेरे कान बहरे हो गये है। मुझसे अब यह सहन नहीं हो सकता। हरिजन-यात्रा करनेका जो व्रत लिया है, अुसे ३१ जुलाअी तक तो पूरा करना ही है। परन्तु वह रेल-मोटरसे न करके पहलेके यात्रियोंकी तरह पैदल करना है।' अुनकी यह हठ पिछले दस–पंद्रह दिनसे शुरू हुअी।

"मेरी दलील थी कि 'आगेकी यात्राके लिअे प्रान्तोंको वचन दिये जा चुके हैं, कार्यक्रम बन चुका है। पहले दो-तीन बारके कार्यक्रम झूठे साबित हो चुके हैं। अिसलिअे अब फिर अुन्हें अेक बार निराश नहीं होना पड़े। वर्ना लोग कहेंगे कि हमने वचनभंग किया।'

" 'प्रान्तोंवाले यदि सब हां करते हों तो मुझे कोअी आपत्ति नहीं,' यह दलील भी मैंने अुस समय दी, जब गांधीजी मुझ पर अधिक दबाव डालने लगे।

"अितनेमें तो हम जगन्नाथपुरीमें आ पहुंचे। काठकी मूर्तिवाले जगन्नाथजीके गांवमें आने पर अेक दम जोश आया। अुड़ीसाके कार्यकर्ताओंको बुलाया। पहले मैंने अकेले अुनके साथ चर्चा की। मैंने 'प्रोस' और 'कॉन्स' (बापूके अिस विचारके पक्ष और विपक्ष) बताये। अुन सबने निश्चय किया कि प्रत्येक जिलेमें जहां जानेके वचन दिये जा चुके हैं वहां जरूर जायं, परन्तु अुन स्थानों पर आधा दिन या अेक दिन अुनकी अिच्छानुसार हम पैदल चलनेका बन्दोबस्त कर देंगे। अुस दिन गांधीजीका मौन था। दूसरे दिन अुनके रूबरू अिस प्रश्न की चर्चा हुअी।

"वे कहने लगे, 'मैं अैसे समझौते (कम्प्रोमाअिज़) से खुश नहीं होता। मुझे तो पूरा लड्डू चाहिये।' बूढ़ेके मेग्नेटिज्म (आकर्षण) या हिप्नोटिज्म (तंत्रविद्या) के कारण सब चुप हो गये।

" 'हम आध्यात्मिक मूल्यों (स्पिरिच्युअल वेल्यूज़) को नहीं समझते। आपको पैदल यात्रामें धार्मिकता प्रतीत होती हो तो आप भले ही वैसा कीजिये। हम तो आपके चलाये चलेंगे'। नरम अुड़िया भाअियोंने कहा।

"बस, दूसरे ही दिन मंगलवार ता० ९ को सबेरे साढ़े पांच बजे पैदल यात्रा प्रारंभ कर दी। आज तीसरा दिन है। संघ चलता रहता है। रोज आठ मीलकी यात्रा दो हिस्सोंमें सुवह-शाम मिल कर करते हैं।

"अपने राम तो पहले ही दिन पांच मील चलकर, दोनों पैरोंमें चप्पलकी रगड़से तीन छाले कर बैठे।

"गांधीजीने अेक 'लड़की' (अर्थात् राजकोट वनिता विश्रामकी सुपरिंटेंडेन्ट सुशीला पै — बम्बअी म्युनिसिपैलिटीके स्वर्गीय रा० ब० पैकी लड़की) से कहा कि ठक्करबापाके पैर बहुत थक गये हैं। अुन पर गरम पानी डालकर सेक करो। हमारी पहलेकी बुढ़ियाओं जैसे अुपाय अिस बूढ़ेको खूब आते हैं। 'छालोंको फोड़ना मत। बोअर युद्धमें सफर करते हुअे मेरा यही हाल हुआ था। पहले साबुन और गरम पानी और बादमें नमकका पानी पैरों पर डालो। बादमें घी की मालिश करो।' अिस प्रकार बापूने मेरे पैरोंका अिलाज कराया। अिससे थकान और छालोंकी तकलीफ कम हुअी। अुसी दिन शामसे बैल-गाड़ीमें बैठनेका अितजाम किया। अब थोड़ी गाड़ीमें और थोड़ी पैदल यात्रा करता हूं।

"पिताजी और मांके साथ तुम लोगोंने जगन्नाथपुरीकी पैदल यात्रा की थी और अुसका जो वर्णन करते थे, वह सब याद आ रहा है। १९२१ में भी याद आता था और अब १९३४ में भी याद आ रहा है। संघ पहले दिन तो छोटा था। दूसरे तीसरे दिनसे बढ़ता गया। गांवोंके लोग गांधीजीका संघ देखने और दर्शन करनेके लिअे रास्ते पर भीड़में खड़े रहते हैं। बुढ़अू घुटनेके अूपर तक धोती पहने, नंगे शरीर और गंजे सिर, दोनों तरफ अेक अेक 'लड़की' के कंधे पर हाथ रखकर दौड़ता हुआ चलता है। कल जब अुन्हें जरा छाला पड़नेको हुआ तो जूते हाथमें ले लिये। आज भी मैंने अुन्हें नंगे पैर चलते देखा। 'अब सड़क पर कंकर नहीं, अिसलिअे नंगे पैर चलना ठीक रहता है,' — मैं गाड़ीसे अुतरकर चल रहा था तब अुन्होंने यों कहा।

"आज पुरीसे २१ मील पर आ पहुंचे हैं, अेक पक्के मकानमें डेरा है। मैं अपना बिस्तर बिछा कर यह पत्र लिख रहा हूं। पासके कमरेमें केलेके पत्तेकी पत्तलें लग रही हैं और हरखचंद परोसवा रहे हैं। अुड़िया और हिन्दी भाषाकी बातें चलती रहती हैं। 'बापा' से कह रहे हैं कि खानेको चलिये।

"हमारा रोजका कार्यक्रम आजकल अिस प्रकार है:

"१. सुवह चार बजे सब अुठते हैं। मैं ३—३॥ बजे अुठ जाता हूं। गांधीजी तो अेक दो बजे ही अुठ जाते हैं और बस्ता खोल कर पत्र लिखने बैठते हैं और अपने प्रसिद्ध टेढ़ेमेढ़े गुजराती अक्षर निकालते हैं। ४ से ४—२० शौच, ४—२० से ४—४० प्रार्थना, ४—४० से ५—१५ बांधाबूंधी — नाश्ता, ५—३० बिदाअी।

"२. चारसे सात मीलकी यात्रा करना। ७॥ बजे — देरमें देर आठ बजे पहुंचना। जाते ही गांवमें सभा करना। फिर वहां जाना जहां आगे जानेवाले आदमियोंने ठहरनेका बंदोबस्त कर रखा हो। स्नान करना, कपड़े धोना, रसोअी बनाना। यह मौसम गरमीका होनेसे आमका अुपयोग अच्छा होता है।

"३. ग्यारह बजे खा पीकर पत्रव्यवहार, आराम, नींद। दोसे तीन बजे तक पूर्व व्यवस्थाके अनुसार भाषण तथा तीनसे चार तक बापूसे बाहरके आदमियोंकी मुलाकात वगैरा। ४ से ४॥ फुटकर काम। बादमें ब्यालू और ५॥ बजे शामको कूच।

"४. ५॥ से ७ तक तीनसे चार मीलका प्रयाण। जाते ही सभामें प्रार्थना, बादमें सभा। फिर जहां पहलेसे डेरेका प्रबंध किया गया हो वहां

जाकर १० बजे तक पत्रव्यवहार, व्यवस्था, कामकाज और सो जाना।

"सबेरे रोज साढ़े पांच बजे निकल पड़नेमें बड़ा आनंद आता है।

अमृतलाल वि० ठक्करके वन्देमातरम्"

अुड़ीसाकी पैदल यात्रा पूरी करनेके बाद गांधीजी वर्धा और बम्बअीमें कांग्रेसकी कार्यसमितिमें भाग लेने गये। बम्बअीमें वे ता० १७ और १८ दो दिन ठहरे। अुसके बाद वे और ठक्करबापा वगैरा सब ता० १९ को पूना गये। वहां थोड़े दिन रह कर वे अस्पृश्यता विरोधी आन्दोलन चला रहे थे। ता० २५ को पूनाकी म्युनिसिपैलिटीने मानपत्र देनेका निश्चय किया। गांधीजी, ठक्करबापा और अुनकी मंडली मोटरमें बैठ कर अुस सभामें जा रही थी। अुस समय किसी धर्मान्ध सनातनीने पागल बन कर गांधीजीकी मोटर पर बम फेंकनेका प्रयत्न किया। सौभाग्यसे जिस मोटरको अुसने गांधी-जीकी मोटर समझा था वह अुनकी नहीं थी। अिसलिअे गांधीजी बच गये। ठक्करबापा भी बच गये। परन्तु अुस मोटरमें बैठे हुअे दूसरे आदमी घायल हुअे। हां, अुन्हें विशेष चोट नही पहुंची और तत्काल सार-संभाल हो जानेसे अेक भी आदमीकी प्राणहानि नहीं हुअी। गांधीजीने अिस कृत्यको पागल-पनका काम मान कर अुसकी निन्दा की और यह आशा प्रगट की कि अिस कामको किसी समझदार सनातनीका समर्थन नहीं होगा। पूनासे गांधीजी अहमदाबाद गये और वहांसे काठियावाड़का दौरा किया। अिसके अलावा वे जिस जिस जगहका दौरा बाकी रहा था अुसकी पूर्ति करने अजमेर, कराची, लाहौर, कलकत्ता, कानपुर, लखनअू और बनारस वगैरा शहरोंमें घूमे और अिस प्रकार ९ मासकी हरिजन-यात्रा पूरी हुअी। अिस यात्राके दौरानमें गांधीजी और ठक्करबापाने १२,५०० मीलका सफर किया। आठ लाखसे अूपर रुपये हरिजन-कोषमें अिकट्ठे किये। अिसके सिवाय प्रत्येक प्रान्तमें और गांव गांवके सवर्णों और हरिजनोंमें नअी जागृति और नअी चेतना आअी।

१९३३-३४ के वर्षमें गांधीजीके साथ बापाने ९ मास प्रवास किया। अिसके सिवाय यात्राके पहले महीनों और पिछले महीनोंमें हरिजन कार्य-सम्बंधी अुनके दौरे चालू ही रहे। १९३३-३४ के वर्षमें बापाकी कारगुजारी बतानेवाले दौरोंके आंकड़े अुस वर्षके भारत-सेवक-समाजके वार्षिक विवरणमें अिस प्रकार दिये गये हैं। अुनसे बापाके लम्बे दौरों और अुनमें बिताये हुअे दिनोंकी कल्पना होगी।

वर्ष	मास	कुल दिन	केन्द्रमें बिताये हुअे दिन	दौरेमें बिताये हुअे दिन
१९३३	अप्रैल	३०	१०	२०
	मअी	३१	२७	४
	जून	३०	—	३०
	जुलाअी	३१	१४	१७
	अगस्त	३१	१०	२१
	सितंबर	३०	—	३०
	अक्तूबर	३१	२९	२
	नवम्बर	३०	—	३०
	दिसंबर	३१	२२	९
१९३४	जनवरी	३१	—	३१
	फरवरी	२८	—	२८
	मार्च	३१	१४	१७
		३६५	१२६	२३९

गांधीजीकी हरिजन-यात्रा तो पूरी हुअी, परन्तु ठक्करबापाके हरिजन-कार्य सम्बंधी प्रवासका तो अन्त ही नहीं था। ज्यों ज्यों काम आगे बढ़ने लगा, त्यों त्यों दौरे भी बढ़ने लगे। १९३४ के जुलाअी मासमें अुन्होंने सिंधके कुछ कार्यकर्ताओंके साथ मरुप्रदेशके देहाती अिलाकेमें अूंट पर २०० मीलका सफर किया और दक्षिण सिंधके हरिजनोंकी स्थितिका ब्यौरेवार विवरण प्रकाशित करके बताया कि "थरपारकर जिला विशाल मरुप्रदेश है। अुसका क्षेत्रफल १३,६०० वर्गमील और आबादी ४,६८,००० से कुछ ज्यादा है। . . . अिस आबादीके बीस फीसदी यानी ९४,००० हरिजन हैं। अुनमें ३५,००० मेघवाल, ४८,६०० भील, ९,१०० कोली और १,००० दूसरी विविध जातियोंके लोग हैं। अिन तीनों जातियोंको कट्टर हिन्दू समान रूपमें अछूत मानते हैं, क्योंकि वे सब मुर्दार मांस खाती हैं। अिस प्रदेशमें आबादी कम होनेसे गांव बहुत छोटे छोटे होते हैं, अिसलिअे अुनमें पाठशाला चलाना आर्थिक दृष्टिसे बहुत मुश्किल है।

"अिस प्रदेशके हरिजनोंकी आर्थिक स्थिति अत्यंत शोचनीय है। यहां सहकारी समितियां न होनेसे लेन-देनका अिजारा बनियोंके हाथमें है। वे भारी ब्याज लेते हैं। अिसके सिवाय ये साहूकार गरीबोंसे जबरन् बेगार कराते हैं। . . . अिस प्रदेशमें पानीका प्रश्न बड़ा विकट है। कुअेंमें १०० से ३००

फुट नीचे पानी होता है। और कुआं बनानेका खर्च ३०० से १,५०० रुपये तक होता है। सौभाग्यसे यहां हरिजनोंको सार्वजनिक कुओंसे पानी भरने दिया जाता है, यद्यपि पानी भरनेके लिअे अुनका अलग समय होता है।

"अिस अिलाकेमें दो हरिजन आश्रम चलाये जाते हैं। अेक जोधपुर रेलवे लाअिनसे आठ मील दूर गकरोमें और दूसरा सिन्धकी अेक दक्षिणकी सरहद पर रेलवेसे १०० मीलसे अधिक अंतर पर नगरपारकरमें है। पहलेमें अक्षरज्ञानके अतिरिक्त अून तथा रुअी कातना-बुनना और चमड़ेका काम सिखाया जाता है। निरक्षरताकी मरुभूमिमें ये दो आश्रम मीठे झरनोंके समान हैं। अन्य दो आश्रमोंकी खास जरूरत है। अेक छछोके पास और दूसरा माथीमें। ये दो आश्रम चलानेमें कमसे कम ३०० रुपये मासिक चाहिये, परन्तु अुसकी सुविधा अभी नहीं हो सकती। मगर यहां अिससे अधिक जरूरत तो सारा समय देनेवाले सेवाभावी मंत्रीकी है, जो थरके रेतीले टीलोंके प्रदेशमें अूंट पर सफर करके अिस वीरान मुल्कमें रहनेवाले हरिजनोंका मित्र और मार्गदर्शक बने।"

अिसके बादके महीनोंमें ठक्करबापाने झांसी, होशंगाबाद, नागपुर, कारंजिया, अमरकंटक, पेंडरारोड, बिलासपुर, सारकंडा, वर्धा, अमरावती, मोरसी, बड़नेरा, भुसावल वगैरा स्थानोंका दौरा किया और वहांसे गुजरातमें अुतर कर थोड़े दिन साबरमती आश्रममें रह कर नवम्बर माससे काठियावाड़में लखतरसे प्रवास शुरू किया। काठियावाड़में कुल मिला कर अुन्होंने ३२ दिन दौरा किया। अुसमें वढ़वाण, मूली, लींबड़ी, नागनेश, राणपुर, बोटाद, सोनगढ़, पालीताणा, सुरका, सिहोर, भावनगर, वरतेज, सथरा, रोयल, तमाजा, महुवा, कुंडला, बगसरा, अमरेली, जेतपुर, जूनागढ़, वंथली, वडाल, केशोद, वेरावल, चोरवाड़, बालागाम, शील, पोरबन्दर वगैरा स्थानोंमें घूमे। काठियावाड़के हरिजनोंकी आर्थिक और सामाजिक दोनों स्थितियां आंखों देखकर अुनके सम्बंधमें विस्तृत जानकारी अिकट्ठी की। अुनके लिअे पाठशाला, कुअें, दवा वगैराकी सहूलियतें हैं या नहीं, अिसकी जांच की और अिस बारेमें 'मेरी यात्रा' शीर्षक दस बारह लेखोंकी लेखमाला 'हरिजनबंधु' में शुरू की। अिस लेखमालामें हरिजन प्रश्न सम्बंधी अुनके सावधानीपूर्ण अवलोकन और अध्ययनके दर्शन होते हैं।

हरिजन-यात्रामें अुन्होंने हरिजनोंकी सबसे बड़ी और रोजमर्राकी कठिनाअी पानीकी पाअी। अिसलिअे प्रवासके अंतमें अुन्होंने 'हरिजनबन्धु' में 'हरिजनोंको पानी दो' नामक नीचेका लेख लिखा, जिसे पढ़ कर आज भी सहृदय मनुष्यका हृदय हिल जाता है।

"काठियावाड़की मेरी अेक माससे अधिककी हरिजन-यात्रा ता० १५ (दिसंबर १९३४) को पूरी हुअी है। और अब कच्छकी आठ दिनकी यात्रा भी पूरी होने आअी है।

"अपने अिस दौरेमें मैं ७२ गांवों और ११८ हरिजन मुहल्लोंमें घूमा हूं। अिसके अलावा पचास गांवोंके हरिजनोंने स्वयं अपनी कठिनाअियां मुझे कह सुनाअी हैं। जहां जहां हरिजनोंके सुख-दुःख सुनने और अुनकी स्थितिकी कल्पना प्राप्त करने बैठता, वहीं हरिजनोंने खुद अपने गांवकी या आसपासके गांवोंकी अैसी शिकायतें कह सुनाअीं कि 'अपने पानीके लिअे हमें चोरी करनी पड़ती है। पकड़े जाने पर हमारी औरतों पर पत्थरोंके वार होते हैं, घड़े फोड़ दिये जाते हैं। जहां स्त्रियां बच्चोंके पोतड़े धोती हों या गाय-भैंसें पैरोंसे कीचड़ रोंद कर पानीको गंदा कर देती हों, अैसे तालाबके गंदे पानी पर हमें गुजर करना पड़ता है। मवेशियोंके कुंडके कीड़े पड़े हुअे पानी पर निर्वाह करना होता है। अिस तरहका कुंडका पानी प्राप्त करनेके लिअे भी कहीं कही तो हमें फी घर हर साल अेक रुपया चड़सवालेको देना पड़ता है।

"अैसी खून अुबालनेवाली, हृदयको हिला देनेवाली दीन-हीन हरिजनोंकी हाय सुनकर अेक काठियावाड़ी और अेक हिन्दूके नाते मैं शर्मिन्दा होता हूं।

"ब्रिटिश हिन्दुस्तानके खास गुजरातमें तो तालुका और जिला बोर्डोंने, म्युनिसिपैलिटियोंने तथा ग्राम और प्रान्त पंचायतोंने बाकायदा अैसे तख्ते कुओं पर लगाये हैं कि सार्वजनिक कुअें हरिजनोंके लिअे खुले हैं। और तदनुसार हरिजन किसी किसी जगह सार्वजनिक कुओंका बेरोकटोक अुपयोग करने लगे हैं तथा दूसरे स्थानों पर अैसा प्रयत्न करने लगे हैं।

"अैसी स्थिति मेरे काठियावाड़में कब आयेगी? राजा और प्रजा हरिजनोंके प्रति अपना फर्ज समझने लगें और अिसमें बरसों बीत जायं तब तक हवाके बाद जीवनकी प्राथमिक आवश्यकता — पानी — के बिना हरिजनोंको तड़पाना हमारे मनुष्यत्वको शोभा नहीं देता। अिसलिअे आपद्धर्म समझ कर अभी तुरंत हरिजनोंके लिअे अलग कुअें बनवानेकी हरिजन-सेवक-संघने हिम्मत की है।

"कुओंकी मांग हरिजनोंकी तरफसे चारों ओरसे आ रही है। अिस मांगको अेक-दो वर्षमें पूरा नहीं किया जा सकता। अिस साल हरिजन-सेवक-संघके मारफत समस्त काठियावाड़में लगभग सौ कुअें बनवानेको

काठियावाड़के राज्यों और संघोंकी ओरसे सहायता मिल जायगी, अिस विश्वाससे कअी जगह बनवानेका वचन दे चुका हूं।

"हरिजनोंको पानी देनेके लिअे मेरी मांग बड़ी नहीं है। औसतन् हर कुअें पर २५० रुपये खर्च आयेगा। अिस हिसाबसे काठियावाड़ और बृहद् काठियावाड़में अैसे सौ दानवीर लोग हरिजनोंका हार्दिक आशीर्वाद लेनेको बाहर निकल ही आयेंगे, यह श्रद्धा रख कर काठियावाड़ हरिजन-सेवक-संघको कुओंका काम हाथमें लेनेकी सूचनाअें देकर मैं अपने स्थान दिल्लीको जा रहा हूं।"

अिस बयानके बाद काठियावाड़में, जहां हरिजनोंके लिअे पानीकी बिलकुल व्यवस्था नहीं थी, कुअें खुदवाना शुरू हुआ और यह काम कुछ वर्ष तक चालू रख कर हरिजनोंके पानीका प्रश्न कुछ हद तक बापाने हल किया।

१९३५ के सालमें हरिजन कार्यकी काफी प्रगति हुअी। गांधीजी और ठक्करबापाके सतत प्रवासों और प्रयत्नोंके कारण अस्पृश्यता-निवारण तथा हरिजन-सेवाका कार्य काफी आगे बढ़ा। दो वर्षमें भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें और खास तौर पर दक्षिणमें काफी संख्यामें मंदिर हरिजनोंके लिअे खुलने लगे। परन्तु १९३६ में त्रावणकोर राज्यने हरिजनोंके लिअे राज्यके तमाम मंदिर खोल देनेकी जो घोषणा प्रकाशित की, अुसने अस्पृश्यता-निवारणके कामको जबरदस्त वेग दिया। दक्षिणमें अस्पृश्यताका किला बड़ा मजबूत था। अुसमें अिससे बड़ी दरार पड़ गअी। अिन बरसोंमें बापाने भारतके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक हरिजन-कार्यके संगठनके लिअे और अस्पृश्यता-निवारण आन्दोलनके लिअे सख्त और सतत प्रवास किये थे। १९३५ में गुजरातका दौरा करके अुन्होंने अपने अनुभवों और अिकट्ठे किये हुअे ब्यौरोंकी अेक लेखमाला लिखी। अिसी तरह दक्षिण भारतमें १९३५ के फरवरीसे अप्रैल तक प्रवास करके मद्रास प्रान्तके अधिकांश भागोंमें दौरा किया और वहांके हरिजन-कार्यको अधिक संगठित किया। अुसके बाद अुन्होंने अक्तूबरसे दिसंबर तक कलकत्ता और आसामका प्रवास किया। अिस बारके दौरेमें अुन्होंने आसामके हरिजनोंकी संख्या, अुनकी नामशूद्र, पटनी, जोगी, माली, केवट, सूत्रधार, ढेली, मोची, महार, मेहतर, वगैरा अलग अलग जातियों, अुनकी आर्थिक और सामाजिक दोनों प्रकारकी स्थिति, हरिजन होनेके कारण सवर्णोंकी तरफसे और दूसरी तरह अुठानी पड़ रही परेशानियों और मुश्किलों वगैराके तथ्य अिकट्ठे करके अुनका वर्णन 'आसामकी हरिजन यात्रा'

शीर्षकसे 'हरिजनबन्धु' में दिया। अिस लेखके शुरूमें अुन्होंने दौरेका ब्यौरा देते हुअे बताया :

"आसाम प्रान्तमें छठी बार यात्रा करके अभी लौटा हूं। अिस बार तो पूरा अेक मास वहांके अलग अलग जिलोंके दौरेमें लगाया। पहाड़ी जातियोंका अध्ययन करने, जलप्रलयके कष्टमें राहत पहुंचानेका काम करने, हरिजन-कार्यकी देखरेख और व्यवस्था करने या गांधीजीकी हरिजन-यात्राकी जमादारी करनेके लिअे और दूसरे अलग अलग कारणोंसे पिछले नौ वर्षमें मैंने अिस प्रान्तमें ६ बार सफर किया है। अिसलिअे अिस प्रान्त पर मेरी ममता बढ़ती गअी है।"

अिस प्रान्तके हरिजनोंकी स्थितिका ब्यौरा देकर आगे लिखा: "आसामकी कुल आबादी ९२।। लाख है। अुसमें ५२ लाख हिन्दू, २८ लाख मुसलमान, १० लाख अेनिमिस्ट और ढाअी लाख अीसाअी हैं। अिस प्रकार हरिजनोंकी कुल आबादी २८.७ फी सदी है और हिन्दू धर्मावलंबियोंके ५० प्रतिशतसे अधिक है। प्रत्येक सवर्णके साथ अेक अेक अवर्ण, यह स्थिति कैसे सहन की जा सकती है? अिसलिअे आसामके अवर्णोंको अूंचा अुठानेके लिअे भगीरथ प्रयत्न करनेकी आवश्यकता है। किसी भी प्रान्तमें हरिजनोंका अितना भारी अनुपात नहीं है। और फिर आसामी भाअियोंकी दूसरे प्रान्तोंसे आये और बसे हुअे हरिजनोंके प्रति जितनी लापरवाही है अुतनी और कहीं नहीं पाअी जाती। यह स्थिति सुधारनेके लिअे बहुत बड़ा प्रयत्न करनेकी जरूरत है। अिसमें समस्त भारतके नेता साथ दें, यह जरूरी है। क्या ठेठ पूर्वी कोनेमें पड़े हुअे आसामकी पुकार सुनी जायगी?"

२८ अक्तूबर, १९३५ से १४ नवम्बर, १९३६ तककी अुनकी डायरीके अन्तमें अिस अर्सेमें अुन्होंने भारतके भिन्न भिन्न भागोंमें कितना दौरा किया और संघके दिल्ली कार्यालयमें कितने दिन बिताये, अिसका हिसाब लगाया गया है। अुसके आंकड़े बताते हैं कि अिन ३८४ दिनोंमें अुन्होंने १६२½ दिन मुख्य केन्द्र दिल्लीमें और २२१½ दिन दौरेमें गुजारे थे। और अुनमें आसाम, बंगाल, वर्धा, बम्बअी, दाहोद, आगरा, नागपुर, काश्मीर, जम्मू, पंजाब, सिन्ध, गढ़वाल, राजपूताना, कानपुर, पूना, भड़ौंच, अलमोड़ा, दक्षिण हैदराबाद, केरल और अुड़ीसाके कुछ भागोंमें भ्रमण किया और हरिजन-सेवाके कार्यको वेग दिया था।

१९३७ में कांग्रेसके पद ग्रहण करनेका निश्चय करनेके बाद कुछ प्रान्तोंमें जब कांग्रेस सरकार सत्तारूढ़ हुअी, तब अस्पृश्यता-निवारण और हरिजन-सेवाके कार्यको काफी सहारा मिला। ठक्करबापाने अुस वर्षमें भी

अलग अलग प्रान्तोंका दौरा किया। वे कांग्रेसी मंत्रियोंसे मिले, अुनके सामने हरिजन-सेवाकी विस्तृत योजना रखी और अस्पृश्यता मिटानेके लिअे सब क्षेत्रोंमें कैसे लड़ा जाय और अुसमें सरकार किस प्रकार मदद दे, अिस बारेमें अुनसे विस्तृत चर्चा की। अस्पृश्यता मिटाने और हरिजनोंको आगे बढ़ानेकी बात तो कांग्रेसके संविधानमें ही थी। अिससे प्रान्तोंमें कांग्रेसी मंत्रिमंडलोंकी तत्परता और बापाका अिस क्षेत्रका अनुभव और ज्ञान वगैरा बातें अिकट्ठी हो गअीं। अिसलिअे हरिजन-कार्य बड़ी तेजीसे आगे बढ़ने लगा। सरकार और संघ दोनोंका हेतु हरिजनोंको शिक्षाकी दृष्टिसे अधिक अुन्नतिशील और प्रगतिशील बनाना और सरकारी नौकरियोंमें भी अुन्हें काफी हिस्सा दिलवाना था। दोनोंकी मिलीजुली कोशिशसे अिस दिशामें काफी काम हुआ। हरिजनोंके लिअे साधारण शिक्षा पर होनेवाले खर्चके अलावा प्रत्येक राज्यने हरिजनोंकी शिक्षा और दूसरे कल्याण-कार्यके लिअे अलग रकमका प्रबंध किया। बम्बअी राज्यमें १९३७–३८ के वर्षमें ५६,००० की रकमकी व्यवस्था की गअी थी, जो बढ़कर १९३९–४० में १,६१,००० रुपये तक पहुंच गअी। मद्रासमें १९३७–३८ में ७,१७,८७२, १९३८–३९ में ७,७८,७६४ और १९३९–४० में ८,४९,०२२ रुपये हरिजनोंकी शिक्षाके लिअे खर्च किये गये। अिस प्रकार हरिजन-सेवक-संघके प्रचारसे और सरकारकी मददसे प्रत्येक प्रान्तमें नअी नअी पाठशालाअें खुलीं; अिसके अलावा सरकारी स्कूल-कालेजोंमें हरिजनोंको बिना रुकावटके प्रवेश मिलनेकी सुविधा पैदा की गअी। साथ ही कुछ स्थानों पर हरिजनों द्वारा कुअें, तालाब और रास्ते वगैराके अुपयोगके विरुद्ध सवर्णोंने जो रुकावट पैदा की थी अुसे भी कानूनकी सहायतासे दूर करनेकी कोशिश की गअी। अिन सब कामोंके लिअे बापाने सारे हिन्दुस्तानमें जगह जगह अेकसे अधिक बार दौरा किया और भिन्न भिन्न राज्योंमें शासनकर्ताओंके साथ लंबी चर्चा करके हरिजनोंके कष्ट दूर करनेका प्रयत्न किया।

लोगोंमें अस्पृश्यताकी भावना कहां तक घर कर चुकी थी, अिसका अंदाज भी बापाको अलग अलग समय अलग अलग प्रदेशोंमें किये गये प्रवासमें मिलता था। १९३७ के अक्तूबरमें बापा श्री रामेश्वरी नेहरू, श्री छगनलाल जोशी वगैराके साथ सौराष्ट्रके दौरे पर निकले थे। अुस समय द्वारकामें सवर्णोंकी ओरसे खूब विरोध हुआ था। हरिजनोंके लिअे तो ठीक मगर श्री ठक्करबापा और रामेश्वरी नेहरू जैसे सवर्ण जातिके नेताओंको भी द्वारकाधीशके मंदिरमें जानेसे वहांके पंडोंने रोक दिया था। अिस सम्बंधमें बहुत ही बड़ा अूहापोह हुआ था। बापा और श्रीमती रामेश्वरी नेहरूने द्वारका

और ओखामें वहांके हरिजनोंकी स्थितिके बारेमें तथ्य जुटाये। वहांके कुछ पढ़े-लिखे हरिजनोंने अुन्हें अेक लिखित वक्तव्य भी दिया था। अुसमें अुन्हें होनेवाली असुविधाओं — जैसे कि बेगार, मार, मन्दिर-प्रवेश-निषेध, अंग्रेजी पढ़ाअीकी मनाही, गोमती-स्नानके लिअे नियत सवर्णोंके टट्टी जानेकी खुली और गंदी जगह वगैराके दु:खों और आपदाओंका वर्णन किया गया था। ठक्करबापाने अुनका सारा वक्तव्य और अुनके हर मुद्देका विवरण 'हरिजनबंधु' के ता० २४–१०–'३७ के अंकमें 'ओखा मंडलके हरिजन' शीर्षकसे दिया था।

हरिजनोंके लिअे मंदिर-प्रवेशकी मनाही कर दी गअी है, अिस प्रकारकी वक्तव्यमें की गअी शिकायतके सम्बंधमें बापाने लिखा:

"सनातनी लोगोंमें अभी तक अेक अैसा वर्ग मौजूद है, जो हरिजनोंके सेवकों अर्थात् हरिजनोंको अुपरोक्त सुविधाअें दिलवानेकी कोशिश करनेवालोंके लिअे भी मंदिरोंके द्वार बन्द कराता है। तब हरिजनोंकी तो बात ही क्या की जाय? . . . बड़ोदा सरकारने राज्यके मंदिर हरिजनोंके लिअे कभीके खोल दिये हैं। यह (द्वारकाधीशका) मंदिर राज्यका नहीं, राज्याश्रित है; परन्तु हरिजनसेवकोंके लिअे अभी मनाही हुअी है। अिसका परिणाम भी अच्छा होगा।" *

अुनकी बेगार और मार सम्बंधी शिकायतका अंश अुद्धृत करके बापाने टीका करते हुअे लिखा कि, "बेगारका कष्ट हरिजनोंको भारतके किस भागमें नहीं है? ताजीरात हिन्दकी ३७४ वीं धारा ७५ वर्षसे लागू हुअी है। वह अैसी लगती है मानो बेगार करनेवालोंका अुपहास करनेको बनाअी गअी हो। मुफ्त बेगार करानेके अलावा गालियां और मार पड़नेके अुदाहरण तो अनेक स्थानोंमें मिलते हैं। अिस मारसे हरिजनोंके मर जानेकी मिसालें भी मिलती हैं। यह स्थिति भगवान कब सुधारेगा? अिस प्रश्नका अुत्तर जो मुझे सूझता है, वह तो यह है कि हरिजन हिम्मत करके अदालतमें बेगार करानेवालों पर मुकदमा चलावें और मजिस्ट्रेट भी भगवानका डर रख कर कानूनके अनुसार ३७४ वीं धारा पर पूरी तरह अमल करके बेगार करानेवालेको पूरी बारह मासकी जेल-यात्रा करायें।"

अपने वक्तव्यमें गोमती-स्नानके लिअे नियत हरिजन-घाटका वर्णन करके हरिजनोंने बताया था कि, "अिस घाट पर अूंची जातिके कमसे कम

---

* अिस प्रकार हरिजनसेवकोंके लिअे बन्द किये गये मन्दिरके द्वार स्वराज्यके बाद डॉ० जीवराज महेता और श्री रविशंकर महाराज तथा सौराष्ट्र रचनात्मक समिति वगैराके प्रयत्नोंसे १९४९-५० में हरिजनोंके लिअे भी खुल गये और तबसे खुले ही हैं।

हजार-पांच सौ आदमी रोज टट्टी जाते हैं।" अिस पर टीका करते हुअे बापाने अपने हृदयका दुःख अुंड़ेल कर लिखा कि, "हरिजनोंके लिअे अलग रखे गये गोमती तीर्थकी यह भयंकर दशा मैं स्वयं नहीं देख सका था। परन्तु द्वारकाके प्रमुख कार्यकर्ता भाअी अभ्यंकरने अूपर लिखे अनुसार ही हूबहू वर्णन भरी सभामें दिया था। और निर्लज्ज बन कर गलियोंमें टट्टी बैठनेकी आदत तो सुबह सात बजे मैंने खुद घूम कर देखी थी।. . . मांडवी (कच्छ) में भी यही स्थिति अभी तक बनी हुअी है। अधिकांश बंदरी गांवोंमें यह रिवाज था। परन्तु मांडवी और द्वारकामें यह अब तक जरा भी कम नहीं हुआ और न पाखाने बनानेका प्रयत्न हुआ। यह कितनी शर्मकी बात है!

"भंगियोंकी सुविधाका थोड़ा भी विचार किये बिना हमारे शहरी लोग पाखाने बनाते हैं। हम चाहे जैसी गंदगी कर दें, डब्बे भी न रखें, धोनेकी सुविधा भी भंगीको न दें, तो भी अुसे साफ तो करना ही पड़ता है। और यहां तो शहरकी गली गलीमें खुले पाखाने होते हैं। अिसलिअे बेचारे भंगीका दम ही निकल जाता है। साथ ही गायकवाड़ी राज्यमें अदालतके दरवाजेमें अुन्हें घुसने न दिया जाय और स्कूलके कमरेमें अलग बिठाया जाय, यह तो आश्चर्यकी बात कही जायगी।"

वक्तव्य देनेवाले हरिजन भाअियोंको आश्वासन देते हुअे बापाने लेखके अंतमें बताया कि, "अुन्नतिके मार्गमें अग्रसर हुअे लोगोंको अिस परीक्षामें पास होना ही पड़ेगा। परन्तु जहां शक्ति और अुत्साह न हों, वहां अैसे विघ्न मार्गमें आने पर मार्ग अधिक विकट लगना स्वाभाविक है। जहां अपनी स्थितिका सच्चा भान नहीं हुआ हो, वहां परिस्थितिकी यह विषमता मालूम नहीं होती। परन्तु परीक्षामें तो अुत्तीर्ण होना ही पड़ेगा और अुसमें हिम्मत खो देनेसे आगे नहीं बढ़ा जा सकता। द्वारकाके हरिजन भाअियोंसे मेरी अितनी-सी विनती है।"

१९३८ का वर्ष हरिजन-यात्रामें बितानेके सिवाय बापाने जनसेवाकी विविध प्रवृत्तियां हाथमें लीं। अिस वर्षमें मध्यप्रान्त और बरारकी सरकार द्वारा म्युनिसिपैलिटीके भंगियोंकी स्थितिकी जांच करनेके लिअे नियुक्त जांच-समितिके अध्यक्षके तौर पर अुन्होंने काम किया। अुसमें भंगियोंकी स्थितिके सम्बन्धमें विस्तृत जानकारी और आंकड़े अिकट्ठे करके अुनकी आर्थिक और शिक्षा-सम्बंधी स्थिति सुधारनेके लिअे बापाने निश्चित सिफारिशें कीं। अिसके सिवाय अुसी साल बापाको अुड़ीसा प्रान्तकी सरकारने पार्शियली अेक्सक्लुडेड अेरियाकी जांच-समितिका अध्यक्ष नियुक्त किया। हरिजन-सेवाके सिलसिलेमें बापाने अुड़ीसा, मध्यभारतके देशी राज्य और

दक्षिण राजपूतानेके राज्योंमें प्रवास किया। अिसके अतिरिक्त अुत्तर प्रदेशमें जलसंकटका सामना करनेके लिअे कष्ट-निवारण कार्यका संगठन किया।

१९३९ में गांधीजीके कहने और बम्बअी सरकारके सुझाव पर बापाने पश्चिम खानदेशके आदिवासियोंके लिअे कल्याण-केन्द्र जारी कराये और अुनके द्वारा भील-सेवाका काम आगे बढ़ाया। अिसीके साथ अन्य प्रान्तोंमें आदिवासियोंकी सेवाकी ओर अुन्होंने ध्यान दिया। अुड़ीसाके देशी राज्योंमें धनकेनाल और तालचेरमें जब राज्यसत्ताका जुल्म बढ़ गया और कुछ लोग हिजरत करके अुड़ीसा प्रान्तके अिलाकेमें चले आये, तब बापाने अिन दुःखी निर्वासितों और हिजरतियोंके लिअे कष्ट-निवारण केन्द्र स्थापित करके अन्न और आश्रयकी तत्काल व्यवस्था कर दी।

१९३९ में महायुद्धकी नीतिके कारण कांग्रेस सरकारोंने अिस्तीफे दे दिये। अिससे हरिजन अुद्धारके लिअे कांग्रेस सरकारोंने हरिजनोंको कानूनकी, सरकारी नौकरियोंकी, शिक्षाकी और अन्य जो सुविधाअें कर दी थीं, अुन्हें काफी धक्का पहुंचा। परन्तु हरिजन-सेवक-संघका काम तो चलता ही रहा। अुसी वर्षमें बापाने जीवनके सत्तर वर्ष पूरे किये। सारे देशने अुनकी सुवर्ण जयंती मनाअी। अिसका ब्यौरा आगेके प्रकरणमें देखेंगे।

२६

बापा-जयंती

१९३९ के सितंबरकी २५ तारीखको बापाके अेक साथी श्री श्याम-लालजीने बापाकी अंतरंग मंडलीके दो-चार मित्रोंको अेक खानगी पत्र लिखा। अुसमें बताया कि ठक्करबापा नवम्बरकी २९ तारीखको ७० वर्ष पूरे कर रहे हैं। अितनी अुम्रमें भी अुनका शरीर अच्छा है, तंदुरुस्ती भी अच्छी है और भारतके हरिजनों और आदिवासियोंकी सेवाके लिअे दिन दिन अधिक कसा हुआ और मजबूत बनता जा रहा है। अिसलिअे बापाकी ७१ वीं वर्षगांठ शोभास्पद ढंगसे मनानी चाहिये। यह जयंती किस प्रकार मनाअी जाय, अिसके लिअे आप कुछ सुझाव दीजिये। कुछ मित्रोंने अिस अवसर पर अुन्हें ७,००० रुपयेकी थैली अर्पण करनेका और दूसरे कुछ मित्रोंने हरिजनों, दलितों और शोषितोंकी अुन्होंने जो सेवा की है अुसकी कद्रके तौर पर अेक सुन्दर अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित करनेका भी सुझाव दिया है। मेरे खयालसे अिस दूसरे सुझाव पर अिस समय अमल करना कठिन है। मैं स्वयं

यह मानता हूं कि बापाका सम्मान करनेके लिअे अेक ठक्कर जयंती अुत्सव समितिकी रचना करनी चाहिये। यह समिति अुत्सव सम्बंधी कार्यक्रम तैयार करे और अुत्सव बम्बअी अथवा अहमदाबादमें मनाया जाय।

श्री श्यामलालजीके विचारका हरखचंदभाअी, डॉ० केशवलाल ठक्कर, श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त तथा श्री परीक्षितलाल मजमुदार वगैरा बापाके साथी कार्यकर्ताओंने स्वागत किया। बापाका सम्मान करनेके लिअे अेक सम्मान समारोह समितिकी रचना हुअी और अुसकी जाहिरात करके अिस अुत्सवको सफल बनानेके लिअे लोगोंसे अनुरोध किया गया।

अिस सिलसिलेमें गांधीजीको भी खबर दी गअी और अिस बारेमें 'हरिजनबंधु' में कोअी छोटी-सी टिप्पणी लिखनेकी प्रार्थना की गअी। गांधीजीने अिसे सहर्ष स्वीकार किया और 'बापा–जयंती' शीर्षकसे 'हरिजन-बंधु' में ता० १६–१०–'३९ को निम्नलिखित टिप्पणी प्रकाशित की:

"ठक्करबापाको — जो हरिजनोंके और अुन दूसरी जातियोंके पितातुल्य हैं, जो अुन्हीं जैसी दशामें हैं और जिन्हें आधी जंगली और पशुपूजक वगैरा नाम देकर अनेक वर्गोंमें बांट दिया गया है — अगली २९ नवम्बरको सत्तर वर्ष पूरे हो रहे हैं। दिल्लीके हरिजन-निवासके लोगोंने अिस घटनाका अुत्सव ठक्करबापाके दिलको भानेवाले ढंग पर करनेकी योजना बनाअी है। वे ठक्कर-बापाको अुनके जन्मदिवस पर हरिजन-कार्यके लिअे ७,००० रुपयेकी छोटी-सी रकमकी थैली भेंट करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि मैं अिस प्रयत्नको आशीर्वाद दूं और अुसका विज्ञापन करूं। मैंने अुन्हें जो जवाब लिखा है अुसमें अुन पर अश्रद्धाका आरोप लगाया है। ठक्करबापा अेक बिरले लोकसेवक हैं। अुनमें अभिमान या आडंबरका नाम भी नहीं है। अुन्हें स्तुति नहीं चाहिये। अुनका काम ही अुनका अेकमात्र संतोष और अेकमात्र मनोरंजन है। बुढ़ापेने अुनके अुत्साहको शिथिल नहीं बनाया है। वे स्वयं ही अेक संस्था जैसे हैं। मैंने अेक बार अुन्हें लिखा कि, 'आप जरा आराम लें तो अच्छा'। तुरंत ही अुनका अुत्तर आया: 'अितना सारा काम करना बाकी है, तब मुझसे आराम कैसे लिया जाय? मेरा काम ही मेरा आराम होना चाहिये।' अपने जीवनकार्यके लिअे शक्ति खर्च करनेमें वे अपने आसपासके जवानोंको भी शर्माते हैं। ७,००० रु० की थैली अिस प्रवृत्तिके लिअे और अुसका भारी बोझा अपने मजबूत कंधों पर वहन करनेवाले पुरुषके लिअे अपमानस्वरूप है। अिन सेवकोंको सारे हिन्दुस्तानसे कमसे कम ७०,००० रु० अिकट्ठे करनेका निश्चय रखना ही चाहिये। यह रकम भी अिस कार्य और अुसके जनकके लिअे कुछ नहीं है। परन्तु

अेक महीनेके भीतर जमा करनेके लिअे यह खासी रकम होगी। हरिजनों और भीलोंसे पाअी-पैसे अिकट्ठे किये जा सकते तो कैसा अच्छा होता! वे ठक्करबापाको पहचानते हैं। परन्तु धनिक और मध्यम श्रेणीके लोग भी बापाको जानते हैं और अुनके प्रति प्रेम रखते हैं। वे अिस फंडमें अिस काम और जो महान सेवक अुसके प्रतिनिधि हैं अुन दोनोंकी खातिर खुले हाथों रुपया देंगे, अिसमें मुझे कोअी शंका नहीं है। चन्देका रुपया (१) हरिजन-निवास, किंग्सवे, दिल्ली, (२) हरिजन आश्रम, साबरमती और (३) सेगांव, वर्धा होकर — अिन तीनोंमें से किसी भी पते पर भेजा जा सकता है।"

गांधीजीकी अिस टिप्पणीका बहुत व्यापक असर हुआ। भारतके तमाम प्रान्तोंमें जगह जगह अिस जयंतीके निमित्तसे चन्दे शुरू हुअे। हजारों लोगोंने प्रेमसे अिस कोषमें रुपया दिया और गांधीजीके कहे अनुसार ७,००० के बजाय ७०,००० तो अिकट्ठे कर ही दिये, परन्तु अिससे भी आगे बढ़ कर यह आंकड़ा अेक लाखके अूपर पहुंच गया।

अुसके बाद ता० २९-११-'३९ को बम्बअीके गोवालिया तालाबके मैदानमें खास शामियाना खड़ा करके अुनके सत्कार समारोहका अुत्सव मनाया गया। अुस मौके पर सरदार वल्लभभाअी पटेल, श्री भूलाभाअी देसाअी, गुजरात हरिजन-सेवक-संघके अध्यक्ष श्री नरहरि परीख, श्री परीक्षितलाल मजमुदार, महाराष्ट्र हरिजन-सेवक-संघके अध्यक्ष श्री बी० अेन० बरवे, मंत्री श्री अुपाध्याय, भील-सेवा-मंडलवाले श्रीलक्ष्मीदास श्रीकान्त, श्री जयरामदास दौलतराम, ठक्करबापाके छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्कर, अुनके भतीजे श्री कपिल ठक्कर तथा श्री रामू ठक्कर, पं० हृदयनाथ कुंजरू, सर पुरषोत्तमदास ठाकुरदास, सर सी० वी० महेता, महिला विश्वविद्यालयवाले श्री कर्वे, मध्यप्रान्तकी गोंड जातिकी सेवामें लगे हुअे फादर अेल्विन, सरदार पृथ्वीसिंह, गांधीजीके मंत्री श्री महादेवभाअी देसाअी, श्री मंगलदास पकवासा, श्री कन्हैयालाल और श्रीमती लीलावती मुन्शी, श्रीमती हंसा महेता, श्रीमती लीलावती आसर, सेठ सूरजी वल्लभदास, बम्बअीके भूतपूर्व मंत्री श्री बाला-साहब खेर, श्री मथुरादास त्रिकमजी, श्री नगीनदास मास्टर, डॉ० सोलंकी, श्री गोशीबहन केप्टन और अन्य प्रमुख कांग्रेसी अुपस्थित थे।

सभा-स्थान पर श्री ठक्करबापाके पहुंचने पर तालियोंसे अुनका स्वागत किया गया। शुरूमें शांताक्रुजकी हरिजन बालिकाओंने ठक्करबापाका स्वागत करनेवाला गीत और बम्बअीकी हरिजन लड़कियोंने ठक्करबापाकी दीर्घायु चाहनेवाले गीत गाये।

सर पुरषोत्तमदास ठाकुरदासने बताया कि ठक्करबापाके प्यारे नामसे परिचित बने हुअे अिस पुरुषने २५ वर्षसे केवल गुजरातकी ही नहीं परन्तु भारतके सभी प्रदेशोंकी सेवा की है। अपने सुखकी परवाह किये बिना अेक मनसे सतत २५ साल तक की गअी अुनकी सेवाओंका ब्यौरा आपने जान लिया होगा। अुनकी अिस सेवाकी कदर करनेके लिअे यह सभा बुलाअी गअी है।

गुजरात हो या महाराष्ट्र, बंगाल हो या बिहार, अुड़ीसा हो या पंजाब, जहां भी प्रकृतिका कोप होता वहीं ठक्करबापा दौड़ जाते और राहत-काम हाथमें ले लेते हैं।

बम्बअी हरिजन-सेवक-संघकी स्थापना हुअी तो अुसकी सफलताका अेक अचूक आश्वासन यह था कि ठक्करबापा अिसके मंत्री थे। अुनका किया हुआ काम भारतके अितिहासमें प्रसिद्ध होगा।

सेवाग्रामसे पूज्य महात्माजीका अिस अवसरके लिअे भेजा हुआ खास संदेश लेकर आये हुअे श्री महादेवभाअी देसाअीने बताया कि आजके प्रसंगका माहात्म्य आपको अिसी बातसे मालूम हो जावेगा कि गांधीजीने यह संदेशा लेकर मुझे यहां भेजा है। वे खुद यहां आना चाहते थे, परन्तु अैसा करनेकी अुनमें शक्ति नहीं है।

अुनके हाथका (हिन्दीमें) लिखा हुआ सन्देश यह है:

"बापाकी अिकहत्तरवीं जयंती मनानेमें मुझे हाजिर होना चाहिये, लेकिन मैं अिस लायक नहीं रहा हूं। मेरी तो हार्दिक आशा है कि बापा सौ वर्ष पूरे करें। बापाका जन्म ही दलितोंकी सेवाके लिअे है। भले वह अस्पृश्य हो या भील या सांताल या खासी। अुनकी कदर करनेमें हम दलितोंकी कुछ न कुछ सेवा ही करते हैं। बापाकी सेवाने हिन्दुस्तानको बढ़ाया है।

सेगांव, ता० २७–११–'३९ मो० क० गांधी"

अिसके बाद श्री हरकिशनदास झवेरीने अिस मौकेके लिअे देश भरसे प्राप्त लगभग डेढ़ सौ संदेशोंमें से कुछ पढ़ कर सुनाये।

राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबूके सन्देशमें अिस अवसर पर अुपस्थित न हो सकनेके लिअे खेद और ठक्करबापाके प्रति आभार प्रदर्शित किया गया था। ठक्करबापाके परिश्रम और सेवाओंका अुल्लेख करके अुन्हें त्यागी और धर्मकुशल सेवक बताया गया था। और अीश्वरसे यह प्रार्थना की गअी थी कि वे लम्बे समय तक यह कार्य करते रहें और देशको अुसका लाभ मिलता रहे।

दूसरे संदेश बनारस विश्वविद्यालयके अपकुलपति श्री अेस० राधाकृष्णन्, श्री नलिनीरंजन सरकार, श्री घनश्यामदास बिड़ला, श्री विजयालक्ष्मी पंडित, श्री हरविलास शारदा, काका कालेलकर, श्री कुमारप्पा, श्री रामानंद चटर्जी, लेडी विद्यागौरी नीलकंठ, डॉ० राजन्, काठियावाड़ राजनैतिक परिषद्, तथा अन्य अनेक हरिजन संस्थाओंके सिवाय दूसरी कुछ संस्थाओं और भारतके प्रसिद्ध व्यक्तियोंकी ओरसे मिले थे।

अुसके बाद श्री वल्लभभाओी पटेलने कहा कि, "आजके अवसर पर दो शब्द कहनेका मुझे जो सम्मान मिल रहा है अुसके लिअे मुझे गर्व है। कारण, अैसे मौके थोड़े ही आते हैं। भारतमें तो जो सार्वजनिक जीवनमें लगे हुअे हैं अुनकी आयु छोटी हो जाती है।

"ठक्करबापाने सेवाके लिअे किये गये परिश्रमके बावजूद अपने शरीरकी रक्षा की है। आज बम्बअीमें, तो कल आसाम या बंगालमें और फिर पंजाबमें वे दौड़ जाते हैं। अुन्होंने शरीरकी रक्षा कैसे की, अिसका मुझे आश्चर्य होता है।

"गांधीजी, राष्ट्रपति और अन्य लोगोंकी तरफसे आये हुअे बहु-संख्यक संदेश आपने सुने। अुनसे आप समझ सकेंगे कि सार्वजनिक जीवनमें लगे हुअे कितने सारे लोगोंको बापाने आकर्षित किया है। अकल्पित विपत्तिके अनेक मौकों पर ठक्करबापा जी-तोड़ मेहनत करते रहे हैं। हमें अुनकी सेवासे प्रोत्साहन मिलता है। अुनके साथ कितने ही अवसरों पर किये हुअे कामके मीठे स्मरण मुझे याद आते हैं। भारतके हरिजन-कार्यके सेवकोंने तो अुन्हींसे अुत्साह प्राप्त किया है। ठक्करबापाके दिलमें गरीबोंके लिअे जो दया है, वह तो खुद अीश्वरके दर्शन जैसी है। हम हरिजन-सेवाकी बातें तो करते हैं, परन्तु हमारे पाप धुलते ही नहीं। जो कुछ हो सका है अुसमें तो ठक्करबापा और गांधीजीकी तपस्या ही बोल रही है। बापाको अर्पण की जानेवाली थैलीमें गांधीजीने सात हजारके सत्तर हजार कर दिये, परन्तु सत्तर हजारके बाद भी वह प्रवाह चलता रहना चाहिये।

"भारतसे अस्पृश्यताका नाश कर देनेका गांधीजीने संकल्प किया है। वह मिटे और गांधीजीकी प्रतिज्ञा अपने जीवनमें पूरी हो जाय, अिसके लिअे अिस काममें साथ देकर गांधीजीको जिलाअिये। हम प्रार्थना करें कि हरिजनोंकी अैसी सेवा करनेवाले ठक्करबापाको और तीस वर्ष जिला कर अीश्वर अुनको अधिक सेवा करनेका मौका दे।"

श्री भूलाभाओी देसाओीने अिस अवसर पर बापाको अंजलि देते हुअे कहा कि, "आजका प्रसंग हिन्दू समाज और हिन्दू धर्मके अुद्धारका प्रसंग

है। जब तक अस्पृश्यता है, तब तक हिन्दू धर्मका अुद्धार नहीं होगा। और तब तक स्वराज्य मांगना भी अनुचित ही है। आज ठक्करबापा सत्तर वर्ष पूरे कर रहे हैं। अुनके साथ बैठकर मैं अपने आपको पवित्र हुआ मानता हूं। ठक्करबापाको शब्दोंसे नहीं, कार्यसे बधाअी देनी चाहिये। अीश्वर अुन्हें बहुत वर्षों तक जिलाये, यही प्रार्थना करता हूं।"

बम्बअीके भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री बालासाहब खेरने कहा कि, "१९१४ से लगाकर पाव सदी तक ठक्करबापाने देहकी परवाह किये बिना देशके दरिद्र-नारायण और दुखियोंकी, अकाल-पीड़ितोंकी, अज्ञानी भीलों और किसानोंकी सेवा की है। भारतका अेक भी कोना अैसा नहीं जहां ठक्करबापाकी सेवाका लोगोंको परिचय न हो। अैसे पुरुषके सत्कारके लिअे अिकट्ठे होकर हम बहुत कुछ सीखेंगे। गीतामें आदर्श पुरुषके लिअे कहे गये 'निर्ममो निरहंकारः' वगैरा विशेषण ठक्करबापा पर लागू हो सकते हैं। ठक्करबापासे मैं स्वार्थ-त्यागके सिवाय व्यवस्था-शक्तिकी जरूरत समझा। तीव्र सेवा और कार्यभक्ति तो अुनके विरल गुण हैं। पंचमहालके भीलोंकी सेवा करके कल तक असंभव-सी लगनेवाली वस्तुको अुन्होंने संभव बना दिया है।"

भारत-सेवक-समाजके अध्यक्ष पंडित हृदयनाथ कुंजरूने कहा कि, "समितिमें ठक्करबापा भरती होने आये तब मुझे अुनका प्रथम परिचय हुआ। तब मुझे लगा था कि यदि वे संस्थामें आयेंगे तो संस्थाका बल बढ़ेगा। और २६ वर्षके अनुभवसे मैं कहता हूं कि हमारे यहां अैसा अेक भी सदस्य नहीं, जो सेवामें ठक्करबापासे बढ़ कर हो। व्यायामके प्रति अुदासीनता होते हुअे भी वे सेवाकार्यके लिअे रात-दिन चाहे जितना परिश्रम कर सकते हैं। वे सफर करनेमें भी नहीं थकते। ठक्करबापाको देख कर अैसी आशा होती है कि हमारे समाजके अेक विभागको अस्पृश्य मान कर अुनके साथ कुत्ते-बिल्ली जैसा बर्ताव किया जाता है, वह ठक्करबापा जैसोंकी तपस्यासे नष्ट होगा। अैसे पुरुषकी प्राप्ति केवल भारत-सेवक-समाजका नहीं, परन्तु सारे देशका सौभाग्य है।"

फादर अेल्विनने ठक्करबापाको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुअे कहा, "ठक्करबापाको मैं अेक फरिश्तेके रूपमें जानता हूं। परन्तु फरिश्तेमें और ठक्करबापामें अितना ही फर्क है कि जहां फरिश्ते अपने पंखों पर अुड़ कर आसानीसे आवागमन कर सकते हैं, वहां ठक्करबापा गाड़ियों और मोटरोंमें टकराते फिरते हैं। १९३० में गुजरातके किसान अेक अद्भुत अहिंसक संग्राम कर रहे थे, तब मैंने अिस फरिश्तेको देहातमें काम करते हुअे देखा। अन्यायके अवसर देखकर अुनके पुण्य-प्रकोपको बढ़ते मैंने देखा है। भूखोंके

लिअे अुनकी हमदर्दी भी मैंने देखी है। दुःखीको देख कर होनेवाला अुनका दुःख मैंने देखा है। सचमुच ठक्करबापा अेक सत्यनिष्ठ और विरल पुरुष हैं। मैंने अुन्हें अकेले गांवोंमें बालकों और बीमारोंकी सेवा-शुश्रूषा करते देखा है। अुनके संदेशका अर्थ करूं तो अितना ही कह सकता हूं कि बातें करना बन्द करो और काम करो। अिसी प्रकार ठक्करबापाके किये हुअे कामकी हम कदर कर सकेंगे और अुन्हें सच्ची अंजलि दे सकेंगे।"

भारतमें महिला विश्वविद्यालयकी स्थापना करनेवाले प्रो० कर्वेने कहा, "ठक्करबापाको मैं तीस वर्षसे जानता हूं। अुनके साथ मैंने खूब विचार-विनिमय किया है। ठक्करबापाका किया हुआ काम अितना बड़ा है कि अुसे सब कोअी जानते हैं। मैं अुम्रमें अुनसे कुछ बड़ा हूं, अिसलिअे सेवा-कार्यमें मैं जल्दी लग गया। परन्तु अब तो वे अैसी सीढ़ी पर पहुंच गये हैं कि मुझे अुनसे पाठ लेना है।"

डॉ० सोलंकीने कहा कि, "बम्बअीमें पिछड़ी हुअी जातियोंके अुत्कर्षके लिअे नियुक्त जांच-समितिके विवरणमें ठक्करबापाकी की हुअी सिफारिशों और रूपरेखाओं पर पूरा अमल किया जाय, तो दरिद्रनारायणकी सेवाअें सफल हो सकती हैं। काम करनेको ठक्करबापा हमेशा तैयार रहते हैं। वे नरसिंह मेहताके वर्णन किये हुअे वैष्णवजन हैं।"

अिसके सिवाय श्री झीणाभाअी राठोड़, श्री शिवधरकर, श्री रामभाअू राव वगैराने बापाकी दीर्घायु चाह कर अुनकी सेवाओंको अंजलि अर्पित की।

अध्यक्ष-पदसे श्री राजाजीने ठक्करबापाको अंजलि देते हुअे कहा कि, "आपकी ओरसे ठक्करबापाको अंजलि अर्पण करनेका अेक महान अवसर आज मुझे प्राप्त हुआ है। मुझे कहते हर्ष होता है कि ठक्करबापाकी थैलीमें ७०,००० से अधिक रुपये अिकट्ठे हो गये हैं। अुसमें कुल १,१७,४४०–१३–९ की रकम जमा हुअी है। परन्तु रुपयेसे सेवाका माप कैसे लगाया जा सकता है? यह थैली तो केवल अुस मापके अेक प्रतीकके समान है। दलितों और हरिजनोंके लिअे ठक्करबापाने जो कुछ किया है, वह अन्य अधिक बुरे अनिष्टोंका मारक सिद्ध हुआ है। हमारा धर्म कितना ही बड़ा हो, तो भी अुस पर अस्पृश्यताका अेक महान कलंक लगा हुआ है। वह कलंक दूर करनेके कार्यमें ठक्करबापा लग गये हैं। गांधीजीके संदेशमें थोड़े-से ही शब्द हैं। वे चाहते हैं कि ठक्करबापा सौ वर्ष जियें, अुनकी जिन्दगीका हरअेक वर्ष, हरअेक दिन और हरअेक घंटा बहुत ही कीमती है। हममें से कितने अैसे हैं, जो सत्तर वर्ष जीनेकी आशा रख सकते हैं?

"हम अेक महान राष्ट्र हैं। हममें बहुतसे होशियार हैं, बहुतेरे चालाक हैं, अनेकों बुद्धिशाली पंडित हैं, कअी भले आदमी हैं। परन्तु अितने पर भी हमारे समाजमें अस्पृश्यता घर किये बैठी है। हम संख्यामें पैंतीस करोड़ हैं, परन्तु अिनमें कुछ करोड़ तो हरिजन हैं। ये करोड़ों हरिजन भाअी हमारे ही अंधकारमें खो गये हैं। अुन्हें वापस प्राप्त करनेको गांधीजी और ठक्करबापा जैसे लोग तपस्या कर रहे हैं। हम अुसमें सहायक हों और अस्पृश्यताका कलंक दूर करके अुनका मार्ग साफ करें तथा अपने ही भुलाये हुअे और खोये हुअे करोड़ों देशबन्धुओंको पुनः प्राप्त करके आनंद पायें। आपकी तरफसे मैं यह थैली ठक्करबापाको अर्पण करता हूं।"

अिसके बाद श्री राजगोपालाचार्यने थालीमें रखी हुअी थैली बापाको भेंट की और अपने हाथसे ही अुन्हें कुंकुमका तिलक लगाया। बम्बअी प्रान्तीय कांग्रेस समिति, नगरपालिका और अन्य संस्थाओंकी ओरसे ठक्कर-बापाको अितने अधिक पुष्प-हार अर्पण किये गये कि वे फूलोंके ढेरमें लगभग दब-से गये।

बम्बअीके झाड़ूवालोंकी तरफसे अुन्हें ७७१ पैसोंकी अेक छोटीसी थैली भी बादमें आ पहुंची थी।

ठक्करबापाने अिस सम्मानका अुत्तर देते हुअे कहा :

"आप सबने जिस प्रेमसे यह समारोह करके मेरा सत्कार किया है, अुसके लिअे मैं आपका आभार मानता हूं। अिस अवसरके बारेमें ज्यों ज्यों मैं विचार करता हूं, त्यों त्यों मेरा खयाल होता है कि यह तो रजका गज हो गया। मेरे साथ काम करनेवाले दो-तीन भाअियोंने यह षड्यंत्र किया। गांधीजीने अुसका समर्थन किया और बादमें मेरे लिअे अुसमें शरीक होनेके सिवाय कोअी चारा ही नहीं रहा।

"मैं तो बहुत ही अल्प सेवक हूं। किसी भी प्रकारका बुद्धिशाली काम करके मैंने नहीं दिखाया। सेवा और मजदूरीका काम मैं करता हूं। अिस कार्यके पाठ तो मुझे छप्पनिया अकालके समय पिताजीसे मिले थे। सच पूछा जाय तो अिस सारे कामका श्रेय गांधीजीको मिलना चाहिये। अिस कामका प्रताप मेरे जैसे छोटे आदमीका नहीं हो सकता। यह प्रताप तो गांधीजीका है। १९३२ में अुन्होंने अुपवास किया, तबसे यह महायज्ञ शुरू हुआ है। अपने अुपवासके द्वारा गांधीजीने हरिजनोंको ७० के स्थान पर १५१ बैठकें दिलवाअी थीं।

"अेक और सवाल जो संक्षेपमें रखना चाहता हूं, वह भारतके आदिवासी या मूल निवासी जातियोंसे सम्बन्ध रखता है।

"ओश्वरकी कृपासे हरिजन भाओी तो हमारे साथ कंधेसे कंधा मिलाकर धारासभाओंमें बैठ सकते हैं। यह देख कर आनंद होता है। वे अपने अधिकारोंके लिओ लड़ सकते हैं, परन्तु आदिवासियोंके लिओ तो न अुनके कोओी प्रतिनिधि हैं और न बैठकें हैं। अुनके श्रेयके लिओ प्रान्तीय सरकारों अथवा केन्द्रीय सरकारने थोड़ा ही काम किया है। हिन्दू समाज भी अुनके पास नहीं फटका। अुनकी संख्या अढ़ाओी करोड़ है। हिन्दू समाजके अिन लोगोंके पास खास तौर पर जानेकी जरूरत है।

"यह नम्र प्रार्थना मैं आपके सामने पेश कर रहा हूं। थाना जिले या नवसारीके जंगलोंमें वारली, ठाकुर, भील, कातकरी, काठोड़िया वगैरा जातियां बसी हुओी हैं। अुनके लिओ हम क्यों कुछ नहीं करते? अुन पर किये जानेवाले जुल्म अगर नजदीकमें ही कहीं देखने हों तो थाना जिलेके जंगलोंमें जाकर देख लीजिये।

"अेक और बात। आप सबने कहा कि मैं सत्तर वर्षका हो गया और अब सौका होअूं। परन्तु सौ वर्षकी बात सुनता हूं तो कांप अुठता हूं। ८० या ८५ वर्षके शक्तिमान मनुष्य देखे हैं। परन्तु यह नहीं देखा कि सौ वर्षका आदमी खाटमें पड़े रहनेके सिवाय चलता फिरता हो। परन्तु अिन सब बातोंका आधार तो ओश्वर पर है।

"मेरे लिओ आप सबके किये हुओ श्रम और प्रगट किये हुओ प्रेमके लिओ आपका आभार मानता हूं। यह थैलीकी रकम आदिवासियोंके लिओ ही है और अुसे मैं हरिजन-सेवक-संघको सौंप दूंगा।"

अिसके बाद अेन० अेम० जोशीने अध्यक्ष महोदयको माला पहनाओी और अध्यक्ष महोदयने आभार मानते हुओ ठक्करबापाको भी श्रद्धांजलि अर्पण की।

अिस प्रकार भारतके लोग आदिवासियों और हरिजनोंके सेवक ठक्करबापाका सत्कार करके अुसके द्वारा हरिजनों और आदिवासियोंकी सेवाके निमित्त बनकर कृतकृत्य हुओ।

२७

हरिजनसेवा — १९३९ से १९५१

गांधीजीकी तपश्चर्या और ठक्करबापाके राष्ट्रव्यापी प्रवासोंके द्वारा हुअे प्रचार और संगठन कार्यके परिणामस्वरूप हरिजन-सेवाकी दिशामें गत सात वर्षोंमें अर्थात् १९३२ से १९३९ तक काफी काम हुआ था और १९३७ में कांग्रेस सरकारके सत्तारूढ़ होनेके बाद हरिजनोंकी आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और शिक्षा संबंधी अुन्नति और अस्पृश्यता-निवारणकी प्रवृत्तिको वेग प्राप्त हुआ था। अिन सात वर्षोंकी अवधिमें दक्षिण भारतके कुछ प्राचीन और प्रसिद्ध मंदिर खोल दिये गये थे और अिस अुदाहरणको ध्यानमें रखकर देशके अन्य भागोंमें भी कहीं कहीं मंदिर खोले गये थे। स्कूल-कालेजोंमें तो हरिजन विद्यार्थियोंको पहलेकी अपेक्षा बहुत बड़ी संख्यामें भरती किया गया था और हरिजन-सेवक-संघ और सरकार दोनोंके द्वारा हुअे छात्रवृत्तियों और दूसरी सुविधाओंके प्रबंधके कारण हरिजनोंकी शिक्षाको काफी प्रोत्साहन मिलने लगा था। रास्तों, कुओं और तालाबों पर जहां अब तक हरिजनोंके लिअे पाबंदी थी वहां कुछ स्थानोंसे यह पाबन्दी हटा ली गअी या हल्की कर दी गअी थी। राज्योंमें पढ़े-लिखे हरिजनोंको अच्छी संख्यामें नौकरियां मिलने लगी थीं। अिस प्रकार बापाने हरिजन-सेवक-संघ द्वारा रचनात्मक और प्रचारात्मक दोनों प्रवृत्तियां चलाकर तथा कांग्रेस सरकार द्वारा अस्पृश्यता मिटानेके लिअे कुछ योजनाओं पर अमल कराकर और भारतके प्रान्त प्रान्तमें दौरे लगाकर अस्पृश्यता-निवारण और हरिजन-सेवा दोनोंकी दिशामें आगे कदम बढ़ाये थे। अितने पर भी अभी बहुत काम करना बाकी था। अिसलिअे १९३९ से १९४९ तकके दूसरे दशकमें भी अुनका यह काम दुगने वेगसे जारी रहा। आज बंगालमें तो कल आसाममें, अिस महीने मद्रासमें तो दूसरे महीने राजपूतानेमें और तीसरे महीने रियासतोंमें, अिस प्रकार भारत भरमें अस्पृश्यता-निवारणके लिअे अुनके प्रवास और प्रयास दोनों बराबर होते ही रहे।

जहां भी जाते वहीं वे हरिजनोंके विशेष प्रश्नोंका अध्ययन करते। अुनके संबंधकी बारीकसे बारीक बातें अिकट्ठी करते। अुनकी जनगणना, अुनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति प्रान्तवार, जिलेवार, तालुकेवार और गांववार मालूम करते और यह सवाल अिस ढंगसे रखते कि संबंधित प्रान्तोंके कार्यकर्ताओंको भी अुसमें नवीनता और मौलिकता प्रतीत होती।

१९३९ में अेक बार वे हरिजन-सेवाके सिलसिलेमें बंगालके दौरे पर गये थे। वहां बारीसाल जिलेके मुख्य शहर बारीसालमें अुनके लिअे भरपूर कार्यक्रम रखा गया था। ठक्करबापाके हाथसे हरिजनोंके लिअे अेक धर्मार्थ औषधालय खुलवाया गया था। परंतु बापाको अिसीसे संतोष नहीं हुआ। अुन्होंने तो बारीसालमें म्युनिसिपैलिटीका मानपत्र स्वीकार करते हुअे और सार्वजनिक सभामें जो भाषण दिये अुनमें बंगालके हरिजनोंके प्रश्नका विशेष अुल्लेख किया और जोर देकर बताया कि, "बंगालमें हरिजनोंका प्रश्न तत्काल हल चाहता है और अुनके अुद्धारके लिअे सवर्णों, म्युनिसिपैलिटी और सरकार तीनोंको तुरंत काम हाथमें लेना चाहिये। अुन्होंने कहा कि बंगालकी अढ़ाअी करोड़ हिन्दू जातिकी आबादीमें ४२ फी सदी तो केवल हरिजन हैं। अर्थात् अढ़ाअी करोड़ हिन्दू बंगालियोंमें से हरिजनोंकी आबादी ही अेक करोड़ हुअी। भारतके किसी भी भागमें, यहां तक कि मद्रासमें भी, हरिजनोंकी आबादी अितनी बड़ी मात्रामें नहीं पाअी जाती। मद्रासमें हरिजनोंकी आबादी समस्त जनसंख्याके पांचवे भागसे ज्यादा नहीं है। अिसलिअे प्रत्येक बंगाली भाअी-बहनको अिस प्रश्नकी विशालताको ध्यानमें रखकर हरिजन-सेवाके काममें लग जाना चाहिये। देशके विशाल हितको लक्ष्यमें रखकर भी यह काम जल्दी होना चाहिये।

"बंगालकी धारासभामें ३१ सदस्य परिगणित जातियोंके हैं। साथ ही सरकारमें दो मंत्री भी अिन्हीं जातियोंसे आते हैं। फिर भी अफसोसकी बात है कि वे अपने कम भाग्यवान भाअी-बहनोंके लिअे जो कुछ करना चाहिये सो नहीं करते। बंगाल सरकारने हरिजन विद्यार्थियोंकी शिक्षाके लिअे पांच लाख रुपयेकी व्यवस्था की है। परंतु वह तो केवल अेक वर्षके लिअे है। वह अैसी सहायता नहीं है, जो हर साल जारी रहे। और अिन पांच लाखमें से दो लाख रुपये तो हरिजन विद्यार्थियोंके लिअे आलीशान छात्रालय बनानेके लिअे अलग रखे गये हैं। अिस प्रकार पैसेका व्यर्थ अपव्यय करनेकी अपेक्षा हाअीस्कूलों और माध्यमिक पाठशालाओंके विद्यार्थियोंको छात्रवृत्ति या मासिक सहायता देकर अुसका अधिक अच्छा अुपयोग किया जा सकता था।"

यह बात अुनके दिलमें अितनी ज्यादा लग गअी कि बंगालका दौरा खतम करनेके बाद अुड़ीसा जानेसे पहले युनाअिटेड प्रेसके प्रतिनिधिको मुलाकात देते हुअे भी अुन्होंने अिसका अुल्लेख किया था और बताया था कि बंगाल सरकारने हरिजनोंके लिअे जो पांच लाख रुपये मंजूर किये हैं, अुनका अधिकांश तो जो आगे बढ़ चुके हैं अुनके लिअे खर्च किया जाता है। क्योंकि अिसमें से बड़ी रकम कालेजोंके हरिजन विद्यार्थियोंके लिअे छात्रालय बनवाने

या अुन्हें मदद देनेमें खर्च होगी और डोम, हरि, बागदी, बावरी, चमार, धोबी, माल, मोची, पोड़, जाबिया, मालो, भूमजी, ओराओन, संथाल, निपेरा वगैरा अछूत और पिछड़ी हुअी जातियोंके बालकोंकी माध्यमिक शिक्षा पर खर्च नहीं की जायगी। असलमें अिनकी जरूरत पहली है।"

परंतु सबसे अधिक दुःख तो ठक्करबापाको बंगालके शहरोंमें रहनेवाले हरिजनोंको और अुनके साथ म्युनिसिपैलिटीके बर्तावको देखकर हुआ। अिस संबंधमें युनाअिटेड प्रेसके प्रतिनिधिसे मुलाकात करते हुअे अुन्होंने बताया कि "बंगालकी नगरपालिकाअें सफाअी कर्मचारियों — मेहतरोंके प्रति जो बर्ताव कर रही हैं, वह बहुत ही दुःखदायक है। और खास तौर पर कलकत्ता और हवड़ाके भंगियोंकी स्थिति बहुत ही शोचनीय है। म्युनिसिपैलिटी अुनके साथ जो बरताव करती है, वह सहानुभूति शून्य है। ये भंगी भाअी सार्वजनिक जनसेवाका कल्याण-कार्य कर रहे हैं। अुनके रहनेके मकानोंकी स्थिति अितनी अधिक असंतोषजनक और गंदगीभरी है कि अुसका वर्णन करना असंभव है। बम्बअी, कराची और मद्रास जैसे शहरोंने अपने झाड़ूवालोंके लिअे काफी सुन्दर मकान बनवा दिये हैं, जब कि कलकत्ता और हवड़ाकी म्युनिसिपैलिटियोंने अिस मामलेमें कुछ भी नहीं किया। बंगालके और शहरोंमें — जैसे बारीसाल, कोमिल्ला या सुरीमें — भंगी कर्मचारियोंकी स्थिति और रहन-सहन कलकत्ते और हवड़ेसे अच्छी है।

"हरिजनोंमें भी कोअी सबसे नीची जाति मानी जाती हो तो वह पूर्व बंगालके ऋषि और मुचि लोग हैं। अुनके अुद्धारके लिअे, अुनकी सेवा करनेके लिअे, कोअी संस्था नहीं है।"

ठक्करबापाके अिस प्रवासने बंगालमें अच्छी जागृति पैदा की थी। दौरेके दिनोंमें अुस समयकी कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य डॉ० प्रफुल्ल घोष बापाके साथ रहे। अुन्होंने प्रत्येक सार्वजनिक सभामें हरिजनोंकी स्थिति सुधारने और अुनकी सेवा करने पर जोर दिया था और यह आश्वासन दिया था कि अिस दिशामें बंगाल भरसक प्रयत्न करेगा।

बंगालके अखबारोंने भी ठक्करबापा द्वारा सार्वजनिक सभाओं और वक्तव्यमें स्पर्श किये गये प्रश्नों पर टिप्पणियां लिखी थीं और अुनमें कलकत्ता तथा हवड़ाकी म्युनिसिपैलिटियोंके हरिजनोंके प्रति अिस प्रकारके भावनाहीन व्यवहारकी आलोचना की थी।

जैसे बंगालमें वैसे ही अन्य प्रान्तोंमें भी अुनके दौरे बराबर जारी रहे और वे जिस जिस प्रान्तमें जाते अुस अुस प्रान्तके समाचारपत्र ठक्करबापाकी प्रवृत्तियोंको बड़ी मात्रामें प्रकाशन देते थे। बंगालमें 'अमृत बाजार पत्रिका',

'लिबर्टी', 'फॉर्वर्ड', दक्षिण भारतके 'हिन्दू', बिहारके 'सर्च लाअिट', पंजाबके 'ट्रिब्यून' और बंबअीके 'टाअिम्स' जैसे अंग्रेजी पत्रों और भारतके तमाम प्रान्तोंके प्रान्तीय भाषाओंमें प्रकाशित होनेवाले पत्रोंकी १९३९ से १९४९ तककी फाअिलों पर नजर डालनेसे अिसकी कुछ झांकी मिलती है कि बापाने हरिजन-सेवाके लिअे कितना जबरदस्त काम किया। मद्रास और बिहार जैसी प्रान्तीय सरकारों द्वारा हरिजन-सेवाके लिअे किये गये कामके लिअे कहीं बापा बधाअी देते हैं, तो किसी सरकारको अुसकी लापरवाहीके लिअे अुलहना भी देते हैं। कहीं हरिजन पाठशाला या दवाखानेका अुद्घाटन करते हैं, तो कहीं अुनमें वस्त्र और दवा बांटते दिखाअी देते हैं। किसी जगह अुनके लिअे घरेलू अुद्योग-धंधोंकी चिन्ता करते हैं, तो किसी स्थान पर पढ़े-लिखे हरिजनोंको सरकारी और गैरसरकारी नौकरियोंकी सुविधा प्राप्त करा देनेके लिअे प्रयत्न करते हैं।

१९४१ में ठक्करबापा हरिजन-कार्यके सिलसिलेमें दक्षिण भारतके चेट्टीनाड, तामिलनाड, मदुरा, तिनेवेली वगैरा जिलोंके शहरों और गांवोंमें घूमे थे। दक्षिणमें हुअे हरिजन-कार्यकी प्रशंसा करते हुअे मदुराकी अेक सभामें अुन्होंने कहा था कि, "मैं जरा भी हिचकिचाये बिना मुक्त कंठसे कह सकता हूं कि मद्रास प्रान्तमें हरिजन-कार्यकी अच्छी प्रगति हुअी है।" मंदिर-प्रवेशका अुल्लेख करते हुअे अुन्होंने कहा, "त्रावणकोर, अिन्दौर वगैरा देशी राज्योंमें तो राजा-महाराजा साहबोंकी कोशिशसे मंदिर खुले हैं, जब कि मदुराका विश्व-विख्यात मंदिर तामिलनाड हरिजन-सेवक-संघके अध्यक्ष श्री वैद्यनाथ आयर जैसे छोटे आदमीके प्रयत्नसे खुला है। यह कोअी अैसी वैसी सफलता नहीं कहलायेगी। अिस समय कदाचित् अिस सिद्धिकी महानताका खयाल कुछ लोगोंको नहीं होगा, मगर यह सचमुच महान सिद्धि है।

"अेक और महत्त्वकी बातकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। वह यह है कि देशके भिन्न भिन्न भागोंमें सरकार अथवा जिलोंके लोकल बोर्डोंके बनवाये हुअे कुओंसे हरिजन भाअी-बहनोंको पानी नहीं भरने दिया जाता। अिस संबंधकी सरकारी आज्ञाअें अभी तक कागज पर ही लिखी पड़ी हैं। अिसके लिअे यदि किसीको अुलहना देना हो, तो वह सरकार और हरिजन कार्यकर्ता दोनोंको देना चाहिये, क्योंकि दोनों ही अिस शोचनीय परिस्थितिके लिअे समान दोषी हैं। अुन्हें अिस मुद्दे पर जितना जोर देना चाहिये था अुतना अुन्होंने नहीं दिया। सरकार अपने हुक्मकी तामील अपने छोटे नौकरोंसे नहीं करा सकी। और कार्यकर्ता अिसके लिअे जितना चाहिये अुतना अनुकूल वातावरण पैदा नहीं कर सके।"

हरिजनोंके लिअे अलग कुअें बनवानेसे तो अस्पृश्यता कायम रहेगी, यह आलोचनात्मक प्रश्न अेक भाअीके सभामें पूछने पर ठक्करबापाने जवाब दिया कि :

"जब आप जमीनके पेटमें अीश्वरके दिये हुअे पानीका अुपभोग करने देनेसे अिनकार करनेकी क्रूरता दिखाते हैं, तब अिन बेचारे हरिजनोंको पीनेके पानीके लिअे अलग कुअें बनवा देनेके सिवाय दूसरा रास्ता ही क्या है? यह चीज कोअी हमेशा करनेकी नहीं। परंतु जब तक सवर्ण हिन्दुओंका हृदय-परिवर्तन न हो, अुनमें मानवता जाग्रत न हो, तब तक यह काम हरिजन-सेवक-संघ करना चाहता है।

"हरिजनों और सवर्णोंके बीच पूर्ण समानता तो तभी होगी, जब सवर्ण हिन्दू तमाम हरिजनोंके लिअे सभी मंदिर खोल देंगे, सब कुओंसे अुन्हें पानी भरने देंगे और सब सार्वजनिक स्थानोंका अुन्हें समान अुपभोग करने देंगे।"

मदुरामें अन्य स्थान पर भाषण करते हुअे अुन्होंने हरिजनोंकी शिक्षा पर जोर दिया था। अुन्होंने कहा था :

"हरिजन-सेवक-संघ हरिजनोंकी शिक्षा पर जोर देता है, अिसके अुचित कारण हैं। जिन लोगोंका समूह अथवा अेक वर्ग पढ़ा-लिखा होता है, वे अपने प्रश्नोंका निपटारा अन्य किसीकी सहायताके बिना स्वयं ही बहुत सुन्दर ढंगसे आसानीसे करा सकते हैं। हरिजन-सेवक-संघ अिस महत्त्वकी बात पर बराबर ध्यान देता है और हरिजन बालकोंको प्राथमिक, माध्यमिक और औद्योगिक शिक्षा देता है। अिस शहरमें भी अेक ब्राह्मण सन्नारी हरिजन कन्याओंका छात्रालय चला रही हैं। अिससे मुझे आनंद होता है। मैं अिन बहनको धन्यवाद देता हूं।"

१९४०–४१ में अुन्होंने श्री रामेश्वरी नेहरूके साथ राजपूतानेके देशी राज्यों तथा अिन्दौर राज्यका दौरा किया और भिन्न भिन्न देशी राज्योंके राजाओं और दीवानोंसे मिलकर अुनके राज्यमें अस्पृश्यता-निवारणके लिअे, हरिजनोंकी शिक्षाके लिअे और साथ ही अुनकी आर्थिक और सामाजिक अुन्नतिके लिअे छोटी बड़ी योजनाओं पर अमल कराया। देशी राज्योंके बजटमें अिसके लिअे अुन्होंने काफी रकम राजाओंसे मंजूर करवाअी। देशी राज्योंमें जहां हरिजन-सेवक-संघकी शाखाअें नहीं थीं वहां शाखाअें स्थापित कीं और जहां सेवक और कार्यकर्ता नहीं थे, वहां कार्यकर्ता पैदा करके अुन्हें काममें लगाया।

१९४१ में हरिजन-सेवक-संघके मंत्रीकी हैसियतसे बापाने आसामसे सिन्ध तक और हरिद्वारसे दक्षिण तक देशके अधिकांश प्रान्तोंका दौरा किया

और संघकी शाखाओंका काम कैसा हो रहा है, अिसकी जांच की। अुन्होंने प्रत्येक शाखाके कार्यकर्ताओंका काम देखा, अुनकी मुश्किलें समझीं और अुनमें से किस प्रकार मार्ग निकालकर आगे बढ़ें अिसका पथप्रदर्शन और प्रेरणा दी। अिन वर्षोंमें अेक तरफ आदिवासियोंका और दूसरी ओर हरिजन-सेवाका काम वे समानान्तर रूपमें कर रहे थे।

१९४२ का वर्ष भारतमें आजादीकी अुग्र लड़ाईका वर्ष था। गांधीजीसे लेकर प्रान्तों और शहरोंके छोटे नेताओं तक तमाम कांग्रेसी नेता जेलमें चले गये थे, कुछ गोलियोंके शिकार हो गये थे। अिस वर्षमें ठक्करबापाने जेल गये हुअे सेवकोंके परिवारोंकी चिन्ता रखने और सरकारी जुल्मोंके विरुद्ध निर्भय होकर आवाज अुठानेका काम तो किया ही, परन्तु हरिजन-सेवाका काम भी जारी रखा।

१९४३–४४ में भारतके ज्यादातर भागोंमें सरकारी युद्धनीतिके कारण अकाल पड़ा और बंगाल, अुड़ीसा, मद्रास, बीजापुर और अन्य हिस्सोंमें भयंकर भुखमरी फैली। ठक्करबापाने देश भरमें घूम घूम कर रुपया जमा किया और अकालग्रस्त भागोंका दौरा लगा कर जगह जगह कष्ट-निवारण केन्द्र शुरू किये। अिसमें भी वे सदा हरिजनों और आदिवासियोंकी सेवाको तरजीह देते थे। मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी, अुड़ीसा व्यापारी कष्ट-निवारण-समिति और अैसी ही दूसरी परोपकारी संस्थाअें अिस समय सेवा करने बाहर आतीं। परन्तु ठक्करबापाकी विशेषता यह थी कि अकाल-पीड़ित लोगोंमें सबसे लाचार और दीनताके गर्तमें पड़े हुअे हरिजनोंको बचानेके लिअे वे पहले प्रयत्न करते। अपने शुरू किये हुअे कष्ट-निवारण केन्द्रोंमें वे हरिजनों और साधन सम्पत्तिहीन पिछड़े हुअे वर्गके लोगोंकी पहले मदद करते थे।

१९४६ में देशके टुकड़े हुअे और बंगालमें मुसलमानोंने अपने हिन्दू भाअियों पर अमानुषिक अत्याचारों और अन्यायोंकी वर्षा की, तब वे गांधीजीके साथ नोआखली गये और वहां भी अुन्होंने अिस अत्याचारके सबसे ज्यादा शिकार बने हुअे हरिजनोंकी सेवा करने और अुन्हें मदद देनेमें अपनी शक्ति खर्च की। नोआखली जिलेमें स्थित चर मंडलके हजारों हरिजन बापाके अिस कार्यके लिअे अुन्हें याद करेंगे, क्योंकि पूर्व बंगालमें हुअे अिस साम्प्रदायिक अुत्पातमें हरिजनोंने अपने घरबार गंवा दिये थे, अुनके पास जो रही सही माल-मिल्कियत थी सो भी खो दी थी। अिन लोगोंको आर्थिक और सामाजिक रूपमें खड़ा करनेमें, अुनके जले हुअे झोंपड़े फिरसे बनवानेमें, अुन्हें रोटी-

कपड़ेकी सहायता पहुंचानेमें, अुनके हरि मंदिरोंका पुनर्निर्माण करानेमें बापा और अुनके साथी सेवकोंने खासी मेहनत अुठाअी। नोआखली जाना हुआ अुससे पहले ठक्करबापा गांधीजीके साथ दक्षिण भारतके पालनी और मदुराकी यात्रामें शरीक हुअे थे।

१९४७ में अेक ओर अुनकी आंखोंमें मोतियाबिन्दुकी तकलीफ थी, दूसरी ओर दमेका जोर बढ़ गया था। फिर भी वे अपनी प्रिय हरिजन-सेवा और आदिवासी-सेवाका काम नहीं छोड़ते थे। अुनकी तंदुरुस्तीकी जांच करनेवाले डॉक्टर अेम० डी० डी० गिल्डरने — जो बम्बअी सरकारके स्वास्थ्य विभागके मंत्री थे — पंडित हृदयनाथ कुंजरूके नाम अेक पत्र लिखकर बापाकी बिगड़ती हुअी और बिगड़ी हुअी तंदुरुस्तीकी ओर अिशारा करके सावधानीका स्वर निकाला था और ठक्करबापाकी सेवा-प्रवृत्तियोंको मर्यादित करनेकी सलाह दी थी। अिस पत्रमें अुन्होंने लिखा था कि, "ठक्करबापाको होनेवाले दमे (कार्डियाक अेस्थमा) के ये अुग्र आक्रमण कोअी अचिन्त्य अथवा अकल्पित हुअे हैं, यह नहीं कहा जा सकता। ये निश्चित रूपमें यह बताते हैं कि अुनके हृदय पर बहुत अधिक बोझा पड़ा है और ठक्करबापा अपने हृदयसे जितना वह दे सकता है अुससे भी ज्यादा काम जबरदस्ती करानेकी कोशिश कर रहे हैं।

"अिसलिअे दमेके अिस हमलेको कुदरतकी चेतावनी समझना चाहिये। फिर, अिससे पहले प्रकृति और भी कअी बार चेतावनियां दे चुकी है, यह देखते हुअे अब अिस चेतावनी पर गंभीरतासे ध्यान देना चाहिये; अिसके अलावा, यह देखते हुअे कि बीमारने अपने हृदयसे अुसकी शक्तिसे बहुत अधिक काम लिया है, अब अुन्हें चेत जाना चाहिये और हल्की चालसे काम करके जीवनशक्ति बचानी चाहिये। अिसीलिअे मैं अुन्हें प्रवास बन्द कर देनेकी सलाह देता हूं। अेक स्थान पर शांतिसे जीवन गुजारनेके अुपायसे हम बापाकी जिन्दगी थोड़ी अधिक लंबी कर सकेंगे। अिससे वे कुछ अधिक समय तक अपना काम जारी रख सकेंगे।

"कार्डियाक अेस्थमा अैसा गंभीर चिन्ह है कि अुसके प्रति लापरवाही नहीं दिखाअी जा सकती। और अगर दिखाअी गअी तो प्रकृति अिसका भारी जुर्माना वसूल करके रहेगी।"

अिस प्रकारकी डॉक्टरी रायोंके बाद भी बापाने कुछ समय तक अपना काम जारी रखा। परंतु जैसा डॉक्टर गिल्डरने कहा था, यह कुदरतकी गंभीर चेतावनी थी। अिसलिअे अुसकी अुपेक्षा बहुत समय तक नहीं की जा सकती थी। अतः तबीयत बिलकुल कमजोर हो जाने और मित्रोंके आग्रहके

कारणसे अन्तमें बापाने सक्रिय दायित्ववाले कार्योंसे मुक्ति प्राप्त कर लेनेका विचार किया। भारी मंथनके अंतमें १९४७ के दिसम्बर मासकी २२ तारीखको अुन्होंने अिस सिलसिलेमें अेक लंबा निजी पत्र गांधीजीको लिखा और अुसकी अेक अेक प्रति पंडित हृदयनाथ कुंजरू, श्री घनश्यामदास बिड़ला, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, दादा साहब मावलंकर और श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्तको भेजी।

अिस पत्रमें अुन्होंने लिखा था कि, "पिछले अेक महीने या अिससे भी कुछ अधिक समयसे मेरे हृदयमें मंथन चल रहा है। मेरा खयाल है कि अपनी वृद्धावस्था और दुर्बलताके कारण और खास तौर पर आंखके मोतियाबिन्दुके कारण मुझे जितना काम करना चाहिये अुतना मैं कर नहीं सकता। अिसलिअे मैं अपने आपसे असन्तुष्ट रहता हूं। मेरे अधीन जितने कार्य हैं अुन सब कार्योंके साथ जितना चाहिये अुतना न्याय मैं नहीं कर सकता। मैं बिलकुल लिख-पढ़ नहीं सकता और प्रत्येक छपा या लिखा हुआ शब्द मुझे दूसरेसे पढ़वाना पड़ता है। साथ ही खतका जवाब मुझे दूसरेसे लिखवाना पड़ता है। अैसी स्थितिमें मैं अंधे आदमीकी-सी बेबसी महसूस करता हूं। मुझे लगता है कि अब मैं अधिक समय किसीके लिअे अुपयोगी नहीं हो सकता। और मेरे आसपास और मेरे साथ जो लोग बंधे हुअे हैं, अुन सबके लिअे मैं भारस्वरूप हूं। अिसलिअे आपकी सलाह लेकर मैं अगले दो तीन मासमें जल्दीसे जल्दी निवृत्त होना चाहता हूं और मेरे पास जो जो काम हैं अुन्हें जिनको सौंपना अुचित जान पड़े, जिन्हें सौंपना तय हो जाय, अुन्हें सौंप देना चाहता हूं।"

अिसके बाद अपने जिम्मेके कार्य — जैसे कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट, हरिजन-सेवक-संघ, आदिवासियोंकी सेवाका काम करनेवाली संस्थाअें, आदिम जाति-सेवक-मंडल, रांची तथा भारत-सेवक-समाज — किस किसको सौंपे जायं, अिसका अुल्लेख करके अंतमें लिखा था कि,

"मैंने यह पत्र लंबे और गंभीर विचारके बाद लिखा है। मैंने अिस पर दिनके अवकाशके घंटोंमें और रात्रिके जाग्रत पलोंमें खूब गहरा विचार किया है। मैं अब मानता हूं कि मेरी अुपयोगिता पूरी हो गअी, मेरी शक्ति पूरी तरह खर्च और खतम हो गअी है। मैंने अपने जीवनके ७८ वर्ष पूरे किये हैं। मैं मानता हूं कि मित्र कुछ सप्ताहों अथवा महीनोंमें मेरा यह सारा भार अुठाकर मुझे मुक्त कर देंगे। अीश्वरकी पैदा की हुअी अिस दुनियामें हमेशा किसीकी कमी नहीं रहती। कुदरत अुसे अपने आप पूरा कर देती है।

"अितने पर भी मैं जल्दबाजी नहीं करना चाहता। आखिरी कदम अठानेसे पहले मैं आपकी रायको कीमती समझ कर अुस पर विचार करूंगा

और यदि आप मुझे समय देंगे तो अिस संबंधमें रूबरू बात करनेको भी मैं तैयार रहूंगा।

आपका
अ० वि० ठक्कर"

अिस प्रकार बापा मित्रोंकी सलाह-सूचनाका आदर करके और कुदरतकी चेतावनीको ध्यानमें रखकर सार्वजनिक सेवाके सक्रिय कामोंसे निवृत्त होनेकी तैयारी कर रहे थे और निवृत्त होनेके बाद कहां रहें, अिसका विचार कर रहे थे। लेकिन कुदरत अुनके लिअे दूसरे कामोंकी रचना कर रही थी। सिन्धमें मुस्लिम लीगने फिर दंगे छेड़ दिये थे और पूर्व बंगालकी तरह कराची, हैदराबाद और ग्रामीण अिलाकोंसे सवर्ण लोग तत्काल जो हाथ लगा सो लेकर कुटुम्ब-कबीलेके साथ हिजरत करके कच्छ-काठियावाड़, राजपूताना वगैरा नजदीकके भारतीय प्रदेशोंमें आ रहे थे। अिसमें सबसे विषम स्थिति हरिजनोंकी थी। अुनके पास तो जीनेका भी पूरा आधार नहीं था। सिन्धमें अुन्हें मार मारकर मुसलमान बनाया जा रहा था। अुनके लिअे मुसलमान बन जाना अथवा सिन्ध छोड़कर भारतमें चले आना — यही अेक अुपाय था। हजारों निर्वासित स्टीमरके रास्तेसे कच्छके मांडवी और सौराष्ट्रके ओखा बंदर पर अुतर रहे थे। ठक्करबापा अिन दुःखी निर्वासितोंको आश्वासन देने, अुन्हें तत्काल अन्न-वस्त्र और आश्रय देनेकी व्यवस्था करने कच्छ दौड़ गये। कच्छमें रहकर और ओखा बन्दर आकर अुन्होंने यह काम किया। अुस समय अुन्हें गांधीजीका संदेश मिला कि आपका स्थान कच्छमें नहीं, परंतु कराचीमें है। वहां जाकर दुःखी लोगोंके बीचमें रहिये और अुनमें नैतिक साहस पैदा करके हिजरतको रोकिये। अैसा करते हुअे खप जाना पड़े तो खप जाअिये। ठक्करबापा सिन्धके हरिजनोंको धैर्य, प्रेरणा और सहायता देने कराची जानेका विचार कर रहे थे और अिस संबंधमें कार्यक्रम बना रहे थे कि अितनेमें अचानक भारतमें बड़ा भंयकर कांड हो गया। अुन्मत्त हिन्दू साम्प्रदायिकतामें रंगे हुअे नाथूराम गोडसे नामक अेक व्यक्तिने गांधीजीकी हत्या कर दी। ठक्करबापा अुस समय कच्छसे ओखा आ गये थे। वहीं अुन्होंने ये समाचार सुने। पहले तो वे यह बात मान ही नहीं सके। परंतु जब अुन्हें यकीन हो गया तो वे दुःख और आश्चर्यसे स्तब्ध हो गये। सारे दिन वे बेचैन रहे। अिसके बाद दूसरे दिन ओखासे राजकोट आकर गांधीजीके निमित्त निकली हुअी स्मशान-यात्रामें अुन्होंने भाग लिया। अुस दिन राजकोटकी स्मशान-भूमिमें अिकट्ठे हुअे नेताओं और लोगोंके सामने

भाषण देने वे खड़े हुअे। परंतु थोड़ेसे वचन बोलते ही अुनका गला भर आया। अुनकी आंखोंसे आंसुओंकी धारा बह चली। गांधीजीकी मृत्युका घाव अुनके लिअे असह्य-सा सिद्ध हुआ।

अिसके बाद ठक्करबापा दिल्ली गये। जैसा पहले कहा जा चुका है, अुन्होंने सार्वजनिक जीवनसे निवृत्ति लेकर आराम और अीश्वर-भजन करनेका विचार किया था। परंतु गांधीजीकी अिस प्रकारकी मृत्युसे अुन्हें बड़ा जबरदस्त आघात लगा था। पहले आघातकी तीव्रता कम हो जानेके बाद अुनको लगा कि अब तो गांधीजीका अधूरा छोड़ा हुआ काम पूरा करना ही मेरा कर्तव्य है। अिस सिलसिलेमें अुन्होंने भील-सेवा-मंडलके पुराने सेवक श्री सुखदेव भाअीको भी बताया कि मेरा विचार दाहोद तालुकेमें अनास नदीके किनारे किसी अेकान्त स्थानमें रहकर शेष जीवन अीश्वर-भक्तिमें पूरा करनेका था। परंतु गांधीजीकी मृत्यु हमें अेक नया पाठ सिखाती है और वह यह है कि निष्काम होकर काम करते करते मृत्युका आलिंगन करो, जीवनके अंतिम क्षण तक कर्तव्य-कर्म करते रहो। अिसलिअे अब मुझसे आराम नहीं लिया जायगा। और सचमुच ठक्करबापाने निवृत्तिका विचार छोड़कर हरिजन-सेवा और आदिवासियोंका काम हाथमें लिया। बापूकी मृत्युके बाद भी दाहोद, राजपूताना, बिहार वगैरा स्थानों पर वे अपने विविध कार्योंके लिअे और खास तौर पर हरिजन-सेवाके कामके लिअे घूमे। जीवनभर पदों, धारा-सभाओं वगैरासे दूर रहनेवाले बापा जरूरत पड़ने पर हरिजनों और आदि-वासियोंकी भलाअीके लिअे संविधान-सभाके सदस्य हुअे। और भारतकी अिन दोनों अभागी जातियोंके लिअे अुन्होंने खूब मेहनत अुठाकर संविधानमें अस्पृश्यताके नाश और पिछड़े हुअे वर्गोंके अुत्कर्षके लिअे व्यवस्था कराअी। संविधान-सभामें और बादमें संसदमें अुन्होंने जिस लगन और जोशसे काम किया, वह सचमुच प्रशंसनीय और दूसरोंको प्रेरणा देनेवाला है। लगभग ७८–७९ वर्षकी आयुमें बापा हरिजन-सेवक-संघके अपने निवास स्थानसे दस मील दूर स्थित संसद-भवनमें बस या तांगेमें बैठकर जाते। अुनसे मोटर रखनेका आग्रह किया गया तो भी शुरूमें अुन्होंने अिनकार कर दिया। अन्तमें बिड़लाजीने अेक मोटर हरिजन-सेवक-संघको भेंट की, तब वे अुस मोटरका अुपयोग करने लगे। संसदमें अुनकी अुपस्थिति नियमित होती थी। अुन्हें कभी देर नहीं होती थी। संसदके अध्यक्ष श्री मावलंकरने देरसे आनेवाले सदस्योंको अुलहना देते हुअे ठक्करबापाका अुदाहरण देकर बताया और कहा था कि वे हम सबसे वृद्ध होते हुअे और दूर रहते हुअे भी कभी देर नहीं करते, तब हम देर करें तो काम कैसे चल सकता है?

संविधान-सभामें अस्पृश्यताके सदियों पुराने कलंकको जड़से अुखाड़ फेंकनेवाली १७ वीं धारा पास हुअी, अुसमें सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रमुख भाग ठक्करबापाने अदा किया था। अिस धारामें स्पष्ट बताया गया है कि :

"अिसके द्वारा अस्पृश्यताको पूरी तरह खतम कर दिया जाता है। और अुसके आचरण पर — फिर वह किसी भी रूपमें हो — प्रतिबंध लगाया जाता है। अस्पृश्यतासे पैदा होनेवाली किसी भी प्रकारकी कठिनाअी या रुकावट कानूनकी दृष्टिसे अपराध हो जाती है।"

अिस प्रकारकी साधारण घोषणासे संतुष्ट न होकर कानूनमें नीचे लिखे अनुसार अुसका ब्यौरेवार स्पष्टीकरण करके अस्पृश्यतारूपी राक्षसीके कफनमें बापाने आखिरी कील ठोक दी :

"भारतके स्वतंत्र हो जानेके बाद समस्त राज्यमें अस्पृश्यताकी अमानुषिक रूढ़िको रहने नहीं देना चाहिये। राज्यकी दृष्टिसे अुसके सब प्रजाजन समान हैं और राज्यकी खुशहालीके साधनोंका समान अुपभोग करनेके हकदार हैं। अिसी आधार पर संविधानके निर्माताओंने नीचे लिखी धारा भी दर्ज कराअी है।

"किसी भी नागरिकको धर्म, जाति-पांति, वर्ण या जन्मके कारण किसी भी दुकान, सार्वजनिक भोजनालय, होटल, धर्मशाला या मनोरंजनके अन्य स्थानोंमें जानेसे रोका नहीं जा सकेगा, अुसकी गतिविधि पर पाबन्दी नहीं लगाअी जा सकेगी और न कोअी शर्त लादी जा सकेगी। साथ ही कुओं, तालाबों, नहानेके घाटों, रास्तों और राज्यकी तरफसे या अुसकी आंशिक सहायतासे चलनेवाले सार्वजनिक स्थानोंमें जानेकी मनाही नहीं की जा सकेगी। अिसी प्रकार किसी भी नागरिकको राज्यकी ओरसे चलने या अुसकी सहायता पानेवाली पाठशालामें भरती होनेसे नहीं रोका जा सकेगा।"

संविधान-सभामें जिस दिन ये धाराअें पास हुअीं, अुस दिन संसदके तमाम प्रगतिशील सदस्योंको खूब आनंद हुआ। परंतु सबसे अधिक आनंद ठक्करबापाको हुआ। अुन्हें यह संतोष अनुभव हुआ कि गांधीजीका सौंपा हुआ अेक काम लगभग पूरा हुआ। अिसके बाद वे मुश्किलसे अेक बरस काम कर सके।

हरिजन-सेवक-संघने पिछले बीस वर्षमें हरिजनोंके आर्थिक, सामाजिक और शिक्षा-संबंधी कल्याण-कार्यमें लगभग अेक करोड़ रुपये खर्च किये। अलग अलग राज्योंमें २५ प्रान्त-व्यापी और ३२५ जिला-व्यापी शाखाअें खोलीं, अुनके द्वारा संस्कार-केन्द्र, सहकारी समितियां, छात्रालय, पाठशालाअें आदि स्थापित

करके हरिजनोंकी सर्वांगीण अुन्नति करनेका प्रयत्न किया। ठक्करबापाने हरिजन-सेवक-संघके मंत्रीकी हैसियतसे आसाम, बिहार, बंगाल, अुड़ीसा, मद्रास, त्रावणकोर, गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, सिन्ध, राजपूताना, मध्यप्रान्त वगैरा तमाम प्रान्तोंमें अेकसे अधिक बार दौरे लगाये और अनेक शिक्षित और संस्कारी युवकोंको अिस काममें शामिल किया। हरिजन-सेवक-संघकी प्रवृत्तिने प्रान्तीय सरकारों पर भी काफी अच्छा असर डाला है। बापाने अनेक प्रान्तीय सरकारों, राज्य-सरकारों और देशी राज्योंमें जाकर अुनके मंत्रियों और दीवानों वगैरासे मिलकर हरिजन अुद्धारके लिअे हर साल अच्छी खासी रकमें खर्च कराअीं। हिन्दुस्तानके आजाद होनेके बाद जब कांग्रेस सत्तारूढ़ हुअी, तब ठक्करबापा और संघके अन्य कार्यकर्ताओंके तैयार किये हुअे क्षेत्रमें यह कार्य आगे बढ़ानेकी अुन्हें अच्छी अनुकूलता प्राप्त हुअी। बिहार और अुड़ीसा जैसी कुछ सरकारोंने तो ठक्करबापाको अपने राज्यमें आमंत्रण देकर हरिजनोंके लिअे कल्याण-कार्यकी योजना तैयार कर देनेका अनुरोध किया था और ठक्करबापाने वह अनुरोध स्वीकार करके वैसी योजना तैयार कर दी थी। स्वराज्यके पहले भी केन्द्रीय सरकारको हरिजन-सेवाके लिअे काफी रकम खर्च करनी पड़ती थी। परंतु स्वतंत्रताका अुदय होनेके पश्चात् हरिजन-काम बहुत ही विस्तृत और तेज हो गया और पहलेसे बहुत बड़ी रकमें हरिजन-सेवाके लिअे खर्च की जाने लगीं। अुदाहरणके लिअे १९४६ में केन्द्रीय सरकार मैट्रिकके बाद हरिजन विद्यार्थियोंकी अुच्च शिक्षाकी पढ़ाअी जारी रखनेके लिअे ३ लाख रुपये छात्रवृत्तियों पर खर्च करती थी, जिसे बढ़ाकर १९५१ में अुसने ८,२५,००० रुपये तक मंजूर किये। १९४५ में २९२, १९४६–४७ में ५२७, १९४७–४८ में ६५५, १९४८–४९ में ६४७, १९४९–५० में ८७९ और १९५०–५१ में १,३१६ अुच्च शिक्षा संबंधी छात्रवृत्तियां भारत-सरकारने मंजूर कीं। मद्रास सरकारने हरिजनोंकी शिक्षा पर १९४६ में ३१ लाख रु० खर्च किये थे, अुसे बढ़ाकर १९५१ में ५४ लाखकी रकम मंजूर की। पहले जहां सैकड़ों और हजारों विद्यार्थी पाठशालाओंका लाभ अुठा सकते थे, वहां अब लाखों हरिजन विद्यार्थी पाठशालाओंसे लाभ अुठा रहे हैं।

मद्रास, बम्बअी, बिहार, अुड़ीसा, अुत्तर-प्रदेश, पंजाब, पश्चिम बंगाल, आसाम, सौराष्ट्र, हैदराबाद, राजस्थान, पेप्सू, अजमेर, कुर्ग वगैरा राज्योंके आंकड़े देखनेसे पता चलता है कि हरिजन-सेवक-संघ द्वारा बापाका किया हुआ काम राष्ट्रीय सरकारके सहारेसे आज कितना विस्तृत हो गया है और अुनकी डाली हुअी नींव पर अिमारत खड़ी करनेका काम संरकारके

लिअे कितना सुगम हो गया है। कुछ सरकारोंने आज अपने स्वतंत्र विभाग खोले हैं, जिनमें सारे राज्यमें सरकारी ढंग पर काम करनेवाले मुख्य सूत्रधार बापाके हाथों तैयार हुअे सेवक ही हैं और वे बापाकी सिखाअी हुअी पद्धतिके अनुसार सफलता और निश्चिन्ततापूर्वक काम कर रहे हैं। प्रत्येक प्रान्तमें सरकारी शिक्षण-संस्थाओंमें — प्राथमिक, माध्यमिक और अुच्च शिक्षा देनेवाली संस्थाओंमें — हरिजन विद्यार्थी सरलतासे प्रवेश पा रहे हैं। प्रान्तीय सरकारों और राज्य-सरकारोंकी ओरसे प्राथमिक पाठशालाओंके हरिजन विद्यार्थियोंको स्लेट, पेंसिल, कपड़े वगैरा सुविधाअें दी जाती हैं। अिसके सिवाय अनेक राज्योंके बड़े बड़े शहरोंमें हरिजन विद्यार्थियोंके लिअे कुमार और कन्या छात्रालय खोले जाते हैं। और वे पुनः अलग न पड़ जायं, अिसलिअे सवर्ण छात्रोंको भी अुन छात्रालयोंमें प्रवेश करनेके लिअे प्रोत्साहन और सुविधा दी जाती है।

संघकी स्थापनासे पहले हरिजनोंकी और खास तौर पर भंगियोंके रहनेकी स्थिति अितनी भयंकर थी कि गांधीजी, ठक्करबापा, सतीशबाबू, महादेव भाअी वगैराने अुसे 'नरक' की अुपमा दी है। 'हरिजनबंधु' के अनेक पन्ने अिन नरकवासोंके शब्दचित्रोंसे भरे पड़े हैं। बापाने पृथ्वी परके अिन जीते जागते नरकोंको मिटानेके कामको अपनाकर कलकत्ता, हवड़ा, अलाहाबाद, दिल्ली और अन्य अनेक स्थानों पर म्युनिसिपैलिटी द्वारा हरिजनोंको स्वच्छ, सादे और सुघड़ मकान रहनेको मिलें, अैसी स्थिति निर्माण की। अिस दिशामें आज तो संघ और सरकार दोनों बहुत आगे बढ़ गये हैं और हरिजनोंके लिअे घरोंकी सुविधा देना हरिजन-कार्यका अेक जरूरी अंग बन गया है। और अिस संबंधकी योजनाअें व्यवस्थित रूपमें आगे बढ़ रही हैं।

हरिजनोंकी आर्थिक स्थिति सुधारनेके लिअे मद्रास, दिल्ली, बम्बअी और दूसरे राज्योंमें हरिजनोंकी सहकारी समितियां स्थापित की गअी हैं। कुछ हरिजनोंको जमीनें देकर अुन्हें खेतीबाड़ीके कामकी तरफ झुकनेके लिअे प्रोत्साहन दिया जाता है। हरिजनोंको शिक्षित बनाने और अुनका आर्थिक अुद्धार करनेमें अब तक तमाम सरकारोंने मिलकर लगभग दस करोड़ रुपये या अिससे भी ज्यादा रकम खर्च की है और हर साल अिसमें वृद्धि होती जा रही है।

मंदिर-प्रवेशकी बात लें तो अिस क्षेत्रमें भी खूब प्रगति हुअी है। अेक समय (१९३६–'३७) अैसा था जब ठक्करबापा और श्री रामेश्वरी नेहरू जैसे पवित्र वैष्णव और प्रथम श्रेणीके नेताओंको सिर्फ अिसीलिअे द्वारकाके मंदिर

और कुछ तीर्थस्थानोंमें प्रवेश नहीं मिला था कि वे हरिजनोंकी सेवा करते हैं, और अुन्हें गोमती-स्नान किये बिना ही लौट आना पड़ा था। वहीं द्वारकाधीशका मंदिर आज हरिजनोंके लिअे खोल दिया गया है। पिछले बीस वर्षोंमें सैकड़ों मंदिर हरिजनोंके लिअे खुले हैं और दूसरे बहुतसे मंदिर खुलनेकी तैयारी हो रही है। मोटर बसोंमें बैठनेके लिअे जहां हरिजनोंको सत्याग्रह करना पड़ता था, वहां अब वे आजादीसे बैठ सकते हैं। हरिजन-सेवक-संघके मंत्रीपद पर रहकर ठक्करबापाने अेक तरफ सवर्णोंका हृदय-परिवर्तन करानेके प्रयास किये और दूसरी ओर हरिजनोंको अुनके विविध दुर्गुणोंसे बचानेकी योजना बनाअी। अुनके बच्चोंको शिक्षा दी। शिक्षितोंको सरकारी और गैरसरकारी नौकरियां दिलवाअीं। अुनकी आर्थिक स्थिति सुधारी। हरिजनोंको खेतीबाड़ी और अुद्योगोंकी तालीम देकर अुन्हें अपने पैरों पर खड़ा किया। अुनके जीवनमें स्वच्छता और पवित्रताके संस्कार डालकर अुन्हें अूर्ध्वगामी बनाया। अुनमें से बीमारोंके लिअे मुफ्त दवा और सेवा-शुश्रूषाकी व्यवस्था करके अनेक स्थानों पर राहत पहुंचाअी। व्यसनोंमें डूबे हुओंको अुनसे मुक्त किया। शरावमें फंसे हुओंको अिस लतसे छुड़ाया और लाखों हरिजनोंको अुनकी गंदी आदतों, पिछड़ी हुअी हालत और जहालतसे अूपर अुठाकर अुनकी स्थिति सुधारी। और अिन सबमें अद्‌भुत बात तो यह है कि अितना सब काम करते हुअे भी भारत भरमें हरिजन विद्यार्थियों, कार्यकर्ताओं या अन्य लोगोंके साथ अुनका व्यक्तिगत संपर्क कायम रहा। जिस जिस प्रान्तमें वे पत्र लिखते वहां अैसे अेक दो हरिजन विद्यार्थियोंके समाचार पुछवाते। अुन्हें मैट्रिक, बी० अे०, या अेम० अे० की परीक्षामें कितने नंबर मिले हैं, अिसका समाचार पुछवाते। अुनके लिअे आगे बढ़नेका बन्दोबस्त कर देते। किसीकी छोटी रकमके अभावमें शिक्षा रुक गअी हो या धंधा बन्द हो गया हो तो अुसकी जांच करके अुसे मदद दिलवाते और जिस कामके लिअे हरिजन विद्यार्थियोंको मदद दी जाती अस कामकी प्रगति कितनी हुअी है, अिसकी पूछताछ करते। जो बापाकी सहायतासे आगे बढ़े हैं, अैसे सैकड़ों हरिजन विद्यार्थियोंके पास A. V. Thakkar, अे० वि० ठक्कर या अमृतलाल वि० ठक्करके हस्ताक्षरवाले पत्र मौजूद हैं और ये पत्र पढ़कर आज भी बापाको वे कृतज्ञतापूर्वक याद करते हैं।

अस्पृश्यता-निवारण और हरिजन-अुद्धारका जो काम बीस वर्ष पहले हरिजन-सेवक-संघ द्वारा शुरू हुआ था, वह 'जब तक बापा जिये तब तक करते ही रहे। अन्तमें जब बीमार होकर और वृद्धावस्थाके कारण अपंग बन

कर भावनगरमें रहे, तब भी यथाशक्ति भार खींचते ही रहे और यह प्रतीति होने पर कि अब मैं अधिक समय तक भारवहन नहीं कर सकूंगा, अपने तैयार किये हुअे कार्यकर्ताओंके कंधों पर अुन्होंने अपना बोझा रख दिया। अुन्हें विश्वास था कि अुन्होंने बीस बीस वर्ष तक साथ रखकर जिन लोगोंको तैयार किया है, वे अिस काममें जरा भी पीछे नहीं रहेंगे।

हरिजन-सेवक-संघके और सरकारके प्रयत्नोंसे अस्पृश्यता-निवारणके काममें काफी अच्छी प्रगति हुअी, अिस बातका बापाको संतोष और आनंद था। अितने पर भी वास्तविक परिस्थितिके विषयमें वे जरा भी लापरवाह नही रहे, न अल्प सफलतासे संतुष्ट हो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे। अुन्होंने अंत तक अिसके लिअे काम किया। अशक्तिके कारण जब अुन्हें यह काम छोड़ना पड़ा, तब अुनके जीमें अिसका दुःख रह गया।

अगस्त १९५० में जब हरिजन-सेवक-संघकी केन्द्रीय कार्यकारिणीकी बैठक हुअी, तब अुन्होंने भावनगरसे रोगशय्या पर पड़े पड़े जो संदेश भेजा, अुसमें अुनकी जागरूकता और वास्तविक दृष्टिकी झांकी मिलती है। अुस सन्देशमें अुन्होंने लिखा था:

"हरिजन-सेवक-संघकी वार्षिक बैठकमें शारीरिक अशक्तिके कारण मुझे पहली ही बार गैरहाजिर रहना पड़ा है, अिसके लिअे मुझे दुःख हो रहा है।

"हमें यह याद रखना है कि बापूजीने अपनी तथा हिन्दू समाजकी तरफसे अस्पृश्यताका नाश करनेका जो वचन दिया था, वह अभी तक पूरा नहीं हुआ है। जहां तक हरिजनोंकी शिक्षाका संबंध है, वहां तक तो यह कहा जा सकता है कि अिस दिशामें संतोषकारक कार्य हुआ है। परंतु हरिजन भाअी-बहनोंको हिन्दू समाजमें समरस कर देनेमें अभी तक हमें जितनी चाहिये अुतनी सफलता नहीं मिली। अभी तक जहां भारतके ८० फी सदी लोग रहते हैं अुन सात लाख गांवोंमें छुआछूतकी भावना बहुत दृढ़ है। कानूनकी दृष्टिसे हरिजनोंको कुअें, तालाब वगैरा जलाशयोंसे पानी भरनेके अधिकार प्राप्त हो गये हैं, फिर भी रोजमर्राके व्यवहारमें हरिजनोंके ये नागरिक अधिकार भोगनेमें विघ्न आते हैं। अिसलिअे हिन्दू जाति और खास तौर पर हरिजन-सेवक-संघका हरिजनोंको अुनके ये अधिकार दिलवाना और अुनके अुपभोगमें आनेवाले विघ्न दूर करना फर्ज हो जाता है। हमें अपना कार्यक्षेत्र शहर छोड़कर गांवमें ले जाना पड़ेगा, क्योंकि वहां हरिजनोंको ज्यादा मुश्किलें अुठानी पड़ती हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हरिजन-सेवक-संघ अिस दिशामें कुछ न कुछ व्यावहारिक कदम अुठायेगा।

"नये संविधानके अनुसार संसदमें और प्रान्तीय धारासभाओंमें हरिजनोंको केवल दस वर्ष तक अर्थात् १९६० तक ही संरक्षण मिला है। अिस बीचमें हमें अैसी स्थिति पैदा करनी चाहिये, जिससे आगे चलकर भविष्यमें अैसे संरक्षणकी अुन्हें जरूरत न रहे और न हरिजनोंको अैसी मांग ही करनी पड़े।"

अिस बैठकके बाद बापा पूरे पांच महीने भी नहीं जिये। फिर भी अुन्होंने हरिजन-सेवक-संघको जो पथप्रदर्शन दिया है, अुसके अनुसार संघ अपनी अनेक शाखा-प्रशाखाओं द्वारा काम कर रहा है। सरकार भी दिन दिन अिस मामलेमें अधिकाधिक जाग्रत बनती जा रही है और हरिजनोंको सवर्णोंकी कतारमें लानेके लिअे सब दिशाओंमें प्रयास हो रहे हैं। अिन सबके बाद भी सदियों पुराने रिवाजको पूरी तरह शायद निश्चित अवधिमें न मिटाया जा सके, तो भी १९६० के अन्त तक जिस लक्ष्य पर पहुंचनेका सोच रखा है, अुसकी बहुत लम्बी मंजिल तय कर ली जायगी, अिसमें अब शंका नहीं रही।

२८

काळे व्याख्यानमालाका व्याख्यान

भारत-सेवक-समाज द्वारा जो अनेक परिपाटियां डाली गअी थीं, अुनमें आजीवन सदस्योंकी अध्ययनशीलता और अुद्योगपरायणता तथा विशेषतः अपने विषयका सांगोपांग ज्ञान मुख्य थीं। समाजके आद्य संस्थापक गोखलेजी स्वयं ही अिसके अेक आदर्श दृष्टान्त थे। जो विषय हाथमें लिया अुसकी गहरीसे गहरी और विस्तृत जानकारी प्राप्त किये बिना अुन्हें चैन नहीं पड़ता था। आर्थिक विषय हो, राजनैतिक विषय हो या प्रबंध संबंधी विषय हो, किसी भी विषयकी पूरी तफसीलें और आंकड़े जमा करके अुन्हीं पर वे अपने वक्तव्यकी रचना करते थे। अिसलिअे जो चीज वे पेश करते, वह बहुत ही असरकारक ढंगसे रख सकते थे। अिसमें अुन्हें शायद ही पीछे देखना पड़ता था। गोखलेजीका ज्ञानोपासनाका, अध्ययनशीलताका यह अुत्तराधिकार समाजके दूसरे सदस्योंको भी मिला था। ठक्करबापा भी अिसमें अपवाद नहीं थे। शिक्षा, अकाल कष्ट-निवारण, खादीकार्य वगैरा जिस काममें वे पड़ते, अुसका सैद्धान्तिक और व्यावहारिक ज्ञान वे पूरी तरह प्राप्त कर लेते। परन्तु आदिवासियोंके जीवन और समाज-व्यवस्था तथा अुनकी व्यक्ति-

गत, कौटुम्बिक और सामाजिक स्थिति, अुनका आर्थिक और राजनैतिक दृष्टिकोण, भारतके समाज-जीवनमें अुनका स्थान और अुनके अन्य विविध प्रश्नोंके विषयमें बापाने जितना अध्ययन किया था, अुतना अेक-दो अपवादोंको छोड़कर शायद ही किसीने किया होगा।

आदिम जाति सेवक संघकी स्थापनाके बाद अब कअी स्नातक और विद्वान अिस सवालका अध्ययन करनेकी ओर झुके हैं। परन्तु बापाने तो अुसका अध्ययन ठेठ १९२५–२६ से शुरू कर दिया था। अिस विषयके वे निष्णात थे, बहुश्रुत थे। अिस विषयका वे कितना विशाल और गहरा ज्ञान रखते थे, अिसकी कुछ कल्पना अुस व्याख्यानसे होती है, जो अुन्होंने 'काळे व्याख्यानमाला' के अेक भागके रूपमें १९४१ में पूनामें विद्वानोंके सम्मुख दिया था।

अिस व्याख्यानकी तैयारी करनेमें अुन्होंने काफी समय और शक्ति खर्च की। और व्याख्यानमें जो भी ब्यौरे दिये, वे कहां कहांसे अिकट्ठे किये गये हैं, यह व्याख्यानकी पुस्तिकाके अंतमें दी गअी चुनी हुअी पुस्तकोंकी सूचीसे मालूम होता है। अिस सूचीमें अुस समयके ब्रिटिश भारतके भिन्न भिन्न प्रान्तों और देशी राज्योंमें रहनेवाले आदिवासियोंकी स्थिति संबंधी लगभग ५७ पुस्तकोंके अुपरांत प्रत्येक प्रान्त और राज्यकी जनगणनाके विवरणोंका समावेश होता है। अिसमें सन्देह नहीं कि तीस-चालीस पन्नोंका अध्ययनपूर्ण निबंध तैयार करनेके लिअे अुन्होंने कमसे कम दस बारह हजार पन्नोंका साहित्य पढ़ा होगा।

आज अलबत्ता भारतकी राजनैतिक स्थिति बदल गअी है। अंग्रेज राज्य छोड़कर चले गये हैं। देशी राज्योंकी सरहदें मिट गअी हैं। अिस प्रकार सारे विषयकी राजनैतिक भूमिका बदल गअी है। फिर भी आदिवासियोंके जो थोड़ेसे मूलभूत प्रश्न मौजूद हैं और बापाने अपने व्याख्यानमें जिन प्रश्नोंकी विस्तारसे चर्चा की है, वे अभी तक बिना हल हुअे या अधूरे ही खड़े हैं। अिसलिअे बापाका वह व्याख्यान आदिवासियोंके प्रश्नोंके हलके लिअे पूर्व-पीठिकाका काम करेगा। सारा व्याख्यान तो बहुत लंबा होनेसे यहां देना असंभव है। परंतु अुस व्याख्यानमें अुन्होंने जो मुख्य मुद्दे पेश किये हैं, अुनमें से कुछ जरूरी भाग देकर ही हम संतोष मान लेंगे।

भारत जैसे विशाल खंडके तमाम प्रान्तोंमें रहनेवाले आदिवासियों और अुनके प्रश्नोंकी विशालताकी — अुनकी बहुत बड़ी जनसंख्याकी, अुनके अज्ञान और दारिद्र्यकी, अुनके शराब और दूसरे व्यसनोंकी और साधारण लोगोंसे अलग दूर दूरकी पहाड़ियों पर और जंगलोंमें अेकान्त जीवन बितानेकी

अुनकी खासियतकी व्यापक कल्पना बहुत कम लोगोंको होगी। और अिस कार्यके लिअे समाज-सेवकों और कार्यकर्ताओंकी कितनी बड़ी जिम्मेदारी है, अिसकी कल्पना तो अुससे भी कम लोगोंको होगी। अिन कार्यकर्ताओंने अिस प्रश्नके प्रति जितना चाहिये अुतना ध्यान नहीं दिया। अिसलिअे यह प्रश्न अभी तक ज्योंका त्यों खड़ा है।

हमारे देशके आदिवासियोंकी आबादी कोअी छोटी नहीं है। कुल मिला कर वह सवा दो करोड़ होती है और भारतकी समस्त जनसंख्याके साढ़े छः प्रतिशतके बराबर है। यह संख्या देशमें रहनेवाले हरिजनोंसे लगभग आधी है। देशभरमें हरिजनोंकी कुल आबादी पांच करोड़ है। अिस चीजको और भी स्पष्ट रूपमें रखें तो अिस प्रकारका चित्र पेश किया जा सकता है। हम घड़ी भर यह कल्पना करें कि हमारे बम्बअी शहरमें केवल अज्ञान और गरीबीमें फंसे हुअे चिथड़ेहाल भील, गोंड और संथाल जैसे आदिवासी ही रहते हैं। तो सवा दो करोड़की आबादीमें आदि-वासियोंसे बसे हुअे अैसे कुल १९ शहर हो जायंगे। यदि हम अेक प्रान्तमें से तमाम सुधरे हुअे मनुष्योंको निकाल दें और अुस प्रान्तमें केवल आदि-वासियोंको बसा दें, तो वे मध्यप्रान्त और बरार तथा बड़ोदा राज्यका जो प्रदेश है अुस सबको खचाखच भर देंगे। आदिवासी आसामकी आबादीसे अथवा बम्बअी प्रान्तके, बड़ोदा राज्यको छोड़कर दूसरे तमाम देशी राज्योंकी आबादीके दुगुनेसे भी अधिक हैं। बम्बअी प्रान्तमें देशके दूसरे प्रान्तोंसे आदिवासियोंकी संख्या तुलनामें अधिक हैं। अर्थात् कुल आबादीके ७ फी सदीके बराबर है। खानदेश, थाना, कोलाबा, पंचमहाल, अुत्तर गुजरात और नासिकमें वे हजारों और लाखोंकी संख्यामें बसे हुअे पाये जाते हैं। १९०० में छप्पनिया अकालके कारण वे सिन्धके थरपारकर जिले जैसे रेतीले और मरुप्रदेशमें भी बस गये हैं। अलबत्ता, ये लोग आपको बड़े शहरोंमें या रेलवेमें दिखाअी नहीं देंगे, परंतु आप रेलवे लाअिन तथा डाक-तारसे दूर दूर स्थित छोटे गांवोंमें, पहाड़ी अिलाकेमें, पहाड़ियों पर या जंगलोंमें जायंगे, तो आपको वे हजारोंकी तादादमें देखनेको मिलेंगे। अुनके शरीर पर चिथड़े लिपटे होंगे अथवा कुदरतके दिये हुअे वस्त्र होंगे और खाने-पीनेमें जंगलकी अविकसित खेतीसे अुत्पन्न धान्यकी पतली राब और जंगलके कन्दमूल तथा शाकभाजी होगी। अधिकांश आदिवासी अिन्हीं चीजों पर गुजर करते हैं।

ये लोग अिस प्रदेशकी आदि प्रजा थे। अुत्तर पश्चिम तथा अुत्तर पूर्वसे आर्य लोग चढ़ाअी करके आये और अिन भूमिपुत्रोंको हराकर अपने

अधीन बनाया, अिससे पहले ये आदिवासी ही भारतमें रहते थे। आर्य लोगोंने यहां आकर अुन्हें पराजित किया और मैदानसे निकालकर ठेठ जंगलों और पहाड़ों तक खदेड़ दिया। वे अिस भूमिकी हिन्दुओंसे भी अमिक पुरानी सन्तान हैं। तब वे मुसलमानों और अध-गोरोंसे तो पुराने होंगे ही, अिस बारेमें लेशमात्र शंका नहीं। परंतु ये आदिवासी अज्ञान और गरीबीमें गले तक डूबे हुअे हैं और अपने अधिकारों और विशेष हकोंका अुन्हें बिलकुल भान नहीं। फिर अपनी सामूहिक राष्ट्रीय जिम्मेदारीका तो खयाल ही कहांसे हो? यदि हम अिस विषय पर थोड़ी गंभीरतासे विचार करें, तो आदि-वासियोंके आर्थिक और सामाजिक तथा नैतिक और भौतिक सुधारका कार्य कितना महान, विशाल और आवश्यक है तथा यह प्रश्न कितना तात्कालिक और जल्दी हल चाहता है, अिसकी प्रतीति हमें हो जायगी। आदिवासियोंकी अितनी बड़ी जनसंख्याको निरक्षर, अज्ञान और गरीबीमें सड़ती हुअी रखना या साहूकारों और जमींदारोंके यहां अुन्हें स्थायी गुलामी करते रहने देना अथवा साधारण जनसमाजमें से अधिक आगे बढ़े हुअे लोगोंके हाथों अिन आदिवासी बंधुओंको निर्दय ढंगसे लुटते और शोषित होते रहने देना अब ज्यादा समय तक हमें पुसायेगा नहीं।

१९३१ की जनगणनाके अनुसार वे अलग अलग प्रान्तों और राज्योंमें अिस प्रकार बंटे हुअे थे :

	प्रान्त	आबादी
१.	आसाम	१६,७८,४१९
२.	बंगाल	१९,२७,२९९
३.	बिहार और अुड़ीसा (१९३५ से पहले)	६६,८१,२२८
४.	बम्बअी (सिंध सहित)	२८,४१,०८०
५.	मध्यप्रान्त और बरार	४०,६५,२७७
६.	मद्रास (गंजाम और कोरापुट जिलों सहित। ये जिले अब अुड़ीसामें हैं)	१२,६२,३६९
७.	अन्य	४,३०,५८२
	प्रान्तोंमें रहनेवाले आदिवासियोंकी कुल संख्या	१,८८,८६,२५४
	देशी राज्योंमें रहनेवाले आदिवासियोंकी कुल संख्या	३५,२१,२३८
	कुल	२,२४,०७,४९२

अिसके बाद आसामकी गारो, काचारी, खासी, लुशाअी, मिड़िर वगैरा छः जातियां, बंगालकी चार जातियां, बिहार और अुड़ीसाकी आठ जातियां,

मद्रास और मध्यप्रान्तकी चार-पांच जातियां, बंबअीकी भील, घोड़िया वगैरा छः जातियां, युक्त प्रान्त (वर्तमान अुत्तर प्रदेश) की अेक जाति और राजपूताना तथा मध्यभारतके देशी राज्योंकी अेक दो जातियां — अिस प्रकार २९ अलग अलग जातियों, अुनकी आबादी और वे जहां जहां बसी हुअी हैं अुन जिलों और तालुकोंके ब्यौरे देकर बापा सीधे अिन लोगोंके मुख्य प्रश्नों पर आकर अुनका अिस प्रकार पृथक्करण करते हैं।

आदिवासियोंके मुख्य मुख्य प्रश्न अिस प्रकार हैं: १. गरीबी, २. निरक्षरता, ३. अनारोग्य, ४. आदिवासियोंके निवासस्थानोंकी दुरूहता, ५. शासन-प्रबंध संबंधी खामियां और ६. नेतृत्वका अभाव।

अिस प्रकार पहले वे गरीबीके मुद्दे पर आकर कहते हैं:

१. गरीबी

अगर मैं यह कहूं कि आदिवासी भारतकी आबादीमें सबसे अधिक गरीब वर्ग हैं, तो अिसमें जरा भी अतिशयोक्ति नहीं। अिसमें हरिजन भी अपवाद नहीं। क्योंकि ये तथाकथित हरिजन सामाजिक कठिनाअियोंके शिकार होते हुअे भी शहरों और गांवोंमें हमारे ही साथ रहे हैं। वे हमारे नागरिक और ग्रामजीवनका अेक भाग बन गये हैं। भले ही हमने अुन्हें अछूत समझकर अुन्हें अपने स्पर्शसे अलग रखा, फिर भी वे हमारी नजरसे कभी अलग नहीं रहे। हम अुनसे अैसी सेवा लेते हैं जो अुन्हें पसन्द नहीं है — हम अुनसे अपना मैला अुठवाते हैं — और वे हमारे बीचमें रहते हैं, यह देखते हुअे हम अुन्हें भूल नहीं सकते। अुन्हें भूल जानेसे हमारा काम नहीं चल सकता। परंतु आदिवासियोंकी तो बात ही दूसरी है। हमें अपने आदिवासियोंके अस्तित्वका भान शायद ही होता है। वे कभी बड़े शहर या नगर नहीं देखते और गांवोंमें भी कभी कभी ही आते हैं। जिन्हें हम तिरस्कारसे कालीपरज अथवा 'काली प्रजा' के नामसे पुकारते हैं, अुनके संसर्गमें शहरके लोग, बुद्धिशाली वर्ग और धर्मचार्यों जैसे अूंचे वर्गके लोग बहुत ही कम आते हैं। वे बेचारे अपने तंग दायरेमें हमसे अलग होकर अेकाकी जीवन बिताते हैं। परंतु हम अपने जाति, कुल और जन्मके अभिमानके कारण अुनके जीवनकी तरफ नजर तक डालनेकी परवाह नहीं करते; फिर अुनके छोटे और तंग दायरेमें झांकनेकी तो बात ही क्या की जाय? बहुत लंबे समयसे हमारे शासनकर्ता — फिर वे हिन्दू हों, मुसलमान हों या अंग्रेज हों — अिन बेचारे आदिवासी बंधुओंकी अुपेक्षा करते आये हैं। अिसका परिणाम यह हुआ है कि वे आज भी अुसी प्रारंभिक दशामें रहकर बड़ी मुश्किलसे

जी रहे हैं और रोगोंके विरुद्ध तथा जीवन-संग्रामकी दौड़में समाजके आगे बढ़े हुअे प्रगतिशील लोगोंके शोषणके विरुद्ध विफल लड़ाअी लड़ रहे हैं। क्योंकि अपनेसे सब प्रकार बलवान लोगोंसे भिड़नेमें अुन्हें तो खोना ही पड़ता है। आर्य लोगोंने अुन पर आक्रमण करके अुन्हें गिरि-कन्दराओं और गुफाओंमें धकेल दिया, तबसे आज तक वे प्रागैतिहासिक स्थितिमें ही जीवन-यापन कर रहे हैं।

अिन आदिवासियोंमें बहुत बड़े भागके लोग खेती करते हैं, परंतु बहुत ही पुरानी और अशास्त्रीय पद्धतिसे। अुनके यहां लकड़ीका साधारण माना जानेवाला हल भी बहुत ही कम काममें लिया जाता है। . . .

अुसके बाद जंगल जला कर खेती करनेकी आदिवासियोंकी पद्धतिकी, जिसने कहीं कहीं तो लगभग धार्मिक विश्वासका दृढ़ स्वरूप पकड़ लिया है, शास्त्रीय चर्चा करके अुस पद्धतिके फंदेसे आदिवासियोंको धीरे धीरे छुड़ानेकी हिमायत की गअी है। क्योंकि अिस प्रकारकी खेतीसे जंगलोंको बहुत ही नुकसान होता है। आगे चलकर बापा कहते हैं कि अिस मामलेमें संबंधित प्रान्तीय और राज्य-सरकारें कार्रवाअी करें और अुदारतासे अज्ञान आदिवासियोंकी मदद करें, तो थोड़े समयमें यह बुराअी जरूर मिटाअी जा सकती है।

आदिवासियोंकी गरीबीके अन्य कारणोंमें बापाने जमींदारी प्रथा, अुसके अधीन अिनकी अर्धगुलामों जैसी स्थिति, बेगार और शराबके व्यसन वगैरा बताये हैं। और अुनकी विस्तृत चर्चा करके अिन सब अनिष्टोंने आदिवासी प्रजाको गरीबी और दुःखके गर्तमें कैसे धकेल दिया है, अिसका वर्णन किया है।

२. निरक्षरता

आदिवासियोंका दूसरा शत्रु है निरक्षरता। अिस संबंधमें बापाने निम्न शब्द लिखे हैं:

“अक्षरज्ञान जाननेवाले आदिवासियोंकी सख्याके आंकड़े अेक करुण चित्र प्रगट करते हैं और शिक्षा-विभागके अधिकारियों तथा परोपकारी लोगोंके सामने अपनी दयाजनक पुकार पहुंचाते हैं। १९३१ की जनगणनाके विवरणमें ७६,११,८०३ की आबादीमें केवल ४४,३५१ ही अक्षरज्ञान रखते थे। अर्थात् आबादीका .५८ फी सदी भाग या हर १७२ आदमियोंमें १ आदमी अक्षरज्ञान रखता था।

१९२१ की जनगणनाके आंकड़ोंने यह बात जाहिर की कि काटकरी लोगोंमें फी हजार केवल ३ और भीलोंमें फी हजार ४ मनुष्य ही पढ़े-लिखे थे, जब कि भरवाड़ोंमें फी हजार १०, महारोंमें २३, भंगियोंमें २८ और ढेढ़ोंमें ६५ आदमी अक्षरज्ञानवाले थे। अिस प्रकार अक्षरज्ञानकी कलामें वे भंगियोंसे सात गुने और ढेढ़ोंसे सोलह गुने अधिक पिछड़े हुअे थे। दक्षिण मध्यभारतके अेक राज्यमें, जहां सभी आबादी आदिवासी कबीलोंकी है, भीलोंमें अक्षरज्ञानका अनुपात (१९२४ में) हर तेरह हजारमें केवल अेक अर्थात् लगभग शून्य ही था। यह देखकर मेरे आश्चर्य और दुःखकी सीमा नहीं रही। यह निरक्षरता मिटानी हो और अुन्हें सिर्फ अक्षरज्ञान ही देना हो, तो भी बहुत बड़ी संख्यामें पाठशालाअें खोलनी पड़ेंगी। प्रान्तीय सरकारों और लोकल बोर्डोंके प्रयत्नोंकी पूर्ति सेवाभावी और परोपकारी संस्थाओंको करनी पड़ेगी। प्राथमिक शिक्षाके प्रचारके परिणामस्वरूप आदिवासियोंमें आत्म-विश्वास आयेगा और वह अुनके लिअे बहुत हद तक सहायक भी होगा। फिर वे अपनी पिछड़ी हुअी दशाका कारण जानेंगे और अुसमें सुधार करनेके काममें लगेंगे। आदिवासियोंमें प्राथमिक पाठशालाअें स्थापित करनेका कार्य आर्थिक कठिनाअीके अलावा और कअी मुश्किलोंसे भरा हुआ है। अुनका प्रदेश भारतके भीतरी भागोंमें होनेसे वहां आसानीसे जाना कठिन होता है। अिस-लिअे वहां बहुत कम शिक्षक स्वेच्छापूर्वक पढ़ाने जायंगे और जो जायंगे अुनमें बहुत थोड़े वहां टिकेंगे। अिसलिअे वहां जानेवाले लोगोंमें सेवाकी भावना और मिशनरी लगन जगानी पड़ेगी और यह बात अुनके गले अुतारनी होगी कि यह प्रेमका परिश्रम है। साथ ही जहां संभव हो वहां आदिवासी अुम्मी-वारोंको भी अिस कामकी तालीम देनी चाहिये। और अभी कुछ वर्ष तक आदिवासी बालकोंकी पाठशाला चलानेके लिअे जनपदसे लोगोंको तालीम देनेके लिअे लाना पड़ेगा।

आदिवासी बालकोंको वे जिस प्रदेशमें रहते हों अुसीकी भाषा और लिपि वगैराके द्वारा शिक्षा देनी चाहिये। अधिकतर तो सभी आदिवासी अपनी बोलीके अतिरिक्त वहांकी प्रान्तीय भाषासे भी परिचित होते हैं। केवल बहुत ही छोटे बच्चोंको प्रान्तीय भाषा समझनेमें कठिनाअी होती है। अैसे मामलोंमें अुन्हें अपनी बोली द्वारा प्रान्तीय भाषा सिखानी चाहिये। . . . आसामके खासी लोगोंमें किया गया है, वैसे आदिवासियोंकी पाठशालाओंमें रोमन लिपि जारी करनेके तरीकेको प्रोत्साहन न देकर अुसे निरुत्साहित करना चाहिये, क्योंकि अिससे बहुतसी पेचीदगियां पैदा

होती हैं। अिसमें कअी टेकनिकल हानियां हैं और बहुसंख्यक लोगोंके साथ अिससे दुश्मनी पैदा होती है।

अिसी प्रकार आदिवासियोंको औद्योगिक शिक्षा देनेके लिअे अुनके बीच यहां वहां छात्रालयवाली अुद्योगशालाअें खड़ी करनी चाहिये। आदिवासियोंकी निरक्षरताके सिवाय अुनका आलस्य भी कहावत बन गया है।. . . यदि अुन्हें हमें सख्त परिश्रमी नागरिक बनाना हो, तो सबसे पहले आदिवासी बालकोंको हाथमें लेकर अुन्हें शिक्षित करना चाहिये। अिसीलिअे अुन्हें औद्योगिक शिक्षा देनेके वास्ते छात्रालयवाली पाठशालाओंकी जरूरत है। अैसी पाठशालाओंमें ही अुन्हें अुपयोगी नागरिक बनाया जा सकता है। अिस प्रकारकी शिक्षा सबको मुफ्त दी जानी चाहिये। नहीं तो आदिवासी अपने बच्चोंको पाठशालाओंमें नहीं भेजेंगे। लेखन, वाचन वगैरा सिखानेके सिवाय स्थानीय परिस्थितिके अनुकूल खेती-बाड़ी, बुनाअी, बढ़अीगिरी, लुहारी वगैरा दूसरे दस्तकारीके काम भी आदिवासी बालकोंको अवश्य सिखाने चाहिये। अिन बालकोंको तीन चार वर्ष छात्रालयमें रखनेसे नियमित जीवन बितानेकी अुन्हें आदत पड़ जायगी। यह आदत आगे चलकर अुन्हें बहुत ही फायदा पहुंचायेगी।

अब तक आदिवासी अिलाकोंमें शिक्षा संबंधी जो आर्थिक सहायता दी जाती है, वह बहुत ही मामूली और नाकाफी है। अुदाहरणके लिअे, अुड़ीसामें पाठशालाओंकी संख्या बढ़ी है, फिर भी पिछले कुछ वर्षों पहले जिलेवार जो सहायता दी जाती थी अुसीको आधार मानकर आज भी सहायता दी जाती है और यह बात ध्यानमें नहीं रखी जाती कि पाठशालाओंकी संख्यामें वृद्धि हो गअी है। परिणाम यह हुआ है कि वह रकम पाठशालाओंकी अधिक संख्यामें बांटी जाती है। अिससे प्रत्येक शिक्षकको सालाना ५० रुपये तककी मामूली रकम ही मिलती है। साअिमन-कमीशनने भी अपने विवरणमें अिसका अुल्लेख किया था। मिडिल स्कूल, हाअीस्कूल और कालेजकी शिक्षा आदिवासियोंमें शून्यवत् नहीं तो भी नहींके बराबर ही है। आसामके खासी और छोटानागपुरके मुंडा तथा ओरायन लोगोंमें कालेजकी शिक्षा पाये हुअे अथवा पानेवाले बहुत ही थोड़े लोग हैं। १९४० के जून मासमें भील-सेवा-मंडलके प्रयत्नसे तालीम पाकर अेक भील कन्या मैट्रिककी परीक्षा पास कर सकी है, यह बात जब मैंने सुनी तो मैं बहुत ही खुश हुआ। अीसाअी मिशनरियोंके अलावा किसी और सेवा संस्था द्वारा शिक्षा पाकर कालेजमें भरती होनेवाली वह प्रथम कन्या थी।

अिस समय अीसाअी मिशनकी संस्थाअें और गैरअीसाअी भारतीय संस्थाअें अधिकतर सरकारी मददसे आदिवासियोंके लिअे पाठशालाअें चलाती हैं। अिनका काम प्रशंसनीय होने पर भी सागरमें बिन्दुके समान है। आदिवासियोंको निराशा और अज्ञानके गर्तसे बाहर निकालनेके लिअे अिस प्रकारकी संस्थाओंको अधिक प्रयत्न करने चाहिये और सत्ताधारियोंको अुन्हें अुदार और प्रगतिशील सहायता देनी चाहिये।

३. अनारोग्य

आदिवासियोंके प्रदेशोंमें मलेरियाका बहुत ही प्रकोप होता है। मलेरियासे बहुत बड़ी संख्यामें मृत्युअें होती हैं। अिसके अलावा बहुतसे छूतके रोग भी विद्यमान हैं। अिनमें से अेक रोग 'कोमा' दक्षिण अुड़ीसा और मद्रासके आदिवासियोंमें प्रचलित है। जो मनुष्य अिस रोगके शिकार होते हैं, अुनके सारे शरीरमें चकत्ते और घाव पड़ जाते हैं। ये दाग शरीरके जीभ और गुदा जैसे मुलायम अंगों पर भी निकलते हैं। यह रोग जवान और बूढ़े, स्त्री और पुरुष सब पर असर करता है और अुनकी शक्तिको चूस लेता है। अिसके सिवाय विवाह संबंधी तथा विचित्र प्रकारके यौन संबंधोंके कारण आदिवासियोंमें सिफलिस और गनोरिया जैसे संभोगजन्य रोग भी साधारण बन गये हैं।

रोग आदिवासियोंका जीवन क्रूरतासे छेद डालते हैं और बहुत बर्बादी मचाते हैं। अिसका कारण अुनका अज्ञान है। अिसी प्रकार अुन लोगोंकी सेवा-शुश्रूषाका भी विचित्र और भद्दा ढंग है। राज्यकी तरफसे अुन्हें वैद्यकीय सेवा-शुश्रूषा नहीं मिलती, यह भी अिसका अेक महत्त्वपूर्ण कारण है। ये लोग रोग मिटानेको जंतरमंतर, ओझा और जति वगैराका आश्रय लेते हैं अथवा कुछ अनाड़ी वैद्योंकी सलाहके अनुसार विशेष प्रकारकी वनस्पतियोंकी जड़ें, पौदे या पत्ते घिसकर या पीसकर काममें लेते हैं।

अिसलिअे आदिवासियोंमें दवा-दारूकी मददका अिन्तजाम करना अुनके कल्याणका अेक महत्त्वपूर्ण कार्य है।

४. आदिवासी अिलाकोंकी दुर्गमता

आदिवासियोंके प्रदेशोंमें यातायातके साधन बहुत ही खराब हैं। जहां मोटर आ-जा सके अथवा सभी ऋतुओंमें सफर किया जा सके, अैसे रास्ते बहुत थोड़े हैं। अुदाहरणके लिअे, आसामकी लुशाअी पहाड़ियोंमें अथवा अुत्तर प्रदेशके गढ़वाल जिलेमें मोटरके रास्ते नहीं, पैरंतु पांच फुट चौड़ी सड़कें हैं। अिन प्रदेशोंमें अत्यंत पहाड़ी और पथरीले मार्गोंके कारण यातायात खराब

रहता है । परंतु वहांके रास्ते सुधारनेसे और बहुत रुपया खर्च करके नये रास्ते बनानेसे अुनकी कुछ दुर्गमता तो कम की जा सकती है और अभी जितना आवागमन है अुससे अधिक किया जा सकता है। पहाड़ियों और पहाड़ोंमें जो असंख्य झरने और नदियां बहती हैं, वे आम तौर पर बैल-गाड़ियों और अैसी दूसरी सवारियोंको बरसातमें रोक देती हैं । अुन पर छोटे बड़े पुल बनाकर यह कठिनाअी मिटाअी जा सकती है।

अच्छे रास्ते देशके अनेक द्वार खोल देंगे। अिससे व्यापारको प्रोत्साहन मिलेगा। वे अुद्योगपतियोंको अिन प्रदेशोंकी ओर आकर्षित करेंगे, क्योंकि अिन प्रदेशोंमें खनिज और अन्य प्राकृतिक द्रव्य पुष्कल मात्रामें हैं। अिससे आदिवासी दूसरे आगे बढ़े हुअे लोगोंके संसर्गमें अधिक मात्रामें आयेंगे । कुछ मानववंश-शास्त्री तथा ब्रिटिश शासक अिस प्रकारका संसर्ग आदि-वासियोंके लिअे भयजनक मानते हैं। परंतु मेरा मत अिससे भिन्न है।

५. शासन-संबंधी खामियां

आदिवासी जिन प्रदेशोंमें मुख्यतः रहते हैं, अुनके १९३५ के भारत सरकारके कानूनके अनुसार अलग किये हुअे (अेक्सक्लूडेड) और अंशतः अलग किये हुअे (पार्शियली अेक्सक्लूडेड) अैसे दो विभाग कर दिये गये हैं । मॉण्टफोर्ड सुधार अिस अिलाकेको पिछड़ा हुआ प्रदेश मानते थे और अिसलिअे १९१९ का भारत-सरकारका कानून अुस पर लागू नहीं किया जाता था। मॉण्टफोर्ड सुधारोंसे पहले १८७४ के भारतीय कानूनकी १४ वीं धाराके अनुसार अिन प्रदेशोंको शिडयूल्ड डिस्ट्रिक्ट्स माना जाता था।

मौजूदा संविधानके अनुसार कुल मिलाकर आठ अलग किये हुअे अिलाके और अट्ठाअिस अंशतः अलग किये हुअे अिलाके हैं । अिनकी कुल आबादी डेढ़ करोड़ है। अलग किये हुअे अिलाकोंका शासन संबंधित प्रान्तोंके गवर्नरोंकी सीधी देखरेख और नियंत्रणमें होता है, जब कि अंशतः अलग किये हुअे अिलाकोंका प्रबंध ज्यादातर गवर्नरोंके हाथमें होता है । अिस मामलेमें अुन्हें विशेष जिम्मेदारियां दी हुअी हैं। अिन अिलाकों पर धारासभाओंका कोअी कानून लागू नहीं हो सकता, जब तक कि गवर्नर स्वयं विशेष घोषणा द्वारा अैसा हुक्म न दे ।

अलग किये हुअे अिलाकोंके लिअे किसी भी प्रकारके कानून बनाने या अुन्हें लागू करनेकी गवर्नरको पूरी सत्ता होती है। अिसी प्रकार कोअी कानून रद्द करने या सुधारनेका भी अुसे पूरा अधिकार होता है । अिन अिलाकोंमें जो भी खर्च किया जाता है, वह धारासभाके मतके अधीन नहीं होता, अुससे परे होता है।

अिन अिलाकोंका प्रबंध निरंकुश और सर्वसत्तात्मक होता है। थोड़ेसे अफसरोंके हाथमें कुल सत्ता होती है। प्रबंध और न्यायके अधिकार अेक ही अफसरके हाथमें होते हैं। शिक्षा जैसा विषय भी अुसीको सौंपा जाता है। अिसके सिवा ये अफसर यूनियन, तालुका और डिस्ट्रिक्ट बोर्डोंके अध्यक्ष होते हैं। जब अेक ही कर्मचारीके हाथमें अेक साथ अितने सारे काम सौंप दिये जायं, तब शासन-प्रबंध कार्यक्षम और लोकप्रिय कैसे हो सकता है?

स्थानीय स्वराज्य भी जहां है वहां नामका ही होता है। बोर्डोंमें सौ फी सदी सरकारके नामजद लोग और सरकारी अध्यक्ष होते हैं। ये बोर्ड सरकारी तंत्रकी अेक दूसरी शाखाके रूपमें ही काम करते हैं और अुनमें लोगोंकी भावना व्यक्त करनेके लिअे नहीके बराबर गुंजाअिश होती है।

. . . आदिवासियोंके प्रदेशमें न्यायका काम भी अुचित रूपमें खूब ही आलोचनाका विषय बन गया है।

१९३५ के विधानके अनुसार आदिवासियोंके लिअे अलग मताधिकार द्वारा जो बैठकें सुरक्षित रखी गअी हैं, वे कुल मिलाकर २४ हैं और अिस प्रकार अलग अलग प्रान्तोंमें बांट दी गअी हैं:—

आसाम ९, बिहार ७, अुड़ीसा ५ तथा बम्बअी, मद्रास और मध्य-प्रान्त प्रत्येकमें १।

मध्यप्रान्तमें जहां आदिवासियोंकी आबादी लगभग हरिजनोंके बराबर और कुल जनसंख्याके पांचवें हिस्सेके बराबर है, वहां आदिवासियोंके लिअे केवल अेक ही बैठक सुरक्षित रखी गअी है, जब कि हरिजनोंके लिअे २० बैठकें हैं। अुड़ीसामें ५ सुरक्षित बैठकोंमें से ४ नामजद होती हैं। यह अुड़ीसाका ही विशेष लक्षण है। क्योंकि अन्य सब प्रान्तोंमें प्रांतीय धारा-सभाओंमें सदस्योंको नामजद करनेका रिवाज रद्द कर दिया गया है।

लोकल बोर्डोंमें भी अेक बम्बअी सरकारके सिवाय किसी प्रान्तमें आदिवासियोंको प्रतिनिधित्व नहीं मिला है।

६. नेतृत्वका अभाव

आदिवासी जातियोंमें नेतृत्वका अभाव अेक बड़ी रुकावट है। अीसाअी बने हुअे आदिवासियों अर्थात् छोटानागपुरकी तरफके लोगोंमें पढ़े-लिखे आदमी जरूर हैं, मगर वे आम तौर पर अपने गैरअीसाअी भाअियोंकी अपेक्षा अपने अीसाअी बंधुओंमें ही ज्यादा दिलचस्पी लेते मालूम होते हैं। साथ ही गैरअीसाअियोंमें तो अीसाअी आदिवासियोंसे भी बहुत कम नेता हैं। आदिवासियोंके हितोंकी तरफ सत्ताधारी और सामान्य जनता दोनोंका

ध्यान क्यों नहीं आकर्षित होता, अिसका यह भी अेक कारण है। आदिवासी अपने पैरों पर खड़े रह सकें और अपने हकोंके लिअे लड़ सकें, अैसा समय आने तक गैरआदिवासियों और समाज-सेवकोंको अुनका काम सेवाबुद्धि और निःस्वार्थ भावसे हाथमें लेना चाहिये और अुनकी आर्थिक और शिक्षाके क्षेत्रमें भी अुन्नति करनेके प्रयत्न करने चाहिये।

२९

राष्ट्रव्यापी संकट

ठक्करबापाने अपने जीवनकालमें समाजके भिन्न भिन्न क्षेत्रोंमें जो दो चार बड़े बड़े काम किये हैं, अुनमें अकाल-पीड़ित प्रदेशोंमें घूमकर समय समय पर हाथमें लिये हुअे अुनके मानवसेवाके कार्योंका बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। सेवाजीवनके प्रारंभसे ही अुन्होंने मथुरा, कच्छ और काठियावाड़के अकालके समय कष्ट-निवारणके कार्योंका संचालन किया था। अुसके बाद पंचमहाल, गुजरात, अुड़ीसा, आसाम वगैरा प्रान्तोंमें १९१८ से १९४३ तकके पच्चीस बर्षकी अवधिमें जो भी अकाल पड़े और जलसंकट आये, अुनमें हर बार कष्ट-निवारण केन्द्र स्थापित करने, अुन्हें चलानेके लिअे चंदा जमा करने, अुचित और न्यायपूर्ण ढंगसे अुसका वितरण करने, लोगोंकी धर्मबुद्धि जाग्रत करने तथा सरकारी नीति गलत हो —— और वह ज्यादातर गलत ही होती थी —— तो अुसे सुधारनेमें अुन्होंने हमेशा प्रमुख भाग लिया। अिन सब अकालोंके बारेमें और अिनमें बापा द्वारा लिये गये भागके बारेमें पिछले अध्यायोंमें काफी वर्णन आ गया है। अिसलिअे अुन सब बातोंका यहां फिरसे पुनरावर्तन करनेकी आवश्यकता नहीं। परंतु १९४३–४४ में भारतके अलग-अलग हिस्सोंमें पड़े हुअे महाभयंकर अकलमें बापा द्वारा किया हुआ कार्य अिन क्षेत्रोंमें प्राप्त सफलताओं पर सुवर्ण कलश चढ़ानेवाला है। अुनके अिन कार्योंमें भारतकी आगामी पीढ़ियोंको भी प्रेरणा और मार्गदर्शन मिलने लायक बहुत कुछ है। अिसलिअे अिन वर्षोंके अकालोंका तथा अुनमें बापाके किये हुअे कामका संक्षिप्त विहंगावलोकन कर लें।

१९४३ में भारतके कुछ प्रान्तोंमें अकाल पड़ा। बंबअीके बीजापुर जिले, मलाबार और कोचीन-त्रावणकोरके कुछ तालुकों तथा अुड़ीसा और बंगालमें तो अुसका बहुत ही व्यापक असर हुआ था। अिन सब प्रान्तोंमें सबसे अधिक

अकालकी चपेटमें कोअी अेक प्रान्त आया हो तो वह बंगाल प्रान्त था। अुसे ही सबसे ज्यादा नुकसान सहन करना पड़ा। १९४३ का अकाल बंगालमें 'पंचाशेर मन्वंतर' के नामसे मशहूर है, क्योंकि बंगाली वर्षके अनुसार अुस समय १३५० वां वर्ष चल रहा था। अिस महाभयंकर अकालने केवल बंगालमें ही नहीं परंतु सारे देशमें हाहाकार मचा दिया। अिस अेक ही वर्षमें केवल बंगाल प्रान्तमें अकालके कराल गालमें पिसकर लगभग ३५ लाख मनुष्य मृत्युको प्राप्त हुअे और अुसके तीसरे हिस्सेकी आबादी पर अकाल अपने पीछे भी असर छोड़ गया। परंतु अिस अकालके ब्यौरेमें जानेसे पहले हम बंबअी प्रान्तके बीजापुर जिलेकी ओर मुड़ें।

बीजापुर जिलेमें वर्षाकी कमी और दूसरे कारणोंसे पिछले तीन बरस फसलकी दृष्टिसे लगातार कमजोर निकले। अिससे पहलेके दशकमें तंगी और अकाल अपनी झांकी दिखा चुके थे। अिस पर वर्षाकी कमीके कारण खराब साल आ गये। अनाज खास तौर पर पैदा नहीं हुआ। अिसमें महा-युद्धजनित महंगाअी और जुड़ गअी। परिणाम यह हुआ कि लोगोंकी क्रय-शक्ति घट गअी और बीजापुर जिलेका अधिकांश भाग अकालकी चपेटमें आ गया। ठक्करबापाकी सदा जागृत दृष्टि अिस जिले पर भी बराबर लगी हुअी थी। अिसलिअे अुस प्रदेशकी स्थिति ज्यों ही बिगड़ने लगी त्यों ही अुन्होंने बीजापुर जिलेकी अकालकी स्थितिके बारेमें लोगोंका ध्यान खींचा और अुसमें फंसे हुअे बुभुक्षित मानव-बंधुओंको सहायता करनेके लिअे बंबअीमें अेक कष्ट-निवारण-समिति स्थापित की। अुसके अध्यक्षपदसे बम्बअी और गुजरातकी जनतासे चंदा देनेकी अपील की। अिस समितिके वे संचालक ही नहीं थे, परंतु अुसके मित्र, नेता और मार्गदर्शक भी थे। समितिके वे प्राण थे। समितिने बापाके पथप्रदर्शनमें खूब मेहनत करके लगभग आठ लाख रुपये सहायता-कोपके लिअे अिकट्ठे किये थे और बीजापुर जिलेमें जगह जगह जनताकी ओरसे सहायता-केन्द्र स्थापित करके अकाल-पीड़ितोंको मदद दी थी।

जो लोग सरकारी सहायता केन्द्रोंमें जाकर काम नहीं कर सकते थे, अैसे बुड्ढे और बीमार आदमियों और बालकोंके लिअे अुन्होंने मुफ्त भोजनालय शुरू किये। अुनमें औसतन् ८,००० आदमियोंको रोज खिलाया जाता था, जिनमें ७५ फी सदी तो केवल बच्चे ही थे। मध्यमवर्गके अिज्जतदार लोग अैसे धर्मादेके भोजनालयोंमें आनेमें शर्म और संकोच अनुभव करते थे। अुनको घर पर अनाज पहुंचानेकी व्यवस्था की गअी थी। फिर अिन सब अकाल-पीड़ितोंके शरीर पर पूरे कपड़े नहीं थे। अधिकांश तो

चिथड़ोंमें ही थे। बापाने समिति द्वारा लगभग ८४,००० मनुष्योंको कपड़े पहुंचाये। कुल १,११,००० कपड़े अिन लोगोंमें बांटे गये। अिसके सिवाय मिलोंसे सूतके पूड़े दानमें लेकर अिस प्रदेशके अकाल-पीड़ित जुलाहोंको काम दिया। अिससे दो मतलब सिद्ध हुअे। कपड़ेकी जरूरतवालोंको कपड़ा मिल गया और अकाल-पीड़ितोंके अेक वर्गको काम मिल गया। अिसके सिवाय अकाल-पीड़ितोंका सदाका साथी चरखा भी बापाने यहां गुंजा दिया और अिस तरह चरखे द्वारा कष्ट-निवारण कार्य शुरू किया।

गरीब किसानोंको खेतीमें मदद देनेके लिअे अुन्होंने जगह जगह कृषि-केन्द्र खोल दिये। वहांसे किसानोंको हल और खेतीके कुछ औजार वगैरा मुफ्त अथवा कम कीमतमें दिये जाते थे। साथ ही जिन किसानोंके पास बीज नहीं था या बीज खरीदनेको रुपया नहीं था, अुन्हें मुफ्त बीज दिया जाता था। अिसके सिवाय जिलेके खास खास हिस्सोंमें ५१ पशु-सहायता-केन्द्र खोले गये। यहां गरीब काश्तकारोंके मवेशी मुफ्त रखे जाते थे। और अकाल मिट गया, तब तक घास अित्यादि खिलाकर अुन्हें जिलाया गया। बंबअीके जीवदया मंडलसे ठक्करबापा अिस काममें और मानव-सहायताके दूसरे कार्योंमें पूरा सहयोग प्राप्त कर सके थे। बापाने किसानोंको नकद रकमकी मदद देकर पशुओंके लिअे हरी घास अुगानेका प्रोत्साहन दिया था। अिसके सिवाय सरकारके शुरू किये हुअे कुछ राहत कार्योंमें काम करने आनेवाले मजदूरों और देहातियोंको दवादारू और अैसी ही दूसरी सुविधाअें भी बापा द्वारा संचालित समितिकी तरफसे ही देनेका प्रबंध किया गया था। ये और अिसी प्रकारके अन्य अनेक सहायता-कार्य बीजापुर तालुकेमें बहुत ही सुन्दर ढंगसे किये गये थे।

अिस प्रदेशमें बाहरसे आये हुअे पत्रकारोंने कष्ट-निवारण-समितिका अितना सुन्दर और व्यवस्थित कार्य देखकर अुसकी प्रशंसा करनेवाले लेख अखबारोंमें लिखे थे और अुनमें बापाके कार्यको अंजलि दी थी। 'टाअिम्स आफ अिंडिया' जैसे सरकारी पत्रने भी बापाकी अध्यक्षतामें काम कर रही बीजापुर कष्ट-निवारण-समितिके कार्यकी तारीफ की थी।

अिस प्रकार सार्वजनिक कष्ट-निवारणका काम करनेके सिवाय बापा सरकारी कष्ट-निवारण कार्यका अच्छी तरह निरीक्षण करते और अुसके सूक्ष्मसे सूक्ष्म ब्यौरे अिकट्ठे करके जहां जहां त्रुटि होती वहां सरकारी अफसरोंका ध्यान आकर्षित करते और अुसे दूर करनेका अनुरोध करते। बीजापुरके कष्ट-निवारण कार्यके अुनके अेक साथी और बम्बअीके वर्तमान मंत्रि-मंडलके अेक सदस्य श्री दिनकरराव देसाअीके शब्दोंमें कहें तो बापा

"सरकारी कष्ट-निवारण केन्द्रोंके गैरसरकारी मुख्य निरीक्षक थे।" और बीजापुरके अकालमें कष्ट-निवारण कार्यको काफी मात्रामें विस्तृत करनेके लिअे सरकारको पीछेसें धक्का लगानेवाले ठक्करबापा ही थे।

१८ अप्रैल १९४३ को बापाने बम्बअी राज्यके सार्वजनिक निर्माण-विभागके सचिव और मुख्य अिन्जीनियरको पत्र लिखकर बताया था कि "जहां तक मुझे परिस्थितिका खयाल है, वहां तक मैं कह सकता हूं कि बीजापुरके अकाल कार्यके साथ संबंध रखनेवाले सभी कर्मचारियों और खास तौर पर कार्यवाहक अिंजीनियरने लोगोंके प्रति और शासनके प्रति भी अपना फर्ज अदा नहीं किया। अकाल दिसम्बर और जनवरी मासमें घोषित किया गया था, परंतु मार्चके महीने तक तो अकाल-निवारणके कार्यक्रमके संबंधमें किसी बातका पता ही नहीं था। मजदूरोंके लिअे काम करनेके साधन नहीं थे, किसी प्रकारकी योजना नहीं थी। अतिरिक्त कर्मचारियोंकी भरती नहीं की गअी थी। सार यह कि ठेठ मार्च तक यही परिस्थिति थी।"

यह पत्र लिखनेके बाद थोड़ा बहुत कामकाज हुआ। अूपर अूपरसे भूलें सुधारनेका प्रयत्न किया गया। परंतु जहां सारी नीति ही गलत थी, वहां अिधर अुधर छोटे छोटे सुधारोंसे क्या हो सकता था? ठक्करबापाने लम्बे समय तक धीरज रखा। परंतु सरकारकी 'होता है, चलता है' की नीतिमें जब अुन्होंने खास सुधार होता नहीं देखा, तब अुनके धीरजकी हद हो गअी। बीजापुरके हजारों अकाल-पीड़ितोंके दुःख अुनसे देखे नहीं गये। अिसलिअे अुन्होंने 'बीजापुरके दुःख' शीर्षकसे अेक कड़ा बयान प्रकाशित करके अुस समयकी बम्बअी सरकारकी लापरवाहीभरी शिथिल और निष्ठुर नीतिकी कड़ी आलोचना की। अकाल-राहतके काममें अधिक वेग लाने और अुदारता-पूर्ण परिवर्तन करनेका सरकारसे अनुरोध किया। यह बयान बीजापुरके अकालमें फंसे हुअे लोगोंकी हालत पर और सरकारी ढंग पर होनेवाले कामों और अुनकी नीति पर अच्छा प्रकाश डालता है। अिसलिअे अुसके महत्त्वपूर्ण भागों पर दृष्टिपात करें।

"बीजापुर जिला बेचारा खास तौर पर बदनसीब जिला है। लगातार तीन बरसके अकालने वहांके लोगोंको बिलकुल भिखारी बना दिया है और अिस समय अुनकी दशा अैसी हो गअी है कि वे अपने पैरों पर खड़े नहीं रह सकते।

"मैं यहां क्रमानुसार गरीब, बेजबान और दबाये हुअे बीजापुरके लोगोंके दुःखों और यातनाओंका यथार्थ वर्णन करूंगा। अब तक अुनके दुःखोंका चित्र अखबारोंमें देनेकी बात मैंने जानबूझकर रोक रखी थी और मन पर संयम

रखा था। परतु अब परिस्थिति अिस हद तक बिगड़ गअी है कि मेरे लिअे यह वक्तव्य प्रकाशित करना अनिवार्य हो गया है।

"सरकारने अिस जिलेका अनाजका कोटा आधोआध काट डाला है और कुछ भागोंमें लगभग ३७½ फी सैकड़ा तक अर्थात् पहलेके कोटेका ⅜ भाग काट दिया है। अेक महीने पहले वयस्क लोगोंको रोजका ४० तोला अनाज मिलता था। लेकिन आज केवल पावभर ही दिया जाता है। सरकार अिससे ज्यादा अनाज किसीको नहीं देती।

"यहां अितना ध्यान रखना है कि अिस प्रदेशमें लोगोंको बम्बअीकी तरह मछली, मांस, अंडे और दूसरे सागभाजी नहीं मिल सकते। अिन बेचारोंको तो बाजरेकी रोटी और अूपरसे थोड़ीसी चटनी ही खानेको मिलती है।

"यहां जिन बूढ़े, बीमार और जवान स्त्री-पुरुषोंको सरकारी सहायता पर जीना होता है, अुन्हें सिर्फ ३० तोला और बारह वर्षके छोटे बच्चोंको १५ तोला अनाज मिलता है। यह मात्रा तो फैमिन कोड — अकाल-निवारण कानून — में जो प्रबंध है तथा जेलोंमें प्रत्येक मनुष्यको जो राशन दिया जाता है अुससे भी कम है।

"अिण्डी और सिंडगी नामके दो तालुकोंमें तो यह घटाया हुआ राशन भी अकालके काम करनेवाले मजदूरोंके सिवाय दूसरे किसीको सरकार बेचकर नहीं देती।

"जमीन रखनेवाले किसानों, रोजाना मजदूरी पर काम करनेवाले बढ़अी और लुहार आदि कारीगरोंको नकद दाम देने पर भी अनाज नहीं मिलता। अिसलिअे अुन्हें पासके निजाम राज्यसे चोरीसे अनाज लाना पड़ता है।

"अकाल-निवारण कानूनकी रूसे सार्वजनिक निर्माण-विभागको बूढ़ों, अपंगों और बालकोंको पकाया हुआ अनाज अथवा नकद रकम देनी चाहिये, परंतु यहां अुसके मुताबिक नहीं होता। बीजापुरके सार्वजनिक निर्माण-विभागने अपने घरका ही कानून ढूंढ़ निकाला है और बम्बअी सरकारके कानूनको अेक तरफ रख दिया है। वह अपने संकुचित और लोभी ढंगसे काम कर रहा है।

"यहां मजदूरोंको वेतन देनेकी पद्धति बड़ी दोषपूर्ण और गलत है। अथवा यों कहिये कि पद्धति जैसी कोअी चीज है ही नहीं। अकाल-निवारण कानूनके अनुसार अुन्हें सप्ताहमें दो बार अथवा अेक बार वेतन देना चाहिये। परंतु यहां तो वेतन नियत समयके लगभग तीन हफ्ते बाद दिया जाता है। बहुत ही कम आदमियोंको पेशगी रुपया मिलता है, परंतु यह

अपवाद-स्वरूप ही होता है। अिस प्रकार मजदूरोंके वेतनके दाम दो-दो तीन-तीन सप्ताह तक रख लिये जानेसे अुन्हें आधे भूखे रहना पड़ता है। अुनके बालकों और अपंग मां-बापों या संबंधियोंको भी, जो अुन पर आधार रखते हैं, वेतनमें देर होनेसे बहुत कष्ट अुठाना पड़ता है। अिससे ज्यादा निंद्य और दोषपूर्ण नीति और क्या हो सकती है?

"यहां काम करनेवाले कारकुनोंकी भी बड़ी तंगी है, क्योंकि अुन्हें तनखाह थोड़ी दी जाती है। अकाल-निवारण कानूनके अनुसार कारकुनको २५ से ३५ रुपया वेतन मिलना चाहिये। जब कि यहां जमादारोंको १५ और ७ महंगाअी मिलाकर २२ तथा प्रथम कारकुनको २० और ७ महंगाअी मिलाकर २७ रुपये मिलते हैं। अिस प्रकार कानूनमें बताअी गअी रकमसे कुछ अधिक देनेके बजाय अुन्हें कम रकम दी जाती है। दूसरी तरफ जीवन-मानका खर्च पहलेसे बढ़कर दुगुना हो गया है।

"सहायता-केन्द्र पर काम करनेवाले मजदूरोंको काफी मात्रामें पानी भी नहीं मिलता। अिसलिअे अुन्हें पासके गंदे खड्डे-खोचरोंका पानी पीना पड़ता है। परिणामस्वरूप अुनका स्वास्थ्य बिगड़ता है। अिसका नतीजा आगे जाकर क्या होगा, यह नहीं कहा जा सकता।

"अिस प्रकार लाखों मनुष्योंका भाग्य लापरवाह और सहानुभूतिहीन कर्मचारियोंके हाथमें खेलता है। यहां अिस सिद्धान्तका अमल बहुत जरूरी हो जाता है कि मनुष्योंको अपने कर्तव्य-स्थान पर ही अुपस्थित रहना चाहिये। जांच करनेके लिअे नियुक्त अूपरी अफसर कितने दिन देहातमें घूमकर अिन सब कामोंकी देखरेख रखते हैं और कितने दिन बीजापुरमें रहते हैं?

"अगर सर्वनाशसे बचना हो तो जल्दीसे जल्दी राहत-काम करनेवाले आदमियोंकी संख्या दुगुनी कर देनी चाहिये। अर्थात् कमसे कम डेढ़ लाख आदमियोंको तुरंत काम देना चाहिये। नहीं तो अकालके गालमें फंसी हुअी अभागी जनताको बचाया नहीं जा सकेगा। आधी भुखमरी और अुससे होनेवाली मृत्युओंको रोकना हो तो अन्नकी बहुत अधिक मात्रा — फी आदमी आध सेरसे ज्यादा मिल सके अितनी — जल्दी से जल्दी बीजापुर भेज देनी चाहिये। जो लोग जिम्मेदारीकी जगह पर बैठे हैं, क्या वे अिस प्रश्नका समग्र रूपमें निपटारा करके बहुत देर होनेसे पहले बिगड़ी बाजी सुधार लेंगे?"

अिस प्रकार अिस सारे वक्तव्यमें सूक्ष्मसे सूक्ष्म ब्यौरे देकर अुनकी अेक अेक खामी पर सरकारका ध्यान ठक्करबापाने खींचा। अैसे वक्तव्यको कौन चुनौती दे सकता था? २९–६–'४३ को यह बयान बम्बअीके गुजराती और अंग्रेजी पत्रोंमें प्रकाशित हुआ। और सारे बंबअी प्रान्तमें खलबली

मच गअी। अुसी दिन और अगले दिन कुछ पत्रोंने अुस पर अग्रलेख लिख कर सरकारको आड़े हाथों लिया।

'बॉम्बे क्रॉनिकल' ने अुसी दिनके अपने अंकमें अग्रलेख लिखकर सरकारने अकाल-पीड़ित लोगोंको देनेके राशनमें जो कमी की थी अुसका अुल्लेख करके कहा कि, "सत्ताधारियोंका यह कदम अितना गूढ़ है कि समझमें नहीं आता। अिससे बीजापुरकी ग्रामजनता लम्बे समयसे जो दुःख सहन करती रही है अुसमें वृद्धि होगी। १९ वीं शताब्दीमें अिस प्रदेशमें जो अकाल पड़े, अुनमें भुखमरीके कारण मृत्युअें हुअी थीं। परंतु अुसके बादके अकालोंमें यह स्थिति टाली जा सकी थी। यदि सरकार अिस अिलाकेमें अनाजकी मात्रामें कटौती करने और राशन घटानेकी अपनी नीति जारी रखेगा, तो बीजापुरमें दुबारा भुखमरीके कारण अकाल-पीड़ित लोगोंकी मृत्यु हो तो आश्चर्य नहीं होगा।

"... साथ ही बम्बअीके गवर्नर सर लॉजर लुम्लेकी सरकारने जब अकाल घोषित किया, तब बीजापुरके अफसर अुस परिस्थितिका मुकाबला करनेको काफी तैयार नही थे। अिसलिअे अकाल घोषित होनेके बाद राहत-काम शुरू करनेमें कुछ महीने बीत गये। हमारी नौकरशाहीकी कार्यक्षमता पर अिससे ज्यादा दुःखदायक आलोचना और क्या हो सकती है? परंतु सरकारी गप और झूठ यहीं खतम नही होती। अिस असहाय जिलेमें सरकारी कर्मचारियोंका जो तंत्र काम कर रहा है, अुसकी आलोचनाके समर्थनमें श्री ठक्करने अितनी अधिक सामग्री अिकट्ठी कर रखी है कि अुस पर अध्यायके अध्याय लिखे जा सकते हैं।

"बीजापुरमें जो कुछ हुआ है अुससे सरकारकी आंखें खुलनी चाहिये और अुसे अकालका सामना करनेकी नीतिमें बुनियादी परिवर्तन करना चाहिये। परंतु सत्ताधारियोंका मानस भूतकालकी भूलोंसे सबक लेनेसे अिन्कार करता है। अैसे प्रश्नोंको नअी दृष्टिसे हल करनेके लिअे लोकप्रिय और जिम्मेदार शासन चाहिये।"

'बॉम्बे सेण्टीनल' ने ठक्करबापाके बयानका आधार लेकर 'कैलस अेण्ड अिण्डिफरेण्ट' शीर्षकसे सरकारकी नीतिकी आलोचना करनेवाला बड़ा अुग्र अग्रलेख लिखा। शुरूके ही अंशमें अुसने अिस प्रकार लिखा:

"श्री अे० वी० ठक्करने अपनी कड़ी भाषामें बीजापुरमें अफसरोंके हाथों हो रहे कष्ट-निवारण कार्यमें कैसी कुव्यवस्था फैली हुअी है, अिसका हूबहू वर्णन किया है। अफसरोंने तो अकाल-निवारण कानूनकी अवहेलना करके अपने ही ढंगसे कारोबार करना शुरू कर दिया है।

"अिस मामलेको शान्ति और धीरजसे सह लेना हमारे लिअे कठिन है, क्योंकि यह प्रश्न हजारों बालकों, पुरुषों और स्त्रियोंके जीवनके साथ गुथा हुआ है और ये बेचारे तो मूक और अबोध मानव हैं।" अिसके बाद अुसी लेखमें आगे लिखते हुअे अिस प्रकार आलोचना की गअी:

"...सहायता-केन्द्रोंमें बड़ोंको ३० तोला और बच्चोंको १५ तोला अनाज पर रहना पड़ता है। अैसा करनेसे पहले वहांके सत्ताधारियोंको डॉक्टरोंकी तो सलाह लेनी थी कि क्या अितनेसे अनाज पर दिन भर मेहनत करनेवाला आदमी सचमुच गुजर कर सकता है? काम करनेवालोंको पंद्रह बीस दिन तक वेतन नही मिलता। अैसे लोग अपनी बचीखुची चीजें बेचकर भी कैसे गुजर करते होंगे, अिसकी कल्पना ही की जा सकती है।

"श्री ठक्करके बताये अनुसार कुछ स्थानों पर हैजा फैल गया था, परंतु वह समय रहते काबूमें आ गया।

"अिस रोगको वहां दुबारा न फैलने देना हो तो अफसरोंको बीजापुरके भूखे लोगोंके स्वास्थ्यकी अधिक चिन्ता रखनी होगी। दुर्भाग्यसे वे अिस दायित्वपूर्ण कामके लिअे अयोग्य सिद्ध हुअे हैं और मनुष्यके नाते अपने मानव-बंधुओंके प्रति कर्तव्यपालन करनेमें असफल रहे हैं।

"अिस प्रकारके कुशासन और कुप्रबंध तथा लापरवाहीने सरकारकी साखको काफी हानि पहुंचाअी है, अिसकी शायद सरकारको प्रतीति नहीं हुअी होगी। परंतु जो लोग अिस जिलेका प्रबंध कर रहे हैं, अुन्हें अेक बारगी दूर करनेमें ही अुसका भला है, यह बात अुसे समझ लेनी चाहिये।

"अन्य किसी भी देशमें यह स्थिति अेक क्षणके लिअे भी सहन नहीं की जा सकती। भारतमें तो दुनियामें सबसे अूंचे वेतन लेनेवाले कर्मचारी हैं। भारतके लोगोंसे यह कहा जाता है कि अिन कर्मचारियोंको जो अूंची तनखाहें दी जाती हैं, अुनमें यदि अेक पाअीकी भी कटौती की जायगी तो शासनकी कार्यक्षमताको धक्का लगेगा और सारा तंत्र ताशके पत्तोंकी तरह गिर पड़ेगा।

"अिस मामलेमें या तो सरकारके पास बीजापुरके अकाल-पीड़ितोंको देने जितना अनाज अुपलब्ध नहीं अथवा वह लापरवाह है। अिन दोनों सूरतोंमें वहांके अुच्चाधिकारी जिम्मेदार हैं और वे अिस अपराधसे बचकर निकल नहीं सकते।

"विचित्र बात तो यह है कि अन्य कर्मचारियोंका खयाल रखनेवाले भले और दयालु वाअिसरॉयने महंगाअीका मुकाबला करनेके लिअे गवर्नरोंको तो महंगाअी भत्ते दिये हैं, परंतु बीजापुरके अकाल-पीड़ितोंके लिअे कोअी बन्दो-बस्त नहीं किया। अुन बेचारोंसे आशा रखी जाती है कि अुन्हें जीवन कायम

रखनेके लिअे भी नाकाफी अनाजसे अपना गुजारा करना चाहिये। गवर्नर या अन्य जो लोग अिस प्रबंधके लिअे जिम्मेदार हैं, अुन्हें परिस्थितिको अिस हद तक बिगड़ने नहीं देना चाहिये। परंतु शायद ठक्कर साहबने 'मैन ऑन दि स्पॉट' के जिस सिद्धान्तकी आलोचना की है, अुससे वे सहमत हो गये होंगे।"

बापाके बयानके बाद अखबारोंने अग्रलेखों और टिप्पणियों द्वारा आलोचनाओंकी जो वर्षा की, अुसने बंबअी सरकारकी नींद अुड़ा दी। बम्बअीसे बीजापुर तक नौकरशाहीके चक्र घूमने लगे और सबसे पहले तो जिलेसे विवरण अिकट्ठे करके बापाके बयानसे अुग्र बने हुअे लोकमतको शान्त करनेके लिअे सरकारने अब तक सहायता-कार्यके लिअे क्या क्या किया, अिसका बापाके वक्तव्यसे भी अधिक लंबा वक्तव्य तैयार करके सूचना-विभागकी तरफसे प्रकाशित किया गया।

अुसमें बताये अनुसार बम्बअी सरकारने अब तक ८५½ लाख रुपये कष्ट-निवारण कार्यके लिअे खर्च किये थे अथवा मंजूर किये थे। अिनमें से ३०,४५,५०० रुपयेकी बड़ी रकम बीज और घास पर खर्च की गअी थी। १८ लाख रुपये कीमतसे भी सस्ते भाव पर अनाज बेचनेके लिअे खर्च किये गये थे, अित्यादि। अितने पर भी बापाने अनाजके बारेमें और थोड़े स्टाफके बारेमें जो जो आलोचनाअें की थीं, अुनके महत्त्वपूर्ण मुद्दोंका कोअी जवाब नहीं दिया जा सकता था। अिसलिअे कहीं कहीं भूलें स्वीकार की गअी थीं अथवा वह बात ही अुड़ा दी गअी थी। परंतु बापा सारा प्रश्न हाथमें लेनेके बाद अन्त तक जिस तत्परतासे अुसके पीछे पड़े रहे, अुसका नतीजा यह हुआ कि सरकारको बीजापुर जिलेमें राहत-कार्य पर अधिक ध्यान देना पड़ा।

अुस समय बम्बअीमें बीजापुर अकाल-निवारण-समितिमें बापाके साथी बंबअी राज्यके वर्तमान शिक्षामंत्री श्री दिनकरराय देसाअी काम करते थे। बापाके अकाल-कार्यके सिलसिलेमें अुन्होंने कुछ संस्मरण लिखे हैं। वे भी बापाके तत्कालीन कार्य और कार्यपद्धति पर अच्छा प्रकाश डालते हैं। अिसलिअे अुनका थोड़ासा भाग हम यहां अुद्धृत करते हैं:—

"ठक्करबापाके साथ बीजापुर अकाल-निवारण समितिके अेक सदस्यके तौर पर बापाके अधीन काम करनेका मुझे सौभाग्य मिला था। अिससे मुझे यह देखनेका मौका मिला कि सहायता-कार्यके सिलसिलेमें वे छोटी छोटी बातोंकी भी कितनी चिन्ता रखते थे। अकालके क्षेत्रके बारेमें अुनकी जांच किन्हीं अेक दो गांवों या केन्द्रों तक ही मर्यादित नहीं रहती थी; वे अकाल-ग्रस्त विभागके सारे प्रदेशका दौरा लगाते और खुद देख-जांचकर अिसकी सावधानी रखते कि अेक अेक ब्यौरा सही है या नहीं। अगर यह असंभव

होता तो दूसरोंसे तथ्य अिकट्ठे करवा कर अिस बातका निश्चय कर लेते कि अुनके पास आअी हुअी जानकारी सही है या नहीं। वे साधारण बयानोंसे कभी संतुष्ट नहीं होते थे, परंतु आंकड़ोंसे सुसज्जित और निश्चित ब्यौरे चाहते थे। सच कहूं तो वे सूक्ष्मसे सूक्ष्म ब्यौरोंके सर्वेसर्वा थे।

"दिल्ली जैसे दूर स्थान पर रहते हुअे भी अकाल-पीड़ित लोगोंके प्रति वे अपना फर्ज कभी भूलते नहीं थे। कष्ट-निवारण कार्यके प्रत्येक पहलू पर वे कैसी सावधानीपूर्ण टिप्पणी लिखते थे, यह मेरे नाम दिल्लीसे लिखे हुअे अुनके अेक पत्रमें देखनेको मिलता है। अुसमें अुन्होंने लिखा था: 'मैं देखता हूं कि नीचेके कामोंके लिअे जो वेतन दिया जाता है, वह बहुत ही थोड़ा है। मोटे तौर पर हिसाब लगायें तो छः दिनके सप्ताहमें फी आदमी अेक रुपया मिलता है। और अेक ही मामलेमें अेक व्यक्तिको कुछ अधिक मिलता है। अिनमें से प्रत्येक मामलेमें मजदूरोंको अितना कम वेतन किस लिअे मिला, अिसके कारण होने चाहिये। परंतु अिस बारेमें गहरे जाकर प्रत्येक मामलेकी बारीकीसे जांच करनी पड़ेगी और हरअेकको कम वेतन क्यों दिया जाता है, अिसके कारण ढूंढ़ने पड़ेंगे।'

"अेक अन्य पत्रमें अुन्होंने अिस प्रकार लिखा था: 'मैं देख रहा हूं कि १७ दलोंमें से केवल चारको ही कमसे कम (minimum) वेतनसे कुछ अधिक मिला है और १३ दलोंको अुससे भी कम मिला है। यह भी तभी हो सकता है जब वहांके मुख्य अिंजीनियर पेअिसलेकी सूचनानुसार बढ़ाअी हुअी दरोंके मुताबिक वेतन दिया जाय और तुम्हारे कहे अनुसार ये नअी दरें भी अब अमलमें लायी जाती हैं। अैसा होनेका कारण तुम्हारे कथनानुसार यह है कि अकाल कानूनके मुताबिक अनुसूची अ, ब और स में अुल्लिखित कार्य बहुत अूंचा है और पेअिसलेने अुसमें २५ प्रतिशत कमी करने और अिस प्रकार वहांके कामको मद्रास अकाल निवारण कानूनकी पंक्तिमें लानेकी सिफारिश की है। अिस तरह तुम्हारी बेल्लारी यात्रा बड़ी अुपयोगी साबित हुअी।' यह पत्र बताता है कि बापाका अकाल निवारण कानूनका ज्ञान कितना विशाल और स्पष्ट था। साथ ही यह अिस बातका नमूना है कि बापा अपने साथियोंको कुछ बातें समझानेके लिअे पाठशालाके शिक्षककी भांति कैसा व्यवहार करते थे।

"ठक्करबापा स्वयं अिंजीनियर थे और अुनका यह अिंजीनियरीका ज्ञान अकाल-निवारणके कामोंकी जांच करनेमें बड़ा अुपयोगी और कीमती साबित होता था। कामकी दिन-ब-दिन प्रगति जाननेकी अुनकी अुत्कण्ठा अपार और असीम थी। अुदाहरणके लिअे, जब वे दिल्लीमें होते तब अुनकी

यह हिदायत होती थी कि प्रत्येक सरकारी राहत-केन्द्रमें काम करनेवाले मजदूरोंकी निश्चित संख्या हर हफ्ते अुन्हें बताअी जाय। अिस संबंधमें अेक पत्रमें अुन्होंने लिखा था कि मजदूरोंकी अिस संख्याके नकशे भरकर भेजनेका काम तुम्हें धार्मिक क्रिया-विधिकी तरह ही नियमिततासे करना है। अुनकी सूचना थी कि अिस संबंधका तार सप्ताहके अमुक दिन अुन्हें मिलना ही चाहिये। यदि कोअी बार निश्चित किये हुअे दिन अुन्हें तार न मिलता तो अुन्हें चैन न पड़ता।

"ठक्करबापा कअी बार साथियोंकी तुच्छ भूलोंके लिअे भी अुन्हें भारी अुलहना देते। फिर भी अिससे किसीको बुरा न लगता और न किसीके मनमें कोअी गलतफहमी पैदा होती। क्योंकि वे जानते थे कि अिस अुलहनेके पीछे अेक महान प्रेमपूर्ण आत्मा विद्यमान है। असलमें तो यह गुस्सा या डांट-फटकार बापाकी दुःखी, निराधार और पीड़ित लोगोंके प्रति रही भक्ति और सच्चाअीसे पैदा होती थी। अिस भक्ति और सच्चाअीके कारण वे गरीबोंके लिअे सतत काम करते थे। मैंने अुन्हें पूरी नींद या आराम लिये बिना अिन अभागे लोगोंके लिअे बीस बीस घंटे सतत काम करते देखा है। और वह भी ७४ वर्षकी पकी अुम्रमें। जवान भी अुनके सामने शरम महसूस करते थे, क्योंकि सख्त काम करनेके मामलेमें वे कभी बापाकी बराबरी नहीं कर सकते थे; बल्कि अुनसे कहीं पीछे रहते थे।"

१९४३ में भारतके पश्चिमी सिरेके अिस जिलेमें अकालकी यह स्थिति थी, तो पूर्वी सिरेके बंगाल प्रदेशमें तो बीजापुरको भी भुला देनेवाली कहीं बदतर हालत थी। क्योंकि वहां महायुद्धकी अेक ज्वाला ब्रह्मदेशकी ओरसे आकर बंगाल और आसामके पूर्वी सिरेको स्पर्श कर चुकी थी। अेशियाके 'अुगते सूर्यके देश' जापानकी बढ़ती हुअी शक्तिको देखकर ब्रिटिश सत्ता घबरा गअी थी। और अिसीलिअे अुसने अगस्त १९४२ के बाद बंगाल और अुड़ीसा दोनोंमें निषेधात्मक नीति (डिनायल पॉलिसी) अख्तियार की थी। सरकारकी अिस नीति और अक्तूबर १९४२ में आये हुअे समुद्री तूफानके परिणामस्वरूप बंगालके मिदनापुर जिलेके और अुड़ीसाके कटक और बालेश्वर जिलोंके समुद्र तटके गांवोंकी दशा अत्यंत करुण बन गअी थी। तभीसे बापाका ध्यान अिस अभागे प्रान्त और अुसकी कुदरती आफतों और गलत शासन-नीतिके कारण पैदा हुअे दुःखदर्दोंके प्रति आकर्षित हुआ था। अुस समय गांधीजी, जवाहरलालजी, सरदार वल्लभभाअी पटेल वगैरा देशनेता जेलमें थे। और गांधीजीने अंग्रेजी शासनकर्ताओंके खिलाफ 'क्विट अिंडिया' का जो आन्दोलन शुरू किया था, अुसे दबा देनेके लिअे सरकारने

मिदनापुर जिलेमें फौज भेजकर आम लोगों पर भी भयंकर जुल्म और अत्याचार किये थे। अिस पर अक्तूबरमें समुद्री तूफान आ गया। हजारों आदमी मौतके घाट अुतर गये। जो जिन्दे रहे अुनकी स्थिति बड़ी विषम हो गअी। अन्न-वस्त्र और पानीकी जगह जगह तंगी होने लगी। लोग बिलकुल निराश हो गये। अुस समय ठक्करबापा ही अेक अैसे गैरबंगाली व्यक्ति थे, जो नौकरशाहीका डर न रखकर मिदनापुर जिलेके अुन भयग्रस्त और निराधार बने हुअे हजारों नर-नारियोंकी मददको दौड़े थे। अुन्होंने अपने अेक खास साथी श्री अेल० अेन० रावको मिदनापुर जिलेकी परिस्थिति आंखों देखने और वहां कष्ट-निवारण कार्यकी कितनी आवश्यकता है, अिसका निश्चित अंदाज लगानेको भेजा था। अिस साथीने बापाके आदेशानुसार मिदनापुर जिलेमें और विशेषत: तमलुक कोन्टाअी परगनेमें खूब भ्रमण किया। गांव गांव पैदल चलकर वे लोगोंसे मिले थे और परिस्थितिको स्वयं देखनेके बाद अुसका विवरण तैयार किया था। अिस विवरणमें से जरूरी तथ्य छांटकर वक्तव्यके रूपमें बापाने अखबारोंमें भेजे थे। परंतु अुस समय ब्रिटिश शासकोंके आर्डिनेंसोंका राज्य था, अिसलिअे सारा हाल अखबार भी खुले रूपमें नहीं छाप सकते थे। फिर भी दिल्लीके 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' ने बापाके साथके संबंधके कारण तथा मानवताकी भावनासे प्रेरित होकर सरकारकी काट-छांटसे बचे हुअे अुस लम्बे वक्तव्यका भाग लगभग चार कालममें छापा था और अुसकी भूमिकामें सम्पादक महोदयने अिस प्रकार लिखा था :—

"अक्तूबरकी १६ तारीखको बंगालमें आये हुअे समुद्री तूफानोंके बाद मिदनापुरमें जो स्थिति फैली हुअी है और अिस समय वहां जो कष्ट-निवारण कार्य चल रहा है, अुसका भारत-सेवक-समाजके श्री अेल० अेन० राव द्वारा तैयार किया हुआ विवरण श्री अमृतलाल ठक्करने प्रकाशनके लिअे हमें भेजा है। अुसके साथ जुड़े हुअे पत्रमें श्री ठक्कर लिखते हैं कि :

"'मेरे सहायक श्री अेल० अेन० रावको मिदनापुर जिलेमें हो रहे कष्ट-निवारण कार्यको देखनेके लिअे चार सप्ताहके दौरे पर भेजा गया था। यह लेख अुन्हें दौरेमें जो अनुभव हुआ अुसके आधार पर लिखा गया है। मिदनापुर जिलेने अुत्तर भारतके लोगोंका ध्यान जितना चाहिये अुतना नहीं खींचा। अिसलिअे मैं यह देखनेको बड़ा आतुर हूं कि यह लेख जैसे भी संभव हो जल्दी प्रकाशित हो। यद्यपि देर बहुत हो गअी है, फिर भी कभी न छपनेसे देरमें छपना भी अच्छा ही है।'"

अिस लेखमें श्री रावने १९४३ के अक्तूबर मासमें बिहार और क्वेटाको भुला देनेवाला समुद्री तूफान कैसे आया, अुसमें ४०,००० आदमी और लाखों पशु कैसे डूब गये और मर गये तथा समुद्र-तटकी छः मील चौड़ी और पचास मील लम्बी पट्टी पर बसे हुअे असंख्य गांवों और खेतोंकी चावलकी खड़ी फसल कैसे नष्ट हो गअी, अिसका वर्णन करनेके बाद जापानी हमलेके भयके कारण सरकार द्वारा अिस समाचारको तीन सप्ताह तक दबाये रखनेकी कड़ी आलोचना की और रामकृष्ण मिशन, मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी तथा हिन्दू सभाके कार्यकी प्रशंसा करके सरकारकी शिथिल नीति और अुसके द्वारा बताअी गअी लापरवाहीकी निन्दा की और यह बताया कि अुसके शुरू किये हुअे सहायता-कार्य कितने अधूरे हैं और अितने बड़े कामको संभालनेके लिअे क्या क्या करना चाहिये। सारे प्रश्नकी समीक्षा करते हुअे अुन्होंने लिखा कि, "मिदनापुरके लोग अिस समय अत्यन्त नाजुक स्थितिमें होकर गुजर रहे हैं। परंतु अुनकी कौन परवाह करता है? अिस महासंकटमें फंसे हुअे हजारोंका क्रन्दन कोअी नहीं सुनता। दुर्भाग्यसे नेता सब जेलके सीखचोंमें बन्द हैं। . . . अीश्वर अुन्हें अिस दुःखसे अुबरनेमें सहायता दे।"

परन्तु यह तो १९४३ की जनवरीकी बात हुअी। अिसके बाद परिस्थिति अुत्तरोत्तर बिगड़ती गअी।

बंगालमें १९४२ में समुद्री तूफान आया अुसके पहले चावलका बंगाली मनका भाव रु० ३–८–० था। वह बढ़कर रु० ७–८–० हो गया। अुसके बाद जैसे जैसे दिन और महीने बीतने लगे, वैसे वैसे यह भाव बढ़ता गया और दस, पंद्रह, बीस, तीस, चालीस, अिस प्रकार आगे बढ़ते बढ़ते रु० ७०–८० मन तक पहुंच गया और पूर्वी बंगालके कुछ भागोंमें तो वह १०० का आंकड़ा भी पार कर गया।

अिस प्रकार चावलका भाव अेकाअेक बढ़नेका कारण बंगाल सरकारकी बड़े पैमाने पर खरीद थी। अुस समयकी प्रान्तीय सरकारने २० लाख रुपयेकी रकम चावल खरीदनेको निकाली थी और जिस भाव मिले अुसी भाव चावल जमा करनेको अुसके आदमी गांव-गांव घूमने लगे थे। अुस समयके मंत्रियोंके साथ सम्बंध रखनेवाली अिस्पहानी कंपनीने अुस वक्त कैसा कुत्सित काम किया था, यह अितिहास प्रसिद्ध बात है।

चावलके भाव अूंचे चढ़नेके कारण गरीब आदमी तो क्या, मध्यम-वर्गके ३० रुपयेसे १२५-१५० तक कमानेवाले हजारों मनुष्य भी निराधार

स्थितिमें आ फंसे। ८०-१०० रुपये मनके भावके चावल ये लोग भी कैसे खरीद सकते थे? परिणाम यह हुआ कि खेत अुजड़ गये। गांव नष्ट होने लगे। लोगोंके पास जो कुछ था — गहना-गांठा, बर्तन-भांडे सब बेचकर और चावल खरीदकर वे पेट पालने लगे। परन्तु यह सब कितने दिन चलता? अन्तमें मिदनापुर और चौबीस परगनेके देहातके लोग अपने मिट्टीके झोंपड़े छोड़कर कुटुम्बके कुटुम्ब कलकत्तेकी ओर चल पड़े। मार्गमें कितने ही मर गये, कितने ही बीमार हो गये। अुन्हें छोड़कर दूसरे अकाल-पीड़ित लोग कलकत्ते चले गये और राजमार्गों पर या पेड़ोंकी छाया तले डेरे-तम्बू लगाकर भीख मांगने लगे। जुलाअीके अन्तमें और अगस्तके आरंभमें ही अिन कंगालोंमें से भुखमरीके कारण कितने ही आदमी रास्तेमें मर गये और दिन-दिन मरनेवालोंकी संख्या बढ़ने लगी। म्युनिसिपैलिटी भी अिन मुर्दोंका निपटारा करनेके काममें सफल नहीं हुअी। कलकत्तेके अंग्रेजी और बंगाली पत्र 'स्टेट्समैन', 'अमृतबाजार पत्रिका' वगैराने अिन कंगालोंकी तस्वीरें छाप कर सरकारकी लापरवाहीके बारेमें अुग्र आलोचनाअें कीं। अिन चित्रोंने बंगालमें ही नहीं हिन्दुस्तान भरमें खलबली मचा दी।

अैसे समय ठक्करबापा जैसे मानव-सेवक और अकाल-पीड़ितोंके सदाके साथी भला कैसे चुप बैठ सकते थे? 'स्टेट्समैन' पत्रमें अिस विषयके विवरण छपनेसे पहले ही वे कभीके बंगाल पहुंच गये थे और मिदनापुर जिले और चौबीस परगनेमें तथा अुड़ीसाके कुछ भागोंमें कष्ट-निवारण-समितियां स्थापित करके अुनके द्वारा अुन्होंने काम शुरू कर दिया था। थोड़े समय बंगालमें तो थोड़े समय अुड़ीसामें, थोड़े समय बीजापुरमें तो थोड़े समय त्रावण-कोरमें, थोड़े समय मलाबारके किनारे पर तो थोड़े समय मद्रासके दूसरे जिलोंमें घूम घूम कर और अकाल-पीड़ितोंके बीचमें रहकर वे परिस्थितिका अध्ययन करते थे और बयान पर बयान प्रकाशित करके लोगोंके दिलोंको जगा रहे थे। भारतके अिन दुःखी निराधारोंके लिअे रुपया, अनाज और कपड़ेकी भीख मांगते थे और जो कुछ सहायता मिलती अुसमें से अलग अलग प्रान्तोंमें संकटके हिसाबसे बंटवारा करके रुपया और दूसरी मदद भेजते थे। अिनमें भी बंगाल और अुड़ीसाके दुःख देखकर अुनका हृदय रो अुठता था। बंगालमें भुखमरीके कारण मां-बाप अपने बच्चोंको दो दो रुपयोंमें बेचते थे। मां अपने बेटेको छोड़ देती थी। पति पत्नीको, पत्नी पतिको, जवान बेटे बापको छोड़कर अनाजकी खोजमें निकल पड़ते थे। और कितनी ही बहनोंके पेटकी ज्वाला शान्त करनेके लिअे अपनी लाज बेचनेकी घटनाअें भी सामने आअी थीं। ठक्करबापा अप्रैलसे लगाकर ठेठ दिसंबर तक और

१९४४ के पहले सात आठ महीनों तक कष्ट-निवारणका काम पूरी शक्ति लगाकर करते रहे।

अेक बार वे श्रीमती रामेश्वरी नेहरूको लेकर बंगाल और अुड़ीसाके अकाल-पीड़ित प्रदेशोंमें घूम आये। अिसके बाद दिल्लीकी सभामें श्रीमती रामेश्वरी नेहरू और बापाने भाषण देते हुअे वहांकी करुण परिस्थितिका बयान निम्न शब्दोंमें किया था:

"बंगालकी हालत आंखों देखे बिना कोअी भी आदमी वहांकी परिस्थितिकी सही कल्पना नहीं कर सकता। गांवके गांव अुजाड़ और वीरान हो गये हैं, मनुष्योंका तो वहां नाम-निशान भी नहीं। हजारोंकी संख्यामें लोग घरबार छोड़कर शहरोंमें आ गये हैं। बालक अपने माता-पितासे जुदा हो गये हैं और स्त्रियां अपने पतियोंसे। सबको अपना अपना पेट भरनेकी फिक्र पड़ी है और अेक जगहसे दूसरी जगह भटक रहे हैं। अुनके शरीरोंमें केवल हड्डी-पसली बाकी रही हैं। स्त्रियोंके पास अपनी लाज ढंकनेको भी पूरा कपड़ा नहीं। बच्चे गंदी नालियोंमें बहनेवाले साग या फलोंके छिलकों पर झपट कर लड़ते नजर आते हैं। सड़कों और बाजारोंमें जगह जगह मुर्दे पड़े रहते हैं। अुन्हें अुठाकर ले जानेवाला कोअी नहीं है। अिसलिअे कुत्ते और गिद्ध लाशोंको खा जाते हैं। मरते हुअे बालकोंको कभी कभी आखिरी सांस लेनेसे पहले ही कुत्ते पैर पकड़कर घसीट ले जाते हैं।"

अुड़ीसा और मलाबारके दुःखोंका वर्णन करते हुअे बापाने कहा कि, "भारतकी गरीबीका नंगा चित्र देखना हो तो अुड़ीसा जाअिये। वहां पिछले वर्षसे ही अकाल पड़ा हुआ है।"

बापाके अिस पुरुषार्थ और प्रचारके परिणामस्वरूप जगह जगह पर लोकमत जाग्रत हुआ। 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' 'जन्मभूमि', 'गुजरात समाचार' और अन्य अखबारोंने भूखे बंगालकी मददके लिअे कोष खोले और अुनमें लाखोंकी रकम भी जमा हुअी। यह सब परिणाम लानेमें बापाका काफी बड़ा हाथ था।

बंगालके अकालकी तीव्रता बढ़ते ही अुन्होंने 'भारतव्यापी संकट: देशके लिअे आअी हुअी कसौटीकी घड़ी' शीर्षकसे अेक वक्तव्य सितंबर मासके पहले सप्ताहमें प्रकाशित किया था। अुसमें अुन्होंने बंगालके सिवाय अुड़ीसा, अुत्तर मद्रास, मलाबार, अजमेर, मेवाड़ वगैरा प्रदेशोंकी हालतका अिस प्रकार वर्णन किया था:

"बंगालके संकट — अथवा कलकत्तेके संकटने आम लोगोंका काफी ध्यान आकर्षित किया है। परन्तु अिस बड़े शहरकी सीमाके अुस पार

बंगालके ग्राम-प्रदेशोंमें लाखों मूक मानवप्राणी असह्य और अकथनीय दु:ख भोग रहे हैं -- जो अभी तक प्रकाशमें नहीं आये। बंगालके जिलोंके देहाती प्रदेशके दु:ख कलकत्तेके दु:खोंसे कअी गुने बढ़कर हैं। बंगालके मुख्यमंत्रीने अपील करते हुअे नीचे लिखे जो शब्द काममें लिये हैं, अुनकी तहमें खास अर्थ समाया हुआ है। क्योंकि सावधानीपूर्वक चुने हुअे अुन शब्दोंके पीछे आंसुओंकी करुण कथा छुपी हुअी है। जैसा मुख्यमंत्रीने कहा है, 'अिसके सिवाय दूसरे भी कुछ अिलाके अैसे हैं, जिन्हें मददकी बहुत बड़ी आवश्यकता है। परन्तु अुन अिलाकोंकी तरफ लोगोंका अभी तक खास ध्यान गया नहीं दिखता। अिस बारेमें अुनकी स्थिति और जरूरतें कितनी हैं, अिसका निर्णय सरकार स्वयं ही अुत्तम रूपमें कर सकती है।' मिदनापुरके किनारेकी पट्टी पर भुखमरीके कारण सैकड़ों मृत्युअें हुअी हैं। परन्तु अैसा नहीं जान पड़ता कि अिस प्रदेशसे बाहरके लोगोंको अिसका पता भी लगा हो।

"जब मैं जुलाअीके अंतिम सप्ताहमें अुड़ीसा प्रान्तके बालेश्वर जिलेके अुत्तरी विभागमें सफर कर रहा था, तब मौतके किनारे खड़े हुअे अकाल-पीड़ितोंके बड़े बड़े जमघट देखकर मैंने अपनी आंखें अक्षरशः बन्द कर ली थीं। यों तो मेरी आंखें अकाल-पीड़ितोंको देखनेकी अभ्यस्त हो गअी हैं, परन्तु वह करुण दृश्य अितना कंपा देनेवाला था कि मुझसे देखा नहीं जा सका। वे अभागे अकाल-पीड़ित लोग अैसे लगते थे जैसे कोअी चलते-फिरते भूत-प्रेत हों; और देखनेवालोंके दिलमें डर पैदा करते थे। भुखमरीके कारण मृत्यु होनेकी बात सबसे पहले स्वीकार करनेवाली अुड़ीसाकी सरकार थी, अलबत्ता अुसने यह अिकरार काफी देरसे किया था। अुत्तर अुड़ीसाके अिलाकेसे बाहरके लोग अिन अकाल-पीड़ित नर-नारियों और बालकोंके विषयमें बहुत कम जानते थे। परन्तु अुड़ीसाके दक्षिण भागमें अकेले गंजाम जैसे छोटे जिलेमें ही भुखमरीके कारण २०० मृत्युअें हुअी हैं, यह बात कोअी नहीं जानता था। अुस जिलेके कलेक्टरने खुद स्वीकार किया था कि भुखमरीके कारण सौसे भी ज्यादा मौतें हुअी हैं। साथ ही, अगस्तके पहले सप्ताहमें पानीकी जो बाढ़ें आअीं, अुनसे लगभग दो जिलोंकी अच्छीसे अच्छी धानकी फसल नष्ट हो गअी।

"नीचे मद्रास प्रान्तमें बेलारी, अनन्तपुर और कर्नूल जिलोंमें, जहां अकाल समय समय पर पड़ते ही रहते हैं, अिस साल भी सख्त अकाल पड़ा है। अिस पर भी लड़ाअीके कारण असाधारण महंगाअी बढ़नेसे स्थिति और भी अुग्र बन गअी है। अुधर अिस वर्ष भी चौमासा निष्फल चला जानेसे अुपरोक्त तीन जिलोंमें से पहले दो अर्थात् बेलारी और अनन्त-

पुर जिलोंको सख्त और भयंकर अकालका सामना करना पड़ेगा। वहां सरकारके खोले हुअे कष्ट-निवारण केन्द्रों पर लगभग अढ़ाअी लाख आदमी काम करते हैं। वे दिन भर कड़ी मेहनत करते हैं, तब कहीं मुश्किलसे प्राण टिकाये रखने लायक पैसे पाते हैं।

"मलाबार हमारे यहां दिल्लीके लोगोंके लिअे बहुत ज्यादा दूरका प्रदेश माना जाता है, अिसलिअे अुसके दुःख प्रकाशमें नहीं आये। परन्तु अुसका वर्तमान संकट बंगालके देहाती अिलाकेके बराबर ही तीव्र है। हैजेसे सैकड़ों आदमियोंकी मौतें हुअी हैं, जिसके परिणामस्वरूप सैकड़ों बच्चे निराधार हो गये हैं।

"अजमेर और मेवाड़ भी भारी कुदरती आफतोंके शिकार बने हैं। लोगों पर ये आफतें बहुत कुसमयमें आ पड़ी हैं। मुझे वहां जानेका अभी तक अवसर नहीं मिला है, परन्तु जो विवरण मैंने देखे हैं अुनसे वहांके लोगोंकी जरूरत बहुत बड़ी मालूम होती है।"

भारतके अिन तमाम अलग अलग प्रान्तोंके अकाल-संकटके ब्यौरे देकर अन्तमें अुन्होंने भारत भरके लोगोंसे अपील करते हुअे कहा कि, "चलिये, हम सब मौकेको पहचान कर अुदात्त भावनासे काममें लगें। चलिये, हमारे अिन भूखों मरते लाखों-करोड़ों देशबंधुओंकी सहायता करनेके लिअे हम दौड़ जायं।"

अिसीके साथ ठक्करबापाका 'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' के सम्पादकको लिखा हुआ पत्र, जो 'टाअिम्स' में ४ मअीको प्रकाशित हुआ था, और 'मॉडर्न रिव्यू' के सम्पादक महोदयने अुसका अुद्धरण देकर अुस पर जो टिप्पणी की थी वह भी देख लें। कारण, बंगालके ग्रामीण प्रदेशमें अकालके कारण जो करुण स्थिति फैली हुअी थी, अुसके बारेमें बापा कितनी ब्यौरे-वार जानकारी रखते थे, अुसकी कुछ कल्पना अुससे हमें होती है।

'मॉडर्न रिव्यू' के सम्पादक महोदयने अिस प्रकार टिप्पणी लिखी थी: "कलकत्तेमें भयंकर परिस्थिति तो है ही। परन्तु बंगालके जिलोंमें अुससे भी ज्यादा खराब हालत है। मिदनापुर जिलेको अभी तक थोड़ी बहुत मदद मिल रही है, यद्यपि दुःखकी बात है कि वह अुसके संकटके हिसाबसे बहुत कम है। अितने पर भी वहांके लोगोंके दुःख बड़े हृदय-विदारक हैं। यह बात 'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' में ४ मअी, १९४३ को प्रकाशित भारत-सेवक-समाजके श्री ठक्करका निम्नलिखित पत्र बता देता है:

"'मैंने 'अे फूड मेम्बर' शीर्षक आपका पत्र बड़ी दिलचस्पीके साथ पढ़ा है।

"'मैं कल ही कलकत्तेसे मिदनापुर और बालेश्वर जिलोंका सफर करके लौटा हूं। वहां यह देखने गया था कि कष्ट-निवारण कार्य कितनी प्रगति कर रहे हैं।

"'देशके अिन पूर्वी भागके अिलाकोंमें अकालके कारण कैसी करुण स्थिति फैली हुअी है, वहांके नीचे दर्जेके लोगोंमें भुखमरी कितनी व्यापक हो गअी है और अिस कारण वहां मृत्युअें कितनी तेजीसे और बड़ी मात्रामें हो रही हैं, अिसकी बम्बअीके लोगोंको कल्पना भी नहीं हो सकती। यहां बम्बअीके लोगोंकी छोटी छोटी शिकायतें होने पर भी अुन्हें और अुपनगरोंमें रहनेवालोंको राशनकी सुन्दर व्यवस्था द्वारा अनाज अच्छी तरह मिल जाता है, जब कि कलकत्तेमें अैसा राशनिंग नहीं है जिसे अच्छा कहा जा सके। और हजारों तथा लाखों लोग आसपासके प्रदेशसे आकर कलकत्तेमें जमा हो रहे हैं और अनाजकी तलाशमें अिधर अुधर भटक रहे हैं। कलकत्ता कारपोरेशनके सदस्योंने खुले रूपमें अैलान किया है कि आसपासके जिलोंके गांवोंसे कलकत्तेमें आये हुअे हजारों अकालग्रस्त लोगोंमें से बहुत लोग भुखमरीके कारण कलकत्तेकी गलियोंमें मर गये हैं। चटगांव जिलेमें सरकारने मुफ्त भोजनालय शुरू किये हैं, जहां अकाल-पीड़ितोंको मुफ्त खिचड़ी दी जाती है। और कलकत्तेके सार्वजनिक सेवाकी भावनावाले लोग पचास हजार गरीब और मध्यम श्रेणीके लोगोंको खिलानेके लिअे मुफ्त राहत-केन्द्र और सस्ते दरोंके भोजनालय तुरंत शुरू करेंगे। परन्तु जिलोंके गांवोंमें लोगोंकी हालत अिससे भी कहीं खराब है, क्योंकि वहां रुपयेके सेर डेढ़ सेर चावल मुश्किलसे मिलते हैं। गरीब लोगोंके लिअे बहुत कम, लगभग नहींके बराबर, भोजन पर गुजर करना असंभव हो गया है। मिदनापुर जिलेके कोण्टाअी परगनेकी दशा बहुत ही विषम हो गअी है। १९४२ के अक्तूबरमें वहां समुद्री तूफानने भयंकर बरबादी की। अुसके बाद भी अुस पर दुःखोंकी परम्परा जारी रही। आज सरकार वहां ७०,००० मनुष्योंको मुफ्त अन्नदान दे रही है। अुनमें से प्रौढ़ आयुके आदमियोंको रोज केवल २४ तोला अनाज देकर राहत पहुंचा रही है। फिर भी कोण्टाअी शहरमें और गांवोंमें भुखमरीके कारण बहुत-सी मृत्युअें होती हैं। अुत्तर बालेश्वर जिलेके अंदरूनी भागोंमें ११० मीलकी नाव और पालकीमें बैठकर की हुअी यात्रामें मैंने अस्थि-पंजर बने हुअे सैकड़ों और हजारों नंगे भूखे बच्चों और लड़कोंको देखा। अिन गांवोंमें भुखमरी और हैजेके कारण होनेवाली मृत्युअें अत्यंत साधारण बात हो गअी है।

"'वहांकी अन्न-परिस्थिति तेजीसे बिगड़ती जा रही है। और यदि अिसके अुपायके लिअे तत्काल कोअी सख्त कार्रवाअी नहीं की गअी, तो

अिस प्रदेशमें भुखमरीके कारण होनेवाली मृत्युओंकी संख्या बहुत बढ़ जायगी। केवल थोड़ेसे अुद्योग-प्रधान शहरोंकी ही संभाल रखनेसे परिस्थिति नहीं सुधर सकेगी। केन्द्रीय सरकारने जैसे भारतकी रक्षाकी जिम्मेदारी अपने हाथमें ली है, वैसे ही और अुसी पैमाने पर सारे देशको अन्न मुहैया करनेकी जिम्मेदारी भी अुसे अपने ही हाथमें ले लेनी चाहिये। और अुस पर देशकी रक्षाके अेक अंगके रूपमें ही अमल करना चाहिये। अिसके बजाय वह कुछ अधिक अन्नोत्पादक प्रान्तोंकी दया पर गुजर करनेका विचार करके और अुन पर आधार रखकर हाथ बांधे बैठी रहेगी, तो अेक महा भयंकर आफत देश पर आ पड़ेगी। बंगालके धारासभाके मेंबर समस्त बंगालको अकाल-ग्रस्त प्रदेश घोषित करनेके लिअे जो मांग कर रहे हैं और अुसके लिअे जो पुकार मचा रहे हैं, वह बिलकुल न्याय्य और अुचित है। यदि देशके कुछ भागोंमें चावल ८ से १५ रुपये मनके भावसे बिकते हों और बंगालमें वही चावल ३५ से ४० रुपये मनके हिसाबसे बिकते हों, तो स्पष्ट है कि देशके यातायात और प्रबंधमें कहीं न कहीं गंभीर भूल हो रही है।'"

अिस प्रकार जब जब जरूरत पड़ी तब तब बापाने वक्तव्य प्रकाशित करके, अधिकारियोंके साथ पत्रव्यवहार करके, अखबारोंमें विशेष लेख लिखकर बंगालके संकटको सतत जनताकी नजरोंके सामने रखा और सरकारी तथा गैरसरकारी कष्ट-निवारण कार्योंको चाबुक लगा कर गति दी। बंगाल, मलाबार, बीजापुर, राजस्थान, त्रिवेन्द्रम्, वगैरा प्रदेशोंमें तो अुन्होंने क्षुधा-पीड़ितोंके लिअे काम किया ही, लेकिन अिन सबमें अभागे अुड़ीसा प्रान्तको अकालके पंजेसे बचा लेनेके लिअे अुन्होंने जो प्रवास किये अुन्हें अुड़ीसाके लोग कभी नहीं भूलेंगे।

अुड़ीसाके दौरेमें अुन्होंने देखा कि अुड़ीसाका अकाल बंगालका छोटा संस्करण ही है। अुन्होंने देखा कि अन्नके भावोंके कारण अुड़ीसाके लोग भी बंगालके लोगोंकी तरह ही धीरे धीरे मृत्युकी ओर जा रहे हैं और कुछ तो जा भी चुके हैं। तब अुनसे रहा नहीं गया। बम्बअी आकर 'जन्मभूमि' और कुछ अन्य दैनिक पत्रोंमें अेक करुणासे भरपूर वक्तव्य जारी किया और अुसमें अुड़ीसाके लोग अकालके संकटमें कैसे फंस गये हैं, अिसका विस्तृत वर्णन देकर लिखा:

"बंगालमें अितने बड़े विस्तारमें अकालका गहरा असर है कि अुसके सामने अुड़ीसा प्रान्तके दु:ख छिप-से गये हैं। बंगालके लोगोंके पास 'अमृत-बाजार' और 'स्टेट्समैन' जैसे प्रबल समाचारपत्र हैं। डॉ० श्यामाप्रसाद मुकर्जी जैसे महान नेता हैं, जिनके कारण बंगालके दु:खोंकी पुकार दूर दूर

तक सुनाअी दी है। परन्तु बेचारे गरीब अुड़ीसाका कौन है? बंगालकी रणभेरी जहां बज रही हो, वहां अुड़ीसाकी तूती कौन सुने? फिर भी अुड़ीसाके अपने दौरेमें खास तौर पर कटक, पुरी और बालेश्वर जिलेमें समुद्र तटके गांवोंमें मैंने जो कुछ देखा है, अुस परसे कहता हूं कि अुड़ीसाका अकाल-संकट बंगाल जैसा ही तीव्र है। वहां भुखमरी भी बंगाल जैसी ही भयंकर है। यह बात सही है कि बंगाल जितने विस्तारमें वह फैला नहीं है, परन्तु अिससे अुसकी तीव्रता घटती नहीं। आज बंगालकी तरफ धन, जन वगैराकी सहायताका जो प्रवाह बह रहा है, अुसे अिस गरीब, कंगाल और मूक प्रान्तकी ओर भी मोड़नेकी जरूरत है। और तभी हम भुखमरीमें फंसे हुअे हमारे लाखों लोगोंको राहत पहुंचा सकेंगे और मृत्युकी ओर बहते हुअे जनप्रवाहको रोक कर अुसे बचा सकेंगे।"

बापाके अिन बयानोंका गुजरातमें काफी असर हुआ था। और बम्बअी तथा गुजरातके कअी अखबारों और मजदूर संघ जैसी संस्थाओंने हजारों रुपयेके चंदे अिकट्ठे करके अुनके द्वारा बंगाल और अुड़ीसा दोनोंको मदद पहुंचाअी थी।

अिसके अलावा बापाके बयानोंने प्रान्तीय सरकार पर भी अच्छा असर किया था। अुस समयके अुड़ीसाके मुख्यमंत्री पार्लकेमेडीके महाराजा अुड़ीसाकी प्रजाको भूखों मरती छोड़कर घुड़दौड़की बाजियां लगानेमें समय बिता रहे थे। अुन्हें भी लोकमत अुग्र हो जानेसे अुड़ीसामें वापस जाना पड़ा और जो पहले मुक्त व्यापारके समर्थन करनेवाले वक्तव्य निकालकर अुड़ीसाका चावल बाहर निकालनेमें कारण बने हुअे थे, अुन्हींको परिस्थितिका वास्तविक चित्र पेश करनेको मजबूर होना पड़ा और सार्वजनिक वक्तव्यमें ठक्करबापाके प्रयत्नोंको अंजलि देकर अुनसे गरीब अुड़ीसाकी मददको दौड़नेके लिअे सार्वजनिक अपील भी करनी पड़ी थी। परन्तु यह सब होनेसे पहले तो अुड़ीसामें भुखमरी और अुससे पैदा हुअे रोगोंके कारण लगभग २५,००० स्त्री-पुरुष और बच्चे मौतके शिकार हो चुके थे। सरकारके नियुक्त किये हुअे अकाल जांच सम्बंधी वुडहेड कमीशनका विवरण भी अिस सचाअीका समर्थन करता है।

अुस समय अुड़ीसाके समुद्र-तटके गांवों और तालुकों और जिलोंके शहरोंकी गलियोंमें अकाल-पीड़ित लोगोंकी लाशें पड़ी मिलती थीं। गिद्ध और कुत्ते तथा गीदड़ अिन मुर्दोंको नोचते नजर आते थे। भूख और रोगके कारण कितने ही मनुष्य पागल जैसे बन गये थे और मांसपेशियोंके अभावमें केवल हाडचामके पुतले बने कअी स्त्री-पुरुष सर्वथा नग्न स्थितिमें

भटकते और दो-चार दिनमें मरते नजर आते थे। देहातकी हालत तो और भी भयानक थी। कओी गांवोंके बाहर क्षुधा-पीड़ित लोगोंकी हड्डियों और खोपड़ियोंके ढेर भी दिखाओी देते थे।

बापा अिन सब प्रदेशोंमें नावमें बैठ कर और पैदल चलकर घूमे थे और अकालके ये करुण और भयानक दृश्य देखकर अुनकी आंखोंमें आंसू आ जाते थे। परन्तु हृदय कठोर करके वे काममें लगे रहते थे। यही ध्यान रखते कि अिन निराधार लोगोंकी मदद कैसे की जा सकती है।

१९४३-४४ की अवधिमें अुड़ीसामें जिन जिन सार्वजनिक संस्थाओंकी तरफसे कष्ट-निवारण कार्य किये गये, अुनमें अुड़ीसा कष्ट-निवारण समिति सबसे प्रमुख संस्था थी और श्री ठक्करबापा अुसके अध्यक्ष थे। यह अध्यक्षीय कर्तव्य पालन करनेके लिअे अकालके दिनोंमें लगभग दो बार वे अुड़ीसामें लम्बे अर्से तक घूमे थे और राहत-कार्यका संगठन किया था। लोगोंसे मिले हुअे रुपयोंसे चावल-खिचड़ी वगैरा अन्न और वस्त्र और कहीं कहीं जरूरतके लायक नकद रकम भी अकाल-पीड़ितों, बीमारों और विधवाओंको दी जाती थी। बापा अिसका बराबर ध्यान रखते थे कि यह मदद योग्य मनुष्योंको अुचित रूपमें मिल जाती है या नहीं और अुन प्रदेशोंमें स्वयं घूम कर सहायता-कार्यका निरीक्षण करते थे। कभी कभी तो खुद भी सहायताका अनाज बांटने लगते थे।

अिस दौरेके दिनोंमें अुन्होंने रात-दिन देखे बिना काम किया। १९४३ में अुनके मातहत काम करनेका जिन्हें मौका मिला था, वे कटकके सेठ सुन्दरदासके पुत्र अुस समय बापाके काम पर काफी प्रकाश डालते हैं। अुन्होंने कहा था:

"बापा सुबह ही जल्दी अुठ जाते और शौचादिसे निपट कर प्रार्थनाके बाद काममें लग जाते। दिन भर सहायताका धान बांटते, अकाल-पीड़ितोंको व्यवस्थित ढंगसे बिठाने और अुन्हें अेकके बाद अेक बारी बारीसे सहायताकी चीज बांटी जाय, यह सब देखनेमें सारा समय बिताते। खानेमें भी अिस कारण काफी देर हो जाती। अिस समय बापा काममें अितने अधिक डूबे हुअे रहते कि बहुत बार वे नींद और आहार दोनों छोड़ देते। हम भी अुनके साथ सुबहसे शाम तक काम करके थक कर लोथ-पोथ हो जाते और आंखोंमें नींद अितनी भर जाती कि अभी बिस्तर पर पड़ कर सो जायं। परन्तु बापा तो अुस समय दिन भरमें बांटे गये अनाज, कपड़ों वगैराकी सूचियां मिलाते, हिसाब जोड़ते और जोड़-बाकी करते थे।

"अेक बार अुड़ीसाके भीतरी गांवोंमें अिस प्रकार काम करते करते रातके लगभग ग्यारह बज गये थे। हम खूब थक गये थे, अिसलिअे सोनेकी तैयारी करने लगे। अितनेमें तो बापाने अेक नया ही काम हाथमें ले लिया। बाहरसे अकाल-पीड़ितोंकी मददके लिअे कपड़ेकी गांठ आअी थी। अुसके थान निकाल कर यह गिनना था कि प्रत्येक थानमें कितने गजक पड़ा है। और फिर प्रत्येक अकाल-पीड़ित अथवा वस्त्रकी आवश्यकता वालेको कितना कपड़ा दिया जाय, अिसका हिसाब लगाना था। बापाने हमसे कहा, चलो, अितने कपड़ेको गजसे नाप लें। परन्तु हममें से लगभग सभी खूब थक गये थे और नींदसे भरे थे। अिसलिअे बापाको बहुत अुत्साहपूर्ण अुत्तर नहीं मिला। बापाकी बातका जवाब दिये बिना अेकके बाद अेक सभी बिस्तर बिछाकर और चादर ओढ़ कर सो गये। परन्तु बापाको क्रोध नहीं आया, न किसीको अुन्होंने कठोर वचन सुनाया। सबके सोने पर कपड़ेकी अेक गांठ धीरेसे खोलकर अुसमें से थान निकाल निकालकर स्वयं नापने लगे। और बादमें कैंचीसे डेढ़ डेढ़ गजके टुकड़े काटने लगे। हम सब बिस्तर पर पड़े पड़े आंखें बन्द करके और कभी जरा खोलकर यह सब देख रहे थे। बापाको अिस तरह अकेले काम करते देखनेके बाद हमें नींद कैसे आ सकती थी? अन्तमें हम शर्माये और बिस्तरोंसे अुठकर बापाके काममें शरीक हुअे। तभी हमारे मनको सांत्वना मिली। बापाकी काम लेनेकी यह रीत थी।

"अेक और प्रसंग अिस बातका अच्छी तरह खयाल कराता है कि बापाकी नियमितता और समयकी पाबन्दी रखनेकी लगन कैसी थी।

"अेक बार बापाको चिल्का सरोवर पर स्थित कुछ अकालग्रस्त गांवोंको देखने जाना था। सदाकी भांति दस ग्यारह बजे तक काम करनेके बाद सब सोनेकी तैयारी करने लगे। अुस समय बापाने सब साथियोंको सूचित किया कि हमें यहांसे ठीक छः बजे सबेरे रवाना होना है। अिसलिअे सबको जल्दी अुठकर प्रातःकर्मसे निपटकर ठीक छः बजे किनारे पर पहुंच जाना है।

"रातको सब सो गये। परंतु दिनभरके परिश्रम और थकानके कारण अुस दिन हम जरा देरसे अुठे। और अुसके बाद जल्दीसे तैयारी करने पर भी पहुंच न सके। फिर भी जल्दी जल्दी चिल्का सरोवरके किनारे पहुंचे तो वहां अेक नाव खड़ी थी। दूसरी नाव कहां गअी यह पूछने पर अुत्तर मिला कि वह तो ठीक छः बजे यहांसे चल दी। आपका अिन्तजार किया, मगर आप न आये तो बापा कुछ कार्यकर्ताओंको लेकर यहांसे रवाना हो गये।

"यह सुनकर हमने भी जल्दी की और अुस नाववालेसे जल्दी जल्दी नाव चलाकर बापासे भेंट करा देनेको कहा। अुस दिन दिनभर नाव चलाओ, परंतु बापासे भेंट ठेठ शाम तक नहीं हुओ। वे तो पहलेसे निश्चित क्रमके अनुसार जो जो गांव आते गये वहां सहायता-केन्द्रोंकी जांच करते गये, अकाल-पीड़ितोंमें बांटनेका माल बांटते गये और अिस तरह आगे ही आगे बढ़ते रहे। शामको आखिरी गांवमें जहां हमारा पड़ाव डालकर रात बिताना तय हुआ था, वहां अन्तमें जब हम पहुंचे तब बापासे भेंट हुओ। अुस समय हम थके हुअे होंगे और भूखे भी होंगे, यह सोचकर हमारे पहुंचनेसे पहले ही बापाने खानेका प्रबंध करा रखा था। और हम आये तब अुलहना देनेके बजाय हम भूखे हैं या नहीं, अिस बारेमें पहले हमसे पूछताछ की और सबको भोजन करने भेज दिया। बादमें यह पूछा कि हम रास्तेमें क्या क्या काम करते आये। अुन्होंने भी अपना काम बताते हुअे कहा कि, 'बेचारे क्षुधा-पीड़ित लोग घंटोंसे हमारी बाट देखते बैठे हों, तब हमारे देर करनेसे कैसे काम चले? हमारे अेक आदमीके दोषके कारण सैकड़ों मनुष्योंको घंटों तक बैठे रहना पड़े। हम तय किये हुअे वक्त पर पहुंच जायं तो हरअेकका काफी समय बच जाय और लोगोंको निश्चित समय पर सहायताका धान वगैरा मिल जाय।'

"अिन दिनोंमें वे धोतीका कच्छ बनाकर घुटनों घुटनों और कभी कभी जांघों तकका पानी काटते और मीलों तक चल लेते। अकाल-पीड़ितोंकी लम्बी कतारें देखकर, हड्डी-पसलीवाले बालकों और जवान औरतोंको देखकर वे कओ बार रो पड़े थे। अुनसे अुड़ीसाके लोगोंका दुःख देखा नहीं जाता था।"

अिस अर्सेमें सेठ सुन्दरदासजीके पुत्रने बापाके मंत्रीके तौर पर अितना सुन्दर काम किया था कि वह नौजवान बापाकी आखोंमें बस गया। अकाल कार्यके सिलसिलेमें वे अेक बार कटक आये तब सेठ सुन्दरदासजीसे अुन्होंने कहा, "सेठ, आपसे मुझे अेक मांग करनी है।" सेठके मनमें खयाल हुआ कि कुछ रुपये-पैसे मांगेंगे, अिसलिअे कहा, "खुशीसे, मेरे पास हो, अैसा बापाको क्या चाहिये?" तब बापाने कहा, "अपना लड़का मुझे दे दीजिये। अीश्वरने आपको अितना सब दिया है। अब कमानेकी जरूरत नहीं। तो फिर आपका लड़का देशसेवाके काममें क्यों न लगे?" परंतु जैसा सेठ सुन्दर-दासजीने कहा, अुनसे पुत्रस्नेह छूट नहीं सकता था। अिसलिअे बापासे कहा, "बापा, चाहिये तो अकाल-पीड़ितोंको खिलानेके लिअे कुछ धन ले लीजिये। और भी मेरे लायक हो सो मांग लीजिये। मगर पुत्र नहीं दे सकूंगा।"

अुड़ीसामें १९४३ में और १९४४ के चौमासे तक कष्ट-निवारण-समितिकी ओरसे कामकाज चला, अिस बीच समिति द्वारा अुन्होंने लाखों रुपयेका अनाज तथा कपड़ा गरीबों और क्षुधा-पीड़ितोंमें बांटा। कितने ही अनाथ बालकोंके संरक्षक बने। कितनी ही विधवाओंके सहायक हुअे। कितने ही कुटुम्बोंको मृत्युके मुखमें जानेसे बचानेकी कोशिश की और गांधीजी तथा अन्य देशनेताओंकी अनुपस्थितिमें अिस देशव्यापी संकटका सामना करनेके लिअे वृद्धावस्थामें बम्बअी, दिल्ली, कटक, मलाबार, राजस्थान वगैरा प्रदेशोंमें दौड़-धूप करके संकटग्रस्त लोगोंकी मदद की।

१९०१ में जब बापा अफ्रीकामें विट्ठलबापाके अकाल-पीड़ितोंके दुःखोंका और अुनकी सहायताका वर्णन करनेवाले पत्र पढ़ते, तब अुन्होंने मनमें यह संकल्प किया था कि भविष्यमें अगर चीन जैसे दूर देशमें भी सेवाके लिअे जानेकी जरूरत पड़ी तो जाअूंगा। अिस तरह बापाको चीन जानेकी जरूरत तो नहीं पड़ी, लेकिन भारतमें ही मलाबार, कोचीन, राजस्थान, अुड़ीसा, बंगाल जैसे दूरस्थ प्रदेशोंमें अुन्हें मददके लिअे जानेकी जरूरत पैदा हुअी और वे हर जगह गये तथा ४३ वर्ष पूर्व किया हुआ सेवाका संकल्प अनेक बार पूरा किया।

३०

देहाती स्त्री-बच्चोंकी सेवा

१९४३ में भारतमें हुकूमत करनेवाली ब्रिटिश सल्तनतने फौलादी पंजा अच्छी तरह दिखाकर कांग्रेसको कुचल डालनेका प्रयत्न किया था। और भीतर ही भीतर जनतामें खूब क्रोध होते हुअे भी बाहरसे कांग्रेसके आन्दोलनको दबाकर देशभरमें 'श्मशानकी शान्ति' फैला दी थी। अुस समय ठक्करबापाने 'हरिजन' में प्रकाशित 'Real War Effects' (सच्चा युद्ध-परिणाम) नामक लेखकी हजारों प्रतियां छापकर भारत भरमें बांटी थीं। अैसा करनेमें बापाका हेतु यह देखना था कि गांधीजीका नाम जनताके सामने ताजा बना रहे; अिसके अलावा अिसके पीछे अुनका हेतु लोगोंको यह विश्वास कराना था कि ब्रिटिश सरकारके साथ समझौता करनेवाले अगर कोअी अेक व्यक्ति हैं तो वे महात्मा गांधी ही हैं, अिसलिअे वे गांधीजीकी गैरहाजिरीमें ब्रिटिश संगीनोंसे डरकर अपना कर्तव्य न भूलें।

भारतके राजनैतिक जीवनके बाहरी तौर पर पलटते दीखनेवाले प्रवाहके अिस जमानेमें गांधीजीके प्रति लोगोंकी श्रद्धा और भक्ति दिखाने और ब्रिटिश सरकारके अधिकारियोंको अिसकी प्रतीति करानेके लिअे भारतके कुछ लोग अेक बड़ा कोष जमा करके गांधीजीको अर्पण करनेका विचार कर रहे थे। अुनमें ठक्करबापाका स्थान प्रमुख था। वे सब अिसकी योजना तैयार कर रहे थे कि अिस विचारको अमलमें कैसे लाया जाय, अितनमें आगाखां महलमें सारे देशको आघात पहुंचानेवाली अेक घटना हुअी। जगदम्बा कस्तूरबाका, जिन्हें गांधीजीके साथ आगाखां महलमें नजरबंद रखा गया था, थोड़े दिनकी बीमारीके बाद २२ फरवरी, १९४४ को देहावसान हो गया। अिस समाचारने करोड़ों भारतवासियोंके हृदयोंमें शोककी काली छाया फैला दी। लाखों और करोड़ों स्त्री-पुरुषोंने आंसू बहाये। गांधीजीके साथ रहकर कस्तूरबाने देशकी आजादीके लिअे जो अपार संकट सहन किये थे, जो कठोर तप किये थे और अनेक चढ़ाव-अुतार देखे थे, अुन्होंने बाको देशमें अेक अद्वितीय स्थान दिला दिया था। अुनके जेलमें हुअे अवसानसे समस्त देशकी आत्मा हिल अुठी। अिससे अुनके प्रति भक्ति और प्रेम प्रदर्शित करने, अुनके प्रति देशका ऋण चुकाने और अुनकी याद कायम रखनेके लिअे 'कस्तूरबा स्मारक कोष' स्थापित करनेका विचार बहुतसे भाअियोंके मनमें पैदा हुआ और जिन जिनसे यह बात कही गअी अुन सबने अिसका स्वागत किया।

अिसलिअे यह कोष जमा करनेके लिअे अेक छोटीसी समिति बनाअी गअी। अुसमें श्री ठक्करबापा, श्री नारणदास गांधी, श्री देवदास गांधी, स्वामी आनंद, श्री शान्तिकुमार मोरारजी, श्री वैकुण्ठराय महेता और कुछ अन्य लोग लिये गये। अिसके बाद पंडित मदनमोहन मालवीयजीके नेतृत्वमें देशभरके कोअी सौ कांग्रेसी नेताओं, समाज-सेवकों और अन्य कार्यकर्ताओंके हस्ताक्षरोंसे देशभरमें अेक अपील निकाली गअी और अुसमें बताया गया कि कस्तूरबा गांधी स्मारकके लिअे ७५ लाख रुपयेकी रकम अिकट्ठी की जायगी और गांधीजीको अुनकी ७५ वीं जन्मगांठके दिन अर्थात् २ अक्तूबर, १९४४ को अर्पण की जायगी तथा यह रकम भारतवर्षकी स्त्रियोंके कल्याण-कार्यमें खर्च की जायगी।

ट्रस्टी (संरक्षक) मंडलके नाम तय हुअे और अुनके नामसे यह अपील निकाली गअी। ठक्करबापा अुसके मंत्री नियुक्त हुअे। बापाने अुन दिनों जो काम किया, वह अच्छे अच्छोंको थका देनेवाला था। अिससे ज्यादा सख्त काम अन्होंने पहले कभी नहीं किया होगा। रोज घंटों दफ्तरमें बैठकर

वे बहुतसे पत्र लिखवाते और कार्यकर्ताओंको रुपया जमा करनेके लिअे अुत्साह और प्रेरणा देते। जिस भागमें शिथिलता मालूम होती वहां ज्यादा जोर देते और अुन्हें अधिक लगन और परिश्रम करनेकी ताकीद करते। कस्तूरबा कोषके लिअे कार्यकर्ताओंसे अुनकी वसूली 'पठानकी वसूली' होती थी। बड़ी सुबहसे रातको देर तक पत्र लिखना, सूचनाअें भेजना, परिपत्र तैयार करना और व्यक्तिगत पत्र लिखना जारी ही रहता। अिसके सिवाय मार्चसे सितम्बर तक देशके भिन्न भिन्न भागोंमें अुन्होंने दौरा किया और कस्तूरबा स्मारक कोष जमा करनेके लिअे हर जगह स्थानीय समितियां मुकर्रर कीं।

१९४४ में अुस समय गांधीजी और जवाहरलालजीसे लगाकर देशके तमाम छोटे-बड़े नेता जेलमें थे। लोगोंमें निरुत्साह और निराशा फैलने लगी थी और अितने बड़े कोषके लिअे देश-कालकी परिस्थिति प्रतिकूल थी। अेक बड़े प्रमुख व्यापारीने तो बापाको यहां तक कहा था कि कस्तूरबा स्मारकके लिअे ७५ लाख रुपया जमा करनेका आपने जो लक्ष्य रखा है, वह बहुत अूंचा है। परंतु ठक्करबापाके खयालसे वह कोअी अूंचा नहीं था। अिस लक्ष्यांक तक पहुंचनेके लिअे अुन्होंने दिन-रात अेक करके अटूट धीरजसे सतत प्रयत्न किया। बापू और बाके प्रति बापाकी भक्तिके कारण और गांधीजीका १९४४ के मअी मासमें जेलसे छुटकारा हो जानेके कारण यह मुश्किल काम किसी हद तक आसान हो गया। फिर भी अुसे सर्वांशमें सफल बनानेमें बापाने कोअी कसर नहीं रखी।

१९४४ के जून मासमें अुन्होंने अपने अेक प्रिय मित्र और भक्तको यह पत्र लिखा:

"मुझे आपके विरुद्ध शिकायत करनी है और वह यह कि आप मुझे कस्तूरबा स्मारक कोष जमा करनेमें मदद नहीं देते। आपको अितना जान लेना चाहिये कि अब मैं तो बूढ़ा हो गया। और मेरी शारीरिक शक्ति और बल जितना तीन-चार वर्ष पहले था अुससे आधा भी अब नहीं रहा। अितने पर भी अितने बड़े भगीरथ कार्यकी जिम्मेदारी सिर्फ अिसीलिअे अुठाअी है कि मैं गांधीजीके प्रति अपना ऋण चुका सकूं। क्योंकि आज मैं जो कुछ हूं वह अुन्हींके कारण हूं। क्या आप मुझे गांधीजीके प्रति यह ऋण चुकानेमें मदद नहीं देंगे?"

अुपरोक्त पत्रमें बापा अपनी वृद्धावस्था और क्षीण हुअी शक्तिका अुल्लेख करते हैं, परंतु अुन्होंने कस्तूरबा स्मारक खड़ा करनेके लिअे कितना ज्यादा परिश्रम किया था, कितने जागरण किये थे, कितनी दौड़धूप की

थी, यह तो अुनके साथ रहकर काम करनेवाले सेवक ही जानते हैं। अुन लोगोंके मतानुसार अुन तीन महीनोंमें बापाने अितना सख्त काम किया था, जितना अपनी जिन्दगीमें कभी नहीं किया होगा। और अैसा करनेमें अुन्होंने थकान, भूख और निद्राकी बिलकुल परवाह नहीं की थी। अुस समय बापासे अुनके अेक साथीने पूछा, 'बापा, आपमें अिस वृद्धावस्थामें भी काम करनेकी अितनी अधिक शक्ति विद्यमान है, अिसका रहस्य क्या है?' तब अुन्होंने जवाब दिया था, 'कामके प्रति भक्ति, आदर्शके प्रति वफादारी और प्रबल अिच्छाशक्ति ही मुझे काममें लगाये रखती है और थकान नहीं मालूम होने देती।'

यह प्रबल अिच्छाशक्ति और कस्तूरबा स्मारकके प्रति रही भक्ति तथा लगन ही अुनसे सोलह सोलह घंटे काम कराती थी, और फिर भी अुन्हें थकान महसूस नहीं होने देती थी। अिस प्रकारके सतत पुरुषार्थ और परिश्रमके परिणामस्वरूप बापाने जितना सोचा था अुससे अधिक फण्ड अिकट्ठा कर लिया। अुन्होंने ७५ लाख रुपयेका जो लक्ष्यांक रखा था, वह तो कभीका पूरा हो चुका था और २ अक्तूबर १९४४ के दिन जब गांधीजीको थैली अर्पण करनेका समय आया, तब चंदेकी रकम अेक करोड़के आंकड़ेको भी पार कर चुकी थी।

अुस पुण्य दिवस पर बापाने गांधीजीको थैली अर्पण करते समय अपने कामका हिसाब देते हुअे यों कहा:

"मेरे जीवनके पूरे हो रहे ७५ वें वर्षके समय आपको अर्पण करनेके लिअे ७५ लाख रुपयेकी नहीं परंतु अेक करोड़से भी अधिक रकम अिकट्ठी करनेमें मैं साधन बन सका और आपके पूरे हो रहे ७५ वर्षके बाद ७६ वें वर्षके जन्मदिन पर आपके चरणोंमें अर्पण कर सका, अिसके लिअे मैं परम कृपालु परमात्माका आभार मानता हूं। साथ ही, जो शहर भौगोलिक रूपमें ही नहीं परंतु रूपककी दृष्टिसे भी भारतके मध्यभागमें स्थित है अुसमें यह समारंभ आयोजित कर सका, अिसके लिअे भी अुस सर्वशक्तिमान परमेश्वरके जितने गुणगान किये जायं अुतने कम हैं।"

गांधीजीके प्रति अुनकी वफादारी और कस्तूरबा स्मारकके प्रति अुनकी भक्तिके कारण वे किसी आदमीके द्वारा की गअी गांधीजीकी आलोचनाको सह नहीं सकते थे। वह आलोचना किसी भी कोनेसे क्यों न आवे, बापा अुसका जवाब देनेको तत्पर हो जाते। १९४४ के मअी मासमें 'लंडन टाअिम्स' के दिल्ली स्थित सम्वाददाताने अपने पत्रमें यह खबर छापी कि गांधीजीने

कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टकी अध्यक्षता स्वीकार करके कांग्रेस दलको, जो मृतप्राय हो गया है, पुनर्जीवित करनेकी दिशामें पहला कदम अुठाया है। यह नअी संस्था और अुसकी देशव्यापी शाखा-प्रशाखाओंकी श्रृंखला कांग्रेसका प्रचार करनेमें बड़ा अुपयोगी साधन बनेगी। गांधीजी पर अिस प्रकारका हेतु आरोपित करना और अुनके बारेमें आक्षेपात्मक लिखना बापासे सहन नहीं हुआ। वे यह समाचार पढ़कर अुबल अुठे और अिस शरारती समाचारका जोरदार खंडन करनेवाला अेक लंबा वक्तव्य अुन्होंने निकाला। अुस वक्तव्यमें अन्य कुछ मुद्दोंकी चर्चा करके अुन्होंने कहा कि,

"निम्नलिखित तथ्योंके प्रति मैं आम जनताका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं :

"कस्तूरबा स्मारकके बारेमें ८ मार्चको हमारे हस्ताक्षरोंसे अेक अपील निकाली गअी थी। अुसी समय हमने अैसी आशा व्यक्त की थी कि गांधीजीकी नजरबंदी समाप्त होनेके बाद अिस स्मारक कोपका अध्यक्षपद वे संभाल लेंगे। अिसलिअे 'लंडन टाअिम्स' के दिल्ली स्थित सम्वाददाताको अितना जानना चाहिये कि गांधीजी स्मारक ट्रस्टकी अध्यक्षता स्वीकार करेंगे, यह जो घोषणा ट्रस्टियोंकी १० मअीकी सभाके बाद की गअी थी अुसका समावेश तो ट्रस्टियोंकी दो मास पहले हुअी बैठकके निश्चयानुसार जो अपील निकाली गअी थी अुसीमें हो जाता था। मैं केवल अितना ही और कहूंगा कि व्यक्तिगत रूपमें गांधीजी ट्रस्टकी अध्यक्षता संभालनेको राजी नहीं थे, परंतु ट्रस्टियोंकी प्रार्थना और अत्यंत आग्रहको मान कर ही अुन्होंने यह पद संभालनेके लिअे अपनी संमति दी थी। अिस कोषको प्रोत्साहन देने या आगे बढ़ानेके लिअे गांधीजीको खास कोशिश करनेकी जरूरत मालूम होनेका भी कोअी विशेष प्रश्न पैदा नहीं होता। चंदा अिकट्ठा करनेका काम तो पूरे जोरसे चल ही रहा है। और अुस प्रेस प्रतिनिधिको अितना जान लेना चाहिये कि देशमें पू० कस्तूरबाकी यादके लिअे लोगोंकी भावना अितनी तीव्र है कि २ अक्तूबर आनेसे पहले ७५ लाख रुपये जरूर जमा हो जायंगे।

"साथ ही मुझे यह भी कहना चाहिये कि कस्तूरबा कोषका काम करनेवाली अलग अलग कमेटियोंका अुपयोग कांग्रेसके हितको आगे बढ़ानेमें किया जायगा, यह जो आक्षेप किया गया है वह अुनके जैसे जिम्मेदार पत्रकारको शोभा नहीं देता। मुझे आशा है कि अुनके अिन आरोपोंका देशके भिन्न भिन्न भागोंके तमाम स्त्री-पुरुष, फिर वे कोअी भी राजनैतिक दृष्टिकोण रखते हों, कड़ेसे कड़ा विरोध करेंगे। अिस बारेमें मुझे शंका नहीं है कि पू० कस्तूरबा जैसी आदरणीय महिलाके, जिन्होंने सारे देशका आदर और प्रेम प्राप्त

किया है, स्मारकके लिअे अेकत्रित अलग अलग राजनैतिक दृष्टिबिंदु रखने-वाले लोग अिन आरोपोंकी कड़े शब्दोंमें निन्दा करेंगे।

"गांधीजी अपने राजनैतिक विचारोंका प्रचार करनेके लिअे आड़े-टेढ़े तरीकों और साधनोंका अुपयोग करने जितने नीचे हरगिज नहीं अुतरेंगे। अुनकी सत्यनिष्ठा और आत्मगौरव संसार भरमें प्रसिद्ध हैं। लोगोंने अुनकी सच्चाअी और अीमानदारीको मान लिया है। मैं विश्वास रखता हूं कि 'लंडन टाअिम्स' के प्रतिनिधि अब अपनी की हुअी भूल समझ लेंगे। और अुस पत्रके लाखों पाठकोंमें अुनके विवरणने जो गलत-फहमी पैदा की होगी अुसे दूर करनेके लिअे वे जल्दीसे जल्दी अपनी भूल सुधार लेंगे और समाचारका सच्चा वर्णन करेंगे।"

गांधीजी ठक्करबापाको कस्तूरबा ट्रस्टके पिताके रूपमें ही मानते थे। वे कअी बार कहते थे कि अिस कोषके अुपयोगके संबंधमें मेरी राय ठक्करबापासे भिन्न हो तो ठक्करबापाकी राय ही माननी चाहिये और तदनुसार अुस पर अमल होना चाहिये।

अिस कोषका ट्रस्ट-डीड (ट्रस्टका दस्तावेज) १ अप्रैल १९४५ को अमलमें लाया गया। अुसकी अेक कलम यह थी कि ट्रस्टके पदाधिकारियोंका कार्यकाल अेक वर्षका रखा जाय (सिर्फ गांधीजी जो अिस ट्रस्टके अध्यक्ष थे अिसके अपवाद थे)। अेक साल बाद ट्रस्टी लोग खुद ही पदाधिकारियोंकी नियुक्ति करें और यह भी तय करें कि अुनकी मियाद क्या रखी जाय। ठक्कर-बापा जुलाअी १९४६ में दूसरी बार ट्रस्टके मुख्यमंत्री नियुक्त हुअे तब गांधीजीने सुझाया कि अुन्हें अब आजीवन मंत्रीपद पर स्थापित कर दिया जाय। परंतु बापाने यह बात स्वीकार न करके अधिकसे अधिक तीन वर्ष तक मंत्रीपद संभालनेकी तैयारी बताअी। यह अवधि जून १९४९ में पूरी हो गअी। अिस बीच गांधीजीका देहान्त हो गया और अुनकी जगह सरदार पटेल अध्यक्ष मुकर्रर हुअे। अिसलिअे बापाने अपनी अवधि समाप्त होने पर सरदारको लिखा कि अब आप और किसीको मंत्रीपद दीजिये। यदि मुझे देंगे तो मैं स्वीकार नहीं करूंगा। परंतु ट्रस्टी (संरक्षक) मंडलकी सर्वसम्मत विनती और आग्रहको मानकर बापाको और तीन सालके लिअे यह पद स्वीकार करना पड़ा। अिस बीच दिसम्बर १९५० में सरदार साहबका देहावसान होने पर ट्रस्टी मंडलने ठक्करबापाको सर्वसम्मतिसे अध्यक्षके तौर पर चुन लिया। मावलंकर दादाका तदनुसार तार भी आया। परंतु अिस समय वे भावनगरमें आराम ले रहे थे। वृद्धावस्थाके लिअे स्वाभाविक कितनी ही तकलीफोंने अुन्हें घेर लिया था। और अुन्हें यह प्रतीति हो

चुकी थी कि अब मैं थोड़े ही दिनका मेहमान हूं। अिसलिअे अुन्होंने अध्यक्ष-पद स्वीकार करनेसे अिनकार कर दिया और साथ साथ मावलंकर दादासे ही यह पद स्वीकार करनेका अनुरोध किया।

१९४८ के बाद बापा अपनी वृद्धावस्था, खराब स्वास्थ्य और आंखोंके मोतियाबिन्दुके कारण अिसकी ओर बहुत ध्यान नहीं दे सके। फिर भी अुन्होंने अिस कामके सिलसिलेमें जो रूपरेखा बना दी है, वह तथा अुनका नाम और मार्गदर्शन साथी कार्यकर्ताओंको खूब प्रेरणा देता रहता है।

गांधीजी ६ मअी, १९४४ को आगाखां महलसे छूटे, तब अुनसे ट्रस्टियोंको सलाह-सूचना और मार्गदर्शन देनेके लिअे अिस ट्रस्टका अध्यक्षपद स्वीकार करनेकी प्रार्थना की गअी। अुसी वर्षके जुलाअीकी पहली तारीखको ट्रस्टियोंकी बैठक बुलाअी गअी। अुसमें गांधीजीने अिस कोषका क्या अुपयोग करना चाहिये, अिस विषयमें अपने विचार प्रगट करते हुअे कहा कि, "कस्तूरबा अेक सरल और सीधी-सादी स्त्री थीं और गांवके जीवनको अपना चुकी थीं। वह गांवमें ही रहती थीं और गांवोंकी ही सेवा करती थीं। अिसलिअे अुनके नामसे अिकट्ठे हुअे कोषका अुद्देश्य भी देहातकी स्त्रियों और बच्चोंका कल्याण होना चाहिये। अतः भारतके असंख्य ग्रामोंमें रहनेवाली स्त्रियों और बच्चोंके कल्याणका क्या अर्थ है, और अिस संबंधमें मेरे क्या विचार है, यह बात ट्रस्टियों और दुनियाको मालूम हो जाय तो अच्छी बात है। मेरी कल्पनाके अनुसार तो स्त्रियों और बालकोंके कल्याण-कार्यमें देहाती स्त्रियों और बच्चोंके समग्र जीवनका समावेश हो जाता है। और अिसीलिअे अिस कल्याण-कार्यमें प्रसूति, आरोग्य, रोगोंमें चिकित्सा और देखभाल तथा शिक्षाके प्रश्न आ जाते हैं।"

अिस प्रकार देहातमें रहनेवाली स्त्रियों और बच्चोंके कल्याण-कार्यके लिअे अिस ट्रस्टकी रचना हुअी और अुसका कार्यक्षेत्र भी देहातमें रहा। देहातमें रहनेवाली स्त्रियों और बच्चोंके जीवनमें बुनियादी फेरबदल करके अुनके दुःख, दारिद्र्य और रोग तथा अज्ञान मिटें, अुनमें निर्भयता और स्वावलम्बनके गुण विकसित हों, अुनमें आत्मश्रद्धा पैदा हो और वे अपने आपमें अेक नया ही बल अनुभव करें तथा समाजमें अपना अुचित स्थान प्राप्त करें, अिस प्रकारका काम करनेकी जरूरत थी।

स्त्रियों और बच्चोंको अिस तरहकी तालीम देनेके लिअे निम्नलिखित रूपरेखा तैयार की गअी है और अुसे सबने सर्वसम्मतिसे स्वीकार किया है :—

नअी तालीम अथवा बुनियादी शिक्षा। जैसा गांधीजीने कहा है, अिस शिक्षाका प्रारंभ गर्भाधानसे ही हो जाता है और वह माता-पिताके सही

आचार-विचार पर अवलंबित है। अिसलिअे बालकोंकी माताओंको सच्चे, प्रामाणिक, श्रमयुक्त और नीतिमय जीवनकी तालीम दी जाय और बच्चोंको वर्धा योजनाके अनुसार शिक्षा दी जाय। यह कस्तूरबा ट्रस्टके कार्यक्रमका प्रथम भाग है।

दूसरा, स्वास्थ्यकी रक्षा और बीमारीमें सच्ची सेवा-सुश्रूषा। अिसमें आरोग्यके सामान्य नियम, स्वच्छता, सुघड़ता वगैरा तथा रोगोंको रोकना, दाअीकी तालीम, शास्त्रीय ढंग पर प्रसूति-गृह चलाना और देहातके स्वास्थ्यकी रक्षा करना अित्यादि बातोंका समावेश हो जाता है।

तीसरा, ग्रामोद्योग और गृह-अुद्योग जिनमें खादी, वस्त्र-स्वावलम्बन, कताअी, पिंजाअी, बुनाअी, सिलाअी वगैरा आ जाते हैं।

चौथा, ग्रामसेवा और पांचवां, गोपालन, बागवानी वगैरा।

कस्तूरबा कोषका रुपया स्त्री-कार्यकर्ताओं द्वारा ही खर्च किया जाय, यह गांधीजीकी पहलेसे ही अिच्छा थी। अिसलिअे ट्रस्टकी कार्य-समितिने निश्चय किया है कि कस्तूरबा ट्रस्टके सब केन्द्रोंका संचालन स्त्री-कार्यकर्ताओंके ही हाथोंमें रहे। विशेष परिस्थितियोंमें जब विशेष योग्यता और अूंचे दर्जेकी स्त्रियां कार्यकर्ताके रूपमें न मिलें, तभी विशेष अपवादके तौर पर अिस नियममें फेरबदल करनेका अध्यक्षको अधिकार दिया गया है। अिस कार्यमें प्रान्तीय समितियोंको सबसे बड़ी मुश्किल यह होती है कि अुन्हें देहातका काम कर सकनेवाली, सही दृष्टि रखनेवाली और देहातके प्रश्नोंको समझनेवाली तालीम पाअी हुअी शिक्षित और योग्य बहनें ही नहीं मिलतीं। शिक्षित और पढ़ी-लिखी बहनोंमें पुस्तकोंका ज्ञान होगा, काम करनेकी शक्ति होगी, परंतु ग्रामीण जीवनमें कैसे कैसे प्रश्न पैदा होते हैं, अुन्हें किस प्रकार हल करना चाहिये, अिस कार्यमें अवसर जो अकल्पित कठिनाअियां और खतरे खड़े हो जाते हैं, अुनका सामना कैसे किया जाय — अिन सब बातोंकी समझ और जानकारी नहीं होती। दूसरी ओर देहातकी स्त्रियां कामकी भूमिकासे परिचित हों और देहातमें किस किस तरहके प्रश्न खड़े होते हैं, यह जानती हों तो अुनमें अेक प्रकारकी सामान्य दृष्टि, अुचित पद्धति और अुसके लिअे जितना चाहिये अुतना विशाल ज्ञान नहीं होता। गांवोंकी स्त्रियां ज्यादातर निरक्षर होती हैं। दूसरी तरफ शहरोंमें स्वास्थ्य-विभागमें काम करनेवाली तालीम पाअी हुअी जो बहनें नर्सका काम करती हैं, अुन्हें अिस ढंगसे तालीम दी जाती है कि वे शहरी वातावरणमें ही अुपयोगी होती हैं। अिसलिअे गांवोंकी सेवा करनेकी अिच्छा

होते हुअे भी जो जरूरी तालीम और पद्धतिके अभावमें काम न कर सकती हों, अुन्हें तालीम देकर तैयार करना जरूरी जान पड़ा।

अिसलिअे ट्रस्टके निश्चित किये हुअे बालवाड़ी, पूर्व-बुनियादी शिक्षा, प्रौढ़-शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामसेवाके अन्य कुछ कार्योंके लिअे बहनोंको जरूरी तालीम देकर तैयार करनेके लिअे तय किया गया कि कस्तूरबा ट्रस्टकी पूंजीमें से काफी रकम खर्च की जाय। और अिस निश्चय पर अमल भी किया गया। स्वराज्य आनेके बाद और जनताका शासन स्थापित होनेके पश्चात् अिस चीजका महत्त्व अब ज्यादा बढ़ गया है। कारण, जनताकी सरकारसे यह आशा रखना अत्यधिक नहीं माना जायगा कि वह देहातके लोगोंकी जरूरतोंकी तरफ ज्यादा ध्यान दे। अिस समय सरकारी, गैरसरकारी और लोकल बोर्डोंकी संस्थाओंकी शिक्षा, स्वास्थ्य और सफाअी सम्बंधी योजनाअें अमलमें लानेके लिअे सही दृष्टिवाले, तालीम पाये हुअे मनुष्योंकी आवश्यकता बढ़ती ही जा रही है। ट्रस्ट अिस प्रकारके कार्यकर्ताओंको तालीम देकर तैयार करे तो कहा जायगा कि अुसने बहुत बड़ा हेतु सिद्ध कर लिया।

१९४७ के मअी मासमें कार्य-समिति और अेजेण्टोंकी बैठकमें सभी कार्यकर्ताओंको विशेष विषयोंमें तालीम देनेके विचारका खूब स्वागत हुआ और अुसकी अच्छी कद्र हुअी। अिसलिअे अिसके बादकी दिसंबर मासमें हुअी बैठकमें यह निश्चय किया गया कि सब बहनोंके लिअे अेक वर्षकी प्रारंभिक तैयारीकी तालीम लाजिमी रखी जाय और यह तालीम पूरी करनेके बाद ही अुन्हें निम्नलिखित विशेष विषयोंकी तालीम लेनेके लिअे भेजा जाय:

१. ग्रामसेवा, बालवाड़ी, वस्त्रविद्या, बाल-कल्याण, गोपालन और सहकारी प्रवृत्ति।

२. बुनियादी शिक्षा।

३. ग्राम-अुद्योग — बुनाअी विद्या, कागज बनानेका काम, गोसेवा और गृह-अुद्योग वगैरा।

४. दाअीका काम और शुश्रूषा (नर्सिंग)।

कस्तूरबा ट्रस्टके संचालकोंको देहातसे जिस किस्मकी बहनें चाहिये वैसी बहनें नहीं मिल सकीं, अिसीलिअे अुनके लिअे अुपरोक्त विशेष विषयोंकी तालीम देनेसे पहले अेक वर्षकी तैयारीका पाठ्यक्रम रखनेकी जरूरत पड़ी। साथ ही अनुभवसे यह मालूम होने पर कि बुनाअी-काम और वस्त्रविद्याका विषय पाठ्यक्रममें नियत किये गये समयमें कोअी भी ग्रामसेविका-विद्यालय पूरा नहीं कर सकता, अिन विद्याओंकी शिक्षा आगेके वर्षोंकी खास तालीममें रखना आवश्यक जान पड़ा।

अिसके अतिरिक्त कस्तूरबा ट्रस्टकी कार्य-समितिने ग्रामसेवा विद्यालयके साथ साथ विधवाओं, परित्यक्ताओं और अिसी प्रकारकी अन्य बहनोंके लिअे सेविका आश्रमकी शालाअें जारी करनेका निश्चय किया। अिन आश्रमोंमें अुन्हें सिर्फ आश्रय मिले अितना ही नहीं, परन्तु वे स्वतंत्र रूपमें जीवन-निर्वाह कर सकें और साथ साथ समाज-सेवाके कार्यमें भी अुपयोगी हो सकें, अिसके लिअे जरूरी तालीम देनेका भी अिंतजाम किया गया है।

ग्रामसेविका बहनें देहातमें जाकर बालकोंको बुनियादी शिक्षा अच्छी तरह दे सकें, अिसके लिअे सबसे पहले अुन्हींको तालीम देकर तैयार किया जाता है। अिन बहनोंको तालीम देनेका काम हिन्दुस्तानी तालीमी संघने स्वीकार किया है।

अिसी तरह कस्तूरबा ट्रस्टके स्वास्थ्य-सलाहकार-मंडलने अलग अलग तरहके पाठ्यक्रम तैयार किये हैं, जिनमें से मुख्य अिस प्रकार हैं:

१. प्रारंभिक देखभाल और गृह-शुश्रूषा (Home Nursing)। यह तीन महीनेका अभ्यासक्रम है।

२. देहातमें प्रसूतिकार्यमें सहायता देनेके लिअे दाअियां। यह डेढ़ सालका पाठ्यक्रम है।

३. ग्रामसेविकाअें (Village Nurses)। यह अढ़ाअी वर्षका पाठ्यक्रम है।

देहातकी जरूरतोंको ध्यानमें रखकर ये पाठ्यक्रम बनाये गये हैं। तालीम लेना चाहनेवाली सब बहनोंके लिअे प्रारंभिक देखभाल और गृह-शुश्रूषाका तीन मासका पाठ्यक्रम अनिवार्य रखा गया है।

कस्तूरबा ट्रस्टका संचालन करनेके लिअे २६ आदमियोंकी अेक संचालन समितिका निर्माण किया गया है। शुरूमें सरदार वल्लभभाअी पटेल अुसके अध्यक्ष और ठक्करबापा अुसके मंत्री थे। अिसके बाद १९५० में सरदारके अवसानके बाद वह स्थान स्वीकार करनेको बापासे बहुत अनुरोध और आग्रह किया गया। परन्तु बापाने अपनी जीर्ण देहावस्थाके कारण अिनकार करके यह स्थान संभालनेका श्री दादासाहब मावलंकरसे आग्रह किया। तदनुसार अिस समय श्री दादासाहब मावलंकर ट्रस्टका अध्यक्षपद संभाल रहे हैं। और बापाके अेक पुराने साथी कार्यकर्ता श्री श्यामलालजी तथा श्री सुशीला बहन पै अुसके मंत्रियोंका काम कर रहे हैं।

संस्थाकी कार्य-समितिकी देखरेख और मार्गदर्शनमें प्रान्तोंमें स्त्री-प्रतिनिधि अिस कार्यका संचालन कर रही हैं। काम नया होनेसे मुश्किलें बहुत

आती हैं। फिर भी बापाने शुरूके वर्षोंमें रातदिन काम करके जो भूमिका तैयार कर दी है, अुसके आधार पर काम हो रहा है। और जैसा कि ट्रस्टके वर्तमान मंत्री कहते हैं, अब तक अिस संस्था द्वारा जो काम हुआ है, अुसके परिणाम आशाजनक और संतोषकारक मालूम हुअे हैं।

१९४४ से १९५० तक बापाने अन्य कार्योंके साथ साथ कस्तूरबा ट्रस्टके मंत्रीके रूपमें काम किया। अिस संस्थाके विकासके लिअे, अुसकी शाखा-प्रशाखाअें खोलनेके लिअे और अिसके लिअे आवश्यक स्त्री-कार्यकर्ता ढूंढ़ कर अुन्हें काममें लगानेके लिअे बापाने सारे हिन्दुस्तानके बार बार प्रवास किये हैं। शाखाओंका निरीक्षण किया है। बहनोंको तैयार किया है। अुनके कामकी प्रशंसा करके अुनका अुत्साह बढ़ाया है। अिसकी साक्षी कस्तूरबा ट्रस्टमें काम करनेवाली अनेक शिक्षित बहनें दे सकती हैं। महाराष्ट्रमें काम करनेवाली बहन सत्यभामा कुलकर्णी या मध्यप्रान्तमें काम करनेवाली श्री ताराबहन मश्रूवाला या अुड़ीसामें काम करनेवाली बहन श्रीमती मालतीदेवी चौधरी वगैरा अनेक बहनोंके संपर्कमें रहकर अथवा पत्रव्यवहार द्वारा बापाने अुन्हें सतत प्रोत्साहन दिया है।

महाराष्ट्र प्रान्तमें कस्तूरबा ट्रस्टका काम करनेवाली बहन श्री सत्यभामा कुलकर्णीने १९४९ में सिद्धेवाड़ीके पास शराबकी भट्टीमें काम करनेवाले लोगोंके निवासस्थान पर निर्भयता पूर्वक जाकर वह काम रोकनेके लिअे जो कोशिश की थी, अुसके लिअे बापाने अुन्हें बधाअी देनेवाला नीचेका पत्र लिखा था। यह अुनकी अिस तरहकी कारगुजारीकी मिसाल हमारे सामने पेश करता है।

"प्रिय बहन सत्यभामा कुलकर्णी,

"पंढरपुरके पास सिद्धेवाड़ीके आपके कामके बारेमें प्रेमाबहन कंटकका लिखा हुआ अेक लेख मुझे पढ़कर सुनाया गया। अुसे सुनकर मुझे बहुत ही आनंद हुआ। जहां गैरकानूनी तौर पर लोग शराब बनाते हों, वहां अुनके अंधेरे निवासस्थानमें अकेले जाकर आपने सचमुच बड़ी बहादुरी दिखाअी है। खास तौर पर आपको वहां क्रूर और हिंसक लोगोंके विरुद्ध जूझना था। अैसे लोगोंकी अेकान्त गुफामें जाकर अिस प्रकारका काम करनेके लिअे आपको बधाअी। दूसरी बधाअी आपके पतिको जिन्होंने आपको अैसे छोटेसे गांवमें रहकर यह सेवाकार्य करनेकी अिजाजत दी।

". . . आप शराबके पापके विरुद्ध बापूके अहिंसक हथियारसे लड़ी हैं। मैं आशा रखता हूं कि आपके अिस दृष्टान्तका अनुकरण देशभरमें,

विशेषत: बिहार, तामिलनाड, दूरवर्ती आसाम, डरपोक गुजरात और पिछड़े हुअे राजस्थानमें भी होगा। आपको और आपके पतिको नमस्कार।

आपका
अ० वि० ठक्कर
मंत्री, कस्तूरबा ट्रस्ट"

कस्तूरबा ट्रस्टकी संस्थाको आगे बढ़ानेमें अनेक लोगोंने योग दिया है। परन्तु अिसमें बापा और अुनके साथियोंने जो काम किया है, वह लम्बे समय तक भुलाया नहीं जायगा।

३१

नोआखलीमें ठक्करबापा

वर्षोंसे गांधीजीके संपर्कमें रहनेके कारण और खास तौर पर यरवदाके अुपवासके बाद बापाको गांधीजीके प्रति और अुनके मानवसेवाके कामोंके प्रति बहुत ही ममता हो गअी थी। वह यहां तक थी कि देशके किसी भी नाजुक अवसर पर, खास तौर पर अगर वह मानवसेवासे सम्बंध रखता हो तो वे गांधीजीका साथ कभी न छोड़ते। कैसी भी असुविधा अुठानी पड़े, कितना भी कष्ट सहन करना पड़े, खतरा अुठाना पड़े और मुसीबतें बर्दाश्त करनी पड़ें, वे हमेशा गांधीजीके साथ ही रहनेका आग्रह रखते थे; और अुनके दु:खमें, कष्टमें हमेशा हिस्सेदार बनते थे।

नोआखलीके हत्याकांड और बहनों पर किये गये अत्याचारों, बलात्कारों, हत्या, लूट और आग लगाने वगैराके अमानुषिक कृत्योंने गांधीजीका हृदय जड़से हिला दिया था। परिणामस्वरूप जब अुन्होंने 'करेंगे या मरेंगे' का शान्ति स्थापनाका मंत्र लेकर नोआखली जानेका पक्का निश्चय किया तब बापाने भी अुनके साथ जानेकी अिच्छा प्रगट की।

गांधीजीका अिस अुम्रमें प्रवास करने और मुस्लिम लीगके जहरीले साम्प्रदायिक प्रचारसे अुन्मत्त बने हुअे लोगोंने जहां जोर-जुल्म, भय, आतंक, आग, लूट, हत्या, और बलात्कारका नरकसे भी भयंकर वातावरण फैला दिया था, अुस वैराग्निसे धधकते हुअे प्रदेशमें जानेका निश्चय अगर अेक प्रकारका साहस था तो ठक्करबापाके लिअे वह और भी बड़ा साहस था।

गांधीजीकी अुम्र अुस समय सतत्तर वर्षकी थी। बापाकी भी लगभग अुतनी ही थी। आम तौर पर अनेक प्रकारके नियम, सावधानी और सेवा-शुश्रूषाका क्रम बनाये रखकर गांधीजीने अपना स्वास्थ्य अच्छा रखा था। परन्तु वर्षों तक निर्दय होकर शरीरसे काम लेनेके कारण पिछले अेक-दो सालसे बापाका शरीर काफी गड़बड़ा गया था। अिसके सिवाय अुनकी आंखोंमें मोतियाबिन्दु आने लगा था और रातको किसीकी मददके बिना अकेले चल सकनेकी अुनकी हालत नहीं थी। फिर वहां कोअी अकालके सीधे राहत-कार्य या अैसे और कार्यके संचालनके लिअे तो जाना नहीं था, जिससे वहां किसी तरहकी निश्चित व्यवस्था हो। यह अंधेरेमें छलांग मारना था। वहां कैसी परिस्थितिका सामना करना पड़ेगा, अिसका स्वयं गांधीजीको भी पूरा खयाल नहीं था। अितने पर भी बापाका भीतरी अुत्साह अितना असीम था, गांधीजीके प्रति अुनका प्रेम और ममत्व अितने अटूट थे, नोआखलीकी घटनाअें अितनी करुण और भयानक थीं, वहांके पीड़ितों और बहनोंकी चीख अितनी तेज और मर्मभेदी थी कि बापा दिल्लीमें पैर सिकोड़कर बैठे नहीं रह सकते थे। गांधीजी जब अपने आपको कसौटी पर रख रहे हों, तब वे दिल्लीमें शान्तिसे कैसे बैठे रहें? अुन्होंने अपने दो साथियोंको लेकर गांधीजीके साथ नोआखली जानेका निश्चय किया, और अिसके लिअे अुनकी मंजूरी मांगी।

बापाकी अुम्र और तंदुरुस्तीको देखते हुअे दूसरे मौके पर गांधीजी शायद अुन्हें चलनेकी सलाह न देते, परन्तु यह प्रसंग अनोखा था। अहिंसाके प्रति रही अपनी श्रद्धाको कसौटी पर रखनेके लिअे वे तन-मन सर्वस्व अर्पण करनेको तैयार हो गये थे। अितना ही नहीं, अुनके जो प्रियजन थे — वर्षों तक अुनके प्रति श्रद्धा रखकर अुनके कदमों पर चले थे, अुन सब साथियोंको भी गांधीजी नोआखलीके 'करेंगे या मरेंगे' के यज्ञमें होमनेको तैयार हो गये थे। अिसमें अुम्र, जातपांत, स्वास्थ्य, किसी भी बातका अुन्होंने खयाल नहीं किया था। अिसीलिअे तो गांधीजीकी अिस यात्रामें पुरुषोंके साथ स्त्रियां थीं, कुमारिकाअें थीं और कच्ची अुम्रकी फूल जैसी बालिकाअें भी थीं। बापा भले ही वृद्ध थे, आंखोंकी रोशनी चली जानेसे थोड़े अपंग बन गये थे, फिर भी वे सत्यका तेज प्रगट करनेवाले विलक्षण सत्याग्रही पुरुष थे। गांधीजी अैसे ही कुछ बत्तीस लक्षणोंवाले पुरुषोंको — स्वयं अपनेको भी होम कर नोआखलीकी भीषण ज्वाला बुझाना चाहते थे। अिसलिअे अुन्होंने बापाके प्रस्तावका स्वागत किया और नोआखलीके यज्ञमें अपने साथीके तौर पर अुन्हें चलनेकी अिजाजत दे दी।

२८ नवम्बर, १९४६ को सबेरे गांधीजी रेलगाड़ी पर दिल्लीसे रवाना हुओ, तब अुनकी टोलीमें श्री प्यारेलालजी, श्री सुशीला नय्यर, श्री सुशीला पै, श्री आभा गांधी, श्री कनु गांधी वगैरा बहुत लोग थे। बापा भी अपने अेक-दो साथियोंको लेकर अुनके साथ गये। गांधीजी कलकत्तेमें अेक सप्ताह रहे। अुस सारी मंडलीके साथ ता० ६ को विशेष ट्रेनसे गोआलंदो गये। वहांसे स्टीम लांचमें चांदपुर और वहांसे फिर रेलगाड़ीमें बैठकर नोआखली जिलेके प्रथम केन्द्र चौमुहानीमें पहुंचे। अुस समय सतीशबाबूका दल अुनके साथ था। सरकारकी तरफसे मुस्लिम लीगके चार सदस्य भी साथ थे और बापा तथा अुनके साथी भी गांधीजीकी मंडलीके साथ ही थे।

चौमुहानीमें नोआखलीके भीषण हत्याकांडके बहुतसे समाचार अुन्हें मिले। वहां अनेक प्रकारके लोग गांधीजीसे मिलने आते और अपने अपने प्रदेशकी, गांवकी और कुटुम्बकी बातें कहते थे। श्रीमती सुचेता कृपालानी भी अुनसे अिस गांवमें आकर मिलीं और दत्तापाड़ा तथा आसपासके अिलाकेके ब्यौरेसे गांधीजीको परिचित किया। १० तारीखको वे गांधीजीको दत्तापाड़ा ले गअीं। वहां वे कअी दिनसे छावनी डालकर बैठी हुअी थीं। गांधीजी वहां पांच छः दिन ठहरे और दत्तापाड़ा, नंदीग्राम तथा आसपासके बहुतसे गांवोंमें घूमे। गांवोंमें हुअी खानाखराबी, जले हुअे घर, टूटी हुअी सड़कें और लुटे हुअे मनुष्य प्रत्यक्ष अुन्होंने देखे; लोगोंके मुखसे अुनकी दुःखभरी कहानियां सुनीं और अुन्हें आश्वासन और सहायता देकर निर्भय बननेका संदेश दिया।

अिन सब प्रवासोंमें बापा बापूकी छायाकी तरह ही अुनके साथ रहते थे। बापू पैदल जाते तो वे भी पैदल जाते। बापू जब दिनके भागमें अनेक मुलाकातियोंको मुलाकातें देनेमें और दूसरे कामोंमें लगे रहते, तब बापा भी अपना नियत कार्य करनेमें लग जाते। देहातमें वे नये नये आदमियोंसे मिलते, अुनकी बातें सहानुभूति और प्रेमसे सुनते और हत्याकांडके ब्यौरे अिकट्ठे करते। बंगाल सरकार, भारत सरकार, हरिजन-सेवक-संघ वगैराके साथ पत्रव्यवहार तो अुनका जारी ही रहता।

बापा जो भी काम अपने हिस्से आता अुसे पूरी कर्तव्य-बुद्धिसे पूरा करते और गांधीजीका बोझा कैसे हल्का हो, यह देखनेकी कोशिश करते। सुबह-शाम प्रार्थना होती अुस समय भी वे गांधीजीके पास ही बैठते। प्रार्थनाके बाद गांधीजीका प्रवचन होता, अुसका अेक अेक शब्द ध्यानसे सुनते और दिलमें अुतारनेका प्रयत्न करते। संध्याका वह दृश्य अनुपम होता था। चारों ओर जहां हिंसा, आग, वैरभाव और लूटमारका वातावरण फैल

गया था, वहां ये दो बुजुर्ग अहिंसा, प्रेम, करुणा और निर्भयता द्वारा जले-भुने वातावरणमें शीतलता और शान्ति फैलाते थे।

१५ तारीखको गांधीजी काजिरखिल पहुंचे। अेक दिन वहां बंगाल सरकारके लीगी मंत्री जनाब शम्सुद्दीन, जनाब हसन सुहरावर्दी तथा दूसरे सरकारी अफसर गांधीजीसे मिलने आये। अुनके साथ शान्ति समिति स्थापित करनेके मामलेमें चर्चा हुअी, परन्तु अुसका कोअी परिणाम नहीं निकला। अिसलिअे गांधीजीने अेक नया कदम अुठाया। अुन्होंने काजिरखिलकी छावनी तोड़ डाली और छावनीके सब साथियोंको अलग अलग गांवमें जाकर अकेले बैठनेकी आज्ञा दी। अपने लिअे भी अुन्होंने अेक गांव चुन लिया और वहां अकेले रहनेका निश्चय किया।

अुस समय गांधीजीके साथ श्री कनुगांधी, श्री आभागांधी, श्री प्यारेलाल, डॉ० सुशीला नय्यर, श्रीमती सुशीला पै, श्री प्रभुदास तथा श्री विट्ठलदास रेडियोवाला थे। अिन सबका साथ अुन्होंने छोड़ दिया और अपने साथ केवल परशुराम स्टेनोग्राफर और बंगलाका अनुवाद करके लोगोंको समझानेके लिअे प्राध्यापक निर्मलकुमार बसुको रखा।

अुस दिन बापाने बापूके साथ बहुत बहस की। खास तौर पर बहनोंको अकेली रखनेके विरुद्ध अुन्होंने अेतराज अुठाया। आभा गांधीकी युवावस्थाका निर्देश करके कहा कि अैसी बहनोंको देहातमें अकेली रखना बड़े खतरेका काम होगा। और किसीको नहीं तो कमसे कम अिन सब बहनोंको साथ ले जानेके लिअे गांधीजीको बहुत समझाया परन्तु गांधीजी जरा भी न पिघले। वे अहिंसाकी बहुत अूंची भूमिकासे सारे प्रश्नको देख रहे थे। अुन्होंने बापाको अिस आशयका जवाब दिया:

"आपको तो आभाकी चिन्ता हो रही होगी, परन्तु मुझे अिस प्रदेशके अरक्षित गांवोंमें रहनेवाली सैकड़ों और हजारों बहनोंके सवालकी चिन्ता हो रही है। अुन सबकी रक्षाका क्या होगा? हम जब दूसरी बहनोंको निर्भय बननेका अुपदेश देते हैं और जोर देकर कहते हैं कि वे निर्भय बनकर अपने आपको अधिक सुरक्षित रख सकेंगी, तब हमें भी अुनकी स्थितिमें रह कर अपने आपको कसौटी पर चढ़ाना होगा।"

बापा गांधीजीका दृष्टिकोण समझते थे और अुसकी कद्र भी कर सकते थे, अिसलिअे अुनसे बहस करनेकी तो बात ही नहीं थी। फिर भी अहिंसाकी अितनी अूंची भूमिकासे प्रयोग करनेके लिअे बहनोंको, और खास तौर पर जवान अुम्रकी स्त्रियोंको, अुन दिनोंमें और अुस परिस्थितिमें

अकेली रखनेका खतरा अुठाने देनेको वे तैयार नहीं थे। अुनकी विचार-सरणी कुछ अिस प्रकारकी थी: 'बापू तो समर्थ पुरुष ठहरे। वे अूंची भूमिकासे विचार कर सकते हैं और व्यवहार भी कर सकते हैं। पर हम तो अिस दुनियाके मामूली आदमी हैं; हम अपनी शक्तिके अनुसार ही कदम अुठायें।' वे सोचते थे, देहातमें जवान अुम्रकी बहनोंको अकेली रख दें और समय पाकर गुंडे न करनेका काम कर बैठें तो? बहनोंको वे मार डालें, अिससे बापा जरा भी नहीं घबराते थे। परंतु गुंडों द्वारा अुन पर अत्याचार होने अथवा अुन्हें जबरन् अुठा ले जाकर अुन पर न करने लायक जुल्म गुजारनेका अुन्हें पूरा डर था। अिसलिअे वे गांधीजीकी बातसे पूरे सहमत नहीं हुअे। और काफी चर्चा और अनुनय-विनयके बाद आभा गांधी और अैसी ही दूसरी बहनोंको गांधीजीके पास नहीं तो अपने पास रखनेमें गांधीजीकी अनुमति प्राप्त कर सके। परिणामस्वरूप बापा श्रीमती मालती चौधरी, आभा गांधी और अन्य बहनोंको अपने चुने हुअे केन्द्रमें साथ ले गये।

गांधीजीने काजिरखिलकी छावनी बिखेर कर हरअेकको अपना-अपना कार्यक्षेत्र चुन लेनेकी सूचना दी, तब बापाने नोआखली जिलेका चर प्रदेश पसन्द किया। क्योंकि अिस अिलाकेमें हरिजनोंकी संख्या बहुत बड़ी थी। अथवा यों कह लीजिये कि आबादीका बहुत बड़ा भाग नामशूद्र हरिजनोंका ही था। अिस प्रदेशमें जुल्म भी भयंकर किया गया था और अुसके ज्यादा शिकार ये बेचारे हरिजन ही हुअे थे। वह भयंकर जुल्म कैसा था, यह घटनाओंके तुरंत बाद ही संकटग्रस्त प्रदेशमें घूमकर स्वयं ही निरीक्षण करके आये हुअे आचार्य कृपालानीके शब्दोंमें देखिये:

"चरहाम गांव और अुसके आसपासके अिलाकेमें लगभग २०,००० नामशूद्र (हरिजनोंकी अेक जातिविशेष) रहते हैं। अिस सारे गांवको नष्ट कर दिया गया था। वहांके अधिकांश घर जला दिये गये थे। लोग जले हुअे घरोंके काठ-कबाड़े और टूटे-फूटे सामानसे बनाये हुअे मंडपों और छप्परोंके नीचे रह रहे थे। अुनका माल-असबाब पूरी तरह लूट लिया गया था। हमलावर नकद रुपया, गहने, कपड़े, बर्तन-भांडे और ढोर-डंगर, जो भी हाथ लगा, सब लूट कर ले गये थे और घरमें कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा था। घरके पुरुषों और स्त्रियों पर केवल पहने हुअे कपड़े ही छोड़े थे। अुनके शरीरके कपड़ोंके सिवाय लुटेरोंने और कुछ बाकी नहीं रहने दिया था। अुनके पास खानेको अन्न नहीं था। अुनकी स्थिति अत्यंत दयाजनक थी। यहां हत्याकी घटनाअें भी हुअी थीं। परंतु हमारे पास जो समय था अुतने थोड़े समयमें

हत्याओंका आंकड़ा निश्चित करना संभव नहीं था। अपहरणकी घटनाअें होनेकी बात हमें कही गअी थी। लूटखसोट करनेके बाद और घरोंको आग लगानेके बाद कुटुम्बके तमाम आदमियोंको जबरन् मुसलमान बनाया गया था और अुनसे नमाज और कलमा पढ़वाया गया था। अुनमें से कुछको लुंगी और सफेद टोपी (जैसी अुधरके मुसलमान पहनते हैं) दी गअी थी। अुनके हिन्दू नाम बदलकर मुसलमान नाम रखे गये थे। घरोंमें रखी हुअी भगवानकी सब मूर्तियां तोड़ डाली गअी थीं और मंदिरोंमें लूटपाट मचाकर अुन्हें नष्ट कर दिया गया था। स्त्रियोंकी सौभाग्यकी शंखचूड़ियां तोड़ डाली गअी थीं और माथेकी मांगका सिंदूर मिटा दिया गया था।"

जहां अैसी भयंकर परिस्थिति फैली हुअी थी, अुस चरमंडलमें जाने और वहांके निराधार और दुःखी बने हुअे नामशूद्रोंके बीच बसनेका बापाने निर्णय किया। अुनके अिस चुनावके बारेमें गांधीजी अपनी दूसरी पैदल यात्राके समय जब हेमचर गये तब प्रार्थना-सभामें यों बोले थे:

"जिस तरह वृक्ष और लतायें स्वाभाविक प्रेरणासे सूर्यकी ओर मुंह फेर लेती हैं अुसी तरह बापाने भी अिस प्रदेशको स्वयंस्फूर्तिसे प्रेरित होकर अपने कार्यक्षेत्रके रूपमें पसन्द कर लिया है।"

२० तारीखको ११ बजे बापू नौकामें बैठ गये। सबने अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे बापूको बिदा दी। कितनी ही बहनें रो पड़ीं। आभा देवी वगैरा भी खूब रोअीं। अुसके बाद दोपहरको अेक बजे बापा भी अपने नियत किये हुअे स्थान पर जानेको निकल पड़े। अिस संबंधका कार्यक्रम पहलेसे ही तैयार हो चुका था। साथमें अरुणांशु डे, आभा गांधी, मनोज फोटोग्राफर तथा लक्ष्मीपुरके सुधामय घोष थे। रास्तेमें रामपुर होकर देवीपुर गये। वहां रायबहादुर प्यारेलालजी नामक अेक जमींदारने अपनी माताको गुंडोंके हाथोंमें पड़नेसे बचानेके लिअे अपने ही हाथों अुन्हें गोली मार कर बादमें खुद भी गोली खाकर किस प्रकार आत्महत्या की, अिसका रोमांचक किस्सा सुना। अिसी प्रकार रायपुरके दारोगाके, जिसे जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था, मुंहसे नवद्वीप पंडित नामक अेक व्यापारीको रस्सीसे बांधकर औंधा लटका कर तथा अुसके हाथ-पैर वगैरा अेक अेक अवयव काटकर अुसे कैसी क्रूरतासे मार डाला गया, यह बात भी सुनी। वहांसे बापा और अुनकी मंडली दलालबाजार पहुंची। वहां अेक बड़े जमींदारका राजहमल जैसा आलीशान मकान विध्वस्त हालतमें देखकर बापाको गुंडोंकी विध्वंसलीलाकी कल्पना हुअी। अिस प्रकार घूमते-घूमते और अलग अलग गांवोंमें गुंडों द्वारा की हुअी खानाखराबी देखते देखते बापा अन्तमें अपने चुने हुअे चरमंडलमें जा पहुंचे।

चरमंडल चरप्रदेशका ही अेक गांव है। सारा अिलाका तीस मील लंबा और छः सात मील चौड़ा है। वह मेघना नदीके पूर्वी किनारे पर स्थित लक्ष्मीपुर थानेसे शुरू होकर त्रिपुरा जिलेके चांदपुर थाने तक फैला हुआ है। अिस सारे प्रदेशमें सब नामशूद्र ही रहते हैं। अन्य जातियोंके लोगोंकी संख्या तो नहींके बराबर है। चरमंडलमें नभ, पटणी और दास जातियां भी हैं।

बापाने चरमंडल जाकर देखा तो अुन्हें विश्वास हो गया कि आचार्य कृपालानीने अिस प्रदेशके बारेमें जो विवरण दिया था वह अक्षरशः सच था।

चरमंडलमें सभी लोगोंको भ्रष्ट कर दिया गया था और सबको मार मारकर बलात् मुसलमान बना लिया गया था। यहां भी स्त्रियोंके हाथोंकी सौभाग्यकी शंखचूड़ियां तोड़ डाली गअी थीं और मांगका सिंदूर पैरोंके जूतोंसे मिटा दिया गया था। स्त्रियों पर अत्याचार भी किया गया था। खुद चरमंडलमें दो आदमियोंको जानसे मार डाला गया था। अुनके हरि-मंदिरोंको नष्ट कर दिया गया था। अुनके मकानोंको आग लगाकर जला दिया गया था। लोग भयसे अितने डर गये थे कि भजन-कीर्तन करना भी अुन्होंने छोड़ दिया था। पुरुषोंको लुंगी पहना दी गअी थी और अुनके नाम भी बदल डाले गये थे।

यह सब अवस्था बापाने अपनी आंखों देखकर सब ब्यौरे अिकट्ठे करके अिस संबंधमें दो पत्र अखबारोंमें छापनेके लिअे भेजे। वे पत्र लंबे होनेसे पूरे तो नहीं छपे, परंतु अुनका थोड़ा बहुत अंश जरूर छपा।

अिन पत्रोंमें नोआखली काण्ड शुरू होनेके बाद चरमंडलके लोगोंकी क्या हालत हुअी, मुसलमानोंने कैसा अत्याचार किया, अफसरोंने कैसी अुपेक्षा की और ठोस तथ्य तथा ब्यौरे पेश करने पर भी कुछ शरारती तत्त्वोंके विरुद्ध कैसे जानबूझकर कार्रवाअी नहीं की, अित्यादि हकीकतें प्रगट की गअी थीं और सरकारकी नीतिकी आलोचना की गअी थी। चरमंडल पहुंचते ही बापाने तेजीसे कार्यारंभ कर दिया। अुन्होंने सबसे पहले तो वहांके घरोंको आग और लूटपाटके कारण जो भी नुकसान हुआ था अुसके ब्यौरे, तथ्य और आंकड़े अिकट्ठे करने और मुस्लिम गुंडागिरीके शिकार बने हुअे लोगोंकी करुण कथाओंके बयान लेनेका काम हाथमें लिया। शुरूमें गुंडोंके डरके मारे कोअी बयान देने नहीं आया। किसीको अिस संबंधमें प्रश्न पूछा जाता तो वह जवाब भी नहीं देता था। परंतु धीरे धीरे बापाने अुन लोगोंको हिम्मत बंधाअी, विश्वास दिलाया और प्रार्थनाके बादके प्रवचनोंमें मनसे डर निकाल डालनेका अुपदेश दिया। अिससे वातावरणमें बड़ा फर्क पड़ा और बहुत

लोग बयान लिखवानेको सामने आ गये। लगभग चालीस कैफियतें तो लोगोंने शुरूके अेक-दो दिनमें ही दे दीं।

अिन सब कैफियतोंके ब्यौरे सुनकर बापाको बड़ा आघात लगा। अैसे अमानुषी काम करनेवाले मुसलमान गुंडों पर अुनका पुण्यप्रकोप भड़क अुठा। शामको रोज प्रार्थनाके बाद गांधीजीकी तरह बापा भी प्रवचन करते, तब अिन निर्दोष लोगों पर असह्य जुल्म गुजारनेके लिअे खुले तौर पर ही वे गुंडों पर फटकार बरसाते, और अुसमें न किसीके प्रभावमें बहते और न किसीका डर रखते।

टुकुमियां नामक अिस प्रदेशका अेक नामी गुण्डा था। अुसने हिन्दू जाति पर और खास तौर पर नामशूद्रोंकी बिलकुल गरीब और दबी हुअी जाति पर खूब जुल्म और अत्याचार किये थे। अुसके हाथों हत्याअें भी हुअी थीं। बापाके पास अुसके बारेमें जो तथ्य आये थे अुन परसे अुन्होंने प्रार्थना-प्रवचनमें अुसे खूब आड़े हाथों लिया और फटकारा। यह सब बात टुकुमियांके कानों पर पड़ी। अिसलिअे अुसने अेक दिन संध्याके समय बापाको किसी आदमीके द्वारा कहलवाया कि, 'यह बुड्ढा मेरे जैसेकी आलोचना करता है, परंतु मैं दो तीन दिनमें ही अुसका सिर धड़से अलग कर दूंगा।'

अिस बातकी खबर बापाकी छावनीमें लगी, तो सब चिन्तामें पड़ गये। क्योंकि वे सब टुकुमियांकी अकड़, वैरवृत्ति और निर्दयताको अच्छी तरह जानते थे। छावनीके कितने ही भाअी-बहनोंको लगा कि किसी समय बापा बेचारे बाहर बांसवनमें टट्टी जायं अथवा कदलीवनमें घूमने जायं, तब वह आदमी आकर बापाकी हत्या कर दे तो क्या होगा। परंतु बापाको तो अिसका लेशमात्र भी डर नहीं था। बापाके पास जब यह बात आअी तो अुन्होंने अुसी दिन प्रार्थना-सभामें खुले तौर पर टुकुमियांसे कहलवाया कि, 'अच्छी बात है; टुकुमियांको मेरा सिर धड़से अलग करना है न? तो भले ही आये। मेरे पास अिन दो खाली हाथोंके सिवाय कुछ नहीं है। खुशीसे आये और साहस दिखाये।' अिस खुली चुनौतीके बाद दो तीन दिन बीत गये, परंतु टुकुमियां अुधर फटका तक नहीं।

अिस टुकुमियांके अत्याचारों और जुल्मों संबंधी ढेरों ब्यौरे अिकट्ठे करके बापाने वहांके अधिकारियोंको पत्र भेजे और यह राय देकर कि अैसे भयंकर मनुष्यको आजाद नहीं रखना चाहिये अुसे गिरफ्तार करने और अुसके खिलाफ सख्त कार्रवाअी करनेकी सिफ़ारिश की। परंतु स्थानीय अधिकारियोंने बापाकी अिन तहरीरों पर विशेष ध्यान नहीं दिया और

अन्त तक टुकुमियांको नहीं पकड़ा। क्योंकि अधिकांश अधिकारियोंके हाथ टुकुमियांने रुपयेसे बांध दिये थे।

चरमंडलमें बापा दस दिन रहे। अिस अर्सेमें बापाने सुबह जल्दी अुठकर रातको देर तक जागकर खूब काम किया। अेक ओर बापा लोगोंके बयान अिकट्ठे करके और सरकारी अफसरोंसे सम्पर्क रखकर अुनसे न्याय प्राप्त करनेकी कोशिश करते थे; दूसरी तरफ महात्माजीको अिस बारेमें रत्ती-रत्ती जानकारी देकर पूरे परिचित रखते थे; तीसरी ओर स्थानीय गांवोंमें सहायता-कार्य शुरू करते और मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी तथा अिसी तरहकी दूसरी परोपकारी संस्थाओंसे कपड़े, दवाअें, अन्य चीजें वगैरा जुटाकर लुटे हुअे और निराधार बने हुअे नामशूद्रोंको पहुंचाते; चौथी तरफ सहायता-कार्य संबंधी व्यवस्था करते, अलग अलग स्वयंसेवकोंको काम बांटते तथा पुराने, अनुभवी और निडर कार्यकर्ताओंको नोआखली संबंधी परिस्थिति प्रगट करनेवाले पत्र लिखकर अुन्हें सहायता-कार्यके लिअे बुलाते।

चरमंडलमें अुन्होंने मारवाड़ी रिलीफ सोसायटीके लक्ष्मीपुर नामक केन्द्रसे बोरियां, कपड़े और दूसरी चीजें मंगवाकर वहांके संकटग्रस्तोंमें बांटीं। अिसके अलावा, बनारससे पेटी भरकर पूजाका सामान, कुंकुमकी शीशियां वगैरा मंगाया। कलकत्ता और दूसरे स्थानोंसे बंगालकी स्त्रियोंके लिअे पहननेकी सौभाग्यकी शंखचूड़ियां मंगाअीं और यह सब अुन्होंने मुसलमानोंसे दबकर भयभीत बनी हुअी अुन स्त्रियोंको दीं, जिन्होंने गुंडोंके डरसे चूड़ियां पहनना और माथेमें सिंदूर लगाना बन्द कर दिया था। बापाने अुन्हें आश्वासन और साहस दिलाकर डर छोड़ देनेका अनुरोध किया। अिसके सिवाय, नामशूद्रोंके जिन जिन हरिमंदिरोंका नाश कर दिया गया था, अुन्हें रुपया देकर फिरसे बनवाया, अुन्हें झांझ, पखावज और वाद्य तथा पूजाका सामान दिया। अिससे भय तथा आतंकसे श्मशानवत् बनी हुअी भूमि फिर अीश्वरके नाम-कीर्तनसे गूंज अुठी।

वहां बापा लगभग दस दिन रहे। अिसके बाद वहांसे ३० तारीखको नावमें बैठकर गय्याचर गये। अुस समय नहरमें पानी भी थोड़ा था, अिसलिअे नाव खींचकर चलानेमें बड़ी मुश्किल हुअी। ग्यारह मीलका सफर करके शामको गय्याचर पहुंचे। वहां नियमानुसार शामकी प्रार्थना की और प्रार्थनाके बाद प्रवचन किया। गय्याचरमें पंद्रह मनुष्योंको जानसे मार डाला गया था और अुनके शव अुनके मकानोंके सामने ही खड्डे खोदकर गाड़ दिये गये थे। साथ ही गय्याचर और आसपासके गांवोंमें भी मुसलमानोंने हरिमंदिरोंको नष्ट किया था। बापाने वहां हरिमंदिर पुनर्रचना समिति स्थापित की और

अुसके द्वारा प्रत्येक गांवमें आर्थिक सहायता देकर हरिमंदिर बनवाये। अिसके सिवाय जिन लोगोंको जानसे मार डाला गया था, अुनकी विधवाओंको प्रति मास आर्थिक सहायता भिजवानेका प्रबंध किया, और अिसके पांच वर्ष तक जारी रहनेकी पक्की व्यवस्था कर दी। गय्याचरमें आकर बापाने अेक और सार्वजनिक वक्तव्य दिया। अुसमें चरमंडलमें मुसलमानोंके अुत्पातके कारण कितनी हानि हुअी थी, अिसके तथ्य और ब्यौरे आंकड़ों-सहित दिये। हेमचरमें काम करते करते अेक-दो बार बापाको हृदयरोगका दौरा भी हुआ था। बीचमें बीमार भी खूब हो गये। तब अुन्हें गांधीजीकी छावनीमें बुलवा लिया गया। जिस दिन वे नावमें बैठकर बापूकी छावनीमें पहुंचे, अुसी दिन अुन्हें १०४ से १०५ डिग्री तक तेज बुखार आया। वहां गांधीजीने बड़े ध्यानसे अुनकी सेवा-शुश्रूषा करवाअी, और अुन्हें अच्छा कर दिया। बापाका स्वास्थ्य सुधरनेके बाद अुन्हें जरूरी कामसे दिल्ली जाना पड़ा। वहां तंदुरुस्ती भी ठीक हो जायगी और काम भी निपट जायगा, अिस हिसाबसे बापाने अेक महीना ठहरनेका निश्चय किया। अिस प्रकार वे दिल्ली पहुंचे। अुस समय अुनके दिल्लीके मित्र और साथी कार्यकर्ता बापाका स्वास्थ्य देखकर चौंक अुठे थे। वे दुबारा नोआखली न जाकर दिल्लीमें ही आराम करने और स्वास्थ्य अच्छा कर लेनेको अुन्हें समझाते थे। जो कोअी अुन्हें अैसी सलाह देता अुसे बापा सुन लेते और हंसकर बात टाल देते। जब दिल्लीका अुनका काम पूरा हो गया, तब वे फिर नोआखली जानेकी तैयारी करने लगे।

यह खबर साथी कार्यकर्ताओंको लगी तो सब बड़ी चिन्तामें पड़ गये। परंतु बापाको कौन समझाये? अुन्हें आग्रह करके कौन रोके? अन्तमें यह बड़ा काम पंडित हृदयनाथ कुंजरूने अपने सिर लिया। अुन्होंने बापाके साथ अिस विषयकी रूबरू चर्चा करनेके बजाय अेक पत्र लिखकर नोआखली न जानेके लिअे अुनसे भावनापूर्ण अनुरोध किया। अुस पत्रमें अुन्होंने लिखा था:

"मेरे प्यारे बाबाजी,

"जबसे मैंने आपके मुंहसे यह बात सुनी कि आप १ फरवरीको नोआखली जानेवाले हैं, तबसे मेरे दुःखका पार नहीं रहा। ज्यों ज्यों मैं अिस बारेमें विचार करता हूं, त्यों त्यों मुझे अधिकाधिक महसूस होता है कि बाबाजी, आपके पास जो थोड़ी-बहुत शक्ति बच रही है, अुसे आप व्यर्थ खर्च करके अनावश्यक जोखिम अुठा रहे हैं।

"आपका स्वास्थ्य अभी पूरी तरह सुधरा नहीं है, और शरीरमें पूरी शक्ति भी नहीं आओी है। अितने ज्यादा दुबले और फीके मैंने पहले आपको सिर्फ अेक ही बार देखा है। नोआखलीमें आपके साथी अुत्तम काम कर रहे हैं। साथ ही वहां अैसा कोअी नया प्रश्न खड़ा नहीं हुआ, जिसमें आपकी मौजूदगीकी जरूरत हो। अिसके सिवाय अनुसूचित और अर्ध-अनुसूचित जातियोंके भविष्य पर विचार करनेके लिअे नियुक्त सलाहकार-समितिकी अुपसमितिकी बैठक फरवरीके तीसरे सप्ताहमें होनेकी संभावना है। मेरे विचारसे निकट भविष्यमें यह सबसे जरूरी काम है, जिसमें आपकी अुपस्थिति अनिवार्य है। आपके पास जो थोड़ीसी शक्ति बची है, मेरा अनुरोध है कि अुसे आप अिस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिअे संचित करके रखें। अिसलिअे आपके स्वास्थ्यके कारण ही नहीं, परंतु आपके सामने पड़े हुअे कामके कारण भी आपका थोड़े समय दिल्लीमें रहना जरूरी हो जाता है। अिसलिअे अभी तुरंत नोआखली जानेका विचार छोड़ देनेकी मैं आपसे प्रार्थना करता हूं। मुझे विश्वास है कि आप मेरी बात पर ध्यान देंगे और अधिक नहीं तो अेक-दो सप्ताह तक दिल्लीमें रहकर आराम करेंगे। आशा है अैसा करके ही आप देशका, हरिजनोंका और समाजका कल्याण कर सकेंगे।

आपका सच्चा मित्र
हृदयनाथ कुंजरू"

अैसा प्रेम और भावनापूर्ण पत्र और वह भी पंडित हृदयनाथ कुंजरू जैसे महान व्यक्तिसे मिलनेके बाद आम तौर पर अुनके अनुरोधको अस्वीकार करनेका साहस नहीं होता। परंतु बापा नोआखलीकी घटनाओंको साधारण नहीं मानते थे और अिसीलिअे पंडितजीके ममता और भावनापूर्ण अनुरोधको अस्वीकार करके अुन्होंने वापस नोआखली जानेका निश्चय किया और पंडितजीको अिस प्रकार अुत्तर दिया:

"मेरे प्यारे हरिजी,

"नअी दिल्लीसे २९ जनवरी, १९४७ को लिखे हुअे और रामशंकर द्वारा भेजे हुअे आपके प्रेमभरे पत्रके लिअे धन्यवाद। मेरी समझमें नहीं आ रहा है कि आपके अत्यन्त प्रेमपूर्ण पत्रका जवाब कैसे लिखा जाय। शायद रामशंकरने आपको बताया होगा कि अपने सदाके हठीले स्वभावके अनुसार मैंने आज रातको ही पूर्वी बंगालकी यात्रा पर रवाना होनेका निश्चय किया है।

"अिसके लिअे मेरे पास कारण अेक नहीं, अनेक हैं। पहली बात तो यह है कि मैंने वहां अपने सब मित्रोंको वचन दिया था कि मैं दिल्ली केवल अेक ही महीने (जनवरी) के लिअे जा रहा हूं और फरवरीके पहले सप्ताहमें लौटकर काम संभाल लूंगा। दूसरे, मैं वापस न जाअूं तो वहां मैं जिन जिन मित्रोंके साथ काम करता था और जो मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे, अुनके प्रति बेवफा ठहरूंगा। तीसरे, मुझे वहां जाते ही तुरंत तमाम रुपया चुका देना है और वहांकी बहुतसी जरूरतोंको पूरा कर देना है। चौथे, गांधीजी मेरे कार्यक्षेत्रमें १९ फरवरीको आनेवाले हैं और वहां रहकर आसपासके अिलाकेमें कोअी आठ दिन तक दौरा करनेवाले हैं। अुस समय मैं गैरहाजिर नहीं रह सकता।

"अिस कारण मुझे दिल्ली छोड़ना पड़ेगा और ७ फरवरीको वहां पहुंच ही जाना होगा। संविधान-सभाकी अनुसूचित जातियोंकी अुपसमितिकी बैठक कब होगी, यह मुझे मालूम नहीं। साथ ही अुस समितिके सदस्यके नाते मेरी नियुक्तिका पत्र भी मुझे नहीं मिला। परंतु मान लीजिये कि मेरी नियुक्ति हो गअी तो भी मैं अुस बैठकमें अुपस्थित रहनेको लगभग फरवरीके अन्तमें आ पहुंचूंगा। मैं समझता हूं कि यह कोअी बहुत देर नहीं कही जायगी।

"अिन सब बातोंको ध्यानमें रखकर मुझे आपको सूचित करना चाहिये कि मुझे वहां जाना ही होगा। मैं फरवरीके अन्तमें या अुसके आसपास किसी दिन यहां लौट आअूंगा। परंतु यह निश्चित है कि मुझे वहां जाना पड़ेगा। अिसमें अब अधिक देर करना व्यर्थ है। आप समझते हैं अुससे मेरी तबीयत अब बहुत ज्यादा अच्छी है। और अब तो मेरे साथ हमेशा अेक (और अिस बार दो) आदमी रहता है, अिसलिअे मुझे रास्तेमें किसी प्रकारकी अड़चन नहीं होगी।

"आशा है आपकी सलाह पर ध्यान न देनेके लिअे आप मुझे क्षमा करेंगे।

आपका सच्चा मित्र
अमृतलाल वि० ठक्कर"

अिस प्रकार बापा अपने निश्चयानुसार फिर नोआखली गये और वहां जाकर अुन्होंने अपना काम शुरू कर दिया। अुनकी अनुपस्थितिमें शचीन्द्रनाथ मित्रने, जिन्हें वे काम सौंप गये थे, बहुत ही अच्छे ढंगसे काम चलाया था। यह देखकर बापा अुन पर बहुत ही प्रसन्न हुअे और

अुनके बीच पिता-पुत्रका-सा संबंध स्थापित हो गया।' बापाके प्रति शचीनबाबूकी भी खूब प्रीति और भक्ति थी। वे कलकत्तामें रहकर यों तो कांग्रेसका काम करते थे, परंतु बापाने अुन्हें गांवोंमें जानेकी प्रेरणा दी थी और शचीनबाबूने अुनकी सलाहके मुताबिक काम करनेका निश्चय किया था। बापाने शचीनबाबूके साथ मिलकर यह तय किया था कि नोआखलीका काम पूरा होनेके बाद वे अपने प्रिय शिक्षा-क्षेत्रमें काम करें और खास तौर पर ग्राम प्रदेशमें काम करें। अैसा करनेसे पहले अेक वर्ष तक भारतका दौरा करके सारी शिक्षा-संस्थाओंको देख लें। अिसके लिअे बापा अुन्हें थोड़ी आर्थिक सुविधा कर दें। अिसके अनुसार कार्यक्रम भी बन गया था। मगर अुस पर अमल शुरू होनेसे पहले ही कलकत्तामें सितम्बर मासमें हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो गया। अुसमें दोनों जातियोंके लोगोंको बचाने और अुपद्रवको शान्त करनेकी कोशिश करते हुअे वे गुंडोंकी छुरियोंके शिकार होकर ३ सितम्बरको शहीद हो गये। वे जीते रहते तो बापाको अेक अुत्तम कोटिके साथी और अुत्तराधिकारी मिले होते। परंतु वे चले गये और साथमें बापाके मीठे संस्मरण ले गये।

पंद्रह दिन बाद गांधीजी नोआखली आनेवाले थे। अिसलिअे बापाने अुनके स्वागतकी तैयारियां शुरू कर दीं। अिसके अलावा सहायता कार्य तथा निर्वासितोंको आश्वासन और धीरज दिलानेका काम दुगुने जोशसे चालू कर दिया।

बापाने अपने नोआखली जिलेके निवासकालमें अितनी जीर्ण अवस्थामें भी चौदह चौदह घंटे या अुससे भी अधिक समय काम किया था। कामका प्रकार बदलता रहता, परंतु काम तो दिन भर चालू रहता। अुनके दिन कितने खचाखच कार्यक्रमसे भरे रहते थे, अिसका अंदाज अुनके अेक दिनके काम और डायरी पर नजर डालनेसे होता है।

बापा रोज सवेरे पांच बजे अुठते और अीश्वरका नाम लेकर प्रातःकर्मसे निपटकर साढ़े पांच बजे प्रार्थना करते। फिर काममें लग जाते। प्रार्थनाके बाद कामका बंटवारा कर देते; अुसमें गांधीजी अिस जिलेमें आनेवाले थे अिसलिअे अुनके वास्ते रास्ता बनवानेका काम, लकड़ियां लानेका काम, भोजन बनानेका काम, गांवमें झाड़ने-बुहारनेका काम, राशन तथा कपड़ा बांटनेका काम — अिस प्रकार अलग अलग कार्यकर्ताओंको अलग अलग काम सौंप देते थे। प्रत्येक आदमीको कुछ घंटे घर घर घूमकर जुल्मोंकी जांच और आंकड़े जुटानेका काम रहता था। यह काम लगभग दोपहर तक होता रहता। बापा भी किसी न किसी काममें लगे ही रहते। दोपहरको सबके

साथ भोजन करते। वहां निरामिषाहारी और मांसाहारी दो भोजनालय थे। बापा खुद पक्के हिन्दू होते हुअे भी बंगालियोंके लिअे मछलीकी चीजें बनतीं अुसका विरोध नहीं करते, बल्कि अुदारतासे बनने देते। दोपहरके बाद हरिजन-सेवक-संघ, कस्तूरबा ट्रस्ट, भील-सेवा-मंडल, आदिम जातियोंकी अन्य संस्थाओं तथा कार्यकर्ताओंके साथ अुनका विस्तृत पत्रव्यवहार होता था। अिसके सिवाय नोआखलीके प्रश्नोंके संबंधमें भी अुनका गवर्नरसे लगाकर वाअिसरॉय तक और जवाहरलालजी तथा सरदार पटेलके साथ पत्रव्यवहार होता रहता था। जहां जहांसे मदद मिलती, वहां वहां वे अमीरों, सेठों और संस्थाओंको पत्र लिखते तथा रुपया और कार्यकर्ता जुटानेका प्रयत्न करते। यह काम पूरा होते ही घर घर घूमने और बयान लेने तथा स्त्रियों और निराधार बने हुअे लोगोंको आश्वासन देनेका काम भी वे करते थे। शामको प्रार्थनाके समय तक यह काम होता रहता। प्रार्थनाके बाद प्रवचन करते। वे हिन्दीमें बोलते और शचीन्द्रनाथ मित्र नामक अेक बंगाली देशभक्त युवक अुसका बंगालीमें अनुवाद करते। रातके भोजनके बाद फिर वही पत्रव्यवहार और दूसरा काम जारी हो जाता। अिसके सिवाय स्वयंसेवकोंकी अलग प्रार्थना होती थी। अुस समय प्रत्येकसे कामका हिसाब लिया जाता था, और जिनका काम ठीक न होता अुन्हें अुलहना या आदेश दिया जाता था।

वहां बापा पर कामका बोझ बहुत रहता था, अिसलिअे वे पांच मिनट भी खराब नहीं करते थे। यह समझकर कि रोज हजामत बनानेमें कुछ मिनट बेकार जायेंगे, अुन्होंने नोआखलीमें रहे तब तक दाढ़ी बढ़ा ली थी। नोआखली छोड़नेके बाद ही अुन्होंने दाढ़ी बनवाअी।

अिस प्रकार नोआखलीमें जब सैकड़ों कुटुम्ब खतरेमें पड़े हुअे थे और नाजुक हालतमें दिन गुजार रहे थे, अुस समय बापा अुनके साथ रहकर अुनके दुःख और जोखिममें भाग लेकर अुनके लिअे खूब सहायक बन गये थे। नोआखलीमें गांधीजीने जो प्रयोग किया था वह क्रांतिकारी था, जब कि बापाने जो काम किया वह मानवताकी दृष्टिसे, परोपकारकी दृष्टिसे किया था। परंतु अुस कार्यका महत्त्व और अुपयोगिता जरा भी कम नहीं थी। अुससे सैकड़ों नहीं हजारों कुटुम्बोंको —— खास तौर पर स्त्रियों और बच्चोंको राहत मिली। अन्न, वस्त्र और आश्रय मिला और अुनकी अिज्जतकी रक्षा हुअी। नोआखलीका अुनका काम अितिहासमें स्वर्णाक्षरोंमें अंकित रहेगा।

३२

कुष्ठरोगियोंके सेवकोंकी परिषद्का अुद्घाटन

भील-सेवा और हरिजन-सेवाकी तरह ही बापाके जीवनकी अेक और भी महत्त्वाकांक्षा थी। और वह थी कोढ़ियों और रक्तपित्तवालोंकी सेवा करनेकी, अिसके लिअे संस्था स्थापित करनेकी तथा अिस प्रश्नका अध्ययन करके देशके जीवटवाले आदमियोंको अुसमें आमंत्रित करनेकी। बापा बचपनमें अिंजीनियरी विद्या पढ़कर अिंजीनियर बननेके बजाय डॉक्टर बने होते तो कुष्ठ-रोगियोंके लिअे अुन्होंने कभीका चिकित्सालय खोल दिया होता। परंतु अिस विषयमें वे अपनेको अज्ञान मानते थे। अिसलिअे जो कोअी यह काम करता, अुसे वे बड़े सम्मानकी दृष्टिसे देखते और अुसे भरसक प्रोत्साहन और सहायता देते। हरिजन-सेवक-संघके मंत्रीकी हैसियतसे जब अेक बार अुन्होंने अपने लम्बे दौरेमें मिशनरियों द्वारा चलनेवाला अेक कोढ़ियोंकी सेवा करनेवाला आश्रम देखा, तभीसे अुनका ध्यान देशके अिस प्रश्नकी तरफ आकर्षित हुआ था। अुसके बाद तो अुन्होंने अिस रोग, अुसकी चिकित्सा तथा अिस प्रश्नका समग्र रूपमें अध्ययन किया था। श्री टी० अेन० जगदीशन्‌को, जो दक्षिण भारतमें यह काम करते थे, अुन्होंने अनेक बार सहायता दी थी।

अुनकी अिन सब सेवाओंके परिणामस्वरूप और आदिवासियों तथा हरिजनोंकी सेवाके द्वारा प्राप्त हुअी राष्ट्रव्यापी ख्यातिके कारण १९४७ में वर्धामें जब कुष्ठरोग निवारण कार्य करनेवालोंकी परिषद् हुअी, तब परिषद्का अुद्घाटन अुन्हींके हाथों हुआ। अुस अवसर पर अुन्होंने जो भाषण दिया वह बताता है कि अिस प्रश्नके बारेमें अुनकी समझ और अध्ययन कितना गहरा था।

"अिस परिषद्का अुद्घाटन करनेका कार्य, जो मेरे मित्र जाजूजीने मुझे सौंपा है, करनेमें मुझे बहुत ही आनंद होता है। पहले-पहल जब मुझे श्री जाजूजीकी तरफसे तार मिला, तब मैं मनमें हिचकिचा रहा था। मेरे मनमें खयाल आता था कि कुष्ठ-रोगियोंकी सेवा-शुश्रूषा और देखभाल करनेवाला कोअी डॉक्टर ही यह काम करनेके लिअे अधिक योग्य होगा। अितने पर भी मैंने अिस परिषद्का अुद्घाटन करनेका काम जो स्वीकार किया है, वह अिस आशासे कि कुष्ठ-रोगियोंकी सेवा-शुश्रूषा द्वारा अुन्हें

राहत पहुंचानेका जो अुच्च कार्य है, अुसे मेरे यहां भाषण देनेसे नहीं, परंतु यहां पधारे हुअे विशाल जनसमूहसे और संबंधित सेवाभावी लोगोंसे वेग मिलेगा।

"सेवाके अिस विशेष क्षेत्रमें जिसे मैं अपना गुरु मानता हूं, अुस कुष्ठ-रोगियोंकी सेवा करनेवाले मिशनका मैं यहां आभार मानता हूं। यह मिशन ही दुनियाभरमें पिछले ७२ वर्षसे काम कर रहा है। पिछले २० वर्षसे मैं अुसके वार्षिक विवरण खूब प्रेम और प्रशंसाके साथ पढ़ता रहा हूं। अुस समयसे मैं अेक ही आशा रखता रहा हूं कि हमारे देशके लोग कब यह काम करने लगेंगे। वह दिन कब आयगा, अुसकी बाट देखता रहा हूं। वह दिन आ पहुंचा है, यह कहते आज मुझे हर्ष होता है। और आज मैं अिस मामलेमें पूरा संतोष अनुभव कर रहा हूं। भारत अब विदेशी जुअेसे मुक्त हो गया है और भले अथवा बुरेके लिअे खुद ही अपनी मर्जीके मुताबिक अपने प्रश्न हल करनेको वह पूरी तरह स्वतंत्र है। आपके जैसे अिस क्षेत्रमें लगे हुअे पुराने अनुभवी कार्यकर्ताओं और नये कार्यकर्ताओंकी मददसे यह काम अब अधिक अच्छे ढंगसे हो सकेगा। किसी भी प्रकारके विरोधके बिना मैं निःशंक होकर यह कह सकता हूं कि कुष्ठ-रोगियोंकी सेवा करनेके अुद्देश्यसे अेकत्रित यह सबसे पहली लोकप्रिय परिषद् है। यह परिषद् अैसी है, जहां निष्णात और साधारण लोग अिस प्रश्नका सर्वसामान्य हल निकालनेके लिअे अिकट्ठे हुअे हैं।

"अलबत्ता, यह काम मुख्यतः निष्णातोंका ही है। फिर भी मेरे जैसे साधारण मनुष्योंकी भी अिस काममें अधिक नहीं तो अुतनी ही जरूरत है। कारण, अिस रोगसे लोग प्लेगकी तरह ही चौंकते और अुससे दूर भागते हैं। कुष्ठ-रोगको वे बड़े तिरस्कारकी दृष्टिसे देखते हैं। बम्बअीके रास्तों और गलियोंमें घूमते समय कोढ़के रोगवाले भिखारी मुझे अक्सर नजर आते, तब मैं अुन पर ध्यान दिये बिना रह नहीं पाता था और बम्बअीके अुपनगर माटुंगामें स्थित अेक्वर्थ लेपर्स होम देखने जाता था।

"मुझे आशा है कि यह परिषद् अिसके बाद होनेवाली अैसी अनेक परिषदोंकी पुरोगामी बन जायगी। और जैसा मैंने कहा है, ये परिषदें केवल डॉक्टरोंकी नहीं, समाज-सेवकोंकी भी होनी चाहिये। अिस दृष्टिसे अिस समय हो रही यह परिषद् अद्वितीय है। अिन समाज-सेवकोंको और कार्यकर्ताओंको देशभरमें भ्रमण करके अिसका खूब प्रचार करना चाहिये और लोगोंको समझाना चाहिये कि यह रोग असाध्य नहीं है। दुर्भाग्यसे अिस समय सभी जगह यह सामान्य मान्यता फैली हुअी है कि यह रोग असाध्य है। अिस

खयालको प्रचार द्वारा और समझा-बुझाकर निर्मूल कर डालना चाहिये। साधारण लोग यह नहीं जानते कि अिस रोगके असरमें आये हुअे केवल २० फीसदी ही छूतके रोगवाले होते हैं और ८० प्रतिशत अुससे मुक्त होते हैं।

"अिसलिअे अिस मामलेमें मामूली आदमी भी बहुत कुछ कर सकते हैं और मेरे मित्र जगदीशन्‌की सेवाओंने दक्षिणमें अिस दिशामें काफी काम किया है। अिस रोगसे लोग अितने ज्यादा चौंकते हैं और अितने दूर भागते हैं कि जब कस्तूरबा ट्रस्टका मसौदा तैयार करते समय मैंने कुष्ठ-रोगी स्त्री-पुरुषोंकी सेवा करनेकी धारा अुसके कार्यक्रममें सम्मिलित की, तब किसी आदमीने डरके मारे आश्चर्यचकित होकर कहा : 'अरे, यह क्या! कस्तूरबा ट्रस्टमें कुष्ठ-रोगियोंकी सेवा-शुश्रूषाका समावेश!' मैंने कहा, 'हां। हमारी स्त्रियों और बालकोंको लगनवाली बीमारियोंमें यह भी अेक है। जैसा आपको मालूम है, सौभाग्यसे गांधीजीने अिस रोगकी देखभालके कामको अपने अठारह तरहके रचनात्मक कार्यक्रमका अेक अंग माना है। अिसलिअे मिशनकी तरफसे कुष्ठ-रोगियोंकी सहायता और राहत पहुंचानेके लिअे देशभरमें जो ७० के करीब सेवाकेन्द्र खुले हैं, अुनके अलावा अब छोटे छोटे दवाखाने और आश्रमगृह बड़ी संख्यामें खोले जायंगे।'

"कुष्ठरोगकी देखभालके लिअे दो प्रकारकी विचारधारा फैली हुअी हैं। अेक विचारधाराके अनुसार कुष्ठ-रोगियोंकी सेवा-शुश्रूषाके लिअे अैसे बड़े बड़े अस्पताल होने चाहियें, जिनमें ५०० से १,००० तक बीमार रखे जा सकें। दूसरी विचारधाराके अनुसार अिस रोगके निवारणके लिअे गांवोंमें फैले हुअे छोटे छोटे दवाखाने होने चाहियें। अिन दवाखानोंमें डॉक्टरों द्वारा रोगियोंका अिलाज हो। अिसके सिवाय अिन लोगों पर व्यक्तिगत ध्यान भी दिया जाय। अिस मामलेमें तो अिस रोगके निष्णात ही पक्का निर्णय कर सकते हैं। फिर भी यहां मैं जो अेक बात कहना चाहता हूं, वह यह है कि कुष्ठरोग क्षय जैसा शहरोंका रोग नहीं, परन्तु गांवोंका रोग है। वह हमारे देशके अुद्योगके कारखानोंमें पैदा नहीं होता। यह रोग शहरों और नगरोंकी अपेक्षा देहातमें ही अधिक पैदा होता है। अिसलिअे अुसकी देखभालकी व्यवस्था पुरुलिया जैसे शहरों और नगरोंमें नहीं, परन्तु गांवोंमें ही होनी चाहिये। पुरुलियाका दृष्टान्त मुझे मिशनके मंत्री मि० डोनाल्ड मिलर परसे, जो यहां अुपस्थित हैं, याद आया। पुरुलियामें कुष्ठरोगकी देखभालका बड़ा केन्द्र है। वहां लगभग १,००० कुष्ठरोगियोंकी चिकित्सा और देखभाल होती है। अिसके सिवाय, वहां

अेक और भी केन्द्र है। वहां अैसे २०० से ३०० बीमारोंकी चिकित्सा तथा देखभाल की जाती है। भारतको अिस समय सारे देशमें फैले हुअे छोटे छोटे अस्पतालोंकी जरूरत है। आशा है अिस मामलेमें अिस विषयके विशेषज्ञ ये अस्पताल कहां कहां बनाये जायं, अुन पर कितना खर्च किया जाय, अुनके मकान कच्चे बनाये जायं या पक्के, अुनके छप्पर घासके बनाये जायं या कवेलूके, अित्यादि मुद्दों पर हमें अधिक मार्गदर्शन देंगे और यह सारा प्रश्न हाथमें ले लेंगे।

"अन्तमें मैं अितना ही कहूंगा कि हमारी चर्चाओंके अन्तमें हम कुष्ठ-रोगियोंकी चिकित्सा और देखभाल करनेवाला मिशन जैसा या ब्रिटिश अेम्पायर लेप्रसी रिलीफ अेसोसियेशन जैसा स्वदेशी मंडल खड़ा कर सकें, तो माना जायगा कि हमने अिस दिशामें काफी काम कर लिया। अूपर बताअी हुअी दो संस्थाओंके बजाय यह नअी संस्था अधिक स्वदेशी और अधिक स्थानीय होनी चाहिये। फिर भले वह संस्था अूपरकी दो संस्थाओंकी मदद और अुनके मार्गदर्शनमें चले। अैसी संस्था किसी प्रकारकी ढिलाअी किये बिना यथासंभव जल्दीसे जल्दी स्थापित की जानी चाहिये। हमारी सरकार अिस बारेमें बहुत प्रगतिशील मालूम नहीं होती। आजसे बहुत समय पहले अुसे अिस दिशामें जो कदम अुठाने चाहिये थे, वे अुसने आज भी नहीं अुठाये हैं। मैं तो आगे बढ़कर यहां तक कहूंगा कि सरकार अिस बारेमें पिछड़ी हुअी है। वह पुरुलियाके कुष्ठरोगियोंके मिशनको या ब्रिटिश अेम्पायर लेप्रसी रिलीफ अेसोसियेशनको या अैसी दूसरी किसी संस्थाको केवल ग्रान्ट देकर संतोष मान ले यह ठीक नहीं। अुसे खुद ही यह कार्य अुत्साह और लगनसे समय रहते अपने हाथमें लेना चाहिये। अगर राज्य अितना काम करे तो देशकी सारी जनता भी अिसमें रस लेने लगे और हमारे समाजसे कुष्ठरोगका खात्मा करनेके अिस प्रयत्नमें लग जाय।

"अन्तमें मैं अितना कहूंगा कि अिस कार्यमें हमें कार्यकर्ताओंकी पूरी सेना चाहिये। कुष्ठरोगकी देखभालके छोटे छोटे केन्द्रोंमें काम करनेवाले मुख्य आदमी शक्तिशाली कार्यकर्ता नहीं होंगे, तब तक ये ग्रामकेन्द्र अुन्हें सौंपे हुअे काम पूरा नहीं कर सकेंगे। अिसीलिअे यह काम करनेवाले डॉक्टरों, वैद्यों और गैरडॉक्टर सेवकोंकी बड़ी जरूरत है। यह काम असलमें मूक सेवकोंका है। फिर भी मिशनरी भावनावाले साधारण मनुष्योंकी भी हमें खास जरूरत रहेगी। मैं आशा रखता हूं कि कुछ समय बाद जरूरत पड़ने पर अैसे सेवक हमें मिल जायेंगे।

"कुष्ठ-सेवकोंकी यह संस्था गैरसरकारी तत्त्वोंसे ही खड़ी होनी चाहिये। अलबत्ता, सरकार अिस कार्यमें हमें सहायता जरूर देगी, फिर भी हमें तो

कुष्ठरोगी मिशन अथवा ब्रिटिश अेम्पायर लेप्रसी रिलीफ अेसोसियेशनकी तरह अुसे गैरसरकारी ढंग पर ही चलाना पड़ेगा। मैं अिस परिषद्को खुली घोषित करता हूं। भगवान् करे अिस संस्थाका अैसा विकास हो कि जब तक अिस देशसे अिस रोगका पूरी तरह काला मुंह न हो जाय, तब तक अुसके निवारणके लिअे अैसी अनेक परिषदें की जायें।"

३३

दाहोदमें अंतिम आगमन

जब जीवनकी संध्याके अंतिम वर्ष बापा दिल्लीमें और हरिजन-सेवा तथा आदिम जातियोंकी सेवाके लिअे प्रवासमें बिता रहे थे, तब भी अुनका दिल दाहोदकी तरफ लगा हुआ था। अुन्हें लगता था कि मैं लगभग ८० वर्षके किनारे आ पहुंचा हूं। अिस पके हुअे पत्तेको झड़ते कोअी देर नहीं लगेगी। अैसा हो तो कुछ बेजा नहीं। अिसकी चिन्ता भी नहीं। अीश्वरको जिलाना होगा तब तक जिलायेगा। अुसका हुक्म होने पर चल पडूंगा। परन्तु चलनेसे पहले अेक बार दाहोद-झालोदको आखिरी तौर पर देख लूं। अुस सुखी किन्तु स्नेहार्द्र भूमिके अंतिम दर्शन कर लूं, जिन कार्यकर्ता भाअियोंके साथ जीवनके महा मूल्यवान बारह वर्ष बिताये हैं अुनसे मिल लूं, जिसके गांवों, खेतों और जंगल-पहाड़ोंकी अिन पैरोंसे अनेक बार यात्रा की है, अुस पंचमहालकी धरतीमाताको आखिरी बार नमस्कार कर लूं, जिन हजारों भील भाअियोंके साथ हृदयके तार मिला दिये हैं, अुनके लड़के-लड़कियोंसे अंतिम बार भेंट कर लूं। यह भावना अुनके दिलमें पैदा हुअी और अुससे प्रेरित होकर बापा दिल्लीसे चलकर १९४९ के सितंबरकी २३ तारीखकी शामको मेरठ अेक्सप्रेससे दाहोद पहुंच गये। स्टेशन पर भील-सेवा-मंडलके कार्यकर्ताओं, म्युनिसिपैलिटीके अध्यक्ष श्री पंड्याजी और अन्य सदस्यों तथा दाहोदके नगरजनों और विद्यार्थियोंने अुनका भावभीना स्वागत किया। स्टेशनसे वे मंडलमें पहुंचे और कन्या आश्रममें ठहरे। वहां आश्रमकी विद्यार्थिनियों और कार्यकर्ताओं वगैराके साथ शामकी प्रार्थना की।

दूसरे दिन सुबह सात बजे बापा झालोद पहुंचे। आश्रमकी मुलाकात ली। सारा आश्रम बार बार प्रेमपूर्ण दृष्टिसे देखा। घूमते घूमते वे रामजीके मंदिरके पास आ पहुंचे। वहां मंदिरके पीछेकी अलग अलग पत्थरोंकी सीढ़ियों पर पैर रखकर मंदिरकी छत पर चढ़नेका प्रयत्न किया। परन्तु

अिस अुम्रमें वे अैसा नहीं कर सकते थे। फिर भी अुनकी अिच्छा बड़ी बलवान थी। अिसलिअे कार्यकर्ताओंने सहारा देकर अुन्हें मंदिरकी छत पर चढ़ाया। वहां घूमकर अुन्होंने छत परसे आश्रमके मकान, खेत, पाठशाला, छात्रालय, गोशाला वगैरा पर ममताभरी टकटकी लगाअी और अुनकी आंखोंमें आंसू अुमड़ आये।

झालोदमें नगरजनों, ग्रामजनों और विद्यार्थियों तथा कार्यकर्ताओं वगैराकी सम्मिलित सभाको संबोधन करके अुन्होंने संक्षिप्त किन्तु बहुत ही मार्मिक और हृदयद्रावक भाषण दिया। अुसमें गांधीजीका अुल्लेख करते हुअे अुनका गला भर आया और बोलते बोलते रो पड़े। अुन्होंने कहा: "गांधी बापू चले गये। मैं भी थोड़े दिनका मेहमान हूं। परन्तु यहां जो काम हो रहा है, वह बापूजीका काम है, यह न भूलना। अब स्वराज्यकी रक्षाका काम हमारा है। देशमें भीलों जैसी और बहुत-सी जातियां हैं। अुनकी संख्या बहुत बड़ी है। संथाल, गोंड, जवांग हो, मुंडा और दूसरी अनेक जातियां आदिवासियोंमें हैं। मैं वहां जाता हूं। बिहारमें जाता हूं। अुड़ीसामें जाता हूं। वहां सबको आपका अुदाहरण देकर कहता हूं कि आप पंचमहालमें जैसा काम हो रहा है वैसा काम करें।

"गांधी बापू स्वराज्य दिलाकर चले गये। अुस स्वराज्यके बाद देशमें नवजागृति और नवचेतनाकी बाढ़ आ गअी है। अुसकी परछांअी तमाम आदिवासी जातियों पर भी पड़ी है। वे भी जाग्रत हुअी हैं। अिस समय प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य स्वार्थ-त्याग करना है। देशके लिअे सबको परमार्थका काम करना पड़ेगा। तभी हम स्वराज्यको कायम रख सकेंगे। समय अैसा नाजुक है कि अुत्साह दुगुना करके पेट पर पट्टी बांधकर काम करना पड़ेगा। गुजरातमें विलीन हुअे देशी राज्योंमें भी बहुत काम करना है। वहां शुरुआत तो हुअी है। परंतु अैसे आश्रम बड़ी संख्यामें हों तभी पिछड़ी हुअी जातियां आगे आ सकती हैं। अुनके सुखमें सुखी और दुःखमें दुःखी होनेकी भावना पैदा करनी पड़ेगी। अुनके सुखका हमें ध्यान रखना पड़ेगा।"

झालोदके अलावा वे संतरामपुर, बारिया वगैरा स्थानों पर भी गये थे। अुसके बाद २७ तारीखको सवेरे अुनके हाथों दाहोद म्युनिसिपैलिटीके हॉलका शिलान्यास हुआ था। अुस समय भाषण देते हुअे अुन्होंने कहा था:

"आज मुझे बुलाकर अिस हॉलका मेरे हाथों शिलान्यास करा रहे हैं, अिसके लिअे आप सबको धन्यवाद। मैं तो दाहोदको अपना घर समझता हूं, अिसलिअे मुझे निमंत्रणकी जरूरत नहीं हो सकती।

"अिस अवसर पर मुझे दाहोदके पुराने मित्र याद आते हैं। दाअुदभाअी सेठ, मगनलाल मनसुखलाल वगैरा हमारे बीचसे चले गये हैं। अिस संसारमें हम सबको भी अुसी रास्ते जाना है, अिसलिअे शोक करना वृथा है। हम तो अुनके गुण ही याद करें और अुनसे सेवाकी प्रेरणा प्राप्त करें। भील-सेवा-मंडलके कामके लिअे जब जब रुपयेकी तंगी होती, तब मैं अिन दोनों मित्रोंके पास जाता था। और अुन्होंने बहुत बार मेरी कठिनाअी दूर की थी।

"दाहोदमें हिन्दू-मुस्लिम प्रेम देखकर मैं खुश हुआ हूं। पिछले साल जब गोधरामें दंगा भड़क अुठा था, तब दाहोदमें पूर्ण शान्ति थी। यहां हिन्दू-मुस्लिम दंगेके छींटे नहीं अुड़े। यहां हिन्दू और मुसलमान भाअियोंने शान्ति कायम रखी, अिसके लिअे मैं अुन्हें बधाअी देता हूं। बहुतसे लोग अिसका श्रेय भील-सेवा-मंडलको देते हैं और अुसके कार्यकर्ताओंका आभार मानते हैं। परंतु असलमें तो हम सबको अीश्वरका आभार मानना चाहिये।

"आपके पास आनेसे पहले मैं भंगीवासमें गया था। हमारे मंत्री श्री तपासे सालभर पहले यहां आये थे। अुन्होंने हरिजनोंके रहनेके लिअे मकानोंकी योजना बनाअी थी। और अुन्हींके हाथों आपने पिछले वर्ष अुसकी नींव रखवाअी थी। परंतु अभी तक मुहल्लेमें अेक भी मकान खड़ा नहीं हुआ। अिसलिअे सब काम छोड़कर गरीबोंका यह महत्त्वपूर्ण काम पहले करनेका मैं म्युनिसिपैलिटीसे आग्रह करता हूं।"

भीलोंके बारेमें अुल्लेख करके अुन्होंने कहा कि, "पच्चीस वर्ष पहले भीलोंकी जो स्थिति थी अुसमें बड़ा परिवर्तन हो गया है। भीलोंमें प्रगति हुअी है। अुनमें बुद्धि आअी है। ज्ञानका दीपक जल गया है। अुन्हें अूपर अुठानेके लिअे हम परिश्रम करें। अगले दस वर्ष हमारे लिअे बड़े नाजुक हैं। हमें अपनी शक्ति दिखानी है। अिन दस वर्षोंके अर्सेमें भारतके तमाम आदिवासी लोगों और हरिजनों वगैराको देशके अन्य लोगोंकी समान पंक्तिमें ला रखना है। अिसके लिअे हम सबको कमर कस लेना चाहिये और हमारे नीचे गिरे हुअे अिन भाअियोंको अूपर अुठानेके लिअे भरसक कोशिश करनी चाहिये।"

सबसे अधिक लम्बा भाषण अुन्होंने दाहोदकी सार्वजनिक सभामें दिया। अुसमें अुन्होंने हरिजन-कार्यके संस्मरण कहे और अन्तमें देशके प्रश्न और अुन्हें हल करनेके लिअे प्रत्येक प्रजाजनको क्या करना चाहिये यह बताया। दाहोदकी सभाको "मेरे प्यारे दाहोदवासियो" संबोधन करके अुन्होंने अिस प्रकार व्याख्यान दिया :

"आज आपके सामने अितना जल्दी आ सकूंगा, यह मैं नहीं समझता था। भाअी हरखचंदसे बातें करते हुअे याद आया कि अभी लोकसभाकी छुट्टी है तो चलो दाहोद और भावनगर हो आयें। भाअी डाह्याभाअी मुझे याद आये थे। वे मुझे कअी बार लिखते थे कि चौबीस घंटेके लिअे आकर चले जाते हैं, यह अच्छा नहीं। आप जब भी आते हैं, जल्दीमें होते हैं। दाहोदको अपने व्याख्यानका लाभ नहीं देते। अिसलिअे अिस बार सोचा कि चलो, दाहोदके भाअियोंसे शांतिसे मिलेंगे, अुनके साथ दुखः-सुखकी बातें करेंगे।

"मैं कोअी बड़ा वक्ता नहीं हूं। अिसलिअे बड़े भाषण देनेकी मुझे आदत नहीं है। दस वर्ष पहले अेक बार मैं आपके सामने बोला था। दस वर्ष बाद आज फिर आपके सम्मुख अुपस्थित हुआ हूं। मेरे हृदयमें नये पुराने संस्मरण अुमड़ रहे हैं। और अुनके सिलसिलेमें जो विचार आ रहे हैं, वे मैं आपसे कहूंगा। अपने हृदयके अुद्गार मैं आपके सामने पेश करूंगा।

"मैं संतरामपुर, बारिया, दूधिया वगैरा स्थानों पर घूम आया। बारियामें भीलोंका बड़ा मेला भरा था। अुसमें आये हुअे हजारों भीलोंको देखकर मेरे आनंदका पार नहीं रहा। जब जब मैं भील भाअियोंसे मिलता हूं, तब तब मुझे अपने कुटुम्बीजनोंसे मिलने जैसा आनंद होता है।

"कल हमारे सारे बंबअी प्रान्तमें हरिजन-दिवस मनाया गया है। हमारे यहां दाहोदमें और गांवोंमें भी अुसका अुत्सव हुआ। आप लोगोंने जिस प्रेमसे हरिजनोंको अपनाया, अुसके लिअे आपको धन्यवाद देता हूं।

"देवगढ़-बारियामें सवर्णोंने खास दिलचस्पी नहीं दिखाअी, अिससे मैं दिग्मूढ़ बन गया हूं। वहां २०० सरकारी आदमी और गांवके केवल चार ही आदमी जुलूसमें आये थे। तब हरिजनोंके लिअे कुअें और मंदिर खोलनेकी तो बात ही क्या की जाय? बारियाके वणिक भाअियोंने तो हरिजन-दिवस मनानेके प्रति विरोध प्रगट करनेके लिअे हड़ताल भी रखी। यह सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। परंतु यह सब हमें बर्दाश्त करना ही होगा।

"दाहोद किसी समय पुरानी प्रथाओंका गढ़ माना जाता था। परंतु वह किला अब जमींदोज़ हो गया है। दाहोदकी जनताने जिस भावसे हरिजन-दिवस मनाया और जिस प्रेमसे हरिजनोंको मंदिरमें ले जाकर अीश्वरके दर्शन कराये, होटलोंमें चाय-पानी पीनेका निमंत्रण दिया, कुंओं पर पानी भरवाया और दाहोदके अितिहासमें चिरस्मरणीय रहनेवाला जुलूस निकाला, अुससे मैं खुश हुआ हूं। दाहोदको मेरे हजार हजार धन्यवाद! भाअी मणिलाल पानवालेकी हरिजनभक्ति और अुनका काम देखकर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ

हूं। दाहोद जैसे कट्टर शहरमें यदि यह घटना हो सकी, तो देवगढ़-बारियामें भी अैसा ही होगा, अिस बारेमें मुझे शंका नहीं। अिसलिअे हमें सिर्फ धीरज रखना होगा और आवश्यक तपश्चर्या करनी पड़ेगी।

"१९३३-'३४ के वर्षमें ९ मास अर्थात् २७० दिन बापूजीके साथ सारे भारतमें अस्पृश्यता मिटानेके लिअे काश्मीरसे कन्याकुमारी तक मैं घूमा था। अुस समय पूनामें म्युनिसिपैलिटीकी तरफसे मानपत्र दिया जानेवाला था। वहां जाते हुअे आठ बजे मोटर दरवाजेमें से गुजर रही थी, तब अूपरसे बम फेंका गया था। परंतु अुस दिन प्रभुने बचा लिया। अिसी प्रकार संथाल परगनेके बैजनाथधाममें हम बापूजीके साथ जा रहे थे, तब मोटर पर लाठियोंकी झड़ी लगी थी। अुसके बीचसे हम गुजरे। अुसमें मोटरका पिछला भाग टूट गया। मोटरकी छतको भी कुछ नुकसान हुआ। परंतु अिसके सिवाय और कोअी हानि नहीं हुअी। वहां भी प्रभुने बचा लिया।

"प्रवासमें लाखों आदमी बापूजीके प्रति श्रद्धा प्रगट करके रुपयोंकी वर्षा करते थे। आदिवासी, भील, शबर वगैरा भी गांधीजीकी सभाओंमें आते और पैसा, आना, आठ आना, रुपया वगैरा देते और बापूजी अुसे आनंदसे स्वीकार करते। बापूकी दृष्टिमें तो गरीबोंके अेक आनेकी धनिकोंके सैकड़ों रुपयों जितनी ही कीमत थी। अिस प्रकार प्रवासमें अमीर-गरीब, राव और रंकसे कुल आठ लाख रुपये अिकट्ठे किये थे। अुनसे हरिजनोंका काम चला।

"बापूजी तो अपना काम पूरा करके चले गये। परंतु हमारा काम अभी अधूरा है। वे सत्य, अहिंसा और गरीबों तथा हरिजनोंकी सेवाका जो संदेश हमें दे गये हैं, अुसके अनुसार चलकर अपने कर्तव्यका पूर्ण पालन करनेका दायित्व अब हमारा है।

"भंगी भाअी तो माताका पवित्र कार्य कर रहे हैं। जैसे माता अपने बालकका मैला साफ करती है, वैसे भंगी माता समाजरूपी बालकका मैला अुठाकर अुसे साफ रखती है। अिसलिअे अुन्हें माता स्वरूप मानकर हमें अुनका अुपकार मानना चाहिये।

"हमें स्वतंत्रता मिले दो वर्ष हो गये। अिस बीच जो करुण घटना हुअी, वह है देशके टुकड़े होना। अिसके परिणामस्वरूप पंजाब और बंगालमें सैकड़ोंकी हत्या हुअी, बड़ी संख्यामें स्त्रियोंकी लाज लुटी, लाखों देश-बान्धव अपना वतन छोड़कर पंजाब और बंगालसे हमारे देशमें चले आये। अिन निराश्रितोंको ठिकाने लगानेका काम अभी बाकी है। हमारी सरकार

यह भगीरथ कार्य कर रही है। अिन लोगोंको फिरसे बसाने और कामसे लगानेके लिअे सरकारने दिल्लीमें अेक बड़ा बैंक खोला है। अुसमें मैं भी काम करता हूं। साथ ही समय समय पर निराश्रित छावनियोंको देखने जाता हूं। दिल्लीमें हजारों लोग खुले मैदानमें और चलनेके रास्तों पर ठंड, धूप और वर्षामें दिन काटते हैं, जब कि हम अपने सुन्दर घरोंमें बसे हुअे हैं और आनंदसे खाते-पीते हैं। अुन्हें देखकर हृदय हिल जाता है और आंखोंमें आंसू आ जाते हैं। हमें अपने अिन अभागे भाअी-बहनोंका खयाल करना चाहिये। सरकार तो अपने ढंगसे अुन्हें बसानेका प्रयत्न कर रही है, परंतु हमें भी अिस काममें अपना हिस्सा अदा करना चाहिये।

"दूसरा कठिन प्रश्न अनाजका है। विदेशसे हम हर साल १३५ करोड़ रुपयेका अनाज मंगवाते हैं और जहाजोंका भाड़ा तथा दूसरा घाटा भी सरकार अुठाती है। यह रुपया बचानेका सरकारने निर्णय किया है और अिसके लिअे अधिकाधिक अनाज पैदा करनेकी योजना पर अमल शुरू किया है। हम सबको अुसमें साथ देना चाहिये। अनाजका अेक दाना भी बेकार न जाय, अिस ढंगसे अुसका अुपयोग करना चाहिये और अन्नके अुत्पादनमें जितना भी हमसे बन पड़े, योग देना चाहिये।

"रुपयेकी कीमत घटनेसे हमें जाहिरा तौर पर नुकसान दिखाअी देता है। परंतु अन्तमें तो जो नीति हमारी सरकारने अख्तियार की है, अुससे फायदा ही होगा, यह ध्यानमें रखना चाहिये।

"अगले साल वयस्क मताधिकारके अनुसार बड़ा चुनाव होगा। संसार भरमें प्रजातंत्रका यह अेक बड़ा प्रयोग होगा। अुसमें आपको ध्यान रखना है। अुसमें स्त्री और पुरुषको समान अधिकार है। अिसके अुपभोगके लिअे शिक्षाकी मात्रा बढ़ानी होगी।

"यहां जैसे भील-सेवा-मंडलके द्वारा भीलोंकी सेवाका काम हो रहा है, वैसे ही बिहार, अुड़ीसा वगैरा भारतके दूसरे प्रान्तोंमें भी आदिवासियोंको अूंचा अुठानेका काम हो रहा है। देशभरमें आदिवासियोंकी संख्या अढ़ाअी करोड़ है और हरिजनोंकी पांच करोड़ है। स्वतंत्र भारतको अपनी स्वतंत्रता और शानकी रक्षा करनी हो, तो अितनी बड़ी साढ़े सात करोड़की आबादीकी हम अुपेक्षा नहीं कर सकते। अुनके अुत्थानके लिअे, अुन्हें अपनी बराबरीमें लानेके लिअे हमें भगीरथ काम करना है।"

व्यापारियोंको संबोधन करके अुन्होंने कहा कि, "कपड़ेका अुत्पादन बढ़नेसे नियंत्रण अुठा लिया गया है। फिर भी कालाबाजार अभी तक नहीं

मिटा है। स्वार्थी मनुष्य कालाबाजार करके येन-केन प्रकारेण धन अिकट्ठा करनेके पीछे पड़े हुअे हैं। परंतु अिससे वे जो सुख भोगनेकी अिच्छा रखते हैं, वह नहीं भोग सकेंगे। अत्यधिक धन-तृष्णा अुन्हें और देशको दुःखके गर्तमें डाल देगी। मैं आशा रखता हूं कि दाहोदके व्यापारी भाअी अिस पाप-पंकमें नहीं फंसेंगे।

• "अन्तमें अीश्वर सबको सद्बुद्धि दे। गांधीजीको जो धुन प्रिय थी, अुसकी पंक्तियां अुद्धृत करके मैं समाप्त करता हूं। 'अीश्वर अल्ला तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान्।' अिस प्रकार हे भगवान, सबको अच्छी बुद्धि दे, जिससे सब अच्छे काम करें। राम राम!"

दाहोदकी अुनकी यह अंतिम मुलाकात थी। अिसके बाद वे दुबारा वहां न जा सके।

भील-सेवा-मंडलके कामको २५ वर्ष पूरे हो जानेसे दाहोदमें अिस संस्थाने रजत-जयंती मनानेका निश्चय किया था। परंतु अिसके लिअे अनुकूल समय तय करनेमें काफी समय लग गया। अन्तमें १५ अक्तूबर, १९५० को वह अुत्सव मनाना तय हुआ और स्वतंत्र भारतीय गणतंत्रके प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबू अुसके मुख्य अतिथि और अध्यक्ष चुने गये। बापाके प्रति प्रेमके वश होकर और आदिवासियोंके कामके प्रति अपनी कोमल भावनाके कारण अुन्होंने यह निमंत्रण स्वीकार किया। राजेन्द्रबाबूके अतिरिक्त बम्बअीके अुस समयके मुख्यमंत्री बालासाहब खेर और अन्य गण्यमान्य महानुभाव भी वहां आये थे। अपनी शुरू की हुअी संस्थाके, जिसके क्रमिक विकासके वे साक्षी ही नहीं परन्तु कर्ता भी थे, रजत महोत्सवके शुभ प्रसंग पर अुपस्थित होकर अपने साथी कार्यकर्ताओंको अुत्साह देनेकी अिच्छा बापाको कैसे नहीं होती?

अिस अवसर पर मौजूद रहना जितना बापा खुद चाहते थे, अुससे भी अधिक तो अुनके साथी कार्यकर्ता चाहते थे। परंतु वृद्धावस्थाकी बीमारियोंने अुन्हें घेर लिया था और वे भावनगरमें अपने छोटे भाअीके यहां बिस्तरे पर नहीं तो कमसे कम कमरेमें अपना समय बिता रहे थे। अिसलिअे वे स्वयं अुपस्थित नहीं हो सकते थे। अिस बातका अुन्हें तो कोअी रंज नहीं था। परंतु साथी कार्यकर्ताओंको अुनकी अनुपस्थिति न खटके और सबको प्रोत्साहन मिले, अिस हेतुसे अुन्होंने भावनगरसे भील-सेवा-मंडलके रजत-जयंतीके अवसर पर निम्नलिखित विशेष संदेश भेजा था:

"रविवार, ता० १५–१०–'५० को दाहोद शहरमें आप सब भाअी-बहन भील-सेवा-मंडलकी २५ वर्षकी जयंती मनाने अिकट्ठे हुअे हैं।

हमारा महान सौभाग्य है कि अिस शुभ अवसर पर भारतके राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसादने पधारने और अध्यक्षपद ग्रहण करनेका हमारा आमंत्रण स्वीकार किया है। परंतु डॉ० राजेन्द्रप्रसाद तो हमारे प्रिय राजेन्द्रबाबू हैं। अुन्होंने अखिल भारत आदिम जाति-सेवा-संघकी अध्यक्षता दो वर्ष पूर्व दिल्लीमें स्वीकार करके हमें बहुत ही आभारी किया है। अिसलिअे अिस अवसर पर अुन्होंने अुत्सवका अध्यक्षपद स्वीकार किया, सो तो अपने घरके बुजुर्गका ही पद स्वीकार किया है। अिसमें कोअी खास नअी बात नहीं है।

"अिस मौके पर मैं अपनी बीमारीके कारण आपके पास हाजिर नहीं रह सका। परंतु अिसके लिअे मुझे रंज नहीं हो रहा है। मेरा काम करनेके लिअे अनेक भाअी जगह-जगहसे आकर वहां अुपस्थित हो गये हैं। अुड़ीसा, मध्यभारत और दिल्ली जैसे दूर स्थानोंसे अनेक भाअी आये हैं। हमारे आजीवन भील सदस्य भाअी रूपाजी जालजी, लालचंद अित्यादि अन्य भाअी भी हमारे राजेन्द्रबाबूकी आवभगतमें और अुत्सवमें भाग ले रहे हैं, अिससे मुझे अपार आनंद होता है। मैं यह मान लेता हूं कि शरीर और आत्मा दोनोंसे मैं दाहोदमें अुपस्थित हूं।

"गुजरातमें दाहोद-झालोदके साथ हालमें ही देशी राज्योंका अेकीकरण हुआ है। देवगढ़-बारिया, छोटा अुदयपुर, राजपीपला, बनासकांठा और साबरकांठा वगैराका अेकीकरण हुआ है। अिससे हमारा भील समाज महान — विशाल बन गया है और हमारे कामका क्षेत्र भी बहुत बढ़ गया है। मैं चाहता हूं कि यह बात ध्यानमें रखकर आप सब भिन्न भिन्न प्रदेशोंमें फैल जायं, सेवाकार्य करनेके लिअे आश्रम स्थापित करें और ज्ञान तथा अुसके साथ प्रभुभक्तिका अधिक फैलाव करें।

"रविवार, १५ अक्तूबरका दिन आप सब भील भाअी लम्बे समय तक याद रखिये, अिस अुज्ज्वल दिवस पर हर साल अपनी अुन्नतिके कार्य कीजिये और अुनके जरिये सारे भारतकी जनताकी अुन्नति साधिये। यह प्रभु-प्रार्थना करके मैं अपना यह संदेश समाप्त करता हूं।"

अिस प्रकार बापा दाहोदके अुत्सवमें प्रत्यक्ष रूपमें हाजिर न रह सके तो भी सजीव अक्षर-देहमें अुपस्थित रहे और अुनके संदेशने अुत्सवमें भाग लेनेवालों तथा कार्यकर्ताओं और सेवक वर्गको खूब अुत्साह प्रदान किया।

अिस अवसर पर सरदार वल्लभभाअी पटेल, श्री मोरारजी देसाअी, श्री जुगतराम दवे, श्री वैकुण्ठभाअी लल्लूभाअी महेता, डॉ० जीवराज महेता,

मध्यप्रदेशके गवर्नर श्री मंगलदास पकवासा वगैराने भी संदेश भेजे थे और अुनमें पू० ठक्करबापाको तथा मंडलके कार्यको अंजलियां दी थीं। अिनमें से सरदार वल्लभभाअी पटेलका संदेश अिस प्रकार था :

"दाहोद भील-सेवा-मंडलकी रजत-जयंतीके शुभ अवसर पर मैं अपनी हार्दिक बधाअी और शुभ कामनाअें भेजता हूं। अिसके बारेमें मेरा कुछ भी कहना बेकार है। जो बात स्पष्ट है अुसका वर्णन करनेकी जरूरत नहीं। भील-सेवा-मंडलने आदिवासियोंकी जो सेवा की है, अुसके लिअे भारतवासी मंडलके ऋणी हैं। यह दुःखकी बात है कि हमारे समाजमें अपने आपको भूलकर अैसे पुण्यकार्यमें लग जानेमें ही अपना जीवन-कल्याण माननेवाले सेवक बहुत थोड़े हैं। अिसमें तो कोअी सन्देह नहीं कि हमें अैसे आदमियोंकी बड़ी जरूरत है। यह सब देखते हुअे भील-सेवा-मंडलने जो रचनात्मक कार्य किया है, अुसका अुल्लेख भारतके अितिहासमें स्वर्णाक्षरोंमें किया जायगा। और भारतके जिन नौजवानोंमें सेवाकी भावना है, अुनके लिअे यह सारा कार्य मार्गदर्शक बन जायगा। भील-सेवा-मंडल निरंतर फूले-फले और अिस प्रकार लोगोंके दुःख दूर करते करते दूसरोंको सीधा रास्ता बताये, यही मेरे हृदयकी प्रार्थना है।

"अिस शुभ अवसर पर हम सबकी दृष्टि अुन ठक्करबापाकी तरफ जाना स्वाभाविक है, जिन्होंने अिस कामके लिअे अपना समस्त जीवन अर्पण किया है और जो अिस समय रोगशय्या पर पड़े पड़े भी सेवाके ही विचार करते हैं। अुन्होंने देशकी जितनी सेवा की है, अुसकी तो बात ही क्या की जाय? यद्यपि वे आज आपसे--हमसे दूर हैं, फिर भी वे हमारे हृदयोंमें विराजमान हैं और अीश्वरकी ओर दृष्टि करके हमारा अंतर आज प्रार्थना कर रहा है कि हे अीश्वर, तू अुन्हें जल्दी अच्छा कर दे।"

अुत्सवके मौके पर अनेक भाषण हुअे। राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू और बालासाहब खेरने मंडलके कार्यको अंजलि दी। भीलोंने अुत्सव मनाया। विद्यार्थियों और विद्यार्थिनियोंने और अिकट्ठे हुअे हजारों भीलोंने अुत्सवके गीत गाये। यह कौन कह सकेगा कि अिन सबके जीवनमें ठक्करबापाकी आत्मा प्रतिबिम्बित नहीं हो रही थी?

३४

सुवर्ण महोत्सव

२९ नवम्बर, १९४९ को ठक्करबापाने अस्सी वर्ष पूरे किये। और अेक अंग्रेज कवि द्वारा आधुनिक कालके मनुष्यकी बताअी हुअी आयुष्य मर्यादा सत्तर (Three score and ten) से भी दस वर्ष अधिक पूरे किये। परंतु केवल ८० वर्ष पूरे करना कोअी बड़े अचंभेकी बात नहीं। दुनियामें अैसे आदमियोंका अभाव नहीं, जो ८० वर्ष ही नही, बल्कि सौ वर्ष पूरे करके भी अभी तक जीवित हों। ११२ वर्षकी दादीमां, १५० वर्षका शेख, और १९८ वर्षका आदमी जीवित होनेके अुदाहरण समय-समय पर प्रकाशमें आते रहते हैं। अुनकी दो चार ही नहीं, परंतु आठ दस पीढ़ियोंकी संतानोंके चित्र भी समाचारपत्रोंके पृष्ठोंमें कभी कभी प्रकाशित होते हैं। परंतु केवल जिन्दा रहनेसे, केवल संतान अुत्पन्न करनेसे, केवल स्त्रियोंकी सेना बताकर कि अितनी स्त्रियोंका स्वामी बना, अितने बालकोंका पिता, दादा, पड़दादा बना, आदि बातोंसे मनुष्य बड़ा नहीं बन जाता। मनुष्य बड़ा तो तब बनता है, जब अुसका जीवन स्वार्थके लिअे नहीं परंतु परमार्थके लिअे खर्च हुआ हो। मनुष्यने अपने जीवनके वर्ष कैसे बिताये, कैसे कामोंमें बिताये, अुससे कुटुम्बको, गांवको, समाजको, देशको और अन्तमें विश्वको क्या लाभ हुआ, अिस पर अुसके जीवनकी महत्ताका आधार है।

अिस दृष्टिसे बापाके पिछले अस्सी वर्षों पर नजर डालें, तो अैसा लगता है कि दूसरे कुछ लोग जो काम ८०० वर्षमें भी न कर सके होते वह ठक्करबापाने ८० वर्षमें कर दिखाया।

भावनगर जैसे शहरके अेक गरीब मुहल्लेमें गरीब घरमें जन्म लेकर जरा बड़े होनेके बाद, समझने लगनेके बाद, बापाने अपना जीवन भिन्न भिन्न ऋण — पितृऋण भ्रातृऋण, कुटुम्बऋण — चुकानेमें ही बिताया है और अुसके बादके वर्षोंमें समाजका ऋण और देशका ऋण चुकानेमें अुनके जीवनके अति मूल्यवान ४० वर्ष बीते हैं। ८० वर्षकी बात जाने दीजिये। केवल ४० वर्ष पहलेके काल पर नजर डालिये। ४० वर्ष पहलेके पंचमहालके भीलोंको देखिये और ४० वर्ष पश्चात्के आजके भीलोंको देखिये। तीर कमान लेकर लंगोटी लगाये घूमनेवाले भील समाज लोग बापाके तपके कारण बम्बअी जैसे प्रान्तकी धारासभामें ही नहीं, परंतु आजाद भारतकी

संसदमें सदस्य बनकर अधिकारके रूसे बैठ सकते हैं और देशके कायदे-कानून बनानेमें बड़ा योग दे रहे हैं। अिसके बाद हम भील शिक्षक, भील कर्मचारी, भील धारासभाअी, भील थानेदार, भील वैज्ञानिक, भील वकील, भील व्यापारी, भील संचालक, भील कलाकार, भील कवि, भील लेखक गिनने लगें तो कहां तक गिनना होगा, अिसकी कोअी हद नहीं। पंचमहालकी सूखी और अुजाड़ धरती पर मानो अलाअुद्दीनका जादूका चिराग जल गया। अेक महान जादूगरका हाथ मानो सारी भूमि पर फिर गया। जगह जगह संस्कारिताके केन्द्रों जैसे आश्रम खड़े हो गये और नये समाजका निर्माण हो गया। जीवनमें, समाजमें, जहां सब कुछ वीरान पड़ा था, गंदगी पड़ी थी, अज्ञान फैला हुआ था, वहां संस्कारिता और मानवताकी फुलवारी खिल अुठी। नग्न, अर्धनग्न, अज्ञान, अपढ़ और शराबी स्त्री-पुरुषोंके बजाय आज कितने ही सुशिक्षित संस्कारी स्त्री-पुरुष खादी-विद्या, शिल्पकला, लिखना-पढ़ना, गणित, कानून, वैद्यक और दूसरे अनेक विषय सीखकर समाजके विविध क्षेत्रोंमें सेवा कर रहे हैं और बाकीके भील समाजको सब तरफसे अूंचा अुठानेका प्रयत्न कर रहे हैं।

अिसी प्रकार हरिजनोंकी बात लें तो अिस क्षेत्रमें बापाने अब तक जो भगीरथ कार्य किया है, अुससे अस्पृश्यतारूपी राक्षसीको घातक चोट लग चुकी है। गांधीजी और बापाकी जीवनभरकी तपश्चर्याके परिणामस्वरूप भारतभरमें कानूनकी दृष्टिसे अस्पृश्यताकी मौतकी घंटी बज चुकी है और बापाकी कोशिशोंके परिणामस्वरूप दस सालके लिअे संविधान-सभाने हरिजनों तथा पिछड़ी हुअी जातियोंको विशेष अधिकार दिये हैं। भारतके प्रान्त प्रान्तमें, सौराष्ट्रसे लेकर आसाम तक और हिमालयसे लेकर कन्याकुमारी तक आदिवासियों, हरिजनों, स्त्रियों और बालकोंकी जो अनेक संस्थाअें मधु-मक्खियोंके छत्तेकी तरह काम कर रही हैं, वे बापाके जीवन-कार्यकी गवाही दे रही हैं। बापाने तीस चालीस वर्ष पहले बम्बअीकी हरिजन बस्तियों, पंचमहालके भीलों, अुड़ीसाके अस्थिपंजरों तथा आसाम, मध्यप्रान्त और सिंधके थरपारकरके आदिवासियोंका प्रदेश देखा था। पर ८१ वें वर्षमें प्रवेश करते समय दिल्लीमें बैठे बैठे नजर दौड़ाअी तो खयाल हुआ कि कितनी संस्थाअें, कितने कार्यकर्ता, कितनी बहनें प्रान्त-प्रान्तमें अुनकी प्रेरणासे काममें लग गअी हैं, और ४० वर्ष पहले जिस कामका सारा बोझ ठक्करबापा और अुनके दो चार साथी अुठाते थे, वह अिन सैकड़ों सेवकों और सेविकाओंने अुठा लिया है। यह सब अच्छा परिणाम देखकर बापाकी आत्माको आनंद तो जरूर हुआ, परंतु साथ ही साथ वह नम्र भी बनी। वह अीश्वरका अुपकार

मानती थी कि अिन बड़े कामोंका अुन्हें निमित्त बनाया और अुनके हाथों भगीरथ कार्य पूरे कराये। बापाके पुण्यप्रतापसे हरिजनों और आदिम जातियोंके झोंपड़ों तक अन्न, वस्त्र और विद्याकी त्रिवेणी बहने लगी और जो लोग सूख गये थे, अस्थिपंजर हो गये थे, अुनकी नसोंमें नया रक्त, नअी भावना दौड़ने लगी। अुनके मुख पर नया तेज चमक अुठा। दबे हुअे, दुर्बल और पतित लोगोंमें से स्वाश्रयी, स्फूर्तिवाले और स्वाभिमानी लोग तैयार हुअे। और यह सब करनेके लिअे ठक्करबापाने जीवनके ८० वर्ष तक अगणित प्रवास किये। अेक तरफ लोगों और कार्यकर्ताओंके साथ सिरपच्ची करके अेकको सुधारके मार्ग पर लगाया और दूसरेसे काम लिया; दूसरी तरफ सरकारों, दरबारों और अधिकारियोंसे मिले, अुनके सामने नम्रतासे अिन लोगोंकी वकालत करते रहे तथा अुनके कल्याणकी योजनाअें तैयार करके और सरकारी तंत्रसे बड़ी रकमें मंजूर करवाकर अिस कामको आगे बढ़ाया। अपने जीवनकार्यका सुफल देखनेका सौभाग्य बहुत थोड़े मनुष्योंको मिलता है। बापा अिन भाग्यशालियोंमें से अेक थे। अैसे नररत्नका अुसके देशबांधव शुभ प्रसंग पर सम्मान करें, तो अिसमें क्या आश्चर्य? बापा ८० वर्ष पूरे करके ८१ वें वर्षमें प्रवेश करें, तब अुनका खूब सम्मान करने और अुनकी जन्म-जयंती मनानेका देशनेताओंने निश्चय किया। अिस शुभ अवसर पर अुनके जीवनकी विविध सेवामय प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालनेवाला अेक अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित करने और अुन्हें अर्पण करनेका भी निर्णय किया गया।

सुवर्ण महोत्सव

अिसके लिअे १५ सितम्बरको राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबू, भारतके प्रधान-मंत्री श्री जवाहरलालजी, सरदार वल्लभभाअी पटेल, बालासाहब खेर, मावलंकर दादा, काका कालेलकर, श्री देवदास गांधी, श्री गोपीनाथ बारडो-लाअी, श्री मंगलदास पकवासा, श्री किशोरलाल मशरूवाला, श्री घनश्यामदास बिड़ला, श्री रामेश्वरी नेहरू, डॉ० पट्टाभि सीतारामैया, पं० हृदयनाथ कुंजरू वगैरा भारतके प्रत्येक भाग और प्रत्येक प्रान्तके ३८ नामांकित नेताओं, कार्यकर्ताओं और समाज-सेवकोंने अिस ग्रंथकी योजनाके बारेमें तथा अुस पर होनेवाले खर्चके अंदाजके विषयमें अेक लम्बा वक्तव्य प्रकाशित किया, और देशवासियोंसे अिस महान कार्यमें सहायता देनेकी अपील की। अुसमें कहा गया था:

"श्री अ० वि० ठक्कर, जो ठक्करबापाके प्यारे नामसे सारे देशमें प्रसिद्ध हैं, २९ नवम्बरको ८० वर्ष पूरे करेंगे। सचमुच वे देशके सबसे बड़े

बुजुर्ग पुरुष हैं। देशमें और कोअी व्यक्ति बापासे अधिक सम्मानार्ह और पूजार्ह नहीं। वृद्ध होते हुअे भी अभी तक अुनमें जवानों जैसी कार्यशक्ति और वेग है और अनेक कार्योंके प्रति अपनी भक्तिके द्वारा वे युवकोंको प्रेरणा देते हैं। जब कोअी भी आदमी भुलाये और सताये हुअे लोगोंकी सेवाकी अटूट शृंखला जैसे बापाके जीवनके बारेमें विचार करता है, तब यह कुछ कुछ समझमें आता है कि गांधीजीने यह बात किस लिअे कही थी कि 'मेरी महत्त्वाकांक्षा बापाकी निःस्वार्थ सेवाओंकी लम्बी फूलमालाकी होड़ करनेकी है।'

"श्री श्रीनिवास शास्त्रीने, जिन्होंने अिनके साथ भारतके सेवकके रूपमें वर्षों तक काम किया है, बापाको मानव सहानुभूतिकी सजीव मूर्ति कहा है। अुन्होंने अकाल-निवारण, भील-सेवा, हरिजन-सेवा और कस्तूरबा-स्मारक कोषके द्वारा देशकी बहनों और बच्चोंकी सेवाके जो अगणित काम किये हैं, अुनका यहां अुल्लेख करना गैरजरूरी है। सारा देश अैसे महान और बिरले पुरुषका सम्मान करके अपना ही सम्मान करे, यह अिस अवसर पर बहुत समयोचित होगा।

"अिसके लिअे अेक अभिनंदन स्मारक ग्रंथ प्रकाशित करने और दिल्लीके समारोहमें बापाके जन्म-दिन पर अुन्हें अर्पण करनेका निर्णय किया गया है। . . . अुसमें बापाके महान जीवन संबंधी लेखों और चित्रोंका समावेश किया जायगा। अिसके सिवाय, बापाका जिन बहुतसी परोपकारी प्रवृत्तियोंसे गाढ़ संबंध है, अुन पर तथा राष्ट्रीय महत्त्व रखनेवाले विषयों पर लेख लिखे जायंगे। अितने थोड़े समयमें अिस अवसरको शोभा देनेवाला महान ग्रंथ तैयार करनेके तमाम प्रयत्न किये जायंगे। अिस पर लगभग २५,००० रुपये खर्च होनेका अंदाजा है। हमें विश्वास है कि यह रकम अनेक जाने और अनजाने मित्रोंसे खानगी तौर पर प्राप्त कर ली जायगी।

"अिस ग्रंथकी बिक्रीका रुपया ठक्करबापा सूचित करेंगे अुस कोषमें दे दिया जायगा। हम अिस अवसर पर देशके सभी भागोंके लोगोंसे बापाके ८१ वें जन्म-दिनके अिस सुखद और मंगल प्रसंग पर अुनकी दीर्घायु तथा स्वस्थ जीवनके लिअे प्रार्थना करनेका अनुरोध करते हैं।"

वक्तव्य प्रकाशित करनेके बाद बापाके असंख्य मित्रोंने यह काम अुत्साहसे अपने हाथमें ले लिया। ग्रंथ तैयार करनेके लिअे रुपया भी भेज दिया और ग्रंथके लिअे सामग्री भी भिन्न भिन्न मित्रों, साथियों और प्रशंसकोंसे समय पर मिल गअी।

अिस ग्रंथका संपादन मद्रासकी अखिल भारतीय कुष्ठ-समितिवाले श्री टी० अेन० जगदीशन् तथा कस्तूरबा गांधी ट्रस्टके मंत्री श्री श्यामलालजीने मिलकर पूरा किया और अिस प्रकार समय पर ग्रंथ छपवाकर तैयार कराया कि वह निश्चित दिन पर बापाको अर्पण किया जा सके।

जिन्होंने यह महान ग्रंथ देखा है, अुसके भीतर भिन्न भिन्न नेताओं, कार्यकर्ताओं और साथियों द्वारा दिये गये संस्मरण तथा श्रद्धांजलियुक्त लेख पढ़े हैं और बापाकी डायरीके पन्ने, लेख और अन्य सामग्री देखी है, अुन्हें तो शायद आश्चर्य ही होगा कि अितना बड़ा भगीरथ काम अितने थोड़े समयमें कैसे हुआ? परंतु संपादकोंकी कार्यदक्षता तथा बापाके प्रति अुनकी भक्ति और सैकड़ों लोगोंकी बापाके प्रति ममताके कारण ही अितना बड़ा काम सबके सहयोगसे निश्चित अवधिमें पूरा हो सका।

देशनेताओंके वक्तव्यमें बापाकी ८१ वीं वर्षगांठके समय सुवर्ण महोत्सव मनानेका लोगोंसे जो अनुरोध किया गया था, अुसे देशके कोने कोनेसे अच्छा अुत्तर मिला। अुनकी जयंती दिल्ली, बम्बअी, अहमदाबाद, पूना, अलाहाबाद, कटक, कलकत्ता, दाहोद, मंडला, राजकोट, भावनगर, मोरबी और अन्य अनेक स्थानों पर और खास तौर पर हरिजनों तथा आदिवासियोंमें बापाने और अुनके साथियों तथा कार्यकर्ताओंने जहां जहां केन्द्र खोले थे, वहां सब जगह मनाअी गअी। जगह जगह सभाअें हुअीं। ठक्करबापाके जीवन और कार्यको अंजलि देनेवाले प्रवचन हुअे। परंतु दिल्लीमें पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाअी पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, कांग्रेस अध्यक्ष डॉक्टर पट्टाभि सीतारामैया वगैराकी मौजूदगीमें कान्स्टिटयूशन हाअुसके मैदानमें और शामको हरिजन अुद्योगशालामें जो समारोह हुअे, अुन्होंने तो मानो देशभरके तमाम समारोहों पर सुवर्ण कलश ही चढ़ा दिया। जैसे हाथीके पैरमें सब पैर समा जाते हैं, वैसे हम यहां दिल्लीके समारोहोंका वर्णन करके ही संतोष मान लेंगे।

दिल्लीका वह दिन सदाके लिअे स्मरणीय रहेगा। अुस दिन दिल्लीके कान्स्टिटयूशन क्लबमें बापाका सम्मान करनेवाला सादा किन्तु आकर्षक और महान समारोह सरदार वल्लभभाअीकी अध्यक्षतामें किया गया। और अुसमें सरदारश्रीके शुभ हाथों ही भारतके लाखों और करोड़ों दलितों, पतितों, हरिजनों, आदिवासियों, ग्रामवासियों और नगर-निवासियोंकी ओरसे बापाके लम्बे सेवाजीवनके नम्र सम्मानके रूपमें अुन्हें अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया गया।
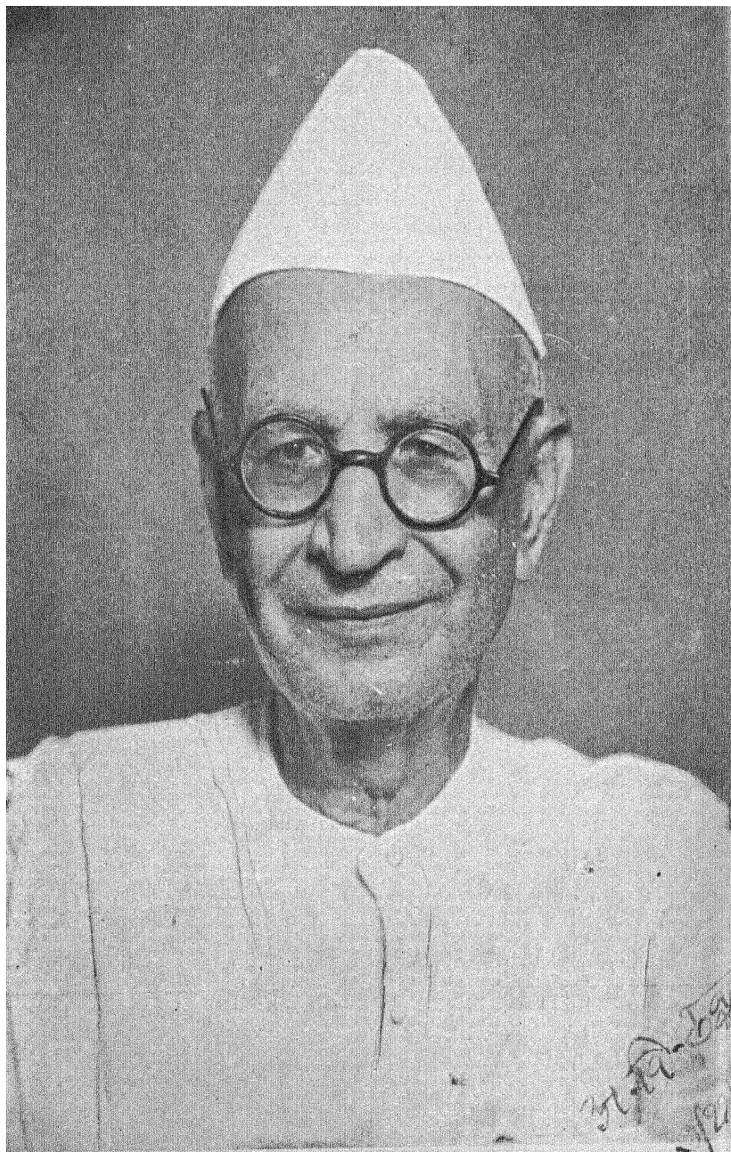
८० वीं वर्षगांठ पर

अिस सिलसिलेमें सारी व्यवस्था सुन्दर ढंगसे की गअी थी। कान्स्टिट्यूशन क्लबके मैदानमें हरियाली पर अेक सुन्दर शामियाना खड़ा किया गया था। शामियानेमें मंच पर अध्यक्षके पास श्री ठक्करबापा बैठे थे। अुनके आसपास पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, श्री जगजीवनराम और अन्य मंत्रीगण तथा डॉ० पट्टाभि सीतारामैया, दादासाहब मावलंकर और दूसरे देशनेता, समाज-सेवक और कार्यकर्ता बैठे थे। दिल्लीमें रहनेवाले गुजराती भी अिस शुभ अवसर पर बड़ी संख्यामें अुपस्थित हुअे थे। व्यासपीठके सामने ही अेक बड़ा चबूतरा खड़ा किया गया था। अुस पर सुन्दर चित्र और कारीगरी की गअी थी। बीचमें अेक तिपाअी पर जगमग करते हुअे दिये अपना शान्त तेज फैला रहे थे। चबूतरेके अेक तरफ देश-विदेशके दूतावासोंके राजपुरुष, लोकसभाके सदस्य और अन्य सुप्रसिद्ध अतिथि बैठे थे। स्त्रियोंके लिअे बैठनेकी अलग रखी गअी जगह भी खचाखच भर गअी थी। जैसा कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी अेक कवितामें कहा गया है, अिस मानव समुद्रके संगम तीर पर देश-देशके लोगोंका अेक मेला लग गया था। अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष, बूढ़े-बालक, राजनैतिक और अराजनैतिक, शहरी और ग्रामीण सब दीन-दुःखियोंके प्रतिनिधि और दरिद्रनारायणके पुजारी मानवसेवक श्री ठक्करबापाको श्रद्धांजलि देने अिकट्ठे हुअे थे। वह दृश्य सचमुच अद्भुत था!

ठीक नौ बजते ही समारोह शुरू हुआ। सबसे पहले अपूर्व शान्तिके बीच गांधीजीका प्रिय भजन:

"वैष्णव जन तो तेने कहीअे, जे पीड पराअी जाणे रे;
परदुःख अुपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे."

गाया गया।

अुसके बाद अत्यन्त शान्त वातावरणमें पार्लियामेण्टके अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलंकरने बापाको प्रथम अंजलि देते हुअे अुनको देशका सबसे बड़ा वयोवृद्ध पुरुष (Grand Old Man) बताकर अुनके द्वारा किये गये मानवसेवाके कार्योंका परिचय दिया तथा जिस अेकोपासनाके गुण द्वारा ठक्करबापाने सारी जिन्दगी काम किया अुसकी प्रशंसा की। आगे चलकर अुन्होंने बताया कि, "बापाने ८० वर्ष पूरे करनेके बाद भी अपने शरीर और मनकी जवानी कायम रखी है। वे बालक जैसे निर्दोष हैं। अुनमें शक्तिका अटूट भंडार भरा है। आज यदि वे देशके अेक कोनेमे गरीबोंका काम करते होंगे, तो कल ठेठ दूसरे कोनेमें पड़े हुअे दलित वर्गका काम

करते नजर आयेंगे। सेवाका काम किये बिना अुनके प्राणोंको चैन नहीं पड़ता। अुन्हें कभी थकावट नहीं आती। सफरसे वे कभी नहीं अूबते।"

अिसके बाद मावलंकर दादाने घोषणा की कि ठक्करबापाको अिस शुभ अवसर पर सरदारश्रीके शुभ हाथों स्मारक ग्रंथ अर्पण किया जायगा और अुसके बाद अिस ग्रंथकी ७०० प्रतियां आम लोगोंको बेचनेके लिअे रखी जायगी। अिसके अलावा, बापाके अपने हस्ताक्षरोंवाली सात प्रतियां भी सार्वजनिक रूपमें बेचनेके लिअे रखी जायंगी।

मावलंकर दादाके प्रवचनके बाद थोड़ा समय आरामका बीता। अिस बीच सूरदासका अेक भजन गाया गया और गुजराती समाजकी कन्याओंने गरबा गाया और गरबेके साथ कलामय नृत्य किया। गरबेमें ठक्करबापाके जीवन और कार्यकी प्रशंसा की गअी और अुनका योगीराजके रूपमें बखान किया गया। सारा रास अुस महान प्रसंगके अनुरूप था।

यह सब सुनकर ठक्करबापाका हृदय हिल अुठा। अुनकी आंखोंमें हर्षाश्रु छलछला आये।

मौलाना अबुल कलाम आजादने अिस मौके पर बोलते हुअे कहा कि "अिस शुभ मौके पर हाजिर रहनेमें मुझे बड़ी खुशी हो रही है। मैं ठक्करबापाको सच्चे दिलसे मुबारकबाद देता हूं। यह मुबारकबादी अिस देशके लिअे भी है, जहां अुन्होंने जन्म लिया और जहां अुन्होंने सेवाका काम किया। अीश्वर अुन्हें दीर्घायु दे, जिससे भारतकी पददलित और दुःखी जनता अिनकी सेवा द्वारा आगे बढ़े।"

भारतके अुद्योग-मंत्री श्री जगजीवनरामने, जो स्वयं हरिजन हैं, बापाको बधाअी देते हुअे अुन्हें आधुनिक युगके दधीचि बताया और पुराणोंसे अुदाहरण देकर बोले:

"अेक बार देवताओं पर संकट आया, तब वे महर्षि दधीचिके पास पहुंच गये और हाथ जोड़कर अुनसे विनती की: 'महाराज, राक्षसोंके त्राससे हमें बचाअिये।' तब दधीचि ऋषिने राक्षसोंका संहार करनेके लिअे विशेष बाण बनानेके लिअे अपनी हड्डियां निकालकर दे दीं और देवताओंकी रक्षाके लिअे हंसते हंसते अपने प्राण निछावर कर दिये। अुन हड्डियोंके बाणसे राक्षसोंका संहार हुआ और देवताओंका संकट टल गया। ठक्करबापाकी बात भी अैसी ही है। अुन्होंने पिछड़े हुअे वर्गोंकी सेवामें अपना समस्त जीवन लगा दिया। जंगलोंमें रहनेवाले भीलों, पददलित हरिजनों और अैसे ही दूसरे कुचले हुअे दुःखी लोगों पर जब आफत आती है, गरीब लोगों पर जब जल-संकट, बाढ़, प्रलय या भूकम्प जैसी कुदरती आफतें आ

पड़ती हैं, तब वे तुरंत ठक्करबापाको याद करते हैं। यह बताता है कि अिस क्षेत्रमें अुन्होंने कितनी सेवाअें की हैं। अिसीलिअे मैं बापाको आधुनिक युगके दधीचि कहता हूं।"

कांग्रेसके अध्यक्ष डॉ० पट्टाभि सीतारामैयाने ठक्करबापाको श्रद्धांजलि अर्पण करते हुअे कहा कि, "ठक्करबापा भारतके सच्चे सेवक हैं। हिन्दुस्तानमें अलग अलग वर्ग और जातियां जगह जगह बिखरी हुअी हैं। अुनमें काम करके ठक्करबापाने भारतकी राष्ट्रीयताके मंदिरका पुनर्निर्माण करनेमें बहुत बड़ा भाग लिया है। आजके धन्य प्रसंग पर मैं अुनका अभिनंदन करता हूं।"

अिसके बाद सबके अुत्साह और आनंदके बीच भारतवर्षके प्रजासत्ताक राज्यके प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरूने अपनी मधुर और सरल हिन्दुस्तानी जबानमें ठक्करबापाको श्रद्धांजलि दी। जवाहरलालजीका वह व्याख्यान नहीं था, परंतु शब्द-देहमें निरी कविता बह रही थी। छोटे छोटे वाक्योंमें अुन्होंने कितना अधिक कह डाला! वे बोले:

"मालूम नहीं मैं आपको आजके दिन क्या बधाअी दूं, या हम सब अपने आपको या देशको बधाअी दें। बाज लोग अैसे होते हैं, जैसे कि आप हैं। वे सेवाके कामोंमें अैसे खो जाते हैं कि अिन कामोंसे अलग करके अुनके बारेमें विचार करना बहुत मुश्किल होता है। अैसे लोग अपने आपमें अेक अिन्स्टिटयूशन (संस्था) बन जाते हैं। अिसलिअे ठक्करबापा अेक अलग आदमी तो रहे नहीं। विविध कामोंके अेक समूह बन गये।

"जब आपका खयाल आता है तो अेक साथ ही तरह तरहके खयाल दिमागमें आ जाते हैं। देशके अलग अलग हिस्सोंमें, पहाड़ों और जंगलोंमें, हरिजनों और अन्य पददलित लोगोंमें आप अिस कदर हिलमिल गये कि आपको अुनसे अलग करके सोचना कोअी आसान काम नहीं है। सैकड़ों तस्वीरें अेक साथ सामने आ जाती हैं। वैसे अेक आदमी दुनियामें आता है और जिन्दगी बसर करके चला जाता है। मगर जो काम वह करता है वह कायम रहता है; क्योंकि काम हमेशा चलता रहता है, वह कभी समाप्त नहीं होता। वैसे तो काम हम सब करते हैं, मगर अुन्होंने मानवसेवाके कामोंमें सिर्फ दिलचस्पी ही नहीं ली, बल्कि अुनमें अेक तरहसे खो-से गये।

"अिसलिअे ठक्करबापाको किसी बधाअी या अिनामकी जरूरत नहीं है। अुन्होंने अपनी सेवामें ही पूरा अिनाम पाया। असली मानोंमें अुनकी जिन्दगी सफल हुअी। दुनियामें अैसे शख्सको देखकर दिलमें खुशी होती है, अुत्साह बढ़ता है और कुछ हसद भी होता है। अैसे शख्स जीवनके

पेचीदे मसले सेवाके जरिये अपनी जिन्दगीमें ही हल कर लेते हैं और फिर अुनके सामने चाहे कितने ही बड़े मसले आयें अुनसे वे घबराते नहीं।

"ठक्करबापाने अेक रास्ता पकड़ा, अेक जमानेसे अुस पर चलते गये और हल्के हल्के अुनके कामका दायरा फैलता गया। मगर कामका सिलसिला अेक ही रहा, नियत अेक ही रही और अितमीनानसे वे आगे चलते ही रहे। अिसलिअे अुनको देखकर जोश और गरूर पैदा होना स्वाभाविक है। हसद अिसलिअे होता है कि अिस तरहका माद्दा हमारे अन्दर भी पैदा होता। अिसलिअे ठक्करबापाकी अिस वर्षगांठ पर हम अपने आपको मुबारकबाद देते हैं कि हमें आज यह दिन देखनेको मिला।"

अिसके बाद समारोहके अध्यक्ष सरदार वल्लभभाअी पटेलने अवसरको शोभा देनेवाला छोटा किन्तु प्रभावशाली व्याख्यान दिया :

"आज हमारे सबके ज्येष्ठ बन्धु ठक्करबापाका ८१ वां जन्म-दिवस है, यह आनंदकी बात है। अैसा सौभाग्य बहुत थोड़े मनुष्योंको मिलता है। जबसे बापू भारतमें आये, तबसे हम सब अुनके साथ काम करते रहे। कोअी अेक क्षेत्रमें तो कोअी दूसरे क्षेत्रमें। अितने पर भी हम रातदिन अेक दूसरेका काम देखते रहे। ठक्करबापाको तो दिन-रात, जात-पांत और प्रान्त-प्रान्तके बीच कोअी भेद नहीं था। सारे हिन्दुस्तानमें जहां कहीं भी दुःख पड़ा वहीं वे पहुंच गये। जहां कहीं भी आफत आती — फिर वह कुदरती हो या अन्य प्रकारकी — वहां सब अिन्हींकी तरफ देखने लगते। अिसलिअे अिनका जीवन भारतके नौजवानोंके लिअे अेक नमूना है। जो लोग अुनका अनुकरण करना अपना जीवनकर्तव्य मानते हैं, अुनके लिअे रास्ता खुला हुआ है। अुन्हें सेवाके लिअे धारासभामें जानेकी जरूरत कभी मालूम नहीं हुअी। फिर भी हम अुन्हें धारासभामें अिसीलिअे खींच ले गये हैं कि अुन्हें दलित जातियोंका अेक खास अनुभव है। आज तो हम थोड़ासा काम करते ही मोहमें पड़ जाते हैं और हमें खयाल होता है कि सेवा करनेके लिअे राजनैतिक संस्थामें ही शरीक होना चाहिये। परंतु यह विचार ठीक नहीं। सेवा यदि करनी ही हो तो अिसके लिअे अनेक क्षेत्र मौजूद हैं। देश बड़ा लम्बा-चौड़ा है। जहां बैठिये वहीं कामका तो ढेर पड़ा है। ठक्करबापा जबसे काममें पड़े, तबसे न किसी दिन अुन्होंने आराम किया, न चैन लिया, न कभी शांतिसे बैठे। सफर करते समय भी अुन्होंने कभी सुख-सुविधाका विचार नहीं किया। और वे तो सारी जिन्दगी सफर ही करते रहे।

"भारतमें अैसे ही कार्यकर्ताओंकी जरूरत है, जो बात न करें परंतु काम करें। मैं हिन्दुस्तानके नौजवानोंको अितना याद दिलाना चाहता हूं कि

ज्यादा बोलने या भाषण झाड़नेसे सेवा नहीं होती। बोलनेका काम तो अुन्हींको करना चाहिये जिनकी सेवा अितनी बढ़ गअी हो कि जिससे वे देशको कुछ न कुछ अुपदेश दे सकें। सेवा सिपाहीसे ही हो सकती है और सिपाही बने बिना नेतागिरी नहीं हो सकती। अितने पर भी जो नेतागिरी करते हैं अुनको गिरनेका खतरा रहता है।

"ठक्करबापाका जीवन सेवासे अितना भरपूर है कि अुसका वर्णन करनेमें कअी दिन लग जायं। आज लंबी चौड़ी बातें करनेका समय नहीं। कहनेमें भी संकोच होता है, अिसलिअे मैं अुन्हें बधाअी देता हूं। आप सब भी शामिल होकर अीश्वरसे प्रार्थना कीजिये कि अैसे जन्म-दिन हमें बार बार देखनेको मिलें, ताकि हमारी जिन्दगी बढ़े और अिनकी भी।"

व्याख्यान पूरा करनेके बाद सरदारश्रीने ठक्करबापाको अभिनंदन-ग्रंथ अर्पण किया और अुनसे प्रेमपूर्वक आलिंगन किया।

यह सारा समारोह लोगोंकी भावना, नेताओंकी प्रेमपूर्ण अंजलियों और अभिनंदनोंकी वर्षासे तरबतर हो गया। बापा अितने प्रभावित हो गये कि क्षणभर अुनकी आंखोंमें हर्षाश्रु आ गये, अुनका गला भर आया। गद्‌गद कंठसे वे जवाब देने खड़े हुअे, परन्तु थोड़ी देर तक कुछ भी नहीं बोल सके। फिर आंखोंमें आंसू लिये भर्राअी हुअी आवाजसे वे जो थोड़ेसे शब्द बोल सके, अुनसे अैसा लग रहा था कि शब्दोंका स्रोत अुनके मस्तिष्कसे नहीं, परन्तु सीधा हृदयसे बह रहा है।

अुन्होंने कहा: "मेरा हृदय कुंठित हो गया है। आप सबका प्रेम देखकर मेरा दिल भर आता है। फिर भी अेक-दो बातें मैं जरूर कहना चाहता हूं। अेक तो मेरे जैसे मामूली आदमी अथवा हरिजनके लिअे अितना बड़ा समारोह, लोगोंका यह जमाव और दिखावा वगैरा करनेकी कोअी जरूरत नहीं थी। यह सारा अपराध पीछे बैठे भाअी देवदासका है। अुनके प्रेमके आगे मैं लाचार हूं। आज सवेरे हरिजन और सवर्ण भाअी सभी यहां आये, यह देखकर मुझे बहुत ही आनन्द हुआ है।

"सच पूछा जाय तो मेरा स्थान दिल्ली जैसे आलीशान शहरमें नहीं, परन्तु जंगलोंमें तथा गरीबोंकी झोंपड़ियोंमें है। वहीं मेरे लिअे काम पड़ा है। आपने भजन और गरबेमें वैष्णवजन और योगीराज वगैरा विशेषणोंसे मेरी तारीफ की है। परन्तु वास्तवमें देखा जाय तो मैं वैष्णव भी नहीं और योगीराज भी नहीं हूं। अिन वचनोंमें बहुत अतिशयोक्ति है। मैं तो अेक पामर प्राणी हूं। अिस संसारमें रहकर मुझसे भी अपराध हुअे हैं। जैसा मैं पहले बता चुका हूं, मैं जब अिंजीनियरके रूपमें नौकरी

कर रहा था अुस समय मैंने दो बार रिश्वत ली थी। और भजनमें कहे अनुसार 'वाच काछ मन निश्चळ राखे', अिस सच्चे वैष्णवके आदर्शके प्रति भी मैं पूरी तरह वफादार नहीं रह सका। मैंने दो अेक बार अपनी जवानीके जमानेमें व्यभिचारका दोष भी किया है। अिसलिअे मेरे जैसा कुटिल, खल और कामी कौन होगा? अितने पर भी आप मैं जैसा हूं अुसीको निभा रहे हैं, मेरा सम्मान कर रहे हैं, यह आप सबकी बड़ी अुदारता है। परन्तु अब तो काम करना भी मेरे बसकी बात नहीं रही, अितनी ज्यादा मेरी अुम्र हो गअी है और अब मैं आधा अंधा और आधा लंगड़ा भी हो गया हूं। पहलेकी तरह सफर भी तीसरे दर्जेमें नहीं कर सकता। अैसे निर्बल शरीरको लेकर मैं क्या कर सकता हूं? अिसके बावजूद भी आप सबने, पंडितजीने, सरदार वल्लभभाअी पटेलने और मौलाना साहबने मेरा जो सम्मान किया है, अुसके लिअे मैं सबका अत्यंत आभारी हूं।"

श्रावण महीनेकी बदली बरस जानेके बाद जैसे आकाश स्वच्छ हो जाता है, पहाड़ और जमीन धुलकर साफ हो जाते हैं, वैसे ही बापाके अिस हृदयके अिकरारने स्वच्छता और पवित्रताका वातावरण पैदा कर दिया। बापाका यह अिकरार बहुतोंको खटका। बहुतोंको यह अनावश्यक लगा। परन्तु बापाने तो, जैसा अुन्होंने बादमें कहा, यह कदम अुठाकर अपने हृदयका भार हलका कर दिया।

अिस प्रकार अुस दिनके प्रातःकालीन समारोहमें आनन्द और अुत्साहके साथ गम्भीरताकी भावना लिये सब जुदा हुअे। वहांसे लौटते समय श्री देवदास गांधीने अिस समारोहके बारेमें जो कष्ट किया था अुसके लिअे कृतज्ञता प्रकट करने बापा अुनके घर गये। वहां दो मंजिलकी सीढ़ियां चढ़नेमें वे खूब ही थक गये। फिर भी चढ़कर अूपर गये। अुस वक्त तक श्री देवदास गांधी घर वापस नहीं आये थे। अिसलिअे बापा वहां ठहर गये और थोड़ी देर बाद जब वे आ पहुंचे, तो अुनसे मिलकर फिर दोपहरको संविधान-सभाकी बैठकमें शरीक होनेके लिअे चल दिये। वहांसे दोपहरके बाद अुद्योगशालामें अपने निवासस्थान पर लौटे।

अुस दिन दिनभर बापाको बधाअी देनेवाले तार और डाकसे सन्देश आते रहे। अुनमें अलग अलग प्रान्तके मंत्रियों और गवर्नरोंसे लगाकर कार्यकर्ताओं, संस्थाओंके संचालकों, अलग अलग पाठशालाओंके विद्यार्थियों, खास तौर पर हरिजनों तथा पिछड़े हुअे वर्गोंके विद्यार्थियों और बहनों वगैराके संदेश थे। ये तार और डाकके ढेर देखने पर ही कल्पना हो

सकती है कि बापाने अितने वर्षोंके परिश्रम और तपके अंतमें कैसे भगीरथ काम किये हैं, कितने अधिक मनुष्योंके साथ अपनी आत्माके तार मिलाये हैं, कितने ज्यादा आदमी अुनके किसी न किसी अुपकारके बोझसे दबे हुअे हैं और कितने मनुष्य अुनसे सतत प्रेरणा लेते रहते हैं। बापासे पथ-प्रदर्शन पानेके लिअे अुत्सुक कार्यकर्ता हो, पिछड़े हुअे वर्गोंका विद्यार्थी हो, छात्रवृत्तिके लिअे मेहनत करनेवाली कोअी विद्यार्थिनी या विद्यार्थी हो या सगे-संबंधीके मर जानेके बाद जीवनमें खालीपन लगनेके कारण आश्वासनके लिअे अेकमात्र आश्रय-स्थान खोजनेवाला कोअी दुःखी जन हो — सभीने बापाको ८१ वें वर्षके शुरूमें याद किया, अुन्हें अभिनंदन भेजे और अुनके दीर्घ जीवनके लिअे प्रार्थना की।

अुस दिन दोपहरके बाद ३–३० से ५ बजे तक हरिजन अुद्योगशालाके कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों, बहनों और भाअियोंने सारे अवसर पर सुवर्ण कलश चढ़ानेवाला अेक भव्य और चित्रात्मक समारोह रखा था। अुसका अध्यक्षपद श्री पुरुषोत्तमदास टंडनने ग्रहण किया था। अिस समारोहमें बापाको बधाअी देने और दीर्घायु चाहनेवाले संदेश पढ़े जानेके बाद बापाने काफी लम्बा व्याख्यान दिया था। अुसमें अुन्होंने कहा :

"मेरे जीवनमें चार गुरु थे : मेरे पिता, पूनाके श्री धोंडो केशव कर्वे, जो आज ९३ वर्षकी अुम्रमें भी क्रियाशील जीवन बिता रहे हैं, स्वर्गीय श्री शिन्दे और श्री जी० के० देवधर। अिन सबमें से अेक कर्वेके सिवाय आज कोअी जीवित नहीं है। महात्मा गांधी और श्री गोपालकृष्ण गोखलेको मैं अपने गुरुकी कक्षामें नहीं रखना चाहता, क्योंकि अिन दो महात्मा पुरुषोंका शिष्य कहलाने योग्य मैं अपनेको नहीं मानता। परन्तु अूपर बताये हुअे चार गुरुओंमें से पिताजीके सिवाय बाकी तीन तो मेरे गुरु भी थे और बुजुर्ग साथी भी। अुनके प्रति मेरा जो ऋण है, वह मैं कभी नहीं भूल सकूंगा। खास तौर पर अपने पिताके प्रति मेरा ऋण सदा ही नजरके सामने रहेगा।

"अिसके सिवाय, जिन अन्य तत्त्वोंसे मैंने सार्वजनिक सेवाके पाठ सीखे, अुनमें मैं भारतमें फैले हुअे अीसाअी मिशनोंको रखता हूं। क्योंकि मैं सार्वजनिक सेवाके क्षेत्रमें सक्रिय रूपमें काम करने लगा, तब अिन मिशनोंने मुझे खूब प्रेरणा दी। आप सब जो यहां अुपस्थित हैं, अुनसे मैं विनती करता हूं कि आप अिन मिशनोंको तिरस्कारकी नजरसे न देखिये, अुनका अनादर न कीजिये, परन्तु अुनकी काम करनेकी पद्धतिका अध्ययन कीजिये और अुनसे पदार्थपाठ सीखिये। कोढ़ियोंकी सेवा करनेकी, अुनके कल्याणके

कार्य करनेकी भावनाकी ज्योति अिन ओसाओ मिशनोंने ही मुझमें जगाओ थी।"

अन्तमें भाषण पूरा करते हुओ अुन्होंने कहा कि, "भारत देशमें आज यदि सबसे बड़ी जरूरत किसी चीजकी है, तो वह अनुशासनकी और जवान लोगोंमें — स्त्रियों और पुरुषोंमें — सेवाकी भावना पैदा होनेकी है। अिन दो वस्तुओंका देशमें जो अभाव है, अुसे देखकर मुझे अत्यंत दुःख होता है। परन्तु मेरा यह विश्वास है कि देशके बड़े बड़े सवालोंका हल तभी होगा, जब ये जवान लोग देश और दीन-दुःखियोंकी सेवामें अपने आपको समर्पण करेंगे। अिसीलिअे अुद्योगशालाके बालकोंको आज मैं आशीर्वाद देता हूं कि तुम सब पढ़-लिखकर बड़े हो जाओ और तुम्हारे लिअे मैंने जो अूचीसे अूंची और बड़ी आशाअें रखी हैं अुन्हें पूरा करनेमें सफल बनो। ओश्वर तुम सबको यह शक्ति दे, यही प्रार्थना है।"

बापाकी अिस सुवर्ण जयंतीके समारोहके विशेष अवसर पर अुनके कुछ साथी, सम्बंधी और मित्र वगैरा जो आये थे, अुनमें बापाके भतीजे श्री रामू ठक्कर भी थे। शामको अिनसे और अन्य अेक भाओसे बापाने भजन गवाये। और श्री जगदीशन्‌से अुनके 'स्मारक-ग्रंथ'में से कुछ लेख पढ़वाकर सुने। रामूभाओकी सुन्दर बुलंद आवाजसे गाये हुओ भजनोंसे वे बड़े प्रसन्न हुओ और अिसका अुल्लेख अुन्होंने अुस दिन अपनी डायरीमें किया।

परन्तु अिसमे भी लाक्षणिक बात यह थी कि जो बापा डायरीमें किसी दिन अेकसे ज्यादा पन्ने नहीं भरते थे, अुन्होंने अुस दिन पूरा अेक पन्ना और भरा और अुसमें कलापीका "ज्यां ज्यां नजर मारी ठरे यादी भरी त्यां आपनी" यह अपना प्रिय गीत पूरा लिख डाला और दूसरा "अूडी जा तूं गाफिल गाभरा तारे अन्तरे शी आंटी रही" मानव-जीवनकी क्षणभंगुरताका अुपदेश करनेवाला गीत भी लिखा।

कौन कह सकता है कि अिन दोनों गीतोंका लेखन अुनके ८० वर्षके जीवनका जोड़-बाकी करनेके बाद अुस दिन अुनके अंतरमें जो मनोमंथन हुआ, अुसका प्रतिबिम्ब नहीं था?

बाहरके अिन समारोहों, संदेशों और भाषणोंकी भरमारके बीच बापाने तो अेक श्रेयार्थीकी तरह अिन सारी बाह्य क्रियाओंसे अपनी अिन्द्रियोंको समेटकर मानो ओश्वरके साथ अपने हृदयके तार मिला देना चाहते हों, अिस तरह अंतरमें अेक डुबकी लगाओ। वहां अुनके मनोमंदिरमें तो निरंतर अिन भजनोंका ही घंटारव सुनाओ देता रहा। अिसका परिणाम यह हुआ कि दिनभरकी प्रवृत्तिकी धूमधामके बाद रातको जब

अुन्हें शान्ति और समय मिला, तब अुनके निर्मल अन्तःकरणमें गाये जा रहे अिन दो गीतोंको अुन्होंने कागज पर अुतारकर अक्षर-देह प्रदान किया। और अिस प्रकार दिल्लीमें और देशमें जब अुनके कार्योंकी तारीफ हो रही थी, तब अंतर्दृष्टिसे मनुष्य-देहकी क्षणभंगुरताका खयाल करके अीश्वरका नाम लेकर और सारी चिन्ताओंका भार अुसे सौंपकर वे आरामसे सो गये।

३५

निवृत्तिमें प्रवृत्ति

दुनियामें अपने परिश्रमका फल अपने जीवनमें ही देखनेका सौभाग्य बहुत कम लोगोंको मिलता है। बापा अैसे सौभाग्यशाली सत्पुरुषोंमें से अेक थे। जवानीमें कदम रखनेके बाद लगभग २१ वर्ष जिन्होंने कुटुम्ब-सेवा और समाज-सेवा की और ३७ वर्ष तक निर्मल लोकसेवा और देशसेवा की, अुनका जीवनकार्य अब पूरा हो रहा था। कुदरतकी तरफसे अुन्हें अिसका संकेत मिल गया था। अिसीलिअे तो बापाके हृदयमें निवास करनेवाले आत्मारामको अुड़ जानेके लिअे कोअी आवाज दे रहा था। परन्तु फिर भी अितना काम अधूरा है, अितना पूरा कर लूं, अिस तरह मानकर बापा 'अुड़ जानेकी' पूरी तैयारी रखकर भी काम किये जा रहे थे। अुनकी ८१ वीं जन्म-जयंती मनानेके बाद भी तबीयत जरा अच्छी होने पर वे बिहारमें घूम आये। बिहारमें हरिजनोंकी स्थितिकी जांच करनेके लिअे जो जांच-समिति नियुक्त हुअी थी, अुसके अध्यक्षके नाते वे बिहारमें कुछ स्थानों पर घूमे और हरिजनोंके बारेमें जानकारी अिकट्ठी की। खास तौर पर बिहारकी मुशाहर जातिकी स्थिति देखकर अुनका हृदय रो अुठा। अुसकी सेवाके लिअे कोअी स्थायी व्यवस्था होनी चाहिये, यह अुन्होंने मनमें तय कर लिया। साथ ही वे बिहारमें जनवरीमें दुबारा आनेका वादा कर रहे थे। परन्तु अुनके दौरेमें साथ रहे हरखचंदभाअीने बिहारी भाअियोंको समझा दिया था कि अब बापाकी बाट न देखना, सब काम आपको ही निबटाने हैं। अिसी प्रकार वे राजस्थान और पंजाबकी भी अंतिम यात्रा कर आये। पंजाबमें निर्वासितोंकी बड़ी बस्ती बसी हुअी थी। वहांके कार्य-कर्ताओंकी अिच्छा बापाके हाथों अुस बस्तीका अुद्घाटन करानेकी थी। अिस-लिअे अुस बहाने वहां भी हो आये और राजपुरमें निर्वासितोंकी बस्तीका

अुद्‌घाटन कर आये। अिसी प्रकार राजस्थानका भी आखिरी सफर कर आये। अिसके बाद अुनकी तबीयत धीरे धीरे बिगड़ती गयी। दूसरी तरफ पिछले चार वर्षसे अुनके भाअी डॉ० केशवलाल ठक्कर समय समय पर अुन्हें भावनगर आनेका आग्रह कर रहे थे। नोआखलीमें बीमार पड़नेके बाद वे काफी अशक्त हो गये थे, अुस अर्सेमें भी अुन्होंने अेक बार बापासे आग्रह किया था। गांधीजीको अिस बारेमें पत्र भी लिखा था और गांधीजीके साथ चर्चा भी की थी। परन्तु बापा जब तक अुनमें शक्ति हो तब तक सेवाका क्षेत्र छोड़नेवाले नहीं थे। अिसलिअे गांधीजी और बिड़लाजीके साथ पत्रव्यवहार करने और अुनके साथ अिस प्रश्नकी चर्चा करनेके पश्चात् अुस समय तो अुन्होंने भावनगर जाना मुलतवी कर दिया था। अिसके तीन चार वर्षके पश्चात् वही स्थिति और संयोग पैदा होने पर और यह भरोसा हो जाने पर कि अब शरीर काम नहीं देगा, अुन्होंने छोटे भाअीकी मांग स्वीकार की और जीवनके अन्तिम दिन अपने वतनमें भाअी, भौजाअी, भतीजों और अन्य कुटुम्बीजनोंके सान्निध्यमें बितानेके लिअे सहमत हुअे।

दिल्लीसे भावनगर जाते हुअे वे बीचमें महेसाणा रुके। वहां बापा रविशंकर महाराजके अेक मित्र श्री विजयकुमार त्रिवेदीके यहां ठहरे। दोपहरको भोजनके बाद आराम किया। शामको गुजरात हरिजन-सेवक-संघके कार्यकर्ताओंके साथ बातचीत की। अुसके बाद महेसाणासे कोअी डेढ़ मील दूर स्थित हरिजनोंका 'रामपीर मंदिर' देखा।

रातको महेसाणासे रवाना होकर दूसरे दिन सबेरे सुखपूर्वक भावनगर आ पहुंचे।

भावनगरमें भी अेकाध सप्ताह तक सगे-सम्बन्धियों, मित्रों और कार्यकर्ताओं वगैराका मेला लगता रहा। सब अुनसे अेकके बाद अेक मिलने जाते, अुनकी तबीयतके हालचाल पूछते और सुविधानुसार दस बीस मिनट बैठ कर चले जाते। अिस बीच अुन्होंने कितनी ही पुरानी जानपहचानें ताजी कीं, पुराने सम्बंध याद किये और सबसे प्रेमके साथ मिले।

बापाकी तबीयत कभी कभी खराब हो जाती थी, अिसीलिअे तो वे जीवनके अंतिम दिवस आरामसे बितानेके लिअे भावनगर आये थे। १९४७ में तो अेक बार अुन्होंने निवृत्ति लेनेका निश्चय भी कर डाला था, परन्तु १९४८ में गांधीजीका जिस ढंगसे देहावसान हुआ, अुसे देखकर अुन्होंने अपना निर्णय बदल डाला। और जिस प्रकार अुनके जीवनसे प्रेरणा प्राप्त करके अुन्होंने अनेक काम किये थे, अुसी प्रकार अुनकी मृत्युसे भी प्रेरणा ली और अपने मनमें निश्चय किया कि जैसे गांधीजी जीवनके

अंतिम क्षण तक काम करते करते, कर्तव्य-कर्म पूरा करते करते ही मृत्युको प्राप्त हुअे, वैसे ही मैं भी जीवनकी अंतिम घड़ी तक कर्तव्य-कर्म करता रहूंगा और अिस प्रकार काम करते करते ही आखिरी सांस छोडूंगा। अुनकी यह अभिलाषा और कर्मशील स्वभाव अुन्हें आरामसे बैठने नहीं देता था। अिसीलिअे भावनगरमें निवृत्तिमय जीवन बितानेका मित्रों और सगे-सम्बंधियोंका आग्रह होने पर भी अुनका मन निवृत्तिमें प्रवृत्ति ढूंढ़ निकालता और अेक काम पूरा न हो पाता कि दूसरे दो काम पैदा कर देता।

२० मार्चको दिल्ली छोड़नेके बाद वे पूरे अेक वर्ष भी नहीं जिये। ठीक दस महीनेमें वे अिस फानी दुनियाको छोड़ कर चले गये। परन्तु दस महीनेके थोड़ेसे अर्सेमें अुन्होंने कितना काम कर डाला!

भावनगर पहुंचनेके बाद अुनकी दिनचर्याका खयाल अुनकी डायरीके नीचे लिखे अंशोंसे होगा:—

२२ ता० को सुबह भावनगर पहुंचनेके बाद सगे-सम्बंधियों और दूसरे मिलनेवालोंका प्रवाह तो शुरू हो ही गया, अुसी दिनसे अुनका डाकके पत्रोंका जवाब लिखनेका काम भी आरंभ हो गया। अुस दिन शामको दोपहरके आरामके बाद पत्रव्यवहारका काम शुरू कर दिया। सेवकरामको रामसा निराश्रित छावनी सम्बंधी पत्र लिखा। अिसके सिवाय श्री वेदपाल त्यागी, मलकानीजी, शिवम् और मनमोहन वगैराको पत्र लिखवाकर तथा टाअिप कराकर भिजवाये।

अुसी दिन अुन्होंने भारत-सरकारके बजटमें जनताकी शिक्षाके प्रति सरकारने सौतेली मां जैसा जो बर्ताव दिखाया, अुसकी कड़ी आलोचना करनेवाला अध्ययनपूर्ण लेख पूरा किया।

अिसके बाद दूसरे ही दिन प्रोफेसर यार्दे, श्री बापट, श्री पांडुरंग वणीकर, श्रीमती सुमित्राबहन गोखले वगैराको पत्र भेजे। अिसके अलावा श्री रूपलाल सोमाणी, श्री मनमोहनसिंह महेता और राजस्थानके अन्य कार्यकर्ताओंको भी पत्र लिखे। चन्दनसिंहको मध्यभारत सेवा-संघ सम्बंधी पत्र लिखा।

२४ ता० के दिन श्री जे० पाठक, आसामके कार्यकर्ता श्री भंडारी, श्री काशीनाथ, श्री राव वगैराको पत्र लिखे। श्री वैद्यको हैदराबादके हरिजन-कार्य सम्बंधी और धर्मदेव शास्त्रीको जमीनका फार्म वापस लेनेके बारेमें पत्र लिखे। हरखचंदभाअीसे श्री पुष्पाबहन महेता, श्री बलवन्तराय महेता, श्री नानाभाअी भट्ट, श्री छगनलाल जोशी वगैराको गुजराती पत्र लिखवाये।

फिर दोपहरमें जगदीशन्‌को धर्मदेव शास्त्रीकी कुष्ठरोगियोंकी सेवा-सम्बंधी योजनाके बारेमें पत्र लिखा। अेच० आर० गौतमकी हिमाचल प्रदेशमें स्त्रियोंको शिक्षा देनेकी योजना पढ़ी और अुन्हें पत्र लिखकर अिस सम्बंधमें धर्मदेव शास्त्रीसे मिलनेकी सूचना दी।

अुसी दिन श्री भूपेन्द्रसे सौराष्ट्रके अर्थमंत्रीका सन् १९५०–५१ के वर्षका बजट सम्बंधी १५ पन्नेका भाषण पढ़वाया।

सेवकरामने शिवम्‌को बेंक अेकाअुन्ट कमेटीमें क्यों नहीं लिया, अिसके लिअे श्रीमती रामेश्वरी नेहरूको तार दिया। और बादमें अेक लम्बा गुस्सेसे भरा हुआ पत्र लिखा। अुसकी नकल सेवकराम और शिवम्‌को भेज दी। दूसरे पत्रोंका भी निबटारा किया।

२६ ता० को पिछले दिनके बचे हुअे पत्रोंको निबटाया। शिवम्‌को रामेश्वरी नेहरूके नाम भेजे हुअे तारके सम्बंधमें पत्र लिखा। फिर निर्वासितोंको अजमेरसे कंडला तकका पास मिलनेका बंदोबस्त करानेके लिअे सेवकरामको पत्र लिखा। अिसके अलावा बिजापुर जिलेकी देवदासियोंके सम्बंधमें वैकुण्ठभाअी महेता और बम्बअीकी अदालतके अेक न्यायाधीशको पत्र लिखे। अुसके बाद पुराने अुदयपुर राज्यमें स्थित जयसेमेलके पालवी मेवासके लोगोंकी शिकायतवाला पत्र पढ़ा। अुन्होंने खुद जंगल साफ करके जो जमीन सुधारी थी, अुसमें से अुन्हें निकाल दिया गया था। अिसलिअे राजस्थानमें छः आदमियोंको पत्र लिखे। अुन्हें हिन्दीमें टाअिप करने और वहींसे राजस्थानके अुन भाअियोंको भेज देनेकी सूचना दी।

त्रिवेणीबहनसे मिला। मैं आराम कर रहा था तब रामचरणने 'टाअिम्स' पढ़ा। सरहदी अिलाकोंके बारेमें श्री काटजू साहबका वक्तव्य पढ़ा।

डॉ० काणे तथा श्री छोटालाल त्रिभोवन मिलने आये।

भावनगरकी पोलिटेकनिक अिन्स्टिटयूशनके कार्यकर्ता श्री पी० वी० पोपट मिलने आये। अिस साल सिर्फ छः विद्यार्थी हैं और मासिक खर्च पांच हजार रुपया है।

छोटाभाअीने अपने सेवाकार्यके बारेमें विस्तारसे वर्णन किया और दूसरोंकी नोटिसबोर्ड पर कलअी खोलनेकी धमकीके बारेमें भी बात की। शान्ताको २५ रु० मासिककी मदद हर महीने भेजनेके सम्बंधमें शिवम्‌को पत्र लिखा।

२७ ता० को रामचरणसे पत्र लिखवाकर डाक निबटाअी। मंडलाके वनवासी मंडलके बजट पर आलोचना लिखवाअी और बजटकी रकम ९४,००० रुपयेसे घटाकर ५९,५०० तक ले जानेकी सूचना दी। आसामके

मंत्रियोंको मीकी लोगोंके कल्याण और अुन्हें डॉक्टरी सहायता देनेके बारेमें पत्र लिखे। श्यामलालका पत्र आया। अेक संस्थाके अेक लाख रुपयेके ट्रस्टके रिक्विजीशन फॉर्म पर हस्ताक्षर किये। स्वामी विश्वानन्दके पत्र आये। विट्ठलदास पटेल तथा छोटाभाओी मिले। अुनके साथ अुनकी पुस्तक 'छाछ और घास' के बारेमें बातें कीं।

ता० २८ को धारूमलकी डायरीके संबंधमें शिवम्‌को पत्र लिखवाया। अुसमें शिवम्‌को सूचना दी है कि धारूमलके लिअे ५०० अथवा १,००० रुपये लेकर त्यागीको भेज देना। मानशंकर भट्ट आये और अुन्होंने शिशु-विहारके अहातेकी दीवार और नये मकानके बारेमें बात की। वहां बालमंदिर चलाया जायगा और यहां भी अुनके साथी भजनों और गीतोंका जलसा रखेंगे।

नये मंत्री दयाशंकर दवे मिलने आये। अुनके साथ १,८०० सिन्धी भाअियोंके लिअे मकानों और दुकानोंकी व्यवस्था करनेके बारेमें बात की। अुसके बाद बलवन्तराय और चोरवाड़के श्री जीवणलाल भी आये।

सवेरे दफ्तरका काम मामूली था, परंतु दोपहरके बाद डाकका काम बढ़ गया था। वणीकरके छः जनोंके हस्ताक्षरवाले स्मरणपत्रका जवाब लिखा। ता० १९ को दिल्लीमें श्री पंजाबराव देशमुख द्वारा किये गये कार्यकी तफसील पढ़ी। बिहार और अुत्तरप्रदेशके कस्तूरबा कार्य संबंधी सुशीलाके आसनसोलसे लिखे हुअे पत्रका जवाब लिखा। राजस्थान-सेवा-संघके दस महीनेके बजटका विवरण पढ़ा। बजट १,५४,००० रुपयेका था।

८ बजे श्री राजेन्द्रबाबूका रेडियो-प्रवचन सुना। यह प्रवचन कराचीसे लियाकतअलीके दिये हुअे लड़ाअीकी भावनासे भरे हुअे भाषणसे बिलकुल अुलटा ही था। पार्लियामेन्टकी दूसरी खबरें सुनीं। चितलिया और कपिलभाओी वगैरा आये थे, अुनसे मिला।

३० मार्च — आज आत्मारामका अुपवास शुरू करनेका दिन था। छोटाभाओी और मानशंकर कल रातको अुससे मिलने गये थे, परंतु दोनोंने बताया कि आत्माराम अपनी हठ छोड़नेवाला नहीं। आत्माराम और छोटाभाओी फिर ३॥ बजे आये। अुनके साथ दो घंटे चर्चा करनेके बाद वे लगभग आधे पिघले और १५ दिन अुपवास मुलतवी रखनेका मेरा प्रस्ताव माननेको तैयार हो गये। बादमें यादवजी मोदीने आत्माराम और अुनकी पत्नीके साथ चर्चा की और अन्तमें सब कुछ निबट गया। यद्यपि अिस परिणामकी आशा नहीं रखी गअी थी, फिर भी अितने प्रयत्नके बाद जो कुछ हुआ सो अच्छा ही हुआ।

सवेरे खूब डाक आअी, परंतु अुसे निबटा नहीं सका।

१०-३० से १२ तक अखबार पढ़े। पूर्व बंगालकी सनकी लाखों गाठें पश्चिम बंगालको बेचनेके बारेमें वार्तालाप पूरा हो गया है और समझौता हो गया है। दोनों सरकारोंकी मंजूरीकी प्रतीक्षा की जा रही है।

अिन आठ दिनोंकी बापाकी डायरीमें लिखे हुअे कामका अुल्लेख यहां अिसीलिअे किया गया है कि पाठकको बापाकी विविध प्रवृत्तियोंका खयाल हो जाय। दिल्लीसे भावनगर आये थे आराम लेनेके लिअे, निवृत्तिमय जीवन बितानेके लिअे, परंतु भावनगर आकर निवृत्तिमय जीवन व्यतीत करनेके बजाय मामा कोठाकी तीसरी मंजिलको अुन्होंने हरिजन-सेवक-संघ, भील-सेवा-मंडल, कस्तूरबा-ट्रस्ट और कअी दूसरी संस्थाओंका केन्द्रीय कार्यालय बना डाला। जीवनभर प्रवास, पुरुषार्थ और सेवाकार्य करके अुन्होंने भारतके लगभग सभी प्रान्तोंमें जो सेवा-संस्थाअें और अुनकी शाखा-प्रशाखाअें फैलाअी थीं, अुन सबको सीधा दिल्लीके साथ संबंध रखनेके लिअे तो कभीसे सूचित कर दिया था और अुनकी जिम्मेदारी भी विधिपूर्वक दिल्ली, दाहोद वगैरा केन्द्रोंको सौंप दी थी। फिर भी बापा पत्रों द्वारा अिस बातकी पूछताछ करते रहते कि प्रत्येक संस्था कैसे चल रही है, अुन्हें क्या कठिनाअियां हैं, अुनके बजट कैसे तैयार होते हैं, अमुक प्रान्तमें हरिजनोंकी क्या स्थिति है, फलां प्रदेशमें अुन्हें जमीन परसे हटा देनेके बाद जमीन फिर मिली या नहीं, अमुक प्रदेशमें निर्वासितोंके लिअे मकान तैयार हुअे या नहीं। अिस प्रकार आसाम, बिहार, राजस्थान, अुड़ीसा, मध्यप्रान्त, हैदराबाद, दक्षिणके प्रान्त, अुत्तरप्रदेश आदि सभी प्रदेशोंकी संस्थाओंके साथ सम्पर्क साधकर अुन्होंने अुनके साथ पत्रव्यवहार जारी रखा। अूपर तो सिर्फ आठ दिनके कार्यका नमूना दिया गया है, परंतु अुनकी डायरीके पन्नों पर आगे नजर डालते है तो ठेठ आखिरी दिनों तक अुनका पत्रव्यवहार अुसी तरह नियमित रूपसे चलता रहा, जैसे पटरी पर गाड़ी चलती रहती है। सब संस्थाओंकी, सब सेवकोंके कार्यकी, संस्थाओंके बजटकी और अुनके सामने पैदा होनेवाले विशेष प्रश्नोंकी अुन्होंने जानकारी रखी और जब जब जरूरत पड़ी, तब तब अुन्हें पत्रव्यवहार द्वारा और दूसरी तरहसे मदद दी और अुनकी कठिनाअियां दूर कीं।

बापाको भावनगर आये १५-२० दिन ही हुअे थे। अितनेमें तो वे सौराष्ट्रके कांग्रेसी मंत्रियों, बहुतसे कांग्रेस कार्यकर्ताओं, रचनात्मक क्षेत्रमें काम करनेवाले सेवकों और हरिजन-सेवकोंसे मिल लिये। अुनके प्रश्न समझे, अुनकी कठिनाअियां जानीं और अपनी रुग्णावस्थामें बिस्तर पर बैठे बैठे भी यथाशक्ति अुनकी सहायता करनेकी कोशिश की।

भावनगरमें आनेके बाद बापा सबसे ज्यादा ध्यान पिछड़ी हुअी मानी जानेवाली जातियोंके अुत्कर्ष पर केन्द्रित करने लगे; क्योंकि अुनका यह खयाल था कि जैसे हरिजनोंके प्रश्नोंके सम्बंधमें गांधीजीने महान आन्दोलन चलाया और अुसके परिणामस्वरूप बहुतसे सवर्णोंने अुस कार्यको अपना जीवनकार्य बनाया, अुसी तरह अिन पिछड़ी हुअी और दबी हुअी जातियोंके अभागे लोगोंको अूंचा अुठानेके लिअे व्यापक आन्दोलन होना चाहिये। अुनकी यह मान्यता होनेके कारण जब सौराष्ट्र हरिजन-सेवक-संघके मंत्री श्री छगनलाल जोशी अुनसे भावनगरमें मिले, तब बापाने अुनसे यह काम हाथमें लेनेका अनुरोध किया और अिसके लिअे सौराष्ट्रमें पिछड़ी हुअी मानी जा सकनेवाली जातियोंकी सूची तैयार करनेकी सूचना की।

अुनके मनमें अिन दबी हुअी, लुटी हुअी और अुपेक्षित पिछड़ी जातियोंके अुत्कर्षके विचार किस प्रकार घुल रहे थे, अिसका कुछ खयाल श्री छगनलाल जोशीकी मुलाकातके बाद अुन्हें लिखे गये बापाके दो पत्रोंसे होता है। पहली बार श्री छगनलाल जोशीके अुनसे भावनगर मिलकर जानेके बाद अुन्होंने तुरंत ही अेक पत्र ५ अप्रैलको अंग्रेजीमें लिखा था। वह अिस प्रकार है:

"प्रिय छगनभाअी,

(पिछड़ी हुअी जातियोंके सेवाकार्यके विषयमें)

"१. भावनगरसे बिदा होनेके पहले तुमने अेक बहुत ही सुन्दर और पवित्र शब्द काममें लिया था। मैंने तुम्हें जो काम सौंपा, अुसे तुमने मिशन बताया। मुझे आशा है कि अेक अच्छे ब्राह्मण मिशनरीकी तरह — अेक संन्यासीकी भांति तुम यह काम करोगे और जिन्हें आज शताब्दियोंसे ज्ञानके प्रकाशसे वंचित रखा गया है, अुन सबके समक्ष ज्ञानकी मशाल ले जाओगे। अब कामके ब्यौरे पर आता हूं: —

"(१) पिछड़े हुअे वर्गोंका विवरण सरकारी अलमारीमें धूल चाटता पड़ा होगा। अुसे भले बनकर अच्छी तरह पढ़ लेना।

"(२) अुसमें छोटी बड़ी २९ जातियां बताअी गअी हैं। अुनके संबंधके आंकड़े, ब्यौरे और किस किस जगह कौन कौनसी जाति मुख्यतः बसी हुअी है, ये सब बातें मुझे भेजना।

"(३) अिनमें सबसे पहले भरवाड़, रबारी, वाघरी या अन्य जो जातियां संख्याकी दृष्टिसे बड़ी हों, अुनके अनुसार काम हाथमें लेना।

"(४) अिस कामके संबंधमें तुम्हारे पास जब तक कोअी संगठन न हो, खास तौर पर जातिवार मंडल या संगठन न हो, तब तक कोअी ठोस काम नहीं हो सकेगा। अुन लोगोंको कुछ अपनापन लगे, कुछ स्वाभिमान

जाग्रत होता मालूम हो, अैसा काम करना चाहिये। अिसमें जो भी खर्च हो अुसका बोझ वे लोग खुद ही अुठायें और सरकार अुसमें मदद करे।

"(५) समय समय पर जातिवार संमेलन किये जायें। अिस पर यह आलोचना भी होगी कि अिसमें साम्प्रदायिकता है, परंतु अिसकी परवाह न करना।

"(६) अैसी कोशिश की जाय जिससे अिन लोगोंका (क) शिक्षाकी दृष्टिसे, (ख) आर्थिक दृष्टिसे, (ग) सामाजिक दृष्टिसे और (घ) अन्तमें राजनीतिक दृष्टिसे भी अुत्कर्ष हो। पहले दो साल तक राजनीतिक मामलोंमें पड़नेकी जल्दबाजी न की जाय।

"(७) अिस समय हमारे लिअे सारी परिस्थितियां अनुकूल हैं। तुम हर जातिका मंडल या संगठन बना कर अुसे आगे बढ़ाते रहो। रचनात्मक समिति अिन पिछड़े हुअे स्त्री-पुरुषों और बालकोंकी सच्ची रचनाका काम हाथमें ले ले।

"(८) अिन लोगोंके बीच सुधारका काम करके ये हम सबकी कक्षामें पहुंच जायें, अैसी स्थिति लानेके लिअे नये संविधानमें दस वर्षकी अवधि रखी गअी है। मैं तो दस वर्ष तक बैठा नहीं रहूंगा, परंतु तुम तो रहोगे ही (यह मेरा शुभाशीष है) और १९६० तक अिन लोगोंके साथ हाथसे हाथ मिलाकर और कन्धेसे कन्धा लगाकर आगे कूच करते होगे।

"(९) अिन २९ जातियोंके लाभार्थ गुजरातीमें कुछ न कुछ छपवाते रहना।

तुम्हारा शुभचिन्तक
अ० वि० ठक्कर"

यह पत्र लिखनेके बाद तुरन्त ही बापा बीमार पड़ गये और बीचमें तो बीमारीने अैसा स्वरूप ग्रहण कर लिया कि देशभरमें चिन्ताकी लहर फैल गअी। परंतु अीश्वरकी कृपासे और देश तथा विशेषत: दलित लोगोंके सौभाग्यसे बापा थोड़े ही समयमें अच्छे हो गये। थोड़ा काम करने लायक हो गये हैं, अैसा लगते ही अुन्होंने अपना काम संभाल लिया और पहले ही दिन जब सौराष्ट्र रचनात्मक समितिके अध्यक्ष श्री नारणदासगांधी अुनसे मिलने आये, तब अुनके सामने भी अपने हृदयमें घुल रही यह बात अुन्होंने रखी। अिस विषयके समाचार और जरूरी सूचना देनेके लिअे श्री छगनलाल जोशीको अुन्होंने जो पत्र लिखा था, वह अिस प्रकार है:

भावनगर,
१९ अप्रैल, १९५०

"प्रिय श्री छगनभाअी,

(श्री नारणदास गांधी मिलने आये अुस प्रसंगके शुभ समाचार)

"कल शामको श्री नारणदास गांधी मुझसे मिलने आये थे। अभी मैं अच्छा हुआ ही था और पहले पहल कल काम शुरू किया ही था कि श्री नारणदासभाअीसे अिस प्रकार भेंट हो गयी, यह मुझे बहुत अच्छा लगा। सौराष्ट्रकी जिन २९ बिलकुल पिछड़ी हुअी जातियोंके बारेमें मैंने तुम्हें पहले लिखा था, अुस विषयमें मैंने अुनसे बात की। अुन्होंने कहा कि अिस संबंधमें अुन्हें सब मालूम है। अिस कामके महत्त्वके बारेमें मैंने अुनसे खूब जोर देकर कहा और पारस्परिक भावनासे प्रेरित होकर अुन्होंने अिस कामके संबंधमें हार्दिक आश्वासन दिया। मेरे दिलको लगा कि अब वे तुम्हें, सब सेवकोंको, सरकारको और जिन रचनात्मक कार्यकर्ताओंके वे मुखिया हैं, अुन सबको साथ लेकर अिस संबंधमें यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे। मैंने कहा, 'मेरे लिअे अितना काफी है', और अुन्होंने मुझे अुस प्रसिद्ध अंग्रेजी भजनकी पंक्ति याद दिलाअी — 'मेरे लिअे अेक कदम काफी होगा।'

"अिस प्रकार बीमारीसे अुठनेके बाद तुरन्त ही मेरा बोझ हलका हो गया है। अब तुम अिस पत्रकी नकल मंत्री श्री मनुभाअीको, अुनके सेक्रेटरी श्री बधेकाको और जिस जिसको अिस मामलेमें दिलचस्पी हो अुस अधिकारीको पहुंचा दोगे न?

तुम्हारा शुभचिन्तक
अ० वि० ठक्कर"

अिन पत्रों पर टिप्पणी लिखते हुअे सौराष्ट्र रचनात्मक समितिके मुखपत्र 'स्वराज-धर्म' के सम्पादक मअी, १९५० के अंकमें लिखते हैं:

"कितनी अूंची निष्ठा, ध्येयकी कितनी अुत्कट भक्ति, कैसी आदर्श अेक-लक्ष्यता, अेक निशान तय करनेके बाद अुस तक सफलतापूर्वक पहुंचनेके लिअे कैसी सतत जागृति, कैसी अहर्निश रटन और कैसी अखंड अुपासना चाहिये, अिसका बापा सचमुच अनुपम अुदाहरण अुपस्थित करते हैं।

"८१ वर्षकी अुम्रमें बापा जो चिन्ता कर रहे हैं, प्रसन्नतापूर्वक कामका जो बोझ अुठा रहे हैं, जो अुत्साह, लगन और मिशनरीका जोश दिखा रहे हैं, वह सर्वथा सुप्त प्राणोंको भी जाग्रत करनेवाला है।"

जब भावनगरमें 'शिशु-विहार' नामक पिछड़ी हुअी जातियोंके अुत्कर्षकी संस्था और अुसके कामके बारेमें अुन्होंने जाना और अुसके बाद अुस संस्थाको आंखों देखा, तब वे खूब खुश हुअे और वहांके कार्यकर्ता श्री मानशंकर भट्ट और अुनकी मित्रमंडलीको बधाअी दी। परन्तु केवल बधाअीसे अुन्हें संतोष नहीं हो सकता था। अिसलिअे अेक दिन अुन्होंने सुवर्ण महोत्सवके अवसर पर प्रकाशित अपने स्मारक-ग्रंथकी बिक्रीसे आअी हुअी रकममें से १,००० रुपये अिस संस्थाको देनेका निर्णय किया।

कुछ दिन बाद दिल्लीसे रु० १,००० का ड्राफ्ट आ गया, तो बापाने श्री मानशंकर भट्टको बुलाकर अुन्हें सौंप दिया।

अिस अर्सेमें बापाके अेक प्रशंसक और भक्त श्री छगनलाल पारेख बापासे मिलने आये, परंतु बापाने तो वे आये अुसी दिन अुन्हें आड़े हाथों लिया और कहा, "क्यों आये हो? जाओ, तुम्हारा यहां काम नहीं है।" वे आये थे अिसलिअे दो अेक दिन ठहर गये, परंतु बादमें बापाने अुन्हें हिमाचल प्रदेश और कालसी आश्रममें काम करने वापस भेज दिया।

भावनगर जानेके बाद गर्मीका मौसम होनेके कारण सख्त गर्मी पड़ रही थी, अिससे अुनकी तबीयत अच्छी-बुरी रहा करती थी। अिसलिअे मअी और जून तथा आधी जुलाअी चोरवाड़में बितानेका निश्चय किया। तदनुसार ९ तारीखकी शामको चोरवाड़के लिअे रवाना हो गये।

चोरवाड़में भी अुनका पत्रव्यवहार चलता ही रहा। अिसके अलावा वहां दो ढाअी मास रहे, अिस बीच बापाकी तबीयत देखनेके लिअे सौराष्ट्रसे और सौराष्ट्रके बाहरसे भी अुनके मित्र, प्रियजन और साथी कार्यकर्ता आये थे। अुनमें भारत-सेवक-समाजके अध्यक्ष पं० हृदयनाथ कुंजरू दो-तीन दिन चोरवाड़में बापाके साथ रह गये थे। बापाके साथ अुनकी यह आखिरी मुलाकात थी। अिसके सिवाय भारतीय लोकसभाके अध्यक्ष दादासाहब गणेश वासुदेव मावलंकर भी अुनसे मिल गये थे।

चोरवाड़में अुनके साथी, शिष्य या भक्त, जो भी कहिये, श्री हरखचंद भाअीका निवासस्थान था। अिसलिअे वहां अुनके कुटुंबके साथ अेक कुटुंबीजनके रूपमें रहनेमें बापाको बड़ा आनंद आया। हरखचंद भाअी और अुनके सारे परिवारने बापाकी देखभाल और सेवा-शुश्रूषा बहुत ही प्रेमसे की। बापा आरामसे रह सकें, अिसलिअे अुनके रहनेको जीवणलाल भाअीके निवासस्थानका अूपरका भाग अलहदा रख दिया गया। वहां दिन भर कोअी न कोअी बापाकी सेवामें रहते ही थे। सवेरेसे शाम तक नियमित रूपमें कार्यालयका काम, पत्रव्यवहार, पुस्तक-वाचन और मुलाकातें वगैरा होती

रहतीं। शामको खानेके बाद सामूहिक प्रार्थना होती और अुसमें हरखचन्द भाअी तथा जीवणलाल भाअीके कुटुम्बके लोगोंके अलावा गांवके भी कुछ लोग भाग लेते। गीताके श्लोक और भजन वगैरा गाये जाते और बादमें रामधुन होती। बापाको अिन दिनों कैसा मानसिक आनन्द आता था, अिसका खयाल चोरवाड़ आनेके थोड़े दिन बाद श्री वियोगी हरिको दिल्ली लिखे गये पत्रसे होता है:

"भाअीश्री वियोगी हरिजी,

"यह पत्र अिसीलिअे लिख रहा हूं कि मेरे हर्षमें आप तथा प्रार्थनामें अिकट्ठे होनेवाले तमाम शिक्षक भाअी, विद्यार्थी और बालक वगैरा शरीक हों।

"यहां हरखचन्द भाअीकी बड़ी लड़की, जिसका नाम विजया गांधी है और जो श्री नारणदास गांधीकी पुत्रवधू है, रातको रोज बहुत सुन्दर ढंगसे प्रार्थना कराती है और अपनी ११ वर्षकी बच्चीके साथ नये नये भजन बहुत अच्छी तरह गाकर सुनाती है। रोज रातको ८ से ९ तक तीन-चार कुटुंबोंके स्त्री-पुरुष और बच्चे जमा होकर कल्लोल करते हैं। यह क्रम यहां आनेके बाद शुरूके तीन चार दिन छोड़कर बराबर चल रहा है। अिस समय मुझे तुम्हारे वहांका प्रार्थना-मंदिर याद आ रहा है और शास्त्रीजी भी याद आ रहे हैं। यह पत्र प्रार्थनाके बाद पढ़कर सबको सुना देना।"

चोरवाड़में बापा कैसा आनन्द अनुभव कर रहे थे, यह अूपरके पत्रसे प्रगट होता है। साथ ही अुन्होंने जिन कुटुम्बोंका चारों ओर विस्तार किया था अुनको भी अिसमें भागीदार बनानेकी अुनकी अुत्सुकता दिखाअी देती है। दिल्ली हरिजन-सेवक-संघ और अुद्योगशालाके भाअी-बहन अुनके हृदयमें कितने गहरे बसे हुअे थे, यह अुनके हरिजीके नाम लिखे अेक दूसरे पत्रसे प्रकट होता है:

"भाअीश्री वियोगी हरिजी,

"आपकी तरफसे जब बहुत दिन तक पत्र नहीं आता, तब अैसा महसूस होता है कि अभी तक अेक मित्रका पत्र आना बाकी रह गया है और मनमें यह भी प्रश्न अुठता है कि अभी तक अुन्होंने पत्र क्यों नहीं लिखा होगा? कोअी प्रसंग न हो तो भी राजी-खुशीका पत्र लिखते रहिये। आपका पत्र आनेसे मुझे अेक प्रकारका मानसिक सन्तोष होता है।

"आजकल हमारी अुद्योगशालामें छुट्टियां होंगी और लड़के सब घर गये होंगे। थोड़े बहुत रहे होंगे।

"लक्ष्मणके घर पर अुनकी माताजी, शान्ति तथा अुनके चारों बच्चे (या बादमें पांच हो गये हैं?) सब अच्छे होंगे। संतोष और शकुन्तला दोनोंको याद करता हूं। माताजीसे मेरा नमस्कार कहना।

"बिड़ला परिवारके समाचार भी लिखते रहें। कोअी खास बात हो तो जरूर लिखें। भाअीजी कहां हैं? दिल्लीमें हों तो अुन्हें मेरा नमस्कार जरूर कहना।

"हमारे आश्रममें सहदेव, विष्णु तथा मेरे पड़ोसी दामोदर मास्टर, भागवत, मोती वगैराको मेरा आशीष कहना। बच्चोंको वॉलीबाल खेलने देना।

"मेरा स्वास्थ्य जैसा दिल्लीमें रहता था, वैसा ही अच्छा-बुरा रहता है। अेक बार भावनगरमें और अेक बार चोरवाड़में स्वास्थ्यको काफी धक्का लगा। अिससे घरमें भी चलना-फिरना मुश्किल हो गया है। अीश्वरको अिस शरीरसे जब तक थोड़ा बहुत काम लेना होगा लेगा। अभी तो विचार करनेकी शक्ति जैसीकी वैसी बनी हुअी है। फिर भी स्मरण-शक्ति घट गअी है।

'सबका करे कल्याण, दयालु प्रभु सबका करे कल्याण।'

आपका
अ० वि० ठक्कर"

"पुनश्च: तीन क्षयरोगियोंमें से अेक जोशीजीकी स्त्री तो बेचारी चल बसी। आपके लक्ष्मण और कम्पाअुंडर लखीरायकी क्या हालत है, सो कृपा करके लिखिये। यहांका जलवायु बहुत अच्छा और अनुकूल है।"

चोरवाड़में रहे तब तक पत्रव्यवहार और दफ्तरका कामकाज निबटानेके बाद नियमित रूपमें धार्मिक पुस्तकोंका पाठ होता। रामचंद्रसे वे विवेकानंदका जीवन-चरित्र और अुपदेश पढ़वाते और वेणीशंकरभाअी नामक अेक सज्जन दोपहरके बाद आकर रोज महाभारतमें से थोड़ा हिस्सा पढ़कर सुनाते। हरखचंदभाअी और नलिनसे नानाभाअीके 'रामायणके पात्र' नामक ग्रन्थका पाठ कराते। अिसके अुपरान्त 'बापूके कदमोंमें' नामक श्री राजेन्द्रबाबूकी पुस्तकमें से कुछ हिस्सा पढ़ा जाता। अेक बार गढ़वी मेरुभा वहां आ पहुंचे और दो तीन दिन ठहरे। तब लोकगीतों, लोककथाओं आदिका जलसा भी रहा। बापाको ये गीत और कथाअें खूब पसन्द आअीं।

चोरवाड़में भी अुनकी तंदुरुस्ती बहुत ज्यादा गिर गअी थी। परंतु अन्तमें अुस स्थितिमें से भी वे अुठ बैठे और अपने प्रिय हरिजनों तथा पिछड़े हुअे वर्गोंके कार्यके संचालनमें फिरसे समय देने लगे।

चोरवाड़में दो-तीन बार बारिश हो गओी और गरमी कम हो गओी तो १७ जुलाओीको चोरवाड़से रवाना होकर दूसरे दिन बापा भावनगर पहुंचे और वहां हरिजनों, पिछड़े हुओ वर्गों वगैराका काम फिर हाथमें ले लिया। अुन्होंने पिछड़ी हुओी जातियोंके कार्यकर्ता और शिशु-विहारके संचालक श्री मानशंकर भट्ट तथा अन्य कुछ युवकोंको भावनगरके नये कुम्हार मुहल्ले, करचलियापुरे, हरिजनवास, कोलीवास और अैसे ही अन्य पिछड़ी हुओी जातियोंके मुहल्लोंमें भेजा और अुनकी स्थितिकी जांच करा कर तथ्य और आंकड़े अिकट्ठे करवाये। अिस जांचके दौरानमें जब मालूम हुआ कि भावनगरमें कोली जैसी पिछड़ी हुओी जातिमें अेक कन्या अपने प्रयत्नसे ही आगे बढ़कर कालेज तक पहुंची है, तब अुन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। पहले तो वे मान ही न सके कि यह बात सच है। परंतु बादमें जब स्वयं जांच करके यकीन कर लिया तब अुन्हें बड़ा आनंद हुआ। अिसके बाद अुन्होंने भावनगर कालेजके प्रिंसिपाल साहब और प्रोफेसरोंको बुलाकर अिस कोली युवतीकी सिफारिश की। तथा पुस्तकों और अन्य फुटकर खर्चके लिअे अुसका बन्दोबस्त कर दिया।

पिछड़ी हुओी जातियों, दलितों और हरिजनोंका हित अुनके जीमें कैसा बसा हुआ था, अिसका अुदाहरण बिहारकी मुशाहर जाति (हरिजनोंकी अेक पिछड़ी हुओी जाति) के बारेमें वे रातदिन जो गहरी चिन्ता करते थे अुससे मिलता है। अुसके लिअे कुछ न कुछ व्यवस्था कर सके तभी अुनके जीको शान्ति मिली। १९४९ के अन्तमें जब बापा बिहार सरकार द्वारा हरिजनों तथा पिछड़ी हुओी जातियोंके कल्याणके लिअे नियुक्त समितिके अध्यक्षकी हैसियतसे दौरे पर गये, तब अुन्हें बिहारकी अिस मुशाहर जातिके दु:ख-दर्दोंके बारेमें, अुसकी पिछड़ी हुओी स्थितिके विषयमें सच्ची परिस्थिति मालूम हुओी थी। अिसलिअे अुन्होंने अुस समय मनमें निश्चय कर लिया कि अिन लोगोंके अुत्कर्षके लिअे कुछ न कुछ करना ही है। साथ ही यह वचन भी दिया कि अिस कामके लिअे १९५० की जनवरीमें मैं फिर बिहार आअूंगा। परन्तु अुनकी तंदुरुस्ती अुत्तरोत्तर अितनी बिगड़ती जा रही थी और वृद्धावस्थाने अुन्हें अैसा घेर लिया था कि अुसके बाद वे बिहार नहीं जा सके। परन्तु वहां जाकर यह प्रश्न निबटानेकी बात तो अुनके मनमें रह ही गओी थी।

अिसलिअे दिल्लीसे अंतिम बिदा लेकर भावनगर आनेके बाद अुन्होंने अेक ओर सरकार तथा गांधी-स्मारक-निधिके साथ और दूसरी तरफ बिहारके कुछ कार्यकर्ताओंके साथ पत्रव्यवहार शुरू कर दिया और बिहारकी अिस मुशाहर जातिके लिअे कुछ न कुछ करनेकी जरूरत अुन्हें समझानेकी

कोशिश की। भावनगरमें भी बहुतसे कार्यकर्ताओंको वे बिहार जानेको समझाते थे। अिसके सिवाय भील-सेवा-मंडलके पुराने कार्यकर्ता श्री अंबालाल व्याससे भी अुन्होंने कह रखा था कि यदि बिहारमें मुशाहर जातिमें काम करनेवाला कोअी कार्यकर्ता न मिले तो तुम्हें जाना होगा। अगस्त माससे अुन्होंने अिस कामको पूरा करनेके प्रयत्न शुरू किये। अंतमें ३ सितंबरको अेक ही दिन अुन्हें रांचीसे तार द्वारा दो शुभ समाचार मिले। अुनमें से अेक समाचारमें कहा गया था कि श्री बलदेवसिंहजी नामक प्राध्यापक श्रेणीके बिहारके अेक कार्यकर्ता मुशाहर जातिमें पांच वर्ष काम करनेको तैयार हो गये हैं। दूसरे समाचारमें था कि गांधी-स्मारक-निधिकी बिहार शाखाने तीन वर्षके लिअे यह काम आगे बढ़ानेको २५ हजार रुपयेकी रकम मंजूर की है। यह समाचार सुन कर बापाके हर्षका पार न रहा। अन्तमें अुनके दिलकी यह बड़ी मुराद पूरी होनेकी संभावना दिखाअी देने लगी कि मेरी आंखें बन्द होनेसे पहले बिहारकी अिस अभागी जातिमें जीवनके पांच सात वर्ष खर्च करके सेवा-कार्यकी बुनियाद डाल दूं। अिससे अुनकी खुशीका कोअी पार नहीं रहा। ये तार मिलनेके बाद अुन्होंने बिहारके दो प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता — रांचीके श्री नारायणजी और श्री बलदेवसिंहको भावनगर बुलाया और भारत-सेवक-समाज तथा भील-सेवा-मंडलकी रीतिके अनुसार घीका दीया जलवाकर अपने सामने मुशाहर जातिमें सेवा करनेको तत्पर हुअे श्री बलदेवसिंहको पांच वर्षकी प्रतिज्ञा लिवाअी और अुन्हें अिस कार्यमें अुत्साह और प्रेरणा मिले, अैसा अेक छोटासा प्रवचन करके अुन्हें आशीर्वाद दिया।

बिहारके कामके बारेमें जब अुन्होंने प्रयत्न आरंभ किया, अुसी अरसेमें अेक और घटना हुअी जिसने बापाको रोगशय्या पर भी बेचैन कर दिया। वह था आसामका अैतिहासिक भूकंप। १५ अगस्तको जब समस्त भारतमें लोग स्वाधीनता-दिवस मना रहे थे, तब आसाम प्रान्त भयंकर भूकंपसे हिल अुठा। दुनियामें अब तक जितने भूकंप हुअे हैं, अुनमें भयंकरताकी दृष्टिसे यह दूसरे नम्बरमें आता है। फिर भी सारा प्रान्त पहाड़ों, बनों और जंगलोंसे भरा हुआ होनेके कारण अुसकी बस्ती छिछली है। अिसलिअे घनी आबादीवाले अिलाकोंकी अपेक्षा अुसमें जान-मालकी बरबादी बहुत कम हुअी। तथापि हजारों मकान गिर गये। धरती फट गअी और अुसमें बड़ी बड़ी दरारें पड़ गअीं। सड़कें और पुल टूट गये। नदियोंके प्रवाह बदल गये। नदियोंमें भारी बाढ़ें आ गअीं। पहाड़ोंके हिस्से टूट पड़े और नदीमें जहां पानी था वहां कंकड़ दिखाअी देने लगे और

धूल अुड़ने लगी। दूसरी तरफ जहां सूखी जगह थी वहां पानी अिकट्ठा होने लगा, जिसके परिणाम-स्वरूप आसामकी कुछ नदियोंमें बाढ़ आ गअी। किनारेके बहुतसे गांव अिस बाढ़में बरबाद हो गये। धन-जनकी हानि काफी मात्रामें हुअी। भूकंप और नदियोंमें अचानक आअी बाढ़के कारण हजारों आदमी और अिससे भी अधिक पशु मारे गये। अिस भूकंपके कारण सबसे ज्यादा नुकसान अुत्तर पूर्वी सीमा पर स्थित अुत्तर लखिमपुर, डिब्रूगढ़ तथा शिवसागर जिलोंके कुछ भागोंको हुआ।

भूकम्पके समाचार भावनगरमें बैठे बैठे बापाको जब रेडियो और समाचारपत्रों द्वारा मालूम हुअे, तब अुनका दिल भर आया। अुनके हृदयमें भी भूचाल आ गया। बेचारे आसामके लोगोंका क्या हाल हुआ होगा? वे हजारोंकी संख्यामें मारे गये होंगे। अुससे भी ज्यादा निराधार हो गये होंगे। अुनके कुटुम्बोंका क्या हुआ होगा? अुनके बाल-बच्चोंका क्या हुआ होगा? — अैसे अैसे विचार अुनके मनमें अुठने लगे। क्षणभर तो वहां दौड़ जाने और खुद सारी स्थितिका पता लगानेकी जीमें आअी, परन्तु अुनकी शारीरिक स्थिति आसाम तो क्या भावनगरमें भी दूसरेकी सहायताके बिना चलने-फिरने लायक नहीं थी। अकाल, बाढ़, भूकम्प और अैसी ही दूसरी कुदरती आफतोंके समय देशके किसी भी कोनेमें दौड़ जाने-वाले बापाको अिस समय अपनी शारीरिक अशक्तिने बेचैन कर दिया। अिस पर भी अुड़ीसा और आसाम तो अुनके विशेष प्रिय प्रान्त थे। वहांके आदिवासी और हरिजन अुनके अपने बच्चे ही थे। बच्चों पर आफत आये और पिता खुद मदद न कर सके, तब पिताके हृदयकी जो स्थिति होती है, वही बापाके हृदयकी थी। अुस समय अेक मित्रको लिखे पत्रमें अुन्होंने लिखा था, "आजकल मैं भावनगरकी मामाकोठा रोड पर स्थित अेक मकानकी तीसरी मंजिल पर हूं, परन्तु मेरा हृदय तो आसामके अुन भूकम्प-पीड़ित संकटग्रस्त लोगोंमें दौड़ गया है।" बापाका कोमल हृदय अिन अभागे लोगोंके दुःखसे द्रवित हो रहा था। लेकिन वे तो श्रद्धालु जीव थे। शारीरिक अशक्ति या दूसरी मुश्किलोंसे वे हारनेवाले नहीं थे। भूकम्पके समाचारोंका पूरा ब्यौरा जान लेनेके बाद अुन्होंने आसामके गवर्नर श्री जयरामदास दौलतरामको अेक तार किया। अुसमें जरूरत हो तो भारत-सेवक-समाजके चुने हुअे कार्यकर्ताओंको आसाममें कष्ट-निवारण कार्य करनेके लिअे भेजनेका प्रस्ताव रखा। दूसरे दिन आसामसे गवर्नरका तारसे अुत्तर आया। अुसमें अुन्होंने पूछताछ की कि वे लोग क्या काम कर सकेंगे? शहरमें रहकर कार्यालयकी व्यवस्था देखेंगे या गांवोंके भीतरी

भागोंमें जाकर कष्ट-निवारणका काम करेंगे? साथ ही अुन्हें तैरना आता है या नहीं? बापाने तारसे जवाब दिया, "यह तो मैं नहीं जानता कि सब लोगोंको तैरना आता है या नहीं, परन्तु जिन लोगोंको मैं भेज रहा हूं वे सब कसे हुअे सेवक हैं। अुन्हें गांवोंमें या शहरोंमें जहां भेजेंगे वहीं वे जायेंगे और मनुष्यसे जो कुछ संभव है वैसी सब प्रकारकी सेवा करेंगे।"

आसामके गवर्नरके साथ तारोंका व्यवहार होनेसे पहले ही अुन्होंने आसामके भूकम्पके सिलसिलेमें सहायता-कार्य करनेको कौन कौन तैयार हैं, अिस सम्बन्धमें लगातार तीन परिपत्र लिखवाकर भिन्न भिन्न स्थानों पर भेज दिये थे। अिसके अलावा कुछ लोगोंको पत्रोंसे पुछवाया और जिन जिन लोगोंने अपनी रजामन्दी जाहिर की अुनमें से छटनी करके कुछको पसंद किया और तत्काल कार्यक्रम बनाकर आसाम जानेको तैयार रहनेके लिअे अुन्हें सूचित कर दिया।

आसामसे गवर्नरका फिर जवाब आया तो अुन्होंने भारत-सेवक-समाज और भील-सेवा-मंडलके मिलाकर ५ चुनिंदा कार्यकर्ताओंको तैयार किया और अुन्हें आसाम जानेकी सूचना दी। आसाम जैसे विविधतावाले प्रदेशमें जानेके लिअे कितने ही लोगोंकी अिच्छा होना स्वाभाविक था। आसाम जायेंगे, वहां अेकाध महीना रहकर कष्ट-निवारण कार्य करेंगे, अच्छा मजेका सफर होगा। नया अिलाका देखनेको मिलेगा, नये लोग देखनेको मिलेंगे और सेवाका भी काम होगा। अिस तरहका विचार करके भी कुछ लोग आसाम जानेको तैयार हुअे थे, परन्तु बापा तो अिस प्रकारके राहत-कार्य करते करते बूढ़े हो गये थे। यह बात अुनके अनुभवसे बाहर नहीं थी। अिसलिअे आसाम जानेको जो भी सेवक तैयार हों, अुन्हें कमसे कम तीन महीने तो वहां रहकर सेवाकार्य करना ही होगा, यह पहली शर्त अुन्होंने रखी थी। अैसे मामलोंमें वे जो परिपत्र निकालते थे अुनसे यह पता लगता है कि वे अिन कामोंमें कितनी सावधानी रखते थे और सूक्ष्म सूचनाओं तथा जानकारी देकर सेवकोंका कैसा मार्गदर्शन करते थे। अैसे अनेक परिपत्रोंमें से अेकका थोड़ा महत्त्वका भाग देखिये।

परिपत्र क्रमांक ५

भारत-सेवक-समाजकी ओरसे आसाममें भूकम्पके सिलसिलेमें सहायता-कार्य करने जानेवाले सेवकोंके लिअे।

"यह परिपत्र आपको कुछ सूचनाअें देनेके लिअे भेजा जा रहा है। ये सूचनाअें आप जब आसाम जायें और वहां रहकर सेवाकार्य शुरू करें, तब आपके लिअे अुपयोगी हों अिस खयालसे दी गअी हैं।

"पं० मिश्र शिलोंगके लिअे रवाना हो चुके हैं। सब काम अुनके हाथमें रहेगा। अिसलिअे प्रत्येक कार्यकर्ताको जहां रखा जाय, वहांसे अपने कार्यका विवरण अुसे पं० मिश्रको भेजना होगा और दूसरोंको अुसकी नकल भेजनी होगी।

"१,००० रुपयेकी रकम श्री आर० अेस० मिश्रके हाथोंमें सौंपी गअी है। अिसे वे जहां जरूरी समझें वहां खर्च करेंगे। वे अिसका हिसाब रखेंगे और अगर ज्यादा रकमकी जरूरत पड़े तो श्री डी० वी० आंबेकर, भारत-सेवक-समाज, पूना–४ से मंगवा लेंगे।

"मैंने आसामके गवर्नरसे प्रार्थना की थी कि शिलोंग जानेवाले तमाम सेवकोंका अपने निवासस्थानसे शिलोंग तकका और शिलोंगसे आगे जहां काम सौंपा जाय अुस स्थान तकका खर्च अुन्हें अुठाना चाहिये। साथ ही मैंने अुनसे यह भी अनुरोध किया था कि कार्यकर्ता आसाममें रहें तब तकका तमाम खर्च — खाने-पीने और रहनेका — अुन्हें भुगतना चाहिये। अिस बातका अुन्होंने हां या नामें कोअी जवाब नहीं दिया है। फिर भी मुझे आशा है कि वे मेरे दोनों प्रस्ताव मान लेंगे। परन्तु शायद अुनके कोषसे अुपरोक्त रकम न मिले तो भी अिस बारेमें कोअी सेवक किसी तरहकी कानाफूसी न करे। बल्कि जो कुछ पूछना हो मुझे पूछ लिया जाय।

"जो पांच भाअी शिलोंग जा रहे हैं, अुनका परिचय मैंने अिससे पहलेके ता० १–९–'५० को लिखे गये परिपत्र नं० ४ में दिया है। अुसमें बताये गये अिन पांच सेवकोंके सिवाय छठे श्री के० अेल० अेन० राव भी शिलोंग जा रहे हैं। यह न भूलना चाहिये कि वे अेल० अेन० राव नहीं, परन्तु के० अेल० अेन० राव हैं। वे मंगलोरमें भारत-सेवक-समाजके कार्यकर्ता हैं।

"श्री जनार्दन पाठक, जिन्हें मैंने आसाम भेजनेका विचार किया था, अिससे पहले ही कुष्ठरोगियोंकी सेवा करनेके लिअे वर्धा चले गये हैं और वे १२ सितंबर, १९५० के लगभग शिलोंग पहुंचेंगे।

"आसामके गवर्नर यह देखनेको आतुर हैं कि आसाम जानेवाले हमारे तमाम कार्यकर्ता अच्छे तैराक हों, ताकि देहातके कष्ट-निवारण कार्यमें अुपयोगी सिद्ध हो सकें। परन्तु अब मैं देख सका हूं कि वहां भेजे जानेवाले छः और तीन ९ कार्यकर्ताओंमें से बहुत थोड़े भाअियोंको तैरना आता है। यह बात शोचनीय है।

"श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहकाकी, जिनका कलकत्ते तथा गौहाटीमें व्यापार चलता है और जो संसदके सदस्य हैं, श्री वाजपेयीके साथ थोड़ी बातें हुआी थीं। श्री वाजपेयीने अुन्हें कहा था कि, 'मैं आसामके गवर्नर और प्रान्तीय कांग्रेसके अध्यक्षसे मिला था। दोनोंने मुझे बताया कि आसाममें लोकशक्ति तो बहुत है। काम करनेवालोंकी भी कमी नहीं है। परन्तु अिस समय आसामके संकटग्रस्त लोगोंकी तात्कालिक जरूरत कपड़े और रुपयेकी है। अुन्होंने मुझे अिस मुद्दे पर लिखनेका अधिकार दिया है।'

"अूपर यद्यपि यह बताया गया है कि आसामके पास पर्याप्त सेवक हैं, फिर भी व्यक्तिगत रूपमें मैं अिसे सही नहीं मानता। मैं जानता हूं कि आसाममें सेवाभावी कार्यकर्ताओंकी कमी है। अिसलिअे देशके अलग अलग भागोंसे आसाम जानेवाले हमारे भाअियोंकी सेवाओंकी वहां खूब कद्र होगी, अिसका मुझे पूरा भरोसा है।"

आगे चलकर परिपत्रमें अुन लोगोंके नाम और परिचय देकर, जिनकी जरूरत पड़ने पर आसाममें सलाह और मदद ली जा सकती है, अन्तमें बताया गया है:

"प्रत्येक कार्यकर्ताको मेहरबानी करके अितना ध्यानमें रखना है कि अुन्हें आसाममें पूरे ९० दिन सेवाकार्यमें लगाने हैं। अिसमें अेक दिन भी कम नहीं हो सकता। अिस मामलेमें मैं बहुत सख्त हूं। कुछ लोग वहां आनंदकी यात्रा करने या कुतूहल शान्त करनेके लिअे जानेकी अिच्छा रखते हैं। परन्तु मैं यह चीज बर्दाश्त नहीं करूंगा। संभव हो तो ९० दिनसे अधिक सेवा करें, परन्तु अेक भी दिन कम किसी सेवकके मामलेमें बर्दाश्त नहीं किया जायगा।"

अिस प्रकार परिपत्र भेजनेके बाद आसाम जानेवाले सेवकोंको जल्दी वहां पहुंच जानेके लिअे अुन्होंने ताकीद की। आसाममें जिन मिश्रजीके नेतृत्वमें भारत-सेवक-समाजका दल काम करनेवाला था, वे अन्य कार्योंके कारण अलाहाबाद रुक जानेसे वहां समय पर नहीं पहुंच सकते थे। अिस-लिअे अुन्होंने भील-सेवा-मंडलके अेक आजीवन कार्यकर्ता श्री डाह्याभाअी नायकको जल्दी ही आसाम पहुंच जानेके लिअे सूचित किया। अुस समय भील-सेवा-मंडलका रजत महोत्सव नजदीक आ रहा था और अुसके जलसेके शुभ अवसर पर स्वतंत्र भारतके सर्वप्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबू वहां खास तौर पर आनेवाले थे। अपने जीवनके महा मूल्यवान वर्ष जिसने भीलोंकी सेवा और भील-सेवा-मंडलके कार्यमें बिताये हों, अुसे अिस महान अवसर पर वहां मौजूद रहनेकी अिच्छा होना स्वाभाविक है। फिर

भी डाह्याभाअी तो बापाके शिष्य थे। अुन्होंने अुनके अधीन रहकर अपने जीवनके २५ वर्ष सेवामें बिताये थे। अिसलिअे अुन्हें कर्तव्य-कर्म पूरा करनेमें ही संतोष था। बापाने अुन्हें अुत्सव और समारोहके तेज प्रकाश और आनन्द-प्रमोदके बीच रहनेके बजाय हजार बारह सौ मील दूर भूकम्प-पीड़ित आसामकी गरीब पहाड़ी जातियोंकी सेवा करनेको भेज दिया। डाह्याभाअीके लिअे बापाकी अिच्छा ही अुनकी आज्ञा थी। अिसलिअे और तो सोचना ही क्या था? अुत्सवमें भाग लेनेको ठहरनेके बजाय वे जल्दीसे जल्दी दाहोदसे दिल्ली और दिल्लीसे कलकत्ता होकर शिलोंग पहुंच गये। और बापाके आदेशके अनुसार गवर्नरसे मिलकर अुन्होंने अपना कार्यक्रम बना लिया।

आसामके गवर्नर श्री जयरामदास दौलतरामने तुरंत अुनका स्वागत किया और पहली मुलाकातमें ही सारी बातचीत कर लेनेके बाद अुन्हें परिस्थितिकी जांच करनेके लिअे भीतरी भागोंमें भेज दिया।

यह काम शुरूमें अुन्हें बड़ी जिम्मेदारीका लगा, फिर भी श्री डाह्याभाअीने बापाको अेक पत्रमें लिखा, "आपकी कृपासे मैं अिस कामको पूरा कर सकूंगा।"

आसाममें सेवक भेजकर ही बापाने सन्तोष नहीं मान लिया, परन्तु वे सब वहां क्या क्या काम कर रहे हैं, जिस कामके लिअे गये हैं वह ठीक हो रहा है या नहीं और जिस महान संस्थाकी तरफसे वे गये हैं, अुस भारत-सेवक-समाजकी प्रतिष्ठाके अनुरूप व्यवहार करते हैं या नहीं, अिसका भी वे ध्यान रखते और अुनके कामकाजकी बारीक तफसीलोंसे परिचित रहते। अिसके लिअे वे सारे सेवकोंके साथ पत्रव्यवहार करते, अुनके कामोंका विवरण मांगते, अुन्हें समय समय पर मार्गदर्शन और सूचना देते और भावनगर जैसी दूर जगहमें बैठकर भी अुनके सहायक बननेका प्रयत्न करते।

श्री डाह्याभाअी नायकने आसाम जानेके बाद अपनी कार्यशक्ति, योजनाशक्ति और अैसे कामोंकी बापासे पाअी हुअी तालीम और अनुभव वगैराके कारण वहां पहुंचते ही थोड़े दिनोंमें स्वभावतः कष्ट-निवारण कार्यके संचालकोंकी अगली कतारमें स्थान प्राप्त कर लिया और गवर्नर तथा दूसरे लोगोंका विश्वास और प्रेम संपादन करके गवर्नरने जो केन्द्रीय कष्ट-निवारण-समिति मुकर्रर की थी अुसके मंत्रीकी हैसियतसे बजट वगैरा तैयार किया और कार्यकारिणी समिति द्वारा अुसे मंजूर करवा कर अुस कार्यका संचालन करने लगे।

अुनके कार्यकी जो रिपोर्ट अखबारोंसे तथा दूसरी तरह बापाको मिलती थी, अुसे बापा ध्यानपूर्वक देख लेते थे। श्री डाह्याभाअीका नाम अिस प्रकार समय समय पर समाचारपत्रोंमें चमकने लगा तो प्रसिद्धिसे सदा ही चौंकने और भागनेवाले बापा तुरंत सजग हो गये और अुन्होंने ता० २४–१०–'५० को श्री डाह्याभाअीको चेतावनी देनेवाला अेक पत्र लिखा। अुसमें अुन्होंने बताया :

"तुम्हारे और श्री लक्ष्मीदास आसर दोनोंके शिलोंगसे ता० १८–१०–'५० को लिखे पत्र साथके कागजों सहित मिले। परन्तु किसी कारणसे वे आज छः दिन देरसे मिले। अुसके बाद श्री लक्ष्मीदास कलकत्ते पहुंच गये और वहां छगनभाअीसे मिलकर अुन्होंने क्या क्या काम किये, अिसका ब्यौरा बतानेवाले पत्र मिले। अब लक्ष्मीदास दिल्ली पहुंच गये होंगे।

"यह पत्र तुम्हें अेक खास कारणसे लिख रहा हूं। ता० १३–१४ की दो सभाओंकी अखबारी रिपोर्टोंमें जहां तहां तुम्हारा नाम मंत्रीके रूपमें पढ़ा। बजट भी तुम्हारे बनाये हुअे सब पास हो गये। अिसमें किसीको प्रान्तीयताकी गंध आये बिना न रहेगी, यह आसानीसे समझमें आ सकता है। अिसलिअे तुम्हें खास तौर पर सावधानी रखना है और अिस प्रकार रहना है कि सबके साथ प्रेमभाव बढ़े। सब पर अैसी छाप डालो कि हम अुन्हींके हैं। सबकी सेवाका आग्रह रखो। कार्यकारिणी समितिकी मंजूरीके बगैर कोअी काम न करो। सहकारी मंत्री श्री बी० पी० चालीहाको भी साथ रखो। गवर्नर तो अपने हैं ही। परन्तु आसामी भाअियोंको खुश रखनेकी खास कोशिश करना। अुनसे मिलते रहना, अुनके साथ भोजन करना और अुनमें घुलना-मिलना, अुनके यहां जाना-आना। अिसके लिअे विशेष प्रयत्न करना।

"मैंने तुम्हें १५ सितंबरको दाहोदसे रवाना किया, यह खास तौर पर अच्छी बात हुअी अैसा मेरा खयाल है। रजत जयंतीके अुत्सवमें तुम अुपस्थित न रह सके, अिसके लिअे मुझे जरा कठिनाअी प्रतीत हुअी थी। परन्तु तुम्हारा वहां जाना जरूरी था।

"छगनभाअीने कलकत्ते रहकर माल खरीदने, अिकट्ठा करने और रवाना करनेका काम अपने अूपर लिया है, यह भी ठीक ही है। अुसके लिअे वे योग्य हैं और अुसे अच्छी तरह पूरा करेंगे। केवल अेक ही बात समझमें नहीं आती कि कलकत्तेसे बहुतसा माल विमान द्वारा कैसे

भेजेंगे? और अुसका खर्च कितना ज्यादा आयेगा? अिस गुत्थीके बारेमें मैंने अुन्हें कलकत्ते पुछवाया है।

"साथ ही तुम्हें लिखता हूं कि आसामी भाअियोंका प्रेम प्राप्त करनेके लिअे गांधीजीका ढंग अख्तियार करना। If you will love a man he will love you. गांधीजी किसी भी प्रान्तमें जाते — फिर तामिलनाड हो या आन्ध्र, बिहार हो या आसाम — तो वहांके लोग कहते कि गांधीजी तो हमारे ही हैं। अैसा वातावरण हमें पैदा करना चाहिये।"

अिस मुख्य बात पर अच्छी तरह जोर देनेके बाद आसामके काममें लम्बे समय तक लगे रहनेका आदेश देते हुअे अुसी पत्रमें बापाने आगे लिखा :

"याद रखना कि लक्ष्मीदास और छगनलाल आते जाते रहेंगे और तुम्हें वहां लगातार रहना है। कमसे कम छः महीने लगेंगे। तब तक और कोअी विचार मत करो। पंचमहालमें क्या हो रहा होगा, अिसका भी विचार मत करना। अीश्वर अुसे संभाल लेगा। मणिको तुम्हारे पास भेजनेका प्रबंध करूंगा। अपना विचार लिखना।

"अमियबाबूको सादियाके पास गवर्नरके साथ बच जानेके लिअे मेरी तरफसे बधाअी देना।"

अिस पत्रके अुत्तरमें डाह्याभाअीने ब्यौरेवार पत्र लिखकर बताया कि, "मुझे सहकारी मंत्री नियुक्त किया गया, अिसकी मुझे जरा भी गंध नहीं थी। श्री जयरामदासजीको अपने विश्वासका आदमी चाहिये था। और मैंने दौरा कर आने पर कुछ बातें पेश कीं। अिसलिअे शायद अुन्होंने यह जिम्मेदारी मुझे सौंपी हो। श्री चालीहाको भी सहकारी मंत्रीके तौर पर लिया है, अिसलिअे प्रान्तीयताकी बात नहीं रह जाती। फिर भी मैं अुन्हें हमेशा साथ ही रखता हूं। अलबत्ता, वे यहां नहीं बल्कि गौहाटी रहेंगे। किसीको भी अैसा नहीं लगने दूंगा कि मैं दूसरे प्रान्तका हूं। श्री मेढी और श्री अमियबाबूसे बार-बार मिलता रहता हूं। अिन सबको खुश रखना मेरा काम है। मैं यहां कष्ट-निवारण कार्यके लिअे आया हूं। यह काम सबसे कराना ही मेरा मुख्य कार्य रहेगा। अिसमें अपने व्यक्तित्वको बाधक नहीं होने दूंगा। पूज्य बापूजीने तो सब सेवकोंके सामने महान आदर्श पेश किया है और आपने अुस आदर्शको जीवनमें अुतारा है। आपका और पूज्य बापूजीका आदर्श नजरके सामने रखूंगा और अुसे जीवनमें अुतारनेका प्रयत्न करूंगा।

"... मैं फिरसे आपको विश्वास दिलाता हूं कि यहां सबके साथ मिल्जुल कर रहूंगा और सबका प्रेम जीतनेकी कोशिश करता रहूंगा।"

और श्री डाह्याभाअी जब तक आसाममें रहे, तब तक सत्ता या प्रसिद्धिकी परवाह किये बिना सबके साथ मिलजुलकर काम करते रहे और सेवा-कार्यमें लगे रहे। आसामके अपने निवासकालमें वे तीन बार भूकम्पसे नष्ट हुअे भीतरी भागोंमें घूमकर जांच कर आये। पासीघाट जानेके लिअे जब अेक बार अुन्होंने आसामके गवर्नरसे अिजाजत मांगी, तब अुन्होंने यह खतरनाक सफर न करके केवल तार द्वारा वहांके राजनैतिक अफसरोंसे सम्पर्क साध कर परिस्थितिसे परिचित होनेकी सलाह दी थी। परन्तु जो बापाकी पाठशालामें सेवा-धर्मका पाठ सीखे थे, वे क्या अैसे खतरेसे डरनेवाले थे? खतरा अुठाकर भी श्री डाह्याभाअी रंगडोअीके पास ब्रह्मपुत्रा नदी पार करके वहां गये और वहांसे अुन्होंने स्वयं जांच करके काफी जानकारी अिकट्ठी की। अिसका थोड़ासा ब्यौरा अुन्हींके शब्दोंमें देखिये :

"लगभग नौ हजार वर्गमीलके विस्तारवाले और मुख्यत: अेबोर जातिकी आबादीवाले अेबोर हिल्स जिलेके लोगोंका सम्पर्क १५ अगस्तसे ६ दिसंबर १९५० तक सिर्फ वायरलेसके सिवाय पूरी तरह कट गया था। सरकारी अधिकारियोंके सिवाय कोअी अिस वायरलेसका अुपयोग नहीं कर सकता और यह अुपयोग भी सरकारी कामके लिअे ही हो सकता है। अिस क्षेत्रके लोगोंको चावल, नमक, चाय और खुराककी अत्यंत आवश्यक वस्तुअें हवाअी जहाज द्वारा पहुंचाअी जाती थीं अर्थात् ये सब चीजें हवाअी जहाजसे फेंकी जाती थीं। अिस प्रकार लोगोंको चीजें मुहैया करना भी १० नवम्बरसे बन्द कर दिया गया, क्योंकि अिसके लिअे जो डाकोटा विमान काममें लाया जाता था, अुसे केन्द्रीय सरकारने वापस मंगवा लिया। अिस अिलाकेका अिन्तजाम केन्द्रीय सरकारके हाथमें है और आसामके गवर्नर अिस प्रदेशके लिअे अुनके अेजण्टके रूपमें काम करते हैं।

"बाकी दुनियासे जिस प्रदेशका संपर्क कट गया हो और व्यवहारके अन्य कोअी भी साधन न हों, अुस प्रदेशके लोगोंकी कठिनाअियों और दुर्दशाका वर्णन करनेकी भी जरूरत है? अिसकी हम अच्छी तरह कल्पना कर सकते हैं।

"पासीघाटके राजनैतिक अफसरको १५ अगस्तको डाली हुअी डाक ६ दिसंबरको पहली बार मिली थी। पहाड़ियोंके बीचकी दरारोंके कारण (कहा

जाता है कि अुनमें से अेक दरार सात मील लम्बी थी।) पहाड़ोंमें जिन पगडंडियों द्वारा अेबोर लोग अपने लिअे जरूरी चीजें पासीघाटसे खरीद लाते थे वे पगडंडियां पूरी तरह मिट गअी थीं। अिसके फलस्वरूप अिस सारे अिलाकेमें लगभग दो मास तक सारा व्यवहार बन्द हो गया था। कुछ बताये हुअे स्थानोंमें विमानसे अनाज डाला जाता था। खास तौर पर आसाम रायफल्सके चौकी-थानोंमें, जहांसे लोगोंको खुराक बांटी जाती थी। पहाड़ियोंमें बसनेवालोंने धीरे धीरे मिटी हुअी पगडंडियोंको सुधार कर अब फिरसे पासीघाटसे संपर्क स्थापित कर लिया है। मरम्मत किये हुअे अिन मार्गों पर भी चलना खतरनाक है और अैसे मार्गोंके आदी बने हुअे अेबोर लोगोंको भी जहां पगडंडी अत्यंत तंग और चढ़ाववाली होती है, वहां चौपाया बनकर अर्थात् बैठ बैठ कर चलना पड़ता है।

"कष्ट-निवारणकी चीजें डिब्रूगढ़ और सेखवा घाट पर जमा की जाती हैं। वहांसे ६ दिसम्बरसे पासीघाट ले जाना शुरू किया गया है। अेबोर हिल्स ज़िले और सादिया सरहदी जिलेके अेबोर लोगोंकी तरफसे मिश्मी लोगोंको सहायता देनेके लिअे ११ लाख रुपयेकी रकम दी गअी है। अिन लोगोंको, जिनका मानवोंने ही त्याग नहीं किया है, बल्कि कुदरत भी जिनके प्रति कठोर बन गअी है, अुचित सहायता मिले यह ध्यान रखना चाहिये। भूमिकी बड़ी बड़ी दरारोंने अिन लोगोंके बहुतसे गांवोंको हमेशाके लिअे मिटा डाला है और आज अुन गांवोंका नाम-निशान भी नही रहा। अिन पहाड़ियोंमें भूचालके कारण हुअी मानव-हानि बहुत बड़ी होनी चाहिये। यह माना जाता है कि दो से तीन हजार तक लोग मृत्युके शिकार हुअे हैं। अिस संबंधमें सही आंकड़े कभी प्राप्त नहीं हो सकेंगे, क्योंकि ये आंकड़े अिकट्ठे करना असंभव है। अधिकृत अनुमानके अनुसार लगभग अेक हजार आदमी मौतके शिकार हुअे हैं। अलबत्ता, यह आंकड़ा पूरा नहीं अधूरा है। पासीघाट दिहांग नदी पर स्थित है, जहां अिस नदीका पानी सपाट अिलाके पर जोरसे फैल जाता है। भूकम्पके कारण जमीनके धंस जानेसे जमीनमें दरारें पड़ जानेके कारण नदीकी बाढ़का पानी अिस प्रदेशमें फैल गया था। अुसने कामचलाअू बांधोंको तोड़कर पासीघाट प्रदेशके काफी बड़े हिस्सेका सफाया कर डाला है।"

कस्तूरबा ट्रस्टकी आसाम प्रान्तकी मुख्य संचालिका बहन श्री अमलप्रभा दास लोगों पर हुअे भूकम्पके भयानक असरका वर्णन करते हुअे लिखती हैं:

"भूकम्प और बाढ़के कारण जो विनाश हुआ अुसके समाचार धीरे धीरे प्राप्त हुअे, क्योंकि भूकम्पके कारण भीतरी भागमें आने-जानेका सब

प्रकारका यातायात छिन्नभिन्न हो गया था। कष्ट-पीड़ितोंको सहायता पहुंचानेका तुरंत प्रयत्न किया गया, परंतु यातायात व्यवस्थाके छिन्नभिन्न हो जानेसे सब जगह अेक ही समय पहुंचना मुश्किल था। जिन स्थानोंमें सबसे ज्यादा नुकसान हुआ था, अुनमें से कुछ जगहें तो अैसी थीं कि जहां कअी दिनों तक नहीं पहुंचा जा सकता था। अैसे स्थानोंमें जो कार्यकर्ता पीड़ितोंकी मदद करने सबसे पहले पहुंचे, अुन्हें कअी दिनों तक कष्ट और कठिनाअियोंका सामना करना पड़ा। साधारण समयमें भी अुन स्थानोंमें जाना कठिन होता है, परंतु भूकंप और बाढ़के कारण यह कठिनाअी कअी गुनी बढ़ गअी। जो लोग बेघरबार हो गये अुन्होंने दूसरे गांवोंमें जाकर आश्रय लिया। अेक अेक कुटुम्बमें दस दस परिवारोंको आसरा लेना पड़ा। अन्य कितने ही परिवार सरकार द्वारा स्थापित छावनियोंमें जाकर रहे।"

आसामकी पहाड़ियोंमें छुटपुट बसनेवाले अिन पहाड़ी लोगोंमें से कितने ही भूकम्पके कारण, कितने ही बाढ़के कारण और कितने ही कअी दिनों तक अन्न और आश्रय न मिलनेके कारण मर गये। बाकी जो बचे अुन्हें मुख्य आवश्यकता अन्न, वस्त्र, आश्रय तथा बर्तनोंकी थी। अुन्हें विमान द्वारा अनाज, कपड़े वगैराकी सहायता मिली।

अिसके लिअे सारे देशमें आसाम सहायता कोष कायम किया गया था, जिसमें भारतके लोगों, सरकारी कर्मचारियों, धनवानों, गरीबों, सबने खूब रुपया दिया। लगभग २० लाख रुपयेका चंदा जमा हुआ था और अुसका अुपयोग अनाज, पानी, कपड़े, दवा, मकान, शिक्षा वगैरा देनेमें हुआ। श्री डाह्याभाअीने अिस कमेटीके मंत्रीकी हैसियतसे बहुत ही सुन्दर काम किया और अुसके अेक अेक कामसे वाकिफ रखनेकी बापाकी हिदायतके मुताबिक वे नियमित रूपमें बापाको पत्रों द्वारा जानकारी देते रहते थे। बीचमें अेक बार जब वे भीतरी भूकम्प-पीड़ित प्रदेशके दौरे पर गये थे और अुनकी लिखी हुअी डाक बापाको समय पर नहीं मिली, तब अुन्होंने श्री डाह्याभाअीसे तार द्वारा सारा हाल पुछवाया था। अितना ही नहीं, अैसा मानकर कि डाह्याभाअीको शायद यह तार न मिले, अुन्होंने कलकत्तेमें रहकर काम करनेवाले श्री छगनलाल पारेखसे भी अुनके विषयमें पूछताछ की थी। अिस प्रकार बापा हमेशा दोहरा काम करते थे। जैसे श्री डाह्याभाअी नायकके बारेमें वैसे ही आसामके अन्य कार्यकर्ताओंके बारेमें समझिये। श्री भंडारी, श्री छगनलाल पारेख, श्री के० अेल० अेन० राव, श्री अमलप्रभा दास, श्री काफड़े वगैरा आसामके भीतरी भागोंमें रहकर जहां जहां काम करते थे, वहां वहांसे बापाने अुनसे विवरण मंगवाये। कभी कभी पत्र लिखनेकी

सूचना की। और अुन विवरणों तथा पत्रोंके ब्यौरों परसे वहांकी परिस्थितिका अध्ययन करके समय समय पर अुन्होंने जो मार्गदर्शन किया, वह कार्यकर्ताओंके साथ हुअे विस्तृत पत्रव्यवहारसे मालूम होता है।

अुनके आसाम सहायता कार्यके लिअे भेजे हुअे श्री छगनलाल पारेखको गवर्नरने संपर्क-अधिकारी (Liaison Officer) के रूपमें कलकत्तेमें नियुक्त किया था। अुन्होंने थोड़े दिनोंमें जो काम किया, वह सबकी प्रशंसाका पात्र है। जो काम सरकारी तरीकेसे करनेमें दो तीन महीने लग जाते, वह अुन्होंने दो सप्ताहमें कर दिया। मकानोंके लिअे टीनकी चद्दरें, कपड़ेकी गांठें, खुराक और बर्तन वगैरा सरकारकी तरफसे बड़ी मात्रामें खरीद कर अुन्होंने लाखों रुपयेकी कीमतका माल आसाममें भेजा। विमानसे भेजनेका विमानमें। बाकीका जहाजों और रेलके जरिये। अुन्होंने अिस मामलेमें जितनी मुस्तैदी और कुशलता दिखाअी और कोषके रुपयेमें किफायत करके अुसका अच्छेसे अच्छा और अधिकसे अधिक अुपयोग किया, अुससे अुन्होंने बापाको भी खुश कर दिया। अुनके और अुनके साथ सहायता कार्य करनेवाले अन्य कार्यकर्ताओंके प्रयत्नोंसे कालिंगा अेयरवेज़ कंपनीने दो लाख पौण्ड माल कलकत्तेसे गौहाटी तक मुफ्त पहुंचानेकी व्यवस्था करना स्वीकार किया। अिसी तरह अेयरवेज़ कोआपरेटिव लिमिटेडने भी रोज ४००-५०० पौण्ड माल हरअेक चक्करमें ले जाना मंजूर किया।

आसाममें सहायता कार्य करनेवाले कार्यकर्ताओंकी तरह कुछ स्थानों पर डॉक्टरोंकी भी जरूरत पड़ेगी, यह मानकर बापाने अैसे कुछ डॉक्टरोंको भी तैयार कर रखा था और आसाम प्रान्तकी सरकारसे पुछवाया था कि अिन लोगोंकी सेवाकी जरूरत है या नहीं। तब अुत्तरमें अन्नमंत्री श्री अमियकुमार दासने लिखा कि, "आपके प्रस्तावके लिअे धन्यवाद। अभी यहां डॉक्टरोंकी जरूरत नहीं, क्योंकि हमारे पास काफी डॉक्टर हैं। जिन डॉक्टरोंने यहां सेवाके लिअे आनेकी तत्परता दिखाअी है, अुन्हें हमारी ओरसे धन्यवाद दीजिये।

"आप सहायता कार्यमें जो सतत दिलचस्पी दिखाते रहे हैं, अुसके लिअे हम सब आपके बड़े ऋणी हैं।"

आसाममें कष्ट-निवारण कार्य हो रहा था, अुन्हीं दिनों आसामके ये अन्नमंत्री श्री अमियकुमार दास तथा अुनकी मंडली ब्रह्मपुत्रा नदी पार करके धेमजी नामक गांवको जा रही थी। अुस समय पानीमें अुल्टे भंवरके कारण आगबोट डूब गअी और अुसमें के सब लोग पानीमें बह गये। अुसी वक्त सहायक दल भेज कर और आगबोटके साथ लगी हुअी प्राण बचानेवाली

नावों द्वारा बहुतोंको बचा लिया गया। परंतु छः आदमी डूबकर मर गये। अुन्हें तलाश करने और बचानेके प्रयत्न किये गये, परंतु बचाया नहीं जा सका।

ये समाचार जब बापाको मिले तब अुन्होंने श्री डाह्याभाओको, श्री छगनभाओ पारेखको, श्री अमलप्रभा दासको और अन्य कार्यकर्ताओंको अिस संबंधमें पत्र लिखे। श्री अमियबाबूको अुनके बच जाने पर खुशी जाहिर करने और ओश्वरका आभार माननेवाला अलग पत्र लिखा। अुसके जवाबमें श्री अमियबाबूने लिखा कि, "आपका २५ तारीखका पत्र मिला। आपके कृपापूर्ण आशीर्वादके लिअे धन्यवाद। जिन छः भाअियोंके साथ मैं अिस दौरे पर निकला था, अुन्हें खोना पड़ा, यह बड़ी करुण घटना हो गओ। अिस तरह मेरी जो रक्षा हुओ वह मेरे लिअे अर्थशून्य बन गओ है।

आपका
अमियकुमार दास"

अिसी प्रकार श्रीमती अमलप्रभा दाससे भूचालकी स्थिति और अुनके कार्यके बारेमें तथा अिस करुण घटनाके संबंधमें पूछताछ करने पर अुन्होंने भी बापाको नीचे लिखा जवाब दिया:

"गौहाटी, ३-११-'५०

"श्री चरणेषु बापा,

"आपका प्रेमपूर्ण पत्र मुझे समय पर मिल गया था। परंतु पत्र मिलनेके बाद तुरंत ही मुझे अुत्तर लखिमपुर जाना पड़ा। अिसलिअे मैं जवाब तुरंत नहीं दे सकी। यहां जो भूकम्प हुआ अुसका वर्णन करनेवाले और कस्तूरबा ट्रस्टकी शाखाकी बहनों द्वारा किये हुअे सहायता कार्यकी रूपरेखाका बयान करनेवाले विवरणकी नकल साथमें भेज रही हूं। मुख्य विवरण मैंने श्यामलालजीको अिन्दौर भेज दिया है।

"मैं दुबारा बहनोंके दलके साथ अुत्तर लखिमपुरके लिअे ६ तारीखको रवाना होअूंगी। अिनमें से तीन तो अमरीकन बैप्टिस्ट मिशनकी बहनें हैं। अुन्होंने स्वेच्छापूर्वक हमारे अिस सहायता कार्यमें सहयोग देनेकी तैयारी बताओ है। अिस बार हमें सुबंसरी नदी पार करके जाना पड़ेगा और सामनेके किनारेके गांवोंमें काम करना होगा। वहांसे मैं हमारे अेक केन्द्र धेमजी जानेकी कोशिश करूंगी। क्योंकि डिब्रूगढ़की तरफसे ब्रह्मपुत्रा पार करनेका काम मुश्किल होनेसे वहां जाना बहुत ही खतरनाक है।

"ब्रह्मपुत्रा नदीमें आगबोट डूबनेकी जो करुण घटना हो गअी, अुसके बारेमें आपने अखबारोंमें जरूर पढ़ा होगा। जो आगबोट श्री अमियकुमार दास और अुनकी मंडलीको धेमजी ले जा रहा थी वह पूरी डूब गअी। श्री अमियकुमार दास और अन्य कुछ मनुष्योंको बचा लिया गया, परंतु ड़िब्रूगढ़के श्री जीवनराम फूकन (नीलमणि फूकनके भतीजे) और दूसरे छः जनोंका पता नहीं चला। श्री जीवनरामके जानेसे हमने अेक बहुत बड़ा नेता और कार्यकर्ता खो दिया है।

"हमारी कुछ बहनोंको यहां सिविल अस्पतालमें तालीम दी जाती है। अुस संबंधमें होनेवाले खर्चका अिंतजाम कस्तूरबा ट्रस्टकी ओरसे नहीं होता, परंतु मेरी तरफसे होता है। अिस बारेमें आपने पुछवाया है। अुसका जवाब अितना ही है कि मेडिकल अेडवाअिज़री बोर्डने अिस तालीमकी मंजूरी नहीं दी। अिसलिअे मुझे लगा कि दो ग्राम-सेविकाओंका खर्च ट्रस्टसे लेना मेरे लिअे अुचित नहीं होगा। अिसीलिअे मैंने यह खर्च अपने पाससे किया। आपको बताते हुअे मुझे हर्ष होता है कि अिन्हें १२५ मरीज अलग अलग बीमारियोंके देखनेको मिले और अुनमें से २० को अुन्होंने स्वयं संभाला। अुसमें अुन्हें अच्छी सफलता मिली।

"आपकी तबीयत अच्छी होगी। पिताजीका स्वास्थ्य अच्छा है। मेरी बहन अपने पति और पुत्री सहित विलायतसे लौट आअी हैं।

अमलप्रभा दासके
प्रणाम"

आसाममें भारत-सेवक-समाजकी तरफसे जो भाअी सहायता कार्यके लिअे भेजे गये थे, अुनमें श्री के० अेल० अेन० राव भी अेक थे। अुनका सादिया जिलेमें काम करना तय हुआ था। वहां अुन्हें और सब मुश्किलोंके साथ खानेकी काफी तकलीफ रहती थी। अुन्हें लंबे समय तक रहना था अिसलिअे वे चाहते थे कि भोजनकी कोअी स्वतंत्र व्यवस्था हो जाय। अिस बारेमें अुन्होंने बापाको अेक पत्र लिख कर अपनी असुविधाअें बताअीं, और अुपायके तौर पर यह सुझाव दिया कि अेक स्वतंत्र रसोअिया रख लिया जाय, जिसका खर्च आसाम-कोष नहीं बल्कि भारत-सेवक-समाज भुगते।

बापाको अिस कार्यकर्ताकी कठिनाअी समझ लेने पर भी अैसा नहीं लगा कि अिस मामलेमें अेकदम हां या ना कहा जा सकता है। अिसलिअे अुन्होंने जवाबमें लिखा :

"तुम्हारा पत्र मिला। तुम गवर्नरके दलमें सादियाके पास नदी पार करते हुअे बच गये, अिसके लिअे अीश्वरको धन्यवाद। परंतु तुमने लिखा है कि तुमने अिस घटनाके अवसर पर अपना बटुआ खो दिया। बटुआ खाली था या अुसमें कुछ रुपये-पैसे या नोट थे? और थे तो कितने थे?

"तुमने दूसरा प्रश्न भोजनकी व्यवस्थाके बारेमें पूछा है। . . . अिस संबंधमें यह कहना है कि भारत-सेवक-समाजने वहां तीन आदमी भेजे हैं। श्री डाह्याभाअी नायक, श्री के० अेल० अेन० राव तथा डॉ० आयंगर। अिसलिअे समाजको तो तीनोंके साथ अेकसा बर्ताव रखना चाहिये। यदि तुम्हें पूरे वेतनके साथ रसोअिया रखने तथा नये भोजनालयका खर्च करनेकी भारत-सेवक-समाज सुविधा दे तो वही सुविधा अुसे दूसरे दोनों भाअियोंको भी देनी चाहिये, यदि वे भी तुम्हारी तरह अलग अलग केन्द्रोंमें रहकर काम करें।

"साथ ही भारत-सेवक-समाजके सेवक जब भी किसी जगह सेवाके लिअे जाते हैं, तब अुन्हें अुनके मासिक वेतनके सिवाय रसोअिये तथा अलग रसोअीघरके सिलसिलेमें होनेवाले खर्चकी रकम नहीं दी जाती। अिसके सिवाय जिस परिस्थितिमें सेवकोंको आसाम जैसे सुदूर प्रदेशमें सहायता कार्यके लिअे भेजा जाता है, वहां अवश्य ही अन्य कअी अतिरिक्त खर्च होंगे, यह मैंने पहलेसे ही सोच लिया था। अिसीलिअे मैंने समाजके कोषसे १,००० रुपयेकी रकम श्री डाह्याभाअीको भेजी थी, ताकि जब अकल्पित खर्च करने पड़ें, तब अिस रकममें से खर्च किया जा सके। आम तौर पर जब समाज अैसे कामोंमें अपने सदस्यों तथा दूसरे मित्रोंकी मुफ्त सेवाअें देता है, तब सहायता-कोष अुनके सफ़र और सेवाकार्यके समयका भोजन तथा रहन-सहनका खर्च भुगतता है। यह बात मैंने किसी भी आदमीको वहां भेजनेसे पहले गवर्नर साहबको लिख दी थी। अितने पर भी मैं तुम पर सख्ती नहीं करना चाहता। मैं तो अितना ही कहूंगा कि श्री डाह्याभाअी और तुम दोनों साथ विचार करके किसी निर्णय पर आ जाओ। और यदि खर्च बहुत ज्यादा नहीं होता हो तो मैं अुस निर्णयको मंजूर कर लूंगा। तुमसे बहुत दूर होनेके कारण मैं अिस बातका न्यायपूर्ण विचार करनेकी स्थितिमें नहीं हूं कि अिस समय तुम कितनी तकलीफ और दिक्कत अुठा रहे हो तथा अुसके कारण कितना अधिक खर्च तुम्हें करना पड़ रहा है।

"अिसलिअे यह बात यहीं खत्म कर देता हूं और तुम पर छोड़ देता हूं।"

बापा भावनगर जैसे सुदूर स्थानमें बैठे बैठे आसाम कष्ट-निवारण कार्यका संचालन करते हुअे कैसे कैसे प्रश्न हल करते थे, यह पत्र अुसका अेक नमूना है। आसामका भूकम्प, अुस सिलसिलेमें संकटग्रस्त लोगोंके प्रश्न, अलग अलग कष्ट-निवारण-समितियोंकी तरफसे अुन्हें पहुंचाअी जानेवाली सहायताअें, अपने भेजे हुअे कार्यकर्ताओं द्वारा ली हुअी जिम्मेदारियां, अुनका रोजमर्राका कामकाज, अुससे पैदा होनेवाली गुत्थियां वगैरा बातोंसे वे किस किस ढंगसे परिचित होते और हरअेक मामलेमें कैसा रवैया अख्तियार करते थे, अिसकी कुछ झांकी अुपरोक्त कार्यकर्ताओंके साथ हुअे अुनके पत्र-व्यवहारसे होती है। भावनगरमें बैठे बैठे भी वे अितना ज्यादा काम करते, मानो गौहाटीमें ही बैठे हों और अकाल-निवारणका सारा बोझ अपने सिर पर अुठा लिया हो। बापामें अगर थोड़ी बहुत भी शक्ति होती और वे पहलेकी तरह चल-फिर सकनेकी स्थितिमें होते, तो वे कैसा ही भूकंप होने पर भी अवश्य संगटग्रस्त क्षेत्रमें पहुंच जाते और अेक अेक अिलाकेमें खुद ही घूमते तब अुन्हें संतोष होता। लेकिन यह संतोष अुन्हें नहीं मिला, जो अनिवार्य था। अुनकी वृद्धावस्था, शारीरिक अशक्ति अुन्हें अैसा नहीं करने दे रही थी। परंतु अिस असंतोषके सिवाय अुनके भेजे हुअे सेवक जिस तत्परता और लगनसे काम कर रहे थे, अुसे देखकर अुनके मनमें हर्ष होता था। अुस कामके लिअे वे गौरव अनुभव करते थे।

भूकम्पके कष्ट-निवारण कार्यकी पहली मंजिल पूरी हो गअी, तब आसामके गवर्नरने बापाको श्री डाह्याभाअी नायक तथा अुनके भेजे हुअे अन्य सेवकोंकी सेवाओंकी कद्र करनेवाला अेक पत्र लिखा था। अुससे तो बापाके हर्ष और गौरवका पार ही नहीं रहा। साथ ही मनमें अभिमान करनेके बजाय यह समझकर कि अीश्वरने ही सेवकों द्वारा यह भगीरथ कार्य कराया, हमेशाकी तरह अिस बार भी वे अधिक नम्र बने।

भूकंपके समाचार मिलनेके बाद कष्ट-निवारण कार्य संगठित करनेके लिअे वे प्राथमिक पत्रव्यवहार और तार व्यवहार कर ही रहे थे कि अिस बीच अेक और अकल्पित काम अुन्हें हाथमें लेना पड़ा। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित कबीलोंके बारेमें जो व्यवस्थाअें की गअी थीं, अुनमें से संविधानकी अेक विशेष धाराकी की गअी व्याख्याके फलस्वरूप अिन जातियों अर्थात् आदिवासियोंको मिलनेवाली शिक्षा संबंधी सहायता वगैराके लाभसे अुनकी बड़ी संख्या वंचित रह जाती थी। अितना ही नहीं, परंतु अुसके अनुसार आदिवासियोंकी जनगणनाको ध्यानमें रखकर अुन्हें संसदमें मिलनेवाली बैठकोंकी संख्यामें भी कमी हो जाती थी।

यह बात हरिजनों और आदिवासियोंके हितोंके सदाके जाग्रत रक्षक बापाके ध्यानसे बाहर कैसे रहती? १९५० में प्रकाशित संविधानका (अनुसूचित कबीलों संबंधी) आदेश ता० ६–९–'५० के दिन भारत-सरकारके गजटमें देखा, तो फौरन अुसके भीतरके "दुःखदायक और क्रूर तथ्य" की ओर अुनका ध्यान आकर्षित हुआ।

यह आदेश जिन तथ्योंके आधार पर तैयार किया गया था, अुनमें स्टेट मिनिस्ट्रीने २० लाखके आंकड़े कम दिये थे। अिसका कारण यह था कि मध्यप्रदेशके साथ लगे हुअे छत्तीसगढ़ और अुड़ीसाके देशी राज्योंके ६० तालुके, जहां गैरआदिवासी प्रदेशमें आदिवासी रहते थे, गिनतीमें नहीं लिये गये थे। अिस सिलसिलेमें अलग अलग राज्योंकी तथा मध्यप्रदेशकी जनगणनाकी रिपोर्टें अिकट्ठी करके बापाने अुनका अच्छी तरह अध्ययन किया और आंकड़ोंका नोट तैयार किया था और अुस भूमिका पर वे आदिवासियोंका केस लड़े थे। अुनके शब्दोंमें कहें तो आदिवासियोंके साथ होनेवाला यह अन्याय, जो सिर्फ दस ही वर्ष नहीं बल्कि जब तक संविधान अस्तित्वमें रहता तब तक कायम रहनेवाला था, दूर करानेके लिअे अुन्होंने अधिकारियोंसे अनुरोध किया था। और अन्तमें बापाको अिसमें सफलता भी मिली थी।

अिसी प्रकार सारे भारतमें पिछली जनगणनाके अनुसार आदिवासियोंकी संख्या न्यायपूर्ण ढंगसे जितनी गिनी जानी चाहिये थी अुससे बहुत कम गिनी गअी थी। अिसके फलस्वरूप अुन्हें पार्लियामेण्टमें मिलनेवाली बैठकें और कुछ शैक्षणिक तथा आर्थिक लाभ खोने पड़ते थे। बापाने राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और गृहमंत्री वगैराका ध्यान अिस ओर आकर्षित किया था। अितना ही नहीं, अिस संबंधमें भी अुन्होंने अध्ययनपूर्ण टिप्पणियोंवाले तथ्य और आंकड़े जुटाकर आदिवासियोंका मामला बहुत ही सबल रूपमें पेश किया था। जनगणना-कमिश्नरने अिस बारेमें सारे भारतकी कुल आदिम जातियोंकी आबादीका आंकड़ा १,७८,७३,००० गिना था, जब कि दिल्लीके आदिम जाति कार्यालयसे अुन्हें जो आंकड़ा मिला था वह २,४८,०२,७०० था। अर्थात् दोनों आंकड़ोंमें ६९,२९,७०० का फर्क रहता था।

यह फर्क ठक्करबापाके कथनानुसार दो कारणोंसे था:

१. सरकारी आंकड़ोंमें संविधानमें बताये गये 'ग' और 'घ' भागके राज्योंकी अनुसूचित जातियोंकी आबादीका समावेश नहीं किया गया था।

२. अिन राज्योंमें आदिवासियोंके प्रदेशका विस्तार घटा देनेसे गैर-आदिवासियोंके अिलाकेमें रहनेवाले आदिवासियोंको गिनतीसे अलग रख दिया गया था।

बापा आंकड़ोंके कोष्ठक देकर अन्तमें अितना और जोड़ते हैं कि, "अिस प्रकार लगभग ६० लाख आदिवासियोंको धारासभाओंमें मिलनेवाली बैठकों और शैक्षणिक तथा आर्थिक लाभोंसे वंचित रखनेवाला यह अन्याय दूर करना हो तो मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, आसाम, अुड़ीसा और हैदराबाद — अिन छः राज्योंके आंकड़ोंकी दुबारा जांच होनी चाहिये। अिस जांचमें संबंधित राज्योंके प्रतिनिधि, जनगणनासे संबंध रखनेवाले मुख्य अधिकारी, और संविधानकी ३३८ वीं धाराके अनुसार नियुक्त किये गये विशेष अधिकारी तथा आदिम जाति सेवक-संघके कार्यकर्ताओंको मिलकर काम करना चाहिये।"

यह प्रश्न हाथमें लेनेके बाद अुन्होंने भारत-सरकारके साथ, राष्ट्रपतिके साथ और आदिम जाति सेवक-संघके कार्यकर्ताओंके साथ विस्तृत पत्रव्यवहार किया और अपनी दलीलोंके समर्थनमें सबल प्रमाण पेश करके अन्तमें राष्ट्रपतिके आदेशमें सुधार कराने और अिस प्रकार ६० लाख आदिवासियोंके प्रति होनेवाला अन्याय दूर करानेमें वे सफल हुअे। यह सफलता प्राप्त करनेमें अुनके व्यक्तिगत प्रभावने भी कोअी कम भाग अदा नहीं किया होगा, यह कल्पना आसानीसे की जा सकती है। कारण, सरकारी आज्ञाअें सिर्फ तथ्यों या सबल पैरवी करनेसे ही नहीं बदली जातीं, परंतु अिसके पीछे निश्चय-बल, तपश्चर्या और लगन चाहिये। बापामें यह सब था; अिसके सिवाय अुनके प्रखर व्यक्तित्व और सचाअीकी सबके दिलों पर गहरी छाप थी। अुनकी सचाअीमें शंका करे, अैसा भारत-सरकार या राज्यसरकारोंमें कौनसा अधिकारी हो सकता है?

अुपरोक्त आंकड़े जितनी आसानीसे बताये गये हैं अुतनी आसानीसे प्राप्त नहीं हुअे थे। अुनकी खातिर बापाको पुराने जमानेके जनगणनाके कुछ विवरण और अुनके संबंधकी भिन्न भिन्न टिप्पणियां वगैरा देखनी पड़ी थीं। परंतु अेक काम हाथमें लेनेके बाद अुसे अधूरा छोड़ दें, तो फिर बापा कैसे? जीवनके अन्तिम दिनोंमें अनुसूचित और अनुगणित जातियोंके लिअे वे यह बहुत बड़ा काम कर गये।

अिस प्रकार बुढ़ापेमें बीमारी और कमजोरीकी हालतमें बिछौने पर पड़े पड़े भी वे यथाशक्ति सब प्रकारके काम कर रहे थे। अितनेमें अुन्हें

सरदारकी बीमारीके समाचार मिले। अुसके बाद अुन्होंने अखबारोंमें पढ़ा कि वे दिल्ली छोड़कर बंबअी जा रहे हैं। अिससे अुनकी चिन्ता बढ़ गअी। नजदीकके मित्रोंसे पत्रों द्वारा सरदारकी तबीयतके बारेमें पूछताछ की। और हर क्षण अुनके स्वास्थ्यकी चिन्ता करने लगे।

आखिर दिसम्बरकी १५ तारीखको सरदारके देहावसानके समाचार देशभरमें फैल गये। भावनगरमें भी अुसी दिन सुबह खबर मिली। ठक्करबापाको बड़ा आघात लगा। अुनकी अिच्छा तो यह थी कि सरदार अभी अेकाध दशक और जियें और जैसे अुन्होंने भारतमें राजनैतिक स्थिरताकी बुनियाद डाली, अुसी तरह भारतके अन्य कुछ मुख्य प्रश्न — जैसे खेती और ग्रामोद्योगोंका विकास, गरीबी और बेकारीका नाश वगैरा — निबटाकर देशको सुख, शान्ति और समृद्धिके मार्ग पर अग्रसर कर दें। परंतु सरदार चले गये और अुनका काम अधूरा रह गया।

सरदारकी तंदुरुस्तीके समाचार और बादमें मृत्युके समाचार बापाने रेडियो द्वारा १५ तारीखको सुबह क्रमशः छः और नौ बजे सुने। अुसी दिन सारे देशकी भांति भावनगरमें भी तीन दिनकी हड़ताल की गअी। अुसके बाद बापाने भावनगरके मुख्य कांग्रेस कार्यकर्ता श्री जादवजी मोदी, श्री लल्लुभाअी, श्री गंगादासभाअी वगैरासे मिलकर शामको साढ़े पांच बजे तालाब पर शोक-सभा करनेका निश्चय किया। अुसी दिन श्री बलवन्तराय महेता, श्री नानाभाअी भट्ट वगैरा भी भावनगर आ पहुंचे।

अुस दिन जो भी बापासे मिलने आते अुनसे बापा सरदारकी ही बात करते। अुनके गुण-गौरव गाया करते और अुन्हींके संस्मरण ताजा करते। सरदारके जानेसे अुनका हृदय बड़ा दुःखी हो गया था। शाम होने आअी। सभा शुरू होनेमें घंटे दो घंटेकी देर थी। अितनेमें बापाने कुछ कार्यकर्ताओंको बुलाकर अुनके सामने शोक-सभामें अुपस्थित रहनेकी अपनी अिच्छा प्रगट की। कार्यकर्ताओं और साथियोंने अुन्हें समझाया, "बापा, आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। आपको तीसरी मंजिलसे अुतारा नहीं जा सकता। अैसा करनेसे हृदयको बड़ा धक्का लगेगा और तबीयत बिगड़नेका डर है। अिसलिअे आप यहीं रहें।"

परन्तु बापाने कहा, "मुझे कुछ नहीं होगा। मुझे सभामें जाने दो। सरदार जैसे सरदार चले गये। अुनकी शोक-सभामें मैं मौजूद न रहूं, यह कैसे हो सकता है?"

भावनगरके कार्यकर्ताओंने अुन्हें बार बार समझाया। आत्माराम समझा आये, जादवजी मोदी समझा आये, परन्तु बापाने तो अेक ही रट पकड़

ली कि मुझे जाना ही है। अितनेमें श्री मानशंकर भट्ट आये। अुनके प्रति बापाको बहुत प्रेम हो गया था। अिसलिअे दूसरे मित्रोंने श्री मानशंकर भट्टसे कहा, "मानशंकरभाअी, आप बापासे कह देखिये। शायद आपकी बात मान लें।"

अिसलिअे मानशंकरभाअी बापाको सभामें न जानेको समझाने लगे।

यह सुनकर बापाने कहा, "तुझे यहां किसने भेज दिया? तेरा काम तो सभामें व्यवस्था रखनेका है। जा, वहां सभामें जा और भजन सुना।"

मानशंकरभाअी बोले, "मैं अभी जाता हूं। परन्तु डॉक्टरके कहे अनुसार आप वहां न जायं तो अच्छा।" अिस पर बापा बोले, "यह किसने कहा? यह प्रसंग ही अैसा है कि मुझसे घर पर नहीं रहा जा सकता। मुझे खुद चलकर जाना चाहिये।"

सबने देख लिया कि बापाको किसी भी तरह रोका नहीं जा सकता, तब अुनसे कहा गया कि अच्छा, आप जाना ही चाहते हैं तो आपको यहांसे डोली या कुरसी पर बिठा कर नीचे अुतारेंगे।

फिर भी बापाने पैदल जानेका ही आग्रह किया और कहा, "मैं दो जनोंके कंधों पर हाथ रखकर धीरे धीरे सीढ़ियां अुतरूंगा।" दुबारा समझाने पर बापा गुस्सेमें आकर कहने लगे, "जाओ, तुम सब चले जाओ, मैं तो आज चलकर ही अुतरूंगा।"

यह सुनकर साथियोंको भी क्रोध आ गया। हरखचंदभाअीने जरा मीठा गुस्सा करके कहा, "तो जाअिये, आपको जहां जाना हो! अुतरिये नीचे! वैसे डॉक्टर अिजाजत नहीं दें, तब तक हम न तो आपसे कुछ कहेंगे और न कुछ करेंगे ही।"

परन्तु बापा यों हार माननेवाले नहीं थे। वे मौन रहे। अुनके मनमें दुःख और रोषकी मिश्रित भावनाका प्रवाह बह रहा था। वे कुछ नाराज भी प्रतीत होते थे, फिर भी कुछ बोले नहीं। किसीसे कुछ कहा नहीं। अपने आप अशक्त और जीर्ण हाथोंका सहारा लेकर बिस्तर पर बैठ गये और पास ही दीवारकी खूंटी पर टंगी हुअी बंडी और टोपी बैठे बैठे अुतार कर पहनी। परन्तु वे कहां जानेवाले थे? कमरेमें जिस खाट पर बैठे थे अुससे अुतर कर कमरेके दूसरे सिरे तक भी किसी दूसरेकी मददके बगैर चल नहीं सकते थे। अिसलिअे थोड़ी देर तक यों ही चुपचाप बैठे रहे। बादमें धीरेसे हंसकर हरखचंदभाअीसे

कहने लगे, "हरखचंद, अब तो समय हो गया होगा? चलो, तुम कहो वैसा करूंगा। मैं हारा।"

हरखचंदभाअीने कहा, "मैं भी हारा। वैसे मुझे आज आपको ले जाना नहीं था।"

बापाने कहा, "चलो, हम सब हारे। अब तैयारी करो। नहीं तो हमें सभामें देर हो जायगी।"

अिसके बाद बापाको तीसरी मंजिलसे कुरसी पर बिठाकर अुतारा गया। मामाकोठा रोड पर स्थित अिस मकानके दरवाजेके पास ही मोटर खड़ी की गअी थी। बापाको सहारा देकर मोटरमें बिठाया गया और वहांसे सभामें ले गये। वहां डॉक्टर वगैराकी पूरी तैयारी रखी गअी थी। सभामें जानेके बाद अुनकी नाड़ी, हृदय वगैराकी जांच की गअी तो स्थिति बहुत अच्छी मालूम हुअी। डॉक्टरको भी आश्चर्य हुआ। निश्चयबल, अिच्छाशक्ति और श्रद्धा कितना विलक्षण काम करती है, अिसका प्रत्यक्ष अुदाहरण बापाने अुस दिन अुपस्थित किया। सरदारके देहावसानके निमित्त हुअी भावनगरकी अुस शोकसभाके बाबा अध्यक्ष हुअे। सभाकी कार्रवाअी काफी समय तक चली। श्री बलवंतराय महेता, श्री नानाभाअी भट्ट, श्री पृथ्वीराज कपूर वगैरा अनेक लोगोंने भाषण दिये और सरदारकी विविध शक्तियोंका बयान किया। सभा समाप्त होनेके बाद बापा घर आये। सरदारकी शोकसभामें अुपस्थित रहने और कर्तव्यपालन कर सकनेके कारण अुनके आनंदका पार नहीं रहा। घर लौटकर अुन्होंने हरखचंदभाअीसे कहा, "हरखचंद, आज तुमने बड़ा मजा ला दिया। तुम अपने निश्चय पर दृढ़ और मैं अपने निश्चय पर दृढ़। परन्तु अच्छा हुआ अीश्वरने सारा मामला सुन्दर ढंगसे निबटा दिया।" बापाकी तबीयत अुस दिन बहुत अच्छी रही और मन भी खूब प्रसन्न रहा।

बापाके सार्वजनिक जीवनका यह अंतिम सार्वजनिक कर्तव्य था। अुसके बाद खास तौर पर वे कोअी सार्वजनिक सेवाका काम सार्वजनिक रूपमें नहीं कर सके। अितने पर भी अुनकी अेक सेवाका यहां जिक्र कर देना चाहिये। सरदारके देहान्तके लगभग दस बारह दिन बाद श्री नंदुभाअी पटेल नामक अेक कार्यकर्ता बापासे मिलने आये। अुन्होंने भील-सेवा-मंडलके आश्रयमें अहमदाबाद जिलेके पास खेड़ब्रह्मा नामक गांवमें भील-सेवाका काम शुरू किया था और अब बाकायदा अुस संस्थामें शरीक होकर बापाके आशीर्वाद मांगने आये थे।

श्री नंदुभाओी अिस अवसरको याद करके लिखते हैं कि, "अुस दिन बापाको सरदारका बार बार स्मरण हो आता था और अुनकी आंखोंसे आंसुओंकी धार बहती रहती थी। अेक दो बार तो सरदारका जीवन-चरित्र सुनते सुनते वे रो भी पड़े थे। अुस दिन वे बहुत ही भावुक बन गये थे। बिस्तरसे अुठकर वे धीरे धीरे कमरेमें चल-फिर सकते थे। मुझे खेड़-ब्रह्मासे आया हुआ जानकर मिलनेका समय दिया था। खेड़ब्रह्माके संस्मरण याद करते हुअे बापाने मुझसे कहा, 'वर्षों पहले में खेड़ब्रह्मा गया था। स्टेशनसे अुतरकर पैदल चलकर भीलोंके झोंपड़ोंमें गया था। बेचारे बिलकुल गरीब थे। शरीर पर कपड़ा-लत्ता कुछ नहीं था। लंगोटी लगा-कर या कमसे कम कपड़ा पहनकर जंगलमें घूमते रहते थे। शिकार करके खाते थे। बाणका तरकस कंधे पर रखते और जानवरोंसे बदतर हालतमें जीवन बिताते थे। वहां काम करनेकी जरूरत मालूम हुअी, परन्तु अुन दिनों देशी राज्योंकी सहानुभूति बिलकुल दिखाअी नहीं देती थी। अिस-लिअे अुस दिन तो मैं वापस आ गया। परन्तु मनमें खूब मंथन चलता रहा। मुझे लगा कि अुन लोगोंने क्या पाप किये होंगे जो अुनकी यह स्थिति हुअी? क्या अुन्हें मानवकी तरह जीनेका हक नहीं है? जंगलोंमें सिंहकी तरह निडर होकर घूमें और यहां सभ्य आबादीमें आयें तो बकरीकी तरह कायर बन जायं।`अिसका कुछ न कुछ अुपाय करना ही चाहिये। अुसके बाद मैंने दाहोदमें काम शुरू किया था।'

"अिसके बाद घीका दीया जलवाकर मुझसे भील-सेवा सम्बंधी प्रतिज्ञा लिवाअी और आशीर्वाद देकर कहा, 'जो प्रदेश मैंने २५ वर्ष पहले देखा था, अुसका काम तुम्हारे हिस्से आया है। बहुत कठिन परिस्थितियां हैं, फिर भी धीरज और हिम्मतसे काम करना। घट घटमें राम बैठे हुअे हैं, अुनके दर्शन करते-करते तुम काम करना। अुन लोगोंको स्नेहसे समझा-बुझाकर अिकट्ठा करना और अपने प्रेमकी गरमी देकर अुन्हें शिक्षा देनेका प्रबंध करना। वे लोग तुम्हें आशीर्वाद देंगे। मुझे आशा है कि वे लोग तुम्हारे परिश्रम, लगन और तपसे सुधरेंगे।'

"अिस प्रकार मुझे सेवाकी दीक्षा देनेके बाद बापा भील-सेवा और भील-सेवकोंकी बातों और विचारोंमें लग गये। सुखदेवभाअीको याद करके अुन्होंने कहा, 'सुखदेवभाअी पुराने अनुभवी सेवक हैं। मैंने जब भीलोंमें काम शुरू नहीं किया था, तब सुखदेवभाअीने अपने ढंगसे यह काम शुरू कर दिया था। अुन्होंने बहुत अुतार-चढ़ाव देखे हैं। अब तो वे बूढ़े हो

गये हैं, परन्तु अुनका मन बूढ़ा नहीं हुआ है। अेक दिन मैंने सुखदेवभाअीको हुक्म दिया कि राजस्थान या किसी और प्रान्तमें जाओ। अुस समय अुनकी तबीयत ठीक नहीं थी, अिसलिअे अुन्होंने कुछ ढिलाअी दिखाकर कहा कि तबीयत खराब है। तब मैंने (बापा) कहा, सुखदेव भी बीमार हो सकता है? अन्तमें वे चले गये।' अुसके बाद अुन्होंने श्री डाह्याभाअीकी बात चलाकर कहा कि डाह्याभाअी जब भील-सेवा-मंडलमें भरती हुअे, तब मुझे रोना आ गया था। क्योंकि वे अैसे परिवारमें से आये थे जिसके भरण-पोषणकी सारी जिम्मेदारी अुनके सिर पर थी। अुन सबका क्या होगा, अिसका विचार अेक तरफ रखकर वे साहसपूर्वक भरती हो गये और बहुत बढ़िया काम किया। अब वे स्वयं आसाममें व्यापार करने गये हैं। देखें क्या कमा कर लाते हैं। अिन सब सेवकोंके जीवनसे बहुत कुछ प्रेरणा लेने लायक है। अुनसे जितनी प्रेरणा ली जा सके लेना और जी तोड़कर काम करना।"

दिल्लीसे भावनगर आये बापाको लगभग ८ महीने होने आये। अिन आठ महीनोंमें अुन्होंने कितना अधिक काम किया! अिन सब कामोंके बीच अखबार पढ़वाने, रेडियो सुनने और कुछ पुस्तकें पढ़वाकर सुननेकी फुरसत भी बापा निकाल लेते थे। आठ महीनेके अर्सेमें अुन्होंने अनेक पुस्तकें पढ़वाकर सुनीं। सरदार वल्लभभाअी पटेलका जीवन-चरित्र, स्व० झवेरचंद मेघाणीका 'सोरठ तारां वहेतां पाणी', अुन्हींके दूसरे कहानी संग्रह 'प्रतिमाओ' में से कुछ कहानियां, श्री रायचुराकी 'सबळ भूमि गुजरात', योगवाशिष्ठ, महाभारतके कुछ खास कांड, कलापिके 'केकारव' के कुछ गीत, 'कोअीनो लाडकवायो' (किसीका लाड़ला) और अन्य गीत —अिस प्रकार विविध प्रकारके धार्मिक, राष्ट्रीय और सामाजिक साहित्यका श्रवण होता रहा। मेघाणीका 'सोरठ तारां वहेतां पाणी' और सरदारका जीवन-चरित्र तो अुन्हें खूब ही पसंद आया। दूसरी पुस्तकोंसे भी वे प्रेरणा प्राप्त करते रहे। अिसके अलावा श्री अनन्त ठक्कर, श्री मोहनभाअी पटेल, श्री विजयाबहन गांधी, और दूसरा जो भी कोअी मिलता अुससे भजन, कविताअें और गीत गवाते। चोरवाड़में गरमीका मौसम बिताया, अुन दिनों श्री गढ़वी मेरूभा आदि मित्रोंने लोकवार्ताओंका जलसा किया, तो अुसमें भी बापाको खूब आनन्द आया। श्री मानभाअी और अुनकी भजन-मंडलीके भजन तथा 'पीलूवाली', 'लकड़ीका भारा बेचनेवाली' और दूसरे श्रमजीवियोंके जीवनका हूबहू वर्णन करनेवाले गीत भी अुन्हें बहुत पसंद आये। वे बार बार कहते थे कि आजकलके साहित्यकारों और कवियोंको अैसे वास्तविक जीवनकी झांकी करानेवाले गीत रचने चाहिये।

अिस प्रकार विभिन्न संस्थाओंके दफ्तरी काम, पत्रव्यवहार, पुस्तक-वाचन अित्यादिमें अुनके दिन गुजर रहे थे। बीचमें कभी कभी अुनकी तबीयत पलटा खाती थी। बाकी आम तौर पर आठ महीने अच्छे बीते। अलबत्ता, शरीर धीरे धीरे घिसता जा रहा था और वे अपने अन्तकी ओर धीरे धीरे परन्तु निश्चित रूपमें बढ़ते जा रहे थे। यह बात वे खुद जानते थे और कभी कभी बहुत ही नजदीकके मित्रोंके पत्रोंमें अिस सम्बंधमें कुछ सूचक वाक्य भी आ जाते थे।

अिस प्रकार बापाने १९५० का दिसंबर मास पूरा किया और १९५१ के नये वर्षमें पदार्पण किया।

३६

अंतिम यात्रा

दिन-ब-दिन बापाका शरीर अधिकाधिक गिरता जा रहा था। भावनगरके डॉ० श्री विजयशंकर वगैराकी चिकित्सासे सूजन तो चली गअी थी, परन्तु कमजोरी बढ़ती जा रही थी। ६ जनवरीको अुन्हें जोरके दस्त लगे और शरीरमें अधिक कमजोरी आ गअी। दस्त बन्द होनेकी दवाअी दी गअी तो दूसरे दिन दस्त नहीं हुआ। अिन सब बातोंका असर नींद पर होता था। नतीजा यह हुआ कि हलका भोजन, दवा, अिंजेक्शन वगैराकी मददसे शरीरको जितना टिकाया जा सकता था अुतना टिकाये रखनेका प्रयत्न किया जाता था। दूसरी ओर 'टाअिम्स' से खबरें सुनना, पुस्तकें पढ़वाना और रेडियो सुनना तो जारी ही था। रोज रोज समाचार पूछने आनेवालोंकी और स्थानीय तथा बाहरसे आनेवाले मुलाकातियोंकी मुलाकातें भी चालू ही थीं।

८ जनवरीको आंबलासे स्वामी आनन्द, श्री नरहरिभाअी परीख, श्री जुगतराम दवे तथा श्री छगनलाल जोशी वगैरा बापासे मिलने आये थे। जुगतरामभाअी दसेक बजे आये थे। अेक दो घंटे बैठे होंगे कि श्री नरहरिभाअी वगैरा आ गये। बापाने अुनके साथ दो अढ़ाअी घंटे बिताये। दोपहरको दो बजे वे सब आंबला जानेके लिअे रवाना हो गये।

अुसी दिन शामको आअी डाक डॉ० केशवलाल ठक्करने पढ़कर सुनाअी। अुसमें श्री हरखचंदभाअीका पत्र आने पर बापाने अुन्हें अेक

जूनागढ़के पते और दूसरा वीसावदरके पते पर -- अिस प्रकार दो पत्र लिखनेका केशुभाअीको आदेश दिया। तदनुसार अुन्होंने पत्र लिखे। पत्रोंमें स्वास्थ्यके ब्यौरेवार समाचार लिख भेजे और लिखा कि यहां वापस आनेकी जल्दी न करें।

अितने पर भी जल्दी करने जैसी बापाकी तबीयत होती जा रही थी, अिस बारेमें डॉ० केशवलाल ठक्करको कोअी शंका नहीं थी। अिसलिअे अुन्होंने बापाकी सम्मति लेकर ७ जनवरीको डॉ० मोहिलेको अपनी सुविधानुसार अहमदाबादसे अेक बार आकर बापाकी तबीयत देख जानेको पत्र लिखा और दो दिन बाद अिस बारेमें अुनका जवाब भी आ गया कि वे रविवारको आयेंगे।

१० तारीखको सुबह बापाको बेचैनी मालूम होने लगी तो डॉ० विजयशंकरको बुलाया गया। अुन्होंने दवा दी, जिससे कुछ राहत मिली।

दूसरे दिन फिर नींदकी शिकायत पैदा हुअी। अिसलिअे नींदकी दवा दी गअी। फलस्वरूप दो दो घंटेकी तीन बार नींद आयी। मगर चौबीस घंटेमें कोअी छः बार दस्त हुअे, जिससे शरीरमें कमजोरी अधिक मालूम होने लगी।

१२ तारीखको अुन्हें दिल्लीसे श्री मावलंकर दादाका यह तार मिला :

"Yourself unanimously elected Chairman Kastoorba Trust. Sushila Pai Secretary."

परन्तु बापाके लिअे यह बेकार था। अुन्हें महसूस हो रहा था कि वे कुछ भी काम नहीं कर सकते। अुस दिनकी डायरीमें अुन्होंने अिस सिलसिलेमें यह दर्ज कराया :

"शामको दादा मावलंकरका तार आया कि कस्तूरबा ट्रस्टके अध्यक्षके तौर पर मेरा चुनाव अेक मतसे हुआ है। परन्तु वह किस कामका? मैं कहीं जा-आ नहीं सकता। शारीरिक दृष्टिसे मैं सर्वथा अशक्त हो गया हूं। अिसलिअे यह बोझा अब अुन्हींको अुठाना चाहिये।"

दूसरे ही दिन अुन्होंने अिस बारेमें श्री मावलंकर दादाको काफी लंबा अुत्तर लिखवाया। वह पत्र अुनकी शारीरिक और मानसिक दोनों स्थितियोंका सच्चा प्रतिबिम्ब है। अुसमें वे लिखते हैं :

"प्रिय दादा,

"कल रातको मुझे आपका तार मिला। अुसमें आपने बताया है कि कस्तूरबा ट्रस्टके अध्यक्षके तौर पर मुझे पसंद किया गया है और सुशीला पै मंत्रीके रूपमें चुनी गअी हैं।

"अिससे मेरे प्रति आपका प्रेम और ममत्व प्रगट होता है। परन्तु पिछले अेक सप्ताहमें मेरा शारीरिक स्वास्थ्य कितना अधिक बिगड़ गया है, अिसकी आपको कल्पना नहीं है। मैं धीरे धीरे और स्थिरतापूर्वक मृत्युकी ओर जा रहा हूं। सब मित्रोंको मैं यह सही बात बताता नहीं, परन्तु यह अेक सचाअी है। और मुझसे यह बात अधिक समय तक छुपाअी नहीं जा सकती। डॉ० केशुभाअी भी जानते हैं। वे यहांके अन्य विश्वस्त डॉक्टर मित्रोंकी सलाह तो लेते ही हैं, फिर भी अुनकी विनती पर अुनके मित्र डॉ० मोहिले भी कल रविवार ता० १४–१–'५१ को अहमदाबादसे यहां मेरे स्वास्थ्यकी परीक्षाके लिअे ही खास तौर पर आनेवाले हैं।

"परिस्थिति यह है। अिसलिअे मैं आपसे ये तथ्य ट्रस्टी मंडलके सामने रखने और जरूरत पड़े तो अेक परिपत्र द्वारा सूचित करनेका अनुरोध करता हूं। आप अुन्हें सच्चा हाल लिखकर बता दीजिये कि शारीरिक दृष्टिसे यह जिम्मेदारी मैं अब किसी भी तरह संभाल नहीं सकता। साथ ही आपके नाम लिखे हुअे पत्रमें मैंने बता दिया है कि यह काम और किसीको नहीं, परन्तु आप ही को संभालना है। वर्तमान परिस्थितिमें यह कार्य संभालनेके लिअे आप ही अेक सुयोग्य व्यक्ति हैं। अिसलिअे आपको यह फर्ज अपने सिरसे अुतारकर दूसरेके सिर पर रखनेका विचार तक नहीं करना चाहिये। देशके और दुनियाके (विदेशोंके) काममें आप खूब डूबे हुअे हैं, यह जानते हुअे भी मैंने यह सुझाव दिया है। अिसलिअे यह फर्ज अब आपको अदा करना ही होगा।

"यह सब लिख रहा हूं, तब डॉक्टर मित्र दवाओं द्वारा थोड़ा थोड़ा सहारा देकर मुझे टिका रहे हैं। परन्तु अिसकी भी हद होती है। और थोड़े हफ्तोंमें ही आपको सबसे खराब समाचार सुननेको तैयार रहना चाहिये। यह कब होगा सो अीश्वर जाने।

"मैं मानता हूं कि कस्तूरबा ट्रस्टका सर्जन मैंने खुद अपने हाथों किया है। जहां तक मुझे याद है, १९४४ में बम्बअीमें गोला-बारूदका धड़ाका हुआ था, अुस समय वहां शान्तिभाअीके दफ्तरमें नीचेके मकानमें रोज रोज बैठकर भाअी श्री रतिलाल गांधीकी मददसे ट्रस्टका मसौदा तैयार किया था। मैं जानता हूं कि मुझे अपनी अिस सृष्टिके प्रति कितनी ममता है। अिसलिअे अिस ट्रस्टका अध्यक्ष बननेसे अिनकार करने पर मुझे अत्यंत दुःख हो रहा है। परन्तु अीश्वरी आज्ञा मनुष्यकी आज्ञासे अधिक बलवती और कठोर होती है और अुसकी तो क्षण भर भी अुपेक्षा

नहीं की जा सकती। अिसलिअे मैं फिर यह स्थिति सब ट्रस्टियोंके सामने रखने और अुन्हें परिपत्र द्वारा वस्तुस्थितिकी जानकारी करानेकी विनती करता हूं।

"मेरे प्रति अितना ममत्व और प्रेम बतानेके लिअे मैं सब ट्रस्टियोंका आभार मानता हूं।

आपका सच्चा मित्र
अमृतलाल ठक्कर"

"पुनश्च: कृपा करके श्यामलालको न भूलियेगा।"

अिस प्रकार कस्तूरबा ट्रस्टका अध्यक्षपद अस्वीकार करनेके साथ साथ मावलंकर दादासे बिदा भी ले ली और जानेसे पहले श्यामलालजीके लिअे आखिरी सिफारिश भी कर दी। श्यामलालजीके लिअे तो ये पांच शब्द अुनके जीवनकी महानसे महान पूंजी बनकर रहेंगे।

अुस दिनकी डायरीमें बापाने अिस प्रकार लिखवाया:

"आज हरखचंदका तार आया। वे कल सुबह आयेंगे।

"शामको महिला-मंडल मिलने आया। कंचन, शान्ता वगैरा। अुन सबसे कहा कि मेरे जानेके बाद कोअी रोये नहीं। खुश होना कि मैं अिस देहसे छूट गया। कंचनने भजन गाया। . . . रातको कपिलराय तथा अनंत सोने आये थे। अेक ही आदमीको जागरण न करना पड़े, अिसलिअे दो दो घंटेकी पारी लगायेंगे।"

अिसके बादकी चार दिनकी डायरी देखें।

"ता० १४–१–'५१

"प्रातः साढ़े सात बजे अुठा। अहमदाबादसे डॉ० मोहिले आनेवाले थे, अिसलिअे कपिलराय तथा केशुभाअी अुन्हें लेनेके लिअे स्टेशन गये थे। चोरवाड़से हरखचंदभाअी आ गये।

"डॉ० मोहिलेने मेरी स्वास्थ्य-परीक्षा १०।। बजे की और अुचित प्रतीत होनेवाली दवायें लिख दी हैं। बिलकुल आराम करनेकी सलाह दी है। नमकरहित आहार (Saltless diet) न लिया जा सके तो अभी तरल आहार पर ही रहनेकी अुन्होंने सलाह दी है। दूध, कॉफी, कांजी और फलोंका रस वगैरा। वे शामकी मिक्स्ड ट्रेनसे अहमदाबाद लौट गये। शामको जानेसे पहले दुबारा जांच कर गये।

"अुन्होंने रेल किरायेके सिवाय अेक भी पाअी अपनी फीसके रूपमें (आग्रह करने पर भी) लेनेसे साफ अिनकार कर दिया। अुनके लिअे ठहरनेकी व्यवस्था केशुभाअीने राजमहल होटलमें कर रखी थी।

"हरखचंदके आ जानेसे मुझे बड़ी निश्चिन्तता हो गअी है। वे बड़े समझदार हैं। केशुभाअीने मेरी तबीयतके बारेमें कुछ लिखा होगा। अुस पर वे तुरंत यहांके लिअे निकल पड़े।

"सवाअीलाल पंड्या मिले। सीहोरसे भाअी बाबू आया था। पालीतानावाले डॉ० प्रागजी भी आये थे। भाअी चितलिया और मानभाअी भी आये थे। कपिलरायकी पत्नी, अनंतकी पत्नी तथा शान्ता वगैरा भी आअी थीं।

"कल रातको दिये गये अिन्जेक्शनका थोड़ा असर रहा। अिस अिन्जेक्शनका असर देखनेके लिअे केशुभाअी रातको तीन घंटे तक मेरे पास बैठे रहे।"

"ता० १५-१-'५१

"सबेरे ७॥ बजे अुठा। नींद अच्छी नहीं आयी। आज पूनाके लिअे साप्ताहिक पत्र गिरीशसे लिखवाया। तबीयत दिन पर दिन बिगड़ती जानेकी सूचना की है।

"आज केशुभाअीने मेरे स्वास्थ्यके बारेमें ब्यौरेवार पत्र डॉ० कुंजरूके नाम दिल्ली लिख भेजा है। और डॉ० मोहिलेके आनेके बारेमें सब हाल लिखा है।

"दादा मावलंकर यहां आना चाहते हैं। अुन्हें केशुभाअीने सूचना भेजी है कि जनवरीके अंतिम सप्ताहमें अगर असुविधा न हो तो बम्बअीसे सीधे यहां आयें।

"चित्रादेवी, सरोज मगनलाल व्यास, गंगादास गांधी वगैरा आये थे।

"प्रसन्न महेता पी० टी० आअी० के लिअे स्वास्थ्यके समाचार भेजनेको 'मेडिकल रिपोर्ट' लेने आये थे, परन्तु केशुभाअीने कहा कि अिससे हमारे पास तार और पत्र बहुत आते हैं और अुनका अुत्तर देनेकी झंझट खड़ी हो जाती है।"

"ता० १६-१-'५१

"सुबह साढ़े सात बजे अुठा। दातुन करके दूध पिया। रेडियो सुना। मस्सोंमें दर्द था अिसलिअे केशुभाअीने मरहम लगाया। बम्बअीसे शान्ति-

कुमार मोरारजी, जहांगीर पटेल और डॉ० सुशीला नय्यर अेरोप्लेनसे आये और सीधे मुझे मिलने आये। साथमें लीमड़ीके कुमार श्री घनश्याम-सिंहजी भी थे। वे लोग ११॥ बजे गये।

"डॉ० सुशीलाने मेरी तबीयतकी जांच की। केशुभाअीके साथ चर्चा की। फिर मटक्यूटियलका अिन्जेक्शन दिया। शामको ग्लूकोज़ तथा अेमीनी फिलाअीनके अिंजेक्शन दिये। अिससे मुझे तुरंत ही अच्छी नींद आ गअी।

"चितलिया, रमाबहन महेता, सरोज महेता, गंगादास गांधी मिल गये।

"मनु गांधी रातको महुवासे आअी थी। सुशीला अुसे मेरे पास नर्सिंगके लिअे रखनेको कहती थी। परन्तु मैंने अुसे अनुमति नहीं दी। सुशीला कल जानेवाली थी, परन्तु मालूम होता है चितलियाने अुसे रोक लिया है। शायद मनुने भी रोका हो।"

"ता० १७–१–'५१, बुधवार

"ता० १७ को तबीयत साधारण रही। नानाभाअी भट्ट, जगुभाअी परीख, रतीलाल गांधी, कालुभाअी वळिया और अन्य कअी लोग मिलने आये। जीवणजीभाअी भी मिलने आये थे, जो रातको भोजन करके ओखा अेक्सप्रेससे चोरवाड़ गये।

"रातको खांसी ज्यादा आती थी और बलगममें खून आता था।"

अिसी सिलसिलेमें 'गुजरात समाचार' में बापाके जीवनके अिन अंतिम दिनोंका जो चित्र दिया गया है अुसे देखें:

"डॉ० सुशीला नय्यरने बुधवारके दिन ठक्करबापाको अिन्जेक्शन दिया, अिसलिअे अच्छी नींद आ गअी। ता० १७ को अुन्होंने सुबह रेडियोका कार्यक्रम सुना, अखबार सुने और आये हुअे पत्रोंके अुत्तर लिखवाये। सरदार पटेलके जीवन-चरित्रका पाठ सुना। गुरुवारकी रात बेचैनीमें बीती। रातको लगभग साढ़े बारह बजे जागकर पूछा, आज कौनसी तारीख है? १९ वीं। १९ तारीख लगनेको आध घंटा हो गया क्या? . . . फिर जागनेवालोंसे कहा, तुम सब किस लिअे बैठे हो? सो जाओ। तुरन्त सो जाओ। . . . तुम्हारी गड़बड़ोंका मुझे कुछ पता नहीं चलता। . . .

"अुस समय अुनके आसपास श्री हरखचंदभाअी, श्री परीक्षितलाल मजमुदार, श्री सुखदेवभाअी, बापाके अन्य कुटुम्बीजन और सेवक वगैरा मौजूद थे।

"परीक्षितलालभाअी तो बापाकी तबीयतके समाचार मिलते ही तीन चार दिन पहलेसे भावनगर पहुंच गये थे। वे जिस दिन भावनगर आये, अुसी दिन बापाने अुन्हें अपने पास प्रेमसे बैठाया और अुनसे गुजरातके हरिजन-कार्य, भील-सेवा-मंडलकी कार्रवाअी और कस्तूरबा-स्मारक-निधिके कामके बारेमें पूछताछ की और फिर शान्त, निश्चिन्त और गंभीर स्वरमें बापाने अुनसे कहा:

'अब हम आखिरी बार मिल रहे हैं। अब दुबारा हमारी मुलाकात नहीं होगी।'"

गुजरातके ही नहीं, परन्तु सारे भारतके अुस महान मानव-सेवक और कर्मनिष्ठ पुरुषके वचन सुनकर अुस दिन बापाके पास बैठे हुअे सभीके हृदय भर आये। वे समझ गये कि बापाके लिअे अिस स्थूल जीवनका काम पूरा हो गया है और अब वे किसी अलौकिक पूर्ण विरामके पथ पर अग्रसर हो रहे हैं।

*　　　*　　　*

बापाके सामने डाकके कागजात रखकर अेक भाअीने कहा, बापा, कांग्रेसके अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमदास टंडनजी लिखते हैं कि आपसे मिलने आअूं?

बापाने शान्त भावसे कहा, अुन्हें लिख दो कि अब तो जहां हैं वहीं ठीक हैं। अिस अुम्रमें कष्ट अुठाकर ठेठ यहां तक मिलने न आयें।

दूसरा पत्र निकाला और बापाको बताया: "श्री किशोरलाल मशरूवाला लिखते हैं कि आपकी तबीयत रूबरू देखनेकी अिच्छा है।"

बापाने कहा कि किशोरलालभाअीको लिख दो कि यहां तक आनेका आग्रह अब न रखें।

बापाके सामने अेकके बाद अेक कअी पत्र पढ़े गये और बापा अुनके अुत्तर देते गये।

महाराष्ट्र हरिजन-सेवक-संघके अध्यक्ष श्री बर्वेने बापाको लिखा था कि, "आपके दर्शनोंकी अिच्छा है। साबरमती तक आ गया हूं। अिसलिअे आप अिजाजत दें तो अेक दिनके लिअे भावनगर आ जाअूं।"

बापाने पत्र सुनकर कहा, "भाअी बर्वेको लिखो कि तुम जहां हो वहां हरिजन-सेवाका काम जारी रखो। मुझसे मिलनेकी अपेक्षा जो काम हाथमें लिया है, अुसे पूरा करना ज्यादा जरूरी है। वह काम ज्यादा महत्त्वका है। अिसलिअे मुझसे मिलने न आयें।"

अिस प्रकार बापासे मिलने आना चाहनेवाले अधिकांश भाअी-बहनों, कार्यकर्ताओं, सेवकों और सम्बंधियोंको अुन्होंने प्रेमपूर्वक अिनकार कर दिया और अपने अपने काममें लगे रहनेको कहा। बापाकी अिच्छाका आदर करके अिस प्रकार कितने ही भाअी-बहन बापासे प्रत्यक्ष मिलनेका लोभ छोड़ कर अुनके प्रिय कार्यमें लगे रहे और बापाके मनको अधिक सुख और शान्ति पहुंचानेमें सहायक हुअे।

शुक्रवारकी सुबह हुअी। पिछली रात बेचैनीमें गुजरी थी। दवाके जोरसे नींद तो कुछ आअी थी, परन्तु बीच बीचमें जाग जाते थे। सबेरा हुआ। बापा जागे। जागकर अुन्होंने फिर तारीख पूछी। अुन्हें तारीख बतलाअी गअी तो बोले: "वल्लभभाअी कौनसी तारीखको गुजरे थे? आजकी तारीखको ही न? सरदार शुक्रवारको गये, गांधीजी भी शुक्रवारको गये। अैसा लगता है कि मैं भी आज ही बिदा लूंगा।"

अिसके बाद अुन्होंने अुस दिनकी डाक सुनी। बाहरके स्थानोंसे आये हुअे तार सुने। जवाब भी लिखवाये। दोपहरको राजकोटसे श्री वजुभाअी शाह तथा श्री कनुगांधी वगैरा आये, अुनसे मिले और बातें कीं। श्री कनु गांधीने बापाको पता न चल सके, अैसी सिफतसे अलग अलग फोटो लिये।

शाम होते होते तो बापाकी तबीयत अधिकाधिक बिगड़ने लगी। फिर भी अंतिम दिन तक वे होशमें थे। अुनकी सेवामें रहनेवालोंने अुन्हें पेशाब करनेके लिअे बिस्तरमें बिठाया और बिस्तरमें ही बेडपैन रखकर कहा, यहीं पेशाब कर लीजिये। तो कहने लगे, नहीं, नहीं, मुझे खड़ा करो। अिस प्रकार अंतिम घड़ी तक अुनका मनोबल काम करता रहा।

रात हुअी। दीयाबत्ती हो गअी। परन्तु अिस ओर करोड़ोंके जीवनको प्रकाश देनेवाला मानव-सूर्य डूबता जा रहा था! अन्त समय अब निकट आ गया है, अिसका भान होते ही शाम तक पास बैठे हुअे परीक्षितलाल-भाअीसे अुन्होंने कहा, "परीक्षितलाल, मुझे अब जमीन पर सुला दो। मुझे अब अधिक समय नहीं लेना है।"

परीक्षितलालभाअीने शान्त और गंभीर भावसे अुत्तर दिया: "बापा, आप शान्त रहिये। निश्चिन्त रहिये। हम अभी आपको जमीन पर सुला देंगे।"

रातको सवा आठ बजे। भावनगरमें बिजलीकी किफायतके लिअे रोज अिस समय पाव घंटेके लिअे बत्ती बन्द होती थी, सो आज भी हुअी। और अुसके साथ ही साथ बापाका जीवन-दीप भी ८ बजकर २० मिनट पर बुझ गया।

अुनके आसपास बैठे हुअे लोगोंका जी भर आया। सबकी आंखोंमें आंसू आ गये। सबको लगा कि पीड़ितोंके तारनहार, हरिजनोंके पालनहार, भीलों और आदिवासियोंके बापाका जीवन-दीप बुझने पर अुनके जीवनका अंधकार और भी गहरा हो गया।

बापाके देहान्तके समाचार भावनगरमें ही नहीं, सौराष्ट्र और भारत-भरमें देखते देखते फैल गये। सैकड़ों और हजारों लोगोंने आंसू बहाये। राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबू और प्रधानमंत्री पं० जवाहरलालजी तथा राजाजीसे लगाकर सौराष्ट्रके मुख्यमंत्री श्री ढेबर तक भारतवर्षके तमाम नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और भिन्न भिन्न क्षेत्रोंमें काम करनेवाले सेवकों तथा साथियोंने अुन्हें श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

अुसी दिन रातको देरसे निश्चित हुअे कार्यक्रमके अनुसार ठक्करबापाके मृतदेहको स्नान वगैरा कराकर और पुष्पोंसे सजाकर टाअुन हालमें ले जाया गया और अंतिम दर्शनके लिअे वहां रख दिया गया। दूसरे दिन सुबह ही करोड़ों दलितों और पतितोंके अुद्धारक और सेवकोंमें श्रेष्ठ बापाके अंतिम दर्शन करने और अुन्हें आखिरी प्रणाम करनेके लिअे भावनगर और आसपासके गांवोंसे लोगोंकी भीड़ अुमड़ आअी थी। अुनके शवके सामने बलवंतराय महेता जोरसे गीतापाठ कर रहे थे। श्लोक पूरे होनेके बाद बापाके सेवक-समूहके साथियोंने भजन गाये और अन्तमें रामधुन गवाअी। "रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम" की धुनसे सारा टाअुन हाल गूंज रहा था। अनेक दर्शनार्थी सजल नेत्रोंसे बापाके शव पर फूल चढ़ाते थे। सारा वातावरण गंभीर और पवित्र बन गया था। ठीक अेक बजे टाअुन हालसे स्मशान-यात्रा शुरू हुअी। बापाके पुष्पाच्छादित मृतदेहको धूप, पुष्प और ध्वजाओंसे सजाअी हुअी कांग्रेस समितिकी खुली मोटर गाड़ीमें रखा गया था। आगे आगे गृहरक्षक दलके सैनिक चल रहे थे। सैकड़ों स्वयंसेवक रास्तेके दोनों ओर व्यवस्थित रूपमें चलते हुअे व्यवस्थाका काम कर रहे थे। स्मशान-यात्राकी व्यवस्था श्री मानशंकरभाअी भट्ट और अुनके स्वयंसेवक कर रहे थे।

कांग्रेस नेता, मंत्री, कार्यकर्ता, नागरिक, ग्रामजन, हरिजन और स्त्रियां, वगैरा मिलकर लगभग सात हजार मनुष्य अिस स्मशान-यात्रामें शरीक हुअे थे। भावनगरके अितिहासमें यह दृश्य अभूतपूर्व था। किसी सार्व-जनिक नेता या सेवककी स्मशान-यात्रामें बहनें कभी सम्मिलित नहीं हुअी थीं। लेकिन अिस बार वे लगभग १२५ से १५० तककी संख्यामें शरीक हुअी थीं। बापाकी स्मशान-यात्रा ज्यों ज्यों आगे बढ़ती गअी, त्यों त्यों

भावनगरके रास्तोंके दोनों ओर मकानों, छज्जों, झरोखों और अटारियोंमें से सैकड़ों स्त्रियां, बालक और पुरुष अुनको अंतिम प्रणाम कर रहे थे और फलोंकी अंजलि अर्पण कर रहे थे। अिस प्रकार तमाम रास्ते पर फूलोंकी मानो वर्षा ही हो रही थी। कांग्रेस कार्यकर्ता, हरिजन और अन्य लोगोंकी आंखोंसे आंसू बह रहे थे। भजनों और रामधुनसे सारा वातावरण गूंज रहा था।

सवा दो बजे जुलूस स्मशान-भूमि पर पहुंचा। वहां लोगोंने भीतर घुसनेके लिअे जोर लगाया। अुन्हें काबूमें रखनेके लिअे गृहरक्षक दलके सदस्यों और स्वयंसेवक दलको बहुत दिक्कत अुठानी पड़ी। अितने पर भी कुछ लोग आसपासके नीमके पेड़ों पर चढ़ गये और अेक पेड़की डाली टूट पड़ी, जिससे कुछ आदमियोंको थोड़ी चोट भी लगी। दो बजकर पैंतीस मिनट पर बापाके छोटे भाअी डॉ० केशवलाल ठक्करने बापाकी मृतदेहका अग्निसंस्कार किया। अुस समय श्री नानाभाअी भट्ट, गुजरात हरिजन-सेवक-संघके मंत्री श्री परीक्षितलाल मजमुदार, श्री लक्ष्मीदास श्रीकान्त, श्री बलवन्तराय महेता, श्री वजुभाअी शाह, श्री सुखदेवभाअी त्रिवेदी, भारत-सेवक-समाजके प्रमुख कार्यकर्ता श्री वझे, सौराष्ट्र मंत्रिमंडलके सदस्य श्री अुछरंगराय ढेबर, श्री रसिकलाल परीख, श्री दयाशंकर दवे, गोहेलवाड़के कलेक्टर तथा जिला समितिके मंत्री श्री देवेन्द्र देसाअी वगैरा अुपस्थित थे। कुछ देरमें चिता धकधक जलकर शांत हो गअी और बापाके पंचतत्त्व बृहत् पंचतत्त्वोंमें मिल गये। डॉ० केशवलाल ठक्कर बड़े भाअीकी मृत्यु पर आंसू बहा रहे थे, तब अुन्हें आश्वासन देते हुअे भारत-सेवक-समाजके पुराने कार्यकर्ता श्री वझेने अुनसे कहा, "आपने तो बड़ा भाअी खोया है, परन्तु मैंने तो अपना पिता ही गंवा दिया है। (You have lost a brother, but I have lost a father.) श्री वझेके ये शब्द भारतके करोड़ों दलितों, पतितों, आदिवासियों, हरिजनों, और विधवाओंके हृदयकी ही प्रतिध्वनि नहीं थे, यह कौन कह सकता है? बापाके चले जानेसे केवल श्री वझेने ही अपना पिता नहीं खोया, परन्तु अुपरोक्त करोड़ों नर-नारियोंने अपना पिता खो दिया था।

अंतिम विधि पूरी हो जानेके बाद सौराष्ट्रके मुख्यमंत्री श्री ढेबरने बापाको भावपूर्ण अंजलि अर्पित की थी।

सूची

सूची

ठ–२९